ॐ

अरुण संहिता -
लाल किताब

1999 संस्करण (संशोधित) वृहद् साईज़ एवं लिपि

हरे कृष्ण ट्रस्ट

पी०ओ० बॉक्स-123,
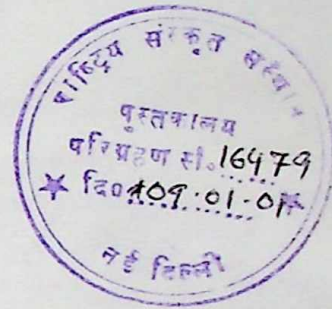
चण्डीगढ़-160017

ॐ

अरुण संहिता - लाल किताब

Astrology - Multi-Media CD
Version 1.08
(Based on Arun Samhita - Lal Kitab)

के पश्चात् अब

वर्ष 1999 संस्करण (संशोधित) वृहद् साईज़ एवं लिपि में

हरे कृष्ण ट्रस्ट

पी०ओ० बॉक्स 123,

चण्डीगढ़-160017 भारत

☎(0172) 567009,702378, 707575

पर-तत्व श्री कृष्ण

अरुण संहिता - *लाल किताब*

ज्योतिष

International Standard Book Nunber
ISBN 81-86828-09-5

1999 संस्करण (संशोधित)

वृहद् साईज़ एवं लिपि

हरे कृष्ण ट्रस्ट प्रकाशन
पी ओ बाक्स 123 सैक्टर 17
चण्डीगढ़ 160017 भारत ☎ + 91 -0172 - 567009

Font used in this book Chankaya/Natraj and allied legally purchased by the trust.

Price Rs 450/-
Rs Four hundred and fifty only.

बीमारी की दवाई भी इलाज़ है,
मगर मौत का कोई इलाज़ नहीं,
दुनियावी हिसाब-किताब है,
कोई दावा खुदाई नहीं ।

इल्म सामुद्रिक की ज्ञान की नीव पर आधारित

ज्योतिष की

सहायता से हाथ रेखा के द्वारा दुरुस्त की हुई जन्म कुण्डली से
ज़िन्दगी के हालात देखने के लिए

अरुण संहिता

लाल किताब

****

आवाज़ सुनता हर किसी
ना ही भुला कोई हो।
सबसे पहले याद उसी की
फिर सभी दुनिया की हो ।।

****

सप्रेम

सम्पर्ण

श्रीकृष्णाभिन्न प्रकाश - दिनतारण विग्रह

क्षमागुणावतार

परम आराध्य श्रीलगुरुदेव

ॐ 108 श्रीश्रीमद् भक्ति दयित

माधव गोस्वामी महाराज विष्णुपाद

जी को समर्पित

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।

अरुण संहिता - लाल किताब
वर्ष 1999 संस्करण (संशोधित)

Astrology- Multi-media CD Version 1.08
(Based on Arun Sahmita- Lal Kitab)

के पश्चात् अब वृहद् साईज़ एवं लिपि में

अरुण संहिता - लाल किताब
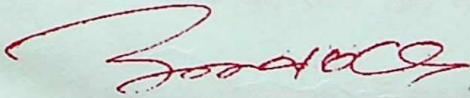
इस वर्ष यह ग्रन्थ निकालते हुए अति प्रसन्नता हो रही है क्योंकि अरुण संहिता - लाल किताब के साथ

Astrology Multi-Media CD Version 1.08
(Based on Arun Sahmita- Lal Kitab)

का यह संशोधित सी.डी भी निकाली जा चुकी है। इसमें अरुण संहिता लाल किताब के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इस में अरुण संहिता लाल किताब के सभी ग्रन्थों के उपायों को समाहित किया गया है।

ज्योतिष ग्रन्थों में प्रभु अनुकम्पा से यह एच.के.टी. की उपलब्धि है कि अरुण संहिता - लाल किताब का वृहद् लिपि रुप में संस्करण निकाला गया है। इस संस्करण में पाठकों की सुविधा के लिये इसकी लिपि को बड़ा कर दिया गया है ताकि पढ़ने में इसको अधिक सुविधा हो ।

अब इस ग्रन्थ में लगभग काफी संशोधन किया गया है ताकि क्रमवध पढ़ने से इसको समझने में कोई कठिनाई न हो ।

डॉ0 अरुण
कृतेः हरे कृष्ण ट्रस्ट,
☎ (0172) 702378,

प्राक्कथन

सूर्य देव ज्योतिष के आदि आचार्यों में हैं। इन्ही के सारथी अरुण हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के मूलसूत्रों की रचना की ऐसी किम्वदन्ती है। अरुण से यह ज्ञान लंकापति रावण ने ग्रहण किया।। रावण से यह अरब देश के एक आद नामक स्थान पर पहुँचा। जहाँ इस ग्रन्थ का अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद हुआ। अभी भी कुछ लोग यह मानते है कि यह पुस्तक फारसी में आज भी उपलब्ध है। परन्तु कालवश यह ग्रन्थ लुप्त प्रायः हो चुका था।

अन्ततः इस पुस्तक का आविर्भाव इस आधुनिक युग के एक ऋषि द्वारा हुआ। क्योंकि यह पुस्तक उर्दू भाषा में लिखी गई है, इस कारण इस लुप्त-ज्ञान के प्रसार के लिए इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवादित किया गया है।

इस ज्ञान गंगा को जनहित तक पहुँचाने का कार्य इसलिए भी किया गया क्योंकि कुछ ज्योतिष प्रेमी इस ग्रन्थ के अप्राप्य होने के कारण इसका सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

हमारी चेष्टा है कि इस ग्रन्थ को अन्य महान् ग्रन्थ की तरह सभी इच्छुक सज्जनों को उपलब्ध करवाया जाये ताकि इस के रहस्य को समझा जा सके तथा अपने जीवन के भविष्य को सफल एवं उज्ज्वल बनाया जाये। हमें आशा है कि यदि इस पुस्तक का बार-बार अध्ययन किया जाये तो इसका रहस्य स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा जैसे कि इस ग्रन्थ के शुरू में इस बात पर बल दिया गया है "इसको उपन्यास की भांति बार-बार पढ़ने से यह पुस्तक अपना रहस्य स्वयं खोल देगी"। इस प्रकार जन साधारण से अनुरोध है कि यदि इस विषय में आंशिक भी रुचि हो तो इसकी प्रति सुरक्षित रख लें क्योंकि निकट भविष्य में हमारी योजना है कि इस ग्रन्थ पर गोष्ठियाँ भी बुलाई जायेंगी ताकि इसका लाभ जन साधारण को हो सके।

वह महान् पुरुष जिन्होंने इस यज्ञ में अपने भाग की आहुति डाली वे धन्यवाद के पात्र हैं।

लोक कल्याण हेतु समर्पित इस ग्रन्थ में फलित ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्र एवं हस्त रेखा का अपूर्व समन्वय किया गया है। यह ज्ञान का सागर अमूल्य रत्नों को अपने में समाए हुए है।

****

दो शब्द

अनादि काल से मनुष्य इसी चेष्टा में रहा है कि जीवन को कैसे आनन्दमय बनाया जाये और भविष्य को कैसे जाना जाये, इस प्रकार देखा जाता है कि जो वस्तु मनुष्य को ज्ञात नहीं है, उसको जानने की इच्छा हमेशा से इसमें रही है। विभिन्न समय में विभिन्न पद्धतियों का भी प्रयोग किया गया, इस को कार्यान्वित करने के लिए। जैसे कि ज्योतिष प्रणाली, हस्तरेखा विज्ञान, टैरो कार्ड, डाईस प्रक्रिया, आई चींग एवं प्रभा मण्डल (aura) से समझने की विधि या विभिन्न योगियों द्वारा सुक्ष्म शक्तियों का प्रयोग किया जाना इसका प्रमाण है। महाभारत में इसका उदाहरण भी उपलब्ध है, संजय को दिव्य चक्षु प्रदान किये जाने का, जिससे वह घट रही घटनाओं को देख सका।

ज्योतिष विज्ञान में भाग्य और पुरुषार्थ का समन्वय करते हुये जीवन के विषय को दर्शाया गया है। जैसे कि अरुण संहिता में लिखा है :- *बन्द मुट्ठी का खजाना, बाकी जब रहना नहीं । तदबीर अपनी खुद ही उठती, राज बन आता नहीं ।*

अरुण संहिता में यह पक्ष महत्वपूर्ण है कि ज्योतिष प्रणाली से हम भविष्य की घटनाओं को जान सकते हैं। इसके इलावा विपरीत परिस्थितियाँ होने से इसमें उपायों का विधान भी है, जिससे हम प्रतिकूल परिस्तिथि को अनुकूल बना सकें।

यह ज्योतिष की एक स्वतंत्र प्रणाली है जो मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं पर जैसे कि विवाह, सन्तान, व्यवसाय, आय, स्वास्थ्य और आयु आदि- आदि पर विस्तृत विचार करती है।

इसे ईश्वर की अनुकम्पा ही कहेंगे कि इस संहिता के प्रथम संस्करण की समित प्रतियों का हाथो हाथ स्वागत हुआ, अब हमें अरुण संहिता - लाल किताब् ज्योतिष का दूसरा संस्करण निकालते हुये अति हर्ष हो रहा है। पाठकों के अनेकों पत्रों को पढ़ने से मालूम होता है कि अनेकों लोगों ने इस अरुण संहिता-लाल किताब के द्वारा अपने भविष्य को अनुकूल परिस्थितियो में लाने की चेष्टा की और वे सफल भी हुये। ज्योतिष पर जो कार्य हुये उनके विषय में हमें सूचनायें मिली है जिससे इस बात का सुखद् अनुभव होता है कि इस ग्रंथ का सदुपयोग हुआ है और आशा है कि भविष्य में भी होता रहेगा।

इस ज्ञान का लाचार व्यक्तियों पर तथा चिन्ताजनक परिस्थितियों में आम जनता का शोषण हेतू दुरुपयोग करने से दुरुपयोग करने वाले के मानसिक पटल तथा उसके कर्म विधान पर ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं उसका व्यक्तित्व अस्त-व्यस्त हो सकता है।

हमारी यही चेष्टा है कि इसमें वर्णित उपाय तभी बताये जायें जब ज्योतिष के विषय में जानकारी पूर्ण रुप से स्पष्ट हो जाये।

इस ग्रन्थ के विषय में एक और बात स्पष्ट करना चाहेंगे कि इस को प्रकाशित करने में विभिन्न शक्तियों का उपयोग कई योगी-जनों एवं विशेषज्ञों की सहायता से किया गया। इसके पीछे घ्येय केवल यही है कि जन साधारण को इसका लाभ प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही अरुण संहिता - लाल किताब हस्त रेखा विज्ञान का पूर्ण सस्करण ईश्वर अनुकम्पा से जन साधारण तक पहुँच जायेगा ।

ॐ नमो नारायणय

अनादि कृष्ण दास

हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

द्वितीय संस्करण सीमित प्रतिलियाँ

हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

फोन - (0172) - 567009

तृतीय संस्करण

इसे प्रभु की कृपा ही कहें कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपियां सीमित समय में पाठकों के पास पहुँच गई हैं। जिसके फलस्वरूप इसका तृतीय संशोधित संस्करण निकाला जा रहा है। सम्पादक मण्डल ने इस ग्रन्थ की भाषा को सरल बनाने का यथा सम्भव प्रयास किया है। जिससे पाठकों को ग्रन्थ के समझने में सुविधा होगी।

यहाँ पर हम यह भी कहना चाहेंगें कि इस श्रृंखला में और भी ग्रंथ निकाले गए हैं यथा - सामुद्रिक ज्ञान, हस्त रेखा एवं अरुण संहिता लाल किताब (चथुर्त भाग) यह सब इसी ग्रन्थ से सम्बंधित हैं। इसके अतिरिक्त प्रो०आर० सी० वर्मा ने लाल किताब एवं भारतीय ज्योतिष पर तुलनात्मक अध्ययन भी किया है। जो पुस्तक रूप में उपायों सहित प्रकाशित किया गया है।

इस ग्रन्थ के विषय में यदि कोई भी शंका का समाधान करना चाहे वह सम्पादक मण्डल से पत्र व्यवहार कर सकता है।

सम्पादक मण्डल - हरे कृष्ण ट्रस्ट

स्वामी चिद्धन्नानन्द दास, स्वामी कृष्ण सत्यार्थी,

डा. अरुण, प्रो० श्याम।

पी. ओ. बॉक्स 123

सैक्टर 17 चण्डीगढ़ - 160017, भारत

फोन 0172 - 567009.

पाठको की जानकारी के लिये यहाँ पर हम कहना चाहते हैं कि साधारणतयः लोगों ने अरुण संहिता लाल किताब - ज्योतिष के ही संस्करण देखें हैं। परन्तु इस श्रृंखला में यह स्पष्ट करना उचित है कि सभी चारों पुस्तके अरुण संहिता लाल किताब - ज्योतिष, हस्त रेखा, सामुद्रिक एवं चतुर्थ भाग अलग अलग हैं । वह अपने में पूर्ण हैं। सभी पुस्तकों में पूर्ण रूप से ग्रह इत्यादि के बारे में दिया गया है। इनको मूल रूप से ही अलग - अलग लिखा गया है।

कई पाठकगण चतुर्थ भाग को पढ़कर यह अनुमान लगाना शुरु कर देते हैं कि बाकी 3 भाग कौन से हैं यहाँ पर यह स्पष्ट करना उचित है कि चारों का अध्ययन करने से ही पाठक अपने ज्ञान को समरूप दे सकते हैं ।

यदि वह एक पुस्तक को ही पढ़े तो अपने में पूर्ण है परन्तु उसको पढ़ने के बाद दूसरी इसी श्रृंखला में पढ़ने की जिज्ञासा होती है यह स्वाभाविक ही है। परन्तु सभी भाग अपने में पूर्ण हैं इनकी शैली मूल रूप से अलग है एवं कुछ उपाए एक पुस्तक में पाये जाते हैं दूसरी में वह उपलब्ध नहीं है।

डा अरुण - अनादी कृष्ण दास हरे कृष्ण ट्रस्ट

विषय सूची

अकेले-अकेले ग्रहों का फल

इति शुभम्
****

प्रथम

⇒ **विशेषकर ध्यान रखे :-**

इंसान बंधा खुद लेख से अपने, लेख विधाता कलम से हो।
कलम चले खुद कर्म पे अपने, झगड़ा अक्ल (बु०) ना किस्मत (वृ०) हो।

क्योंकि

लिखा जब किस्मत का कागज, वक्त था वो गैब का।
भेद उसने गुम था रखा, मौत दिन और ऐब का।
ख्याल रखना था बताया, कृतघ्न इन्सान का।
एवज लड़की-लड़का बोला, खतरा था शैतान का।

1. हवाई ख्याल की नींव की दीवार का विषय बेशक तुझे मौत का दिन या किसी के भेद का ऐब का और माता के पेट में लड़का है कि लड़की का इशारा कर देगा, मगर ऐसी बातें अपने समय से पहले ही व्यक्त कर देना तेरे खून को कोढ़ की बीमारी का सबूत देगा।क्योंकि दुनियां में अगर इलाज है तो सिर्फ बीमारी का ही है मौत का कोई इलाज नहीं। ज्योतिष भी कोई जादू नहीं, दुनियावी हिसाब-किताब है, कोई खुदाई का दावा नहीं है। अगर है तो बचाव में रुह की शांति के लिए है, मगर दूसरे पर हमला करने का रास्ता नहीं। भाग्य के मैदान में अगर पानी की नाली पीछे से आ रही हो और उसके रास्ते में कोई ईंट या पत्थर गिर कर उसके रास्ते को रोके तो विषय की मदद से पत्थर निकाल कर पानी बहने हेतु कोशिश की जा सकती है। मगर भाग्य के मैदान में कोई कमी वृद्धि न हो सकेगी। कई बार अपनी बरकत से किसी व्यक्ति पर ज़ुल्म करने वाले ज़ालिम शेर के बीच यह एक ऐसी दैविक दीवार खड़ी कर देगा जिससे कि वह शेर इसका कुछ न बिगाड़ सके। अगर शेर ऊँची छलांग लगाए तो ज्योतिष उस दीवार को और ऊँचा करता होगा, मगर यह शेर पर गोली न चलायेगा, न ही उसकी टांग पकड़ेगा, वह शेर स्वयं ही थक जायेगा और हमले का इरादा छोड़ देगा जिससे वह प्राणी सुख की साँस ले लेगा।
2. ज्योतिष की नींव पर लाल खूनी रंग (जो चमकीला न हो) शुभ हो इससे अतिरिक्त सभी रंग मनहूस होंगे।
3. इस किताब में इल्म (ज्ञान) सामुद्रिक की वर्णमाला के अलिफ बे 35 अक्षर पूरे अक्षर देने की कोशिश की गई है। फरमान के अलग हो जाने से किताब को कई बार पढ़ते रहना अपना भेद बता देगा।
4. किसी बात को आजमाने से पहले, अपने फैसले से शक खड़ा करना ज्योतिष के परिचय के लिए शुभ न होगा।
5. किताब के बिना फर्ज़ी मनमानी या मनगढंत बात वहम पैदा करेगा।
6. कुण्डली बनाने का ज्ञान ज़रूरी है। अपनी ही कुण्डली या हाथ ज्योतिष सीखने में सबसे बड़ी रुकावट होगी।
7. विषय की गलती बताने वाला सहायक मित्र होगा।
8. दूसरे शास्त्रीय ज्योतिष के ज्ञान की बुराई से दूर रहें।
9. बेवकूफ, निन्दक, मज़ाकिया या कुएं का मेढ़क से दु:ख तो आता ही है पर दुनियावी साथियों को लाभ पहुँचाना इन्सानी शराफत होगी।

कर भला हो भला, अन्त भले का भला।

⇒**पुराने ज्योतिष और लाल किताब में मुख्य अन्तर :-**

राशि छोड़ नक्षत्र भुलाया, न ही कोई पंचाग लिया।
मेष राशि खुद लग्न को गिनकर, बारह पक्के घर मान लिये।।

ज्योतिष हालात पर निर्भर है :-

1. जैसे शनि का मंदा होना, शनि की (अढ़ाई, साढ़े सात साल की साढ़सती), इस किताब की बुनियाद पर शनि के मंदे होने के वारदात जैसे सांप डसना, मकान गिरना— बिकना, आँखों की दृष्टि की खराबियाँ, चाचे पर तकलीफ, मशीनों का नुक्सान, आदि अपना सबूत देंगे कि शनि मंदा गरचे कि सूर्य की अन्तर दशा या शनि की साढ़सती चल रही है। ग्रहों का प्रभाव उनकी चीज़ें, काम या सम्बन्धी के सम्बन्धित कायम होने से पक्के होने का भेद प्रकट हुआ।
2. हस्त रेखा से कुंडली, कुंडली दुरुस्त करके ज़िन्दगी की हालत ज्ञात करने के लिये 120 वर्ष तक, वर्षफल बनाये जाते हैं।
3. शक्की हालात पर उपाय है, शक का लाभ उठाने के लिए।
4. क्यासी ख्याल के बजाय ज़िन्दगी के ठोस यथार्थ को बुनियाद माना गया है।
5. महत्वपूर्ण मामलों पर ही गोर फरमाया है, मामूली कष्ट की बजाए अधिक नुकसान की बातें की हैं।

6. ग्रहों की कैद नहीं रा०-के०, सू०-बु०, सूर्य-शुक्र वर्ष कुण्डली में कहीं भीं हो सकते हैं।
7. फलित करते समय 28 नक्षत्र और 12 राशि को छोड़ दिया और लग्न मेष माना है और 12 पक्के घर मान लिये है।
8. जन्म कुण्डली में इकट्ठे बैठे ग्रह वर्षफल में भी अलग न किये गये जिससे भावेश का चक्कर भी समाप्त हुआ।

प्रारम्भ :-

हाथ रेखा को समुद्र गिनते, नजूमे फलक का काम हो।
इल्फ क्याफा ज्योतिष मिलते, लाल किताब का नाम हो।।

⇒ लाल किताब के फरमान :-

लाल किताब फरमाये यूँ, अक्ल (बु०) लेख (वृ०) से लड़ती क्यों।
जबकि ना गिला तदवीरें अपनी न ही खुद तहरीर हो।
सबसे उत्तम लेख गैबी, माथे की तकदीर हो।

उमंगों से भरे हुए शहजोर और ज़माने के बहादुर पहाड़ चीरने वाले नौजवान ने हाथ पर हाथ रखे हुए आसमान की तरफ देखने की बजाये सिर से पांव तक कोशिश करने के बाद नतीजा इच्छा के अनुसार न पाया और अपनी आँखों के सामने एक मामूली नाचीज़ हस्ती को ज़िन्दगी के चंद लम्हों में दुनियां का सरताज़ होते देखा तो उसको एहसास हुआ कि भेद क्या है।

उत्तर मिला :-

न जरूरी नफ़स ताकत, न ही अंग दरकार हो।
लेख (वृ०) चमके जब फकीरी, राज आ दरबार हो।।

फरमान नं० 1 :- कुदरत से किस्मत किस तरह आई :-

हुक्म विधाता जन्म मिले तो, लेख ज्योतिष बतलाता है।
लाल किताब, बच्चा ग्रहचाली, किस्मत साथ ले आता है।
इस बच्चे की नन्हीं मुट्ठी में, पकड़ा देव आकाश का है।
भरा खज़ाना जिसके अन्दर, निधि सिद्धि की माला है।
नौ निधी को ग्रह 9 माना, सिद्धि 12 राशि है।
9 में जब गुण 12 करते, होती माला पूरी है।

फरमान नं 2 :- उसकी कुदरत का हुक्मनामा कहां पाया गया :-

अक्स गैबी जाहिर पहला, था सितारों पर हुआ।
नकस जिसका पीछे दुनियां, के दिमागों का हुआ।
दिमाग़ी खानों का असर तब, हाथ की रेखा हुआ।
चांद सूरज फलती दुनियां, से जहान दो बन गया।
इल्म ज्योतिष इस तरह पर, जब सितारों से हुआ।
सीधी टेढ़ी हस्त रेखा से, क्याफा चल पड़ा।
दिमाग़ दायां-(बायां)हाथ बायां-(दायां), पर चमक जब दे चुका।
हुक्मनामा उसकी कुदरत (अपनी किस्मत), मुट्ठी बन्द इन्सान था।

आम तौर पर मालिक ने इन्सान के साथ उसके लिए निर्धारित कार्यों को हथेली पर लिखा है। अपने ही कब्जे में ऐसे ढंग से भेजा है कि वह कभी गुम न हो पाये, ना ही उसमें कोई तबदीली हो सके, मगर उसकी शक्की हालत का फायदा बेशक उठा लिया जावे।

2 12 1 11 3 लग्न 10 4 9 7 5 6 8

हथेली के पर्वत (ऊपर को उठे हुए) जिस कदर ऊंचे और चौड़े होंगे उसी कदर एक दूसरे की अच्छी या बुरी हवा की रोकथाम कर सकेंगे। दरिया की नदियां व समुद्र के मददगार दरिया जिस कदर गहरे और साफ तह ज़मीन होंगे उसी कदर ही उसमें पानी की ज्यादा चाल या पक्का असर होगा। जिस कदर दरिया या नदी कम गहरे होंगे उसी कदर न सिर्फ पानी कम या उनका असर हल्का होगा
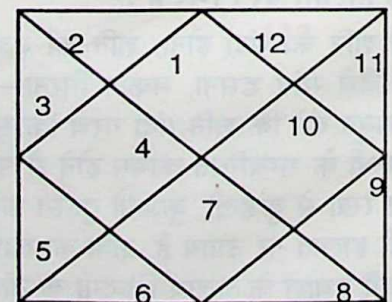
बल्कि प्रभाव की रफ्तार भी मध्यम होगी। रेखा में मुख्तलिफ द्वीप रास्ते की रुकावटें होंगी। दरिया या रेखा जिस पर्वत के इलाके से गुजर जायेगी उसी किस्म का असर उनके साथ लाई मिट्टी में मौजूद होगा, और पर्वत की जड़ी बूटियाँ अलग भाग्य की दवाईयों के पौधें से आयी हुई तेज़ मध्यम मीठी-कड़वी हवा का प्रभाव होगा, बिल्कुल वैसी ही अवस्था ग्रहों की अपनी-अपनी राशियों में होगी। अगर कुण्डली हथेली का महाद्वीप बनी तो ग्रहों के नज़र को रास्ता या उनकी आपसी दृष्टि, ब्रह्मांड के दरिया की गुजरगान होगी, जो इनके प्रभाव में

मकान कुण्डली
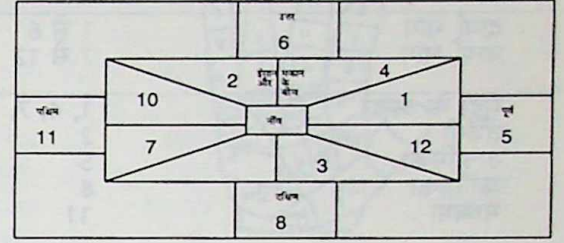
जन्म कुण्डली पूर्व बंगाल
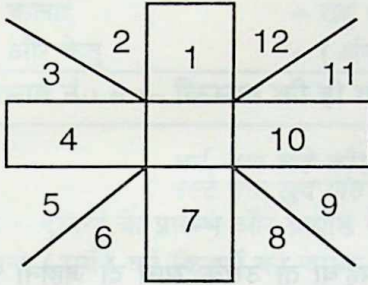
ग्रह मण्डल की आपसी दोस्ती या दुश्मनी से पैदा हुई लहरों की उकसाहट से हज़ारों किस्म की तबदीली का बहाना होगा और ग्रहों की निश्चित अवधि पर आम तौर पर व्यक्त हुआ करेगी उंगली के पोरों और हथेली के महाद्वीप हर दो ही के 12-12 टुकड़े हुए और पर्वतों को 9 भाग माना है। यही 9 निधि (दैविक शक्ति) और 12 सिद्धि (इंसानी शक्ति) होगी जो इस ज्ञान की नींव है। ग्रह राशि और रेखा के अतिरिक्त मकान, रिहायश, स्वप्न, माल मवेशी, दुनियां के दूसरे साथी आदि शुभ निशानियां और इल्म क्याफा इस विषय के ज़रूरी पहलू गिने गये हैं। यूं ही गैबी अकस दिमाग़ी खानों में नकस होकर हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी में जाहिर हुआ। दुनियां के पर्वतों का लम्बा सिलसिला हथेली के पर्वतों में बुलन्द दिखाई देने लगा और बच्चे की सांस की हवा ने भी रुख बदला, जिस पर पहाडों से घिरी हुई हथेली को महाद्वीप और चारों उंगलियों के वसीह (खेल) मैदानों के 12 कोने जन्म कुण्डली में हूबहू वैसे ही पाये गये। पर जुदा रहा तो सिर्फ अंगूठा (अंगुष्ठ नर ही बेरुख पाया गया जो उन सबका महबर (अंगुष्ठ के) और दुनियादारों के पुण्य पाप का पैमाना निश्चित हुआ। यानि हथेली की लकीरों या 12 खानों और उंगलियों की 12 गांठों से जो गैबी अकस जाहिर हुआ वो हूबहू जन्म कुण्डली के 12 खानों में 9 ग्रहों की मुख्तलिफ अवस्था से ही पाया गया।

फरमान नं० 3 :- ऊंचे फलक का अकस किधर है :-

हाथ दाया और कुण्डली जन्म हो, तदवीरें मर्द का नाम हुआ।
कुण्डली चन्द्र या हाथ बाये से, तकदीर मनुष्य का काम हुआ।
उल्ट हाथों से औरत माना, ग्रह फल राशि आम हुआ।
नेक हवा जब चलने लगी तो, जहान दोनों का नाम हुआ।

नं.	राशि	चिन्ह
1	मेष	♈
2	वृष	♉
3	मिथुन	♊
4	कर्क	♋
5	सिंह	♌
6	कन्या	♍
7	तुला	♎
8	वृश्चिक	♏
9	धनु	♐
10	मकर	♑
11	कुंभ	♒
12	मीन	♓
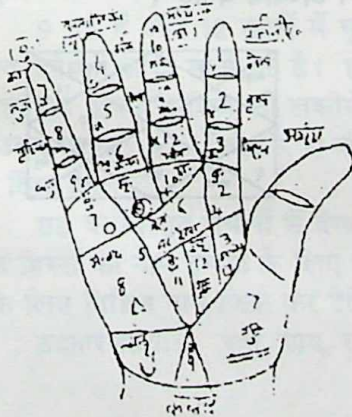
हाथ में कुण्डली और कुण्डली में उंगली के हवाई इशारे से ब्रह्मांड का मैदान एक दम गूँज उठा :-

हथेली का हिस्सा होगा	जन्म कुण्डली का खाना नम्बर
दायाँ भाग	1 से 6
बाया भाग	7 से 12
मुट्ठी के अन्दर	1, 4, 7, 10
तर्जनी	2
अनामिका	5
कनिष्ठका	8
मध्यमा	11
आसमान होगा	12
पाताल होगा	6
तीनों ज़माने	3
कुण्डली का केन्द्र	9

फरमान नं० 4 :- आलिम को इल्म में शक क्या है (जन्म वक्त)

समय करे नर क्या करे, समय बड़ा बलवान।
असर ग्रह सब ही पर होगा, परिंदा पशु इंसान।।

बच्चा दैविक शक्ति से माता के पेट में आया। फिर बंद हवा से इस दुनियां में पहुँचा तो उसके साथ दो जहानी हवा उसकी सांस हुई जिसके लेते ही ज़माने की दोरंगी चालों के मैदान का लम्बा-चौड़ा हिसाब खुल गया। जिस पर हरकत के दो पहलू होने लगे या यूँ कहो कि जन्म के वक्त पता लग जाने से ज़िन्दगी के ख्वाब की ताबीर मालूम करने का खाका (कुण्डली) जो इल्म ज्योतिष के अनुसार तैयार होता हुआ माना गया। मगर शक हुआ कि एक बाप के दो बेटे, एक घर के दोनों भाई (ताये, चाचे के) एक शहर में या एक वतन में हम उम्र साथी एक जमात, एक नस्ल, सब एक जन्म वक्त होने पर हालाता की दुरस्ती की बुनियाद क्या होगी। इसके विपरीत भूचाल, हादसों की बाढ़, ज़िन्दगी की गोलाबारी या दूसरे ज़हरीले वाक्यात से मौत एक ही समय होती तो देखी गयी है कि सबके सब निश्चय हो जाते ही मालूम होने लगा है। इस पर ख्याल आया कि हस्त रेखा के अनुसार जब हरेक की रेखा या लकीर अलग-अलग है तो हालात का नक्शा केवल तसल्ली बख्श न होगा, मगर फिर भी वहम पैदा हुआ कि जब 12 साला बच्चे की रेखा का कोई विश्वास नहीं है, 18 साला उम्र से बड़ी रेखा में कोई परिवर्तन नहीं मानते, मगर शाखें बदले तो यकीन किस बात पर हो। इस तरह दोनों विषयों से कोई दिलजोई न हो सकी क्योंकि एक तो जन्म वक्त-लग्न गलत होने की वज़ह से बेबुनियाद हो गया, दूसरे सिर्फ एक अकेले की जीवन का नेकों-बद गर्मी- नर्मी बताकर चुप हुआ और किसी दूसरे साथी की बाबत न बता सका। आखिर पर हर दोनों इल्मों को इकट्ठा किया पर फिर भी यही नज़र आया कि बुनियादी असूलों के ज्ञान के बगैर कोई मतलब हल न होगा। अत: फलित ज्योतिष के लिए इसकी व्याकरण और ग्रहों के फल के अलग-अलग अध्याय बनाएं ।

व्याकरण

फरमान नं० 5 :- तकदीर पहले या तदबीर

बेटी आई पहले दुनिया, या कि पहले माता है।
जोड़े बच्चे पेट माता, पहले जन्मे छोटा हो।।

राशियाँ :-1. गिनती में 12 हैं और दिन को 12 भागों में बाँटा, हर भाग बराबर दो घण्टों का नहीं है।

2. उंगली	ग्रह	गुण	राशियाँ
तर्जनी	वृ०	हुकूमत	(1, 2, 3)
अनामिका	सू०	हिम्मत से कमाई	(4, 5, 6)
कनिष्ठका	बु०	इल्म हुनर	(7, 8, 9)
मध्यमा	श०	उदासी वैराग्य	(10, 11, 12)

3. गिनती चाल जगह निश्चित करने के वक्त मध्यमा उंगली को सबसे अन्त में लेते हैं। क्योंकि मध्यमा 'संन्यास' वैराग होकर दुनियां से अलग गिनी है जिसका संबंध गृहस्थ के बाद होगा।

⇒ हस्त रेखा और कुण्डली के खाने से सम्बन्ध :-

सर रेखा = खाना नं० 7,
दिल रेखा = खाना नं० 4,
तर्जनी व मध्यमा
के बीच = खाना नं० 11,
अंगूठा = खाना नं० 2,
शुक्र से बुध को हथेली
में लम्बी लकीर = खाना न० 5,
कलाई = राहु (अंगूठे की तरफ)
और केतु = (अंगूठे से दूर)

फरमान नं० 6 :- किस्मत की ही गांठों से ग्रह मण्डल बनेगा :-

धर्म दया चाहे कोसों ऊंची, चाहे सखी लखदाता हो।
उल्टे वक्त खुद गांठ आ लगती, लेख लिखा था विधाता जो।

ग्रह :-दुनियां के प्रारम्भ और ब्रह्मांड के खाली आकाश में जो बुध का आकार है सबसे पहला अन्धेरा (शनि) का राज मानकर उसमें रोशनी (सूर्य) की किरणों की चमक का प्रदेश ख्याल किया गया। इस रोशनी (सूर्य) और अन्धेरा (शनि) दोनों के साथ-साथ हवा हुई (जो दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति की राजधानी ही चल रही है) यानि हवा अन्धेरे में भी होती है रोशनी में भी होती है। उदाहरणतय: शीशे के एक बक्स में भी हवा होगी और बक्स के बाहर भी हवा महसूस होगी गोआ बुध का शीशा अन्धेरे और रोशनी दोनों को ही अन्दर से बाहर/बाहर से अन्दर जाहिर होने की इज़ाजत देगा मगर वो बुध (शीशा) हवा को

अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर जाने न देगा। यही चक्कर में डाले रखने की दुश्मनी वृहस्पति से बुध की होगी या बुध के आकाश की खाली जगह में भाग्य को व्यक्त करने वाला ग्रहचाली बच्चा बुध की सहायता से सूर्य और शनि को जगह देगा कि जुदा-जुदा रहने या इकट्ठे ही दम मारने की शक्ति बख्श देगा। चाहे बुध का शीशा ही वृहस्पति के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और ये गांठ ही ग्रह है जिससे आकाश सबके लिए ही गांठा हुआ मैदान है या यूँ कहो कि अक्ल (बुध) सब तरफ गांठें लगा रही है। अलग-अलग चीज़ों को इकट्ठा करने की हालत के नाम गांठ या ग्रह हैं। दूसरे शब्दों में वृहस्पति हवा और बुध आकाश को इकट्ठा बांधने वाली चीज़ की शक्ति या बच्चे की किस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज़ ग्रह कहलाती है। किस्सा कोताह उंगलियों और हथेली को आपसी (इकट्ठा) मिलाने वाली गांठ या हथेली की अपनी हरेक गांठ या बच्चे की माता के पेट के सफर की 9 मंज़िलें की हरेक गांठ को ग्रह के नाम से याद कर लें। चाहे प्राकृतिक की शक्ति का वास्तवकि नाम ग्रह है जिस के कारण से सामुद्रिक विद्या (हस्त रेखा ज्ञान) में भी हर पर्वत का आधार उंगलियों की जड़ और हथेली को गांठ पर ही मानी गई है।

9 ग्रह हैं और 12 खानों में घूम सकते हो। इंसानों की तरह उनकी आपसी दोस्ती-दुश्मनी, उच्च-नीच हालत, उत्तम या मंदा प्रभाव देने की शक्ति मानी गई है। हरेक ग्रह अपना अच्छा या बुरा प्रभाव विशेष-विशेष अवधि पर दिया करते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हर ग्रह अपनी हाशिये की लकीरों से बने, हाथ पर रेशों से भी यही मुराद होगी।

उदाहरणतय: :- चौकोर से मं० बना है यही शक्ल अगर, बारीक-बारीक रेशों से हाथ के बाकी रेशों से जुदा हो जावे तो मं० नेक दिया है।

ग्रह के विस्तृत बयानों में देखने से ज्ञात होगा कि ब्रह्मांड की अलग-अलग चीज़ों को विशेष-विशेष हिस्सों में निश्चित करके हरेक हिस्से का नाम हमेशा के लिए ही निश्चित कर दिया गया और उन सभी चीज़ों को लिखने-पढ़ने से बार-बार दोहराने की बज़ाय उनके लिए निश्चित नाम जिक्र कर देते हैं।

उदाहरणतय::- स्त्री, गाय, लक्ष्मी, मिट्टी आदि के लिए एक शब्द शुक्र है।

ग्रह	हिन्दी	फारसी	अंग्रेज़ी	रंग	मनसोई ग्रह	निशान
वृ०	गुरु	मुश्तरी	जुपीटर	पीला जर्द	सू,शु(दोनों की खाली हवा)	अंदेरियां खड़े 111 खत,शंख,शदफ चक्र
सू०	रवि	शमश	सन	सुर्ख तांबा	बु0, शु	0* सितारा 0 शाखदर खत
चं०	चन्द्रमा	कमर	मून	सफेद (दूध)	सू0, वृ0	आधा टेढा खत
शु०	भृगु	जुहरा	वीनस	सफेद दही)	राहु केतु	लेटे खत
मं० नेक	भौम	मुरेयख	मार्स (+)	खूनी (सुर्ख)		
मं० बद	भौम	मुरेयख	मार्स (-)	खूनी (सुर्ख)		
बु०	बुध	अतारद	मरकरी	सब्ज हरा		
श०	शनि	जुहल	सैटरन	स्याह		
रा०	राहु	रास	राहु	नीला		
के०	केतु	दुम्ब	केतु	चितकबरा काला-सफेद		

हाथ में कुण्डली के खाने
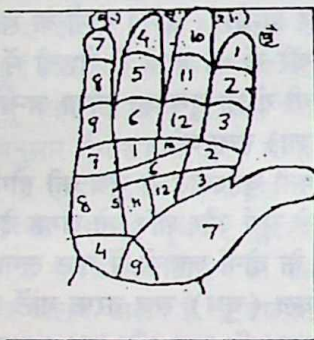
हाथ में कुण्डली के ग्रह
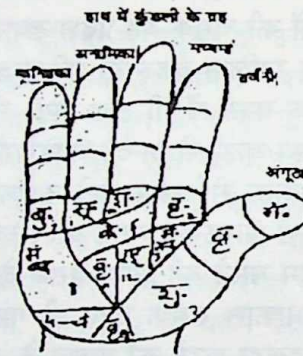
⇒ **कुण्डली में उंगलियां (मुट्ठी के अन्दर :- 1, 4, 7, 10)**

राशियों की तरह ग्रहों के लिए भी कोई पक्का हिस्सा निश्चित नहीं है मगर उनकी विशेष नीचे लिखी विशेषतायें ज़रूर निश्चित है।

वृ० रवि और मं० तीनों, नर ग्रह कहलाते हैं।
श० राहु और केतु तीनों, पापी ग्रह बन जाते हैं।
शु० लक्ष्मी, चन्द्र माता, दोनों स्त्री होते हैं।
बु० नपुसक चक्र सभी का, जिसमें सभी ये घूमते हैं।
नेकी बदी दो मं० भाई, शहद जहर दो मिलते हैं।
बद लालच गर मारे दुनिया, नेक दान को गिनते हैं।

राहु केतु को पाप के नाम से जानते हैं जब शनि को राहु और केतु किसी तरह से भी मिले तो शनि पापी होगा।

⇒ **कुण्डली के ग्रहों का पक्का घर :-**

1. खाना नं० (सू०, 1) (वृ०, 2) (मं०, 3) (चं०, 4) (वृ०, 5) (के०, 6) (शु० बु०, 7) (श० मं०, 8) (वृ०, 9) (श०, 10) (वृ०,11) (राहु, 12)।

2. राहु और केतु को हथेली में कोई पक्की जगह नहीं दी गई है, ये लहरों के मालिक हैं। एक ने इंसान को सिर से पकड़ा और दूसरे ने पांव से तो स्वयं ही उनको जगह मिल गई और वे बुध के साथ केतु जो नेकी का मालिक खाना नं० 6 में पाताल में और वृ० के साथ राहु जो बदी का हाकिम खाना नं० 12 में आसमान में सभी आकाश ब्रह्माण्ड (जो वृ० बु० इकट्ठे का नतीजा है) बैठे और दुनियां के इस इल्म में पाप के नाम से मशहूर हुए।

3. ग्रहों की मित्रता-शत्रुता

नं०	ग्रह	उसके सम	मित्र	शत्रु
1.	वृ०	रा०, के०, श०	सू०, मं०, चं०	शु०, बु०
2.	सू०	बु० जो सूर्य के साथ चुप रहेगा।	वृ०, मं०, च०	शु०, श०, राहु से ग्रहण केतु से मध्यम।
3.	चं०	शु०, श०, मं०, वृ०	सू०, बु०	केतु से ग्रहण राहु से मध्यम
4.	शु०	मं०, वृ०	श०, बु०, के ०	सू०, चं०, रा०
5.	मं०	शु०, श०, रा० अब मं० के साथ चुप रहेगा।	सू०, चं०, वृ०	बु०, के०
6.	बु०	श०, के०, मं०, वृ०	शु०, सू०, रा०	चं०
7.	श०	के०, वृ०	बु०, शु०, रा०	सू०, चं०, मं०
8.	रा०	वृ०, चं०	बु०, श०, के०	सू०, शु०, मं०
9.	के०	वृ०, श०, बु०, सू०	शु०, रा०	चं०, मं०

4. ग्रहों का काल समय दिन

नं०	ग्रह	दिन में	हफ्तों में
1.	वृ०	पहला हिस्सा	वीरवार
2.	सू०	दूसरा हिस्सा	रविवार
3.	चं०	चांदनी रात	सोमवार
4.	शु०	काली रात	शुक्रवार
5.	मं०	पक्की दोपहर	मंगलवार
6.	बु०	4 बजे शाम	बुधवार
7.	श०	तमाम रात, अंधेरा दिन	शनिवार
8.	रा०	पक्की शाम	वीरवार की शाम
9.	के०	सुबह (ऊषा काल)	रविवार की सुबह

केतु दिन चढ़ने से दो घण्टे पहले, वृ० दिन निकलने के बाद 8 बजे तक, सू० 8-10 बजे तक, चन्द्र 10-11 बजे तक, शुक्र 1-3 बजे तक, मं० 11 से 1 तक, बुध 4-6 तक, शनि दिन छुपने तारा निकलने के बाद, राहु सायंकाल।

ग्रहों की मित्रता एवं शत्रुता (विशेष):-

1. **चन्द्र शुक्र सम है,** *पर चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से।*
वृहस्पति शुक्र सम है, *पर शुक्र दुश्मनी करता है वृहस्पति से।*
मंगल शनि सम है, *पर मंगल दुश्मनी करता है शनि से।*
चन्द्र बुध दोस्त है, *पर चन्द्र दुश्मनी करता है बुध से।*

2. राहु के साथ वृहस्पति चुप होगा परन्तु गुम न होगा, मगर खाना नं० 2 में राहु और वृहस्पति हों तो राहु वृहस्पति के अधीन होगा।

3. बुध जो वृहस्पति का दुश्मन है, चं०, बु० का शत्रु है :- मगर खाना नं० 4, 2 में बुध या चं० चाहे (बु०, वृ०) या (चं०, बु०) इकट्ठे दुश्मनी के बजाय पूरी सहायता करेगा धन की सहायता के लिए।

1. **दुश्मन पार्टी :-** शनि का दुश्मन सूर्य, सूर्य का शुक्र, शुक्र का वृहस्पति, वृहस्पति का बुध, बुध का चन्द्र, चन्द्र का केतु, केतु का मंगल (बद), सबका दुश्मन राहु।

2. **मित्र पार्टी :-** सूर्य का मित्र चन्द्र, चन्द्र का वृहस्पति, वृहस्पति का मंगल-नेक, मंगल-नेक का राहु, राहु का बुध, बुध का शनि, शनि का शुक्र, सबका दोस्त केतु।

गोया :- ग्रहों के लिखित दोस्ती/दुश्मनी पार्टी के ग्रह बिन तरतीब एक-दूसरे के दुश्मन दोस्त है, जिनका रहनुमा राहु दुश्मन पार्टी का, केतु दोस्त पार्टी का यानि राहु सिर, केतु पांव का मालिक है।

शरीर व ग्रह का संबंध :-

जिस्म में जिगर मंगल, चन्द्र-दिल, केतु-धड़, के सलाहकार हैं। बुध दिमाग जुबान देखने - भालना शनि, सर राहु के सलाहाकार । सर-राहु, धड़-केतु को मिलाने वाली गर्दन की सांस का मालिक वृहस्पति है। लिहाजा वृहस्पति अक्सर एक अकेला जिस्म, चाहे कुल इंसान, सभी दुनियां यानि लोक-परलोक, ग़ैबी दुनियां के सभी ग्रहों की आपसी शक्ति का मालिक है। सिर्फ इसी आधार पर वृहस्पति किसी से दुश्मनी नहीं करता।

ग्रहों की अवधि

नं०	ग्रह	गिनते दिन	आम साल	उम्र के साल	महादशा के साल	आम दौरा	असर का वक्त	असर की रफतार
1.	वृ०	32	16	75	16	6	दरमियान	बब्बर शेर
2.	सू०	22	22	100	6	2	शुरु	रथ
3.	चं०	24	24	85	10	1	आखिर	घोड़ा
4.	शु०	50	25	85	20	3	दरमियान	बैल
5.	मं० नेक	24	13 कुल	90	3 कुल	2 कुल		चीता
	मं० बद	32	15 (28)		4 (7)	4 (6)	शुरु	हिरण
6.	बु०	68	34	80	17	2	हमेशा सम	मेढ़ा
7.	श०	72	36	90	19	6	मछली	
8.	रा०	40	42	90	18	6	हाथी	
9.	के०	43	48	80	7	3	आखिर पर	सूअर कुत्ता
योग		364/367			120	35		

एक दिन हर ग्रह का पक्के तौर पर निश्चित युनिट के लिए प्रत्येक युनिट का समय 40 मिनट लेंगे।

नोटः- मैदानी इलाके में मृग हिरण, पहाड़ में चीता को मृग बोलते हैं मगर ग्रहों में हिरण या बारहसिंगा को मंगल बद, चीता मंगल नेक है।

ग्रहों का समयः-

1. हर ग्रह अपनी अवधि के 1/2 या 1/4 हिस्से पर भी अपना जाहिर कर दिया करता है।
2. राहु की 42 और केतु की 48 तो दोनों की इकट्ठी अवधि 45 वर्ष होगी।
3. ग्रहण के वक्त, सूर्य राहु इकट्ठे = सूर्य ग्रहण, (चं०, के०) = चन्द्र ग्रहण, उम्र तीन साल कम होगी।
4. शनि की उम्र के 10, 19, 37 वें साल आम तौर पर नेक प्रभाव देगा और 9 दूसरी तरफ धन-दौलत देगा। साल 18 पिता, 27 माँ मकान मवेशी पर मंदा असर देगा। 36-39 साल में साधारण असर देगा।
5. जैसे कि कुण्डली के अनुसार इस समय हो किस्मत उदय के लिए बुध 23, मं० 31, साल उम्र में, बाकी हर ग्रह अपनी-अपनी अवधि में प्रभाव देगा।

मध्यम ग्रह

पक्का घर	शुरु	मध्य	अंत
वृ०	के०	वृ०	सू०
सू०	सू०	चं०	मं०
चं०	वृ०	सू०	चं०
शु०	मं०	श०	बु०
मं०	मं०	श०	शु०
बु०	चं०	मं०	वृ०
श०	रा०	बु०	श०
रा०	मं०	के०	रा०
के०	श०	रा०	के०

उदाहरण :- एक साल के समय को 3 पर भाग दिया = मास जैसे वृहस्पति वर्षफल में खाना नं- 5 में आये तो उस साल के प्रथम 4 मास में खाना नं: 5 पर केतु का असर जैसे कि वह (केतु) उस (वक्त) वर्षफल में हो। दूसरे 4 मास में (वर्षफल) स्वयं वृ: का प्रभाव हो, आखिर 4 मास में सूर्य (वर्षफल अनुसार सू0) का असर होगा। इसी तरह हर ग्रह को लेंगे ।

ग्रह	किस ग्रह के साथ हो	तो उम्र होगी जितने साल
वृहस्पति	कसी भी ग्रह के साथ हो	16
सूर्य	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	22
	राहु के साथ	0
	केतु के साथ	11
चन्द्र	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	24
	वृहस्पति, बुध, शुक्र, राहु	12
	मगर शनि के साथ	8
शुक्र	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	24
	वृहस्पति	60 साल दौलत के लिए
	सूर्य	34
	मंगल नेक	8
मंगल नेक	किसी भी ग्रह के साथ	13 कुल
मंगल बद	किसी भी ग्रह के साथ	15 (28)
बुध	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	34
	सूर्य, मंगल के	17
शनि	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	36
	वृहस्पति	18 पिता की उम्र हेतु
	वृहस्पति	27 धन-दौलत के लिए
	सूर्य	24
	बुध	45
राहु	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	42
	मंगल नेक	0
	केतु	45
केतु	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	48
	वृहस्पति	40
	सूर्य या मंगल नेक	24
	राहु	45

ग्रह की आयु का प्रभाव :-

1. सब कोई ग्रह हर तरह से कायम/यकीनी अपने वजूद में खुद अपनी ही पूर्ण ताकत का चाहे उच्च-नीच, घर का मालिक हो या दूसरे का, उस पर या उसमें कोई असर न मिल रहा हो तो वो अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या उसकी उम्र होगी, जैसे वृहस्पति = 16, सूर्य =22, चन्द्रमा =24, आदि-आदि ।

2. इस कुल ग्रहों की उम्र 120 साल अपना-अपना मुकाम है।

3. ग्रह के प्रभाव का आम अर्सा अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह, ऊपर की शर्त यानि ग्रह के उम्र के अर्सा से बाहर, दोस्ती या दुश्मनी के बर्ताव में हो जाये तो उसके लिए वृहस्पति 6, सूर्य 2 साल, चन्द्र 1 साल इत्यादि लेंगे।

4. अपनी अवधि के शुरु, मध्य और आखिर पर हर ग्रह प्रभाव करता है। इसलिए हर ग्रह के साथ मध्यम ग्रह का प्रभाव, जैसे कि मध्यम ग्रहों की सूचि में दिया है, शामिल होगा।

रियायती 40 दिन :-

1.मंदे ग्रहों का प्रभाव उनके निश्चित समय से पहले नहीं आ सकता है और ना ही भले ग्रहों की सहायता दिये हुए समय के बाद तक रह सकती है। अगर हो सकता हो तो सिर्फ यह कि एक ग्रह का प्रभाव समाप्त और दूसरे के शुरु के दरमियान40 दिन फालतू होंगे यानि बुरे ग्रह की अवधि के 40 दिन बाद तक उसका प्रभाव बुरा हो सकता है और शुरु होने वाले आम तौर पर नेक मददगार ग्रहों के अपनी अवधि से 40 दिन पहले ही प्रभाव होना माना है।इकट्ठे प्रभाव के सिर्फ 40 दिन ही होंगे, मगर दोनों ग्रहों के अलग-अलग 40-40 दिन प्रभाव न होंगे। ये रियायती 40 दिन हैं। इस नियम पर छिला (प्रसूति) सूतक 40 दिन और मातम 40 दिन का मनाया जाता है।

2. क्योंकि इल्म में 28 नक्षत्र और 12 राशियों की गिनती को छोड़ दिया है, अत: दोनों की जमा 40 दिन कम से कम या ज्यादा से ज्यादा 43 *रियायती दिन तक उपाय का प्रभाव पूरा होगा* जिसकी निशानी समय से पहले ही नेक ग्रह का प्रभाव हो जाने के

समय, दोस्त ग्रह की चीज़ों की कुदरती निशानियों और बुरे ग्रह की अवधि 40 दिन बाद रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियाँ हुआ करती है।

तमाम ग्रह बालिहज़ ताकत :- सूर्य, चन्द्र, शुक्र, वृहस्पति, मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु क्रम से आपसी मुकाबले में ताकत में कम है।

टकराव या बर्ताव पर ताकत का पैमाना :-

जब दौरा या तख्त का मालिक ग्रह से कोई और ग्रह दूसरा टकरा जाये, टकराव दुश्मनी की, बर्ताव दोस्ती में हो तो सूर्य 9/9, चन्द्र 8/9, शुक्र 7/9, वृ० 6/9, मंगल 5/9, बुध 4/9, शनि 3/9, राहु 2/9, केतु 1/9 ताकत का होगा। दौरा के वक्त ग्रह के बाहम टकराव से इनके बाहमी असर में कमी बेशी होने के अलावा किसी के उपाय हेतु दूसरे ग्रह का उपाय करने के वक्त भी यह ताकत का पैमाना सहायका होगा।

⇒ग्रह की दूसरी अवस्था : ग्रह फल और राशिफल :-

जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि का मालिक या उच्च-नीच फल के लिए ठहराई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाय किसी दूसरी और राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह, जड़ अदला-बदली करने वाला वगैरा बन जाये तो वह ग्रह ऐसी हालत में राशिफल या शक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर से बचने के लिए शक का फायदा उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध यानि ऊपर कही हुई हालत के उल्ट हाल पर जब कि वह उच्च-नीच घर का, या अपने घर का, पक्के घर का साबित हो तो ग्रह पक्की हालत का होगा जिसका प्रभाव हमेशा के लिए निश्चिति हो चुका है। उसके बुरे असर को तबदील करना व्यर्थ बल्कि इन्सानी ताकत से बाहर होगा। सिर्फ खास-खास खुदा रसीदी और महदूद हस्तियाँ ही रेख में मेख यानि सूर्य मेष राशि में खाना नं०1 में कैद लगा सकती है। मगर वो भी आखिर तबादला ही होगी। यानि एक जानदार या दुनियावी चीज़ या ताकत को उसकी हस्ती से मिटा कर उसके एवज़ में दूसरी जानदार या ताकत पैदा कर देगी। उदाहरण के तौर पर बाबर- हुमायुं के किस्से। मगर नया ही दूसरा हिस्सा फिर भी पैदा न होगा, सिवाय उस वक्त के जब सभी हस्तियाँ खुद अपनी ताकत या अपने ही आप तबाह कर ले और एवज़ में किसी दूसरे तक नौबत नहीं आने देती। यह हालत भी उनकी खुदाई शरीफ होने की होगी । कोई न कोई तबादला दिया गया, मगर ग्रह फल फिर भी न टला। ग्रह फल को राजा कहे तो राशिफल उसका साथी वज़ीर होगा। ग्रह फल की मंदी हालत के वक्त कौन सी चीज़ बतौर राशिफल सहायक हो सकती है ग्रहों के उपाय में देखो।

35 साला चक्कर :-

ग्रहों के आम दौरा के साल (= योग 35), वृ०=6, सू०=2, चं०=1 आदि हैं।

1. 35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्कर पूरा कर जाते हैं और जो ग्रह पहिले चक्कर में बुरा असर करते हों वो अपने दूसरे चक्कर में यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में बुरा प्रभाव न देगें । यह शर्त नहीं कि वो भला असर जरुर देंगे। ग्रहों की 35 साल मियाद 35 साला चक्कर कहलाती है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और इंसान की उम्र का 35 साला चक्कर दो अलग बाते हैं। उदाहरणत: मान लो कि एक इंसान के जन्म दिन से ही वृहस्पति के दौरा शुरू हुआ है बाकी ग्रह भी इसी तरह यानि वृहस्पति 6 साल और क्रम से अपना 35 साल का दौरा पूरा करेंगे। लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह वृहस्पति के बजाय शनि शुरु हो और जन्म दिन की बजाय 7 वें साल से शुरु हो। अब तमाम ग्रह 35 साल में ही अपना दौरा पूरा कर लेंगे । जब आखिरी ग्रह का आखिरी दिन होगा उस वक्त इंसान की उम्र 35 साल का दौरा जमा 6 साल, जब अभी शनि या उम्र का पहला ग्रह शुरु नहीं हुआ था, यानि कुल उम्र 41 है और दूसरा चक्कर जन्म दिन वाले ग्रह की दूसरी चाल होगी।
2. ये चक्कर एक आम प्राणी की उम्र 120 साल में तीन बार आ सकते हैं ।
3. अगर दायीं तरफ (हाथ की रेखाओं और कुण्डली के पहले घर के ग्रहों) का असर उम्र के पहले हिस्से (शुरु की तरफ से चल कर) में हो गया हो तो बाकी तरफ का असर बाद में होगा।
4. 35 साला चक्कर के सबब बाप बेटे की आयु का आपसी संबंध 70 साल में समाप्त माना गया है।
5. इस 35 साला चक्कर का पूरा इस्तेमाल वर्षफल के हाल में दर्ज है।
6. 35 साल चक्कर में हर ग्रह की अवधि में मध्यम ग्रहों की मियाद (वर्ष)।

किस ग्रह का दौरा	शुरु	मध्य	अंत
वृ० 6	के० 2	वृ० 2	सू० 2
सूर्य 2	सू० 8 मास	चं० 8 मास	मंगल 8 मास
चं० 1	वृ० 4 मास	सू० 4 मास	चन्द्र4मास
शु० 3	मं० 1	शु० 1	बुध 1
मं० 6	मं० 2	श० 2	शु० 2
बु० 2	चं० 8 मास	मं० 8 मास	वृ० 8 मास
श० 6	रा० 2	बु० 2	श० 2
रा० 6	मं० 2	के० 2	रा० 2
के० 3	श० 1	रा० 1	के० 1

जन्म दिन का ग्रह और जन्म समय का ग्रह :-

जिस दिन पैदाइश हो उस दिन का संबंध ग्रह जन्म दिन का ग्रह होगा। जिस वक्त पैदाइश हो उस वक्त का मुतल्लका ग्रह वक्त का ग्रह होगा। हफ्ते के दिनों की तरह ग्रह के नाम सोमवार से शनिवार तक सात ही हैं। हरेक सायंकाल को आठवां राहु, सुबह को 9 वां केतु होगा।

नोट :- अंग्रेजी ढंग से रात को 12 बजे नया दिन शुरु होता है परंतु ज्योतिष में सूर्य उदय से ही नया दिन शुरु होगा।

एक दिन के ग्रह का समय :-

सूर्य निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा वृ०, बाद पक्की दोपहर से पहिले (जो पहिले दिया है), चांदनी रात चंद्र का समय, अमावस की रात्रि शुक्र का समय होगा (विवरण पहले दे दिया गया है)।

जन्म दिन के और जन्म वक्त के ग्रहों का आपसी सम्बन्ध :-

1. जन्म दिन के ग्रह को गिनते हैं:- किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर या राशिफल का यानि जिसका उपाय हो सके।
2. जन्म वक्त के ग्रहों को गिनते हैं किस्मत का ग्रह और ग्रह फल का अटल (उपाय रहित)।
3. जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के पक्के घर का गिनेंगे अब

उदाहरण: मानों जन्म दिन का ग्रह - चंद्र

मानों जन्म दिन का ग्रह - राहु

तो जैसे अब राहु चंद्र के पक्के घर यानि खाना नं० 4 में होगा चूंकि जन्म दिन का ग्रह राशिफल या काबिल उपाय होगा माना है इसलिए नं० 4 राहु, खाना नं० 4 (रिश्तेदारों आदि का) कभी बुरा असर न देंगे। अगर कभी दे भी तो चन्द्र के उपाय से नेक असर होगा।

⟹इस अर्थ में ग्रहों के पक्के घर :-

ग्रह	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
खाना	9	1	4	7	3	7	10	12	6
दिन	वीरवार	रविवार	सोमवार	शुक्रवार	मंगलवार की शाम	बुधवार की सुबह	शनिवार	वीरवार	रविवार

⟹ सामान्य बातें :-

1. **शेष खाने:-** 2 धर्म स्थान, 5 औलाद, 8 मारक स्थान, 11 धर्म दरबार।
2. **पापी ग्रह :-** राहु, केतु, शनि।
3. **पाप ग्रह :-** राहु, केतु।
4. **मंगल दो है :-**

   मंगल नेक व मंगल बद।
5. **बुध :-** सूर्य श० मुश्तरका (रात दिन इकट्ठे) खाली बुध होते हैं । अगर बुरी खासियत ऐसे घरों में हो जहां सूर्य शनि और दोनों में से कोई भी मंदा हो तो न सिर्फ सूर्य 22 साला उम्र और शनि 36 साला उम्र तक नीच होगा बल्कि मं० भी बद और राहु भी मंदा होगा, चाहे मंगल या राहु कैसे भी उच्च या मंदा हो।
6. **अंधे ग्रह :-**

   अगर खाना नं० में 10 बाहम दुश्मन ग्रह हो या नीच हैसियत वगैरा रद्दी ग्रहों से खराब हो रहा हो तो टेवा अंधे ग्रहों का होगा और सभी ही ग्रह मय शनि स्वयं भी चाहे उच्च घरों के हो अंधों की तरह फल देंगे।
7. **रतांध ग्रह :-**

   मसलन खाना 4 में सूर्य और खाना 7 में शनि तो ऐसा टेवा रतांध होगा।
8. **धर्मी ग्रह :-**

   राहु और केतु खाना नं० 4 चन्द्र के सामने हल्फ उठाते हैं शनि खाना नं० 11 में वृहस्पति को हाजिर-नाजिर समझ कर राहु केतु के किये पापों का जज बनता है। यानि राहु और केतु खाना नं० 4 में या चन्द्र के साथ किसी भी घर में हो और शनि खाना नं०

11 में या वृहस्पति के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसे कुण्डली में पाप या पापी दोनों का बुरा असर न होगा और सब ग्रह धर्मी होंगे। ये ज़रूरी नहीं कि पापी अच्छा फल देगा पर बुरा नहीं करेंगे।

9. साथी ग्रह :-

जब कोई ग्रह अपनी राशि, उच्च, नीच घर की राशि या अपने पक्के घरों में अदल-बदल कर बैठे या अपनी जड़ों की लिहाज इकट्ठे हो तो साथी ग्रह बन जाते हैं। उदाहरण के तौर पर सूर्य नं० 10 और शनि नं० 5 साथी हैं।

10. कुण्डली के खानों की बीच की दीवार :-

हम साया ग्रहों यानि दोस्तों को तो मिलाती है मगर दुश्मनों को अलग-अलग ही रखती है। अत: दो मित्र ग्रह लगातार घरों में बैठे हो तो भी साथी कहलायेंगे जो एक-दूसरे का कभी बुरा न करेगें । मगर दुश्मन गिनने की हालत में दो खानों की दरमियानी लकीर उनको जुदा-जुदा रखेगी।

क्याफा :- एक रेखा के साथ दूसरी रेखा समानान्तर, एक ही किस्म की रेखा होगी, बशर्ते कि दोनों एक बुर्ज पर हो। ऐसे शाखों से मुराद होगी कि कोई अपना ही भाई बहन साथ चल रहा होगा या दूसरी शाखा अपने खून का संबंधी बताएगी।

11. बिनमुकाबिल के ग्रह :-

जो ग्रह आपस में दोस्त हों मगर ऐसी हालत में बैठे हों कि वो खुद तो दोस्त ही रहें पर उनमें से हर एक या किसी की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जाये तो लफ्ज़ बिनमुकबिल से याद होंगे क्योंकि अब उनमें किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है।

12. दुश्मनी से मारे हुए मंदा असर होने के वक्त ग्रहों के कुर्बानी के बकरे :-

यानि असली ग्रह के बजाय किसी दूसरे ग्रह की हालत खराब हो जाये या वो अपनी जगह दूसरे को मरवा डाले।

शनि :- दुश्मन से बचाव के लिए शनि ने राहु केतु एजेन्ट बनाये हैं कि वो शनि की जगह फौरन किसी दूसरे की कुर्बानी देते हैं।

(राहु केतु) = मसनुई शुक्र है अत: शनि को जब सूर्य का टकराव तंग करे तो खुद अपनी जगह औरत **(शुक्र)** को मरवा दे या सूर्य शनि के झगड़े में शुक्र मारा जाये। दोनों सूर्य शनि बचे रहेंगे क्योंकि ये बाप बेठा है। मसलन सूर्य 6 में और शनि 12 में औरत पर औरत मरती जाये।

बुध :- बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र से दोस्ती रखी है वो भी अपने दोस्त शुक्र की ही बलायें टालता है ।

मंगल :- बद (भाई) अपनी बला केतु (लड़के) पर टालता है, शेर कुत्ते को मरवा देगा। उदाहरण के लिए सूर्य 6 में मंगल खाना नं० 10 में हो तो लड़के पर लड़के (केतु) मरता जाये या भाई भतीज़े को मरवा दे।

शुक्र :- औरत शैतान स्वभाव अपनी बला चन्द्र (माता) को धकेल देगी। चन्द्र शुक्र बिन मुकाबिल हो माता अंधी हो ।

वृहस्पति :- साथी केतु कुर्बानी का बकरा हो। उदाहरण के लिए वृहस्पति खाना नं० 5 में और केतु किसी और घर में हो। अब अगर वृहस्पति की महादशा आये तो केतु का खाना नं० 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का नहीं जो खाना नं० 5 की चीज़ है, मामों को केतु की महादशा सात साल तकलीफ होगी।

सूर्य :- केतु पर नज़ला डाल देगा।

6 **चन्द्र :-** दोस्त ग्रहों वृहस्पति, सूर्य, मंगल पर बला टाल दे।

राहु केतु :- खुद ही निभाएंगे और अपनी ही मुतल्लका चीज़ों काम सम्बन्धी पर बुरा असर होगा।

नोट :- सूर्य, मंगल, वृ० इंसाफ के स्वामी होते हुए एक-दूसरे की मदद तो करेंगे और एक-दूसरे पर ज्यादती होते न देखेंगे मगर खुद मुसीबत में होने पर गरीब केतु को मरवा देते हैं।

धर्म स्थान :- धर्म पालन, पूजा पाठ, इष्ट सिद्धि हर मज़हब के लिए अपने श्रद्धा की जगह, नास्तिक के लिए चलता दरिया, नदी, शनि का चौराहा+धर्म स्थान का काम देगा।

13. कायम ग्रह :-

जो ग्रह दुरुस्त अपना असर, बगैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के, साफ और कायम दे रहा हो यानि राशि के स्वामित्व या उच्च-नीच या पक्के घर, दृष्टि वगैरा से भी इसमें दुश्मन का असर न मिल रहा है और न ही दुश्मन का साथी बन रहा हो तो कायम ग्रह होगा।

14. ग्रह का घर :- अपनी राशि के घर ग्रह के घर होंगे।

15. घर का ग्रह :- (पक्का घर) कारक ग्रह होंगे। उदाहरणत: बुध खाना का पक्का घर है।

16. सम, दुश्मन और दोस्त ग्रह :-

पिछली तालिका में देखें।

17. उच्च ग्रह, नीच या पक्के घर का ग्रह :-

हर ग्रह की उच्च-नीच, घर या पक्के घर दी गई लिस्ट में हैं :-

उच्च = 100 प्रतिशत शक्तिमान।

नीच = 100 प्रतिशत नामुकम्मल असर की ताकत।

18. बालिग और नाबालिग ग्रह :-

क्याफा :- 12 साल तक हस्त रेखा का कोई ऐतबार नहीं और 21 साल के बाद कोई तबदीली नहीं।

सूर्य खाना नं० 1, 5, 11 में हो तो या बुध खाना नं० 6 में हो तो टेवा बालिग होगा।

नाबालिग बच्चे की रेखा मुमकिन है कि पक्के असर की रेखा हो या तबदीली वाली हो। बच्चे की बन्द मुट्ठी और कुण्डली का खाना 1, 4, 7, 10 खाली हो या उनमें सिर्फ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से सिर्फ एक हो) तो टेवा नाबालिग ग्रहों का होगा। ऐसे प्राणी की किस्मत का हाल 12 साल उम्र तक शक्की होगा। ऐसी हालत में नाबालिग ग्रहों वाले बच्चे की किस्मत का मालिक नीचे दिये गये ग्रह होंगे, उम्र के हिसाब से असर खाना नं० देखें। अगर कुण्डली में कोई खाना खाली हो जाये तो उस खाना खाली नं० के मालिक ग्रह जिस खाने में हो वह खाना लेवे। बालिग ग्रहों के मामले में आम हालत सही होगी।

घर का मालिक	किस्मत के संबंध में किस खाने का असर मददगार लेंगे	नाबालिग ग्रहों का टेवा होने वाले बच्चे की उम्र का साल
शुक्र	7	1
चन्द्र	4	2
वृहस्पति	9	3
शनि	10	4
शनि	11	5
बुध	3	6
शुक्र	2	7
सूर्य	5	8
बुध केतु	6	9
वृहस्पति राहु	12	10
मंगल	1	11
मंगल	8	12

फरमान नं० 7 :- बुत से रुह ने अपना घर क्यों पूछ लिया :-

राशि मालिक है लेख की होती, या कि होता ग्रह मण्डल हो।
मिल के कटेगी उम्र दोनों की [1], कुण्डली जन्म चाहे चन्द्र हो।
घर पहले की उम्र 10 साल, 3, 9, 10, 12 की हो।
85 उम्र 4,7 की लेते, 8 होती घर 6 की।
75 या साल 75 ग्रह मन्दिर, घर दो की है।
घर और ग्रह की उम्र जुदा, पर गुजरती दो की इकट्ठी हो।
गुरु जगत् की उम्र 75, बुध केतु 8 होती हो।
शुक्र चन्द्र की उम्र 85, शनि मंगल राहु 9 हो।
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से, उम्र 96 होती हो।
साथ मिले जब बुध पापी का, वही 85 होती हो।
रवि मालिक है पूरी सदी का, उम्र लम्बी उसकी होती है।
ग्रहण लगे जब रवि चं० का, उम्र तीन साल कम होती है।

1- इस जगह लिखी उम्र ग्रह राशि की अपनी-अपनी है, इन उम्रों में इंसानी उम्र की कोई हदबन्दी नहीं होती। ये ग्रह अपने उम्र या घर की उम्र जो छोटी हो उस तक ही मनुष्य के जीवन में अपना असर दे सकेंगे।

ग्रह राशि का आपसी संबंध :-

(मेष वृश्चिक का मंगल स्वामी है वगैरा।)

नोट :- *ग्रह उच्च-नीच घरों में भी इसी प्रकार होते हैं :- जैसे राशियों में।*

केतु बैठा अगर कन्या राशि, राहु निवासी 12 का है।
पाप चढ़ा आसमान 12 पर, जड़ जिसकी पाताल में है।

राशि नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मालिक ग्रह	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	वृ०	श०	श०	वृ०
उच्च ग्रह	सू०	चं०	रा०	वृ० रा०	–	बु०/	श०	–	के०	मं०	–	शु०/ के०
नीच ग्रह	श०	–	के०	मं०	–	शु०/ के०	सू०	चं०	रा०	वृ०	–	बु०/ राहु०
पक्का घर	सू०	वृ०	मं०	चं०	वृ०	के०	बु/शु०	मं०/श	वृ०	श०	वृ०	रा०
किस्मत को जगाने वाला	मं०	चं०	बु०	चं०	सू०	रा०	शु०	चं०	वृ०	श०	वृ०	के०
ग्रहफल का	म०	रा०/ के०	श०	चं०	वृ० सू०	बु० के०	शु०	मं०	वृ०	श०	वृ०/ श०	रा०
राशिफल का	रा०	–	श० धन	म०/ शु०/के०	–	नरग्रह श०	सू०/ वृ०/रा०	–	श० के०	बु०/	–	बु०

नोटः- सात ग्रह और 12 राशि या 12 गुणा 7 = 84 की योनि का जंजाल या रात-दिन 84 लाख सांस का अजीब मसला पैदा हो चुका है। हर सातवें के बाद फिर वो ग्रह असर करते हैं या हर आठवें साल वही हालत हो जाती है। इसी असूल पर ग्रह व राशि का असर वहाँ मुश्तरका होते हैं। खाना नं० 2 में कोई नीच नहीं है, राहु केतु सिर्फ दोनों की मुश्तरका बैठक है जिसके राशिफल का ग्रह नहीं है यानि इस खाने का ग्रह अपने-अपने कर्मों पुण्य पाप की बजात खुद अपनी जांच से संबंध के करने-कराने के खुद अधिकारी है। खाना नं० 5 में उच्च-नीच नहीं है इस घर में बैठने वाला ग्रह अपनी खुद जाती कमाई/औलाद खुद की किस्मत का ग्रह होता है। खाना नं० 11 में भी कोई उच्च नहीं है ये आम दुनियां से किस्मत का लेन-देन है। खाना नं० 8 का उच्च नहीं होता न ी कोई मौत को मार सकता सिवाय चन्द्र के जो दिल की शांति या ग़ैबी मदद वगैरा है। दुनियां को माता माना तो इंसान को बच्चा ना है, माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला।

हु- केतु :-

गौर से देखने पर लगेगा राहु खाना नं० 12 में घर का मालिक पक्का घर में है पर नीच भी है। केतु खाना नं० 6 में नीच और मालिक है। मतलब यह है कि राहु जब वृहस्पति के घर खाना नं० 12 में हो तो नीच होगा, हालांकि वृहस्पति और राहु बाहम दुश्मन नहीं हैं। राहु के वक्त जब वृ० राहु इकट्ठा हो तो वृहस्पति चुप होगा। राहु— आसमान खाना नं० 12 नीला रंग माना है वृहस्पति की हवा को जब आसमान का साथ मिले तो ज्यों-ज्यों हवा आसमान की ओर होती जायेगी, हल्की होती जायेगी और दुनियादारी के सांस लेने के संबंध में निकम्मी होती जायेगी। लेकिन वही वृहस्पति की हवा नीचे की तरफ होती जायेगी तो केतु के साथ होती जायेगी तो हर एक की मददगार होगी। इस असूल पर (राहु, वृहस्पति) में न सिर्फ वृ० का हाल चुप होगा बल्कि राहु भी बुरा असर देगा या दमा, सांस वृहस्पति की ताकत, दम घुटने पर नतीजा मंदा होगा। इसके खिलाफ राहु को बुध के खाली आकाश में खुला मैदान मिलता जाये तो खाना नं० 12 के आसमान की बजाय बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल ज़रूर ही अच्छा बल्कि उम्दा असर देगा। यह राहु को बुध के खाना नं० 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु है भी बुध का दोस्त। अतः दोनों का फल उम्दा होगा या दोनों ही खाना नं० 6 में हैं उच्च फल के और दोनों में से हरेक या दोनों ही खाना नं० 12 में मन्दे फल के होंगे। राहु को फर्जी तौर पर आसमान माने तो यह फर्जी दीवार वृहस्पति को साफ कह देगी कि वृ० तुम मेरे ऊपर ग़ैबी दूसरी (परलोक) दुनियां या मेरे नीचे दुनियां (लोक) में से एक तरफ ही रहो या गोया राहु ने वृ० को एक तरफ कर दिया या राहु के साथ वृ० दो जहानों में से एक ही जहान का मालिक रह जाता है, या दो में से एक तरफ के लिए वृहस्पति चुप ही गिना जाता है।

क्याफा :- (हमसाये ग्रह) :- हथेली के बाहरी हद का प्रभाव

1. अंगूठा व तर्जनी की जड़ के बीच का फासला जिसमें मंगल नेक व वृ० है = हौंसला या अंदरुनी दिली ताकत का संबंध।
2. तर्जनी और मध्यमा का फासला = वृ० और शनि के बीच = विचार शक्ति।
3. मध्यमा और अनामिका का फासला = श० और सूर्य के बीच = ख्यालात की आज़ादी, मौके की तरह लट्टू की तरह पहलू बदले।
4. अनामिका और कनिष्ठका का फासला = सूर्य और बुध के बीच = खुद काम करने की ताकत तथा आदत अधिक, दूसरों की कमाई की तरफ उम्मीद रखने की बजाय स्वयं अपनी कमाई से संतुष्ट।
5. कनिष्ठका की जड़ और बुध का भाग अगर हथेली के बाहर की और निकला हो तो सिर्फ बुध के पर्वत की हद— बोलने की ताकत, लोगों में रसूख पैदा करने की ताकत ज्यादा।

6. शुक्र की जड़ से चन्द्र की ज ड़ का भाग (कलाई का चौड़ापन) दिली मुहब्बत और लगन, शुक्र या औरत की लगन्र, इश्क मुहब्बत, नफसानी, माता-पिता के बुर्जुगों की सेवा से सम्बन्धित है।

हथेली के चारों तरफ :-

1. बुध से चन्द्र की तरफ वाला भाग जिस कदर लम्बा और ज्यादा उसी कदर बोलने की ज़ुबान की ताकत ज्यादा। जिस कदर कनिष्ठका जड़ से बाहर उभरी और निकली हो उसी तरह मेल-मिलापपैदा किया और पैदा करने की शक्ति।

2. वृहस्पति से बुध की तरफ उंगली की जड़ वाला भाग लम्बाई में ज्यादा उसी कदर ज़हनी ताकत, दिमाग़ी ताकत ज्यादा उसी कदर बुध के पर्वत की मज़बूती होगी।

3. शुक्र से चन्द्रमा जिस कदर लम्बाई ज्यादा हो शुक्र की ताकत ज्यादा शुक्र का असर ज्यादा जायेगा।

4. शुक्र की जड़ से वृहस्पति तक जिस कदर लम्बाई ज्यादा उसी कदर जाती हिस्सा हौसला ज्यादा या अंगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का प्रभाव ज्यादा होगा।

हथेली की किस्में :-

1. हथेली मोटी या भारी :- लालची होगा। मामुली रहने की ज़िन्दगी वाला, क्योंकि इस हालत में तर्जनी— हासिद, मध्यमा— बेबुनियाद ख्यालात, अनामिका— मशहूरी पसन्द, कनिष्ठका— बेवफा जाहिर करे।

2. हथेली पतली कमज़ोर सी :- गरीबाना हालत या गरीब सा दीनदार वाला होगा।

3. हथेली लम्बी :- ज़ुबान से जाहिरदारी या जाहिर करने की ताकत लम्बाई के हिसाब से होगी।

4. लम्बी व गोल हथेली :- हुक्मरान, हंसमुख, सुथरी हालत।

केतु :- बुध के साथ या खाना नं० 6 में हो तो नीच होगा। लेकिन वृहस्पति केतु इकट्ठे हो तो वे उच्च का फल देगा। केतु वृहस्पति के साथ बराबर का फल देगा। राहु केतु अपने से सातवें देखने के असूल पर के ग्रह है। अब राहु अगर 3-6 के बुध के घर में उच्च हो तो केतु 3-6 में नीच होगा। यही हाल केतु 9-12 में हो तो उच्च में होगा। राहु 9-12 में नीच होगा। गरज़े राहु केतु को अपने दायरे में चलाने वाला हो।

बुध :- जब बुध राहु के घर 12 में नीच होगा क्योंकि खाना नं० 12 उसके दुश्मन ग्रह वृहस्पति का है और जब बुध ही केतु के घर खाना नं० 6 में हो तो उच्च का होगा क्योंकि यह राशि 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध और केतु आपस में बराबर के ग्रह हैं। दोनों ही शुक्र के दोस्त हैं। बुध पर कोई प्रभाव नहीं होगा परन्तु केतु शुक्र दोनों ही खाना नं० 6 में नीच होंगे। वृहस्पति के साथ वृहस्पति के खानों में राहु हाथी का तेंदुआ होगा या वृहस्पति के साथ वृहस्पति के घरों में राहु बुरा फल देगा और नीच होगा। बुध के साथ या बुध के घरों में केतु कुत्ते को सर पागल या दीवाना नीच फल का होगा क्योंकि केतु राहु मुश्तरका के लिए खाना नं० 6-12 भी बुध वृहस्पति के हैं जहां कि उन्हें जगह मिली।

1. खाना नं० 6 बाहैसियत मालिक ग्रह :- खाना नं० 6 के बुध केतु मुश्तरका माने गये हैं जब खाना नं० 6 खाली है और बुध 3 में हो तो खाना नं० 6 का खाली खाना नं० 6 का मालिक केतु को लेंगे। लेकिन जब बुध खाना नं० 3 में न हो, खाली नं० 6 के लिए बुध और केतु में से वो मालिक होंगे जो कि टेवे में दोनों में अच्छा होगा।

2. खाना नं० 12 बाहैसियत मालिक ग्रह :- खाना नं० 12 के मालिक राहु और वृहस्पति मुश्तरका माने हैं। जब नं० 12 खाली हो तथा वृहस्पति खाना नं० 9 में न हो तो खाना नं०12 का मालिक राहु होगा। लेकिन जब वृहस्पति 9 में हो तो खाना नं० 12 के लिए वृहस्पति और राहु मुश्तरका दोनों का नकली ग्रह बुध (आकाश) लेंगे।

3. केतु खाना नं० 6, राहु खाना नं० 12 में नीच होंगे, घर के मालिक भी। उनकी शक्की हालत के लिए जब राहु को बुध और केतु को वृहस्पति की मदद मिले यानि राहु खाना 3-6 में और केतु 9-12 में हो तो दोनों ही उच्च होंगे वरना नीच होंगे। यानि राहु 9-12 में नीच होगा, केतु 3-6 में नीच होगा।

विस्तृत :- जैसा बुध टेबे में हो वैसा राहु नं०12 का भी असर होगा। जैसा वृहस्पति टेवे में हो वैसा केतु नं० 6 का प्रभाव होगा।

ग्रह बुर्ज या राशियों की भ्रम :-

राशि से मतलब यह है कि मकान की ज़मीन और उसके मालिक से मुराद है मकान की इमारत की।

क्याफा :- बुर्जो को पक्के बतौर पर जगह मुकर्रर कर दिया गया है। इसी तरह से राशियों के लिए भी हमेशा के लिए जगह मुकर्रर कर दी गई। ग्रहों के लिए रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर होंगे और राशियों के लिए निश्चित उंगलियों की पोरी की राशि का पक्के घर है। हर पर्वत या ग्रह और राशि का निशान निश्चित है। ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म या ताकत या प्रभाव लेंगे।

मगर उसके लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए मुकर्रर हो वही मुकाम इस ग्रह का घर होगा चाहे ग्रह खुद किसी दूसरे के घर में हो। इसी तरह ही राशियों के हाल में यानि राशि की जगह उंगली की पोरी पर है वह राशि का घर है। जो निशान राशि का है वह राशि का है वह राशि का दिया असर या जिस्म या वजूद होगा। इसी तरह किसी बुर्ज का निशान किसी दूसरे के घर में पाया जाये तो कहेंगे कि वे ग्रह इसी ग्रह के घर में चला गया है। उदाहरण के तौर पर अगर सूर्य का सितारा चन्द्रमा के बुर्ज पर स्थित है तो चन्द्रमा के घर में सूर्य गिना जायेगा और अगर यही सितारा शुक्र के घर पर हो तो शुक्र के घर में सूर्य को कहेंगे, अब सूर्य और शुक्र का या सूर्य चन्द्रमा का आपस में संबंध हो वही प्रभाव होगा। इसी तरह हर राशि के निशान का प्रभाव लेंगे। यह ज़रूरी नहीं कि हर राशि का निशान उंगली की पोरी पर स्थित हो जहां कि उस राशि का मुकाम निश्चित होगा और अगर कोई भी निशान राशि का ना पाया जावे तो हैरानी की बात नहीं, ग्रहों या बुर्जों से पता चलेगा।

फरमान नं० 8 :- (12 पक्के घर)

प्राचीन ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली बनाई गई उसमें दिये गये तमाम के तमाम अंक (राशिएं) मिटा दिये, मगर ग्रह जहाँ है वहीं ही रहने दिये। फिर लग्न के घर में मेष (नं० 1) लिखा गया और राशियों से भर दिया। अब यह घर लग्न को 1 गिनकर फलादेश देखने के लिए हमेशा के लिए ही मुकर्रर हो गये और इस इल्म को 12 पक्के घर कहा गया।

खाना नं० 1

(लग्न का घर या कुण्डली का पक्का घर)

शाह सलामत का तख्त बादशाही या हुजूर का क दम मुबारक।

ग्रह का पहिला है तख्त हज़ारी, ग्रह फल राजा कुण्डली का।
ज्योतिष में इसे लगन भी कहने, झगडा जहाँ रहे माया का।
उच्च बैठे ग्रह उत्तम कितने, दस्ती लिखा विधाता का हो।
खाली पड़ा घर 7 जब टेवे, शक्की असर कुल ग्रह का हो।
लग्न बैठा ग्रह तख्त निशानी, राज शाही तब करता हो।
आँख गिना घर आठ है उसकी, 11 से हरदम चलता हो।
अकेला तख्त पर बहुत हो सात में, राज वज़ीरी होती है।
उल्ट गया मगर जब टेवे बैठे, जड़ सातवें की कटती है।
उच्च-नीच[1] जो गिने घरों के, वहं नहीं एक साथ लड़ते।
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते, उम्र से भी कुछ मरते है[2]

1. खाना नं० 1 में सूर्य उच्च, शनि नीच है। मंगल घर का ग्रह होगा और 7 वें शनि उच्च, सूर्य नीच, शुक्र घर का ग्रह होगा।
2. मसलन खाना नं० 1 में वृ०, चं०, बुध, राहु चार ग्रह में और 7 वें अकेला केतु हो तो 35 साल बुध की मियाद तक नर औलाद केतु नदारद और या पैदा होकर मर जाये और 48 साल उम्र बल्कि केतु की मियाद तक एक ही लड़का कायम रहे और 48 साल उम्र से दूसरा लड़का कायम होवे तो बुध (लड़की) बेघर बेइज्जती या मंदे नतीजों या बर्बाद होगी। टेवे वाला असर चार जानदार (कन्या, घोड़ा, गाय और तोता) कोई भी चार को रोटी का हिस्सा देवे तो नर औलाद कायम होगी और औलाद पैदा होने के दिन से चन्द्र, राहु, वृहस्पति, बुध मुश्तरका राजयोग होंगे, वरना चन्द्र, राहु, बुध, वृहस्पति के उम्दा असर की बजाय खाक या हर तरह से लानत नसीब होगी और जिस वक्त टेवे में असल मंगल के अलावा मसनुई मंगल नेक (सूर्य, बुध) या मसनुई मंगल बद (सूर्य, शनि) दोनों ही मौजूद हो तो वो नं० 1 देखेगा नं० 11 को, जब नं० 11 खाली हो तो नं० 1 का ग्रह अपने प्रभाव के संबंध में मेढें, या बुध की चाल पर जैसा कि वह उस वक्त टेवे में हो, चलेगा। उसी तरह यही जब नं० 8 खाली हो तो नं० 1 में ज्यादा ग्रह हो तो खाना नं० 1 का मुनसिफ इंसाफ करने वाला शुक्र होगा जैसे कि इस वक्त वो टेवे (खाना नं० 1 में ही) बैठा होगा। तख्त पर बैठे ग्रह चाली हुक्मरान राजा के अहद में उसके लिए खाना नं० 1 लैंस और खाना नं- 8 फोकसिंग गलास और 11 रैगुलेटर होंगे ।

हर ग्रह की हुकूमत यानि खाना नं० 1 में आने के वक्त दूसरे ग्रहों की उसके मुकाबल में ताकत का पैमाना :-

वृहस्पति के वक्त :- यह ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता, चन्द्र 1/2, शनि 3/4, केतु 5/6, शुक्र 15/4 होगा। वृहस्पति खुद सूर्य और राहु के वक्त चुप होगा मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना आधा अर्सा यानि 8 साल हमेशा नेक होगा और दुश्मनी का असर अगले 8 साल के बाद हो सकेगा।

सूर्य के वक्त :- यह ग्रह खुद नीच न होगा। शुक्र के साथ हो तो शुक्र नीच होगा। मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा यानि फूल होंगे पर फल न होगा। केतु 1/2, बुध 1/2, शनि खुद अपने लिए बराये दौलत के लिए 2/3, वालिद के लिए 1/2, जायदाद के लिए 1/3 हो।

चन्द्र के वक्त :- इससे कोई दुश्मनी नहीं करता यह खुद अपना नेक असर किसी के साथ होने पर घटा लेता है, राहु 1/2 होगा।

शुक्र के वक्त :- यह किसी को नीच नहीं करता दूसरे चाहे इसको नीच करे, चं० 1/2, शनि 1/3 होगा।

शनि के वक्त :- चन्द्र 1/3, केतु 1/2 होगा।

बुध के वक्त :- शनि 5/4, केतु 1/4, चन्द्र 1/2 होगा।

मंगल नेक के वक्त :- शुक्र, शनि, मंगल बद तीनों ही 1/3 हरेक, केतु तथा बुध 1/2 हरेक, राहु सिफर होगा।
राहु के वक्त :- सूर्य, चन्द्र 1/2 होगा।
केतु के वक्त :- चन्द्र, सूर्य 1/2 होगा।

खाना नं० 2 :-

(धर्म स्थान, उम्र बुढ़ापा)

घर चल कर जो आवे दूजे, ग्रह किस्मत बन जाता हो।
खाली पड़ा घर 10 जब टेवे, सोया हुआ कहलाता हो।
बुनियाद समुद्र ग्रह 9 होते [1], पहाड़ ऊंचा घर 2 का हो।
चाल असर ग्रह दूजे बैठे, जेर (नीचे) असर गुरु साया हो।
हवा बारिश जो 9 में चलती, टक्कर दूजे [3] पर खाती हो।
आठ पड़ा जब तक घर[4] खाली, असर भूला ही देती हो।
शुरु उम्र असर दूजे का, घर 6 में पड़ता हो।
जाती असर नेक जो अपना, वक्त बुढ़ापे बढ़ता हो।
बुनियाद मंदिर [2] घर चोथा गिनते, आठ छठे से मिलते जो।
खाली होते गुरु मंदिर टेवे, असर रुहानी उम्दा जो।
गुरु जहां 2 मंदिर कच्चा [8], पाप बैठक खुद साथी हो।
मारक घर से गुरु भी डरता, आठ दृष्टि खाली जो।
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बन्द मुट्ठी [7] के खानों में।
फल 2,11 अपने-अपने, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा (नं:11) में।
ज्ञान समुद्र घर 9 वें का, या कल उम्र हो पहले का।
सफेद झंडा को हम साय झूले, उम्र बुढ़ापा घर दो का।
पाप की बैठक घर 2 गुरु के, गृहस्थी शुक्र भी बनता जो।
लेख जगत् का मस्तक गिनते, मौत जन्म जहान मिलता हो।

इस घर में मं० बद के नकली ग्रह [5] और पापी ग्रह [6] खुद टेवे वाले पर मन्दा प्रभाव न देंगे बल्कि इस घर में बैठा राहु भी वृ० के मातहत होगा। सब ग्रह अपना तमाम फल जो उनमें से हर एक का खाना नं० 9 में दिया है जातक काा उम्र के आखिरी हिस्से में देंगे। जैसे खाना नं० 9 में शनि का फल 60 साल लिखा है जो टेवे वाले की उम्र शुरु की तरफ से गिनकर बुढ़ापे की तरफ होगा। लेकिन जब श० खाना नं० 2 में हो तो शनि का वही असर मौत के दिन की तरफ से जन्म दिन की तरफ को गिनकर 6 साल होगा। इसी तरह बाकी भी प्रभाव देंगे।

1. खाना नं० 2 हमेशा 9 ही ग्रहों या खाना नं० 9, जो समुद्र गिना जायेगा, की बुनियाद होगा मगर खुद नं० 2 की मियाद खाना नं० 4 होगा।
2. जैसा भी वृ० टेवे में हो वैसी ही हवा के झोकों से साथ होगी।
3. खाना नं० 8 देखता है खाना नं० 2 को, खाना नं० 2 देखता है नं० 6 को, इसी तरह खाना नं० 2 में खाना नं० 8 का और खाना नं० 6 का आपसी संबंध हो जाता है।
4. खाना नं० 8 खाली हो तो खाना नं० 2 उम्दा होगा, मगर जब खाना नं० 2 खाली हो तो सब कुछ उम्दा होगा। वृ० नं० 2 और खाना नं० 8 खाली के वक्त पर वृ० मंदा ही होगा और वृ० की हवा मंदी आंधी होगी जो हर तरह का नुक्सान करेगी। मगर नं० 9 बरसाती हवा मौनसून के उठने का समुद्र हो तो खाना नं० 2 बारिश से लदी हवा से टकरा कर बरसाने वाला कोई पहाड़ों का लम्बा सिलसिला होगा।
5. मंगल बद (सूर्य, शनि)
6. पापी ग्रह (राहु, केतु, शनि)
7. खाना नं० 1, 7, 4, 10
8. इस ग्रह के आखिरी उम्र बुढ़ापे में हमेशा नेक फल देंगे, किसी दूसरे असूल में कितने ही मंदे क्यों न हो।

धर्म स्थान या पेशानी का दरवाज़ा :-

दोनों भावों की दरमियानी मर्कज, जो नाक का आखिरी हिस्सा है जहाँ तिलक लगाने की जगह है, खाना नं० 2 की असली जगह है। इस तिलक लगाने की निशान की जगह को छोड़ कर माथे की बाकी जगह पेशानी होती है जिसका जिक्र खाना नं० 11 में है। जब खाना न० 2 हर तरह और हर तरफ खाना नं० 8 की दृष्टि वगैरा से खाली हो तो खाना नं० 2 को तिलक की जगह गिनते हैं। इस खाना नं० 2 में हवाई ख्याल की तमाम ताकत में राहु केतु मुश्तरका की या नकली शुक्र की जगह को मानते हैं। खाना नं० 8 का प्रभाव जाता है खाना नं० 2 में और 2 देखता है 6 को। खाना नं० 2 का फैसला 2, 6, 8 को मिलाकर दूसरे शब्दों में खाना नं० 8 को अगर राहु केतु की शनि के साथ होने की बैठक माने तो उस बैठक में बैठ कर या मौत के दीवान खाने का दरवाज़ा नं० 2 सिर्फ राहु केतु की अपनी नेकी बदी का मैदान मंदिर मस्जिद आदि होगा। इस धर्म स्थान का दरवाजा दोनों भावों के बीच होगा जिसका मालिक दोनों जहानों का स्वामी वृ० है। जिसके रास्ते की लम्बाई के दोनों सिरों पर सू०, श० और दिन-रात गिनते हैं, यानि

दुनियां से बाहर नं० 8, नं० 11 के साथ वृ० की दूसरी ताकत खाना नं० 5 भविष्य, खाना नं० 9 भूतकाल के बीच जमाना हाल, वर्तमान नं० 1 या बंद मुट्ठी के खाने 1, 4, 7, 10 होगा। उसी तरह ही खाना नं० 2 ने कुल दुनियां से ताल्लुक न छोड़ा जिस तरह खाना नं० 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी। अगर नाभि तमाम जिस्म का बीच या बंद मुट्ठी के खाना साथ लाये खज़ाना नं० 4, तिलक की जगह या दुनियां में बच्चों के लिए बाकी सब तरफ मिलने मिलाने वाला खज़ाने का भेदी खाना नं० 2 होगा। यानि खाना नं० 4 बढ़ाता है चन्द्र को, खाना नं० 2 बढ़ाता है वृ० को दोनों मिले मिलाये माता-पिता या अकेला वृ० दोनों जहानों का मालिक है जो बच्चों को मदद देने के लिए खाना नं० 5 में सूर्य के साथ और 11 में श० के साथ जा मिलता है, वृ० की इस लम्बाई को सब की लम्बाई गिनते है चाहे चेहरे की (खाना नं० 6 में देखें) हो चाहे पेशानी की (खाना नं० 11 देखें)।

तिलक की विशेष जगह वृ० का खाना नं० 2 राहु केतु आपसी की बैठक की जगह, मसनुई शुक्र की राशि भी है, का दरवाज़ा है, खाना नं० 2 में ग्रहों का असर खाना नं० 8 सहित है। पेशानी पर तिलक लगाने की जगह त्रिकोण या केतु का निशान यानि खाना नं० 2 में हर तरह से अकेला केतु हो तो हुक्मरान गरीब होगा।

अंगूठा :- चाहे हाथ का या पांव का :-

जिस तरह सिर के ढांचे का मालिक बुध और उसके आन्तरिक दिमाग़ में हवाई ख्याल की लहरें पैदा करने की ताकत का मालिक राहु है। इंसानी दिल का चन्द्र, जिसमें लहरों को उछालने या गिराने का बानी करने वाला ग्रहचाली पाप राहु केतु दोनों इकट्ठे है। इस पाप की बैठक खाना नं० 2 जिसका ताल्लुक शनि से होगा इन्सानी अंगूठे पर मानी गई है। अंगूठा जिस कदर लम्बा होगा उसी कदर ज्यादा संभोग पर काबू पा सकने वाला होगा। अंगूठा जिस कदर छोटा होगा उसी कदर ज्यादा वहशी हैवानी ताकत ज्यादा है— तंग हैसियत जिद्दी। अंगूठा जिस कदर मोटा हो उस कदर ही ज्यादा गरीब होगा अगर अंगूठा सीधा रहता हुआ मालूम हो, और अंगूठे की नाखुन वाली पोरी पीठ की तरफ झुकी हो तो— इसका धन-दौलत दूसरे दुनियांवी साथियों के काम बहुत लगे, जातक खुद नर्म दिल हो।

पोरी का हिस्सा	उसकी हालत	उम्र का हिस्सा, तासीर वा ताकत
नाखुन वाली पोरी : कुण्डली का खाना नं० 6 केतु से सम्बन्धित, मनमर्ज़ी इच्छा शक्ति	जिस कदर हथेली की तरफ झुके उसी कदर ज्यादा इसका धन-दौलत फैलना दूसरों के काम लगे, वह खुद नरम रुहानी दिल होगा। उल्ट हालत में उल्ट ताकत। नतीजे होंगे।	बचपन
दरमियानी : खाना नं० 12 दलील सोच विचार की ताकत राहु से संबंधित	जिस कदर ज्यादा लम्बी हो उसी कदर दलीलबाज सिकुड़ना और होनहार प्राणी होगा। शारीरिक ताकत।	जवानी
निचली पोरी : खाना नं० 2 इश्क शुक्र से सम्बन्धित	जिस कदर ज्यादा छोटी हो। उसी कदर ही ज्यादा जादू मंत्र इंसानी की इच्छा और जंग, नफसानी (संभोग का इच्छुक) में गर्क ताकत रहने वाला होगा।	बुढ़ापा भावनात्मक।

खाना नं० 3

(इस दुनियां से कूच का वक्त, राहे रवानगी, बीमारी इत्यादि)

इस घर का रंग है खूनी, असर होता भी है खूनी।
होता जभी इस घर जुल्मी ग्रह, देता असर वो कष्टी है।
पापी अगर हो अच्छा टेवे, कष्ट सभी ग्रह कटता हो।
तीन मंदा काने, पग 12 अच्छा उसके, असर खाना 8 करता हो।
अगर मंदे घर तीसरा बैठे, बुरा मालिक नहीं करते है।

खून दृष्टि ज़ुल्म से अपने, जहर बाहर ही भरते है।
उम्र पहलों हो ग्यारह शक्की, ग्रह तीजे जब मन्दा हो।
मौत रुकेगी आठ से उठती, बैठा तीजे चाहे कैसा हो।
ग्रह जब तक कोई तीसरे बैठा, मौत टेवा [1] न पाता हो।
भेद गुरु से बेशक खुलता, फैसला बुध से होता है।
(वृ०) माया दौलत जो ग्यारह आती, भाग तीजे से जाती हो।
तासीर मं० हो टेवे जैमी, हाल वही कर पाती हो।

1. जब नं० 3 में पापी बैठे हो और 6, 8 भी मंदे हो तो अगर मौत नहीं तो बहाना मौत ज़रूर खड़ा कर देंगे लेकिन खाना न० 12 का ग्रह चाहे शत्रु हो नं० 3 को सहायता दे। मंगल नं० 12 केतु न० 3 तो मच्छ रेखा वास्ते दुश्मन, हालांकि मं०, के० दुश्मन है। इसी तरह ही बुध नं० 12 और श०, वृ० तीन हो— अमृतकुंड, हर तरह की बरकत का ज़माना होगा। इसी तरह खाना नं० 12 में रा०, शु० हो तो जाहिर तौर पर 21, 25 साल की आयु से विधवा होना जाहिर होगा, लेकिन उसी वक्त ही खाना नं० 3 में श० हो तो राहु का शुक्र पर कोई असर न होगा, क्योंकि श०, शु० को हर तरफ से मदद देगा। लेकिन जब नं० 3 में मुश्तरका ग्रहों की 12 तीन के ग्रहों की बाहमी दोस्ती-दुश्मनी बहाल होगी।

खाना नं० 4 :-

(माता की गोद, पेट का ज़माना)

ग्रह चौथे [1] के रात को जागे, या जागे वो मुसीबत में।
मदद कोई हो न जब करता, आ तारे वो बुढ़ापे में।
ग्रह चौथे हो जो कोई बैठा [5], तासीर चन्द्र वो होता हो।
असर मगर हो उस घर जाता, शनि जहाँ टेवे बैठा हो।
खाली होते चौथा मन्दिर [2], आखिर उम्र तक उन्नति हो।
चन्द्र का फल, घर दे चन्द्र, बैठा चन्द्र चाहे नष्टी हो [4],
पाप बैठा घर चन्द्र माता [3], बुध शनि दो उम्दा हो।
आठ तीजा 6 टेवे मंदा, मौत बहाना चौथा हो।
तख्त पावे [6] जब चौथा टेवे, राहु मन्दा खुद होता हो।
मुट्ठी [7], चन्द्र [2] आठ 11 बैठे, अकेला चौथे [8] न मन्दा हो।
चार समुद्र ग्रह 9 नाभि [9], मुर्दा कोई न रखता हो।
तीनों मित्र ग्रह नर शरण माता की, पेट अन्दर कुल पलता हो।

1. ग्रह (संबंधित के काम) रात के वक्त फायदा होगा।
2. मानिद नं० 2 या खुद चन्द्र नं० 2 जो कि उच्च उत्तम फल देता है।
3. इस घर में शनि ज़हरीला सांप मंगल, जला हुआ मंगल बद हो सकता है मगर राहु केतु धर्मात्मा ही होंगे या यूं कहो राहु केतु केवल चुप होंगे मगर किसी भी और दूसरी जगह मंदे काम छोड़ने का वायदा नहीं करते क्योंकि यह तो उनके खून की बुनियाद है। बल्कि हो सकता है उनके चुप रहने से लाभ की अपेक्षा नुक्सान हो जैसा दण्ड देने के अधिकार का स्वामी अगर शरारती को न डांटे तो अत्याचार और भी बढ़ता है।
4. चन्द्र मुट्ठी— खाना नं० 1, 4, 7, 10 से बाहर हो और खाना नं० चार खाली हो तो चन्द्र का सब ग्रहों, खुद चन्द्र सहित पर नेक असर होगा चाहे चन्द्र खुद कितना ही निकम्मा हो।
5. खाना नं० 4 में कोई भी अकेला ग्रह हो तो और चन्द्र उस वक्त बंद मुट्ठी से बाहर कहीं भी खराब हो रहा हो :- उदाहरणतय: खाना नं० 8 में नीच और 11 में चन्द्र शुन्य, निष्पक्ष मंदा हो तो वो खाना नं० 4 वाला ग्रह नेक असर ही देगा चाहे वो चन्द्र का दुश्मन क्यों न हो।
   हाथ की सबसे आखिरी जगह गैबी हालात दिल की अन्दरुनी चाल या रात का ज़माना, चन्द्र का पर्वत बताता है।
6. 4, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 88, 100, 114 साल उम्र।
7. खाना नं० 1, 4, 7, 10 ।
8. मंगल बद या मंगलीक या कोई अकेला ग्रह।
9. नर ग्रह सूर्य, मंगल, वृ० मित्र चन्द्र का दोस्त सूर्य बुध तो पेट में पालना करे। शत्रु— लेकिन चन्द्र का दुश्मन राहु केतु तो समुद्र को भी बाहर कर देगा। जब वो दुश्मनी करे यानि जब तक राहु केतु मुतल्लका की चीज़ें नेक प्रभाव देंगे नहीं तो वो स्वयं बर्बाद हो जाएंगे।

खाना नं 5

औलाद (भविष्य)

गुरु टेवे में जब तक उम्दा, औलाद दु:खी न होती हो।
पांच [1] पापी गुरु मंदा टेवे, बिजली चमक आ देती हो।
शनि [2] शुक्र या 2 कोई मंदा, f बज़ली कड़कती मंदी हो।
चन्द्र भला हो चमक हो उम्दा, असर हालत दो जल्दी [3] हो।
वज़ह चमक घर तीसरे होगी, कड़क निशानी 11 हो।
तीन खाली आठ से पड़ती, उल्ट हालत पड़े आठ पर हो।
घर तीन या 4 हो 9 मंदा, बुरा असर 5 होता हो।
6, 1 इवे चाहे दोस्त उसका, शत्रु ज़हरी आ होता हो।
अपना लिखा अहवाल आइन्दा, गुरु रवि से चलता हो।
केतु भला तो सब कुछ उम्दा, राहु मन्दे सब उल्टा हो।

1. खाना नं० 6, 10 के ज़हर के बचाव के लिए नं० 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ें (पाताल 6) या जद्दी या बुज़ुर्गी मकान (नं० 10) में कायम करें जब तक नं० 8 मंदा नहीं। लेकिन अगर नं० 8 मंदा हो तो नं० 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ सिर्फ पाताल नं० 6 में तहज़मीन में दबाने से मदद होगी क्योंकि नं० 10 दोगुनी रफ्तार से चलता है और जब नं० 8 मंदा हो तो नं० 10 दोगुना मंदा होगा। पक्का घर नं० 10 देखें।

उदाहरण:- वृ० नं० 10 शु० नं० 11, केतु नं० 8, शनि राहु नं० 5, औरत (शुक्र) को जुलाब, (केतु की बीमारी) के बाद लड़के (केतु पर मंदा असर), उपाय- लड़के के वज़न के बराबर 25 शुक्र का, 48— केतू दिन आटे की रोटियां कुत्तों को दें।

2. शनि या शुक्र या दोनों जब कभी मंदे हो तो दोनों की हालत के मुताबिक फौरन मंदा होगा। लेकिन अगर चन्द्र उस वक्त भला हो तो वो मंदी हालत फौरन ही बदल कर उत्तम असर होगा।

3. खाना नं० 5 में अगर सू०,वृ०/सू०, शु० हो तो जब शुक्र या कोई पापी नं० 1 में आवे अपनी सेहत के संबंध में मंदा वक्त होगा। लेकिन अगर नं० 2 में शुक्र बुध या कोई पापी हो तो सूर्य या वृ० के खुद नं० 1 में आने के वक्त सेहत के ताल्लुक में मंदा ज़माना होगा। वृहस्पति की वज़ह से पैदा हुई (जब वृ० 5 में हो) बीमारी कई औलाद के पैदा हो चुकने के बाद खत्म होगी।

खाना नं० 6 :-

(दुनियावी जड़, पाताल की दुनियां, रहम का खज़ाना, खुफिया मदद)

पाताल खाली [1] जब तक रहता, नेक असर कुल देता हो।
दूजे बैठे की पहली अवस्था [2], असर छठे पर होता हो।
उम्र मंदी ग्रह खुद वो [3] होगा, घर 6 में आ बैठे जो।
लाख उपाय करें न टलता, ग्रह [4] फल जिसका लिखा हो।
अकेला बैठा हो या मुश्तरका, बन्द मुट्ठी के खानों में।
9 ही ग्रह पाताल में बैठे, देखा [5] करे उन तरफों में।
1, 5 में का दुश्मन ज़हरी, हुक्म राहु का पाता हो।
साथ में मगर दो आठ दृष्टि, फैसला 6 का होता हो [6]।

1. खाना नं० 6 खाली हो, 2, 12 के ग्रह दोनों ही तरफ से सिवाय होंगे, अत: खाना नं० 2 में अच्छे और 12 में भी उत्तम ग्रह हो तो नं० 6 को जगा लेना मददगार होगा। यानि टेवे वाला अगर अपने मामे खानदान या अपनी लड़कियों, बच्चों की सेवा करता रहे तो उत्तम असर देगा या नं० 6 के ग्रह नं० 2 या 12 के लिये बिज़ली का बटन दबाने वाला होगा या जल्दी असर देगा।
2. या नं० 2 का नेक असर ज़रूर हमेशा साथ मिलेगा।
3. बैठे ग्रह की अपनी ग्रहचाली उम्र और खुद ग्रह मुतल्लका की अपनी चीज़ों का असर।
4. सिवाय सूर्य, वृहस्पति, चन्द्र बाकी सब ग्रह इस घर में ग्रह फल के होंगे और बुध व केतु इस घर में नं० 8 में बैठे हुए ग्रह की मियाद तक मंदे होंगे। यह नं० 6 के ग्रह का असर बुध केतु या शुक्र बैठा होने वाले घर में भी जा सकता है।
5. खाना नं० 6 में बैठा शनि उल्टा नं० 2 को देखता है, नं० 6 में सूर्य या चन्द्र होने के वक्त नं० 4 का मंगल अब बद न होगा।
6. खाना नं० 6 में उच्च माने ग्रह राहु, बुध कभी मंदे न होंगे और न ही वो बन्द मुट्ठी के ग्रहों या नं० 2 के ग्रहों पर बुरा असर देंगे।

चेहरा :-

चेहरे की चौड़ाई = चेहरे की लम्बाई का 2/3, अगर कुल के तीन हिस्से करे तो चौड़ाई दो हिस्से नेक होती है और चौड़ाई जिस कदर इस मिगदार से घटे उसी कदर नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे। चौड़ाई केतु की ताकत, लम्बाई— वृहस्पति की ताकत। सूर्य, शनि (दोनों का मालिक वृहस्पति) गोलाई बाहर की उभार बुलन्दी बुध की ताकत, अन्दर पश्ती गहराई नीचे अन्दर को देता, राहु को ताकत। ऊपर की ताकतों से घटना-बढ़ना, ग्रहों की दृष्टि के दर्जे की ताकत के घटने या बढ़ने से मुराद होगी।

चेहरे की चौड़ाई खाना नं० 6 केतु से बजरिये दृष्टि या खाना न० 6 के ग्रह से जिस कदर वृहस्पति का साथ हो उसी कदर चेहरा लम्बा होगा जिस कदर कम असर या वृहस्पति का कम ताल्लुक 6 को होवे उसी कदर चेहरा चौड़ा होगा। जिस कदर चेहरे की लम्बाई ज्यादा उसी कदर नेक प्रभाव ज्यादा होवे, साथ लाई हुई अपनी किस्मत का चौड़े चेहरे में वृहस्पति के बजाय राहु के साथ शनि की खुदगरजाना (स्वार्थ) ताकते होंगी। लम्बा चेहरा वृहस्पति के साथ वा ताल्लुक से केतु में शनि की हमदरदाना ताकते होंगी, जहानत कम होगी। जिस कदर चेहरा चौड़ाई से लम्बाई की तरफ होता जाये उसी कदर में खुदगरजाना ताकते कम होती जाएंगी और जहानत बढ़ेगी या लम्बे चेहरे वाला हमदर्द होता जायेगा।

पुरुष का चेहरा वा मुंह दोनों ही लम्बे हो तो— नेकबख्त होगा।
पुरुष का चेहरा वा मुंह दोनों ही चौड़े हो तो— खुदगर्ज होगा।
औरत का चेहरा वा मुंह दोनों ही लम्बे हो तो— बदबख्त होगी।
औरत का चेहरा वा मुंह दोनों ही चौड़े हो तो— नेक नसीब होगी।

पाँव पर विशेष निशान :-

दाएँ पाँव के पब पर कनिष्ठका के नीचे बुध पर या शुक्र के पर्वत पर या अंगूठे की जड़ पर अगर शंख शदफ हो तो वही असर जो हाथ पर होता है, चक्र हो तो वो आशुदा (समृद्ध) हालत होगी, त्रिशूल, अंकुश आला ऑफिसर, न्याय प्रिय, हाथी की आँख का निशान— साहिबे तख्त, चश्मफीला। यही अगर बाएँ पर हों तो चोर डाकू होगा, फिर भी तंग बहुत मंदा हाल।

औरत के दोनों पाँवों में या इकट्ठे गिन कर जिस कदर गहरे शदफ चक्कर पद्म पब या पाँव की हथेली पर हो उसी कदर लड़के होंगे, जिस कदर ये नरम व बारीक या बारीक लकीरों के होंगे उसी कदर लड़कियाँ हों।

खाना नं० 7 :-

(गृहस्थी - चक्की - आकाश)

आकाश (बुध) ज़मीन (शुक्र) दो पत्थर सातवें, रिज़क (शुक्र) अक्ल (बुध) की चक्की हो।
दोनों घुमावे [1] कीली लोहे की, घर आठवें जो होती हो।
पहुले घर के खाली होते, सातवाँ फौरन सोया।
पाँच साला [2] हो सूरज निकले, आठ जब दूजे होया।
दोस्त शुक्र दो घूमते पत्थर [3], शत्रु [4] पत्थर गड़े माना हो।
बुध बराबर चक्र कुम्हारिन [5], साथी [7] हत्थे को जाना हो।
जैसे शुक्र हो वैसे फल सब, निचले पत्थर से होते हो।
बाकी असर ग्रह अपना-अपना [6], साथी को प्रबल गिनते हैं।
2 से ज्यादा ग्रह सातवें में, स्त्री ग्रह नर [9] होवे।
असूल मिलावट [8] बेशक अपने, असर मर्द पर करते हैं।

1. जब खाना नं० 8 के ग्रह वर्षफल के मुताबिक खाना नं० 8 या खाना नं० 7 में आये तो बाहमी दोस्ती या दुश्मनी पर असर करेंगे।
2. 5 साल उम्र हो, किस्मत का सूर्य उदय होगा।
3. बुध श० केतु अपना-अपना दिया फल, घूमते पत्थर यानि रिज़क या फालतू धन के लिए— राशिफल काबिल उपाय।
4. सूर्य, चन्द्र, राहु जैसा शुक्र वैसा फल। गढ़े पत्थर यानि वास्ते रिज़क या फालतू धन ग्रह फल (अटल फैसला)।
5. दो पत्थरों की बजाय कुम्हार के चाक की तरह जो दो की बजाय एक ही पत्थर दो का काम देवे।
6. मंगल या वृहस्पति वास्ते परिवार।
7. जहाँ शुक्र हो उस घर का ग्रह (बाहैसियत मालिक पक्का घर) चक्की या चक्का का रहनुमा होगा।
8. असूल मिलावट = दर्जा दृष्टि या बाहम देखना।
9. अमूमन स्त्री ग्रह स्त्रियों पर प्रभाव करेगा, नर ग्रह मर्दों पर, मगर जब 7 में दो से ज्यादा ग्रह हो तो स्त्री ग्रहों को नर ग्रह ही समझ कर गिनना पड़े। जैसे चन्द्र नं० 7 में किसी और दो ग्रहों के साथ हो तो मिलावट या दृष्टि की रुह से जो भी असर खाना नं० 1, 7 में बैठे हुए ग्रहों का चन्द्र पर असर हो सकता है वही असर अगर नर ग्रह अब वृहस्पति पर लेंगे या यूँ कहो कि अगर कोई असर चन्द्र या माता पर होता हुआ मालूम हो तो वो असर चन्द्र के साथ कोई और ग्रह जब सब को मिलाकर दो से ज्यादा हो तो वृहस्पति या पिता पर असर होगा। इसी तरह ही शुक्र नं० 7 में ग्रहों के साथ स्त्री की बजाय वही असर टेवे वाले के अपने जिस्म पर हो और वृहस्पति मंगल सूर्य तीनों ही से संबंधित हो सकता है।

खाना नं० 8

(मुकाम फानी) (मौत अदल) न्याय [1] (घर के न्याय)

मौत शनि हो चन्द्र [2] मंगल, बुध मंगल नहीं मंदे हैं।
बैठा जब कोई ग्रह जब तक तीजे, मौत अटल ही गिनते हैं।
घर आठवाँ जब बदी पर आवे, 6, 2 भी आ मिलते [3] हैं।
बैठा 12 चाहे दुश्मन होवे, फैसला [4] उसका लेते हैं।
मंगल बद गो सबसे मंदा, बुध पापी नहीं अच्छे हैं।
ग्रह 11 घर चीज़ जो आवे [5], छत गिरी ही लेते हैं [6]।

1. घर जिसमें वहम और अक्ल दोनों शमिल की बजाय अदले के बदले के असूल पर न्याय करेंगे। न्याय में माफी या दया का दखल न होगा।
2. खाना नं० 8 में सूर्य, वृहस्पति, चन्द्र में कोई भी अकेला या कोई दो या तीनों मुश्तरका तो खाना नं० 8 न आगे को नं० 12, न ही नं० 2 पीछे को देखेगा, बल्कि खाना नं० 8 का असर 8 में ही बंद होगा। गोया मौत के घर को (सूर्य्र वृहस्पति, चन्द्र) मुश्तरका (योगी जंगी) जीत लेंगे। शनि, मंगल या चन्द्र अकेले-अकेले इस घर में हमेशा उम्दा मगर जब कोई दो या तीनों इकट्ठे हो तो शनि मौतों का भंडारी, चन्द्र दौलत व सेहत का बर्बाद करने वाला और मंगल में खाना नं० 2, 6 का मंदा असर शामिल लानत देगा या तो मंगल बद हर तरफ ही लानत का देवता जलता ही होगा। बुध नं० 8 हमेशा मंदा और मंगल नं० 8 अमूमन बुरा मंगल बुध दोनों इकट्ठा न० 8 में उत्तम होंगे, जब तक नं० 2 में शनि न हो वरना मंगल बद ही होगा, जो मैदान जंग में मौत का बहाना खड़ा करेगा।
3. खाना नं० 8 या 6 कोई मंदा तो दोनों मंदे।

4. आखिरी अपील चन्द्र पर होगी।
5. खाना नं० 11 का ग्रह वर्षफल में खाना नं० 8 या 11 में ही आवे तो खाना नं० 11 में बैठे हुए की सम्बन्धित चीज़ घर पर खरीद कर लाने पर दौलत और सेहत दोनों बर्बाद होंगे। खाना नं० 8 की मंदी हालत की जड़ खाना नं० 4 और मार्फत नं० 2 होगी, जब तक नं० 2 खाली तो मंदी हालत नं० 8 पर सीमित होगी। खाना नं० 11 में अगर नं० 8 का दुश्मन हो तो नं० 8 पर सीमित होगी। खाना नं० 11 में अगर नं० 8 का दुश्मन हो तो नं० 8 का बुरा असर नं० 2 में न जाये।
6. जब नं० 4 दुश्मन हो तो नं० 2, 11 का तो नं० 8 का ग्रह दृष्टि द्वारा जब कभी भी और मौका मिलेगा तो नं० 2, 11 पर हमला कर देगा।

खाना नं० 9

(किस्मत का आरम्भ [1])

जड़ बुनियाद ग्रह 9 होता, किस्मत का आगाज़ भी होता।
घर दूजे पर बारिश [2] करता, समुद्र घर ब्रह्माण्ड भी हो।
घर तीजे का असर हो पहले [3], बाद मिला घर पांच का हो।
कुंडली मकानात मकर्ज गिनते, हाकिम गिनते सभी ग्रहों का हो।
उम्र ग्रह जो अपनी जागा [4], असर गिना उस उम्र का हो।
ऋण पितृ जब टेवे बैठा, रेत समुद्र जलता हो।
पांच दृष्टि 9 पे करता, निकास औलाद की गिनती जो।
रवि चन्द्र कोई 9 जब बैठा [5], नज़र दृष्टि उल्टी हो।
ज्ञान समुद्र घर 9 वें का, या फल उम्र हो पहिली का।
सफेद झंडा कोहसार(शिखर) पर झूले, उम्र बुढ़ापा घर 2 का।

1. किस्मत का प्रारम्भ खाना नं० 9 का ग्रह है।
2. खाना नं० 9, जब तीन और पाँच खाली तो नं० 2 की मार्फत जाग पड़ेगा।
3. जब नं० 3 सोया हो तो तीन साल उम्र के बाद असर होगा।
4. कुंडली का सोया ग्रह जब कभी वर्षफल में नं० 9 में आने पर जाग पड़े तो वह ग्रह अपनी उम्र से अपने उम्र के ज़माने तक नेक असर देगा। मसलन सूर्य नं० 8 में हो तो 22 साल उम्र में 22 साल तक यानि 44 साल उम्र तक नेक असर देगा। यही असर जन्म कुण्डली के नं० 9 वाले बाकी ग्रहों का नं० 9 में आने से होगा। मंगल नं० 2 का 28 से 28 यानि 56, वृहस्पति नं० 2 का 16 से 16, सूर्य नं० 8 का 22 से 22 और चन्द्र नं० 1 का 24 से 24 और शनि नं० 8 का 36 से 36, केतु नं० 8 का 48 से 48 साल, राहु नं० 4 का 42 से 42 साल तक उत्तम असर देगा, सिवाय :-
   अ) शुक्र नं० 12 जो सिर्फ 25 साल मंदा होगा, जब नं० 3, 5 की दृष्टि से मंदा हो रहा हो, वरना नेक असर होगा।
   ब) बुध नं० 3 का 17 से 17 साल मंदा जब बाकी असूलों से बुध मंदा हो वरना नेक असर होगा।
5. ऐसी हालत में नं० 5 में बैठे पापियों का औलाद पर कोई बुरा असर न होगा, मगर बाकी सब बातों में वही असर लेंगे जो सूर्य चन्द्र से पापियों के ताल्लुक पर हो सकता है। खाना नं० 9 के ग्रह से सम्बन्धित चीज़ तिलक की जगह लगाने से खाना नं० 9 पर असर होगा।

खाना नं० 10

(किस्मत की बुनियाद का मैदान)

ग्रह मुण्डल 9 से ही टेवे, घर दसवें जब बैठा हो।
6 पांचवें चाहे दोस्त उसके, दुगनो ज़हर का होता हो।
घर दसवें का घर दस शक्की [1], दुगनी ताकत का होता हो।
आँख गया है घर वो जिसकी [2], स्वपन 12 में लेता हो।
घर दूजे के खाली होता, दसवाँ फौरन सोया [3]।
दिन उसी ही ग्रह दस जागे, शनि दूजे जब होया।

1. इस घर वर्षफल के हिसाब आया ग्रह धोखे का ग्रह होगा जो अच्छा-बुरा दोनों हो सकता है। अगर नं० 8 मंदा हो तो दुगना मंदा और खाना नं० 2 नेक तो दुगना नेक होगा। अगर दोनों तरफ बराबर तो अच्छा असर पहले और बुरा असर बाद में होगा। अगर नं० 8, 2 दोनों खाली तो नं० 3, 5, 11 के ग्रह सहायक होंगे। अगर वे भी खाली तो फैसला शनि की हालत पर होगा।
2. जब खाना नं० 10 में आपस में लड़ने वाले कोई भी ग्रह बैठे हों तो वो टेवा अंधे ग्रहों का होगा। यानि वो ग्रह हूबहू वैसा ही असर देंगे जिस तरह की दुनियां में अन्धा प्राणी चलता है, ऐसी हालत में फैसला चन्द्र की हालत पर होगा।
3. अगर खाना नं० 10 खाली तो खाना नं० 4 के ग्रहों का कोई नेक फल न हो सकेगा, चाहे उस घर में रिज़क के चश्मों को उभारने के लिए ग्रह लाख दर्जे ही उम्दा हो। अपने माता-पिता को मिलते रहना मददगार होगा। 10 अंधे मर्दो को इकट्ठा ही मुफ्त बतौर खैरात खुराक तकसीम करना (नकद पैसा रुपया बिल्कुल नहीं) खाना नं० 10 के ग्रहों (मंदे या आपस में लड़ने वाले) की ज़हर धो सकेगा। राहु, केतु, बुध, तीनों ही इस घर में हमेशा शक्की होंगे जो शनि की हालत पर चला करते हैं। शनि अगर उम्दा तो दुगना उम्दा अगर मंदा तो दुगना मंदा।

खाना नं० 11

(गुरु स्थान, न्याय स्थल, न्याय करने या कराने की जगह मगर खुद न्याय नहीं या इंसानी किस्मत की बुनियाद)

पाप अकेला असर अकेला, तीन, पाँच, नौ, ग्यारह ।
शनि वली का साथ मिले जो, असर बढ़े गुणा ग्यारह ।
ग्रह 11 जो मंदा होवे, असर में सबसे उम्दा हो।
घर 11से चलकर अपने, बैठा तख्त [1] पर जिस दिन हो।
किस्मत का ग्रह घर उस तीजे [2], मदद न पाँच से होती हो।
खाली तख्त 3-11 सोये [3], लिखत शनि पर चलती हो।
उम्र पहले से 11 शक्की [4], घर तीजा जब मंदा हो।
खुद तीजा हो बेशक रद्दी, मौत आई आठ रोकता हो।
खुद बेड़ी को पानी चलावे, डुबाते वो नहीं हैं।
ग्रह 11 घर चीज़ जो लावे, मौत खड़ी हो करते हों।
घर 11 में ग्रह जो आवे, तासीर शनि वो होता हो।
असर अगर उस घर में जावे, गुरु जहां टेवे बैठा हो।

1. 11, 23, 36, 48, 57, 72, 84, 94, 105, 119 साल उम्र।
2. खाना नं० 3 में वृहस्पति के दोस्त तो नं० 11 हमेशा असर नेक देगा।
3. खाना नं० 11 को घर 3 देखता है लेकिन खाना नं० 11 का असर उसी वक्त ही पूरी तरह जागता हुआ माना जायेगा जब खाना नं० 3 और 1 दोनों ही में कोई ग्रह ज़रूर हो।
4. खाना न० 8 के ग्रह मुतल्लका की या से आई हुई मौत। खाना नं० 3 में केतु के दोस्त शुक्र, राहु तो खाना नं० 11 हमेशा नेक असर देगा।

इन्सान की अपनी आमदन कमाई का जन्म दिन का, इन्सान टेवे वाला का कुल दुनियां से ताल्लुक या कि सबकी किस्मत का इकट्ठा मैदान या पेशानी हर हालत में हर वक्त साथ लिये फिरता है। इस घर में केतु होने पर चन्द्र बर्बाद और चन्द्र होने पर केतु बर्बाद और वृहस्पति होने पर राहु और राहु होने पर वृहस्पति बर्बाद हो।

जब वर्षफल में या कुंडली में खाना नं० 8, 11 आपस में दुश्मन हो तो नं० 11 के ग्रह की चीज़ टेवे वाले के किसी काम न आएगी बल्कि ऐसी मंदी सेहत सदमें की निशानी होगी जिससे पीठ टूटी हो या घर के मकान की छत गिरी हुई की तरह मातम का ज़माना होगी। ऐसे हाल में नं० 11 के ग्रह की चीज़ के साथ ही उस ग्रह या (11 के वाले के दोस्त ग्रह) या ऐसे ग्रह की चीज़ भी साथ ही ले आवे, जो ग्रह के मंदे असर को नेक कर देवे। मसलन शनि खाना नं० 11 का हो तो शनि की चीज़ के साथ ही केतु की चीज़ भी ले आना मुबारक होगा। यानि मकान बनाओ तो कुत्ता साथ ले आओ। मशीनें खरीदों तो बच्चे के खिलौने ज़रूर लाओ। इस तरह शनि बुरे असर की बजाय और भी भला असर देगा। मसलन बुध 11, शनि 12, वृहस्पति— शुक्र नं० 7 उम्दा गृहस्थ; सूर्य नं० 11 शनि नं० 3 वृहस्पति 2 कर्जई।

खाना नं० 11 के ग्रह, सिवाय पापी ग्रहों के, बेईतबारी के होंगे, अगर खाना नं० 3 खाली हो तो अमूमन नेक फल तख्त में आने के दिन से शुरु कर देंगे। अगर खाना नं० 8 में आने के वक्त मंदा असर देंगे, मंदी हालत में संबंधित ग्रह की कुल उम्र की मियाद के बाद खाना नं० 11 में बैठे उसके दोस्त के ग्रह की चीज़ का उपाय मददगार होगा। बशर्ते कि पापी ग्रह से कोई उस वक्त वर्षफल के हिसाब से खाना नं० 1 में नही अगर कोई पापी नें 1 में ही हो तो खाना नं० 9 में आये हुए ग्रह की चीज़ से उपाय करे नेक होगा और खाना नें 9 खाली तो वृहस्पति का उपाय करें।

खाना नं० 11 के ग्रह किस साल 8 में आएंगे = 7, 20, 34, 45, 53, 67, 79, 92, 97, 113।

⇒खाना नें 11 के ग्रहों की बेईतबारी की हालत :-

खाना नें 11 में बैठे ग्रह का असर

वृ= :- नेक हालत :- जब तक टेवे वाला खानदान में इकट्ठा रहे और पिता ज़िन्दा हो तो सांप भी सिजदा करे।

बुरी हालत :- जब पिता से अलग चाल चलन का ढीला या जन्म कुण्डली के हिसाब से मंदे ग्रह का कारोबार या रिश्तेदार को हद से ज्यादा ताल्लुकदारर तो मच्छर का भी मुकाबला न कर सके और कफन तक पराया हो।

सू ० :- नेक हालत :- जिस कदर धर्मात्मा और सूफी खुराक और पोशाक का मालिक रहे उसी कदर उत्तम ज़िन्दगी और साहब परिवार हो।

बुरी हालत :- जब शनि की खुराक जैसे शराब मांस खाता हो तो विधाता अपनी कलम से लावल्दी का हुक्म लिख दे।

चं० :- नेक हालत :- अगर टेवे में वृ० और केतु उम्दा हो तो धन और औलाद की माता के बैठे तक कोई कमी न होगी।

बुरी हालत :- माता के ज़िन्दा होते हुए भी नर औलाद शायद ही माता को देखनी नसीब हो।

शु० :- नेक हालत :- दौलत का भण्डारी जब तक औरत के भाई मौजूद या मंगल उम्दा हो जन्म कुण्डली में।

बुरी हालत :- वरना बुद्धु बुजदिल हीजड़ा धन-दौलत से दुखिया होगा।

मं० :- नेक हालत :- वृ० के पीछे-पीछे कदम रखने वाला बहादुर चीते की तरह ज़माने की अंधेरी रातों को पार करके अपना शिकार या दिली इच्छा पालेगा।

बुरी हालत :- वरना ज्दुम को आग लगी हालत में हनुमान जी की तरह समुद्र के पानी (अपनी रिज़क और आमदन) की तलाश में भागे।
बुध :- नेक हालत :- चं०, वृ०, श० से मारे हुए यानि माता-पिता के यहाँ जन्म होने के दिन दुनियां के ग़ैबी अन्धेरे से निकल कर आँखों के देखने के वक्त से ही दुखिया होने वाले को अपने वक्त से ही हर तरह और हर हालत में डूबा लेने पर भी ज़िन्दा करके तार देगा।

बुरी हालत :- ऐसी खोटी अक्ल का मालिक जो पौधे को जड़ से उखाड़ देवे और खुद भी गिरने वाले वृक्ष के नीचे आकर दब मरे।
श० :- नेक हालत :- विधाता की तरफ से लावल्दी के लिखे हुक्म को भी दूर करके बच्चे की पैदाइश का हुक्म देवे और तमाम दुनियां के ज़हरी और हर तरह के विरोध के विरुद्ध अकेला ही पूरी रक्षा करेगा और धर्म ईमान से सच्चे होने का पूरा सबूत देगा।

बुरी हालत :- ठीक समुद्र के बीच पहुँच कर बेड़ी का चप्पू सिरहाने रख कर अचानक सो जायेगा और अपनी औलाद को ऐसी अधूरी हालत में छोड़ कर मरेगा कि उनकी आंहों को सुनने वाला शायद ही कोई गृहस्थी मददगार होगा।
राहु :- नेक हालत :- इतने घमण्ड वाला कि अपने मां-बाप से भी कोई पाई तक न लेंगे, ताकि इस पर कोई एहसान न हो जावे। खुद कमायेगा और सोना बनायेगा। मगर जन्म से पहले मिले सोने को खाक कर दिखायेगा, न वृ० (पिता) का लिहाज न राहु (ससुराल, जेलखाना) की चिंता, मगर खुद ख्वाबी दुनियां में आसमान पर बैठे खुदा की इबादत कर रहे होंगे।

बुरी हालत :- जन्म लेते ही अपनी मियाद से पहले अगर सबके सांस और जिस्म के खून (पिता और दादा का) को संखिया या अफीम से ज्यादा ज़हरीला, बर्बाद और बद न कर दिया तो ऐसे टेवे वाले के जन्म लेने का किसी को पता क्या चला। यानि अगर अफीम, संखिया या हीरा चाट कर मरे, कोयले से राख हुए जो कुछ कहो सच, मगर वो तमाम देखने के लिए हर वक्त हाजिर-नाजिर ज़िन्दा रहेगा।
केतु :- नेक हालत :- आल औलाद की इच्छा और केतु की चीज़ें रिश्तेदार या दीगर कारोबार सम्बन्धित का फल ग्यारह गुणा नेक होगा जब खाना नं० 5 में चं० और वृ० न हो।

बुरी हालत :- खुद अपना केतु यानि औलाद और शनि (और चन्द्र) का फल हद से ज्यादा निकम्मा होगा।

पेशानीः-

क्याफा :- दिमाग का खाना नं० 35, कुण्डली का खाना नं० 11 पेशानी को कहा गया है। भ्रू से और ऊपर दिमाग की हद से नीचे कान से सुराख से 90 दर्जे की खींची हुई रेखा दिमाग के हिस्से को सिर और भ्रू से अलग करता है जो पेशानी होगी। इन्सान का अपना हाल या इन्सान की कुल दुनियां से ताल्लुक या सबकी मुश्तरका किस्मत का मैदान या पेशानी हर व्यक्ति अपने साथ लिए फिरता है, गोया पेशानी पर सबकी किस्मत लिखी है। ये हिस्सा हमेशा ज़माने की हवा से टकराता, इंसानी किस्मत पर वृहस्पति असर डालता है। दिमागी खानों में खाना नं० 32 पेशानी के पीछे, खाना नं० 20 (सू०), खाना नं० 21 (चं०) चमक रहे हैं जिन दोनों के ऊपर खाना नं० 13 शनि का घर है। पेशानी की चौड़ाई कुल चेहरे की लम्बाई का 1/4 के हिस्से तो चार में से सिर्फ एक हिस्सा नेक होता है। पेशानी इस अनुपात से जिस कदर चौड़ाई बढ़े उसी कदर नेक असर बढ़ेगा और मुबारक होगा।

पेशानी और ग्रह चाल - उसका असर :-

पेशानी :- जिस कदर पेशानी चौड़ी होगी।
ग्रह चाल :- खाना नं० 2 के वृ० से या खाना नं० 2 से दृष्टि वगैरा द्वारा जिस कदर केतु का ज्यादा संबंध हो।
असर :- उसी कदर नेक असर ज्यादा हो।

पेशानी :- छोटी पेशानी हो।
ग्रह चाल :- खाना नं० 8 का 2 की मार्फत खाना नं० 6 में असर जाये। केतु जब वृ० के साथ या वृ० के घरों में 2, 5, 9, 12 में हो।
असर :- अक्ल की बारीकी अधिक हो।

पेशानी :- पेशानी लम्बी होगी।
ग्रह चाल :- जिस कदर केतु का संबंध खाना नं० 2 के वृ० या खाना नं० 2 से कम हो।
असर :- नेक असर होगा।

पेशानी :- पेशानी का ऊपरी हिस्सा बाहर को उभारता हो।
ग्रह चाल :- खाना नं० 2 का असर खाना नं० 6 के द्वारा खाना नं० 12 में जाये।
असर :- मालूम करने की शक्ति, चालचलन अच्छा होगा।

पेशानी :- पेशानी का निचला हिस्सा बाहर को उभरे।
ग्रह चाल :- खाना नं० 8 का असर, खाना नं० 11 की मार्फत (जिसके लिए खाना नं० 8 देखें) यानि कि खाना नं० 2 में जाये।
असर :- विचार शक्ति हो, नेक काम करने वाला।

पेशानी :- तिलक लगाने की जगह छोड़ कर बाकी पेशानी पर निशान के असर सिर्फ उम्र की कमीबेशी पर होगा। पेशानी पर त्रिकोण, तराजू, मछली, अंकुश, पद्म, पंखा, तलवार या पक्षी में से कोई भी ऐसा निशान हो।
ग्रह चाल :- खाना नं० 2 में खाना नं० 8 के मंदे ग्रहों का असर या मंगल बद का असर मिल रहा हो।
असर :- अजीजों और सम्बन्धी का सुख नसीब न हो।

पेशानी :- पेशानी पर कौंवे के पांव का निशान हो।

असर :- कम उम्र और मंदा भाग्य हो।
पेशानी :- पेशानी पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हो या उनका झुकाव नीचे की तरफ या मानिद हो।
ग्रह चाल :- खाना नं० 2 में वृ० के दुश्मन ग्रह शुक्र, बुध या केतु के दुश्मन चं०, मं० हो।
असर :- अल्पायु ज़िन्दगी के आठवें साल, 16, 24, 32, 4, 48, 56, 64, 8 X 8 खतरे में होगा।
पेशानी :- पेशानी पर 7 या ज्यादा लकीरें हो।
ग्रह चाल :- खाना नं० 2 में सात मंदे ग्रह हो।
प्रभाव :- कज्जाक डाकू, उम्र 50 साल हो।
पेशानी :- लाल रंग की नसें।
ग्रह चाल :- खाना न० 2 में मं० बुध या सूर्य बुध।
असर :- कम उम्र होगी।
पेशानी :- हरे रंग की नसें चाहे जातक मर्द या औरत हो।
ग्रह चाल :- राहु, वृहस्पति मुश्तरका नं० 2 या अकेला बुध नं० 2 हो।
प्रभाव :- मुबारक और खुश किस्मत हो।

खाना नं० 12

(इन्साफ, मगर न्याय करने की जगह नहीं, आरामगाह, ख्वाब अवस्था, इन्सान का सिर [1])

घर 12 में ग्रह जो बोले, घर 2 में वो बोलता है।
फल घर 12, 2का इकट्ठा, साधु समाजी होता है।
एक जन्म से दूजा शुरु हो, 12 जहान दो होता हो।
सुख दौलत और सांस आखिरी, हुक्म विधाता होता हो [2]।

1. जन्म कुंडली के तमाम ग्रहों की अपील खाना नं० 12 होगी, यानि 12 का फैसला आखिरी फैसला होगा। अगर नं० 12 के लिए खुद अपनी अपील की ज़रूरत हो तो खाना नं० 2 का फैसला सबसे आखिरी फैसला होगा। अमूमन खाना नं० 11, 1 दुनियावी हाकिम (मुलाजमत वगैरा), अब नं० 1 कुण्डली का राजा होता है मगर 12 के लिए (जन्म कुण्डली में) खाना नं० 1 के ग्रह की उम्र, मसलन (खाना नं० 1 सू० = 22 साल) गुजरने के बाद, खाना नं० 2 अपील का काम देगा, जिसका आखिरी फैसला मुसिंफ चन्द्र होगा। लेकिन खाना नं० 1 की उम्र के अन्दर-अन्दर आखिरी हाकिम नं० 1 का ग्रह होगा, तमाम दीगर हालात के लिए।
2. खाना नं० 12 के ग्रह के सम्बन्धित रिश्तेदार टेवे वाले के आराम पेश करने वाले के संबंध में ताल्लुक में खुदाई ताल्लुक का मालिक होगा, जिसके बाद उस ग्रह की सम्बन्धित चीज़ कायम करने से सुख सागर होगा, जैसे वृ० खाना नं० 12 हो तो पिता, बाबा ज़िन्दा होने के वक्त तक टेवे वाले की रात हमेशा आराम से गुजरेगी उनकी मृत्य के बाद वृहस्पति की वस्तुएँ रात के वक्त रखना आराम देगा। खाना नं० 8 मंदा घर, खाना नं० 2 खाली हो या जब खाना नं० 12 आदि खाना नं० 8 दोनों घरों में ऐसे ग्रह हों इकट्ठे होने पर मंदे हो जाये तो मन्दिर में पूजा पाठ या यात्रा वगैरा के लिए जाने की बजाय मन्दिर से दूर ही रहना बेहतर वरना 8, 12 की मंदी टक्कर होगी। घर जैसे बुध 8, शनि 12, लड़कियों की बिनाई दृष्टि बर्बाद, जब बाप जातक मन्दिर में जाये।

12 ही पक्के घर इकट्ठे :-

धन की थैली सातवें हो, मर्द बोलते 6 वें हो।
घर 8 वें से उम्र मिले तो, बने महल घर दूसरे हो।
घर पाँचवा दौलत का गिनता, 11 होता घर धर्मो है।
अंग जिस्म घर पहले होते, साथ लगी 9 बुजुर्गी हो।
चश्मा दौलत घर चौथे निकले, मैदान रिज़क घर दसवां हो।
आखिर वक्त घर तीसरे चलते, ख्वाब पाया घर12 हो।
खरबूजा देख खरबूजा पके, 9 पहले और 7, ग्यारह
चोरों टोकरी एकी बोली, बुध, शनि और शुक्र यारां।

1. जिस्मानी :- खाना 2, 6, 12, (तीनों ही) में कोई ग्रह ज़रुरी हो तो चालचलन पूछने की ताकत उम्दा होगी।
2. रुहानी:- खाना 2, 8 दोनों ही में कोई ना कोई ग्रह जरुर हो और नं: 8 का असर नं: 2 में पहूँचता यानी खाना नं० 11 में नं० 8 का शत्रु न हो, तो अकल की बारीकी, विचार शक्ति उत्तम होगी। खाली खाना नं: 2 उंगलियों के नाखून वाली पोरी या टुकड़ा रुहानी ताकत से संबंधित होगी।
3. नफसानी :- खाली खाना नं० 12 उंगलियों का निचला भाग, नफसानी ताकत (इच्छा) से संबंधित होगा।

अवस्था :-

खाना नं० 1 से 3 पहली अवस्था— 25 साल की उम्र तक।

खाना नं० 4 से 6 दूसरी अवस्था— 50 साल की उम्र तक।

खाना नं० 7 से 9 तीसरी अवस्था— 75 साल की उम्र तक।

खाना नं० 10 से 12 चौथी अवस्था— 100 साल की उम्र तक।
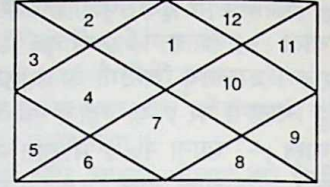
खाली खानों के लिए :-

आमतौर पर खाली खानों की हालत नं० वाली राशि का स्वामी ग्रह लेते हैं। खाना नं० 6-12 में बुध वृहस्पति के साथ केतु राहु का निवास भी माना है। अत: हर दो में से कौन सा एक है, जब वृहस्पति अपनी दूसरी राशि 9 में है तो राहु 12 का स्वामी होगा। जब बुध खाना नं० 3 से हो तो खाना नं० 6 का मालिक केतु। लेकिन अगर वृहस्पति नं० 9, 12 में से किसी जगह न हो तो खाली खाना नं० 12 में वृहस्पति और राहु दोनों इकट्ठे या नकली बुध होगा। बुध खाना नं० 3, 6 में न तो खाली 6 में बुध केतु दोनों इकट्ठे होंगे लेकिन जहां बुध जबरदस्त होगा तो केतु कमज़ोर होगा। अत: 6 का स्वामी बुध केतु में से एक लेगें जो कि जबरदस्त हो उस कुण्डली में (जन्म कुण्डली के हिसाब से) उम्दा होगें, क्योंकि खाना नं: 6 हमेशा नेक मामले में होता है। अत: कमजोर या मन्दे ग्रह को खाना नं: 6 का स्वामी न लेगें। खाली खाना नं: 9 का स्वामी वृ: और 6 का बुध होगा बाकी खाली खानों के लिए उस राशि का मालिक ग्रह लेगें।

सोये हुए पक्के घर या पक्के घर में बैठे सोये हुए ग्रहः-

सोया ग्रह या सोया घर से मुराद है वो ये कि ग्रह या घर सब कुछ होते हुए भी अपना नेक असर न देगा। (पहले घर 1 से 6 तथा बाद के घर 7 से 12 तक)

एक अकेले ना और शत्रु, ना दोस्ती होती है।
रियाया बना ना राजा कोई, ना ही वज़ीरी होती है।
1 से 6 तक तरफ जो पहली, हिस्सा दायाँ कहलाती है।
बाद के घर 7 से 12, तरफ बायाँ हो जाती है।
तरफ पहली न ग्रह न ही कोई, बाद के ग्रह सोये होते हैं।
घर जब बाद का खाली होवे, तरफ सोयी पहली गिनते हैं।
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जागता घर वो लेते हैं।
जागे घर न हो असर ग्रह का, जब तलक खाली होते है।
उच्च दृष्टि कितना ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर ।
घर दृष्टि का जब तक खाली, असर जाये न दूसरे घर।
घर 9, 11 गुरु से जागे, चन्द्र से 4, 8, 2 घर।
रवि घर जगाता घर पाँचवां, शुक्र जगाये सातवां घर।
शनि से दसवां, राहु से 6 को, बुध जगाता तीसरा घर।
मंगल से घर पहले जागे, केतु जगाये 12 घर।

सोया घर :- जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो वो घर सोया होगा।

सोया ग्रह :- जिस ग्रह की दृष्टि के मुकाबले पर कोई ग्रह न हो, खुद ही जो कि पहले घरों का हो, सोया ग्रह होगा।

1. कुण्डली के 1 से 6 पहली तरफ और 7 से 12 बाद की तरफ मानी है। अपने घर बैठा ग्रह तो हमेशा जागता है (उदाहरण शुक्र नं० 7)। इसी प्रकार पक्के घरों में बैठा ग्रह भी पूर्णता से जागा होगा (मंगल नं० 3) जब पहली तरफ सोयी हो तो किस्मत को जगाने वाले ग्रह की तलाश की ज़रूरत होगी, और बाद के घर खाली हो तो खाना नं० को जगाने वाले उपाय की ज़रूरत होगी जो कि खाली हो।

2. ग्रह का जागना और घर का जागना अलग-अलग बातें हैं। बगैर जगाये या सोया ग्रह अगर खुद जाग उठे यानि फल देना शुरु कर दे तो ऐसे जागे ग्रह की आम उम्र, मसलन शुक्र 3, मं० 6, केतु 3 साल वगैरा के आखिरी साल जैसे कि शुक्र शादी के तीसरे साल पर, सब ही ग्रह का मंदा फल कर देगा, चाहे वो ग्रह खुद जागे ग्रह का शत्रु या मित्र हो।

सोया हुआ घर :-	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
कौन जगा देगा :-	मं०	चं०	बु०	चं०	सू०	रा०	शु०	चं०	वृ०	श०	वृ०	के०

3. सोये हुए ग्रह को जगाने वाला ग्रह बाहैसियत पक्के घर के सम्बन्धित ग्रह का रिश्तेदार कायम हो तो इसे कोई मंदा असर न देगा। उदाहरणतय: शुक्र नं० 11 और 3 खाली, अब अगर औरत के भाई (शादी होने या औरत के बनने के पहले) कायम हो तो खाना नं० 3 खुद ब खुद जागे हुए शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा।

4. खाना नं० 10 में कोई ग्रह न हो तो खाना नं० 2 के ग्रह सोये होंगे। खाना नं० 2 में कोई ग्रह न हो तो खाना नं० 1 व 9 के ग्रह सोये होंगे।

सोया ग्रह स्वयं कब जागेगा :-

ग्रह	कब जागेगा	किस उम्र में	किस साल मंदा फल देगा।
वृ०	आम कारोबार शुरु होने पर	16 साल के बाद	6 वें या 22 वें साल
सू०	सरकारी मुलाजमत या संबंध	22 साल के बाद	2, 8, 9 या 24 वें
चं०	तालीम का संबंध	24 साल के बाद	पहले या 25 वें
शु०	शादी के बाद	25 साल के बाद	3 या 28 वें
मं०	औरत ताल्लुक	28 साल के बाद	6 या 34 वें
बु०	व्यापार, बहन/लड़की की शादी	34 साल के बाद	2 या 36 वें
श०	ताल्लुक मकान	36 साल के बाद	6 या 42 वें
रा०	ससुराल ताल्लुक	42 साल के बाद	2 या 48/44 वें
के०	पैदाईश औलाद	48 साल के बाद	3 या 51 वें

ग्रह दृष्टि :-

ग्रह कुण्डली में 12 खानों में से किसी घर में बैठे हुए ग्रहों की स्थापित रास्तों के जरिये आपसी असर मिलाने की ताकत नज़र ग्रह दृष्टि कहलाती है। जो उंगली टेढ़ी हो जाती है वह अपनी ताकत छोड देती है, जिस उंगली की तरफ झुके, उसी उंगली का असर पैदा होगा। उंगली का झुकाव टेढ़ापन हो न कि जाहिर झुकाव।

क्याफा :- हस्त रेखा में शाखों या रेखा के उतार झुकाव का ज्योतिषि विद्या में ग्रह दृष्टि होती है। रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे का झुकाव बुरा असर बतलाती है। यही फल शाखों के ऊपर नीचे को निकल जाने का हो। रेखा का ऊपर का उठाव झुकाव है से मुराद होगी कि इससे इस ग्रह का असर आकर मिल रहा है जिस ग्रह के पर्वत की ओर रेखा उठ रही हो दूसरे शब्दों में खत्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरु हो जाना रेखा का टूटा हुआ नहीं होता। तबदीली ख्यालात जाहिर करता है या तबदीली अच्छी या भली, अगर ऐसी तबदीली बुरी तरफ को जाती मालूम हो तो दान से रिहाई और नेक असर होगा। **आम हालत :-** 1-7 घर, चौथे-दसवें, पूर्ण दृष्टि होती है।
5-9, 3-11, आधी दृष्टि होती है।
8-6-2-12 बैठे, नज़र चौथाई करते है।

केतु, राहु, बुध की नाली, लेखा जुदा ही रखती है।

देखने से मालूम होगा कि इस शक्ल में दिये तीर के निशान किसी विशेष - विशेष घरों से शुरु होकर किसी खास घरों में जाते हैं। तीर संबंध को बताता है। अगर तीर की पूँछ वाला ग्रह नोक वाले ग्रह की दोस्ती या शत्रुता के मुताबिक भला या बुरा असर तीर समाप्त होने वाले ग्रह में मिला देगा। परन्तु नोक वाला ग्रह पूँछ वाले ग्रह पर कोई प्रभाव न करेगा।

जिनका असर	जिन पर हो	दृष्टि की ताकत
1 4	7 10	खाना नं० 1—7 या 4—10 :- 100 प्रतिशत असर देखते हैं
3 5	9,11 9	5—9 या 3—11 :- 50 प्रतिशत
8 2 6	2 6 12	खाना नं० 2—6, 6—12, 8—2 :- 25 प्रतिशत

हर ग्रह की पूर्ण दृष्टि सातवीं होती है। पणफर राशि का उच्च ग्रह अपनी राशि में उत्तम असर देगा।

1. 100 प्रतिशत दृष्टि की हालत में 2 ग्रह एक-दूसरे के ज्यादा नज़दीक या एक ही हो जाते हैं या मिल जाते है।

2. 50 प्रतिशत पर इनके बीच का फासला 1/2 हो जाता है या दोनों की आधी ताकत आपस में मिल जाती है।

3. 25 प्रतिशत में 1/4 में मिलते हैं या 3/4 दूरी पर होते हो।

नोट :- बुध की खास नाली, राहु केतु सिर्फ दोनों की आपसी दृष्टि और खाना नं० 2 और 9 में इन तीनों का ताल्लुक जुदा होगा।

उल्टे घर :- आम हालत
घर उल्टा 8 दूजे होवे, न देखे 5, 11 घर।
बुध 12—6, 9—3 मारे, शनि 6 से दूसरा घर।

ग्रहों की बाहम दृष्टि का राशियों से संबंध, कुण्डली के खानों का संबंध :-

बात को समझने के लिए राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहिए। दोनों का मिलाप ग्रह राशि या मर्द और स्त्री (ग्रह का जोड़ा) मिथुन राशि के खाली आकाश में शुक्र की गृहस्थी मुहब्बत हकीकी (गैर हकीकी में) कुल सृष्टि दुनियां त्रिलोकी, तीनों ज़माने का खाना नं० 3 में मंगल के पक्के घर भाई बंदी से चल रहा है। इस जोड़ की नियत 3 हिस्सों में बंटी हुई ससझे।

1. घर की मलकियत या साधारण जैसी हर मर्द या औरत की गिनी जा सकती है।
2. उच्च हालत की यानि जो हरेक या आपसी एक के लिए दूसरे की नेक हो सकती है।
3. नीच या मंदी दुश्मनी भली-बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली।

हरेक राशि के असर के लिए उसके मालिक ग्रह साधारण या आम हालत का (भला या बुरा) उच्च फल की ही दृष्टि से मुराद नेक फल देने का संबंध चाहे राशि का ग्रह के लिए या ग्रह का राशि के लिए और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से तबाह होगा, या जिसकी चाहे राशि की इस संबंधित ग्रह के लिए कहो चाहे ग्रह के लिए इस राशि के संबंध को समझने की नीयत बद गिनी जायेगी। हरेक राशि किसी खास ग्रह के लिए खास-खास ताल्लुक निश्चित किया गया है। इस तरह निश्चित जोड़े पर जब कोई ग्रह राशि के बजाय किसी और ग्रह की राशि ताल्लुक राशि में जा बैठे तो वह ग्रह जो चलकर दूसरी जगह बैठा है कुण्डली वाले की किस्मत पर वैसा असर देगा।

कुण्डली के 12 खानों में :- बन्द मुट्ठी के खाना (1-4-7-10) चार दीवारी वाले किस्मत के साथ लाए खज़ाने है और बाकी आठ त्रिकोण के खाने कुल 4 पूरे घर बनते हो यानि बच्चे के साथ कुल 8 पूरे घर हुए। अत: घर पहले जन्म, जिस्म और 8 वां मौत है। ग्रहों को लैम्प मानिए, सब कोठरी के दरवाज़े किसी न किसी तरफ से खुले माने गये हैं या एक घर में चमकते व जले लैम्प की रोशनी उसके दरवाज़े से दूसरे के अन्दर जाती मानी गई (दृष्टि)। मौत का घर उल्ट हालत, नं० 8 उल्ट देखता है, राहु केतु की इकट्ठे बैठक के असर पाप-पुण्य का मुकाम, मगर इस खाना नं० 2 में खाना नं० 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रह राहु, केतु, शनि का हिस्सा भी शामिल है। ये अपने से 8 वें साल तबाही दे सकते है।

खाना नं०ज़6, 12 को देखता है परन्तु 12, 6 को नहीं परन्तु बुध खाना नं० 12 में 6 को देखता है क्योंकि बुध को आकाश माना है, अत: 6 पाताल, और 12 आसमान में भी खाली आकाश होता है। अत: हर सातवें साल तबदीली असर कर सकता है, अपने से बाद 7 वें देखने वाले ये हैं। मौत का आठवाँ घर पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालत ही पैदा करते हैं।

देखते हैं खाना नं० 3, 9 को, देखते हैं खाना नं० 6, 12 को तथा 8, 2 को, 2 ने 6 को देखा, अत: 8, 6 का 25 प्रतिशत असर होगा और 6, 12 को देखें अत: 8 का असर 12 पर चला गया है। अब नं० 2 में 1, पर 12 में 2, 6 की मार्फत 25% खाना नं० 8 का असर होगा गोया 2 देखता है 25% 12 को।

बुध खाना नं० 9 से नं० 3 को देखता बुध, या 9 में बैठा हुआ बुध, खाना नं० 12 से खाना नं० 6 को देखता हुआ बुध सब ही ग्रह का फल बेमायनी कर देता है, चाहे वो सब एक तरफ और बुध अकेला मुकाबले पर, चाहे वो उसके मित्र या शत्रु साथी हों या मुकाबले पर हों।

1% और अपने से सातवें को देखने का फर्क :-

100% खाना अपने से 7 वें का दूध में मिले खांड की तरह असर देगा मगर अपने से सातवें साल अपने के बाद के घर का प्रभाव को उल्टा कर देता है चाहे दूध का बर्तन ही ज़हरीला कर देता है। दोनों ही हालतों में दृष्टि का प्रभाव तो 100% पर होगा। फर्क यह है कि एक 100% के प्रभाव का खाने सिर्फ बंद मुट्ठी के अन्दर ही निश्चित है या अपने से बाद के खाने बाहर के त्रिकोण के घरों में निश्चित है यानि मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न हो और न ही बाहर वालों पर 100% (नेक कर देने) का असूल चला सकेगा। जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100% नज़र से देखते हो, वो देखने वाला ग्रह अपने के बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला मालूम ही न होगा जैसे दूध में खांड एक

ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हो और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर होगा, जो कि वो था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर इस घर में यानि (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी की टांग पर दूसरी टांग लगा दी गई (2 चीज़ों का इकट्ठा काम करना) मगर अपने वजूद को ये न छोड़ेगा। यह मिलावट मंगल की मिलावट कहलाती है। बल्कि उस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के बिल्कुल उल्ट होगा। यदि पहले वाले का असर नेक था, परन्तु बाद वाले के मिलने के बाद नेक असर बाद वाले के लिए उल्टा होगा, मगर पहले का खुद जैसा है वैसा ही होगा।

ग्रह का प्रभाव ग्रह में, ग्रह का असर ग्रह के घर में और उनका अन्तर -

1. पहले घर के ग्रह के असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने का मतलब होगा कि पहले घर के ग्रहों का प्रभाव एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह के भी पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि कुछ न गिना गया लेकिन उस मिलावट के बाद के घर में यानि बाद के खाना नं० अपना कोरा प्रभाव न डाला, हो सकता है कि उस बाद के घरों में कई ही ग्रह हों। पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों में जब मिलावट तो हो सकता है कि अगर वह पहले सब के सब तो बाद के घर से दोस्त हो तो जब।

क)इनमें पहले घर के ग्रह की ज़हर मिली तो वो सबके सब भी या उनमें से कुछ इकट्ठे या कुछ दूसरे के शत्रु हो जाएंगे।

ख)उनमें दोस्ती पैदा कर देने की ताकत का असर मिले यानि आपसी दुश्मनी दोस्ती में बदल जाये।

2. पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने से मुराद होगी (ग्रह में नहीं) कि बाद के घर के ग्रह अलग-अलग ही लेंगे। मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग-अलग होते हुए भी उस आ मिलने वाले ग्रह के असर असर का सबूत देंगे। क्योंकि इस घर का वही असर ये मिलने वाले असर ने सबके लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए वो खाना नं० ही किसी और प्रभाव का हो गया यानि इन ग्रहों ने अपना पहला असर इस घर की तमाम चीज़ों को बदल कर रख दिया। जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर ये पक्का हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था यानि बाद के घर का असर जिसमें कि वो ग्रह (जिसका असर बदला गया) बैठा था, सिर्फ अपना ही बदला असर इस खाने की सिर्फ इन चीज़ों पर किया जो चीज़ें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह के उस घर की जिसमें बैठा हुआ था, वो असर भी बदला जाने वाला ग्रह का था। अगर बहुत से ग्रह हों तो उन ग्रहों की जिनका असर बदला गया है अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उनकी चीज़ों पर दिया जो चीज़ें इस घर से सम्बन्धित थी। मसलन बुध शुक्र दोनों का ही पक्का घर खाना नं० 7 है जिसमें ऊपर से खाना नं० 1 का असर मिल सकता है1 फर्ज करें कि खाना नं० 1 में ही सूर्य और 7 में बुध शुक्र। अब सूर्य का असर दोनों में मिल गया यानि दोनों (बुध, शुक्र) ही सूर्य की तरह चमकते हों और सूर्य का असर नं० 7 वाले के लिए उच्च की हालत में होने की बजाय उल्टा बुरा न होगा और वह असर दोनों में दूध में खांड मिले की तरह होगा।

3. शुक्र खाना नं० 6 मंगल 12 में तो दृष्टि में 6, 12 अपने से सातवें हैं यानि शुक्र 6 का असर खाना नं० 6 में उल्ट असर होगा, और खाना नं० 12 में जो ग्रह 12 में है गोया मंगल के लिए खाना नं० 12 की सब चीज़ों के असर के लिए मुबारक होगा क्योंकि खाना नं० 6 का शुक्र नीच है जब उसका असर खाना नं० 12 में गया तो 12 की तमाम चीज़ें मंगल के लिए उच्च फल की होगी। मगर ये उच्च फल किसके लिए होगा, मंगल के लिए जो 12 का है यानि टेवे वाले का भाई। मंगल का गृहस्थ सुख उस भाई के लिए उम्दा हो मगर कुण्डली वाले का शुक्र वैसा ही यानि दौलत का मंदा होगा।

4.100% की हालत में कुण्डली वाले को जाती असर बुरा मिलेगा मगर अपने से सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर, जिसकी वज़ह से उस घर का जो ग्रह उस कुण्डली वाले का जैसा भी है ताल्लुकदार हो, उस पर असर देगी। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घर का शुक्र पर उल्ट कर दिया गया औरत जात के ताल्लुकदार यानि कुण्डली वाले के ससुराल वाले बगैरा पर अपने असर का उल्ट असर होता जाएगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मंदा फल मिले तो उस मंदे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जाएगा। कुण्डली वाले के उस घर के सम्बन्धित सम्बन्धी को जो कि बाद के घर के ग्रह में कुण्डली वाले के साथ रिश्ता हो :-यानि मंगल— भाई, बुध— बहन बगैरा।

(विशेष-विशेष चीज़ों के लिए दृष्टि) सेहत बीमारी शादी औलाद मकान बगैरा :-

अपने घर से पांचवें दोस्त, सातवें उल्ट होता है।
आठवें घर पर टक्कर खाते, बुनियाद 2 वें होते हैं।
तीसरे घर के जुदा-जुदा तो, बुध से वो आ मिलते हैं।
घर दसवें पर बाहम दुश्मन, हो धोखा देते या चक्कर में हो।
नर ग्रह बोलते जफ्त के घर में, स्त्री बोलते ताक में हैं।
बुध है बोलता 3-6 में तो, पापी 2 नहीं बोलते हैं।

दो घरों के बीच जब घर हो 3, 5 वां, दोनों खानों के ग्रह आपसी सहायक होंगे चाहे दोस्त या चाहे शत्रु, 5 वां सातवां देखने वाले घर के ग्रह देखे जाने वाले घर पर अपना बैठा होने वाले घर के असर का उल्ट असर देंगे। बन्द मुट्ठी 1, 4, 7, 10 जुदा होगी।

खाना 6, 8 में दोनों-दोनों घरों के बाहम टकराव पर होंगे। सिवाय खाना नं० 2, 9 के जिनमें कोई पर्वत (ऊँचा) व समुद्र की लहर टकराव बारिश बरसाने का फायदा वाला टकराव होगा। बाकी सब टकराव के घरों में मंदा प्रभाव होगा। सातवें 9 वें दोनों घरों के ग्रह बाहम साधारण दोस्ती या दुश्मनी जो भी हो। आठवें 10 वें दोनों घरों के ग्रह बाहम दुश्मनी पर होगा। उदाहरणतय: खाना नं० 9 से 6 तक बीच के खाने होंगे। (10 से 12 = 3, 1 से 5) = कुल = 8 और फर्जन नं० 9 में शनि है जो खाना नं० 9 में निहायत मुबारक है, 60 साल प्रभाव का है, और खाना नं० 6 में बुध है जो खुद उच्च या राजयोग है। लेकिन अब खाना नं० 6 वाले के मामों वगैरा सिर्फ बुध के सम्बन्धित कारोबार करें तो राजयोग पूरे होंगे लेकिन अगर वही मामों वगैरा शनि का कारोबार करें तो वो बर्बाद होंगे। लेकिन खुद जातक खाना नं० 9 वालों के लिए यानि इसके जातक के पूर्वजों के लिए शनि का फल उत्तम होगा, पर खाना नं० 6 वालों मामों आदि के लिए बुध के काम ठीक है इस शत्रुता का टेवे वाले पर कोई बुरा असर न होगा। अगर होगा भी तो शनि का खाना नं० 6 के घर के ताल्लुक बातों पर मंदा होगा। उदाहरण :- 10 से 5 तक के बीच घर होगा 11, 12, 1 से 4 कुल 6 घर, मगर खाना नं० 5 से 10 तक होंगे यानि कुल चार, यानि 1 देख सकेगा खाना नं० 5 को मगर खाना नं० 5 नहीं देख सकता है 1 को सिवाय खाना नं० 5 के चन्द्र जो खाना नं० 10 के लिए ज़हर होगा, आमतौर पर पहले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते हैं। सिवाय खाना नं० 8 के, लेकिन खाली घरों की हालत में सोये हुए घर या सोये ग्रह देखने के लिए उपाय की शर्त आगे-पीछे दोनों ही तरफ चला कर देखी जाए।

योग दृष्टि सेहत बीमारी के समय :-

नर ग्रह बोलते जफत के घर में, स्त्री बोलते ताक में है।
बुध है बोलता तीन छ: में, पापी नहीं बोलते 2 में है।
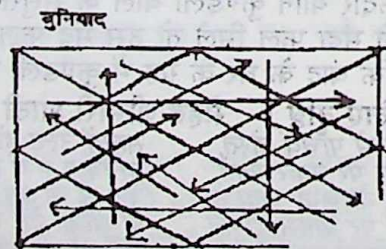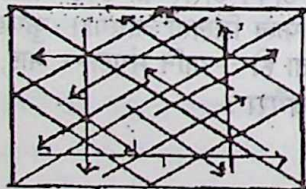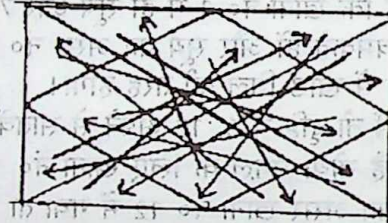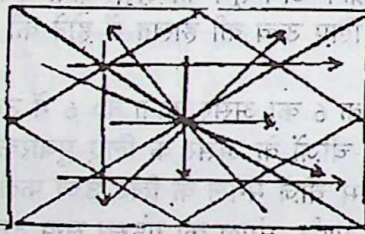
ग्रहों की दृष्टि :-

खाना	दृष्टि	बाहम मदद	आम हालत	टकराव बुनियाद	नींव	धोखा दीवार	साझाँ चोट	अचानक
1.	अ	5	7	8	9	10	2, 4	3, 7, 11
	ब	9	7	6	5	4	12, 10	
2.	अ	6	8	9	10	11	3	4
	ब	10	8	7	6	5	1	
3.	अ	7	9	10	11	12	4	1
	ब	11	9	8	7	6	2	
4.	अ	8	10	11	12	1	5, 7	10, 6, 2
	ब	12	10	9	8	7	3, 1	
5.	अ	9	11	12	1	2	6	7
	ब	1	11	10	9	8	4	
6.	अ	10	12	1	2	3	7	4
	ब	2	12	11	10	9	5	
7.	अ	11	1	2	3	4	8, 10	1, 5, 9
	ब	3	1	12	11	10	6, 4	
8.	अ	12	2	3	4	5	9	10
	ब	4	2	1	12	11	7	
9.	अ	1	3	4	5	6	10	7
	ब	5	3	2	1	12	8	
10.	अ	2	4	5	6	7	11, 1	4, 8, 12
	ब	6	4	3	2	1	9, 7	
11.	अ	3	5	6	7	8	12	1
	ब	7	5	4	3	2	10	
12.	अ	4	6	7	8	9	1	10
	ब	8	6	5	4	3	11	

अ = खाने को देख सकता है। ब = खाने से देखा जा सकता है। **ग्रहों की अपनी दृष्टि के वक्त उनके मुश्तरका असर की मिकददार** हर देखे जाने वाले या दूसरे हमसाया ग्रह की ताकत होगी साथ में हो या देखता हो।

केतु	राहु	शनि	बुध	मंगल	शुक्र	चन्द्र	सूर्य	वृ०	
5/6	2/1	3/1	2/1	2/1	15/4	1/2	2/0	—	वृहस्पति
1/2	ग्रहण	दौलत = 2/3, वालिद = 1/2 सुख = 1/3	1/2	2/1	3/4	3/4	—	2/3	सूर्य
ग्रहण	1/2	1/3	2/1	2/2	2/1	—	2/1	2/1	चन्द्र
2/1	2/1	1/3	2/1	4/3	—	1/2	3/4	1/2	शुक्र
3/2	0/1	4/3	2/1	मं० बद = 1/3	1/3	2/1	2/0	2/1	मंगल
5/4	2/1	5/4	—	2/2	2/2	1/2	2/1	1/2	बुध
1/2	2/1	—	4/5	1/3 = 2/2 वालिद = 1/2 सुख = 1/3	4/3	1/3	दौलत	5/4	शनि
2/2	—	2/1	2/1	2/2	1/2	1/2	ग्रहण	0/1	राहु
—	2/2	2/1	3/4	1/2	2/1	ग्रहण	1/2	2/1	केतु

दोस्ती-दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिकदार होगी :-

औसत तनारुव के हिस्सों में रकम का ऊपर का अंक देखे जाने वाले ग्रह की असर की मिकदार और नीचे का अंक देखने वाले ग्रह के असर की मिकदार होगी। सिर्फ एक ही जुज पूरा-पूरा हिस्सा देखा जाने वाले ग्रह की ताकत से मुराद होगी।
योग दृष्टि आपसी मदद :- चाहे दो ग्रह दोस्त या दुश्मन हों मगर करेंगे एक-दूसरे की मदद ही, अपने से पाँचवें घर को। योग दृष्टि की लिस्ट में खाना निशान में बीच के खाना नं० 1 के सामने दृष्टि के खानों में लफ्ज अ और ब लिखने में और खाना बाहमी मदद के नीचे लफ्ज अ के सामने पाँच अंक लिखा है और ब के सामने अंक 9 लिखा है। ये भी योग की दृष्टि में देख सकता है खाना नं० 1 को जिसका अर्थ है कि खाना नं० 1 देख सकता है खाना नं० 5 को आपसी सहायता के लिए, वही खाना नं० 1 को देखा जा सकता है खाना नं० 9 से यानि खाना नं० 9 मदद दे सकता है खाना नं० 1 को, दूसरे शब्दों में तख्त पर बैठे ग्रह को खाना नं० 9 के ग्रह मदद देंगे, चाहे खाना नं० 1 और 9 में बैठे ग्रह आपस में दोस्त या दुश्मन और खाना नं० 1 का ग्रह मदद देगा खाना नं० 5 को चाहे दोस्त हो या दुश्मन।
आम हालत :- इस हालत में बैठे ग्रहों की वही दृष्टि होगी जो कि आम हालत में होगी यानि 1-7, 4-1, 5-9, 3-9 वगैरह-वगैरह। अब आपसी दोस्ती या दुश्मनी का नियम कायम है। पुरातन ज्योतिष में भाव दृष्टि हर सातवें पर होती है।
टकराव :- टकराव में बैठे ग्रह दोस्त या दुश्मन झगड़ा ही करेंगे और ऐसी टक्कर मारेंगे कि जड़ तक हिला देंगे। (अपने से आठवें को)। **बुनियाद :-** चाहे दोस्त या दुश्मन एक-दूसरे को पक्की मदद देंगे या एक के असूल की वही नींव होगी जो कि दूसरे की हो। (अपने से नौवां)। **धोखा :-** अब ग्रह यह दुगनी ताकत के होंगे, बात फैसला पक्के घर नं० 1 में धोखे के ग्रह के दिये हुए असूल पर होगा। (अपने से दसवें को धोखा देगा)।
मुश्तरका दीवार :- वो घर अलग-अलग बैठे हर दो दोस्त ग्रह आपस में मिले ही गिने जाते हैं। मगर दुश्मन हमेशा ही जुदा-जुदा गिने जाएंगे, या दोस्त ग्रह के बैठे हुए ग्रहों के बीच की दीवार नहीं गिनते। मगर दुश्मन दीवार की वजह से इकट्ठे होकर लड़ भिड़ नहीं सकते। यह असूल है वह सिर्फ एक साथ लगते घर दूसरे घर की हालत में, मगर योग दृष्टि के वक्त दूर-दूर घरों के ग्रह भी हूबहू वैसे ही गिने जाएंगे। **अचानक चोट :-** आपस में दोस्त हों या शत्रु, ऐसी चोट मारेंगे कि चोट खाने वाला यह भी न समझ सके कि चोट किसने मारी है और चोट हर साल न होगी। मगर होगी फौरन झटपट, ऐसा अचानक नुक्सान कर देगी कि इस हद तक जिस का किसी को ख्याल न हो सके।
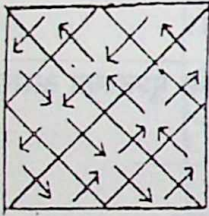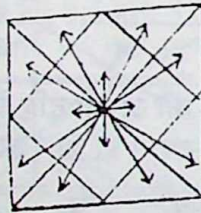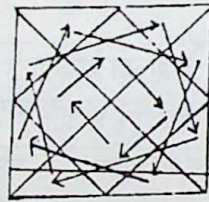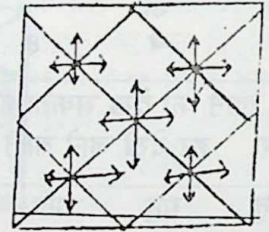
⇒ कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह :-

दृष्टि और एक दो तीन आदि के क्रम जो पहले आए उनमें बैठे ग्रह पहले घरों के होंगे, यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखे और वो भी गिनती के रुख से पहले घरों के होंगे। अगर उदाहरण कुण्डली ले तो सूर्य खाना नं० 1 वाले को कहेंगे शनि खाना नं० 7 वाले से पहले घरों का। वृ० खाना नं० 4, मंगल खाना नं० 10 वाले से पहले घरों का है। मंगल से सूर्य, वृ०, शनि गिनती में तो ज़रूर पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ वृ० से होगी या मंगल अब वृ० के बाद के घरों का ग्रह है, क्योंकि खाना नं० 1 सूर्य, खाना नं० 7 के शनि, दृष्टि के असूल पर खाना नं० 10 के मंगल को नहीं देख सकते। एक ही घर का ग्रह हो और दूसरे घरों को देखे, मसलन खाना नं० 3 देखता है खाना नं० 9, 11 को, अब खाना नं० 9-11 के ग्रह तीन में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के होंगे। इस तरह जब कहे कि चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चन्द्र है पहले घरों में शुक्र से। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरोंमें अपना असर मिलाया करते हैं। सिवाय खाना नं० 8 के जिसकी हालत में यह घर पीछे को देखता है या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं। बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बन्द न हो जाये या पहले घरों के बुरे ग्रहों की मियाद तक बाद के घरों का असर नेक न होगा।

यही असूल खाना नं० 8 के ग्रह का खाना नं० 2 के ग्रहों के लिए होगा।

दोस्ती-दुश्मनी करता है, देखता है :- दृष्टि के वक्त कुण्डली के खानों में 1-2-3 के क्रम से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से दोस्ती-दुश्मनी करता है कहलाता है सिवाय खाना नं० 8 के जो खाना नं० 2 को पीछे की ओर को देखता हुआ देखता है।

****

उलझन के ग्रह :-

जिनकी ज़रुरत बहुत कम पड़ेगी या ऐसी ग्रहचाल जिसके देखे बिना काम चल सकता है, क्योंकि ऐसे टेवे वाला प्राणी पुशतदर पुशत मंदी हालत में होते चले आने के कारण संसार में रह ही कहां सकते हैं। संसार में एक ऐसा प्राणी जो जन्म से या किसी एक खास दिन से सालों ही सालों लगातार मंदा पर मंदा समय देखता चला आए तो वह समय का मुकाबला करके कहां तक अपना जीवन कायम रखता चला आ रहा होगा।

ऋण पितृ का ग्रह :-

ऋण पितृ से अर्थ कुंडली वाले पर अपने बड़ों के पाप का छुपा प्रभाव होता है यानि गुनाह कोई करे सजा कोई भुगते, मगर भुगतेगा करीब संबंधी ही।

घर 9 वें हो ग्रह कोई बैठा, बुध बैठा जड़ साथी जो।
ऋण पितृ उस घर से होगा, असर ग्रह सब निष्फल हो।
साथी ग्रह जब जड़ कोई काटे, दृष्टि मगर वो छुपता हो।
5, 12, 2, 9 कोई मंदे, ऋण पितृ बन जाता हो।

बुध की नाली की दृष्टि ऋण पितृ के समय :- (विस्तार के लिए बुध का हाल में देखे)

असर ग्रह घर तीसरा पहले, बुध नाली जब मिलता हो।
बुध ग्रह घर दोनों रद्दी, शत्रु-मित्र चाहे बैठा हो।
हाल मंदा न तीन का होगा, मिला प्रभाव चाहे तीसरे हो।
बुध मिले स्वयं टेवे ऐसा, बदल असर सब देवे वो।

बड़ों के पाप का प्रभाव खुद पर हो।

1. टेवे में जिस ग्रह की जड़ उसकी अपनी राशि में उसका दुश्मन ग्रह बैठ कर उसका फल रद्दी कर देता है, साथ ही साथ वह ग्रह खुद भी मंदा हो रहा है, तो ऋण पितृ होगी। जिसकी आम निशानी यह कि घर में कई व्यक्तियों में वह ग्रह एक ही जगह या मंदा चल रहा होगा। जैसे राहु खाना नं० 11, शनि खाना नं० 4, 6, बुध खाना नं० 2, 3, 8, 11, 12 उस वंश के कई एक टेवे में जाहिर हो रहा होगा।

2. दरअसल यह हालत खाना नं० 9 के ग्रहों से मुराद होती है। उस घर में यह वृहस्पति के अन्य घर में बैठे ग्रह में एक या एक से अधिक बैठे हुए ग्रह आपसी शत्रुता पर हो या वह बाहम सब हर एक वृहस्पति की शक्ति को नष्ट करते या वृ० के असर में विष मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा।

राहु, वृहस्पति को चुप कराने वाला है, वह अगर वृहस्पति का मुँह बन्द करके खुद मंदी हालत का असर वृहस्पति के ताल्लुक से देवे तो पितृ ऋण का बोझ, जैसे या तो वह वृ० के घरों में हो या वृ० के पक्के घर में देवे।

3. ऐसे ही चन्द्र के समय मातृ ऋण आदि, और ग्रह भी ऋण देंगे। ऐसे व्यक्ति के अपने ग्रह चाहे राजयोग के हो, बुरा असर दो ग्रहों का ही होगा और उपाय भी उन दोनों का करना होगा। जैसे :- जातक के पिता ने कुत्ते मरवाये या मारे तो कुण्डली वाले पर वृहस्पति और केतु दो ही ग्रहों का पितृ ऋण होगा जो जातक पर 16 से 24 साल तक या जातक के बालिग होने की उम्र से 16 या 24 साल तक रह सकता है। इसी तरह ही बाकी सब ग्रहों का उपाय होगा, यानि एक तो उस ग्रह का उपाय करेंगे जो खुद निकम्मा हो गया दूसरे उस ग्रह का उपाय करेंगे जो उसकी जड़ की राशि, यानि वह राशि उसके लिए बाहैसियत मलकीयत या ग्रह मुकर्रर हो, में बैठ कर उसको निकम्मा कर रहा हो। मसलन वृहस्पति खाना नं० 9 में बर्बाद होने के वक्त पर मददगार होगा, लिखा है। मियाद :- उपाय के लिए ग्रह के उपाय के हालत में देखें यानि 40-43 दिन की बजाय 40-43 हफ्तों लगातार होगा जब तमाम वंश की बेहतरी के लिए करना हो। ख्याल रहे कि एक वक्त में दो उपाय जारी कर देने वाजिब न होंगे क्योंकि ऐसा करने से किसी उपाय का भी फल प्राप्त न होगा। अतः पहले एक उपाय 40-43 दिन या हफ्ते करें फिर कुछ दिन या हफ्ते खाली छोड़ दें और फिर उसके बाद दूसरे उपाय 40-43 दिन या हफ्ते लगातार करें। राहु खुद मंदी हालत या नीच (राहु खाना नं० 12, केतु खाना नं० 6) या 2-8 में कोई उत्तम या मददगार न हो तो ऋण पितृ की हालत में केवल सांसारिक माया पर बोझ बनेंगे बाकी कभी मंदा फल न देंगे। ऋण पितृ के वक्त खुद उस ग्रह का जो मंदा हो गया हो और जिस ग्रह ने जड़ राशि से बर्बाद किया है दोनों ही का उपाय और दोनों ही की मियाद तक करना मददगार होगी। कुण्डली वाले के सम्बन्धी के ताल्लुक और पाप की किस्म से ऋण का नाम मुकर्रर होगा जो कि अगले पृष्ठ पर दिया है।

ऋण पितृ के उपाय में खून के सम्बन्धी लड़की, पोती, बहू, बहन, धोहता, पोता, बाबा, पड़दादा आदि बुआ, पुत्र, स्त्री, बहन, भांजा-भांजी, सभी शामिल है यदि कोई न बन पाये किसी कारण से भी और टेवे वाले में हिम्मत हो तो उसका हिस्सा भी डाल दें

परन्तु यह उसके हिस्से से 10 गुणा अधिक होना चाहिए। स्त्री के माता-पिता यानि टेवे वाले के ससुराल के सम्बन्धियों के शामिल होने की कोई शर्त नहीं। (जब बुध जड़ में बैठा हो) **ऋण पितृ की पहली हालत ऋण पितृ की दूसरी हालत**

(जब बुध जड़ में बैठा हो) (जब ग्रह की जड़ में उसका शत्रु बैठा हो)

जो ग्रह खाना नें 9 में हो	जब बु बैठा हो खाने में	ग्रह	जब किस खाने से बाहर हो	और दूसरे ग्रह हो
वृं	12	वृ०	2, 3, 5, 6, 9, 12	खाना नं० 2 में शनि (पापी) खाना नं० 5 में या खाना न० 9 में बुध या राहु नं० 12 या में बुध, शुक्र, शनि (पापी) की तरह हो।
शु० 3-6				
सू0		5	सू०	1, 11 खाना नं० 5 में शुक्र या पापी।
चं	4	चं०	4	खाना नं० 4 में शु०, बुध, शनि।
शु	2-7	शु०	1, 8	खाना नं० 2, 7 में सू०, चं०, राहु में से एक या अधिक।
मं	1-8	मं०	7	खाना नं० 1, 8 में बुध केतु।
शे	10-11	बु०	2, 12	खाना नं० 3, 6 में चन्द्र।
रो	12	श०	3, 4	खाना नं० 10, 11में सू०, चं०, मं०।
के	6	रा०	6	खाना नं० 12 में सू०, शु०, मं०।
		के०	2	खाना नं० 6 में चं०, मं०।

ऋण पितृ सदा जन्म कुण्डली से देखें वर्षफल से वास्ता नहीं।

इन 2 हालतों में 2, 5, 9, 12 की मंदी हालत भी ज़रूर हो तो किसी तरह की ऋण पितृ न होगी ।

ऋणों की किस्में :-

जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं की तो करके देख।

वृ०— ऋण पितृ :-

लक्षण :- खाना नं० 2, 5, 9, 12 में शु०, बु०, रा० हो—

पाप का कारण :- बड़ों का पाप :- खानदान का कुल पुरोहित बदला गया चाहे वज़ह कुल पुरोहित खानदान में लावल्दी के या कोई और खानदानी करवट।

आम निशानी :- साथ में (पड़ोस में) धर्म मंदिर या वृ० से चीजें पीपल आदि को बर्बाद ही कर चुके या करते हों।

सू०— ऋण अपना :- लक्षण :- खाना नं० 5 में शु० या पापी हो—

पाप का कारण :- अंत खराब :- नास्तिकपन, पुराने रस्मों रिवाजों पर पेशाब की धार मारने की धारणा का आदमी होगा।

आम निशानी :- उस घर में ज़मीन के नीचे अग्नि कुण्ड हो या आसमान की तरफ छत में से रोशनी के रास्ते आम होंगे।

चं०— मातृ ऋण :- लक्षण :- खाना नं० 4 में के० हो—

पाप का कारण :- माता नीयत बद :- अपनी संतान पैदा होने के बाद माता को दरबदर जुदा करना या दु:खी करना या उसका खुद ही दु:खी हो जाने पर लापरवाही करना।

आम निशानी :- पड़ोस में कुआँ दरिया नदी नाला पूजने की बजाय घर की गंदगी बहाने या जमा करने का ज़रिया बनाया जा रहा होगा।

शु०— स्त्री ऋण :- लक्षण :- खाना नं० 2-7 में सू०, रा०, चं० हो—

पाप का कारण :- कुटुम्बी मारपीट :- स्त्री को बच्चे जनने की हालत में किसी लालच के कारण से जान से मार देना।

आम निशानी :- उस घर में दांतों वाले जानवरों का पालन खासकर गाय को पालना या घर में रखना, खानदानी घृणा का असूल चलता होगा।

मं०— रिश्तेदारी का ऋण :- लक्षण :- खाना नं० 1-8 में बु०, के० हो—

पाप का कारण :- मित्र मार :- ज़हर की घटनाएँ करना, किसी के पके हुए खेत को आग लगा देना या किसी की भैंस आखिर बच्चा देने को आई को मार दिया या मरवा दिया, मकान बनाने पर आग लगा देना।

आम निशानी :- सम्बन्धियों के मिलने बरतने के असूल से घृणा, बच्चों के जन्म और गृहस्थी दिन त्यौहार के समय खुशी मनाने से दूर रहता होगा।

बु०— लड़की बहन का ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 3-6 में चं० हो—

पाप का कारण :- जवानी धोखा :- किसी की लड़की या बहन की हत्या या हद से ज्यादा ज़ुल्म करना।

आम निशानी :- कम उम्र मासूम गुम हुए बच्चों को बेच देना या उनको लालच में बदलना ठीक समझ लेना ऐसे ढंग पर जिसका साधारण प्रजा को भेद न खुल सके।

श०— जालिमाना ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 10-11 में सू०, चं०, मं० हो—

पाप का कारण :- जीव हत्या :- मकान धोखे से ले लेना, मगर उसकी कीमत किसी तरह भी अदा न करना।

आम निशानी :- घर के मकानों का बड़ा रास्ता दक्षिण में होगा या लावल्दों से जगह लेकर मकान बनाया होगा या रास्ते या कुएँ की छत पर महल बनाये होंगे।

राहु— पैदा ही न हुए का ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 12 में सू०, शु०, मं० हो—

पाप का कारण :- ससुराल धोखा :- या आपसी ताल्लुकदारों से धोखे फरेब की घटनाएँ, ऐसे ढंग से की हो कि दूसरे का कुल ही गर्क जाये।

आम निशानी :- घर से बाहर निकलते हुए दरवाज़े की दहलीज़ के नीचे से घर का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए नाली चलती होगी या दक्षिण की दीवार के साथ उजाड़ वीरान कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्टी होगी।

केतु— कुदरती ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 6 में चं०, मं० हो—

पाप का कारण :- कुत्ता फकीर बदचलनी :- मगर ऐसे ढंग पर कि दूसरे के गरीब कुत्ते की तरह हद से अधिक तबाही हो जाये और ऐसे काम नीयत बद की नींव है।

आम निशानी :- निशानी केतु :- दूसरों की नर औलाद किसी न किसी छुपे बहाने खत्म करवाना, कुत्तों को गोली से मरवाना या केतु की दूसरी चीज़ें सम्बन्धियों को अपने लालच के कारण से कुल नष्ट करना या करा देना हर हालत में नीयत बद नींव होगी। किस प्रभाव से ऋण पितृ दृष्टिगोचर होगी और उसका उपाय :-

वृहस्पति :-

उस खानदान में जिस वक्त कोई पुरुष या स्त्री के बाल सफेद आने लग जाएं, उसकी किस्मत का सोना दुनियां की पीली मिट्टी में बदलता मालूम होने लगेगा यानि बालों की सफेदी से पीलेपन में आता दिखा देगा कि घर का सोना पीतल हो गया और पीतल से काला लोहा वो भी जंग से भरा हुआ। संक्षेप में बालों की स्याही तक किस्मत की खान का सोना-सोना रहेगा, नहीं तो घटता चला जाएगा, मानहानि काम (चलते) में स्वयं रुकावट, सुख के सांस की जगह दुःख, प्रसन्नता की जगह निराशा हो जाएगी।

उपाय : - ***कुल खानदान के हरेक व्यक्ति जहाँ तक कि खून का प्रभाव हो एक-एक पैसा वसूल करके एक ही दिन धर्म मंदिर में देना या उसके खानदानी घर से बाहर निकलने के दरवाज़े पर अटक जाये मुंह बाहर को पीठ मकान के अन्दर अब जिधर नज़र जाती हो या जिधर बायाँ हाथ हो उन दोनों दिशाओं में 16 कदम के अन्दर वृहस्पति की चीज़ें मंदिर पीपल का पेड़ होगा उसकी पालना करना सहायक होगा।***

सूर्य :-

जो भी जवान हुआ, उस पर राजदरबारी मन्दे झोंके गरीबी अपने आप आकर मिलने लगी। बचपन की उम्मीदें सूर्य की गर्मी से काफूर हो गई, मुकद्दमों, किसी का कर्ज़ा किसी की डिग्री किसी और के नाम, मगर वसूल डण्डे से ऐसे प्राणी से होने तक की नौबत आ पहुँची। दर्द बाजू में आप्रेशन दिल का जैसे खराबियाँ होने लगी। लियाकत की कीमत, दिल की इच्छा की आँहें उठनी, जवानी से बुढ़ापे तक यानि 48 साल की उम्र तक जिस्म के अन्दर दबी हुई या कफन में लपेट कर जाती हुई अपनी ही हरकत में

चलती हुई देखी गई और ज्यों-ज्यों अंग कमज़ोर हुए सिर हिलने लगा। शांति की सहायता के झोंके साथ देने लगे और वो भी उस वक्त जब कोई बच्चा बल्कि पोता 11 साल या 11 महीने की मियाद में आ पहुँचा।

उपाय :- कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का प्रभाव हो उन सबका मुश्तरका और बराबर का हिस्सा लेकर के यज्ञ करना।

चन्द्र :-

जब भी ऐसा प्राणी विद्या से संबंध करे या पशु जो दूध देता हो उससे संबंध करे, हो जाये या ऐसी स्त्री बच्चे वाली होकर दूध पिलाने लगे । चाँदी का पैसा, घड़े का पानी दिल की शान्ति रात का आराम, आय का शुरू होना। फव्वारा, घर का दूध, संसारी मित्र सम्बन्धियों की छुपी मदद, रेशम के सफेद रंग की बजाय दीवारों पर रंग बदलने के लिए मिट्टी की सफेदी में बदलने लगे अर्थात् विफल होने लगे। इन सब ने हर उपाय किया। जिस किसी ने भी हिम्मत की विद्या का जवाब नकारा रहा। रुपया जमा किया तो वह बुरे कामों में यानि कफनों, बीमारियों, जुर्माने में खर्च होता गया और ऐसा समय कभी न आया कि कभी दूसरे से खुशी से दूध पिया या पिलाया। अगर कोई समय आया होगा तो मित्र को भी जूती उड़ाने या मुफ्त का माल उड़ाने की इच्दा ही पैदा हुई होगी।

उपाय :- कुल खानदान सब से बराबर के हिस्से की चाँदी लेकर दरिया में एक ही दिन बहाई जाये।

शुक्र :-

खुशी में गमी, शादी में बरबादी, मिलन की रात, नर संतान का नतीजा कभी भला न हुआ, शरीर की सजावट के साथ-साथ कोढ़ फुलवारी का साथ हो। अगर एक तरफ शादी हो रही हो तो, दूसरी और उन्हीं के करीबी संबंधी का मुर्दा जल रहा हो। संक्षेप में खुशी के फल में ग़मी का बीज मिल रहा हो, मगर ये पता न चले कि शादी के जोड़े में असल भाग्यवान कौन ऐसा है जिसके कारण ये सब कुछ हो रहा है। हरेक ने ऐसे आँसू बहाये जो जाहिर न हुए और ये पता न चला कि ये सब क्यों हुआ।

उपाय :- 100 गायों को जो कि अंगहीन न हो सारे कुल खानदान से मुश्तरका खर्च पर एक ही दिन मजेदार भोजन खिलाया जाये।

मंगल :-

जिस्म में खून पैदा हुआ और मुंह पर मूंछे निकलने लगी या मासिक धर्म शुरू हुआ, बच्चा बनाने की धुन पैदा हुई हर नये काम में जिसमें हाथ डाला, अपने आप होता गया। दूर-दूर से लोग मिलने लगे शत्रु-मित्र बनने लगे जो भी शत्रुता पर आया पिस गया। यानि हर जगह उसकी तलवार का डंका बजने लगा मगर एकदम ये सब क्या हो गया कि सबका सब स्वाह हो गया है आग उठी तो छत पर जाने के लिये जो रस्सी रखी थी कि वह भी अभी थोड़ा ही नीचे थी कि टूट गई। छाती की हड्डियां टूट गई किसी मित्र ने मिट्टी की डली के जुर्म में उसका खून कर दिया। रहम ने साथ छोड़ा, न्यायी ने उसे ज़िन्दा धरती में गाड़ देने का हुक्म सुना दिया। वह अपने ईमान पर चलता रहा। हरेक पर भरोसा रखे हुए मगर संसारी खांड ने शीशे के बारीक टुकड़ों की रेत का सबूत दिया। आयु में 28 से 36 साल का खाना इस जालिम चक्की में चलने का समय पाया वैद्य ने साथ न दिया। मुंह पर मूंछे क्या निकली कि मौत की आमद हो गई।

उपाय :- बाहर से गांव में दाखिल होने पर दरम्यानी दुकान के मालिक जो शनि के काम यानि कारोबारी पेशा अर्थात् हकीम आदि हो उसे तमाम खानदान के एक-एक पैसा इकट्ठा करके शनि के उस काम को कुछ हिस्सा मुफ्त करने के लिए देना। गांव से पूर्व की ओर से दाखिल होते एक चौक आया, पीठ अभी गांव की ओर से बाहर को ही है और मुंह गांव के अन्दर की तरफ ऐसी हालत में चौक में ठहर गये सामने ऐसे व्यक्ति की दुकान होगी। दाएँ हाथ की ओर उस चौक से रास्ता जा रहा है उस दुकान का दरवाजा भी उसी हाथ पर पर बाएँ हाथ की तरफ की दुकानों का मालिक उन्हें बेच गया है जिसने खरीदी है उसका लड़का मर गया है जिसने उन दुकानों में काम किया बर्बाद हो गया है ऐसे व्यक्ति के अव्वल तो नर संतान न होगी अगर होगी तो संतान की जवानी न देख सकेगा और अगर कहीं उसकी जवानी देख भी ले तो वो बच्चे उस आदमी को अमूमन फटकारते ही होंगे जिसका कारण वह व्यक्ति शनि खाना नं० 4 का मारा हुआ यानि हकीम होते हुए सांप का तेल बेचता रहा। कारीगर होते हुए धोखे से पक्के की जगह कच्चे सामान बेचता रहा या यूँ कहो कि दूसरे की शनि की चीज़ों को अपने धोखे से बर्बाद करता रहा और अंत में उससे खुद ही मर गया खुद ही बर्बाद हो गया।

बुध :-

लड़की पैदा हुई। बहन का भाई साथी आ पहुँचा आपस में लड़ाई झगड़ा होने लगा। बुरी चीज़ मुसीबत को हटाने की हर चंद कोशिश की गई पर अक्ल की एक न चली उल्टा मुसीबत बढ़ती हुई। लड़का पैदा हुआ। घर वालों ने शुक्र मनाया मगर बाप को पता नहीं क्या हुआ कि उसका धन-दौलत सब रेत हो गया। नाड़े खिचनें लगी, दांत हिलने लगे, जवानी के पूरे समय में पिता की उम्र शक्की, माता तो चल ही बसी, उस खानदान में जब तक कोई बाप (बेटे का) न बना या माता न हुई, खुशहाल और तन्दरुस्त रह जाये। मगर खानदान के चिराग लड़के पैदा हो वह प्राणी जो बाप बना अपने हालत देखकर रात को आँसू बहाने लगा। मगर बर्तन में गुमनाम सुराख का भेद छुपा ही रहा। अगर कोई माता बनने पर ज़िन्दा रही तो वह आखिर बुढ़ापे तक अपनी मंदी हालत देखकर हर रात रोती रही और जो बाप बना वह खर्चे से चिल्लाता रहा मगर ये न पहचान सका कि ये सब क्यों हो रहा है कौन से धन का कीड़ा उसके अपने झगड़े या जायदाद का लगा हुआ है। अगर कहीं-कहीं पैसे जुड़ भी गये तो वह एकदम खर्च हो हो गये और बचत सिर्फ ये ही रही कि रुपये से हार दी तो जानों ने साथ नहीं छोड़ा, लेकिन उस नमक हराम लौंडी (बुध) ने कई खानदानों को बर्बाद किया और उनका नाम लेना तो एक तरफ बल्कि कोई और भाई बन्धु सहायक बनने पर खानदानी पालने वाले, बड़े माता खानदान के संबंधी या आगे आने वाले छोटे-छोटे बच्चे दोनों हाथों में अपना सिर पीटते रहे। कई बार तो ये मेहरबान ऐसे गढ़े में गिरे कि दम घुट करके मर गये भला सिर्फ वही रहा जिसने अपनी ज़ुबान बन्द रखी। ससुराल खत्म हो गये या पिस गये, मामू बर्बाद मगर उस छुपी लड़की के भेद में जालिम कसाई के चक्कर का भेद खुलने न पाया। 34 से 48 साल आयु में या बोलना सीखने के वक्त से दांत निकल जाने तक तमाम शरीर की नाड़ियों ने कोशिश करके देखा कि इसमें क्या भेद है मगर ये ही पता चला—

हज़ारों भटकते हैं, लाखों दाता करोड़ो स्याने।
जो खून करके देखा, आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने।।

जिसने कुछ काम किया वह गुमनाम हुआ जिसने कुछ न काम किया वह बदनाम हुआ। मगर दोनों के चक्कर का निशान कोई न बचा।

उपाय :- सारे खानदान वाले पीले रंग की कौड़ियां लेकर एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर उसी दिन दरिया में बहा दे।

शनि :-

सुबह उठे दरवाज़े पर आवाज आई कि वो किधर गये जो शाम को मशीनों का सौदा कर रहे थे, कुछ ब्याना भी न दे गये थे। कारखानों की दीवारों तक का खर्चा पेशगी जमा करवा गये। मगर बात अभी पक्की न हुई थी कि उनकी आँखों में अचानक मिट्टी का कण आ पड़ा। सिर दर्द शुरू हो गया कहानी वहाँ की वहाँ रह गई। सब इन्तजार में है कि वर्षा कब रूकेगी मकान का सामान बर्बाद हो रहा है, चलें पता करें कि वो साहब कहाँ है इतने में भागती लड़की आई कि वो मकान के उस कोने में जिस जगह तेल नारियल लकड़ी का गोदाम है आग लग कर जल गया है। आग को बुझाने वाले पानी के नल की चाबी चौकीदार के पास है जो बाहर गया हुआ है। जिस किसी को इस आग में चोट आई उसको अस्पताल पहुँचाने का कोई तरीका नज़र नहीं आ रहा। अभी ये बात हो रही थी कि कोने से साँप निकलता नज़र आया, सब का दम खिंच गया, सारी कहानी स्वप्न बन गई। वर्षा के जोर बगैर छत की खड़ी दीवारें गिरने लगी, नींद से उठते ये पहला नज़ारा देखा कि ससुराल बच्चों के स्कूलों से पुलिस के और दूसरे अफसरों से झगड़े फसाद खड़े हो गये हैं। लड़का बुद्धिमान मकानों इंजिनियरों पहाड़ो खानों डॉक्टरी सब विद्याओं को जानने वाला मगर परीक्षा में सिफ़र देकर के निकाल दिया गया। मकान देखने में बड़ा शानदार मगर उसमें रहने का मौका किसी को न मिला। अगर कोई मकान बना बनाया लिया तो उसकी सीढ़ियां बीच में टूटी या तोड़ कर सीढ़ियां बार-बार बनाई गई। कई बार तो मालिक ने आराम से सोकर न देखा और कहीं सो गया तो सुबह दुबारा जागता न देखा गया। कोशिश तो बहुत की मगर पता न चल सका कि वहाँ ऐसी घटना साँपों, हथियारों या विष की घटनाओं से खानदान क्यों घटता गया।

उपाय :- 100 जुदा-जुदा जगह की मछलियों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर और मुश्तरका खर्च से खाना वगैरा दें या 100 मजदूरों को सारे खानदान वाले पैसा इकट्ठा करे एक दिन में खाना खिलाया जाये।

राहु :-

शाम हुई नींद का समय जारी हुआ। कुछ-कुछ स्वप्न की लहरें चलने लगी जब हर तरह का आराम और शत्रुओं से बचाव का सामान मिल चुका तो अचानक बिजली का सर्कट लीक होने से सजा सजाया मकान जल उठा। मिनटों सैकिण्डों में सब कुछ बर्बाद, धोखे और फरेब की घटनाओं से धन हानि होने लगी। जो भी कोई ससुराल का सम्बन्धी हुआ यानि उम्र 16 से 21 साल में पहुँचा तो सिर में चोट ख्यालात और जिसमें बेढ़ब बीमारियों से मारा हुआ जवानी में बूढ़ा। जितना ज्यादा सोच विचार करके काम

किया उतना ही बेकार निर्धन और व्यर्थ पाया गया। हर समय सोच विचार का काम किया मगर सोना पीतल और नीले रंग में बदलता गया। बाल बच्चे देखने में बड़े अच्छे सुन्दर मगर दमे मिरगी सांस, काली खांसी सांस की तरह-तरह की तकलीफें, बेगुनाह जेल और आसामयिक मौतें जहाँ तक भी इस खानदान के खून का असर पहुँचा काली आँधी का जोर बढ़ता गया। न्यायक ने मुकद्दमें के फैसले में कुछ न कुछ जुर्माना या जेलखाना डाल ही दिया न कसूर बताया चाहे वो था या नहीं। सब कुछ उल्ट-पुल्ट कर दिया। सुबह से शाम तक ज़मीन से आसमान तक सब और छानबीन की मगर विचार उत्तर यही मिला कि ये सब वहम है और फर्जी ख्याल है किसी हद तक पागलपन का पैमाना है जो ये गुमनाम सजाए आफत और दिलतरदी की बुनियादें खड़ी कर रहा है।
उपाय : खानदान के हरेक सदस्य से एक-एक नारियल लेकर एक जगह इकट्ठे करके एक ही दिन दरिया में बहा दें।

केतु :-

बच्चों की अकाल मृत्यु यानि बच्चे खेल रहे थे इधर-उधर भागने लगे। कुत्तों के बच्चे साथ आ गये एक मुसाफिर आया जिसका पैर फिसला और कुत्ते के बच्चे के मुंह पर लगा। बच्चा अपनी जान बचाने के लिए भागा और सड़क पर पहुँच गया सड़क पर एक मोटर आई वह उसके नीचे आकर दब गया। उसकी माता जो उससे छोटे बच्चे को मकान की दूसरी मंज़िल पर नहला रही थी। घटना देखकर नहलाते बच्चे को वहीं छोड़कर नीचे भागी। तीसरी मंज़िल पर एक उसका भाई धूप सेक रहा था घटना को देखते हुए नीचे देखने पर वो भी नीचे गिर गया। माता जब मोटर के नीचे आये हुए और छत से गिरे हुए को उठा कर ऊपर पहुँची तो देखा कि तीसरा भी पानी में गोते खाकर मर गया। अब उस बेचारी को किसी की सलाह सुनती नहीं क्योंकि उसकी रीढ़ की हड्डी बगैर किसी के मारे टूट रही है। किस को कहे कि किसने क्यों और कब मारे। खानदान में तो किसी के नर औलाद हुई नहीं अगर हुई तो चलने फिरने के समय रोगों से नकारा हो गई। अगर किसी कारण यहाँ से भी बच गई तो जवानी में कानों से बहरापन, अधरंग, पेशाब की बीमारियों से दुःखी हो। अगर अपना खानदान बच गया तो मामा खानदान बर्बाद हो गया। दो पैसे जमा किए तो सफर में गुम कर दिये। किसी पर एतबार किया तो उसने धोखा दिया। मगर उसे ये पता न चला कि यह सब कुछ क्यों हो रहा है।
उपाय :- 100 कुत्तों को एक ही दिन में सारे खानदान इकट्ठे खर्च से मनमाना खाना खिलाये या खानदानी घर से दाखिल होने के लिए बाहर दरवाज़े पर ठहरे पीठ बाहर को मुंह मकान की ओर उनके घर साथ लगते हुए बाएँ हाथ के मकान में एक विधवा स्त्री होगी जो अपनी छोटी उम्र से ही दुखिया हो चुकी होगी, उसके आशीर्वाद से सहायता मिले।

महादशा का ग्रह :- मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की और और टूटते-फूटते आखिर एक दिन मृत्यु का देवा बन बैठा और मृत्यु हो गई।

खास ग्रह महादशा के समय :- देवता जिस जगह बैठे हो उस बैठे होने वाले घर को पहला घर मान कर गिन कर चौथा या आठवाँ आदि महादशा के समय ग्रहों की मियःद इस प्रकार होगी -सूर्य 6 वर्ष, शनि 19 वर्ष आदि।

मंगल देखता 8 चौथे को, *गुरु देखे 5-9 घर।*
शनि देखे घर 1 तीजें को, *दृष्टि हो कुल पूर्ण घर।*
एक अकेला या मुश्तरका, *बंद मुट्ठी के खानों में,*
9 ही ग्रह घर 6 वें बैठे, *देखा करें उन तरफों में।*

किसी भी ग्रह का लगातार ही मंदी हालत का समय महादशा का समय होगा और आयु के एक 35 साल चक्र में सिर्फ एक ही ग्रह महादशा में हो सकता है और एक भाग्य के संबंध में मनुष्य की सारी आयु में ऐसा समय ज्यादा से ज्यादा 39 साल हो सकता है। एक महादशा के बाद यदि दूसरी शुरू हो जाये तो दोनों महादशाओं के बीच का समय यानि एक की समाप्ति दूसरे का शुरू महादशा के मंदे असर का न होगा।

महादशा के समय ग्रहों की दृष्टियां इस प्रकार होगी :-

मंगल 4-8-7, श० 3-10-7, वृ० 5-9-7
बाकी सभी अपने से सातवें। यह दृष्टियां जिस जगह ग्रह बैठा हो वहाँ से एक नं० यानि लग्न गिन कर बनाएंगे।
यह महादशा का चक्र 120 साल है जैसे :-

वृ०	सू०	चं०	शु०	मं०	बु०	श०	रा०	के०	कुल
16	6	10	2	7	17	19	18	7	12

नोट :- भाग्य का ग्रह, राशिफल का ग्रह, उच्च, नेक ग्रह कभी महादशा में न होगा।

जब 1, 4, 7, 10 कोई भी ग्रह बैठा हो और साथ ही दूसरे घरों में कोई उच्च ग्रह हो यानि चन्द्र खाना नं० 9 में, राहु खाना नं० 3, खाना नं० 6 में बु०, रा०, खाना नं० 9 में केतु और खाना नं० 12 में शुक्र या केतु बैठा हो तो या खाना नं० 4 में खुद चन्द्र स्वयं अच्छा हो तो महादशा हरगिज नहीं होगी।

महादशा के समय धोखे का ग्रह हालात को बदलेगा। हर सातवें साल राहु और 8 वें साल खाना नं० 8 का ग्रह। महादशा में हो चुके ग्रह का दूसरों पर कोई बुरा प्रभाव न होगा।

महादशा के समय हर ग्रह का जो महादशा में हो गया हो अपना प्रभाव वर्षफल में इस तरह करेंगे :-

वृ०— 10 वें साल यह दसवें साल वृ० की गुरु पदवी और रियायती साल में जुदा होगा।

सू०— आयु के वह वर्ष जो 2 पर भाग न हों यानि 1, 3, 5 आदि में अपना प्रभाव देंगे (ताक)।

चं०— आयु के वह वर्ष जो 2 पर भाग हों यानि 2, 4, 6 आदि पर अपना प्रभाव देंगे (जिफत)।

शु०— 11 वें, मंगल चौथे - ये ग्रह के आम चक्र के 3 साल समय का पहल साल शुक्र में मंगल के ग्रह का प्रभाव अधिक होता है।

बु०— 5 वें में अपना प्रभाव देगा, शनि 6 वें में और राहु 7 वें में तथा केतु तीसरे वर्ष में अपना प्रभाव देगा।

वृ० का समय 16 वर्ष कहा है मगर वृ० की हालत में ही महादशा 9 वें में शुरू होगी और यह ग्रह अपनी महादशा के समय का 1, 2, 8, 1, 14 वर्ष विशेष अपने प्रभाव को रखेगा और गुरु होने की हैसियत से अपनी उम्र के आधे अर्से यानि 8 साल तक कभी बुरा असर न देगा। 9 वें साल का/से महादशा के समय का हाल और उसकी औरत का हाल चन्द्र कुण्डली (लाल किताब की) से देखा जाएगा जिसके लिए वर्षफल भी उसी कुण्डली से बनाएंगे।

लाल किताब की चन्द्र कुण्डली

जिस घर में ज्योतिष वालों ने शब्द चन्द्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लग्न वाली राशि का नं० लगा कर तमाम 12 संख्या पूरी कर लें इस तरह जहाँ तक एक की संख्या आए वो घर सामुद्रिक में पहला खाना चन्द्र कुण्डली के देखने के लिए होगा।

उदाहरण के तौर पर

पैदाईश शनिवार सम्वत् 1992 मुकाम लाहौर 5 बजे सुबह 1-3- 36 तो

कुण्डली यों होगी (चित्र1) लाल किताब के लिए पैदाईश के दिन वाली चन्द्र कुण्डली में (चित्र 2)में चन्द्र को जन्म लग्न की राशि यानि यानि खाना नं० 11 यानि जन्म लग्न राशि, दिया(चित्र 3) वही यानि संख्या नं० 11 खाना नं० 1 में लिखा फिर लग्न घुमा कर 1 कर दिया यानि (चित्र 4) अब इस चन्द्र कुण्डली में उस व्यक्ति की पत्नी का हाल उसी तरह देखेंगे जैसा जन्म कुण्डली से पुरुष को देखा। वर्षफल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा जिस तरह कि जन्म कुण्डली व पुरुष का है। अन्तर केवल इतना है कि शादी से पहले उसकी चन्द्र कुण्डली अचानक और साहूब (आसानी) से प्रभाव करेगी मगर शादी के दिन का औरत आने पर पूरा फल देगी जो स्त्री का पूरा हाल होगा और उसी पुरुष को राशिफल बना कर मदद देगी।

साधारण चन्द्र कुण्डली

पर लग्न वही रहा

फिर घुमा दिया (मेष लग्न)

इसका प्रभाव महादशा के खाली रखे सालों में धोखे ग्रहों के सालों में जो होगा वह पक्का न हो, जिसे राशिफल कह कर शक का लाभ उठा लेंगे। जब किसी ग्रह के बराबर के ग्रह नीच और रद्दी हो मगर वो खुद नीच और रद्दी न हो तो ऐसा ग्रह तख्त पर आने के बाद वर्षफल के हिसाब जिस मास खुद ही नीच और रद्दी हो जाए उस दिन से महादशा में हो गया माना जाए लेकिन जब वो ग्रह खुद भी नीच और रद्दी हो और उसके बराबर के ग्रह भी नीच और रद्दी हो तो तख्त पर आने के दिन (वर्षफल के या जन्म दिन के हिसाब सब तरफ रद्दी हाल हो) से ही महादशा में हो गया होगा। महादशा के वक्त मित्र ग्रह की कोई मदद न होगी मगर शत्रु ग्रह कटे पर नमक छिड़केगें।

महादशा के साल	महादशा के सालां में नं० मंदे होंगे।	ग्रह खाना नें	बराबर के ग्रह किन घरों में हों।	टेवे में ये ग्रहचाल हो तो आयु का साल मंदा होगा।	किस साल से आगे महादशा का साल होगा [1]।
वृ० 16	16 में से	वृ 10 वृ०3 मंदे	रा० 9, 12	20, 21, 22	11, 12, 13 श०1,के3-6
सू० 6	6 में से 1मंदा	सू० 7	बु० 12	12	महादशा का 6वां वर्ष
चं० 10	10 में से चं० 1मंदा	चं 8	शु० 6, श० 1 मं० 4, वृ० 10	17	महादशा का 10 वां वर्ष
शु० 20	20 में से 8 मंदे	शु6	मं० 4, वृ० 10	9, 11, 12,13,17, 18,21, 25, 27	1, 3, 4,5, 9, 10 12, 17, 19
मं० 7	7 में से 4 मंदे	मं 4	शु० 6, श० 1 रा० 9, 12	4, 5, 6, 9	1, 2, 3, 6
बु० 17	17 में से 7 मंदे	बु० 12	श० 1, के० 3, 6, मं 4, वृ 10	11, 14, 15,17, 22 24, 28	1, 3, 4, 6, 11, 13, 17
श० 19	19 में से 4 मंदे	श० 1	के० 3, 6,वृ० 10	1, 2, 11,13	1, 2, 11,13
रा० 18	18 में से 11 मंदे	रा० 9	वृ०10,चं० 8 रा० 12	6, 8, 9, 10 14 से 18,20, 22 12, 14, 16,17,20 22,23, 24, 26, 28	1, 3, 4, 5, 9 10 से 13, 15, 17 1, 2, 4
के० 7	7 में से 4 मंदे	के० 3	वृ० 10, श० 1, बु० 12, सू० 7 के० 6	3, 4, 6 9, 12, 13	1, 3, 5, 6, 9,11, 12, 13,5, 17, 18 1, 4, 5
कुल 120	120 में से 42 मंदे	ए बी	सी	डी	ई

1. जिस साल वर्षफल के हिसाब ए, बी, सी, डी, ई की ग्रहचाल कायम हो जाये उस साल को पहला साल गिने फिर उसमें आगे महादशा का साल होगा।

महादशा हो चुके ग्रह की तरफ मंगल, शनि और वृहस्पति की दृष्टि नज़र अलग होगी।

किस ग्रह की चाल के वक्त महादशा होगी :-

किस खाना नं० में कौन-कौन से ग्रह महादशा में हो जाने वाले ग्रह के बराबर का मगर नीच हालत में बैठा हो बराबर के ग्रह मंदे होने पर भी जो किसी तरह मंदे हो सकते हैं चाहे किसी जगह हो, महादशा का समय होगा।

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वृ०	श०		के०			के०			रा०	वृ०		रा०
सू०							सू०					बु०
चं०	श०			मं०		शु०		चं०		वृ०		
शु०				मं०		शु०				वृ०		
मं०	श०			मं०		शु०			रा०			रा०
बु०	श०		के०	मं०		के०				वृ०		बु०
श०	श०		के०			के०				वृ०		
रा०						चं०	रा०	वृ०		रा०		
के०	मं०		के०			के०	सू०			वृ०		बु०

दी गई ग्रहचाल के वक्त अगर उसी-उसी वक्त हो।

खाना नं० 2 में चं० बैठा हो।
खाना नं० 3 में रा० बैठा हो।
खाना नं० 6 में बु०, रा० बैठा हो।
खाना नं० 12 में के०, शु० बैठा हो।

या खाना नं० 4 के ग्रह अच्छे या खुद चं० किसी भी घर में अच्छे प्रभाव का हो तो महादशा न होगी।

महादशा के वक्त अगर :- मं० बैठा हो खाना नं० 4 में तो वह खाना नं० 7, 11 के ग्रहों को देखता है।

वृ० बैठा हो खाना नं० 10 में तो वह खाना नं० 2, 6 के ग्रहों को देखता है।
श० बैठा हो खाना नं० 1 में तो वह खाना नं० 3, 10 के ग्रहों को देखता है।

1. महादशा के प्रभाव के वक्त महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ उस खाना नं० का जिसमें कि वह बैठा है और उन चीज़ों पर जो चीज़ें कि उस ग्रह (महादशा) में हो जाने वाले की उस बैठे हुए खाने की सम्बन्धित हो पर मंदा प्रभाव होता है।
2. महादशा में हो जाने वाले ग्रहों का दूसरे ग्रहों पर मित्रता या शत्रुता या दृष्टि के हिसाब से वही प्रभाव होगा जैसा कि उस समय होता था यदि वह महादशा में न होता।
3. महादशा के समय चाहे किसी भी ग्रह की हो अधिक से अधिक 1 से 40 तक अक्षर नीचे लिखे टेबल ए ढंग पर 12 खानों में लिख लें और पेशानी नं० 1 (अंक नं० 1) 13, 25, 37 खाना नं० 1 में लिखें फिर उसमें उस ग्रह का नाम लिख दें जो कि महादशा में हो गया हो मसलन वह शुक्र है तो शुक्र को खाना नं० 1 के ऊपर लिख दिया। बाकी ग्रहों को भी दिये हुए क्रम से लिख लें। जिस हिस्सा नं० के सामने भाग पर जो कोई भी ग्रह लिखा वह साल उस ग्रह की मार्फत उस महादशा के समय हालात की बदली पैदा करने वाला होगा। टेबल में खाना नं० 1 का अर्थ महादशा का पहला नं० 2, का दूसरा साल आदि लेंगे चाहे वह आयु के किसी भी साल में शुरू हुई हो।

टेबल 'ए'

1	2	3	4	5	6	7	8	9	1	11	12
शु०	नं०	सू० 12 के ग्रह	चं०	के०	मं०	बु०	श०	रा०	नं०	नं० 8 के ग्रह	वृ० 9 के ग्रह
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

धोखे के ग्रह :-

(देखते जाओ कहीं धोखा ही न कर जाए) :-

1. दुगना अच्छा होगा या दुगना मंदा मगर चलेगा ज़रूर दुगनी रफ्तार से।
2. धोखे का ग्रह अच्छा फल देगा या बुरा इस बात के फैसले के लिए (पक्का घर नं० 10) देखें।
3. औसत आयु के 120 साल को 12 X 10 = 120 खानों की टेबल में लिख कर पेशानी सामने का भाग खाली छोड़ दें और सूर्य टेवे के मुताबिक जिस खाने में बैठा हो उसी खाना नं० की पेशानी जगह पर सूर्य लिख दें सिवाय, खाना नं० 6 के सूर्य को खाना नं० 9 की लाईन की पेशानी पर, खाना नं० 9 के सूर्य को खाना नं० 6 की लाईन की पेशानी पर, तथा खाना नं० 7 के सूर्य को खाना नं० 5 की लाईन को पेशानी पर सिर्फ उस वक्त जब खाना नं० 1 खाली वरना खाना नं० 7 को 7 के ऊपर 1 बाकी ग्रह उसी तरतीब से लिखें जिस ढंग से वह अगली टेबल 'बी' में लिखें हैं।

जैसे किसी का सूर्य टेवे में खाना नं० 3 का है, तो 12 खानों की टेबल में सूर्य को खाना नं० 3 वाले खाने पर लिखकर खाना नं० 4 के ऊपर चन्द्र नं० 5 के ऊपर केतु आदि लिख दें जिस अंक नं० के खाने के ऊपर जो ग्रह आये वह ग्रह उस साल धोखे का ग्रह होगा जिसके भले-बुरे के लिए पूरा हाल खाना नं० 1 में देखें।

4. धोखे का ग्रह अपने धोखे से साल में जब खाना नं० 1 में ही आ जाये तो पूरा धोखा देगा यानि दुगना नेक या दुगना मंदा।

टेबल 'बी'
(सूर्य नं० 12 वाला टेवा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
चं०	के०		मं०	बु०	श०	रा०	के०	चं०	वृ०	शु०	सू०	सू०
							वृ०					
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	
73	74	75	76	77	78	79	8	81	82	83	84	
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	

टेबल 'सी'
धोखे के ग्रह की तलाश (सूर्य नं० वाली 11कुण्डली)

के०	मं०	बु०	श०	रा०	चं०	वृ०	वृ०	शु०	बु०	सू०	चं०
						वृ०					
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

स्मृति :- जन्म कुण्डली के ग्रहों का कोई ख्याल न करेंगे सिर्फ सूर्य को हम जन्म कुण्डली से देख लेंगे और जन्म कुण्डली के बाकी किसी भी ग्रह का कोई ख्याल न करेंगे।

पेशानी के ग्रहों का क्रम :- जन्म कुण्डली के खाना नं० 10 का ग्रह जब वर्षफल के अनुसार दुबारा खाना नं० 10 में आये तो वह धोखे (अच्छे या बुरा) का ग्रह होगा। अब अगर वह नीचे दी गई टेबल के अनुसार भी वह खाना नं० 10 में आया हुआ ग्रह धोखे का ग्रह साबित हो तो ऐसा ग्रह अवश्य ही धोखा देगा । अच्छा या बुरा देखने के लिए खाना नं० 10 देखें।

1	2	3	4	5	6	7	8[1]	9[1]	10	11	12[1]
सू०	चं०	के०	मं०	बु०	शु०	रा०	खाना	खाना 8 के ग्रह	वृ० 9 के ग्रह	शु०	खाना नं० 12 के ग्रह

1. अगर जन्म कुण्डली के हिसाब खाना नं० 8, 9, 12 खाली हो तो खाना नं० 8 के लिए मंगल तथा शनि, 9-12 के लिए वृ०।

नोट:- कोई ग्रह दो दफा लिखा जाने का वहम न करें इसके बाद दूसरी दो लगातार महादशा के वक्त दोनों का दरम्यानी साल बुरा प्रभाव न देगा उदाहरण के लिए शुक्र पहले का 20 वां साल मंदा असर न देगा जब शुक्र की लगातार 2 महादशाएँ शुरू हो जाएगी।

किस्मत का ग्रह :-

खाना नं० 2 का होगा, मगर किस्मत साथ लाने का घर बंद मुट्ठी के खाने की तरतीब से लिया हुआ घर होगा।

वृ०, श० एक साथ की कुण्डली :-

जब वृ० और श० टेवे में एक साथ हों तो उम्र के फैसले के लिए खाना नं० 11 के ग्रह करेंगे ऐसे टेवे में दृष्टि व उपाय वगैरा आम टेवे से फर्क पर होंगे यानि खास-खास खानों में विशेष-विशेष ग्रह की निश्चित दृष्टि होगी जिनकी रुह से फैसला होगा।

फरमान नं० 9:- सहायता के लिए उपाय :-

रुह बुत से झगड़े की तरह ग्रह को रुह और राशि को बुत माना है तो ग्रह के फल के उपाय की इस विद्या में जगह नहीं, राशि या ग्रह या राशि/ग्रह फल के शक का इलाज और ग्रहों से धोखे के धक्के से बच कर चलना मानव की ताकत में माना गया है। जिस तरह बुध का हीरा सब को काटता है पर खुद उसी बुध की नर्म टांका लगाने वाली नली से कट जाता है इसी तरह ही :-

1. पापी ग्रह :- राहु, केतु, शनि सभी पर अपना धक्का लगाते हैं पर उनको मारने के लिए उनका अपना ही पाप (राहु केतु) महाबली होंगे।

   राहु के मंदे असर को केतु का उपाय दूर करेगा।

   केतु के मंदे असर को राहु का उपाय दूर करेगा।

2. पाप की बेड़ी भर कर ही डूबेगी यानि पापी ग्रहों का उपाय, उनकी चीज़ों की पालना करना आशीष या उनसे माफी मांगना होगी।
3. शुक्र की मदद के लिए गाय को अपने भोजन का हिस्सा दें। धान्य से सम्बन्धित सब सुख मिलेंगे।
4. शनि की सहायता के लिए (काग़ रेखा— धन-दौलत की हानि) कौंवे को रोटी का टुकड़ा डाले (धन की हानि रूकेगी)।
5. केतु की मदद के लिए दरवेश कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डाले (औलाद होगी)।
6. हर ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह होते है जब कोई ग्रह मंदा हो जाए तो उसकी मसनुई हालत में दिये हुए दो ग्रहों में से उस एक ग्रह को हटाना चाहिए, जिसके हटने से नतीजे नेक हो जाये। जिसके लिए कोई ऐसा ग्रह कायम करें जो बुरे फल के हिस्से को देने वाले ग्रह को ही गुम या नेक कर दे। उदाहरणत: शनि मंदा हो जाये तो उसकी मसनुई हालत के ग्रह शुक्र, वृहस्पति में से वृहस्पति को हटाने के लिए यदि बुध कायम करे तो शुक्र बाकी रह जाता है। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनि नेक हो जाता है।
7. उपायों के इलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के अनुसार लेंगे। हर एक ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह एक साथ माने गए हैं। पक्के ग्रह का जिस चीज़ का असर या जो असर मंदा हो उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मसनुई जड़ भाग से हटाने की कोशिश करें। उदाहरणत: शुक्र जब खराब करे या खराब हो तो शुक्र के मसनुई भाग में से राहु केतु में से राहु को हटा दें तो बाकी केतु बचा यानि शुक्र के नेक करने को राहु नेक कर लेना मददगार होगा।
8. बुध— वृहस्पति दोनों को ही कायम रख कर चलाने के लिए बुध की हरे रंग की चीजें मदद करेंगी, जैसे सोने के ज़ेवर को हरे रंग की तह में रखने की तरह। बुध, शुक्र, शनि की एक ही चीज़ *गाय ग्रास देना लाभदायक होगा।*

   गाय ग्रास :- *अपनी खुराक में से तीन टुकड़े लें, एक गाय को, एक कुत्ते को व एक कौंवे को देना होता है।*

9. मंदे फल वाले ग्रह के लिए मंदा करने वाली चीज़ को दूर करें, जैसे मंगल बद के प्रभाव से मृगछाला बचायेगी।

मंगल बद का इलाज :- मंगल बुध = मंगल बद, शनि के साँप की ज़हर और मंगल, बुध, शनि एक साथ हो तो मृगछाला रक्षा करेगी, जिस पर शनि का साँप न चढ़ेगा। इसी कारण से उसे साधु ने पसन्द की है। शुतर (ऊँट) बेमुहार के कहने के अनुसार उसकी दिल की बात उसके नाखून से जाहिर कर देंगे क्योंकि उसका दिल या चन्द्र नहीं होता या ऊँट को उसके पांव के नाखून केतु की न सज़ा दिलवायेंगे या केतु के बुरे असर को बर्बाद करने के इलाज से काबू होगा, या चन्द्र की उपासना भी मदद करेगी। चन्द्र जिस घर का कुण्डली में हो वही इलाज करे। चन्द्र उम्र का मालिक है, हर एक पर मेहरबान होगा। मौत का फंदा मंगल बद हर एक के लिए फिरता है। इसलिए कहा है कि जहाँ चन्द्र होगा वहाँ मंगल बद न होगा। यानि जिस जगह आयु होगी, मौत कहाँ होगी। अत: मंगल बद का इलाज चन्द्र की पूजना या सहायता ढूंढे।

10.तन्दूर में मिठ्ठी रोटी बनाकर बांटने से मंगल बद का असर दूर हो जाता है।

11.राहु का मंदा प्रभाव दूर करने के लिए जौ (अनाज) को किसी बंद जगह में बोझ के नीचे दबाए या दूध से धोकर चलते पानी में बहा दें। अगर तपेदिक का लम्बा बुखार तंग करें तो जौ को गाय के पेशाब में धोकर लाल सुर्ख कपड़े में बंद करें और गाय के पेशाब से ही दांत साफ करें।

12.जो ग्रह उच्च हो उससे सम्बन्धित चीज़ की मदद से मंदे ग्रह का असर दूर हो जाता है।

13.अपनी निश्चित जगह की बजाय जब काग़ रेखा या मच्छ रेखा और जगह हो तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर (पर्वत के हिसाब से) में हो तो उस घर की पूजना से नेक फल हो। उदाहरणत: मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर स्थित है तो शनि व बुध की पालना (काले पक्षी की पालना करना) मुबारक हो, अगर शुक्र पर हो तो काली गाय पालना मुबारक हो।

14.धोखे का ग्रह जो छुपा छुपाया होता है उसे भी देख लेना ज़रूरी होता है, अगर लड़का-लड़की दोनों ही बाप के लिए मंदे हो जाये तो सूर्य (लड़का) बुध (लड़की) या लड़की के गले में तांवे का टुकड़ा मुबारक होगा जो बुध को दबायेगा।

15.पापी ग्रहों के साथ जब वह एक ही बजाय कोई दो इकट्ठे हो तो मंगल को कायम रखना उत्तम रहेगा, बशर्ते जब कि कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली में मंगल राशिफल का हो। यदि मंगल खाना नं० 1, 3, 8 में हो तो मंगल का उपाय न करें, बुध काम देगा।

16.इसी प्रकार ही स्त्री ग्रहों (चन्द्र, शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी, जबकि बुध खाना नं० 3, 6, 7 या 9 का न हो, ऐसी हालत में मंगल मदद देगा। संक्षेप में उपाय के समय देख लें जिस ग्रह की मदद लेनी हो वह खुद तो ग्रह फल का ही तो नहीं है।

17.खाना नं० 9 के ग्रहों का उपाय, रंग की मदद से मकान के फर्श से होगा। यानि जो ग्रह मंदा हो और खाना नं० 9 में शुक्र या बुध या मंगल बद आदि हो तो उनके मित्र ग्रह की पालना करें या कम से कम उस नेक ग्रह के रंग की चीज़ें फर्श पर न लगायें जो कि खाना नं० 9 का बनता है।

18.जब आम उपाय काम न दें तो घंटों में असर देने वाले यह उपाय काम देगें।

नाम ग्रह	उपाय
वृहस्पति	**केसर नाभि या ज़ुबान पर लगायें या खायें।केसर नाभि या ज़ुबान पर लगायें या खायें।**
सूर्य	**पानी में गुड़ बहायें।**
चन्द्र	**दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रखकर कीकर को डालें।**
शनि	**तेल का छाया पात्र करें।**
शुक्र	**गोदान या चरी ज्वार दान करें।**
मंगल नेक	**मिठाई, मीठा भोजन दान करें या बताशे दरिया में डाले।**
मंगल बद	**रेवड़िया पानी में बहायें।**
बुध	**तांबे के टुकड़े में सुराख करके चलते पानी में बहा दें।**
राहु	**मूली दान करें या कोयलें दरिया में डाले।**
केतु	**कुत्ते को रोटियां डाले।**

19.हर उपाय की मियाद 40 या अधिक से अधिक 43 दिन है। कुल की बेहतरी के लिए उपाय की अवधि 40-43 हफ्तेवार करना है, यानि हर आठवें दिन, जो कि हफ्ता है, करना होगा। उपाय बीच में हटना नहीं चाहिए, यानि किसी कारण तोड़ना पड़ जाये तो चावल दूध में धोकर पास रख लें। ऐसा करने से पहले किये का फल निष्फल नहीं होगा। (उपाय के समय चाहे आखिर दिन 39 वें या 40 वें दिन ही भूल जायें या बंद कर बैठे तो सब किया कराया निष्फल हो जायेगा। नये सिरे से पूरी मियाद तक पूरी करें)।

जन्म दिन और जन्म दिन के हिसाब से सहायक उपाय :-

उदाहरण :- जन्म सोमवार, पक्की शाम को तो दिन का ग्रह चन्द्र और समय का ग्रह राहु है। जन्म समय के ग्रह को जन्म दिन के मुतल्लका पक्के ग्रह के घर लिखेंगे। इस तरह पर राहु जो जन्म समय का ग्रह है चन्द्र जो दिन का ग्रह है, के घर में होगा, खाना नं० 4 राशिफल उपाय के योग्य। जन्म समय का ग्रह (ग्रह फल, अटल, बुरा या भला) जिसका कोई उपाय नहीं होता। इसलिए जातक के लिए जब कभी और जो भी खाना नं० 4 का असर होगा, राशिफल होगा जिसका चन्द्र के उपाय से नेक असर होगा या राहु इस आदमी के खाना नं० 4 की चीज़ों पर बुरा प्रभाव करने के समय राशिफल का होगा। चाहे वह ग्रह (जन्म समय का) राशिफल का न भी हो लेकिन जन्म समय का ग्रह (जन्म के हिसाब से जो भी आए) ऊपर के उदाहरण के अनुसार हर ग्रह के खास-खास घर

राशिफल वालों में आ जाये, तो दिया हुआ फल मददगार होगा। जिसके लिए बदला जाने वाला या उपाय के योग्य जन्म दिन का ग्रह लेंगे, जन्म समय का नहीं।

उदाहरण :- जन्म दिन :- मंगलवार।

जन्म समय:- प्रातः के बाद दिन का पहला हिस्सा (वृ० का समय)।

अब जन्म समय वृ० का ग्रह मंगल के पक्के घर खाना नं० 3 में होगा। अनुमानित— अब वृ० का ग्रह खाना नं० 3 में होता हुआ बीमारी ही बीमारी खड़ा करता जाये तो मंगल का ग्रह राशिफल का होगा जो जन्म दिन का ग्रह गिना था मगर मंगल सिर्फ खाना नं० 4 और 6 में राशिफल का लिखा है मगर फिर भी ऐसी हालत में मंगल का ही उपाय मदद देगा और वृ० का उपाय मदद नहीं देगा।

ग्रह फल का उपाय नहीं मानते, राशिफल का उपाय हर समय उपाय योग्य है। उपाय सूर्य उदय होने से अस्त तक ही करें, रात को शनि का राज्य होता है उपाय ठीक नहीं होता, कई बार खतरनाक भी हो सकता है। उपाय जब चाहे शुरू करें, 4-43 दिन तक करना है। अपने खून का कोई भी नाती उपाय कर सकता है, शुरू किसी भी दिन वार से किया जा सकता है। मरने से पहले आशीर्वाद (अन्तिम) किसी ग्रह की चीज़ें पीछे रह जाने वाले का शुभ लाभ करेगा।

नष्ट हो चुके ग्रह या पितृ ऋण, की हालत में या औलाद आदि के लिए नीचे के उपाय कारगर होंगे।

ग्रह	*छुपी शक्ति*	*किस्म*	*रंग*	*उपाय औलाद हेतु*	*उपाय की चीजें आय के लिए*
वृ०	*ब्रह्मा जी*	*नर*	*पीला*	*हरि पूजन*	*दाल चना/सोना*
सू०	*विष्णु जी*	*नर*	*गंदमी*	*हरि पूजन*	*कनक/सुर्ख ताँबा*
चं०	*शिव भोले जी*	*स्त्री*	*दूध का*	*महादेव पूजन*	*चावल/दूध/चाँदी*
शु०	*लक्ष्मी जी*	*स्त्री*	*दही का*	*लोगों की पालना*	*घी/दही/काफ़ूर/मोती*
मं०	*हनुमान जी*	*नर*	*लाल*	*गायत्री पाठ*	*दाल मसूर/लाल मूंगी*
बु०	*दुर्गा जी*	*नपुंसक*	*हरा*	*दुर्गा पाठ*	*साबुत मूंगी/जमुर्द*
श०	*भैरव जी*	*नपुंसक*	*काला*	*राजा की उपासना*	*साबुत माह/लोहा*
राहु	*सरस्वती जी*	*नपुंसक*	*नीला*	*कन्यादान*	*सरसों/नीलम*
केतु	*गणेश*	*नपुंसक*	*चितकबरा*	*कपिला गायदान*	*तिल*

जो ग्रह नीच फल दें उसका दान ऊपर लिखे अनुसार करें।

विवाह के समय के उपाय :- विवाह के समय (हिन्दू धर्म के अनुसार) मंदे ग्रहों का उपाय सब से कारगर रहेगा। आदमी के चाहे स्त्री के, परन्तु मर्द के मंदे ग्रह के उपायों को अवश्य कर लेना चाहिए, क्योंकि शादी होते ही मर्द के ग्रह औरत पर हावी हो जाते हैं।

जन्म कुण्डली के हिसाब से उपाय :-

1. वृ० मंदा हो तो लड़की का संकल्प करने की ठीक उसी समय बाद में सोने के दो टुकड़े बराबर वज़न के एक जैसे ठीक उसी तरह दान किये जायें जैसे कि लड़की का, फिर उनमें से एक टुकड़ा पानी में बहा दिया जाये और दूसरा लड़की सारी आयु अपने पास रखे, किसी कीमत पर भी उसे बेच न खाये। वृ० के मंदे असर से बचाव होता रहेगा। ऐसा टुकड़ा चोर चुरा नहीं सकते, यदि किसी कारण सोना गुम हो जाये तो और सोने का टुकड़ा बना लें। दोबारा नदी में बहाने की ज़रूरत नहीं। यदि सोना न मिले तो केसर की दो पुड़ियां या हल्दी की दो गठियां ऊपर के ढंग से कायम करें। परन्तु सोना मिल जाये तो बहुत ठीक है।
2. सूर्य मंदा हो तो सोने की जगह ताँबा ऊपर की तरह करें।
3. चन्द्र मंदा हो तो सोने की जगह सुच्चा मोती ऊपर की तरह करें। यदि सुच्चा मोती न मिले तो चाँदी, चावल और मनुष्य के भार के बराबर दरिया, नदी, नाले का पानी शादी के समय घर में कायम रखें।
4. शुक्र मंदा हो तो सफेद मोती ऊपर की तरह कायम रखें।
5. मंगल मंदा हो तो लाल पत्थर लें, जो रंग में लाल मगर चमकीला न हो।
6. बुध मंदा हो तो हीरा लें, न मिले सीप लेंगे।
7. शनि मंदा हो तो लोहा— फौलाद लेंगे, न मिले तो काला नमक या काल सुरमा लेंगे।
8. राहु मंदा हो तो चन्द्र वाला उपाय करेंगे। यहाँ ध्यान रहे कि मंदे राहु के समय कभी नीलम की अंगूठी नहीं देनी वरना दुल्हा-दुल्हन के जबरदस्त हाथी पुरानी खंदकों में घिर जाते हैं।

9. केतु मंदा हो तो दो रंगा पत्थर कायम करें (वृ० की तरह उपाय करें)।

10.शुक्र नं० 6 के समय लड़की के माता-पिता की ओर से शादी के समय लड़की के लिए उसके सिर पर कायम रखने के लिए शुद्ध सोना दान की तरह लड़की को दे दें जिसे वह कभी-कभी प्रयोग करें। शुक्र खाना नं० 6 की मंदी हालत को ठीक रखेगा। थोड़ा सा शुद्ध सोना लड़की की शादी में देना ठीक है जब तक लड़की स्वयं उसे न बेचे, वृ० का असर अच्छा ही होता रहेगा।

11.पुरुष या स्त्री के टेवे में जब नीचे की ग्रहचाल हो यानि शुक्र के साथ या शुक्र के खाना नं० 2, 7 में उसके शत्रु सूर्य, राहु, चन्द्र आदि जैसे :- राहु-शुक्र, सूर्य-शुक्र, चन्द्र-शुक्र चाहे किसी भी घर में हो या शुक्र अकेला या किसी के साथ में खाना नं० 4 में हो या राहु अकेला या किसी के साथ खाना नं० 1, 7, 5 में या शनि खाना नं० 5, 9 में हो या केतु खाना नं० 8 में अकेला हो, खाना नें 5 में केतु या केतु के साथ उसके शत्रु केतु-मंगल, चन्द्र-केतु या बुध-केतु चाहे किसी भी घर में हो तो लड़की के माता-पिता की ओर से खालिस चाँदी दें, या मंदे केतु का इलाज जैसे धर्म स्थान पर दो रंगों का कम्बल देना या केतु जब पितृ ऋण से मंदा हो तो 1 कुत्तों की बारात को खाना देना, यानि खुराक साथ लेकर कुत्तों को बांटते जायें और सूर्य अस्त होने से पहले 100 की गणना पूरी करें।

पहली स्त्री से पहला ही पुरुष दो बार कुछ समय देकर विवाह कर लें तो शुक्र खाना नं० 4 की दो स्त्रियाँ जीवित रहने की शर्त दूर होगी।

बुध खाना नं० 12 शादी के समय लोहे का छल्ला जिसमें जोड़ न हो जातक का हाथ लगवा कर नदी में बहा दें और वैसा ही दूसरा छल्ला जातक अपने हाथ में डाले रखें तो बुध खाना नं० 12 सदा सहायक होगा।

12.नीचे लिखे ग्रहों का मंदा असर नेक करने के लिए किस का उपाय ठीक है।

नाम ग्रह	*किस का उपाय मदद देगा*
राहु	***केतु का उपाय सहायक, केतु नब्ज प्रायः खाना नं० 10 में होगी।***
केतु	***राहु का उपाय सहायक। (मंदे केतु का उपाय खाना नं०10 के ग्रहों की मदद से होगा, पापी ग्रहों का उपाय उन ग्रहों की चीज़ों की पालना करने से होगा)।***
शनि	***धन की मंदी हालत में कौंवे को रोटी डालें, औलाद की मंदी हालत में कुत्ते को रोटी डालें।***
शुक्र	***गाय को अपने भोजन का भाग दें।***
मं० बद	***मृगछाला मदद देगी। मंगल के लिए तन्दूर में मीठी रोटी पका कर कुत्तों को डालें या भिखारियों में बांटे।***
मं० बद	***दूध को जौ में डूबो कर चलते पानी में बहा दें। बुखार के लिए गाय पेशाब में जौ धो कर लाल रंग के कपड़े में बांधे। गाय के पेशाब से दांत साफ करें, कड़े से कड़ा बुखार उतर जायेगा। रेवड़ियां पानी में बहायें, केसर नाभि पर लगायें, गुड़ पानी में बहायें।***

स्त्री-पुरुष की कुण्डली का फर्क :-

1. पुरुष की जन्म कुण्डली खुद पुरुष के लिए पुरुष ग्रहफल का।	पुरुष की चन्द्र कुण्डली खुद पुरुष के लिए पुरुष पर राशिफल को चमकार, यानि महादशा की हालत के उल्ट नेक और अचानक चमकारा।
2. पुरुष की चन्द्र कुण्डली उसकी स्त्री पर ग्रहफल का— उस पर हुओं में भाग्य का नेक और एक दम असर देगी।	पुरुष की जन्म कुण्डली उसकी स्त्री पर राशिफल पर नेक प्रभाव यानि महादशा के अर्से में खाली साल रखे का असर देगी। मर्द की जन्म कुण्डली उसकी स्त्री पर साधारण असर देगी।
3. स्त्री की जन्म कुण्डली स्त्री के लिए स्त्री पर ग्रहफल का हालत की राशिफल का असर देगी।	स्त्री की जन्म कुण्डली उसके पुरुष के लिए आम असर देगी।
4. स्त्री की चन्द्र कुण्डली उसके पुरुष के लिए नेक नज़ारा। भाग्य की अचानक व नेक चमक होगी। राशिफल।	स्त्री की चन्द्र कुण्डली स्त्री के लिए स्त्री पर महादशा के खाली सालों में
5. पुरुष के लिए दायाँ हाथ खुद के लिये ग्रहफल का।	पुरुष का बायाँ हाथ खुद अपने लिए राशिफल।
6. स्त्री का बायाँ हाथ उस स्त्री के लिए ग्रहफल का।	स्त्री का दायाँ हाथ स्त्री के अपने लिए राशिफल का।
7. पुरुष का बायाँ हाथ उसकी स्त्री के लिए ग्रहफल का नेक देने वाला का।	पुरुष का दायाँ हाथ उसकी स्त्री के लिए राशिफल असर
8. स्त्री का बायाँ हाथ उसके पुरुष के लिए ग्रहफल का नेक	स्त्री का दायाँ हाथ उसके पुरुष के लिए राशिफल असर देने वाला। का।
9. बच्चा दोनों के लिए राशिफल का देने वाला होता है।	

हर ग्रह अपने बैठा होने वाले घर का फल अच्छा या बुरा न देगा जब तक उसकी ओर (दिशा) या स्थान में उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तु न हो।

यदि किसी कारण (पितृ ऋण या महादशा आदि) कोई ग्रह सो जाये या नष्ट हो जाये तो सबसे पहले खाली खानों के मालिक ग्रह का उपाय करें, जबकि वह ऐसे ग्रह के बराबर का या मित्र हो उसके बाद महादशा के समय में काम देने वाले ग्रह लें। फिर शत्रु ग्रहों की शत्रुता हटा दें या राशिफल के समय राशिफल का लाभ लें। यदि यह भी काम न दे तो सूर्य को कायम करें। यदि यह भी काम न दें तो पापी ग्रहों के उपाय करें और सबसे अंत में बुध का उपाय करें।

ग्रह राशि का निशान हाथ पर :-

अगर किसी राशि का निशान अपने स्थित जगह की बजाय किसी दूसरी जगह हथेली पर अंगुली पर पाया जाये तो उस निशान का सम्बन्धित राशि नं० कुण्डली के उस पक्के घर में लिख दें जिस नं० पर कि वह निशान हथेली या कुण्डली पर पाया जाये। जैसे मसलन मिथुन राशि का निशान II जो राशियों की गिनती में नं० 3 पर है किसी के हाथ के खाना नं० 12 में पाया गया तो कुण्डली के पक्का घर नं० 12 में अंक तीन लिख दिया और गिनती के क्रम से कुण्डली के 12 ही खाने पूरे कर दिये। इस तरह पर जो अंक लग्न पर आये वह उस व्यक्ति की जन्म राशि होगी जिसका स्वामी ग्रह (घर के स्वामी के बतौर) कुण्डली वाले के लिए सदा राशिफल का होगा।

इसी तरह राशि के निशान की बजाय अगर ग्रह का निशान पाया जाये तो जिस खाना नं० में वह निशान हो, कुण्डली के पक्के घरों के हिसाब से उसी नं० पर उस ग्रह को लिख दें। जैसे चन्द्र का निशान हाथ पर खाना नं० 5 पर है तो चन्द्र को खाना नं० 5 पर लिखेंगे। इस तरह चन्द्र जातक के लिए खाना नं० 5 के सम्बन्धित चीज़ों, काम, सम्बन्धियों पर सदा ग्रहफल का होगा।

फरमान नं० 10 :- ग्रह का प्रभाव

हर ग्रह के लिए उसका घर स्वामित्व के तौर पर, पक्का घर, उच्च-नीच हालत आदि सदा के लिए निश्चित है, चाहे वह किसी भी और ग्रह के घर मेहमान बन चला जाये। ग्रह यदि लैम्प माने तो उसकी मियाद खत्म होने पर लैम्प बुझ गया मानेंगे जिसके लिए टेबल देखें। हर ग्रह अपनी निश्चित राशि में नेक फल देगा बेशक वह राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर हो चुकी होगी।

राशि नं०	किस ग्रह की राशि है	किस ग्रह का पक्का घर है	इस राशि नं० में किस ग्रह का नेक असर देगी
2	शुक्र	वृहस्पति	शुक्र का नेक असर होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का असर नेक जब मंगल नेक हो।
5	सूर्य	वृ०, सू० एक साथ	सूर्य का नेक असर होगा।
6	बुध, केतु	केतु	बुध का उत्तम, केतु का खुद केतु की चीज़ों पर मंदा, पर दूसरों पर अच्छा, यदि दोनों साथ हों तो बुध का और बुध की चीज़ों का अच्छा मगर केतु और उसकी चीज़ों का बुरा।
7	शुक्र	शुक्र, बुध	शुक्र का नेक, बुध बाकियों को भी मदद दें।
8	मंगल	मं०, श०, चं०,	(आयु) यदि तीनों जुदा-जुदा हों तो अच्छा वरना मंदा।
11	शनि	वृ० (प्राय: मंदा)।	शनि का नेक, बाकी ग्रह बेरी, (शनि का वृक्ष) के गला घोटने वाले पीर जाहिदा उम्दा, मगर झाग के बताशे

ग्रह बैठा होने वाले घरों में ग्रह की चीज़ें कायम होने से उस ग्रह का असर बढ़ता है। जैसे केतु नं० 9 हो तो जद्दी मकान में कुत्ता या दोहता आदि कायम करें।

1. जन्म कुण्डली से ग्रह जिस हैसियत से बैठा हो उसका (अच्छा-बुरा) असर केवल इसी साल देगा जब वह वर्षफल में आ बैठा होने से हैसियत के लिए मुकर्रर की हुई राशि या पक्के घर में आ जाये। उदाहरण के लिए वृ० उच्च असर तभी होगा, जब वह वर्षफल में खाना नं० 4, 2 आदि में आयेगा। जन्म से उच्च है मगर अपना उच्च असर अब केवल 2, 4 खानों पर ही देगा। इसी तरह सभी ग्रहों का असर देखें।
2. इसी प्रकार धोखे के ग्रह जिस साल खाना नं० 10 (धोखे का घर) में आये धोखा दे, वह भी मंदा धोखा। धोखे का ग्रह जब खाना नं० 2 भाग्य के ग्रह का घर, खाना नं० 11 भाग्य को जगाने वाले ग्रह के घर में आये तो लाभदायक धोखा दे।
3. मंदा ग्रह खाना नं० 8 में आने पर ही मंदा होगा। इसी तरह ही वर्षफल में आने पर देखें।

नेक ग्रह का मंदा असर :-

हर ग्रह अपना खानावार हाल में दिया असर करता है, पर यदि अपने जाती असर से कोई नया काम करें, जो कि इस उस ग्रह

के उल्ट हो तो तो प्रभाव बदल जायेगा। जैसे राहु नं० 4 में पाप नहीं करता पर यदि वर्षफल में राहु नं० 4 हो राहु के काम करें तो झगड़ा हो जाता है।

राहु के काम :- मकान की सिर्फ छत बदलवाना, कोयले की बोरियां जमा करना, टट्टी की नई जगह बनवाना, और काने लोगों को भागीदार बनाना।

इसी तरह वृ० नं० 4 वाला (जन्म या वर्ष कुण्डली में) *यदि पीपल कटवायें या साधु को सताए तो तबाह हो जायें, सोना मिट्टी हो जाये।*

केतु नं० 12 वाला यदि कुत्तों को मरवाये (कुत्ते पालने की बजाय) तो केतु नं० 12 का असर मंदा हो जाए।

दृष्टि और टकराव में भी यही असूल है। हर ग्रह की अपनी जाहिर करने की निशानी के लिए ग्रह की सम्बन्धित खानावार चीज़ें होंगी।

नर ग्रह सू०, वृ०, मं० दिन को असर करेंगे।

स्त्री ग्रह चं०, शु० रात को असर करेंगे।

नपुंसक ग्रह बु०, श०, रा०, के प्रातः और सायं संध्या के समय असर करेंगे।

वर्षफल में सूर्य के हिसाब से मासिक चक्र पर जब ग्रह वर्षफल में आए तो अपना असर करेगा जो कि उस ग्रह का उस घर के लिए है, अच्छा या बुरा, 12 घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात, 12 मास का साल, 12 राशि, 12 साल तक बच्चा मासूम, 12 साल के बाद अच्छे दिनों की आशा, सभी 35 के चक्र में शामिल है और वृ० जमाने की हवा की तलाश में है।

हर ग्रह का रंग अपना-अपना है जब कभी भी किसी ग्रह का समय होगा वह ग्रह उस रंग की चीज़ों पर उसी रंग की चीज़ों से अपना असर दिखायेगा (दुनियां की हर चीज़ों पर) वर्षफल के अनुसार, कुण्डली के लग्न या खाना नं० 1 में आया हुआ ग्रह अपने राज्य के समय सबसे पहले अपना असर जिस जगह वह जन्म कुण्डली में है, करेगा, उसके बाद अपने शत्रु ग्रहों पर चाहे वह शत्रु ग्रह उस घर में ही हो यहाँ पर वह खुद बैठा था, फिर मित्रों पर, फिर बराबर वालों पर।

यदि किसी घर में एक से अधिक ग्रह हों, तो खाना नं० 1 का ग्रह हर एक के ऊपर की तरतीब से बारी-बारी शत्रुओं से टकरायेगा और मित्रों से मित्रता करेगा। यदि एक ही घर में उस ग्रह के कई मित्र या शत्रु हो तो ग्रहचाल की तरतीब से (जो कि लाल किताब की है जैसे वृ०, सू०, चं० आदि) करेगा।

यदि कुण्डली के खानों के मित्र ग्रह जुदा, शत्रु ग्रह जुदा खानों में हों, खानों के क्रम से यानि खाना नं० 1, 2, 3, 4 बर्ताब करेगा।

क्याफा :- खूब ज़ोर से मिलाने पर देखा, जिस तरफ से अधिक सुर्ख हो उसी तरफ से उसकी रेखा या शाखा के शुरू होने की तरफ है।

खाना नं० 11 के ग्रह वर्षफल के अनुसार खाना नं० 1 में आने पर चाहे उम्दा पर होंगे अपनी आयु ` पश्चात् नकारा हो जाते हैं (जैसे सूर्य 22 वर्ष के बाद आदि) विशेषकर जब वह जन्म कुण्डली में सोये हुए हों।

खाना नं० 2 के ग्रह सदा उच्च फल देंगे जब तक खाना नं० 8 खाली रहेगा। खाना नं० 2 के ग्रह टेवे वाले के बुढ़ापे में अपना असर उच्च रखते हैं। दाएँ हाथ की हथेली में दाएँ भाग में जिस ग्रह का चिन्ह हों वह ग्रह हमेशा ही नेक फल देगा।

मंदे ग्रह के बैठा होने वाले घर से सम्बन्धित वस्तु का हाल मंदा न होगा, बल्कि सहायक होगा। जैसे सूर्य नं० 6 का राज दरबार केतु (लड़का) पक्का घर नं० 6 के जन्म दिन से अच्छा हो जायेगा।

हर ग्रह खानावार वस्तुओं की सूची में जो चीज़ें दी है जब वह पैदा होगी तो उस खाना नं० में यह असर शुरू होगा जैसे शुक्र नं० 1, 9 में तो सफेद गाय घर आने या शादी 25 वें वर्ष होने पर मंदा फल शुरू हो।

हर ग्रह जिस जगह वह मलकीयत घर का निश्चित है बैठा होने के समय अपना बैठा होने वाले घर से सम्बन्धित वस्तु पर नेक असर देगा जैसे सूर्य नं० 5 अपना राज दरबार औलाद सब ठीक और उच्च प्रभाव देने वाले होंगे।

उच्च ग्रह बर्बाद होकर भी बुरा असर न देगा।

हर ग्रह अपनी राशि में सदा नेक फल देगा। जब कोई ग्रह किसी ऐसे घर में बैठा हो जहाँ कि वह उच्च-नीच फल का माना गया है तो वह उच्च ग्रह अपने साथ बैठे हुए शत्रु ग्रह या किसी ऐसे घर में बैठे हुए शत्रु ग्रहों पर जहाँ कि वह उच्च ग्रह दृष्टि या किसी तरह से भी अपना असर भेज सके, कभी बुरा असर न करेगा। भला चाहे करे या न करे।

ग्रह	किस खाना में हो	उसके शत्रु	किस घरों में हो
वृहस्पति	4	शुक्र, बुध	10
सूर्य [1]	1	शुक्र, राहु, केतु, शनि	7
चन्द्र	2	बुध, शु क्र, पापी	6, 12
शुक्र	12	सूर्य, चन्द्र, राहु	2
मंगल	10	बुध, केतु	2
बुध	6	चन्द्र	12
शनि	7	चन्द्र, सूर्य, मंगल	7
राहु	3, 6	शुक्र, मंगल, सूर्य	12
केतु	9, 12	चन्द्र, मंगल	2

1. सूर्य स्त्री की सेहत मंदी होगी, तपेदिक तक हो सकती है और कोई मंदा असर न होगा।

जिस ग्रहों ने अपने पहले 35 साल चक्र में बुरा असर दिया हो, वह अपनी अगले चक्र में बुरा असर न करेंगे चाहे अच्छा न करें। इसी तरह 1 साल चक्र के बाद खानदानी हालत ज़रूर बदलेगी चाहे अच्छी या बुरी। अगर टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली में सभी ग्रह मंदे हों तो वह अकेला ही लाखों का मुकाबला कर सकता होगा, उत्तम फल देगा।

मसनुई ग्रहों का असर विशेष बातों का होगा जैसे :-

ग्रह पक्का	मसनुई ग्रह	असर
वृहस्पति का मालिक	सूर्य, शुक्र (खाली हवाई)	औलाद की पैदाईश
सूर्य	बुध, शुक्र	सेहत का स्वामी
चन्द्र का है	सूर्य, वृहस्पति	माता-पिता के खून
		वीर्य के कतरे का
सम्बन्ध		
शुक्र	राहु केतु	सांसारिक सुख
मंगल का स्वामी	सूर्य, बुध (मंगल नेक)	संतान जीवित रखने
	सूर्य शनि (मंगल बद)	
बुध	वृहस्पति, राहु	मान
शनि	वृहस्पति, शुक्र (केतु स्वभाव)	सेहत बीमारी
	मंगल, बुध (राहु स्वभाव)	
राहु	मंगल, शनि (उच्च)	झगड़ा
	सूर्य, शनि (नीच)	
केतु	शुक्र, शनि (उच्च)	ऐश का स्वामी
	चन्द्र, शनि (नीच)	

नीचे दिए हुए एक साथ ग्रहों से उनके सामने दिये हुए खाना नं० का असर पैदा होगा अर्थात् उसके सामने दिए हुए खाना नं० का असर उनसे ज़रूर बहाल करेगा चाहे वे किसी भी घर में इकट्ठे क्यों न हो। यदि सूर्य के लिए खाना नं० 1 में जो असर लिखा है, जो बिना ग्रह के खाना नं० 1 की तासीर बताई है वह सूर्य, मंगल एक साथ के असर में अवश्य घरेलू खून की तरह लेंगे। चाहे वे दोनों ग्रह किसी भी घर में किसी भी तरह कितने ही मंदे क्यों न हो।

मसनुई हालत में ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रह का असर जुदा-जुदा कर लेना संभव होगा या दोनों का असर एक साथ कर लेना हो सकेगा। अर्थात् ऐसा असर राशिफल का होगा।

क्याफा :- किस्मत की हेराफेरी पक्का ग्रह बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है। मसनुई ग्रह यानि शाखा रेखाओं को बदलना मुमकिन है वह भी उम्र के हर सातवें साल मगर 21 साल की उम्र की रेखा में कोई तबदीली नहीं मानते। यह बालिग होने का समय आयु हर सातवें साल तबदीली होनी मानी है। अल्पायु वाले की आयु के हर आठवें साल (8, 16, 24) जीवन खतरे में गिनते हैं जिसके बारे में अल्पायु वाले अध्याय में लिखा है।

ग्रह एक साथ जीवित रहेगा	खाना नं० जिसका असर मंदा होगा मगर
सूर्य, मंगल	1
शुक्र, वृहस्पति	2
बुध, मंगल	3
मंगल, शुक्र	4
सूर्य, वृहस्पति	5
बुध, केतु	6
शुक्र, बुध	7
मंगल, शनि, चन्द्र	8
बुध, शनि दोनों का आपसी स्वभाव	9
शनि	10
वृहस्पति, शनि	11
वृहस्पति, राहु	12

ग्रहचाल में चीज़ों पर रंग का असर :-

सब चीज़ें किसी न किसी ग्रह से सम्बन्धित है परन्तु कुछ नहीं भी है। जैसे दो रंगों का कुत्ता यदि काला-सफेद है तो केतु, परन्तु यदि वह दो रंगों का मगर लाल रंग साथ में, चाहे वो केतु है पर होने पर भी बुध का असर हो जायेगा। इसी तरह भैंस काली होने पर शनि की चीज़ है परन्तु भूरी हो तो सूर्य की है। इसी तरह यदि काली भैंस का माथा सफेद हो तो शनि के साथ चन्द्र का भी असर लेंगे। घोड़ा चन्द्र की चीज़ है यदि पीले रंग का हो तो चन्द्र को वृहस्पति की मदद और साथ होगा। यदि काला घोड़ा हो तो चन्द्र के असर को दबायेगा और शनि का असर प्रबल होगा। हर मनुष्य के टेवे में जो भी ग्रह जिस असर का हो उसे उस ग्रह से सम्बन्धित उस रंग का मिलना वही असर देगा जैसा कि उस चीज़ का और रंग का ग्रह उस मनुष्य को अपने टेवे के अनुसार अच्छा या बुरा साबित हो रहा हो।

क्याफा :- मर्द सीधे खत या रेखा, दो शाखी से मुराद औरत होगी।

नर ग्रह नरों पर असर देंगे और स्त्री ग्रह स्त्रियों पर।

नाम ग्रह	किन पर असर देंगे
वृहस्पति	रुह के सम्बन्धियों पर
सूर्य	जिस्म के सम्बन्धियों पर
मंगल	खून के ताल्लुकदारों से
	मसनुई ग्रह पशुओं और बेजानों पर असर करेंगे।
चन्द्र	माता की हैसियत वालियों पर
शुक्र	औरत के दर्जे वालियों पर
शनि	धातु जमादात पर
बुध	नवादात (वनस्पति पौधे)
राहु	हरकत दिमाग पर
केतु	हरकात पांव पर

क्याफा :- हस्त रेखा में रेखा 21 साल पर बालिग और 12 साल उम्र तक नाबालिग गिनते हैं।

1. कुण्डली में वर्षफल के हिसाब से आयु के जिस दिन (सबसे पहले) सूर्य का राज्य या शुरु हो जाये उस दिन से सारे ग्रह बालिग गिने जाते हैं चाहे आयु 21 साल हो या कम हो।
2. सूर्य यदि कुण्डली के खाना नं० 1, 5, 11 में चाहे अकेला हो या किसी के साथ तो जन्म दिन से सब ग्रह बालिग गिने जाते हैं।
3. सूर्य का दौरा शुरू होने से पहले मनुष्य पर उसके पिछले कर्मों का फैसला तकरीबन 7 या 8 साल की आयु या हर सातवें या आठवें साल प्रभाव किया करता है जो तबदीली का युग होता है।

क्याफा :-

बिन रेखा वाला हाथ डाकू या निर्दय का होगा, बहुत रेखा वाला हाथ वहमी हो। एक ही घर में बहुत अधिक ग्रह दोष युक्त या नीच होंगे तो मंदे भाग वाला होगा।

अधिक चौड़ी रेखाएँ बहुत कम नेक असर देगी जैसे कई तरफ की दृष्टियों से टकराए हुए दुश्मन ग्रह।

मध्यम सी रेखा बेमायनी होगी, देर बाद असर देगी, जैसे बहुत शत्रु ग्रह मुकाबले पर हों।

किसी ताकत के ग्रह की पहचान उसके पर्वत से होगी जो व्यक्ति किसी ग्रह का मालूम हो तो वह ग्रह उसके खाना नं० 9 में बैठे की तरह काम देगा।

जिस किसी व्यक्ति में जिस ग्रह की शक्ति ज्यादा होगी, वह मनुष्य अधिक ताकत वाले ग्रह की चीज़ों का अधिक प्रयोग करने वाला न होगा। जैसे सूर्य का नमक, मंगल का मीठा। अब सूर्य ताकत वाला होने पर वह नमक कम खाएगा और अपनी कमी पूरी करने के लिए यदि मंगल उसका कमज़ोर हो तो मीठा अधिक खाएगा। इस तरह मंगल शक्तिशाली हो तो इससे उल्ट होगा।

9 ग्रहों का सम्बन्धियों से सम्बन्ध :-

1. जब वृहस्पति प्रबल लगे तो जिस घर में वृहस्पति है उस मनुष्य के खाना नं० के ताल्लुकदार में वृहस्पति की लिखी सिफत के होंगे। यदि वृहस्पति हो तो अपने घरों का या घरों में तो उसके बाबे या बाप की हालत होगी जो वृहस्पति की कही होगी। इसी प्रकार और ग्रह लेंगे।
2. यदि किसी का सूर्य प्रबल है परन्तु पड़ा हो केतु के खाना नं० 6 में तो उसका लड़का सूर्य की लिखी सिफतों का मालिक है।
3. यदि केतु पड़ा हो तो मंगल के पक्के घर नं० 3 में तो उसके भाई में केतु की लिखी बातें मिलेगी।

एक साथ के ग्रहों का असर :- ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के खानों में।

फल 2-11 अपना-अपना, धर्म मन्दिर (2)गुरुद्वारे (11) में।

1. वृ०-सू०, वृ०-बु०, वृ०-श०, सू०-बु०, सू०-श०, बु०-श० इकट्ठे होने के समय माता-पिता के सुख सागर और जायदाद जद्दी के सुख से कोई सम्बन्ध न होगा बल्कि केवल जाती गृहस्थी सुख से मुराद होगी। चाहे अकेले-अकेले यह सब ग्रह टेवे में अपनी-अपनी वस्तु काम या सम्बन्धी ग्रह मुतल्लका के ताल्लुके में कैसे ही क्यों न हो।
2. स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र) या दोनों साथ बुध के साथ जब नर ग्रह हो तो नेक फल होगा।
3. जब दो या दो से अधिक ग्रह एक ही घर में हों तो उनमें आपसी शत्रुता वाले ग्रह अपनी शत्रुता छोड़ देंगे मित्रता को न छोड़ेगें। चाहे वह कितने ही शत्रुओं के साथ एक ही घर में अपने मित्रों से मिल कर बैठे हों।
4. बुध अपने पक्के घर खाना नं० 7 में बैठा हुआ और नर ग्रहों सूर्य, मंगल, वृ०, या शनि में से कोई भी 1, 4, 7, 1 में आया हुआ या खाना नं० 2, 11 में बैठा हुआ टेवे वाले की सेहत और आयु और दूसरी साथ की जानों (चाहे मनुष्य या पशु) पर कभी बुरा असर (मौत) नहीं डालता। जबकि इन घरों में बैठा होने के समय शनि के साथ स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र) का ताल्लुक या साथ न हो शनि के साथ स्त्री ग्रह हो जाने का प्रभाव शनि के हाल में आएगा।

सांझें घरों का असर देखने का ढंग :-

(दृष्टि की शर्त नहीं मगर दोनों घरों के ग्रहों को इकट्ठे गिन कर) इसके लिए (दृष्टि वाले अध्याय में पढ़े) निम्नलिखित घर सांझें में व्यवहार करते है :-

1. खाना नं० 1-7-11-8 का सांझा प्रभाव (राजा) इन सब का हाल जैसा एक का वैसा सब का चारों घरों में होगा।
2. खाना नं० 3, 11, 4, 7 का सांझा प्रभाव धन की आमदन, फालतू धन और खर्च की नहर की हालत।
3. खाना नं० 8, 2, 3, 4 का सांझा प्रभाव बीमारी का बहाना, सेहत का, आखिरी वक्त, जायदाद जद्दी की हानि, चोरी, मित्रता आदि देखेंगे।

मुश्तरका घरों का आपसी सम्बन्ध :- साझें घरों (दृष्टि की शर्त नहीं, मगर दोनों घरों के ग्रहों को इकट्ठा ही गिन कर) का प्रभाव देखने का ढंग :- **दृष्टि के हाल में दृष्टि का दर्जा दिया है, यानि एक घर में बैठे हुए ग्रह दूसरे घर में बैठे हुए ग्रहों को खास-खास दर्जा दृष्टि से देख सकते जाने हैं, लेकिन असल में दर्जा दृष्टि 100, 50, 25% का ख्याल रखने की कोई खास ज़रूरत नहीं। याद सिर्फ यह रखें कि कौन से घर के ग्रह को किस घर का ग्रह देख सकता है, जैसे खाना नें 1 के ग्रह अगर देख**

सकते हैं तो सिर्फ खाना नें 7 वालों को, मगर खाना नें 7 के ग्रह कभी खाना नें 1 के ग्रहों को नहीं देख सकते। इस बात का मतलब ये है कि खाना नें 1 में अगर कोई ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना नें 7 में डाल सकता है, मगर खाना नें 7 वाले की ज़हर का (अगर कोई मंदा असर इस नें 7 वाले का नें 1 वाले के ग्रह के लिए हो) नें 1 वाले पर कोई बुरा असर न हो सकेगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये हुए घरों के ग्रहों को इकट्ठा मिलाकर देखें तो उनके इस मिले हुए प्रभाव से जो बातें सामने दिखेंगी, वो नीचे लिखी प्रकार से होंगी।

खाना नें 1, 7, 1, 8 मुश्तरका का असर (राजा वज़ीरी हालत)

अगर 11 खाली हो तो राजा बेलगाम, अगर 8 खाली हो तो वज़ीर बेदलील।

इसी तरह अगर खाना नें 8 में ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना नें 1 में बैठे ग्रह का शत्रु हो तो खाना नें 8 का ग्रह खाना नें 1 यानि तख्त पर बैठे राजे को उसी तरह चलाएगा जैसे कि राजे की आँखों में ज़हर डाल दी गई हो, जिससे कि वो रास्ता चलते वक्त देखने की बजाय अपना सिर दर्द के मारे पीटता रहे। दूसरी तरफ यदि नें 11 का ग्रह नें 1 के ग्रह का शत्रु हो तो वह तख्त पर बैठे राजा को उसी तरह चलाएगा जिस तरह की किसी और व्यक्ति का हाथ पकड़ कर (जिस राजा की आँखें खराब हो रही हो) चल भी पड़े तो अपनी टांगों में ज़हर भरी होने के कारण चलने की बजाय दर्द से दु:खी होकर चिल्लाता होगा। इसके उल्ट अगर 11, 1, 8 आपस में मित्र हों तो तख्त पर बैठा राजा (खाना नें 1 का ग्रह) अपनी टांगें (खाना नें 11) आँखों से (खाना नें 8) सदा मदद पाता रहेगा और उसकी वज़ीरों में मदद के लिए खाना नें 7 के ग्रह सहायक होते होंगे, शर्त ये कि खाना नें 1 में खाना नें 7 से अधिक ग्रह न हों ख्याल सिर्फ गिनती का रखें, मित्रता-शत्रुता का नहीं, क्योंकि तब खाना नें 7 का वज़ीर खाना नें 1 के कई राजाओं के हुक्म तले दबकर अपनी जड़ कटवाता रहेगा और अब खाना नें 7 का ग्रह अपनी चीज़ें काम या संबंधियों के मंदे प्रभाव का होगा।

खाना नें 7 के ग्रहों को अगर वज़ीर माना तो खाना नें 8 के ग्रहों को हुक्मनामा यानि वज़ीरों की दिमाग़ी दलीलबाजी। उदाहरणत: मंगल खाना नें 7 हो तो शुभ परन्तु बुध खाना नें 8 के होने पर सब कुछ मंगल से संबंधित मंदा प्रभाव होगा। इसी तरह अगर खाना नें 1 में बुध और खाना नें 7 में मंगल हो तो भी मंगल खाना नें 7 का दिया फल निकम्मा होगा। बुध खाना नें 8 या बुध खाना नें 1 की विष जब खाना नें 7 के मंगल को मिलती हुई मानी तो ऊपर की दोनों हालतों में फर्क ये हुआ कि बुध खाना नें 1 के वक्त उसके धन-दौलत, परिवार, राजा खाना नें 1 की जालिमाना कारवाईयों से हुई, मगर कुदरत की ओर से कोई धोखा नहीं हुआ, लेकिन बुध खाना नें 8 के समय उसी मंगल खाना नें 7 का फल कुदरत की तरफ से रद्दी हो गया, चाहे समय का राजा उसकी कितनी भी मदद करता रहा हो। दूसरे शब्दों में खांड (मंगल) में (बुध) रेत और खून में आंतों का रास्ता बंद यानि स्वास्थ्य और गृहस्थ दोनों ही [illegible] होते चले गये।

खाना नें 2, 8, 12, 6, 11 का साँझा प्रभाव :-

रात का आराम, साधु की समाधि आदि जब नेक हालत हो तो, लेकिन मंदी हालत में अचानक मौत मुसीबत मनुष्य, पशु, चरिन्द-परिन्द इस ग्रह से संबंधित होगी जो खाना नें 8 में हो, दूसरे सांसारिक साथियों की संबंध से किस्मत का प्रभाव आयु के लिहाज से खाना नें 8 से खाना नें 2 को मंदा असर जाने के वक्त खाना नें 11 के ग्रह अगर खाना नें 8 के शत्रु हों तो खाना नें 8 की ज़हर खाना नें 2 को नहीं जाएगी।

ए) खाना नें 8 का असर खाना नें 2 में मिल सकता है मगर खाना नें 2 का प्रभाव खाना नें 6 में मिला करता है।

खाना नें 2 और खाना नें 12 आपस में साधु (खाना नें 2 और खाना नें 12) मिलते मिलाते रहते हैं किसी रजिस्ट्री के दर्जे का कोई लिहाज नहीं। इसी तरह खाना नें 2 अपना प्रभाव मिला दिया करता है खाना नें 6 और खाना नें 6 अपना प्रभाव सिर्फ वही प्रभाव जो कि खाना नें 6 का ग्रह हो, जिसमें कि खाना नें 2 का कोई असर मिला हुआ न हो (यानि खाना नें 2 के असर के बगैर जो भी असर खाना नें 6 का जाती तौर पर हो सकता हो, सिर्फ उतना ही) खाना नें 12 में मिलाया करता है और खाना नें 12 अपना असर खाना नें 6 में नहीं मिलाता। इस असूल से खाना 12 का बुध खाना नें 6 के शनि में अपना ज़हर फैंकेगा और खाना नें 6 का शनि साँप अपने ज़हर भरे खर्राटे से खाना नें 2 को फूंक देगा।

बी) खाना नें 6-8 के ग्रह भी आपस में ऐसे मिले जुले रहा करते हैं जैसे कि 2-12 के ग्रह आपस में (6-8 पाताल में मंदी लहरों के कारण है), ऊपर के खाना नें 8, खाना नें 6 की सलाह लेता हुआ खाना नें 11 के रास्ते, खाना नें 2 में अचानक आने वाली मुसीबत, जो कि खाना नें 8 में बैठे हुए ग्रह से संबंधित हो, भेजेगा जो कि इंसान, पशु, पक्षी किसी पर भी होगी। ऐसी ग्रहचाल में व्यक्ति पर अचानक कोई मुसीबत या मौत का भय आ खड़ा हो तो संसार के दूसरे साथियों के संबंध में भी, जो कि ऐसे व्यक्ति के आयु के साथी हो भाग्य का अच्छा प्रभाव नहीं होगा। लेकिन अगर खाना नें 2-12 हों तो अच्छे हो, खाना नें 8-11 शत्रु हों तो न कोई अचानक मुसीबत आएगी और न ही कोई संसारी संबंधी धोखा देगा और अगर कोई मुसीबत आ भी जाये तो संसारी संबंधी उसकी मदद करके उसके बचा लेंगे।

सी) अगर खाना नं 12 और खाना नं 8 में ऐसे ग्रह हों जो आपस में मिल जाने पर शत्रुता का भाव पैदा कर लें, साथ ही खाना नं 2 खाली हो तो ऐसी हालत में अगर ऐसे टेवे वाला प्राणी मंदिर में आने-जाने लग जाए तो खाना नं 12 और खाना नं 8 के आपसी शत्रु ग्रहों का बुरा असर होना शुरू हो जाएगा। मंदिर न जाने पर बुरा असर न होगा (मूर्ति को कोई अंग नहीं छुआना चाहिए, मंदिर के बाहर से इष्ट देव को नमस्कार में हर्ज नहीं), इसके खिलाफ अगर खाना नं 8-12 में मित्रता हो और या खाना नं 6 में कोई उत्तम ग्रह है तो ऐसी दोनों हालतों में खाना नं 2 खाली हो तो ऐसे प्राणी को धर्म स्थान के अंदर मूर्ति को अंग लगाने से सब तरह का अच्छा प्रभाव मिल सकता है।

खाना नं 3, 11, 5, 9, 11 का मुश्तरका असर :-

किस्मत का हुआ प्रभाव, हवाई वर्षा उतार-चढ़ाव, पूर्वजों से संबंधित किस्मत की चमक का समय (जवानी) यानि भाईयों के जन्म के दिन से अपनी जवानी और अपने बच्चों के जन्म दिन से आगे आने वाले जीवन का हाल, अपने बड़ों और अपनी संतान का हाल या अपना गुजरा हुआ समय, जन्म से पहले का समय और आगे आने वाले समय का हाल होगा। खाना नं 9 पूर्वजों की हालत बताता है, लेकिन जब खाना नं 3 में कोई ग्रह हो तो भाईयों के जन्म दिन से उस खाना नं 9 के ग्रह का असर जातक पर शुरू होगा और वह औलाद के जन्म दिन तक जाएगा। औलाद के जन्म दिन से फिर तबदीली आएगी। अगर खाना नं 5 और 9 में पापी ग्रह बैठे हो तो संतान के जन्म दिन से कोई खास नेक हालत हो जाने की उम्मीद नहीं लेते। मगर जब खाना नं 5 में पापी और खाना नं 8 में शत्रु या मंदे ग्रह बैठे हों तो खाना नं 11 का ग्रह बिजली की तरह बुरे असर देने शुरू कर देगा और बिजली अंत में या खाना नं 8 के सम्बन्धित संबंधियों या खाना नं 5 के सम्बन्धित रिश्ते की मार्फत या उस पर (8 या 5) पड़ेगी, अगर खाना नं 11 खाली हो तो अपनी आय के सम्बन्ध में सोई हुई किस्मत का समय होगा। भाई बन्धु से कोई लाभ नहीं गिनते। यदि खाना नं 1 और खाना नं 5 में कोई न कोई ग्रह बैठै हों तो दोनों घरों के ग्रह आपस में ज़हरी दुश्मन होंगे जैसे खाना नं 1 में चन्द्र और खाना नं 5 में मंगल, यह आपस में मित्र हैं पर जातक की 24 (चन्द्र), 28 (मंगल) साल उम्र माता (चन्द्र), भाई (मंगल) पर भला न होगा। अगर खाना नं 9 में सूर्य और चन्द्र बैठे हों तो खाना नं 5 में पापी बैठे का औलाद के खाने पर बुरा असर न होगा और न ही जीवन में दुःख देने वाली मंदी बिजली पड़ेगी।

1. खाना नं 9 को अगर एक समुद्र गिनें तो खाना नं 2 पहाड़ों का लम्बा सिलसिला होगा। दोनों के मिलाने के लिए यह हवाई शक्ति का स्वामी वृहस्पति (खाना नं 9 और 2 दोनों का स्वामी) हवा की लहरों से अपना असर करता या फोकी उम्मीदों में पहाड़ी औरर समुद्री सैरें करता या कराता होगा। खाना नं 9 की निकली मौनसून, खाना नं 2 से टकरा कर धन की वर्षा करेगी। लेकिन अगर खाना नं 2 खाली हो तो खाना नं 9 की हवा बिन बरसे निकल जायेगी यानि अगर खाना नं 9 में अच्छा ग्रह हो और खाना नं 2 में कोई न कोई ग्रह बैठा हो तो ऐसे प्राणी को खाना नं 2 में बैठे ग्रह की उम्र में अपने पूर्वजों की शान तथा धन का लाभ होगा। लेकिन यदि खाना नं 2 खाली हो बैठे तो पूर्वजों के धन-दौलत का ऐसे प्राणी को सिर्फ वहम या गुमान ही होगा लाभ न होगा।
2. अगर खाना नं 2 में कोई ग्रह हो और खाना नं 9 खाली हो तो ऐसे प्राणी के पास धन दिखावे का ही होगा, नज़ारा जले पहाड़ का ही होगा।

खाना नं 4, 10, 2 साझाँ प्रभाव :-

किस्मत के मैदान की लम्बाई-चौड़ाई कितनी होगी। ऐसे मैदान में किसी दूसरे संबंधी का ताल्लुक न होगा। किस्मत के मैदान का क्षेत्रफल खाना नं 10 का ग्रह बता देगा मगर उसकी मिट्टी की चमक खाना नं 2 और ऐसे मैदान में कैसा पानी चाहिए खाना नं 4 से प्रकट होगा। अगर खाना नं 4 खाली हो या जब उसमें पापी हो तो भाग्य के मैदान में चाहे लाख चमक हो मगर अपनी प्यास के लिए पानी ज़रूरत के समय वहाँ बैठे पापी (शनि, राहु, केतु) के भयानक नज़ारे पैदा करते रहेंगे। यानि ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत से बना तो बहुत कुछ लेगा मगर थैली में हाथ डाल कर देखेगा तो कुछ भी नहीं होगा। खाना नं 1 की शानदार ईमारत में बिस्तरा तक जला हुआ, शाहजहाँ या समय के खानदान गुलामों के खून का सबूत देने वाला, दो ही रंगों का असर जुगनू का असर टिमटिमाता हो। ख्ज़ानों के कीमती पत्थर लाल हीरे की रोशनी की चमक से अंधेरी रात में भी चमकते हुए चाँद से उत्तम रोशनी देने वाला होगा। यानि अंधेरी रात में भी चमकते हुए चाँद से उत्तम रोशनी देने वाला होगा। यानि अगर खाना नं 8 मंदा हो तो मंदी हवा बेशक मौत का कोई सदमा या नुक्सान हुआ या न हुआ हो इसके विरुद्ध यदि खाना नं 2 उत्तम हो तो गरीबी की काली रातों में मामूली से चिराग की बजाय प्राकृतिक रोशनी रास्ता दिखाने के लिए अपने आप पैदा हो जायेगी, चाहे ऐसा व्यक्ति नीच जाति का ही क्यों न हो।

अगर खाना नं 2 खाली हो तो खाना नं 10 किस्मत का मैदान चाहे कितना ही लम्बा-चौड़ा हो उसमें चमक शायद ही आयेगी। इसी तरह अगर खाना नं 2 में कोई ग्रह बैठा हो और खाना नं 10 खाली हो तो किस्मत में लिखी मालधन का पार्सल डाकखाने या रेलवे स्टेशन पर चाहे पहुँच जाये पर उसको लेने के लिए अपनी पहचान का सबूत या रसीद पर्चा कहीं गुम ही हो गया होगा, जिसकी तलाश के लिए कई कुछ किया मगर वह वह वापिस न मिला और ऐसा प्राणी उसकी उम्मीद से रास्ता देखता ही थक गया। अगर खाना नं 2, 10 दोनों ही खाली खाना नं 4 में कोई अच्छा ग्रह बैठा हो तो पीने के लिए पानी तो नज़र आता है मगर

मृगतृष्णा की तरह उस तक पहुँचा कैसे जाये, की तरह का हाल होगा। यानि जीवन माया धन होंगे तो ज़रूर मगर कब अपनी ज़रूरत के लिए पूरे होंगे इस बात का जवाब शायद ही कभी आयेगा।

विशेष प्रभाव :

ग्रह मित्र नहीं आपस में लड़ते, झगड़ा करवाते दूसरे हैं।
शनि सूर्य दो इकट्ठे बैठे, लड़ते ग्रह स्त्री से हैं।
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे 2 या कहीं भी हो [1]।
उन बैठे ग्रह जो कोई देखें, मरते सन्तान से हों।
इस ज़हर को घर 9 वें से, राहु, केतु हटाते हैं।
अगर मदद न उनकी ले, मंगल, केतु मर जाते हैं।
एक दीवार के घर दो साथी, ग्रह मुश्तरका होते हैं।
शत्रु ग्रह चाहे कभी न मिलते, दोस्त मिले ही लगते हैं।
कारण किसी दीवार फटे अगर [2] दोगुनी ज़हर हो जाती है।
अक्ल बुरी किस्मत हो मंदी, मौत खड़ी हो जाती है।
ग्रह शत्रु में गुरु जो आए, वैर खत्म हो जाता है।
माता चन्द्र जब साथी हो, मित्र सभी बन जाते है।

1. स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर खाना नें 2 में या और किसी जगह बैठे हो तो जो ग्रह उन (स्त्री ग्रह और शनि) को दृष्टि के असूलों पर देखेगा, उस ग्रह का मुतल्लका रिशतेदार औलाद से दुःखी होगा।
2. जब कोई ग्रह ऐसे घर में आये या बैठा हो तो जहाँ कि वह नीच है या ऐसे घर में बैठा हो जो कि उसके शत्रु ग्रह का घर है (बतौर मालकियत का पक्का घर) तो ग्रह का प्रभाव देखने में प्रायः मंदा ही आता है इसके उल्ट जब वह ऐसे घरों में हो जो उसके लिए उच्च हालत का है या अपने मित्र ग्रहों के घर में (बतौर मलकीयत या पक्का घर) तो उसका असर नेक होगा। जब कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो या कायम हो या उसके साथ बराबर की हैसियत का ग्रह बैठा हो तो औसत हालत में उसका असर नेक ही होगा। जब कोई ग्रह नीच घर में हो या शत्रु ग्रह का घर हो तो मंदे असर का होगा। उच्च या मित्र गृही घर तो उच्च असर कायम ग्रह या बराबर का ग्रह बैठा हो तो नेक असर।

विशेष प्रभाव :-

खाना	कौन ग्रह बैठा हो	किस ग्रह पर हर प्रकार से असर करेगा	क्या असर करेगा
1	केतु	सूर्य	सूर्य उच्च फल का होगा।
	राहु	सूर्य	सूर्य जिस घर बैठा हो उस घर में सूर्य ग्रहण होगा।
2	बुध	वृहस्पति	हर तरह से बर्बाद होगा।
4	बुध	चन्द्र	हर तरह से बर्बाद होगा।
6	मंगल	सूर्य	उच्च होगा।
	मंगल	केतु	बर्बाद करेगा।
11	राहु	वृहस्पति	बर्बाद करेगा।
	केतु	चन्द्र	बर्बाद होगा जब बुध खाना नें 9 में न हो।
	वृहस्पति	राहु	बर्बाद होगा जब बुध मंदा हो।
12	चन्द्र	केतु	बर्बाद करेगा।

कौन सा ग्रह केवल अकेला ही बैठा हो तो कौन क्या प्रभाव करेगा :-

ग्रह	प्रभाव
वृहस्पति	कभी मंदा प्रभाव न देगा।
सूर्य	खुद मेहनत करके अमीर बना होगा।
चन्द्र	अपनी दया और नर्मी से फांसी तक भी माफ करवा ले। कुल को नष्ट नहीं होने देगा।
शुक्र	कभी मंदा न होगा। यदि होगा तो किसी के साथ होने पर ही होगा।
मंगल	चिड़िया घर का कैदी या बकरियों में पला शेर।
बुध	लालची देश-परदेश में खाली चक्कर।
शनि	अकेले सूर्य के साथी खाली बुध का ही काम देगा।
राहु	हर तरह से रक्षक, माली हालत की शर्त न होगी। सभी ग्रहों की परवाह न करेगा।
केतु	हर समय राहु के इशारे पर चलेगा यानि न अमीर बनाए न गरीब और सदा यही असूल रखे कि मैंने अपनी शक्ति तुम्हारे हवाले कर दी है, अब तुम जानो।

जब दृष्टि की नज़र से बाहर ग्रह अकेला ही बैठा हो [1] ।	किन घरों में अमूमन मंदा होगा [2] ।	कहाँ अमूमनन अच्छा अच्छा होगा [3] ।
वृहस्पति	6, 7, 10 मंदे गुरु को केतु से मदद मिलेगी।	1 से 5, 8, 9, 12
सूर्य	6, 7, 10	1 से 5, 8, 9, 11, 12
चन्द्र	6, 8, 10 से 12	1 से 5, 7, 9
शुक्र	1, 6, 9	2 से 5, 7, 8, 10, 11, 12
मंगल	4, 8	1 से 3, 5 से 7, 9 से 12
बुध	3, 8 से 12 खाना नें 9 सदा मंदा न होगा, न ही खाना नें 11 में सदा बुरा होगा।	1, 2, 4, 5, 6, 7
शनि	1, 4, 5, 6	3, 2, 7 से 12
राहु	1, 2, 5, 7 से 12	3, 4, 6
केतु	3 से 6 और 8	1, 2, 7, 9 से 12

1. दृष्टि की नज़र से बाहर का अर्थ है कि उस ग्रह को कोई भी और ग्रह और किसी तरह की दृष्टि से न देख सकता हो या ऐसा ग्रह अकेला बैठा हो।
2. अमूमन मंदे का अर्थ है कि जब ग्रह ऐसे घरों में हो जहाँ कि वह नीच स्थापित किया गया या अपने शत्रु ग्रहों के साथ घर में बैठे हों।
3. अमूमन अच्छे का अर्थ होगा जहाँ वह अपने घर का स्वामी हो या अपने मित्र के घर में बैठा हो या उच्च स्थापित किये जाने के घर में हो।

हर ग्रह के अच्छे-मंदे हो जाने की निशानी :-

ग्रह	निशानियाँ	उपाय
वृहस्पति	सिर पर चोटी के बाल बिना कारण उड़ जाएं, गले में माला रखने का आदी हो जाए, सोने की हानि, शिक्षा बिना कारण बंद हो जाए, फ़िजूल अफ़वाह, बदनामी।	माथे या पगड़ी पर ज़र्द पीला तिलक लगाना, नाक साफ करके काम शुरू करना मदद देगा। बचपन में नाक का पानी खुद खुश्क होना मदद देगा ।
सूर्य	शरीर के अंग अकड़ जाएं कठिनाई से हिले, मुंह से हरदम थूक जाने लगे, लाल गाय या भूरी भैंस गुम हो जाए या मर जाए।	मुंह में मीठा डाल कर पानी के कुछ घूंट पी कर काम करना मदद देगा।
चन्द्र	घर में दूध वाले पशु या घोड़े की मौत हो, कुआँ तालाब सूख जाए, किसी वस्तु के असर का पता न चले।	दूसरों के चरण छू कर आशीर्वाद लेना मदद देगा।
शुक्र	अंगूठा बिना कारण खराब हो जाए, त्वचा खराब हो जाए।	कपड़ों का ध्यान रखना मददगार होगा।
मंगल	बच्चा पैदा होकर चला जाए, आँख कानी हो जाए खून खराब हो जाए, शरीर के जोड़ चलने से रह जाएं, शक्ति हो पर बच्चा न हो, खून का रंग मुर्दे की तरह।	सफेद सुरमा का प्रयोग मदद देगा मंगल बद का उपाय।
बुध	दांत गिर जाएं, सुगन्ध-दुर्गन्ध का फर्क चला जाए। संभोग शक्ति धोखा दे।	नाक छेदन तथा दांत साफ रखना मदद देगा।
शनि	मकान गिर जाए, शरीर के बाल झड़ने लग जाए विशेषकर पलकों और भंवों के, भैंस आदि मरे, आग लगे।	मिस्वाक का प्रयोग मदद देगा (सुरती आदि)।
राहु	पूरा काला कुत्ता मर जाए, गुम हो जाए, हाथ के नाखून झड़ जाए, दिमाग़ खराब हो जाए, शत्रु पैदा हो जाएं।	इकट्ठे परिवार में रहें, ससुराल से सम्बन्ध न बिगाड़े सिर पर चोटी रखें, खुदमुख्तारी न करना मदद देगा।
केतु	पांव के नाखून झड़ जाएं, पेशाब या दर्द जोड़ों की बीमारी हो, संतान के विघ्न या कष्ट और खराबियाँ	कान में सुराख करवाना, केतु की पालना मदद देगी।

औसत ग्रहों का असर प्राय: उन घरों में होगा जो घर किसी ग्रह के लिए पक्के घर की तरह निश्चित नहीं है। कायम और नेक हालत का असर उस समय होगा जब कि उस ग्रह का साथ हो जाए जो उस ग्रह के बराबर का दिया है और वह ग्रह जागता हो।

फरमान नं 11 :- ब्रह्माण्ड में ग्रहचाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था :-

1. बच्चा पैदा हुआ, बंद हवा से इस ज़माने की हवा में आया। यह ज़माना वो है जबकि बच्चे का जिस्म नर्म, पोला और तबीयत बिल्कुल भोली-भाली है। अभी सात ग्रह का असर पूर्ण नहीं हुआ और लोक-परलोक सांझें विचार उसमें पैदा हो रहें हैं। गुरु से विद्या ग्रहण की तो उस पर इस समय की हवा का असर पूरा होने लगा। धर्म-कर्म करना सीखा, मान-अपमान का फर्क मालूम हुआ तो आयु का वह समय आया जो रुहानी हालत का हुआ। पुट्ठे अब जो बढ़ने थे बढ़ चुके गोया वृहस्पति की उम्र हुई 16 साल।
2. इल्म हुनर के बाद राज दरबार से खुद अपने हाथों से धन कमाना शुरू किया तो यह समय सू का हुआ या यों कहें कि बच्चा बालिग हुआ। उम्र हुई 22 साल।
3. अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा और चन्द्र का समय आया, उम्र हुई 24 साल।
4. स्त्री संबंध, बड़े परिवार गृहस्थ आश्रम, बाल बच्चों की बरकत का समय, शुक्र का समय हुआ तो आयु हुई 25 साल।
5. खाना-पीना भाई बन्धुओं की सेवा शारीरिक दु:ख बीमारी, लड़ाई-झगड़े का समय, मंगल नेक तथा बद गिना तो उम्र हुई 28 साल।
6. बुद्धि के काम, व्यापार हाथ के काम दिमाग़ी बुद्धिमता आदि से धन-दौलत का समय, बुध का समय बना, आयु हुई 34 साल।
7. संन्यास या मकान या जायदाद या चालाकी की आँख से धन-दौलत का ढंग पकड़ा तो शनि का राज्य फैला, आयु हुई 36 साल।
8. संसार के अंदेशे की फर्जी सोच विचार और उनका ज़ोर हुआ तो राहु का समय आया, उम्र हुई 42 साल।
9. अपने आप जब दुनियां का सवाल हल न हुआ तो इधर-उधर सलाह के लिए पैरों का चलना शुरू हुआ तो केतु का समय, उम्र हुई 48 साल।

या दुनियां का लाल, ग्रहचाली बच्चा 12 राशि के 4 चक्र लगा कर संसार के चारों खूंटों में आ रोशन हुआ।

सूर्य को आज तक किसी ने मुड़ते नहीं देखा न ही आज तक उसने अपना रास्ता बदला है। सूर्य ज्यों-ज्यों ऊंचा होता है, सफेदी में बदलता है और दुनियां को रोशन करता है या ऐसा कहें कि मंगल अपनी किरणों से दुनियां और ज़मीन शुक्र के बीच खूब ज़ोर से तन गया। दुनियां के इंसान के दिल (चन्द्र) ने अपनी खिचड़ी अलग पकानी छोड़ दी और अपना घोड़ा, सफेद रंग के सूर्य के रथ में जोड़ दिया। वृहस्पति की हवा या राजा इन्द्र ने परलोक से इस दुनियां का रुख किया और निकलते ही सूर्य के हुक्म को पूरा करने के लिए पीले हवाई शेर को सिंह राशि के स्वामी सूर्य को प्रणाम करने के लिए भेजा, जो मेष नं० 1 के मंगल को उच्च कर रहा है और मंगल की किरणों को बना-बना कर शुक्र की ज़मीन को खूनी झण्डे के मालिक के मैदाने जंग के असूलों को चलाने वाला है मुकाबले पर शुक्र की ज़मीन सब को एक ही आँख से देखने वाली कानी औरत है। अत: मंगल उस पर हमला नहीं करता। किरणों को वापिस ले जाता है और सूर्य और वृहस्पति के शेरों को कानी अबला की (निहायत गरीब) असलियत बताता है। मंगल इंसाफ का स्वामी है। वृहस्पति हवाई शेर रहम का देवता है, किसी से शत्रुता नहीं करता। सूर्य न्यायी है जिसमें रहम और इंसाफ दोनों शामिल है क्योंकि उसके अंदर चन्द्र की शांति वाला दिल बैठा सब कुछ देख रहा है। फैसला होता है कि पांव पड़ी नीचे लेटी एक ही आँख की मालिक कानी औरत पर हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना शेर बहादुरों का काम नहीं। चुपचाप बैठा हुआ बुध अपना दायरा बड़ा करता है जिसमें मिथुन राशि पैदा हो जाती है यानि बुध, शुक्र की अपने ही घर में पालना करने लग जाती है। मर्द-औरत का जोड़ा बन जाता है। दूसरी तरफ शनि जिसने शुक्र को देखने के लिए अपनी आँख उधारी दी थी समझता है कि मेरे होते हुए ये सब तेरी आँख (शुक्र की आँख) सिर्फ एक मामूली करिश्मा है गोया शनि ने अपने बाप सूर्य के खिलाफ भी औरत को सिखा दिया सलाह दी, जो अमूमन भोली भाली ही मानी गई है और वह उसके फरेब में आई गई। उसकी आँख शनि, मगर मिट्टी शुक्र की चाहे देखने में भोली भाली गाय नज़र आ रही है, मगर उसकी शैतान आँख के एक ही करिश्मे से सूर्य और वृहस्पति के शेरों को नीचा कर दिया। सब तरफ नीच फल पैदा हो गया। मंगल वर्गाकार राहु की शक्ल बन गया, जिससे दिमाग़ में नकलों हरकत लहरें होने लगी। अब मंगल की पेश चलनी बंद हो गई। वो सूर्य और वृहस्पति दोनों की खातिर जो सबके पिता है, आँख से मार देने वाली अबला से तंग होने लगा और खुद अपने हाथ से उसे मारे देने पर तैयार हो गया। ऐसी हालत में अगर वो अकेला हो तो कायरता के काम कर जाये। अत: चुप है और मंगल के मौजूद होते राहु भी गुम है इसके कारण स्त्री-पुरुष का जोड़ा कामदेव को अंदर छुपाए फिर रहा है। मंगर मंगल शत्रुता नहीं छोड़ता। जब काबू आया स्त्री को मार ही देने का असूल रखने लगा। संक्षेप में केतु को सहायता मिलने पर या कामदेव की कृपा और मंगल की सलाह से किरणें फिर ज़मीन पर शुक्र को

मार देने या नीच करने की बजाए उसे चमकाने को वापिस हुई। अब ज़मीन क्या चमकेगी। सब ग्रहों को शनि की शैतानी मालूम हो गई। वृहस्पति की हवा हुक्म बजा ला रही है। मंगल का मैदान (लड़ाई का) अंदरुनी तौर पर गर्मी नहीं छोड़ता। वह सूर्य के हुक्म और मंगल की किरणों को इधर-उधर करता है कि किरणें शुक्र का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। वृहस्पति की हवा ज़ोर पकड़ रही है। शुक्र की माया के झगड़े और मिट्टी के कण-कण साथ उड़ कर सब की आँखों में पड़ने लगे मगर उसकी अपनी आँख लगातार देख रही है क्योंकि शनि की बनी हुई है। यही कारण संसार के झगड़े है। इसलिए उनसे वही बचा जिसने शनि की आँख से आँख न मिलाई। कणों से गर्मी बढ़ी। मैदान गर्म, पहाड़ ठण्डे यानि स्त्री की मुस्कुराहट और आँख की शरारतों से सैकड़ों झगड़े होने लगे। मंगल ने नज़ारा दिखाया, चन्द्र ने तमाशा देखा मगर रेखाओं के समुद्र ने शांति न छोड़ी। पानी धीरे-धीरे गर्म हुआ। मगर खुश्की का सारा ब्रह्माण्ड या शुक्र की सारी ज़मीन या हाथ का सारा मैदान सूर्य और शुक्र की आपसी शत्रुता के कारण इतना दुःखी हुआ कि सूर्य को दबा लेने के लिए सारा का सारा ही उठ कर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा। वृहस्पति के हवा से भी शुक्र की मिट्टी के कण बड़ी तेज़ी से फैल गये। तमाम संबंधी तंग हो गये। चाहे सूर्य की तपश को भी मध्यम किया मगर उसके रथ को न रोक सके और आखिर में सब ने अपना आप ही खराब किया और सूर्य का कुछ न बिगाड़ सके या यों कहें कि धीरे-धीरे सूर्य का रथ छुपने लगा। शनि का पहरा होने लगा, किरणें समाप्त, मंगल चला गया। अब मंगल की गैर हाजिरी में राहु भी आ निकला रात हो गई। सूर्य की पुरानी चमक वृहस्पति की ठण्डी हवा के साथ चन्द्र की शक्ति से फिर दोबारा नज़र आने लगी गर्मी घटी, सर्दी बढ़ी। ज़मीन को शांति मिली। राहु ने रात समाप्त की तो फिर ठण्डी हवा चलने लगी जिस पर रात के बाद दिन के फर्क की हदबंदी या केतु निकल आया। दिन समाप्त रात शुरू होने के बाद राहु था। अब नये सूर्य की उम्मीद हुई या राशि मंडल में ग्रहचाली बच्चे को ज्यों-ज्यों हवा लगने लगी, बुद्धि या अटकल आने लगी। ज़र्द पीला (कनक, जौ के पौधे और वृक्षों के पत्ते निकलते ही ज़र्द रंग होते हैं) बंद बर्तन में पैदा हुए पौधे इस बात को साफ करते हैं। ये सब्ज रंग होने लगा। जो बुध का रंग और ज़माना है। अब समय है कि हवा अक्ल तो देगी मगर पीली से हरी करेगी। यानि वृहस्पति की मदद कम होती जाएगी और उस बुध के हरे रंग से मिली अक्ल से ही मनुष्य धन-दौलत के कमाने की धुन और लग्न में रात-दिन चलता रहेगा। क्योंकि बुध की वृहस्पति से दुश्मनी है। माँ कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर वृहस्पति की उम्र घटती जायेगी। जन्म समय वृहस्पति पूरा उम्र का था, हर तरह से साफ व ज़माने की हवा से उसके कई रंग बनने लगे। ज़र्द (पीला) से हरा हुआ तो नीला रंग राहु के साथ मिला यानि दिमाग़ में हरकत पैदा हुई, यानि नेकी के साथ बदी का भी कुछ अंश आ मिला। आखिर में यहाँ तक कि सारा समय उलझन बन गया। सोच विचार खड़ी हुई मगर शुक्र की दशा ऐसी हैं कि राहु और वृहस्पति यहाँ बराबर हैं दोनों आपस में कभी शत्रुता नहीं करते दोनों के मिलने पर सब्ज रंग (हरा) पैदा होता है जो बुध बन जाता है और पीला रंग बिल्कुल खत्म हो जाता है। यानि अक्ल पूरी होने पर ज़माने की हवा का एतबार उड़ जाता है और कुदरत का लिखा भूल जाता है। इतना ही नहीं बल्कि इस बुध की अक्ल का गोल दायरा वृहस्पति के बुर्ज पर आया तो वृहस्पति की हवा का वो चक्र घूमा कि उसे खाली आकाश की तरफ ही जाना पड़ा। भाग्य का एतबार ही खत्म हो गया। बहरहाल इतने में सूर्य आसमान से गायब हो गया, रात आ गई और आग़ बुझने और सर्दी उभरने लगी। घबराहट खत्म हुई और शांति आने लगी। चन्द्र चमक पड़ा, दिन के थके हारे सोने लगे कि कई तरह की खराबियाँ होने लगी जिसके पर्दे में हवा से आग़ हुई, आग से पानी, पानी से मिट्टी बनी या बच्चा जवानी की हवा से गर्मी-सर्दी महसूस करने लगा और माता-पिता के साये में आराम करने लगे और वही बंद मुट्ठी के आकाश की हवा उसे सांस का काम देने लगी। इसी असूल पर माना है कि हर सांस के के आने-जाने में इंसान के भाग्य का संबंध है। इसके कारण कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक दावे से नहीं कह सकता कि दूसरा सांस आयेगा कि नहीं, मगर हरदम यही इच्छा करती है कि अगर एक सांस बाहर आया तो दूसरा अंदर आ जाये, यानि अगर किस्मत ने एक तरफ आग़ लगा दी तो दूसरी तरफ मदद दी और इसी तरह 24 घंटे में 12 राशि गुणा 7 ग्रह या 84 लाख सांस पूरे कर लेता है और इस संसार की नर्क चौरासी या बुध 12 राशियों में सातों ग्रहों की चोट को सहारता चला आ रहा है। अगर यह सांस हवा या वृहस्पति न होता तो सब 84 समाप्त हो जाती क्योंकि वृहस्पति बुध मुश्तरका ग्रहचाली बच्चे से वृहस्पति उड़ जाने पर बुध का गोल अण्डा या सिफर खाली फैलाव रह जायेगा जो कि सांसारिक विचार में अण्डे से वृहस्पति की ज़र्दी से निकाला हुआ अण्डे का खाली खलाव या ढांचा सिर या बच्चे की ऊपर की झिल्ली होगी। जो वृहस्पति या राहु के बीच हदबंदी करने वाली चीज़ आसमान की नींव कहलाएगी जिसकी जांच पड़ताल सामुद्रिक शास्त्र में होगी।

फरमान नें 12 :- कुण्डली की बनावट और दुरुस्ती :-

ज्योतिष कुण्डली :-

क्याफा :- हाथ और पांव की अंगुली के नाखून के सिरों से कलाई और टखने तक 9 ग्रह और 12 राशि की कुण्डली से 12 और दरमियानी भाग में वृक्ष पौधे व जड़ की चीजें, किस्म-किस्म के लोग, मकान पराया या अपने रहने वाले मकान, स्वप्न शुगुन, परिंद-

और क्याफा लिखा जो सामुद्रिक शास्त्र के ज़रूरी भाग है वक्त
चरिंद, दोस्त-दुश्मन, दरिंदे ज़हर और अमृत वाले सांसारिक सब साथी और न बताये जा सकने वाले को पढ़ा जा सकता है।
से पहले ही लिखे 9 निधि, 12 सिद्धि के घेरा बंदी के अनुसार कुदरती

(रंग रलिया ग्रहों की)

12 सिद्धि, ब्रह्म (वृे), 9 निधि (सूे); मोह (शुक्र), माली (चन्द्र), आकाश (बुध)

(राहु)— राई घटे न तिल बढ़े (केतु) ; मच्छ (शनि), भाई (मंगल), प्रकाश (सूर्य) 11

टेवे की आसान दुरुस्ती :-

ज्योतिष विद्या के मुताबिक बनाई गई जन्म कुण्डली के लग्न के खाना नें को 1 का हिस्सा देकर जब कुण्डली बनाई तो मालूम हुआ कि लग्न से हर ग्रह कौन-कौन से घर में है इस तरह बैठे हुए ग्रहों के मुताबिक फलादेश देखें और दिये हुए लग्न को तीन बार हिला कर जांच कर लें। जहाँ से ही मालूम हों वही पक्का लग्न रख लें।

उदाहरणतः जिस तरह से ही मकान कुण्डली बनाई और हरेक ग्रह की संबंधित चीज़ों से पड़ताल की या उसके खून के रिश्तेदारों हरेक से संबंधित का हाल देखें तो मालूम हुआ कि वो दिये हुए टेवे के मुताबिक ठीक नहीं।

2 12 11
1 लग्न
3 10
4 9
7
5 6 8
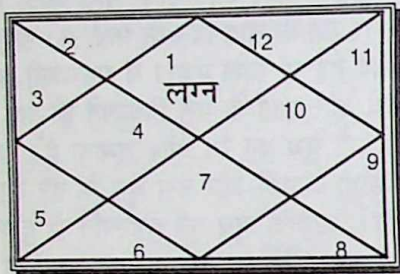
फिर वृहस्पति को खाना नें 2 या 12 देकर देखा तो वृहस्पति को खाना नें 12 में रख कर बाकी सब ग्रहों का फल मिला। अब सब हाल आम उम्र व साल अनुसार देख लें। सही जवाब होगा ऊपर के ढंग हों तो फर्क सिर्फ इस हालत तक ही होगा जबकि जन्म समय में मामूली फर्क लिखा गया हो। लेकिन हो सकता है कि किसी की पैदाईश हो सुबह, लिखी जाये पक्की शाम। ऐसी हालत में दिये हुए पैदाईश के दिन की चन्द्र कुण्डली बनाए और चन्द्रमा बैठा होने वाले घर को खाना नें 1 देकर या चन्द्रमा को खाना नें 1 में करके बाकी घरों के ग्रह क्रम में लिख लें और देखें कि हाथ रेखा के असूलों पर कुण्डली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहाँ-कहाँ मालूम हो रहे हैं। जिस घर कोई एक नर ग्रह भी कोई पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम हो उसे उस घर में करके बाकी सब ग्रहों को बारी-बारी से लिख दें। अब लग्न सारणी के अनुसार देख लें कि जन्म का असल समय क्या हुआ। साथ ही इस तरह ठीक किये टेवे का फलादेश बोल कर देखें कि क्या गुजरा हुआ हाल मिला है। ग्रह स्पष्टी के लिए हर ग्रह में उसकी खानावार असर की पेशानी पर दी गई चीज़ों व उस ग्रह में आम चीज़ों का संबंध ताल्लुक भी बोल कर देख लें। जब मकान कुण्डली के मुताबिक भी वह टेवा ठीक हो गया है तो फलादेश देखें।

ज्योतिष विद्या की बनाई कुण्डली (कुण्डली जन्म दिन के मुताबिक सामान्य रीति से बनायें और इल्म ज्योतिष की कुण्डली में राशि नें को हटा कर लग्न को खाना नें 1 (जो मेष राशि नहीं) लिख कर कुण्डली बनाने से वह लाल किताब की पक्की कुण्डली होगी। अब हम लाल किताब के मुताबिक जवाब देखना शुरू करेंगे।

क्याफा की मदद :- हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग :-

जब कोई रेखा एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज पर चली जाये तो जिस बुर्ज से निकली थी उस तरफ के बुर्ज का घर वह कुण्डली में होगा जहाँ जाकर वह रेखा समाप्त हुई। यानि अगर चन्द्र से शनि को रेखा हो तो कुण्डली में शनि को खाना नें 4 मिलेगा और चन्द्र को खाना नें 10, बाकी जब ग्रह का निशान और जिस बुर्ज पर पाया जाये वह ग्रह उसी नें पर कुण्डली में होगा यानि यदि चौकोर शनि के बुर्ज पर हो तो मंगल खाना नें 10 में होगा आदि। हाथ में यदि कोई रेखा (निशान) न ही हो तो बुर्जों की ऊँचाई-निचाई से ही कुण्डली को पूरा कर लिया जाता है और इसी तरह से बुर्जों के घर और निशान और क्रम सदा के लिये स्थापित है। जिस बुर्ज का निशान जहाँ कहीं पाया जाये उसी हिसाब से ग्रहों के कुण्डली में भर लिया जाये। नीचा बुर्ज और वह ग्रह जिसका निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा। यदि बुर्ज कायम हों और निशान उसका न मिले तो अपने घर का मालिक गिना जायेगा। बुर्ज से संबंधित रेखा से शक दूर होगा।
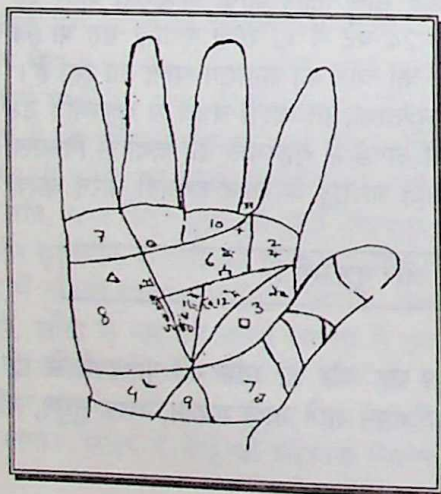
हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने :-

1. हर ग्रह की स्थापित रेखा भी कुण्डली का खाना नें हो जाती है।
2. तर्जनी और मध्यमा के मध्य 'अ' खाना नें 11 तथा शनि का मुख्यालय शब्द 'ब' की जगह खाना नें 8 होता है।

वृ0 का खाना हाथ पर वृहस्पति का निशान

1. भाग्य रेखा की जड़ पर चार रेखाई रेखा हो। सूर्य के बुर्ज पर बुध का एक चक्र हो। वृहस्पति का खास अपना निशान 4 या दोनों हाथों को इकट्ठा गिन कर अंगुलियों पर गिनती मे केवल एक शंख या एक चक्र का एक सीधा खत वृहस्पति के अपने बुर्ज पर पाया जाएं।
2. दो सिदफ या वृहस्पति के बुर्ज पर दो सीधे खत।
3. तीन सिदफ या सात चक्र या सात सीधे खत या गृहस्थी रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर।
4. चार सिदफ या चार शंख या चार खत या दो चक्र चन्द्र पर शंख हो, सिर्फ एक चन्द्र रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर खत्म हो।
5. पाँच सिदफ, पाँच चक्र या पाँच खत सब अंगुलियों पर हो या स्वास्थ्य रेखा नीचे जाकर भाग्य के शुरू भाग में मिल जाये, यानि कलाई से भाग्य रेखा निकल कर सेहत रेखा से मिल जायें।
6. छः चक्र या किस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या वृहस्पति से रेखा खाना नें 6 हाथ की बड़ी आयत में खत्म हो।
7. तीन चक्र, तीन शंख या तीन सिदफ, तीन खत, छः खत, चार चक्र, पाँच शंख या शुक्र का वृहस्पति हो यानि वृहस्पति का बुर्ज बहुत बड़ा हो या नर्म हाथ का वृहस्पति हो। संतान रेखा शादी रेखा को काटे। भाग्य रेखा पर बुध का चक्र हो। शुक्र के बुर्ज पर भाईयों की रेखा लम्बी टेढ़ी हो। सिर रेखा आयु रेखा से अलग होकर वृहस्पति के बुर्ज का रुख लें।
8. दो शंख, आठ सीधे खत गृहस्थ रेखा सीधी खड़ी हो (1), आठ चक्र या ग्यारह चक्र जब छः अंगुलियां हों, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिले, वृहस्पति का बुर्ज बिल्कुल न हो। हाथ पर त्रिकोण हों। भाग्य रेखा दो रेखाई हो, किस्मत रेखा की जड़ पर त्रिकोण हो।
9. भाग्य रेखा सीधे डण्डे की तरह शुरू होकर खड़ी हो।
10. सूर्य के बुर्ज पर बुध की ओर एक सिदफ हो, दस चक्र हो या आयु रेखा चन्द्र पर समाप्त हो यानि पितृ रेखा बनी हो, उर्ध रेखा पाई जाये।
11. वृहस्पति और शनि के बुर्ज दो रेखाई रेखा से मिले हों, नौ चक्र या सिर की श्रेष्ठ रेखा हो।
12. तीन खत, छः शंख, बारह चक्र (जब अंगुलियां छः हो)। भाग्य रेखा की जड़ पर राहु का निशान हो या मच्छ रेखा शुक्र के बुर्ज पर या शुक्र व चन्द्र दोनों बुर्जो के मध्य में मुंह ऊपर को किये हुए और उर्ध रेखा या आयु रेखा उसके मुंह में हो।

नोट :- अंगुलियों की पोरियों से लिया वृहस्पति सिर्फ राशि नें का होगा बुर्ज नें का न होगा। हाथ की हथेली से लिया हुआ वृहस्पति बुर्जों के खाना नें का होगा मगर शर्त यह है कि वृे के निशान चक्र शंख, सिदफ से न लिया हो क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ वृहस्पति भी राशि नें का होता है। सिर्फ वृहस्पति की रेखा या खत या खास निशान 4 इन्द्रियों से लिया हुआ वृे बुर्ज नें का होगा।

सू0 का खाना हाथ पर सूर्य का निशान

1. शुक्र, बुध दोनों सूर्य की सेहत रेखा से मिल जायें और सूर्य रेखा स्वयं ठीक हालत में बुर्ज ने 1 में पाई जाएं। सूर्य का सितारा सूर्य के अपने बुर्ज पर बुध की ओर हो। सूर्य का बुर्ज टेवे का खाना नें 1 है, मगर सूर्य खाना नें 1 में तभी होगा जबकि सूर्य के बुर्ज पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा कायम हो, नहीं तो सूर्य खाना नें 5 का होगा। (सूर्य रेखा या सेहत रेखा खाना नें 11 के अंत तक)।
2. भाग्य रेखा या सूर्य रेखा जब वृहस्पति का रुख करे मगर शनि के बुर्ज पर न हो।
3. सूर्य रेखा से मंगल रेखा नेक हो।
4. सूर्य के बुर्ज से रेखा चन्द्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का ताल्लुक न हो। चन्द्र और सूर्य के बुर्जो के बीच में रेखा दोनों बुर्जो को मिलाती मालूम हो मगर मिलाये नहीं। शराफत रेखा जब मध्य से ऊपर को झुकी हो। सूर्य रेखा दिल रेखा पर समाप्त हो।
5. सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के बुर्ज पर ही हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम हो और सूर्य का बुर्ज कायम हो। सेहत रेखा बुर्ज से चल कर हथेली से खाना नें 11 में खत्म हो।
6. सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयत में खत्म हो।
7. शुक्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज को, शुक्र का पतंग हथेली पर कायम हो। खाना नें 7 में जो बुध का भी घर है, बुध जुदा असर नहीं करता।
8. सूर्य के बुर्ज से रेखा मंगल बद को, भाग्य रेखा न हो, सूर्य रेखा न हो या भाग्य व सूर्य रेखा आपस में न मिले।
9. किस्मत रेखा की जड़ पर चार रेखाई खत हो।

10.सूर्य रेखा शनि के बुर्ज पर हो।
11.सूर्य रेखा हथेली पर खाना नें 11 (बचत) में समाप्त हो।
12.सूर्य रेखा हथेली पर खाना नें 12 (खर्च) में समाप्त हो।

चं0 का खाना हाथ पर चन्द्र का निशान

1. चन्द्र पर्वत से सूर्य को रेखा।
2. प्यार रेखा भाग्य रेखा, चन्द्र से शुरू होकर वृहस्पति पर समाप्त हो
3. मंगल नेक से रेखा चन्द्र को या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर खत्म हो।
4. धन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे त्रिकोण हो।
5. दिल रेखा सूर्य के बुर्ज की जड़ तक ही समाप्त हो। चन्द्र के बुर्ज से रेखा सेहत रेखा में जा मिले।
6. चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो।
7. दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या बुध के बुर्ज पर समाप्त हो जाए, चन्द्र रेखा सिर रेखा से मिल कर खत्म हो जाए तो आयु खत्म मालूम होगी। ऐसी दशा में फकीरी रेखा नशेबाजी की रेखा, शराफत रेखा। सिर रेखा और दिल रेखा मिल जाएं। सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।
8. सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो, मंगल बद चन्द्र को रेखा, पितृ रेखा या भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण सा बनाए। आयु रेखा या भाग्य रेखा दो शाखी हो जाये, कलाई की तरफ खाना नें 9 के पास आपस में मिल कर।
9. भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।
10. दिल रेखा मध्यमा की जड़ यानि शनि के बुर्ज तक हो। आयु रेखा दिल रेखा से मिल जाए, सिर, आयु और दिल रेखा तीनों मिल जाए।
11. चन्द्र या दिल रेखा वृहस्पति को जा निकले मगर वृहस्पति तक न हो या हथेली पर खाना नें 11 में (बचत) में ही खत्म हो।
12. चन्द्र से रेखा हथेली पर खाना नें 12 (खर्च) में समाप्त हो जाए।

शु का खाना हाथ पर शुक्र का निशान

1. शुक्र के बुर्ज पर अंगूठे की जाड़ में सूर्य का सितारा, शुक्र से रेखा सूर्य के बुर्ज को हो, शुक्र का पतंग पूरा हो।
2. अकेली शुक्र रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर हो, प्यार रेखा, संतान रेखा, विवाह रेखा को काटे, भाईयों की रेखा लम्बी और टेढ़ी वृहस्पति को हो जाए।
3. गृहस्थ रेखा मंगल नेक से शुक्र के बुर्ज में अंगूठे की जड़ में झुक जाये, धन रेखा शुक्र के बुर्ज से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो।
4. फकीरी रेखा, नशा रेखा, शराफत रेखा, सीधी लकीर लेटी हुई चन्द्र, शुक्र को मिलाये।
5. सेहत रेखा या सूर्य की प्रगति रेखा शुक्र से चल कर बुध पर समाप्त हो।
6. सेहत रेखा या सूर्य की प्रगति रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली की बड़ी आयत खाना नें 6 में समाप्त हो। शुक्र पर राहु का निशान हो।
7. सेहत रेखा बुध से चल कर शुक्र की बुर्ज के जड़ में समाप्त हो या शुक्र के बुर्ज पर बुध का वृत हो।
8. शुक्र से मंगल बद को रेखा।
9. धन रेखा से कोई रेखा आकर शादी रेखा को काट दे।
10. शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के बुर्ज पर मध्यमा की जड़ में हो।
11. शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नें 11 (बचत) पर खत्म हो।
12. शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नें 12 में खर्च में समाप्त हो या हाथ में मच्छ रेखा हो।

में का खाना हाथ पर मंगल (नेक) का निशान

1. सूर्य के बुर्ज पर चौकोर हो। मंगल नेक से रेखा सूर्य के बुर्ज पर चली जाए।
2. गृहस्थ रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर जा निकले।
3. मंगल नेक और चौकोर या गृहस्थ रेखा मंगल नेक के अन्दर-अन्दर समाप्त हो।
4. श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ रेखा चन्द्र से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो।
5. मंगल नेक से रेखा जब सेहत रेखा को काटे।
6. मंगल नेक से रेखा जब आयत खाना नें 6 में समाप्त हो।

7. मंगल नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में समाप्त हो, मंगल नेक से रेखा बुध में जा निकले।
8. मंगल नेक से रेखा मंगल बद को।
9. भाग्य रेखा की जड़ में चौकोर हो।
10. गृहस्थ रेखा शनि पर समाप्त हो।
11. मंगल नेक से रेखा खाना नें 11 (बचत) में हो।
12. मंगल नेक से रेखा खाना नें 12 (खर्च) में हो।

में (बद) का खाना हाथ पर मंगल (बद) का निशान

1. मंगल बद से रेखा सूर्य के बुर्ज को।
2. मंगल बद से रेखा वृहस्पति के बुर्ज को।
3. मंगल बद से रेखा मंगल नेक हो।
4. मंगल बद से रेखा चन्द्र को।
5. मंगल बद से रेखा सेहत को काटे या कलाई रेखा हथेली के अन्दर घुस जाए।
6. मंगल बद रेखा बड़ी आयत खाना नं 6 में हो।
7. शुक्र से रेखा मंगल बद में या सिर रेखा मंगल बद से या सिर रेखा आखिर में दो रेखाई हो।
8. सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो।
9. भाग्य रेखा की जड़ में त्रिकोण हो या ‹ ‸ हो।
10. आयु रेखा दो शाखी ‹ ‸ मंगल बद से शनि के बुर्ज को रेखा चले।
11. मंगल बद से रेखा खाना नें 11 (बचत) में हो।
12. मंगल बद से रेखा खाना नें 12 (खर्च) में हो। काग़ रेखा मंगल बद की पूरी निशानी होगी।

बुध का खाना हाथ पर बुध का निशान

1. सूर्य के बुर्ज से बुध के बुर्ज को रेखा।
2. सिर रेखा जब आयु रेखा से जुदा होकर वृहस्पति के बुर्ज का रुख करे।
3. सिर रेखा मंगल नेक में समाप्त हो।
4. दिल रेखा और सिर रेखा मिल जाएं, सेहत रेखा दिल रेखा को काटे। सिर रेखा झुक कर चन्द्र के बुर्ज में समाप्त हो।
5. सेहत या प्रगति रेखा कायम हो, ज़रूरी नहीं कि शुक्र के बुर्ज की जड़ तक हो। ठीक हालत यह होगी हथेली में खाना नें 11 की जड़ तक ही हो।
6. बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो, सिर की श्रेष्ठ रेखा मौजूद हो।
7. सिर रेखा की लम्बाई सेहत रेखा की हद तक हो। शादी रेखाएं बुध पर गिनती में दो बराबर हो।
8. सिर रेखा मंगल बद में समाप्त हो या आखिर पर दो शाखी हो।
9. धन रेखा से रेखा बुध पर या भाग्य रेखा की जड़ में दायरा हो।
10. बुध का दायरा शनि के बुर्ज पर हो।
11. बुध से रेखा खाना नें 11 (बचत) में हो।
12. बुध से रेखा खाना नें 12 (खर्च) में हो।

शनि का खाना हाथ पर शनि का निशान

1. सूर्य का सितारा शनि के बुर्ज पर या सूर्य के बुर्ज पर शनि की ओर हो या शनि से रेखा सूर्य के बुर्ज को चली जाए।
2. आयु रेखा वृहस्पति के बुर्ज से शुरू हो।
3. शनि से रेखा आयु रेखा को काट कर मंगल नेक में, वृहस्पति रेखा शनि के बुर्ज पर हो।
4. आयु रेखा, दिल रेखा आपस में मिल जाएं।
5. शनि से रेखा सेहत रेखा को काटे।
6. शनि से रेखा आयत खाना नें 6 में जाए।
7. आयु रेखा, सिर रेखा मिली हो या शनि से रेखा सिर रेखा में या शुक्र के बुर्ज पर हो।
8. मंगल बद से रेखा शनि में शनि का मुख्यालय खाना नें 8 होता है।
9. भाग्य रेखा की जड़ पर त्रिशूल जमा हो। उर्ध रेखा हो।
10. (अच्छा) शनि के बुर्ज पर अपनी रेखा।
11. (बुरा) वृहस्पति, शनि के बुर्जों की मध्य की जगह खाना नें 11 होगी।
12. मच्छ रेखा, जब आयु रेखा या उर्ध रेखा मच्छली के मुंह में जाए।

राहु, केतु हाथ पर :- इन ग्रहों की कोई रेखा स्थापित नहीं है, सिर्फ निशान है जहाँ वह निशान मिले वह घर कुण्डली का होगा और निशान अगर न हो तो दोनों ग्रह अपने-अपने घर के होंगे अर्थात् राहु खाना नें 12 में और केतु खाना नें 6 में होगा। मच्छ रेखा के समय राहु, केतु उच्च घरों में यानि राहु नें 3-6, केतु नें 9-12 उच्च घर। काग़ रेखा के समय यह दोनों नीच घरों के होंगे अर्थात् राहु नें 9-12 और केतु नें 3-6 में होगा।

हथेली पर खास निशान (मर्द दाईं हथेली और दाएँ भाग पर शुभ असर)

नें	निशान	ग्रह	प्रभाव	जिस खाने में होगा
1.	मछली	शनि उत्तम	दौलतमंद, नेक, भाग्यवान।	शनि नें 12 में
	मछली	वृे से मिला हुआ	घर का चिराग।	राहु 3-6, केतु 9-12 में
2.	शेर	सूर्य और वृहस्पति	बहादुर, बेधड़क, बेरहम हो।	सूर्य नें 2 में
3.	साँप	शनि, राहु	ख़ज़ाने का स्वामी (साँप) हो।	दाएँ हाथ— शनि नें 12 में
		ज़हरीला न होगा	इच्छाधारी साँप (शेषनाग)।	बाएँ हाथ— शनि नें 12 में
4.	हाथी	राहु, मंगल	राजा समान हो।	राहु 3-6 में
5.	कौवा	सूर्य, शनि	फरेबी	शनि नें 1 में, राहु, केतु दोनों रद्दी हो।
6.	गाय, बैल	शुक्र, शनि	खेती से लाभ उठाएं।	शुक्र नें 12 में
7.	चूल्हा	में (बद) शे	चोर, फरेबी हो।	मंगल नें 4, शनि नें 1में
8.	कमान	में (नेक) शे	बहादुर, हौसले वाला हो।	मंगल नें 3 में
9.	फूल	बुध उत्तम	धनी अच्छा जीवन हो।	बुध नें 6 में
1.	झण्डा	वृे का डण्डा	धार्मिक विद्या में निपुण हो।	वृहस्पति नें 7 में
11.	छत्र	चन्द्र, वृहस्पति	धनी, ध्वजा धारी हो।	चन्द्र नें 2, वृहस्पति नें 4 में
12.	पहाड़	सूर्य, बुध	राजा समान मन्त्री जो नेक राय दे।	सूर्य नें 1, बुध नं०7 में
13.	गाँव	बुध, शनि	रईस हो।	शनि नें 7, बुध नें 11में
14.	ढाल	मंगल (बद), वृे	बुजदिल, दरिद्री हो।	मंगल (बद) नें 4, वृहस्पति 8 में
15.	तलवार	मंगल, सूर्य	शत्रु पर विजय पाए।	मंगल नें 1में
16.	घोड़ा	चन्द्र उच्च	दौलतमंद हो।	चन्द्र नें 2 में
17.	मंदिर	वृे अपने घर	पूजापाठी, परहेज़गार, सात्विक हो।	वृहस्पति नें 2 में
18.	चौसर, चौपड़	शनि, केतु	माना हुआ खिलाड़ी हो।	शनि 6, केतु 10 में
19.	कलम	बुध अपने घर	मीर मुंशी, कलम का धनी हो।	बुध नें 7 में
20.	अंकुश, कान का दायरा	में नेक वृे कुंड़ल	तीनों निशान इकट्ठे हों तो बड़ा ही अमीर शंख, चक्र, हो।	वृहस्पति नें 1, मंगल नें 1में
21.	मुसल	बु0, वृ0, रा0	कंजूस हो।	बुध नें 12 में
22.	उखल	बुध, वृहस्पति	रोटी से भी तंग हो।	वृहस्पति नें 7 में
23.	चूल्हा	मंगल (बद)	तंग हाथ हो।	मंगल नें 8 में
24.	सूर्य पर बढ/पीपल	दोनों इकट्ठे ग्रह (वृे, सू)	राजा समान हो, दूसरों से टैक्स लें, मृत्यु अचानक हो।	खाना 1 में या 4 में
25.	वृक्ष	शनि	जायदाद का स्वामी हो।	शनि नें 10 में
26.	चौकी	मंगल (नेक)	तख्त का मालिक हो।	मंगल (नेक) 1 में
27.	रथगाड़ी	सूर्य, चन्द्र	राजा सवारी का सुख हो।	सूर्य नें 4 में
28.	तराजू	बुध, शुक्र	व्यापारी आढ़ती हो।	खाना नें 12, 7 में
29.	पालकी	वृहस्पति घर का	बहुत आराम पाने वाला हो।	वृहस्पति नें 9 में
30.	आँख	शनि उत्तम	धनी मगर फरेब से कमाए।	शनि नें 11 में
31.	नाक	बुध, वृहस्पति	मामूली व्यापारी हो।	बुध नें 12 में
32.	त्रिशूल	शनि	जीवन अच्छा हो।	शनि नें 12 में
33.	पद्म	शनि	1 से 4 तक राजा बड़ा, 5-8 तक महाराजा 8 से अधिक 9 या अधिक तो योगी।	
34.	गदा गुर्ज	शनि	एक सरदार हुकूमत, 2-5 तो सिंहासन का स्वामी, परमात्मा का प्यारा परहेज़गार हो। पाँच से ज्यादा ब्रह्मज्ञानी होगा। पेशानी पर निशानों का असर सिर्फ आयु पर ही हो। जिसके बारे में आयु रेखा पर कहा गया है।	

नोट :- पद्म-(तिल छोटा स्याह चिन्ह होता है), बड़ा स्याह निशान हो तो पद्म होगा जो राहु होता है और सबसे बड़ा निशान स्याह लहुसन होगा। दाएँ हाथ की हथेली पर जो मुट्ठी बंद होने पर मुट्ठी के अन्दर छुप जाये तो धनी होगा। अगर हथेली की पीठ पर या बाएँ हाथ पर हो तो फ़िज़ूल खर्च, रुपये बर्बाद करें। जिस्म के सामने और दाएँ भाग पर शुभ असर हो। पीठ की तरफ और बाएँ भाग पर अशुभ असर हो।

बंद मुट्ठी व कुण्डली का आपसी सम्बन्ध :-

बुध (आकाश) वृहस्पति (हवा) को गांठ लगाकर बांध लेने वाली चीज़ को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की मिलाई हुई चमक इंसानी भाग्य का खज़ाना हुई और इन सब गांठों से गठा हुआ सामुद्रिक शास्त्र सब भेदों को खोलने वाला होगा। जिसमें बंद मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया है। यह कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने-अपने उच्च होने की नींव पर रखी गई है। बंद मुट्ठी का अंदर या बच्चे का साथ लाया हुआ अपने भाग्य का खज़ाना (सभी नर ग्रह), जवानी का हाल देखने के लिए खाना नं० 1, 4, 7, 10 देखें, बचपन और जन्म से पहले माता-पिता की हालत के लिए खाना नं० 9, 11, 12 देखें। अब संतान के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा मरण देखने के लिए और बाकी रहने वालों का हाल देखने के लिए 2, 3, 5, 6 देखें। मौत बीमारी, मंदा हाल, मारक स्थान नं० 8 है जो पीछे को देखता है और मौत का फंदा है।

100% दृष्टि के खाने 1-4-7-10 होंगे:- साथ लाये भरे खज़ाने हैं।
50% दृष्टि के खाने 3-11-5-9 होंगे:- दूसरों की मदद से पैदा हुए हाल।
25% दृष्टि के खाने 2-6-8-12 होंगे:- रिश्तेदारों से ली गई चीज़ें।

फलादेश देखने का ढंग :-

राशियों के बगैर सिर्फ ग्रहों से हर घर का असर देखने का ढंग :-

देख लो कि हरेक ग्रह क्या है चाहे वह कुण्डली के किसी भी खाने में हो जैसा उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा वैसा ही उसका असर इस जगह दिए हुए खाने के नं० पर होगा। जैसे वृहस्पति शुक्र कुण्डली में रद्दी हो तो नीचे दी गई तालिका के अनुसार खाना नं० 2 पर भी उनका रद्दी प्रभाव होगा।

खाना	ग्रह
1.	बुध (सूर्य, मंगल, शनि)
2.	(वृहस्पति) शुक्र
3.	(बुध) मंगल शनि
4.	(वृहस्पति) सूर्य का चन्द्र से सम्बन्ध
5.	(वृहस्पति) सूर्य, राहु, केतु का सम्बन्ध
6.	(बुध) केतु, शुक्र
7.	(शुक्र) बुध
8.	(मंगल) शनि चन्द्र का सम्बन्ध
9.	(वृहस्पति) वृहस्पति
10.	(शनि) राहु, केतु के दाएँ-बाएँ मिले सम्बन्ध
11.	(शनि) वृहस्पति का साथ
12.	(राहु) वृहस्पति से शनि का सम्बन्ध

हर खाना नं० में दिए गए ग्रहों का जुदा-जुदा असर देखेंगे, जैसा असर हो वैसा ही असर उस ग्रह का दिए हुए खाने पर होगा। इधर-उधर राशियों के एक साथ हिसाब से लिखे हुए असूल के मुताबिक लिया हुआ असर, उस ग्रह का अपना और उस घर पर जहाँ पर वह बैठा है, होगा, मगर तालिका के ढंग का असर उस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के अतिरिक्त ऊपर लिखित संबंधित खाना पर होगा।
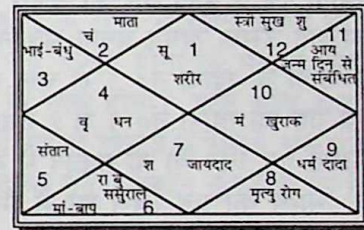
नर ग्रह बोलते जिफ़्त के घर में,
स्त्री बोलते ताक में है।
बुध है बोलते 3-6 में, पापी नहीं बोलते 2 में है।

नर ग्रह कहीं भी बैठा हो मगर उसका उस बैठे हुए घर के होने वाले घर के अनुसार का असर कुण्डली के 2, 4, 6, 8, 1, 12, खानों में मिल रहा होगा। स्त्री ग्रहों का 1, 3, 5, 7, 9, 11 में होगा। पापी ग्रहों का हर घरों में, सिवाय खाना नं० 2 के जो सबका धर्म स्थान है, होगा।

आमतौर पर जिस कुण्डली में केतु कायम उच्च हो उसमें बुध, राहु नीच या नर ग्रह/स्त्री ग्रह से घिरा हुआ होगा (केतु प्रबल)। जिस कुण्डली में बुध कायम या उच्च हो उसमें केतु नीच दुर्बल होगा, लेकिन अगर दोनों ही एक हालत या ताकत के हों

तो लड़का और लड़की (बुध, केतु) दोनों ही एक हो तो लड़का (केतु) समाप्त होगा। अगर केतु के घर नं० 6 में या केतु के साथ बुध हो तो केतु नीच होगा, बुध नीच न होगा या कि उच्च होगा अगर राहु खाना नं० 12 में बुध के साथ हो तो बुध नीच मगर राहु उच्च होगा।
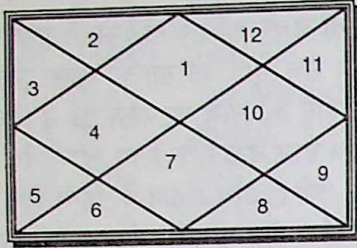
कुण्डली के खाके की रेखाएँ :-

रेखा 'अ' 'ब' बुध की रेखा है जो कि शुक्र के बुर्ज पर जा निकलती है। हाथ पर यही रेखा सूर्य की प्रगति रेखा कहलाती है। रेखा 'स' 'द' वृहस्पति की रेखा है जो चन्द्र से वृहस्पति में जा निकलती है और पितृ रेखा कहलाती है। रेखा 'अ' 'ब' के नीचे की ओर की त्रिभुज 'स' 'ब' 'अ' के खानों में सूर्य या बुध किसी भी घर (3 से 8) में इकट्ठे हों या अकेले-अकेले हों तो बुध मदद देगा सूर्य को उच्च होने में अर्थात् सूर्य नेक होगा (आयु के वास्ते खुद जातक व कबीला उसका)। रेखा 'अ' 'ब' के ऊपर की त्रिभुज 'ब' 'द' 'अ' के खानों में शनि या बुध चाहे इकट्ठे या जुदा-जुदा किसी भी घर में हों (1, 2, 9 से 12) बुध मदद देगा शनि को उच्च फल देने के लिए, शनि नेक होगा (खुद जातक की आयु के वास्ते मालिक व कबीला उसका)। ऊपर की त्रिभुज में अगर सूर्य हो जाये शनि वालों में और शनि हो जाये सूर्य वालों में तो ऊपर के हिसाब से बुध का संबंध न लेंगे और न ही इस हालत में सूर्य, शनि एक साथ हों। त्रिभुज 'द' 'अ' 'स' (1 से 5, 12) में खुद वृ० उच्च होगा और सूर्य को मदद देगा चाहे सूर्य किसी भी घर में हो। त्रिभुज 'स' 'ब' 'द' (6 से 11) में वृ० उच्च होगा और मदद देगा शनि को चाहे कुण्डली में शनि 1 से 5 या 12 किसी भी घर में हो (ऊपर अंक नं० 6, 12 का मुकाबला) 1 से 5 का वृहस्पति मदद सूर्य को भी और शनि को भी देगा। 6 से 11 का वृहस्पति सिर्फ शनि को मदद देगा। खाना नं० 12 का वृहस्पति सूर्य को भी और शनि को भी मदद देगा। (ऊपर के भाग 8, 9 का मुकाबला)। एक और दो का बुध मदद देगा शनि को। 3, 6 घर का बुध मदद देगा सूर्य को, खाना 9, 12 का बुध शनि को मदद देगा।

ग्रह कुण्डली की मकान कुण्डली के हिसाब से दुरुस्ती की जांच :-

कुण्डली के खाना नं० 9 वाले ग्रह का संबंध मकान और उस कुण्डली वाले का जद्दी मकान होगा और खाना नं० 1 के ग्रह की ऊपर लिखित तमाम शर्तें उसके अपने बनाए मकान में मौजूद होगी। अगर यह खाने खाली हों तो दूसरे मकानों से ग्रह कुण्डली की दुरुस्ती देखेंगे। कुण्डली के खाना नं० 1 से चल कर अगर 9 को जाए या मकान से बाहर निकले तो जिस तरफ दायाँ हाथ है उस तरफ मकान के सब ग्रह जो खाना नं० 1 से 8 तक हैं अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर नं० 12 खाने से चले, अपने आप को खाना नं० 9 की तरफ आते हुए गिने या या मकान में बाहर से दाखिल होने लगे तो खाना नं० 12 से 12, 11, 1 के ग्रह (दाईं तरफ मकान के) सबूत देंगे। भाग्य का ग्रह जिस घर में मिले उसी खाना नं० से संबंधित मकान से तमाम कुण्डली के ग्रह की दुरुस्ती मालूम होगी। मकान से ग्रह दृष्टि देखते वक्त जिस तरह भाग्य का ग्रह ढूँढ़ते हैं उसी तरह क्रम से हर खाने में से ग्रह ढूँढ़ेंगे। मकान की शक्ल जिस ग्रह से मिल जाए वो ग्रह कुण्डली में जिस तरह हो वह ठीक गिना जाएगा। जिस ग्रह का असर उसके संबंधित मकान में देखना हो उसे बुध की खाली जगह (मकान के बीच खाली जगह समझ कर) रख कर इस ग्रह के दाएँ-बाएँ की चीज़ों का असर देखेंगे।

हर मकान किस ग्रह का हैं, मकान की शक्ल जिस स्थापित शक्ल से मिलती हो वो मकान उस ग्रह का होगा। मकान के हर कोने के दिए हुए ग्रह अपने-अपने मकान में अपना-अपना असर दिखा दिया करते हैं जैसे कि वे कुण्डली में बैठे हों। हरेक मकान में हर ग्रह की पक्की जगह कुण्डली में दी हुई जगह होगी। कुण्डली के खानों में मकान दृष्टि से संबंध रखने वाला खाना उस मकान का सेहन होगा। घर वाले ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नं० का ही क्यों न हो। लेकिन माने हुए खाने के ग्रह के असर का आखिरी फैसला करना मालिक मकान के अधिकार में होगा।
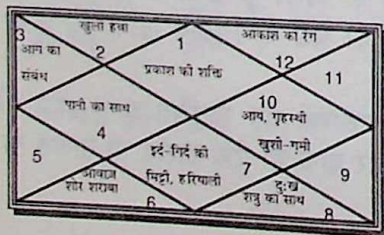
कुण्डली में मकान :-
मकान के ग्रह
और खाना
किन दिशाओं में हैं :-

सेहन के मुंसिफ को नीचे के टेबल में देखेंगे :-

ग्रह (मुंसिफ सेहन का)	मं० चं०	सू०, बु०	चं० वृ० के०	शु०	मं० बद	सू०	श०	बु० रा०
खाना सेहन होगा	7 8	11 10	9 12 1	2	5	4	3	6
खाना नं० अगर घर हो	1 2	3 4	5 6 7	8	9	10	11	12
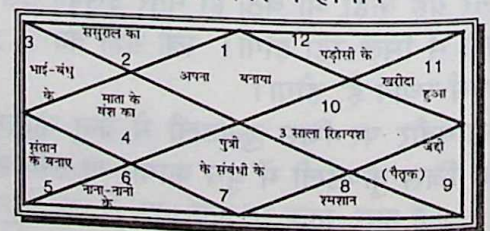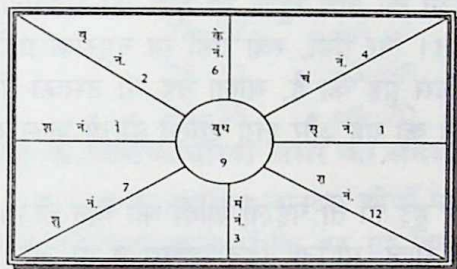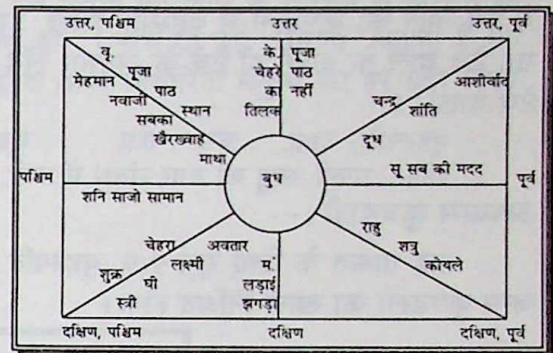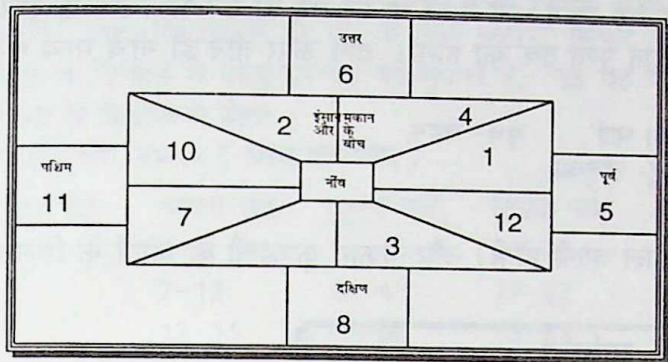
मकान कुण्डली के पक्के घर :-

मकान से टेवे की दुरुस्ती :- लाल किताब के मुताबिक जब खाना नं० 1 लग्न को देकर कुण्डली तैयार हो जाए तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों की नकल कर लें। अब मकान कुण्डली में सब दिशाएँ स्थापित हैं। उदाहरणतः जन्म कुण्डली में सूर्य नं० 9 में हो तो मकान कुण्डली में सूर्य कुण्डली के मध्य में लिखा जाएगा, जिसकी दुरुस्ती के लिए उसके जद्दी मकान के मध्य में खुला सेहन या सूर्य की रोशनी पड़ती होगी। जन्म कुण्डली में शुक्र नं० 5 का होगा तो मकान कुण्डली में शुक्र पूर्व की दीवार का होगा, जो कच्ची मिट्टी की होगी या पशु (गाय) संबंध पूर्व दीवार के साथ होगा। इसी तरह सब ग्रहों की चीज़ होगी। एक बाप के कई बेटे अगर सब का जद्दी मकान एक है तो ज़रूरी नहीं कि हरेक टेवे से मकान कुण्डली बन सके या मिल सके।

उपाय :- बचाव सिर्फ यह है कि टेवे में मंदे ग्रह की चीज़ मकान में इस खाना नं० (मकान कुण्डली के हिसाब) कायम न होने दें, जिसमें कि वह जन्म कुण्डली में हो।

मकान की हालत मालूम होने से टेवा बनाने का ढंग :-

अपने मकान कुण्डली की शक्ल बनाएं। अब देखेंगे कि उस घर में कहाँ-कहाँ ग्रह बैठे है।

वृहस्पति = हवाई रास्ते दरवाज़े या सामान वृहस्पति;
सूर्य = रोशनी, धूप, राज हुकूमत, राज दरबार से सम्बन्धित चीज़ें;
चन्द्र = चन्द्र की जानदार या बेजान चीज़ें;
शुक्र = कच्ची दीवार या गाय या दूसरी शुक्र की चीज़ें;
मंगल = खाने-पीने की चीज़ें;
बुध = बुध की जानदार या बेजान चीज़ें;
शनि = लकड़ियों की जगह वरना सामान शनि जिस जगह हो चाहे जानदार या बेजान;
राहु = मकान की नाली या गंदा पानी, अगर यह नहीं तो धुआँ निकलने की जगह;
केतु = रोशनदान अगर ज्यादा तरफ हों तो सबसे कम संख्या जिस कमरे में हो उस जगह केतु होगा।

अगर जानदार बेजान दोनों चीज़ें मौजूद हों तो जानदार चीज़ों की जगह को बुनियाद रखें। जिस ग्रह की कोई चीज़ न हों वो ग्रह अपने पक्के घर का होगा। ऊपर के ढंग पर जब मकान कुण्डली बन जाये तो आम कुण्डली में नकल कर लें।

सारे परिवार की इकट्ठी कुण्डली :-

सूर्य जहाँ कि टेवे वाले की अपनी कुण्डली में हो कुर्रा हवाई (Atmosphere) एक महीने में जो दिन जितनी बार आए उसी खाना नं० में लें, जैसे एक महीने में सोमवार चार बार आए तो चन्द्र नं० 4 का होगा। लीप के साल में राहु, केतु अपने-अपने घर में यानि राहु नं० 6 में और केतु नं० 12 होगा। बाकी सालों में राहु नं० 12 और केतु नं० 6 होगा। जब कोई ग्रहचाल काम न दे तो बुनियादी रुकावट देखने के लिए यह कुण्डली काम देगी आम योग में नहीं। यह कुण्डली तभी प्रयोग करेंगे जब कोई और चीज़ न हो। सारे परिवार का हाल देखने के लिए इस टेबल को देखें। जहाँ कि बाबे (दादा) की कुण्डली में वृहस्पति लिखा हो उसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में वृहस्पति लिखें, इसी तरह सब संबंधी के ग्रह रखेंगे। जो न हों या मर गए हों उन संबंधियों के संबंधित ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के अनुसार लेंगे। (एक साथ असर सात पुश्त तक का होगा। तीन ऊपर तीन ही नीचे मध्य में खुद टेवे वाला)।

वृहस्पति- दादा, चन्द्र- माता, शुक्र- स्त्री, मंगल- बड़ा भाई, बुध- बहन,
शनि- अपनी आयु का मगर संबंध में फर्क, राहु- ससुराल, केतु- लड़का,

अभ्यास कुण्डली :-

ग्रह ताकत के लिए सूर्य 9/9, वृहस्पति 6/9 आदि (बुध के हाल वाली होगी) और मकान कुण्डली के कोनों के हिसाब से जन्म कुण्डली का खाना निश्चित होगा।

फरमान नं० 13 :- वर्षफल :-

भाग्य का हाल साल बार देखने के लिए यह ज़रूरी बात है। जब जन्म वक्त, दिन, मास पक्की उम्र गुजरी मालूम न हो तो सामुद्रिक में दी हुई घटना की नींव पर बनाया हुआ वर्षफल अधिक ठीक होगा। घटनाओं का अर्थ खुशी या ग़मी की घटनाओं से हो। जैसे शादी का मास, दिन और साल किसी अपने खून के संबंधी की जन्म और मौत। नर ग्रहों, स्त्री ग्रहों या नपुंसक ग्रहों से संबंधित असर से किसी चीज़ की पक्की घटना। जन्म दिन बल्कि वार (नाम) मनुष्य किस ग्रह का है, वाला ग्रह या उसका पैतृक मकान जद्दी या अपना बनाया किस ग्रह का है (वाला ग्रह) जन्म कुण्डली में लग्न के खाने का ग्रह और लग्न खाली हो तो जन्म राशि के घर का स्वामी ग्रह यानि जो भी ठीक और पक्की घटना मिल सके, लेंगे।

उदाहरणतः किसी की शादी की घटना का पूरा पता मिल गया हो (अगर शादी कई बार हुई हो तो पहली शादी का दिन लें)। जो उसकी 17 साल की उम्र में हुई यानि 17 साल से शुक्र शुरू हो गया। अगर शादी का साल, महीना, दिन मालूम न हो और उस शादी की औरत का मरण दिन मालूम हो तो उसे शुक्र के समाप्त होने का साल लेंगे। हरेक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र का समय तीन साल दिया है। 17 साल की आयु में शादी हुई तो उसका शुक्र का ग्रह 17 साल से शुरू हो गया मान कर तीन साल 19 साल की उम्र के आखिर तक रहा। अगर 17 साल की उम्र में स्त्री मरी तो 17 वें साल औरत के मरने के दिन शुक्र खत्म हुआ या औरत की मौत के दिन से तीन साल पहले चल कर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था। वर्षफल बनाने के लिए ग्रहों का चक्कर, यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा, ढंग से दिया हुआ है। यानि वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र आदि केतु तक ग्रहों की आम मियाद के सालों में गिनती और क्रम भी दिया है। सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का योग 35 साल की उम्र का एक चक्र होगा जैसे किसी व्यक्ति का शुक्र आरम्भ हुआ 17 साल की उम्र में तो वर्ष का ग्रह होगा। निम्न क्रम से जितने साल तक ऊपर चलती या हो जाने वाली लिख दी है।

ग्रह	वृ०	सू०	चं०	शु०	मं०	बु०	श०	रा०	के०
वर्ष	6	2	1	3	6	2	6	6	3
	8-	14	16	17-	20-	26	28-	1-4	5-7
	13	15	19	25	27	33	39	34-	40-
	43-	49	51	52-	55-	61-	53-	42	
	48	50	54	60	62	68	74	69-75-	
	78-	84	86	87-	90-	96	98-	77	
	83	85		89	95	97	103	104-110-	
	113	119						109-112	
	118	120							

पहचान कि वर्षफल ठीक है या नहीं :- उम्र के शुरू होने का पहला साल या अंक नं: 1 जिस खाने में हो वहां देखें कि सामने कौन से ग्रह का नाम है । ठीक हालत में अंक नं:1 के खाने वाला ग्रह इस कुण्डली के खाना नं: 9 या नं: 1 में होगा या वह व्यक्ति खुद उस ग्रह का होगा । जन्म दिन का ग्रह भी अंक नं: 1 के ग्रह का हो सकता है । इस जांच के लिए मंगल और शनि या सूर्य और बुध या सूर्य चंद्र एक ही गिने जायेगें । वरना दूसरा वर्षफल प्रयोग में लायेंगे ।अगर ऊपर कही हुई बातों से कोई भी ठीक न हो तो कोई और घटना लेकर वर्षफल बनायेंगे ।

12 साल तक बच्चे के भाग्य का कोई विश्वास नहीं और 70 साल के बाद अपनी किस्मत का कोई विश्वास नहीं । 35 साल में तमाम ग्रह चल कर एक चक्र पूरा करते हैं । हरेक ग्रह के असर के साल आदि सिर्फ उस व्यक्ति की आयु के हिसाब से दिये हैं जो व्यक्ति कि लाल किताब के हर ग्रह के ठीक स्थापित मियाद के अंदर-अंदर पैदा हुआ हो । नीचे दी हुई सारणी बताती है कि सामुद्रिक के हिसाब से आयु हर ग्रह की मुकर्रर है, वह ग्रह के कब जाहिर होगी। हरेक आम सांसारिक मनुष्य का हर ग्रहा चक्कर इस विद्या के हिसाब से होगा ।

सारी आयु पर प्रभाव (आम वर्षफल)

प्रभाव ग्रह	पहला चक्र	दूसरा चक्र	तीसरा चक्र	चौथा चक्र
शनि	1-6	36-41	71-76	106-111
राहु	7-12	42-47	77-82	112-117
केतु	13-15	48-50	83-85	118-120
वृहस्पति	16-21	51-56	86-91	
सूर्य	22-23	57-58	92-93	
चंद्र	24	59	94	
शुक्र	25-27	60-62	95-97	
मंगल	28-33	63-68	98-103	
बुध	34-35	69-70	104-105	

हर ग्रह के आम साधारण असर का समय :-

हर ग्रह के संबंधित जानदार चीजों पर उसका आम साधारण असर देखने के लिए टेवे वाले की उम्र के साल को उस अंक नं: पर भाग दें जिस खाना में कि वह ग्रह जन्म कुण्डली में बैठा हो । बचने वाले अंक के खानों नं: में यह ग्रह उस उम्र के साल में अपना असर करेंगे । खाना नं: 1 में बैठे हुए ग्रह की हालत में उम्र के हिस्से को 12 पर, खाना नं: 2 के लिए 11, नं: 3 की हालत में 1 पर भाग दें । बाकी सब घरों के ग्रहों के लिए अपने अपने खाना नं: में बैठे हुए अंकों पर भाग दें । सिफर बाकी बचने या बाकी बचे हुए वाला घर खाली होने की हालत में संबंधित ग्रह जन्म कुण्डली वाले घर में ही असर कर रहा गिना जाएगा । उदाहरणत: किसी की आयु का 25वां साल शुरू है और चंद्र टेवे में नं: 3 में है, 25 को तीन पर भाग दिया तो बाकी बचा 1 यानि इस टेवे का चंद्र जो नं: 3 का टेवे में था आयु के 25वें साल वहीं असर दे रहा होगा जो वर्षफल के हिसाब चंद्र खाना नं: 1 में दिया है । इसी तरह सब ग्रहों का हाल होगा ।

हर काम के लिए जन्म कुण्डली के खास खास खाने भी निश्चित है या कुण्डली के 12 ही खानों का जिन-जिन चीजों या कामों से संबंध है वह सदा के लिए स्थित है(देखें पक्का घर नं: 1 से 12) । अब अगर संतान का हाल 25वें साल देखना हो तो देखें संतान के लिए कौन सा घर स्थित है यानि खाना नं: 5 खाली हो तो संतान के लिए केतु की हालत, जो भी वर्षफल के अनुसार होगी, लेंगे । इसलिए 25 को पांच पर भाग दिया बाकी बचा सिफर तो संतान का वही हाल लेंगे जो जन्म कुण्डली के मुताबिक खाना नं: 5 का हो । अगर 26वें साल देखना पड़े भी निश्चित तो संतान के संबंध में तो 26 को पांच से भाग दिया तो बाकी बचा 1 यानि वैसा ही हाल होगा जैसा कि टेवे में खाना नं: 1 का है ।

टेवे के 12 खानों में बैठे हुए ग्रहों की आपसी दृष्टि का दर्जा मुकर्रर है (देखें ग्रह दृष्टि) । उनकी आपसी दोस्ती दुश्मनी की मियादें भी मुकर्रर है । अत: जब कभी दो या दो से अधिक ग्रहों का असर उनकी दृष्टि या आपसी मुश्तरका होने के कारण मिल मिला कर इकट्ठा हो रहा हो तो उनके असर के समय और तासीर में अच्छी या बुरी हालत के दर्जे का फर्क जरूर होगा ।

खाना नं: 1 वैशाख, 2 ज्येष्ट आदि इस तरह 12 खानों की गिनती 12 महीनों में बनती है । इस तरह टेवे में जिन-जिन घरों में जो कोई भी ग्रह बैठा हो जब कभी भी उन घरों में जो कोई भी ग्रह बैठा हो जब कभी भी उन घरों में कोई वर्षफल के अनुसार

आयेगा वो अपना असर उस खाना नंः के लिए निश्चित किए हुए महीने में दिखाएगा । जैसे टेवे में नंः 2 में कोई ग्रह बैठा हो तो उसका अर्थ है कि नंः 2 का असर ज्येष्ठ में होगा । जब वर्षफल के मुताबिक किसी भी साल(वहां खाना नंः 2 में बुध आ गया जो पिता के लिए अशुभ है)सिर्फ ज्येष्ठ के महीने में विशेष है ।

जन्म कुण्डली के अनुसार जो घर खाली होंगे उन घरों में वर्षफल के अनुसार जो ग्रह अपना मुकर्रर फल उस महीना नंः में देंगे जिस नंः में कि सूर्य वर्षफल के मुताबिक बैठा हो । जैसे यदि खाना नंः4 टेवे में खाली हो और वर्षफल के अनुसार मंगल नंः 4 में आ जाये और सूर्य नंः 8 में आ जाये तो मंगल नंः 4 का दिया हुआ फल जन्म दिन से 8 वें महीनें में जाहिर होगा।

उम्र के साल का शुरु यानि वर्ष का शुरु और आखिर देसी महीनों की तारीख के हिसाब से लेगें। (क्योंकि सूर्य की बदली पहली वैशाख से है) क्योंकि अंग्रेजी व देसी तारीखें आपस में नहीं मेल खाती। पक्का असूल (सूर्य की नींव) पर ज्योतिष चलता है। सूर्य को एकम के हिसाब से खाना नें 1 में लाकर बाकी सब महीनों को भी उसी तरह बदल लें। हरेक ग्रह भी सिर्फ अकेला इसी तरह धुमाया जा सकता है। यानि जितने नें के खाने में कोई ग्रह टेवे में बैठा हो, देखें कि जिस साल का हाल देखना है, वह उम्र का कौन सा साल है। उस उम्र के साल के अकं को उस नें पर भाग दें जिससे कि वह ग्रह बैठा है। (टेवे में) बाकी जो बचे उस खाना नें में उस साल (जितने साल की आयु का हाल देखा जा रहा है) वह ग्रह असर करता और बोल रहा होगा। सिफर बाकी बचने की हालत में उसी घर (टेवे में जस नें पर है) में असर दे रहा होगा। उदाहरणतः किसी टेवे में है सूर्य नें 11 में उम्र का 52 साल चल रहा है। 52 को 11 पर भाग दिया तो शेष बचा 8, अब 52 साल की उम्र में सूर्य नें 8 में गिना जायेगा और बाकी ग्रह, जैसा कि वो टेवे में हो, रख कर सूर्य से संबंधित चीजों का असर देखा जायेगा। इसी तरह हरेक ग्रह का हाल देखते जायें। यह ख्याल रहे कि जिस ग्रह से संबंधित चीजों का हाल देखना है सिर्फ उसी ग्रह को घुमायें। बाकी सब ग्रह उसी तरह टैवे के खानों में होगें। इस असूल पर तमाम ही ग्रहों को अकेला अकेला करके जो कुंडली बने तो उस साल की हालात का प्रभाव देगी।

जन्म कुण्डली में, जो चाहे ज्योतिष कुंडली के मुताबिक बना कर लगन को नें 1 देकर बाकी खाने पूरे किये हों और चाहे सामुद्रिक शास्त्र से बनाई हो पूरा करके, आगे दी हुई लिस्ट के मुताबिक अमल करें।

सालाना हालात के लिए दिये हुआ वर्ष फल में :-

मासिक हालात के लिए सूर्य को चलावें
रोजाना हालात के लिए मंगल को चलावें
घंटों हालात के लिए वृहस्पति को चलावें
मिनटों हालात के लिए शनि को चलावें
सैकिंडों हालात के लिए बुध को चलावें
डिग्री हालात के लिए चन्द्र को चलावें
हफ्तों हालात के लिए शुक्र को चलावें
रातों हालात के लिए राहु को चलावें
दिनों हालात के लिए केतु को चलावें

उदाहरण जन्म कुण्डली
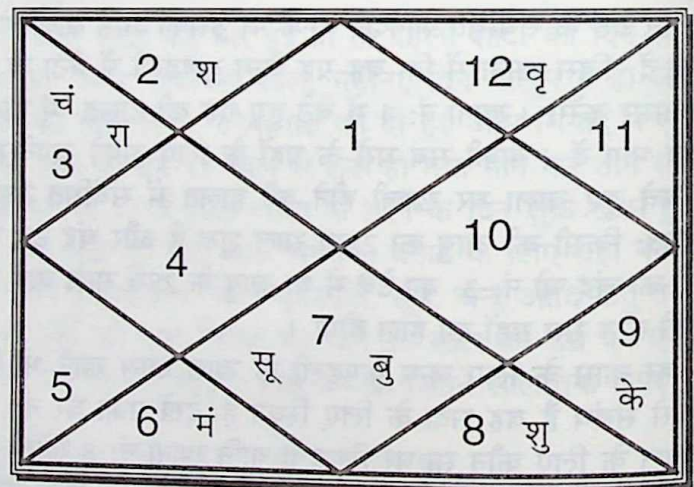
वर्ष की कुण्डली को घूमावें
एक साला बच्चे के लिए भी यही असूल होगा।

वर्षफल का असली असर उस मास में होगा जिस खाना नें में उस साल सूर्य बैठा हो। (महीना जन्म दिन से गिने) एक साल के जिस खाने में सूर्य बैठा हो उस खाने को उम्र के महीने का अंक देकर सारी कुडली पूरी कर दें। महीने का शुरु जन्म वक्त से लेगें। सूर्य की तबदीली क्योंकि एक बैशाख से होती है अतः जन्म दिन देसी महीनों के हिसाब से ठीक गिना है। अंग्रजी के हिसाब से सूर्य के असर में फर्क हो सकता है। (जैसे खाना नें 1 वैशाख-अप्रैल मई, नें 2 ज्येष्ठ मई- जून आदि)।

उदाहरणः-

जातक जिसकी जन्म कुण्डली दी गई है उसका 11-5-1941 की शाम 5 बजकर 43 मिनट के बाद 44 वां साल शुरु हुआ। जिसका 44 वां वर्षफल साथ में अगले पृष्ठ पर बना है। 11-9-1941 अगले 5-43 बजे के बाद पांचवा महीना शुरु, सूर्य बैठा होने

उदाहरण 44 साल का वर्ष फल
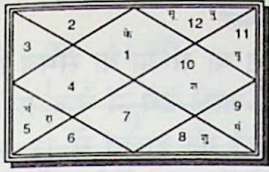
वाले घर को खाना नें 5 दिया तो वर्ष फल कुंडली को मास कुंडली में बदला। इस प्रकार पांचवें महीने का 17 वां दिन पहिले दिन से 12 वें दिन तक इस मास कुंडली के जिस जगह मंगल बैठा हो उस घर को 1 से गिन कर 17 वें नें यानि नें 6 दिया तो दिन कुंडली बनी। पाचवें महीने के 17 वें दिन का 23 वां घंटा रोजाना कुंडली में वृ वाले घर को 1 गिना कर 23 वां नं वृ को दिया तो घंटा कुंडली बनी। 21 वें मिनट के लिए घंटों वाली कुडली से 21 वां मिनट शनि को चलाया गया तो मिन्ट कुंडली बनी। 28 वे सैकिंड के लिए मिनटों वाली कुंडली से अब बुध को चलाया गया तो सैंकेड कुंडली बनी। सैकिंडों वाली कुंडली से 53 डिग्री जब चन्द्र को चलाया गया तो बनी डिग्री कुंडली। 44 वां साल की कुंडली की रातों के हाल के लिए राहु को चलाया गया तो यानि उसे खाना नें 2 या अपने मुख्यालय पर कर दिया तो रात्रि कुंडली बनी। राहु की तरह अब केतु खाना नें2 में दिन के लिए कर दिया तो दिन कुंडली बन गई।।

मास कुण्डली

दिन कुण्डली

घण्टा कुण्डली
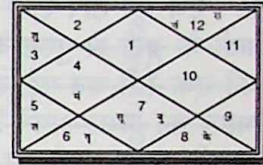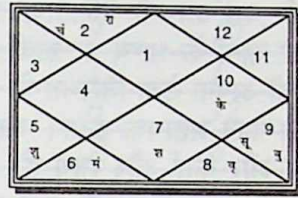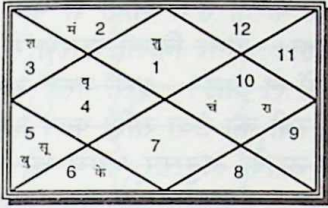
सैकिण्ड कुण्डली

डिग्री कुण्डली

रात्रि कुण्डली
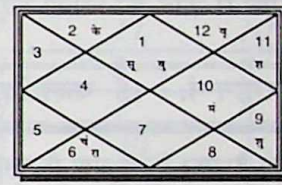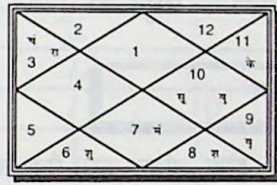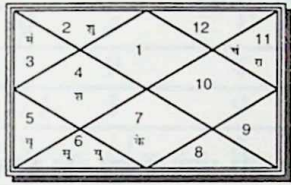
दिवस कुण्डली
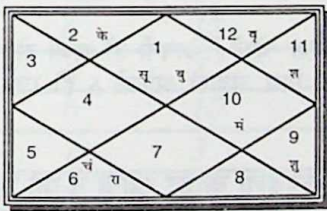
फरमान नं: 14 कुण्डली के प्रकार

शत्रु[1] बाहम घर 10 वें बैठे, टेवा होता ग्रह अंधा हो।
7 शनि हो सूर्य चौथे, आधा अंधा नहौराता हो।
बुध छटे रवि 1-5-11, टेवा बालिग ग्रह होता हो।
खाली मुट्ठी [2] या बुध पापी [3], वहां, असर नाबालिग देता हो।
11 शनि या साथ गुरु का, पाप चन्द्र 10 चौथे हो।
पिछले जन्म का साधु होगा, धर्मी टेवा सुख देवे जो।
गुरु शुक्र हो टेवे मिलते, चलता जन्म खुद अपना हो।
प्रभाव जन्म न लेगें पिछला, साल गुजरते12 जो।

1. बुध के साथ वृहस्पति, चन्द्र या मंगल
2. खाना 1-4-7-10 खाली।
3. पापी (राहु केतु शनि तीनों के लिए)

शुक्र के साथ वृहस्पति या सूर्य या चन्द्र या राहु हो।

शनि के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल हो। राहु के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल या वृहस्पति हो।

केतु के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल हो।

अंधे ग्रहों के मंदे असर के समय केतु का उपाय या केतु (लड़का) केतु से संबंधित चीजों के द्वारा या संध्या के समय किये काम शुभ होगें। एक ही समय 10 अंधों को खैरायत खुराक देने से नें 10 की ज़हर दूर होगी। नहौराता वाले टेवे में नेक ग्रहों के संबंधित काम रात के वक्त और मंदे ग्रहों के संबंधित काम दिन के वक्त करने मदद देगें। बालिग टेवे वाले की हालत में 12 साला उम्र के बाद पिछले जन्मों के धोखे धक्के का डर न होगा। धर्मी टेवे वाले हरेक के लिए मददगार और सुख देने वाला हुआ करता है । नाबालिग टेवे वाले को दूसरों की सहायता लेकर चलते रहना मदद देगा। क्योंकि मनुष्य का बच्चा तो नाबालिग से बालिग हो जायेगा मगर नाबालिग टेवा सारी उम्र नाबालिग टेवा गिना जायेगा।

टेवा पुरुष का प्रबल होगा या स्त्री का:-

पुरुष का टेवा स्त्री के टेवे को ढांप लेता है। मगर कई बार आपसी बेलिहाजी भी हुआ करती है। शादी से पहले स्त्री अपनी टेवे पर चलती रही शादी के वक्त से पुरुष के टेवे का असर दोनों के भाग्य पर हावी होता रहा। अगर किसी कारण से पुरुष का साथ छूट गया, दो मर्दो की एक स्त्री बन गई, तो फिर वही स्त्री अपना टेवा किस्मत के मैदान में ले आई। इसी तरह जब तक बच्चा था तो माता पिता के भाग्य का असर अपने पिछले कर्मो का फल सहायक हुआ। शादी हुई स्त्री का टेवा राशि फल की तरह सहायक होता रहा। यदि किसी कारण स्त्री का साथ छूट गया और कोई और साथ हो या तो उसके अनुसार भाग्य चल पड़ा। संक्षेप में स्त्री और पुरुष की जोड़ी का मिलना और उनके अनुसार भाग्य के मैदान में फर्क जरुर देगा। लेकिन कई बार बगैर टूटे हुए भी या बगैर मिले मिलाये भी भाग्य की दोरंगिया देखनें में आयेगी मगर कम और अगर देखने में आयेगी तो उस वक्त आयेगी जब ऐसी जोड़ी की खुराक में शनि की चीजों की लहरें या पितृ ऋण के समुद्र का तूफान ठांठे मार रहा होगा।

फरमान नं:- 15 फलादेश देखने का ढंग

एक ही ग्रह- रेखा को देखकर किया गया फैसला कोई फैसला नहीं होता, बल्कि वहम पैदा करने का कारण और धोखे में रख लेने वाला हुआ करता है। प्राचीन ज्योतिष के अनुसार बनी हुई जन्म कुण्डली को लेगें और उसके सभी अंको राशियों को मिटा कर मगर ग्रहों को उन्हीं में जैसे कि वह कुंडली में दिये है छोड़ कर अब पुरानी कुंडली को नें. से शुरु करके 12 की क्रम में अंक लेगें जिससे वह लाल किताब में फलादेश देखने के लिए कुंडली तैयार हो जायेगी। इक्टठे बैठे ग्रहों के लिए उन ग्रहों का अकेले अकेले और मुश्तरका हाल देखेगें। जुदा जुदा और मुश्तरका देखने का कारण यह है कि कई बार जुदे जुदे तो अच्छे नज़र नहीं आते हैं मगर इक्ट्ठे होने पर उल्ट नतीज़ा देगें। जैसे मंगल नें 8 या बुध नें 8 का जुदा जुदा का फलादेश बुरा लिखा है मगर मंगल बुध इक्ट्ठे नें 8 में हो तो उत्तम है।

किताब में जो ग्रुप फलादेश दिया है उनसें जो बाकी बच जाये तो अलग अलग ग्रहों में दिया फलादेश देखे। अपनी ही मर्जी से फलादेश न बनायें जैसे। यदि छः ग्रह इक्ट्ठे हो तो पहिले 6 का इक्ट्ठा फिर 5,4,3,2 आदि के ग्रुप बना कर फल देखें। फिर अकेले अकेले 6 ही ग्रहों का फल देखें।

फलादेश की बुनियाद का आम असूल:-

घर कुण्डली में घर की मालकीयत के हिसाब से जो कोई और घर होता है या यों कहें कि अगर कुण्डली के हर खाना नें को एक मकान फर्ज कर लें तो उस मकान की जमीन तह जमीन में तो उस खाना के मालिक ग्रह, घर का स्वामी की तासीर होगी और इस ईमारत पर उस ग्रह का जो उस खाना के लिए पक्का घर मुकर्रर है, असर हो रहा होगा। इस तरह उन दो ग्रहों की आपसी दोस्ती दुश्मनी उस खाना नें के फलादेश में फर्क डालती है। अगर दोनों मित्र तो ठीक, अगर शत्रु तो घर बरबाद। इसके इलावा तीसरा संबंधी और भी बन जाता है यानि वह ग्रह जो उस खाना नें का पहले कहे हुए कारणों से तो कोई संबंध हीं रखता मगर ग्रह चाल के कारण के हिसाब से वहां आ निकलता है। अब यह आया हुआ ग्रह खुद अपनी मित्रता शत्रुता से इन दोनो ग्रहों के फलादेश में फर्क डाल देगा। उदाहरण: खाना नें 11 में घर की मालकियत के बतौर शनि का संबंध है और वो पक्का घर वृहस्पत का है। अब अगर उस खाना नें 11 में राहु आ बैठे तो असर में तबदीली इस प्रकार होगी। तह जमीन का स्वामी शनि है और यह घर 11 संसार का आरम्भ, मनुष्य की आय, संसार में आना सब को स्त्रोत है जिसकी ईमारत पर वृहस्पति का कब्जा है। और उस खाना नें 11 को वृहस्पत ने धर्म अदालत के लिए मुकर्रर कर दिया है। या यों भी कह सकते हैं कि खाना नें 11 की जमीन शनि की होने के कारण लोहे या पत्थर या सफेद संगमरमर या और काई शनि की चीज़ की है, इस पर मकान जो बना है वह वृहस्पति की वजह से खूब चमक रहा है। मगर राहु का राज्य हो जाने से जो राहु शनि का ऐजेंट सिर्फ वदी का संबंध है राहु के कारण इस मकान में ऐसा भूंचाल आया कि सोने का रंग (वृहस्पति) नीला हो गया और वह मकान कहां गया यह भी पता न चला। वृहस्पति नष्ट हुआ राहु का मंदा धुआं हर ओर भर गया। अतः राहु नें 11 में लिख है कि वृ0 कायम करना (सोना पहनना) पीला धागा पहनना जरुरी है क्योंकि राहु की कृपा से वृ नष्ट हो चुका होगा, इस असूल पर सभी ग्रहों का फलादेश विषय की असलीयत को समझा देगा। हर जगह समय अनुसार हरेक ग्रह का फलादेश सही सही ढंग से समझ लेगा।

****

वर्ष फल चार्ट

आयु	/घर 1	/ घर/ 2	/घर/ 3	/घर/ 4	/घर/ 5	/घर/ 6	/घर / 7	/घर/ 8	/ घर/ 9	/घर/ 10	/घर/ 11	/घर 12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7

40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	1	11	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1

83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
104	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	1	9	10

****

वृहस्पति

विधाता जगत् गुरु, ब्रह्मा जी

वृहस्पति

विधाता जगत् गुरु, ब्रह्मा जी

दो रंगी दुनिया1 के, रंग दोनों देखो-
मगर आँख दुःख 2 जाय, अपनी आँख न देखो

1. दो रंगी दुनिया एक मूंछ काली तो दूसरी सफेद।
2. दर्द आँख मकानों मशीनों की खराबियाँ शत्रु की मंदी घटनाएं धोखा दर्द की बीमारियाँ आदि।

मनुष्य की मुट्ठी के अंदर खाली खलाव या आकाश में फैले रहने, हर दो जहान में जा सकने और सारे ब्रह्माण्ड तथा मनुष्य के अंदर-बाहर चक्कर लगाने वाली हवा को ग्रह मंडल मे वृहस्पति के नाम से याद किया गया है। जो बद हालत में प्राकृतिक के साथ कही हुई, भाग्य का भेद और खुल जाने पर अपने जन्म से पहले भेजे हुए खजाने का गुप्त, बंद और खुली हर दो हालत की बीच की हर प्राणी के जन्म लेने तथा मर जाने का बहाना होगी।

वृ0 यह ग्रह दोनों ही जहानों का स्वामी माना गया है, वृ0 सब ग्रहों का गुरु है। अतः एक ही घर में बैठे वृ0 का प्रभाव चाहे राजा या फकीर, सोना या पीतल, सोने की बनी लंका तक दान कर देने वाला प्राणी या सारे जमाने का चोर, साधु जिसका धर्म ईमान न हो, हर दो हालत में से चाहे किसी भी ढंग का हो, मगर उसका बुरा असर शुरु होने की निशानी सदा शनि के भेद प्रभाव के द्वारा होगी और शुभ प्रभाव स्वयं वृ0 के ग्रह की चीज़ें या (जद्दी जगह) से उत्पन्न होगी।

विभिन्न भावों में वृहस्पति की दोहरी चालें

घर शुभ हालत	*अशुभ हालत*
1 प्रसिद्ध राजा	*फकीर कमाल का मगर निर्धन*
2 सबको बांटने वाला जगत् गुरु	अपने घर को बरबाद करे या कुलनाशक
3 शेरों का प्रसिद्ध शिकारी	बुजदिल, मनहूस, भेदभाव
4 राजा इन्द्र और विक्रमादित्य के साया का स्वामी।	अपनी बेड़ी डुबाने वाला नाविक
5 औलाद के जन्म दिन से प्रसन्न	बच्चा पेट से ही मुर्दा पैदा हो
6 हर वस्तु अपने-आप मिले	निर्धनता से दम घुटता है।
7 धर्म कार्य का मुखिया व धनी	इसका दत्तक पुत्र भी दुःखी ही हो
8 सोने की लंका भी दान कर दे	धन खज़ाने की राख का स्वामी
9. घरेलू चमकता सोना पैतृक नस्ल	धन खज़ाने की रख का स्वामी
10.जिस कदर टेढ़ा चले,मिट्टी सोना हो,	निर्धन, दुःखी
11. सांप भी सजदा करे,	कफन भी पराया हो
12. दरिया की तरह घर में धन आवे	धन का प्रयोग न कर सके चाहे राजधानी का स्वामी हो।

वृहस्पति में मिलावट

उच्च राहु या पहले बैठा, आया तरफ गुरु पहली हो।
गुरु मालिक हो दोनों जहां का, शक्ति छुपी तथा रुहानी हो॥
दीगर हालत में गुरु गृहस्थी, मालक जहां इक होता हो।
मामा दौलत का बंदा गुलामी, ताकत रुहानी छोड़ता हो॥

1. नर ग्रह (सू0, मं0) के साथ या दृष्टि आदि से मिलने पर तांबा सोना हो जायेगा।
2. स्त्री ग्रह (शु0, चं0) के साथ या दृष्टि से मिट्टी, से भरा पानी भी उत्तम दूध बन जायेगा।
3. वृ0 के बिना सब ग्रहों में मिलने जुलने की या दृष्टि की शक्ति पैदा न होगी।
4. पापी ग्रह (श0, के तथा रा0) के मंदे होने पर वृ0 सोने की जगह पीतल होगा, हवा की जगह जहरीली गैस होगी।

इकट्ठे ही माने गये है। वृ0 दोनों जहान् गैबी तथा दृष्टिगोचर का मालिक है,
5. वृ0 और राहु दोनों खाना नं0 12 (आकाश) में ये दरवाज़ा होगा वैसा ही हवा के आने जाने का
जिसमें आने जाने के लिए नीले रंग में राहु का आसमानी दरवाजा है। अतः जैसा
हाल होगा। अगर राहु टेढ़ा चलने वाला हाथी, सांस को रोकने वाला कड़वा धुँआ या जमीन को पताल से भूचाल बन कर हिलाता रहे तो वृ0 भला नहीं हो सकता।

6. यदि राहु उत्तम दरवाजा हो तो वृ0 बुरा प्रभाव न देगा।

7. अकेला वृ0 (हर तरह से) चाहे वह दृष्टि आदि से कितना ही मंदा हो जातक पर कभी बुरा प्रभाव न देगा।

8. बरबाद हो चुका वृ0 आम प्रभाव के लिए खाली बु0 गिना जायेगा जिसका फैसला बु0 के अपने स्वभाव पर होगा।

9. शत्रु ग्रहों (बु0 , शु0 , रा0 , श0 ,) पापी ग्रह यानि जब श0 को राहु या केतु किसी तरह भी साथ या दृष्टि से आ मिलते होने के समय मंदा हो जाने की हालत में वृ0 सदा बु0 का प्रभाव ही देगा और वृ0 उपाय योग्य होगा जिसके लिए साथी शत्रु ग्रह का उपाय सहायता देगा ।

10.ग्रह मंडल के सब ग्रहो को छेड़छाड़ करने, राहु केतु को चलाने वाला वृ0 है, यानि रा0, के0 के शरारत करने से पहिले वृ0 स्वयं अपनी चीजों या काम या रिश्तेदार बाबत वृ0 के जरिया खबर दे देगा, इसलिए कहा है :

असल जलता दो जहांन [1] का, ग्रहण [2] शत्रु [3] साथी जो।
चोर बनता 6 या 11, मंगल टेवे ज़हशी [4] जो॥

1. दोनों ही (सामने तथो छुपे हुए) जहान् या वृ0 के नेक और बुरे हर दो तरह के असरों की शक्ति।
2. सूर्य ग्रहण (रा0, सू0 एक साथ), चं0 ग्रहण (चं0 के0 एक साथ) के शत्रु ग्रह बु0, शु0, रा0 या श0 पापी ग्रह।
3. खाना नं: 2-9-11-5 में बु0, रा0 एक साथ या जुदा-जुदा हों तो वृ0 का असर मंदा ही होगा ।
4. मंदा मंगल बद या मंगलीक जिस के लिए मं: खाना नं: 4 में देखें।

किस घर मे वृ0 बैठा हो	किस ग्रह को सहायता देगा
1 से 5 तक या 12 में	शं0 और सू0 द ोनों
6 से 11	केवल श0 को

वृहस्पति 12 घरों में आम हालत

विद्या आयु घर पहले सोना [1] गुरु जगत घर दूसरा हो[2]
शेर गरजता तीसरे माना, भला बैठा बुध जब तक हो ।
चौथ विक्रमी[3] तख्त बत्तीसी[4] पाँच पूर्ण ब्रह्म होता हो ।
छटे मिले हर चीज जो मुफती, दुखिया बेटे घर सांतवें हो ।
भाग्य उदय[8] आयु हो लम्बी, योगी नोवें स्वयं बनाता हो ।
10 वें कमी, धन, चाहे अक्ल हो कितनी, धर्म कर्म घर 11 हो ।
राहु के पाप हालत पर रात की निद्रा, गृहस्थ सुखी घर 12 जो
काम छोड़े जब राम भरोसा, शत्रु वैरी सिर कटता हो ।

(1) जब वृ0 जागता और कायम हो ।
(2) जब तक नं0 8 खाली हो, वृ0 का रुहानी असर उत्तम होगा ।
(3) राजा विक्रमादित्य (संवत वाला)
(4) 32 परियों के कंधों पर उड़ता रहने वाला तख्त ।

खानाः वृ0 का खाना होगा :-

2. **धर्म स्थानः**- वह जगह जहां धर्म का कारोवार एवं पूजा उपदेश हो।

11.**वृ0 के धर्म दरबार लगाने और वृ0 की अपने जज की भांति बैठने की जगह :-** धर्म अदालत अलंकारी आवाज़ का दरबार

12. **वृ0 की समाधि लगाने की जगहः**- परलोक की हवा, गुप्त धार्मिक विचार, प्रज्ञा

5. संतान के खून में धर्म और सोने का हिस्सा पैदा करने वाला गृहस्थी, परिवार का स्वामी ।

9. सोने की तरह पूथ्वी (पूर्वजों की हालत) जैसा सोने का देवता, दोनों जहानों (लोकों) के धर्म की नाली, घर से ही धर्म का स्वामी ।

1,4,7,10 :- जातक के अपने लिए उत्तम, प्रकृति साथ लाई हुई भाग्य का भेद, अपने शरीर के लिए उत्तम, हकीकी और दुनियावी प्रेम की ताकत, आंतरिक शक्तियाँ , दुनियावी शक्ति की बरकत हो।

1 से 3 या 12:- उत्तम आराम देने वाला, उत्तम सहायक, सोना जैसा वृ0 होगा।

6 से 11:- मंदी हालत, वृ0 लोहे जैसा, निर्धन, दु:खी करने वाला हो।

3-5-9-11:- बाहरी चाल, व्यवहार अपने जन्म से पहले भेजे खजाने का भेद हो, अगले जहान में ले जाने की नेकी, चीज को पा सकने की शक्ति हो। चमक जो मार्ग दर्शक होगी।

2-8-12:- धन के लिए मध्यम हालत में रखेगा, मगर रुहानी हालत में उत्तम, जागती किस्मत का स्वामी हो, हर दो जहान, जन्म से मृत्यु तक हर जगह मध्य हालत देगा।

6:- संसार की उलझन में जकड़ा साधारण साधु की तरह भाग्य के चक्र में घूमते गृहस्थी की तरह सांस लेता हो।

वृहस्पति का ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु:- जन्म या वर्ष कुंडली मे जब राहु कुंडली में उत्तम, उच्च या वृ0 से पहने घरों में हो, यानि 1 से 6, 8(3-6 विशेषकर) में हो और वृ0 के मित्र ग्रह सू0, चं0, मं0 उत्तम प्रभाव के हों-तो मनुष्य को स्वयं अपने भाग्य और दूसरों की सहायता की हिम्मत में बढ़ावा देगा और आराम अपने आप मिलेंगे। वृ0 बाह्य और गुप्त शक्ति, आत्मिक और संसारी प्रेम, शारीरिक और रुहानी शक्ति देगा।

2. **चन्द्र नेक हो:-** गैसीय और तरल से बनी हुई चीजों का उत्तम प्रभाव होगा, उत्तम भूतकाल के हालात छिपे रहेगें।

3. **सूर्य नेक हो: -** स्वयं अपने आप का और संतान का उत्तम प्रभाव होगा, भविष्य उत्तम, राजा प्रजा की सहायता उत्तम मिलेगी।

4. **मंगल नेक हो:-** मित्र व भाई बन्धु उत्तम सहायक हो, वर्तमान उत्तम।

5. **मं0 बद (सू0, श0 एक साथ) या वृ0 खाना नं0 6 से11 में हो :-** वृ0 तो साधु बन कर चोर के काम करे। सोने का नुकसान हो। जातक के रास्ते मे रुकावट, शनि की घटनाएं मंदी निशानी होगी।

6. **सू0, चं0, मं0 के अतिरिक्त किसी भी ग्रह के साथ वृ0 हो :-** वृ0 केवल एक जहान (लोक)का स्वामी रहेगा।

7.**(सू0, रा0)साथ या (चं0, के0) साथ हो :-** ना केवल वृ0 का अपना प्रभाव मंदा और निराश होगा बल्कि दृष्टि के ढंग पर जिस घर या ग्रह सम्बन्ध हो, वहां भी मंदी हालत हो, निराश हो, दम घोंटू आँधी हो, बर्फानी हवा हो, मंदा भाग्य हो।

8. **(मं0, श0) या (मं0 ,चं0) वृ0 को देखते हो:-** (आयु रेखा के साथ एक और रेखा होगीं तो छुपी सहायता मिलेगी और वृ: आयु दाता होगा।)

9. **शनि से सम्बंध :-** श: नं: 1 और वृ: नं: 6,7 या वृ: नं:1 और 3,6,9, में शनि हो :-

धन रेखा जो विवाह से और बढ़ेगी जब तक दोनों में से यानि (वृ0 तथा शनि) में से कोई एक या दोनों नीच ना हो यानि शनि खाना नं0 1 और वृ0 नं0 10 में वर्षफल में ना आ जाए।

उपाय:- *मंदे फल के समय शनि की चीजें धर्म स्थान में दे।*

जब शनि वृ0 को देखे किसी और ग्रह के साथ, मगर वृ0 और शनि दोनों जुदा-जुदा हों तो इस प्रकार असर होगा:

शनि का घर	**तो वृ0 किस घर में बैठ कर मंदा प्रभाव देगा हालाँकि दोनों बराबर के ग्रह हैं।**
1	7
2	8,12
3	5,9,11
4	2,8,10,11, 10 , 2,3,4,
5,6,7,8,9,11,	अकेला बैठा वृ: कभी मंदा प्रभाव न देगा
12 में अकेला शनि	चाहे वह कैसा भी और कहीं भी बैठा हो।
1,6	वृ: का प्रभाव प्राय: मंदा ही होगा।

वृ0 अगर हवा माने तो शनि को पहाड़ गिने। मानसून पवनें जब कभी भी पहाड़ से टकरायेगीं तो लाभप्रद वर्षा होगी, लेकिन अगर किसी दूसरी वजह से उलट चल पड़े तो न सिर्फ शनि के मकान बिकवा देगी बल्कि शनि के पहाड़ों को बारीक मिट्टी या स्त्री जाति या दूसरी मुर्दा माया बुध वायदा फरामोशी या राहु की गुप्त शरारतों की आदत होगी।

खाना नं: 6 में शनि का अपना प्रभाव सदा शक्की होगा, मगर श0 नं0 6 के समय वृ0 अवश्य ही मंदा होगा। ऐसे समय चलते पानी में नारियल या बादाम बहाना उत्तम रहेगा।

यदि शनि पहले घरों में, वृ0 बाद के घरों में, तो बारिश की हवा खाली चली जाएगी।

लेकिन वृ0 पहले घरों में, श0 बाद के घरों में-तो कीमती वर्षा होगी।

वृ0 देखता हो श0 को :-

दृष्टि	वृः का घर	शनि का घरः	असर
दृष्टि 50 %	5	9	जादूगरी का स्वामी बना देगा
	3	9 या 11	
दृष्टि 25 %	2	6	योगाभ्यास का स्वामी
	8	12	

श0 देखता हो वृ0 को तो :-

उम्र शनि में पिता पर भारी, मकान शनि जब बनता हो।
चश्मा चन्द्र धन हर दम जारी, जमीन चन्द्र ज़र रखता हो॥

शनि 2 या 5 में और वृ0 हो 9 या 12 में और शनि की आयु के 9, 18, 36 वर्ष वृ0 (पिता, दादा, गुरु) की आयु तक के लिए मंदा, जिसका सबूत उसके मकान में लोहे का ताला (मकान बंद रहना) मंद भाग्य का अलार्म होगा। प्राकृतिक और शारीरिक कमजोरी और धर्म की हालत मंदी होगी।

10. केतु से सम्बंध :- जब वृ0 और केतु दोनों जुदा-जुदा हो और

अ:- केतु पहले घरों में, वृ0 बाद के घरों में तो वृ0 मंदा होगा।

ब:- वृ0 पहले घरों में, के0 बाद के घरों में दोनों की बजाये चन्द्रफल रद्दी हो।

11. बुध का सम्बंध :-

वृ0 के साथ या वृ0 की दृष्टि में बुध हो तो वृ0 का ही नाश हो जायेगा, परन्तु खाना नं0 2 और 4 में बुध अकेला या वृ0 के साथ सदा अच्छा प्रभाव देगा, दुश्मनी न करेगा, विशेषकर माली हालत मंदी न होगी। यदि बुध कुंडली में बाद के घरों में (7 से 12) यदि वृ0 पहले घरों में (1 से 6) तो वृ0 का 34 साल आयु तक उत्तम फल और बुध कक्क 35वाँ वर्ष मँदा असर शुरु कर देगा। यदि बुध कुंडली के पहिले घरों में और वृ0 बाद के धरों में हो तो बुध 34 साल तक अच्छा और व0 34 साल तक मंदा रहेगा। अर्थात् कि बुध और वृ0 आपस में देख रहे हों तो वृ0 का असर मंदा ही रहेगा बल्कि वृ0 को बुध अपने चक्र में बांध लेगा। ऐसी हालत में वृ0 का बिगड़ा प्रभाव निम्न हालत पैदा होने पर ठीक होगा:-

वृ0 अपनी चाल के हिसाब से (यानि वर्षफल में) शनि के घरों (10 ,11) या सू0 के घर (5) में आ जाये या जब श0, सू0 में से कोई वर्षफल में वृ: के घरों (2,5,9,12) में आ जाये या जब शनि खाना नं0 5 में आये और सूर्य खाना नं: 2,5,9,12 में हो जाये।

ऊपर कही हुई हालत में यदि स0, चं0, श0 में से कोई भी शुभ हो तो वृ0 का प्रभाव नेक होगा वरना बिना मतलब और तबाह करने वाली कहानियों में रात गुजारता होगा।

वृहस्पति खाना नं: 1

इल्म राज तेरा खज़ाने की चाबी, फकीरी पूर्ण या पावेगा नवाबी।
एक ही समय [1] पैदा हुआ दो भाई, एक राजा, दूसरा फकीर बना है।
विद्या ऊंची हो कोई डिग्री लम्बी, आयु धन विधाता हो।
शाप देते ऋण पितृ [2]टेवे, बी.ए. पढ़ा न कुल कोई हो।
केतु चन्द्र बुध अच्छे [3] होते, पीरी राजा संन्यासी हो।
सूर्य श0 सात आठ ग्यारह[4] मंदे, गुरु हुआ तब मिट्टी हो।

1. चाहे एक ही माता से या एक समय दो माताओं से एक राजा के यहां, दूसरा निर्धन के घर जन्म ले परन्तु वह भाई कहे जायेगें।
2. ऋण पितृ खाना नं0 2, 5, 9, 12 में बु0, शु0, रा0 या श0 पापी ग्रह हो कर, हो तो ऋण पितृ होगी।
3. के0 खाना नं0 5 में उत्तम, 16 से 75 साला आयु सुखी, औलाद से; चं0 खाना नं0 5 में हो तो आखिरी आयु सुखी। बु0 खाना 5 में हो तो राजा।
4. सू0, श0, स्वयं मंदे या जिस जगह इनका प्रभाव मंदा गिना गया है। खाना नं0 7, 8 दूसरों के सम्बंध में 8,11 अपने भाग्य के सम्बंध में ।

हस्त रेखा

वृ0 रेखा:- भाग्य की जड़ पर जब चार शाखी रेखा हो । सूर्य के बुर्ज पर बुध की ओर एक चक्र हो। वृ0 का अपना निशान 2। या दोनों हाथों को इकट्ठा गिन कर उंगलियों पर एक शंख या एक चक्र या एक सीधी रेखा वृ0 के पर्वत पर हो ।

शुभ हालत

अपना भाग्य अपने दिमाग से, राजदरबारी लोगों की मित्रता से बढ़ेगा । वृ0 की वस्तुएं, रिश्तेदार या काम में भाग्य की
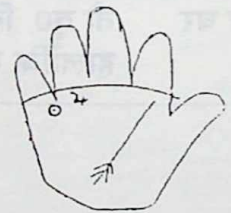
सहायता मिलेगी और उच्च नीच खाना नं0 11 में छुपा धार्मिक भेद और दूसरे जहान का आम व सांसारिक सम्बन्ध नं0 8 में बैठे ग्रहों की हालत पर होगा ।

क्याफा:- पेशानी से फैसला होगा। घर नं0 11 देखें ।

लग्न, मनुष्य और माथा के मिलाप की जगह, वक्त की हकूमत के स्वामी का तख्त माना है । वृ0 खाना नं0 1 में हों, चाहे विद्या पास हो या न हो धनवान अवश्य कर देगा । जातक की धर्म, दयालुता से हरदम तरक्की हो, भाग्य 51 साला आयु तक साथ देगा । चं0 की वस्तुएँ के काम से या चं0 संबंधी रिश्तेदार सहायता पर होंगे । के0 की वस्तुएँ काम या के0 सम्बन्धी रिश्तेदारों का फल उत्तम होगा। स्त्री या शु0 की वस्तुएं या रिश्तेदारी उत्तम उपने लिए नेक, राजदरबारी और अदालती मुकदमें या लड़ाई झगड़ों, सू0 की वस्तुएं या संबंधी से परिणाम । स्वास्थ्य अच्छा और शरीर तंदरुस्त होगा ।

मकान जायदाद, शनि की वस्तुओं का या सम्बंधी, काम आखों की दृष्टि कभी खराब न होगी। शेर की तरह गुस्सा होते हुए भी वह साफ दिल, शान्त वृत्ति का मनुष्य होगा, जिसमें चालाकी को फौरन समझने और रोकने की शक्ति होगी। शत्रुओं के होते हुए भी डरेगा नहीं, विजय सदा साथ देगी। औलाद की उम्रों में क्रम में 8 वर्ष से अधिक अंतर नहीं होगा। आयु का हर आठवां वर्ष उन्नति का न होगा, यदि होगा तो उसका वचन और आर्शीवाद सदा पूरा होगा। परन्तु दूसरों के लिए शाप या बुरा सोचने से उसका अपना आप खराब होगा।

1. जातक की राज्य, विद्या बी.ए., एम.ए. या कोई ऊंची डिग्री होगी। धनवान होने की बात शनि कहेगा।
   –जब खाना नं0 7 में कोई न कोई ग्रह अवश्य हो (चाहे मित्र चाहे शत्रु) और खाना नं0 1 में वृ0 के शत्रु न हो। (क्याफा :- उंगलियों की पोरी में दो सदफ हों ।
2. जातक कई प्रकार की विद्याएं जानता है और राजा की भांति उत्तम हाकिम होगा। (उंगलियों की पोरी में एक चक्कर हो)
   –जब ऊपर की हालत के साथ जब बु: भी उत्तम हो।
3. वृ0 की आयु (4,8,16) साल की आयु से माता पिता को और उनसे सुख होगा और स्वयं उसकी अपनी आयु 75 वर्ष तक का सुखिया भाग्य या होगा । भाग्य बुलंदी पर हो (उंगलियों की पोरी पर एक शंख हो)
   –जब केतु उत्तम हो ।
4. आयु के साथ-साथ सुख भी बढ़ता जाये नेक, उत्तम राजा, या उत्तम हाकिम होते हुए, आखिर आयु संन्यासी की भांति हो । लोगों का भला करें या करना पड़े जिसका फल उत्तम हो । –जब चन्द्रमा उत्तम हो ।
5. पुरखों से जायदाद धन या विरासत में सोना मिले ।
   –जब खाना नं0 1,2,5,7,11,12 में वृ0 के शत्रु न हों और साथ ही खाना नं0 7 उत्तम हो।
6. अपनी कमाई से पीले रंग के सामान की अधिकता और बरकत होगी । स्त्री पूजन, खूबसूरत मिट्टी या स्त्री का पालना या गाय सेवा फालतू धन की नींव होंगे । शु0 का हकीकी व गैर हकीकी प्रेम (पार्थिव व पारलौकिक प्रेम)।
   –जब खाना नं0 11 उत्तम हो ।
7. विवाह से या शुक्र के काम या संबंधी कायम करने से बढ़ेगा। –यदि खाना नं0 7 खाली हो ।
8. 28 वर्ष की आयु से पहले या 24वें या 27वें साल स्वयं अपनी शादी या अपने किसी खून के रिश्तेदार की शादी या अपनी कमाई से मकान बनाने या नर औलाद के हो जाने से पिता की आयु पर भारी
   असर होगा। मिट्टी में मंगल की वस्तुएं दबाने से लाभ होगा ।
   –यदि खाना नं0 7 खाली हो ।
9. राजदरबार से कमाया धन (चाहे एक ताँबे का पैसा ही हो) सोने की तरह काम देगा (बरकत हो)।
   –जब खाना नं0 1,2,4 मे सूर्य, चन्द्र, मंगल हो।
10. *गुरु पहले हो मं0 सातवें, ठाठ लम्बी जागीरों का ।*
    शनि वृ0 पूरी करता, खून शाही या वजीरों का ॥
    यही शर्त कुलपुरोहितों पर भी लागू हो सकती है। जातक जागीरों का मालिक होगा। कुल पुरोहित, बाप, दादा लम्बी जागीरों वाले होंगे । –जब मं0 खाना नं0 7 में हो ।
11. मामा की आयु छोटी चाहे हो जाये (जो कि ज़रूरी नहीं) परंतु उसकी अपनी आयु लम्बी होगी, जो कम से कम 75 साल हो चाहे इससे अधिक हो। –जब खाना नं0 2,3,4,8 सभी उत्तम हों ।

12.ऐसे व्यक्ति की और उसके कुल की आयु उसकी इच्छानुसार लम्बी होगी।
(क्याफा: भाग्य रेखा की जड़ पर चार शाखी रेखा हो)।
-जब सूर्य खाना नं0 9 में होगा।

मंदी हालत (फकीर कमाल का परन्तु निर्धन)

पीली गैस❖ और संसार की गंदी हवा•, पितृ ऋण☒, शत्रु ग्रहों◱ की जहर और भाग्य की कड़ी आग※ का चक्र॰ यदि वृ0 के सोने को पिघला भी दे यानि यदि वृ0 का असर मंदा ही हो जाये तो वह भी अपने पहले दौरे (आयु का 35 साला चक्र) में नहीं तो दूसरे चक्र में तो अवश्य (49 साल आयु से शुरु होता है) अपनी सारी पिछली कमी पूरी कर देता है। शर्त यह है कि ऐसा मनुष्य भीख के लिए दूसरे के आगे अपना हाथ न फैलाए और स्वयं अपने भाग्य पर सब्र करता हो।

1. वृ0 की चीजें।
2. वृ0 की चीजें।
3. 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु0, शु0, श0, रा 0।
4. 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु0, शु 0, श0, रा0।
5. मंदा सूर्य।
6. मंदा सूर्य।

ऐसी ग्रह चाल के समय वह मनुष्य

1. अनपढ़ परन्तु कमाल का फकीर होगा।
-जब बु0 मंदा, या वृ0 के घरों 2,5,9,12 मे जहर हो यानि आपसी शत्रु या वृ0 के शत्रु ग्रह हों।

2. उसने आप बल्कि उसके कुल में किसी ने बी. ए. पास न किया हो और न ही कोई डिग्री ली हो।
-जब टेवे में ऋण पितृ 2,5,9,12 में वृ0 के शत्रु ग्रह हों।

3. 8 से 12 तक की आयु मे दूसरों की शरारतों या राहु की चीजों के काम या संबंध से सोना पीतल हो जाये। हर तरफ मुसीबत ही लेंगे। -जब 2,5,9,12 या वृ0 के साथ राहु बैठा हो।

4. 13 से 15 साल की आयु में मामूली मिट्टी की स्त्री या शुक्र की चीजों का काम या संबंधी सोने को मिट्टी बना कर उड़ा दें। भाग्य के मैदान में मिट्टी भरी आँधी काली रात होगी।

5. 16 से 19 या 21 वर्ष मे बुध की चीजों का काम या संबंधी धन हानि का बहाना हो। किस्मत जलती रेत की तरह धन की हालत में हर तरफ विरान करती रहेंगी।
- जब वृ0 के साथ या 2,5,9,12 में बुध बैठा हो।

6. 36 साल की आयु के बाद (42 साल की आयु से) शनि की चीजों का काम या संबंधी से हर ओर बुराई बुरे कामों के .जोर से स्वास्थ्य खराब (पेशाब और पाखाना की नाली तक दु:खने लगे)। भाग्य साथ न दे, दिल हिला देने वाली घटनाऐं हों (जो दु:ख दें)। भाग्य की जहरीली हवा दम की दम में खून करती जावे या डरावनी घटनाएँ हों।
-जब वृ0 के साथ या 2,5,9,12 में शनि पापी ग्रह होकर बैठा हो।

7. अपने बनाए ऊँचे महल पाप के ठिकाने हो जाये और खुद के लिए दु:ख का कारण बन जाए तथा अपनी संतान और स्वास्थ्य के लिए भी। -जब शनि नं0 5 में हो।

8. अपना स्वास्थ्य बिगड़ जाये। -जब शनि 9 में हो।

9. स्वयं की संतान दु:खी और जातक के लिए दु:ख का कारण हो जाए।
-जब शनि मंदा या मंदे घरों में हो या तो शनि के साथ उसके शत्रु ग्रह सू0, चं0, मं0 हो या शनि हो ही अपने मंदे घरों में।

10. पिता से जुदा हो कर अपना काम करने लगे और अपने काम से घर का भार उठाए हुए हो (खाना नं0 9, 10 का शनि कभी भी 18 से 21 तक खाना नं0 7 में नहीं आता बल्कि उत्तम फल देगा)।
-जब 18 से 27 साला आयु में वर्ष फल में जन्म कुंडली का मंदा श0 खाना नं0 7 में आ जाए। (अच्छा शनि ऐसा प्रभाव न देगा)।

11.मुकद्दमें बाजी, दीवानी या दूसरी नाजायज उलझनों में धन की हानि होगी, चाहे उसका फैसला उसके हक में ही होता जाये। अपने भाग्य और सांसारिक कामों की हिम्मत में संबंध वृ0 सोना देने की बजाए उसकी मिट्टी उड़ाता जाएगा।

–जब सू0 खाना नं0 11 में सोया हुआ हो, मंदा सूर्य या सूर्य बुध एक साथ मंदे घरों में हों।

12.जातक निंदक हर ओर से निंदा, दूसरों को श्राप देने वाला होगा, जिसकी स्वयं अपने भाग्य की मंदी हवा उसके गृहस्थी प्रभाव को मंदा करती जाएगी। ऐसी हालत में छोटी आयु में शादी (22 वर्ष की आयु से पहले) उत्तम होगी वरना 24वां वर्ष मंदा हो जाएगा। उस समय मंगल की चीज़ें काम संबंधी का संबंध लाभ करेगा।

–जब वृ0 सोया हुआ हो या खाना नं0 8, 11 मे उसके शत्रु बु0, शु0, रा0 या श0 पापी ग्रह हो।

13 पिता की मृत्यु दमा या दिल के फेल होने से हो। राहु की उम्र में हो या उसकी आंखों में दुःख आ जाए दिमाग बिगड़ जाये या टांगों की बिमारी कांपनी सूखने लग जाए। –जब राहू नं0 8 में हो।

वृहस्पति खाना नं0 2

(जगत का धर्म गुरु और विद्या का स्वामी)

जर्द माया गो, दान से तेरा बढ़ता,
मगर सेवा[1] उत्तम मुसाफिर जो करता

राजा जनक की साधु अवस्था[2]	*दानी गुरु[3] जर माया हो।*
मंदा ग्रह[5] जब हो कोई बैठा,	*जेर[4] हुकुम गुरु साया हो।*
चार मंदा, 5,10,12,	*रद्दी-रद्दी चाहे केतु हो।*
काम सोना खुद मिट्टी देगा,	*मिट्टी देती जर सोना हो।*
शुक्र रद्दी या हो शनि दसवें में,	*रात दुःखी मंद औरत हो।*
कोई बैठे[6] आठ दस ता 12,	*दुखिया बच्चों जर दौलत हो।*
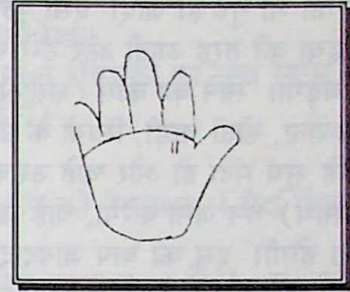
1. 27 साला राजदरबार का उत्तम फल।
2. जब तक नं: 8 खाली रुहानी असर अच्छा, मान होगा।
3. लक्ष्मी हवा की तरह आये, पानी की तरह जाये, 16 से 32 साला उम्र में।
4. वृहस्पति का उपाय मंदे ग्रह को उत्तम करेगा। मंदे ग्रह का उपाय वृ0 का होगा।
5. वरना गुरु मंदी हवा देगा।
6. सभी टेवे में चाहे कहीं भी।

यह वृः की वास्तविक जगह जहाँ चंः उच्च करता है, जो वृः का मित्र है। इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं है। इसी कारण वृहस्पति को सब का गुरु मानते हैं। यही घर कुण्डली में वृहस्पति का दौलत का व मान का मिला है। बैल पर साधु की सवारी शिवजी बैल पर सवार मानेगें। इस घर को सब घरों ने मान से देखा है और इस घर में सिर्फ वे गुरु को ही बिठायेगें।

हस्त रेखा - वृहस्पति रेखा

2 सदफ या वृ0 के पर्वत पर दो सीधी खड़ी रेखाएं या वृ0 का निशान हाथ मे घर नं0 2 की जगह हो तो जातक मर्द चाहे औरत हो जगत गुरु होता है। हर हालत में राजा की तरह मानसरोवर की भांति होगा।

गुरु को सब ग्रहों का प्रणाम

हथेली में वृ0 के पर्वत खाना नं0 2 गुरु के सामने (वृ0 नं0 2) और दूसरा कोई ग्रह खाना 2 या 6 में बैठा हुए, तमाम ही ग्रह चाहे वृ0 के साथ साथी या दृष्टि में हो या न हो (सब ही) प्रणाम करने को बैठे हैं।

ग्रह	खाना या पर्वत	प्रभाव की तरह
श0	10	सांप कान बंद किए मगर टिकटिकी लगाये चुपचाप बैठा है
सू0	1	गुरु की प्रतीक्षा में है, बंदर बना बैठा है मगर फूक नहीं मार सकता यानि वृ0 की हवा को सांस माना है जिसे वह बाहर नहीं निकाल सकता बल्कि वृ0 की हवा को ढूंढ़ता है।
रा0	12	राहू का हाथी, केतु खाना नं0 6 के साथ मिल कर अपने कान लम्बे करके खाना नं0 2 की जड़ में गुरु के उपदेश की खातिर चुपचाप बंधा हुआ है।
के0	6	गुरु का आसन जो नं0 2 की जड़ से मिला रहता है, कि न मालूम कब गुरु को आराम करना है। केतु को गाय और कुत्ता दरवेश भी माना है जो गुरु के ही साये मे रहते हैं।
चं0	4	दिल रेखा, दिल का दरिया सदा वृ0 नं0 2 को चलाता है।
शु0, बु0	7	विवाह रेखा व खुद सिर रेखा बनकर नं0 2 की जड़ में।
मं0	3	इसकी जड़ ही नं0 2 से इकट्ठी है।

1. जब केतु कुत्ते ने खाना नं0 6 लेकर वृ0 नं0 2 के पांव और उसके सामने रहना पसंद किया तो बुध की सिर रेखा कुत्ते की दुम की तरह केतु के साथ नं0 6 में पक्की हो बैठी, बुध केतु दोनों ही शुक्र के भाग हैं और एक खाना नं0 2 में शुक्र की ही चीज या गाय स्थान है जिस पर बैठा गुरु सब को देख रहा है। बैल पर शिवजी सवार देवताओं का दृश्य देखते हैं।

नेक हालत

सब को तारने वाला जगत गुरु, मन्दिर का पुजारी परहेजगार होगा।

दौलत चाहे खैरायत से बढ़े मगर मुसाफिर की सेवा से वह और भी उत्तम होगा। अपना भाग्य गृहस्थी, कारोबार (सिवाय बच्चों के पैदा होने से) और ससुराल खानदान के संबंध से बढ़ेगा। खाना नं0 2,8 में बैठे हुए शत्रु ग्रहों का अपना असर चाहे कितना भी मंदा हो मगर उनकी जहर वृ0 पर प्रभाव न करेगी। वृ0 का प्रभाव सारे ग्रहों पर होगा (सिवाय सूर्य के) जिसका अच्छा या बुरा प्रभाव टेवे में बैठे घर के अनुसार (अच्छा या बुरा) जैसा होगा रहेगा। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों का अवश्य गुरु होगा, हो सकता है कि पुरुषों का भी गुरु हो जाए। ऐसा पुरुष पिता के धन को बढ़ाता है। स्वयं भी गृहस्थी होते हुए भी ज्ञानी, गुरु, मसीहा होगा। माया व दौलत हवा की तरह आती और उसे पानी की तरह बहाता होगा। उत्तम दिमागी हालत, मान रेखा हर जगह मान होगा, जो दिन प्रति दिन बढ़ेगा। सोने का काम (सर्राफी, जौहरी, सुनार) करने से हानि होगी। मिट्टी के काम, सड़कों पर मिट्टी डलवाना, कच्चे मकान बनवाना, खेती बाड़ी, स्त्रियों के प्रयोग की चीजों का काम लाभदायक रहेगा। राजदरबार मे 27 वर्ष का उत्तम समय उन्नति का होगा। चाहे सूर्य मंदा हो और चाहे उसका जन्म निर्धन और निर्दयी कसाई के घर का हो, 16 से 32 वर्ष की आयु तक (लक्ष्मी पर ब्रह्मा का साथ) धन जमा करेगा, चाहे कबीला बढ़ा हो या न हो, (खुद विधाता का हाथ होगा) मगर बादशाही ठाठ या भारी कबीले की शर्त ना होगी। इस का बाप जायदाद बना देगा वरना वह स्वयं बना लेगा। चाहे संबंधित (खाना नं0 4) माता, (5) औलाद, (10) पिता पूर्वजों की हालत, (11) अपनी आमदनी, (नं0 2) पूजा पाठ, रात का आराम, सब ही रद्दी हों। दिमागी खाना नं0 2 यानि शुक्र से संबंधित सब तरह के बर्बाद देख कर भी, वह गुरु धर्मात्मा बन जाएगा। मगर हर हालत मे दिल का साफ होगा। दृढ़ निश्चयी और शासन की ताकत होगी, ऊंच विचार होंगे।

क्याफा

क्याफा	ग्रह चाल	प्रभाव
वृ0 की भाग्य रेखा कायम, तर्जनी सीधी हो।	वृ0 नं02 में कायम व उत्तम और हर तरह से अकेला खास -कर जब 9 मंदा न हो और न ही वहां वृ0 के शत्रु बु0, शु0, रा0 हों।	राजदरबार का 27 साला संबंध, सब की सहायता देगा। उम्र 75 साल। मान, धन-दौलत ससुराल से मिले, अपने आप आए। लाटरी और दबा धन मिले धन की श्रेष्ठ रेखा गृहस्थ रेखा का उत्तम फल पिता उसे तार दे वरना खुद बढ़े।

क्याफा	ग्रह हो	खाने में	प्रभाव
तर्जनी का सिरा चौकोर	मं0	8	सच्चाई पसंद होगा।
तर्जनी बहुत लम्बी	मं0	9	हकूमत राज्य की शक्ति होगा।
तर्जनी का सिरा गोल	बु0	8	साहिब तदबर होगा।
मध्यमा तर्जनी की तरफ झुकी होगी	श0	8	संसार को छोड़ देने वाला होगा, मुर्दा विचार और उदास रहे।
तर्जनी का सिरा चौड़ा	रा0	8	शक्तिशाली होगा।
तर्जनी बहुत लम्बी	रा0	9	सोच विचार की शकित का स्वामी हो।
तर्जनी का सिरा नौकदार	के0	8	ईमानदार और तीक्ष्ण बुद्धि का होगा।
तर्जनी लंबी हो	के0	9	राज्य की शक्ति बड़ो की जैसी बात करने वाला,
अनामिका, तर्जनी से बड़ी	सू0	10	अपना जीवन खुद चुनने वाला।
अनामिका तर्जनी बराबर	सू0	12	प्रसिद्धि जीवन होगा।
---	के0	6	प्रसिद्ध जीवन होगा।
---	सू0, बु0, श0	8	अपनी मृत्यु को पहले ही जान लेगा।
तर्जनी मध्यमा समान	श0	12	पक्का विचार साहस भरा होगा। नैपोलियन जैसा साहसी।

1 दबा माल या लाटरी या बिना औलाद वाले का धन मिले ।

-जब 2,6,8 शुभ हों या खाना नं0 8,10 से मंदी हवा नं 0 2 में ना जाये ओर नं0 12 भी मंदा न हो ।

2. वृः सब कठिनाईयो को स्वयं दूर करें (सभी उंगलियों तर्जनी की ओर झूकी हों) बच्चों से सुखी धन होगा, वृः की मदद स्वतन्त्र प्रकृति, उन्नति प्रेमी, दृढ़ निश्चय तथा आशावादी होगा। - जब खाना नंः 8-9-10-12 में कोई न कोई यह अवश्य हो चाहे वह ग्रह वृ0 का शत्रु या मित्र हो।

3. विद्वान होगा, जिसकी नींव और फैसला शनि पर होगा। विद्या की कमी या अधिकता उसकी भाग्य की चमक को कम न करेगी।

- जब शनि साथ या साथी हो (उंगलियों की पोरी पर दो सदफ हो ।

4. नैपोलियन की तरह जमाने का एक वीर, काम का आदमी हो, सुखी हो।-जब शनि नंः 12 में हो (जब तर्जनी मध्यमा समान हो)

5. अपनी धुन का पक्का परन्तु परिवार बहुत होगा।

- जब नंः 8 खाली हो और साथ में सूः ,चंः, शः, राः, या बुः में से कोई भी खाना नंः 6 में हो।

6. मान रेखा राजा की तरह हो, दाता होगा।

- जब राहु नेक हो मगर गुम न हो। (वृः के पर्वत पर एक सीधी रेखा।

7.नेक काम और भलाई करने वाला होगाहर जगह मान होगा, चाहे जागीरें उसके पास हों या न होसंसार का सुख सागर उत्तम हो।

-जब राहु नेक और कायम हो (वृः के बुर्ज पर दो सीधे खत होगें)

मंदी हालत

1. अपने ही कुल को मारने वाला, गरक करने वाला यानि दही (शुक्र) और गोबर, (शुक्र) की मिलावट में पैदा बिच्छु की भांति हो। (नंः 8-2 के मंदे प्रभाव की पहली निशानी केतु कह देगा)।

- जब खाना नंः 8-2 किसी तरह भी मंदा हो रहा हो, जिस प्रकार खाना नंः 8 में चंः, मंः, दो ग्रह इक्टठे हो (चाहे वह वृः के मित्र हो परन्तु एक साथ दोनों के कारण नंः 8 मंदा ही होगा) इसी तरह नंः 2 में भी ग्रह अपना अपना प्रभाव करते हैं, मगर जब नंः 2 में मंगल बंद हो तो नंः 2 मंदा ही होगा।

2. स्वास्थ्य बिगड़े, ससुराल में धन को हानि होगी। - जब शनि वर्षफल में नंः 2 में आयेगा।

गुरु जहान दो मंदिर कच्चा, या बैठक खुद साथी हो

(राहु केतु पाप) मारक धर (8) से गुरु भी डरता, आठ दृष्टि , खाली जो।

3. वृः का फल राहु के संबंध में मंदा ही होगा। - जब खाना नंः 8 खाली हो।

4. जिस जगह भी ऐसा व्यक्ति जाए या मेहमान बने वहाँ हानि हो, मनहूस परन्तु उसकी अपनी हानि न हो। (मंदे प्रभाव की खबर पहिले ही केतु या संसारी कुत्ते से जाहिर हो जाएगी परन्तु टेवे वाले पर वृः के प्रभाव पर बुरा असर न होगा)।

- जब नंः 8-2 में कोई मंदा ग्रह हो चाहे वह ग्रह स्वयं नंः 8 में हो चाहे वह वृः के प्रभाव को दृष्टि से खराब करे।

5. रात दुखी, स्वास्थ्य और स्त्री की मंदी हालत, बीमार हो। - जब शुक्र मंदा और शः नंः 10 में हो।

6. धन हानि बड़े, बीमार, स्वयं राजा की कैद में जाये। - जब बुध नंः 8 शनि नंः 10 में हो।

7. ईष्यालु होगा। उंगलियां बहुत छोटी हो। - जब बुध नंः 9 में हो।

8. मंदी हवा, सब तरह से मान हानि, लानत मुसीबत हो। - जब नंः 8-10 में बुध, शुः राः शः पापी ग्रह हो।

उपाय

नंः 10 में जिस ग्रह का मंदा प्रभाव हो	किस ग्रह का उपाय करें
बुध, राहु	शनि
शुक्र	चन्द्र
शनि(पापी)	वृः का अपना उपाय

नंः 8 वृः के शत्रु ग्रहों (बुः, शुः, राः, शः, पापी) के लिये उन हर एक के खाना नंः 8 में दिया हुआ उपाय सहायता देगा। स्वयं मंदे वृ0 या मंदे ग्रह के समय बाकी सब हालतों में वृ0 का अपना उपाय सहायता देगा।

वृहस्पति खाना नंः 3

गरजना शेर व खानदानी गुरु, ज्योतिष व आशीष का स्वामी
वह आंख शिवजी गो मुर्दोको लेंखे, मगर आंख तू एक से क्यों है देखे
शेर स्वभाव [1] संसार का लिखारी, दुर्गापूजा [2] धन दौलत राज का हो
असर भले जब तक दो उत्तम [3] नष्ट खुशामद (चं 12) होता हो।
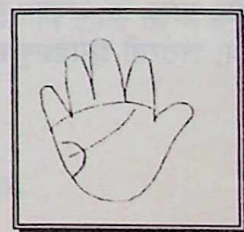
4 शनि, बुध टेवे मंदा, मारे मित्र कुल दुखिया हो।
दूजे मंगल या 9 वें शनि बैठा, तारे 4 सभी खुद सुखिया हो।

(1) जब तक बुध उत्तम, एक ओर का स्वभाव
(2) कन्या की सेवा से उसका आर्शीवाद ले या दुर्गा पाठ करना आदि बुध की जहर को दूर करता हो।
(3) त्रिलोकी का सुख या जलता मंगल।
(4) यदि दोनों शर्ते न हो तो पहले निर्धन फिर धनी।

हस्त रेखा तीन सदफ, 7 चक्र या 7 सीधी रेखा या गृहस्थ रेखा वृः के पर्वत पर हो

नेक हालत
फरिश्ता अजल भीगो तुमसे डरेगा, मगर जुल्म तेरा न हरगिज फलेगा।।

धनवान तथा शेरों का शिकारी जैसा होगा। दिमागी खाना नं: 7 मंगल, इंसाफ पसंद, दुर्गा जी (बुध) शेर (वृः) की सवारी का साथ होगा। विद्वान होगा, राजदरबार से धन देर तक मिलता रहेगा (नौकरी करेगा) जब तक कि दुर्गा पाठ या कन्याओं की सेवा से आशीष ले वरना वृः नं: 3, बुः खाना 3, 9 का मंदा फल देगा हर ओर से सुखी होगा आँखे ठीक होंगी भाई, ससुराल नेक औलाद की आयु लम्बी और सुखी होगी।

1. त्रिलोकी के दरवाजे पर तलवार का धनी, मृत्यु को रोकने वाला खुद ही बैठा हो उम्र लम्बी। विद्वान हो। उत्तम सेहत धनी अवश्य समृद्ध हो। अपना भाग्य भाई बहिन से हो। जाति प्रेम वाला हो। - जब वृः कायम हो।
2. अपने बहन भाई की सहायता करे। 26 साल की आयु से 46 साल की आयु तक सब और उन्नति हो। सुखी, कम से कम 20 साल धनी हो। - जब मं: नेक हो, खाना नं: 2 में सूः, चंः, मं: (मित्रग्रह हों) और वृः वर्षफल में फिर नं: 3 में आवें (गृहस्थ रेखा हथेली में खाना नं: 3 में समाप्त हो)।
3. इज्जत मान होगा, गुजारा बहुत अच्छा ही चलेगा, कमाई शुरु करने से करते रहने तक सब फल उत्तम होगें, घर में इक्टठे रहने से लाभ, औलाद पैदा होने से लाभ हो।
   - जब वृः कायम हो, खाना नं: 11 में कोई भी ग्रह हो। या खाना नं: 5 में कोई भी मित्र ग्रह हो या खाना नं: 9 में कोई भी ग्रह हो।
4. आयु धन बढ़ेगा। - जब शनि नं: 9 में हो (हाथ में उर्ध रेखा कायम)
5. चालाक, मनुष्य को उसकी आवाज से पहचान लें।
   - जब शनि नं: 2 में हो (पर्वत नं: 2 पर खड़ी रेखा)
6. सब को तारने वाला। स्वयं भी सुखी।
   - जब मं: नं: 2 में या शनि नं: 9 में हो। (गृहस्थ रेखा नं: 2 में समाप्त, उर्ध रेखा होगी)
7. धनी होगी। - जब श: नेक हो (उंगलियों की पोयियों में 3 सदफ हो)।
8. स्वयं साहसी होगा। - जब बुध नं: 7 में हो (पोरियों पर 7 चक्र हों)।

मंदी हालत

जातक कायर, मनहूस, मंद भाग्य होगा।

1. एक स्वभाव का स्वामी, यदि मित्र हो जाए तो सब कुछ देवे खुद किया शिकार तक दे डाले - यदि शत्रु हो जाये तो दूसरे का बिस्तर तक जला दे आराम नष्ट कर दे। - जब वृः सोया हुआ हो या शत्रु ग्रहों से घिरा हो।
2. अपनी प्रशंसा सुन कर प्रसन्न होने के स्वभाव से नष्ट हो। - जब चन्द्र नं: 12 में हो।
3. कायर, सब ओर से दुखी, मंद भाग्य, औरतों के साथ बैठकर गप्पें हाँकने वाला (बुध नं: 3 और 9 का दिया हुआ मंदा फल होगा) सेहत खराब, बुरी जिन्दगी, हमेशा रोग, रक्तदोष, संतान दुखी, केतु के मंदे फल। - जब मं: बद हो।
4. सबको लूट कर स्वयं अमीर बनने का हामी और बने भी, जातक मित्रघाती, नास्तिक हो। उसके सभी संबंधी दुखी, खासकर के औलाद और मामा तो अवश्य दुखी (31) साल रोगी। चाहे वह लड़ाई में बहादुर हो मगर फिर भी मंद भाग्य वाला होगा। शरीर से दुर्गन्ध आये, शरारती झगडालू हो परन्तु कायर।
   - जब श: नं: 4 और बुध भी मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 4

चन्द्र की राजधानी का मुल्की गुरु, सरु और बाग-बगीचे

पड़ा माया बन्द पानी दुनिया जो सड़ता, फले बीज दुनिया जो बन्द मुट्ठी करता।
सिंहासन विक्रमी 32 परियां, ब्रह्म पूर्ण कोई अपना हो।
जमीन मुरब्बे दूध की नदियां, शेर सीधा पानी तैरता हो।
मंद शनि बुध इज्जत मंदी, 10 वें बैरी जर डोलता हो।
केतु बुरे शाह लेगा फकीरी, राहु भले सब उन्नत हो।
शुक्र, चन्द्र और मंगल मोती[1], दूध भरे त्रिलोकी[2] जो।
नाश बड़ों का कुल सब होता, इश्क गंदे जब स्वयं करता हो।
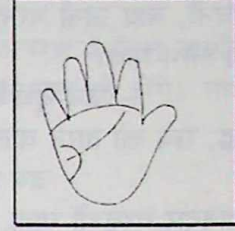
1. चाहे कहीं भी कैसे हो। 2. खाना नं: 3 के ग्रह।

हस्त रेखा:-

4 सीप, 4 शंख या 4 सीधी रेखाएं या 2 चक्र, चन्द्रमा पर्वत पर शंख, सिर्फ एक चन्द्र रेखा वृ: के पर्वत पर खत्म हो।

नेक हालत

एक ही सीप में, पैदा हुए दो मोती।
एक ताज (बुध) शाह के सिर पर, दूजा खरल (बुध) में पिसता हो।

राजा इन्द्र विक्रमादित्य की तरह प्रसिद्ध होगा। अपने भाग्य का प्रभाव रुहानी शक्ति, माता खानदान से होगा। शु0, चं0, शनि, मं0 सभी ही उत्तम फल देगें। खाना नं: 3 का ग्रह कभी बुरा प्रभाव न देगा। देश भक्ति, बाग और बगीचे और छुपी शक्ति का स्वामी होगा अपने इलाके में लाखों में एक प्रसिद्ध होगा। खेती, दूध की नदी, पशु उसके आराम के लिए होंगे। बाप, दादा या स्वयं पूरी शक्ति का स्वामी होगा, धर्म का पक्का, सब की मदद करने वाला, दूरदृष्टि, आयु लम्बी, मान, हर मजहब को मानने वाला, झगड़ो से दूर, अपने घर, में संतुष्ट, लालच का नाम तक न हो। राजा इन्द्र की भान्ति हो, लोक परलोक का स्वामी, रहम दिल संसार में किसी भी विपत्ति में सहायक होगा। चौड़ा माथा, प्रसन्न चित्त हो। उत्तम चरित्र, व्यवहार में उत्तम पत्नी, सुखी संतान, शांत प्रकृति उसका मकान उत्तम। बिना प्रयास लक्ष्मी आवे। दिमागी खाना नं: 2 (चन्द्र) हमदर्दी, दयालु, जमाने का शेर, हुकूमत, दिमाग तेज, तेज बुद्धि, स्मरण शक्ति उत्तम हो। सोने के बर्तन में दूध की तरह नेक फल खानदानी खून का सबूत होगा। मुसीबत के समय सीधा तैरने वाला शेर होगा।

1. माता-पिता की तरह सब को सुख देने वाला, साहसी, राजदरबार में सदा लाभ। 24 साल तक विद्या मिलेगी। साहसी, छुपा धन, जुड़ा-जुड़ाया धन, ऐसी जायदाद जिसका मालिक न हो प्राप्त करे छुपी शक्ति और प्रभु की सहायता का फल उत्तम हो। पिता की तरह बहादुर बेटा, (मां पर धी पिता पर थोड़ा) 32 परियों वाला तख्त हो। उसका मामूली तांबे का पैसा, सोने का लाभ दे। मकान आलीशान, व धन का दरिया हो।

–जबकि खाना नं: 2,5,9,11,12, में बु:, शु:, श:, राहु पापी ग्रह होकर) न हो, चन्द्र के पर्वत में रेखा वृ: के पर्वत नं: 2 में जाकर समाप्त हो।

2. पिता खून के मुकद्दमें का फैसला कर सकता हो या बड़ा हाकिम हो या उसके जन्म के बाद हो जाये, परन्तु उसके स्वयं के भाग्य की शर्त नहीं। – जब सूर्य या मंगल (नर ग्रह) उत्तम हो।
3. हर तरह की सवारी का सुख मिलेगा। – जब चन्द्र नं: 1 और श: नं: 10 में हो।
4. भाग्य का फैसला शनि राहु की नेक, बद हालत पर होगा, टेवे में जैसा हो। यदि नेक तो चाहे अपने बाप से कम ही हो परन्तु फिर भी लाखों में एक होगा। बड़ों के काम काज उत्तम फल देंगे। यदि स्वयं राजा नहीं तो उसका भाई या संबंधी अवश्य होगा। प्राय: स्वास्थ्य पर कमाई का चौथाई हिस्सा अवश्य खर्चेगा। मोटर गाडियाँ हर समय उपस्थित होंगी। धनी, ध्वजाधारी छत्र वाला होगा।

– जब चं: नं: 2 में हो। (चन्द्र के पर्वत पर एक शंख या चक्र हो।)

5. वृ: सोया होगा। यदि ऐसा मनुष्य यिकसी को अपना नंगा शरीर न दिखाए या दूसरों की दृष्टि अपने नंगे शरीर पर न पड़ने दे तो निर्धन न हो। वृ: नं: 4 का उत्तम फल होगा। – जब खाना नं: 10 खाली हो।
6. टेवे में बैठा मंदा चन्द्र भी उत्तम फल ही देगा। स्वास्थ्य पर फिजूल खर्च की शर्त न होगी।

– जब चन्द्र सिवाय नं: 2 के कहीं भी हो।

7. माता के होते विद्या कभी रुके कभी चले पर पूर्ण होगी। यदि माता न रहे तो विद्या रुके बिना पूर्ण हो।

– जब चन्द्र कायम हो या चन्द्र कायम रखा जाये।

8. विद्या पर किया खर्चा, चाहे अपनी औलाद की या किसी विद्या के साथी की हो, सूद सहित वापिस मिलेगा। यदि चरित्र ठीक तो आयु लम्बी होगी।

– जब केतु उत्तम हो। (उंगलियों की पोरी या पर्वत पर 4 शंख हो)।

9. विद्या का धनी, बह्म ज्ञानी परन्तु धन, भाग्य की शर्त नहीं, हुनरमंद हो। सीप में मोती की तरह वंश में नाम पावे। राजदरबार से धन ही धन का लाभ पावे।

– जब बुध उत्तम या उत्तम सूर्य नं: 10 में हो, (उंगलियों की पोरी में दो चक्र)।

10.नेक प्रसिद्धि, सब को तारने वाला, घर शानदार सब प्रकार के आराम वाला हो।

– जब शनि खाना नं: 2,9,10 में हो (उंगलियों की पोरी पर 4 सीप नेक उर्ध रेखा कायम)।

11.चन्द्र की जानदार वस्तुओं माता, घोड़ी का फल उत्तम हो।

– जब राहु उत्तम हो (पर्वत नं: 2 पर 4 खड़ी रेखा हो) ।

मंदी हालत

उलटी खोटी हवा से खास 34 साल आयु के बाद जब खुदसर होता हुआ मंदे इश्क में हवाई घोड़े चलायेगा तो न सिर्फ खुद बल्कि अपने कुल के नाश का बहाना होगा। बड़ों की आज्ञा मानने से वह तर जायेगा। अपनी अकल की बेलगाम कार्यवाही से बरबादी होगी। अपनी ही बेड़ी डूबो देने वाला मल्लाह, हर तरह से दुखी। राजधानी की बेड़ी में सुराख कर देगा जो नं: 4 के समुद्र, माता के घर या पेट में आते ही गर्क हो जाएगी।

– जब बुध नं: 10 में हो, ऐसा बुध जब कभी वर्ष फल में खाना नं: 4 में आवे, बरबादी का बहाना कर देगा। (11, 23, 34, 48, 55, 71, 75, 85, 97, 119 साल आयु में)।

2. बुरे काम में सदा खुश। शराब, मीट, स्त्रीबाजी मंदी प्रसिद्धि पसंद करने वाला। उसकी आँखो में खराबी होगी और केतु भला न होगा। दृष्टि खराब।

– जब शनि मंदा हो या मंदा कर लिया जावे क्योंकि आमतौर पर वृ: नं: 4 के समय शनि कभी मंदा न होगा पर कर लिया जायेगा। यदि वह सांपो को मरवाये, मकानों को गिरवाये, शराब पीना, या स्त्रियों से यौन संबंध बनाये।

3. सोना, धन खतरे में होंगे। – जब शु:, बु:, रा:, शं:, खाना नं: 10 में हो।

4. चन्द्र की जानदार या बेजान चीजों का फल बरबाद पानी तक जलता होगा। – जब राहु मंदा हो।

5 राजा होता भी फकीर हो जायेगा या दु:ख के समय डर कर जंगल में भाग जायेगा।

– जब केतु मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 5

(मनुष्यता का स्वामी, इज्जत मान वाला, ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला)

धर्म नाम पर मांग, दुनिया जो खाता।
इसासा ही है बेच, अपना वह जाता।।
औलाद कद्र से बुढ़ापा उत्तम, सौदा ईमानी बढ़ता हो।
हाल बड़ों का बेशक कैसा, नसल आयंदा [1] फलता हो।
इसके गुरु के दिन लड़का जन्मे, या कि जन्म शनि 9 हो [2]
लेख सोया भी आ तब जागे, जोड़ी शेरों की बनती हो।
केतु मंदा औलाद हो मंदी, मंदे गुरु ऋण पितृ [3] हो।
च:, सू:, बु: उत्तम पापी [4], लावल्द होता न वह कभी हो।
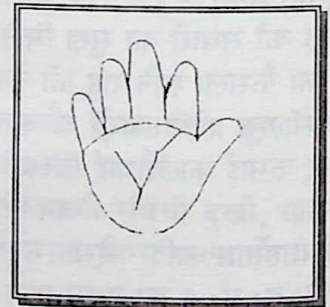
1. यदि खुद पसंद में मानक तो संतान पत्थर में मोती होगी।
2. शनि नं: 9 वर्षफल या जन्मकुंडली में अति उत्तम फल।
3. खाना नं0 2,5,9,11,12 बु:, शु: राहु या पापी।

4. राजा इन्द्र की तरह लोक परलोक का स्वामी, विक्रमादित्य की तरह बुलन्द विशेषकर जब राहु उत्तम हो। हज़ारों का ऑफिसर व सबको आराम देने वाला, नहीं तो भिक्षा के लिए उड़ता साधु।

5. जद्दी जायदाद व मालो दौलत।

हस्त रेखा

पांच सीप, 5 चक्र या 5 रेखा तमाम उंगलियों में। सेहत रेखा नीचे जाकर भाग्य रेखा के आरम्भ में मिल जाती हो।

वृः नं: 5 के समय बुः की जैसी हालत होगी वृः के प्रभाव में वैसे ही अच्छे या मंदे चक्कर चल रहे होंगे। नाक ही हर नेक व बद हालत जैसी हो वैसी असर डालेगी ।

क्याफा (नाक)

नाक अगर लंबी, नीचे को झुकी	- बुद्धिमान, धन-मान प्राप्त
तोते की चोंच की भांति,पश्तों में एक	- परहेजगार
छोटी नाक	- धर्मात्मा
लम्बी व चौड़ी	- मेहनती मगर छुपाकर काम करने वाला
लम्बी व पतली नाक	- बहादुर
बहुत लम्बी नाक	- एय्याश, लज्जाहीन व गरीब
गोल बड़ी मोटी नाक	- नेक व्यवहार करने वाला
छोटी व चपटी नाक	- नेक व शाहाना स्वभाव
मुंह की तरफ झुकी नाक	- संभोग पसन्द
मोटी, छोटी, बैठी हुई नाक	- कम अक्ल, काम काज में परेशानी
बारीक नाक	- नेक तबीयत मगर अकल कम
मध्यम आकार मगर अंदर को झुकी	- कम अकल व गरीब
बीच में चौड़ी सिरे से तंग या बीच में बैठी हुई।	- बदनसीब, मनहूस
बीच में ऊंची और सिरे से तंग	- धनवान
बहुत छोटी	- बुरी अकल, धोखेबाज

नेक हालत

बढ़े जितनी संतान, भाग्य हो बढ़ता। अकल जोर संसार, न कुछ काम करता।

अपने भाग्य का उत्तम प्रभाव अपनी सब संतान से होगा। ईमानदारी के काम, व्यापार, सांसारिक धंधा बढ़ता रहेगा। जवानी में संतान की आवश्यकता को मानते हुए उनकी कदर करने से बुढ़ापा उत्तम होगा। वीरवार को लड़के के जन्म से पिता पुत्र भाग्य के मैदान में दो शेरों की भान्ति हो जायेंगे। ऐसे पुत्र से पहले भाग्य सोया हुआ माना जाएगा। खाना नं0 2,9,11,12 में यदि वृः के मित्र सूर्य, चन्द्र या मंगल बैठे हों तो उनकी सहायता मिलती रहेगी। चाहे ऐसा व्यक्ति गुस्से से हरदम जलने वाला हो मगर पूर्ण ब्रह्म होगा। दिमागी खाना नं: 2 (सूर्य) दूसरों का मान करने वाला अपने कर्तव्य का पूरा पाबन्द होगा। अन्दर बाहर दोनों ओर से उत्तम जातक होगा।

1. बिना औलाद के कभी न होगा। प्रसन्न चित्त, भाग्यवान होगा। – जब सूर्य चन्द्र और पापी उत्तम हो।

2. सरदार या हाकिम, फौज का बड़ा अफसर होगा। जिसके साये में कई प्राणी आराम करते होंगे और उसकी संतान के लिए प्रार्थनाएं करते होंगे। – जब राहु उत्तम (बुर्ज नं: 2 पर 5 बड़े खत)।

3. धन और संतान मंदे न होगें आगे कुल बढ़ता रहेगा। यदि वह घोड़े की लीद में मानिक तो औलाद पत्थर में मोती (परंतु यदि पुरखे निर्धन हो, यह शर्त न होगी)। परन्तु वीरवार को संतान उत्पन्न होने से उनकी समुद्री बेड़ी बड़े-बड़े जहाजों का काम देगी परन्तु आगे संतान होने पर सब प्रकार के दुख नरक धो देगा।

– जब मित्र ग्रह सूः, चंः, मः खाना 9 में हो। (सेहत रेखा पर वृः के खड़े खत या भाग्य रेखा कलाई से निकल कर सेहत रेखा पर जा निकले तो सूर्य नं: 9 होगा, चन्द्र के बुर्ज 4 में जा पहुंचे तो चन्द्र खाना नं0 9 में हो।

4. बाप से लेकर पोते तब सब सुखी हो और वृः नं: 9 का उत्तम फल होगा।

– जब खाना नं0 2,5,9,11,12 में बुः, शुः, शः, राहु न हो (पापी)।

5. शनिवार को पैदा हुए लड़के के जन्म दिन से उत्तम शनि या शनि नं: 9 वृ: नं: 7 की मच्छ रेखा का 60 साला उत्तम प्रभाव होगा परन्तु अब वृ: से संबंधित रिश्तेवाले या कामकाज से कोई लाभ न होगा। - जब शनि नं: 9 में हो या वर्षफल में आ जाये।
6. इज्जत मान बढ़ेगा, वृ: और भी उत्तम हो जायेगा। - जब शनि उत्तम हो।(उंगलियों की पोरी में 5 सीप हों)।

मंदी हालत

1. धर्म के नाम पर मांग कर खाना या दान लेता हो निसंतान होना और बिना कफन मरने की पहिली निशानी होगी। बच्चे मुर्दा पैदा हांगे। - जब केतु नं: 11 में हो।
2. संतान मंदी होगी। - जब केतु मंदा हो।
3. औलाद चाहे मंदी न हो परन्तु वह स्वयं अपना बेड़ा गरक करने वाला नाविक होगा और 25 (शुक्र), 34 (बुध), 42 (राहु), 48 (केतु)36 से 39 साला आयु (शनि) के बाद हालत अच्छी होगी मंदी हालत में जब खाना नं: 5, 9 में केतु न हो तो मामा पर मंदा तूफान चलता होगा अर्थात् जब कभी भी नं: 5 का वृ: वर्षफल में बरबाद हो तो उसका बुरा प्रभाव सदा मामा या मामा की संतान पर होगा और स्वयं जातक पर कोई प्रभाव न होगा। ऐसे समय केतु का उपाय लाभदायक है।
- जब खाना 2,5,9,11,12 में शत्रु ग्रह - बु:, शु:, श:, रा:, हो (बुर्ज नं: 2 पर 5 खड़े खत)।
4. वृ: चुप रहेगा मगर गुम न होगा। - जब राहु नं: 9 में हो।
5. भिक्षा के लिए दौड़ता साधु, मंदी हवा के झोंके, सब और तंगी ही तंगी होगी। -जब रा: मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 6

मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव

मुफ्त रोटी[1] गो तुझको हर दम मिलेगी, मगर माया तो ढूंढनी पडेगी ।
मानसरोवर बाप का उत्तम, शर्त कोई न अपनी हो ।
हालत शनि पर फैसला होगा , राजा गुरु या निर्धनी हो ।
5,12,9 उत्तम दूजा, गुरु होता स्वयं चन्द्र हो[2] ।
खैरायत बड़ों के नाम पर बढता, राजसभा चाहे मंदिर हो ।
अकेले गुरु बुध केतु फलता, भला चलन जब तक हो ।
उलट मुकद्दर चक्कर[3] चलता, खाक भरा सब मस्तक हो ।
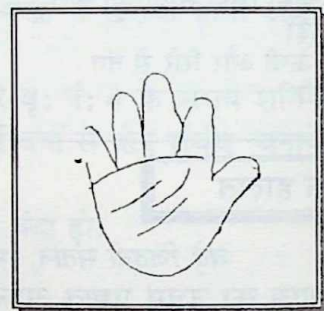
अब वृ0 हमेशा राशि फल का होगा ।

1 खाना नं0 2, 5, 9, 11, 12 में बु0 , शु0 , रा0 , श0 , ना हो।
2 वृ0 अब चन्द्र नं0 2 का फल देगा जिसमें बु0 केतु का उत्तम प्रभाव होगा शर्त यह है कि दृष्टि खाली हो नं0 2 से, माता बुध, खानदान की उन्नति होगी ।
3 बुध मंदा, बुरे दिन हो, केतु मंदा, फकीरी का नशा ।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा की जड़ में केतु का चिन्ह या खाना नं0 6 में वृ0 से शाखहाथ की लम्बाई से समाप्त हो। उंगलियों की पोरी में छः चक्र हों ।

नेक हालत

हर चीज बिना मांगे मिले । अपना भाग्य दोहते, भान्जे या मामा के घर के प्रभाव से उत्पन्न होगा। बड़ों के नाम का खैरायत करना अपने भाग्य की नींव होगी, जिससे अव्वल खबीश (खुद पसंद) बाद दरवेश की हद बंदी सहायक होगी । उसका पिता जब तक रहेगा, दाता होगा तो पूरे मान का मालिक होगा मगर टर्राने वाला मेंढक ना होगा । फिर भी होगा तो धन की वर्षा का स्वामी या सोने की खानों में रहने वाला होगा । मृत्यु समय पर उस समय सब ओर से सुखी होगा । लेकिन टेवे वाले के साथ ऐसा होने की शर्त न होगी, यदि ऐसा न हो तो पिता छोटी आयु में चल दे जो कि आवश्यक नहीं कि जल्दी ही हो । मुफ्तखोर यह आदमी ऐशी पट्ठा होगा । साधारण जीवन का स्वामी दिमागी खाना 18 (केतु) जिस दिन से संतान हो और व्यापार आदि का साथ होने पर फोकी उम्मीद का मालिक होगा। अपना भाग्य राजा या फकीर की हालत का फैंसला(धन की हालत) शनि की नेक या बद हालत पर

होगा। मामा तरफ के सब प्रसन्न होंगे (परन्तु मामा या उसके घर के) जातक के लिए 40 वर्ष की आयु तक बिना अर्थ के होंगे या शत्रु होंगे ।

1. चन्द्र नं0 6 का फल और बुध केतु(मान रेखा) के उत्तम फल होंगे । (लड़के) केतु की चीजें रिश्तेदार या कार्य (गणेश जी के चूहे बहुत छोटी हैसियत)से स्वयं श्री गणेश जी (जिसको संसार पूजता है) और लड़कियां गरुड़ भगवान् (बड़ी उत्तम हस्ती) की तरह हों, मान के जीवन का स्वामी होगा । -जब 2, 5, 9, 12 में बु0, शु0, श0, रा0 न हों मित्र ग्रह चाहे हों और खाना नं0 2 से दृष्टि भी खाली हो हर ओर से बरी और अकेला वृ0 हो (बुर्ज नं0 2 में शाखा बुर्ज नं0 6 पर चली जावे) ।

2. ऐसे व्यक्ति को रोटी के लिए मेहनत करने की आवश्यकता न होगी । यदि उसके पास हजारों मेहमान आ जायें तो रोटी दे सकता है परन्तु नकद माया के लिए मारा मारा फिरेगा । कमाने का अवसर आयेगा नहीं, ना ही काम करेगा ।

-जब खाना नं0 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु0, शु0, श0, रा0 न हों, खाना नं02 से दृष्टि खाली हो या न हो (उंगलियों की पोरी पर खड़े खत कितने ही हों) ।

3 ऐशी पट्ठा (नेक अर्थों में) मतलब परस्त होगा । -जब बुध उत्तम हो (उंगलियों की पोरियों पर 6 चक्र हों) ।

4 चाल चलन नेक होने पर मामा और संबंधि प्रसन्न होंगे और टेवे वाला स्वयं प्रसन्न जीवन का स्वामी होगा। मगर उसके मामा उसके लिए 40 वर्ष तक बिना अर्थ के होंगे । -जब केतु उत्तम हो (भाग्य रेखा की जड़ पर केतु का चिन्ह) ।

मंदी हालत

1 34 वर्ष की आयु तक उल्टा चक्र चलता रहे, मंद भाग्यता देखने को मिले भाग्य की मार का मुकाबला करे।

-जब बुध मंदा हो ।

2 जब हाथ में प्याला लिए फकीरों की तरह रोजी के लिए सर्द आहों से मर रहा हो । मंदे समय केतु का उपाय लाभ देगा ।

-जब केतु मंदा हो ।

वृहस्पति खाना नं0 7

(पिछले जन्म का साधु जाा जनम से परन्तु जंगल में तप के लिये नहीं गया और गृहस्थ नं0 7 राजा जनक की तरह संन्यासी साधु (वृ0) जो माया (शु0) में होता हुआ लक्ष्मी(शु0)को सांस की हवा (वृ0) की तरह जानने वाला, चुपचाप शांत परिवार का गुरु होगा।)

पुरुष के टेवे की हालत में घर में कुत्ते से भी कम कीमत, निर्धन साधु परन्तु स्त्री के टेवे में संतान तथा धन किसी बात के लिए मंदा न होगा ।

धर्म माला थैली, न परिवार देगी ।
बड़ी शान शौकत, बिलाहर्ष देगी ।
संतान बेकदरी[1] गौर न करता, मदद भाई न हुकूमत हो ।
वक्त बुढ़ापा हो सुख किसका, ज्ञानी[2] तरसता धन को हो ।
9वें शनि 7 हो मच्छ रेखा, रिज़क चन्द्र खुद देता हो ।
घर से बाहर क्यों दौड़े फिरता, मरना लिखा हो घर में जो ।
तख्त साथी या घर गुरु बैठा, मंदा शुक्र[3] या शत्रु हो ।
11 शनि, बुध 6,2,12, दत्तक मरे[4] औलाद नहीं हो ।

1. नर औलाद से दुःखी, प्राय दुःखी ।
2. सू0 नं0 1 हो तो कई प्रकार के हाथ के काम जानने वाला तथा ज्योतिषी होगा मगर धन की अधिकता की शर्त न होगी ।
3. स्त्री स्वयं सुन्दर व सुख देने वाली देवी होगी मगर धन की कमी से मिट्टी में मिली होगी ।
4. नं0 2,5,9,12 में बुध शु0 , श0 , रा0 विशेष कर शुक्र मंदा तो संतान बरबाद परन्तु जब 2,6,11,12 में बु0, श0 तो स्वयं बरबाद ।

हस्त रेखा

3 चक्र, 3 शंख, 3 सीप, 3 खत, 6 खत, 4 चक्र या 5 शंख या शुक्र का वृ0 हो यानि वृ0 का बुर्ज बहुत बड़ा हो या नरम हाथ का वृ0 होवे, संतान रेखा शादी रेखा को काटे । भाग्य रेखा की जड़ पर बुध का चक्र । शुक्र के पर्वत पर भाईयों की रेखा लम्बी और टेढ़ी हो । सर रेखा आयु रेखा लम्बी और टेढ़ी हो । सर रेखा आयु रेखा से अलग होकर वृ0 के पर्वत को जाये ।

नेक हालत

धर्म कार्य में मुखिया व धनी । धर्म का झंडा हर समय हाथ में होगा अपना भाग्य, मॉसल शक्ति या स्त्री जाति से बटेगा। अपनी सारी शक्तियाँ धन की हालत चन्द्र की अच्छी या बुरी हालत पर निर्भर होंगी । प्यार असल नींव होगा। परदेश की जायदादों की तरफ क्यों भागे जब मरना घर में हो । यात्रा से जीवन सुखी और वह सफर मे कभी भी न मरे । यदि वहां मर भी जाये तो उसकी लाश अपने ही पैतृक मकान में आएगी । स्त्री के दहेज का सामान भाग्य बढ़ाऐगा । वह एक कामयाब मुसाफिर होगा और सहायक होगा, मगर स्वयं 34 साल की आयु तक आराम, धन संतान की ओर से आग लगी होगी, परेशान रहेगा । 34 साल या 45 साल की आयु में लड़का होगा, वह पिछले सब दु:खों को दूर कर देगा अंतिम समय वह कर्ज छोड़कर न मरेगा, न ही संतान हीन होगा ।

1. बड़ा परिवार और धन के भंडार यदि शनि के स्वभाव का (चालाकी) का स्वामी हो ।

-जब श0 नं0 7-9 में हो ।

2. पूजा पाठी, तपस्वी पर धन की अच्छाई की शर्त नहीं । -जब केतु उत्तम हो (उंगलियों की पोरी में 5 शंख) ।

3. वृ0 और बु0 दोनों का फल उत्तम होगा ।

-जब बुध उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत) ।

4. आराम से भरा जीवन विशेष कर जवानी का ।

-जब राहु उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत) ।

5. ज्योतिष और संसार के भेद जानने वाला अनुभवी । आराम पसंद ज्यादा, धन की शर्त नहीं ।

-जब सू0 खाना नं01 में हो (बुध के बुर्ज पर सूर्य की और वृ0 का चिन्ह चक्र, शंख, सीप हो) ।

6. अपने पुरखों का ठाठ बाठ शाहना करे चाहे अपने लिए धन की शर्त नहीं, परन्तु धर्म कार्यों में प्रसिद्ध होगा और धर्म का दीवाना होगा ।

-जब खाना नं0 1, 2, 5, 9, 12 में वृ0 के मित्र ग्रह (सू0, चं0, मं0) हों ।

मंदी हालत

लड़की के टेवे मे कभी मंदा न होगा मगर लड़के के टेवे में अपना लड़का तो क्या अपना दत्तक पुत्र भी न रहेगा । अच्छा यही है कि धर्म की खातिर संतान न बेचे, नहीं तो बुढ़ापे में पछतायेगा ।

रखा घर में मंदिर, न परिवार देगा ।
बचे लड़का जब, तो वह मिट्टी करेगा ।

1. विधवा बहन, बुआ, मंदे राग रंग का शौक पहिली मंदी निशानी है । निर्धनी और मंदे ही हाल मे होगा । चोर डाकू ठग भी हो सकता है । जरुरत के समय कुछ भी न मिले । अवारा साधु का साथ या शहर दर शहर धर्म प्रचार करते फिरना मंदा फल देगा ।

-जब मंगल बद हो । (मंदे बुध का संबंध हो) (उंगलियों की पोरीयों पर चार चक्र) ।

2. दूसरो को चाहे सोना तोल-तोल कर मुफ्त दे अपने पेट के लिए मेहनत करनी ही होगी । लाखोंपति होता हुआ भी स्वयं मेंहनत करके ही रोटी मिलेगी ।

-जब खाना नं0 1 खाली हो (सोया वृ0) (उंगलियों के पोरियों पर लेटे खत निशान) ।

3. न ही भाई सहायक न ही राजदरबार में अच्छी जगह, (पद आदि) मिले।

-जब वृ: स्वयं खाना 7 में मंदा हो रहा हो। (शुक्र के बुर्ज नं: 7 पर लम्बी पर टेढ़ी लकीरें)।

4. जवानी में ज्ञान की तरफ भागता और संतान की परवाह नहीं करता था, बुढ़ापे में सुख और धन कहां ऐ आए। तरसना पड़ेगा।

-जब मंगल बद हो (बुध का संबंध)

5. संतान बरबाद विशेषकर जब शुक्र मंदा हो। दत्तक पुत्र भी मरे। ससुराल , बाप या दादे को दमा हो। मिट्टी का माधो। चने की रोटी का तवे पर हाल हो। सोने की जगह हर और मिट्टी और वह भी उड़ने लगे।

- जब खाना नं: 1,2,5,9,12,7 में बु:, शु:, रा:, श: पापी हो (वृ: रेखा शादी रेखा को काटे या बुध के पर्वत पर वृ: के सीधे खड़े खत।

6. पुत्र के लिए तरसता रहेगा जो 45 साल में होगा। परन्तु उससे वह खुद बरबाद हो जायेगा। दत्तक पुत्र भी दुखी हो।

-जब श: या बु: खाना नं0 2, 6, 12 में हो।

7. जुब्रान का थथलापन, आयु, किस्मत या धर्म सभी मंदे। जन्म में भेद हो।

– जब शनि या बुध खाना नं: 9-11 में हो और मंदे हों। (भाग्य रेखा की जड़ में गोल दायरा)

उपाय

मंदी हालत की निशानी घर में रत्तियाँ या लाल रंग व मंगल बद की चीजें होंगी। रत्तियाँ जो सोना तोलने के काम आए। यदि इनको पीले कपड़े या सोने के साथ रख दिया जाए तो सहायता भी हो जायेगी। मंदी हालत में चन्द्र का उपाय सहायक होगा।

वृहस्पति खाना नं: 8

(मुसीबत के समय परमात्मा की मदद का मालिक, हर बला से बचाने वाला घर का पुरखा, श्मशान का साधु जिस का सर राख से भर चुका होगा।)

बड़ों का हो साथ, जब रात करता।
धन, सोना, माया, आयु सब बढ़ता।

उड़े खोपड़ी फिर भी[1] जिंदा, साथ फकीरी न देगा।
आठ बाबा न बेशक बैठा, भेद छुपा बतला देगा[2]।
बैठे शुक्र घर 2,6 साथी, संतान रहित वह न होगा।
दान सोने की लंका अपनी, शिवजी रावण को कर देगा।
बुध मंगल बद[5] पापी मंदा, कब्र वीराने कर देगा[4]।
श0 मं0 7,4 जा बैठा, राख खजाना भर देगा।
जिस्म पर सोना कायम रखे, दुखिया कभी वह न होगा।
बु0, राहु, ऋण पितृ[3] टेवे, आयु शक्की तब पालेगा।
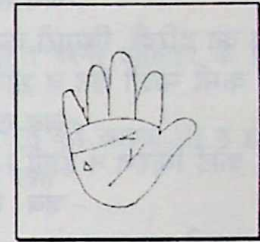
1. जब नं0 2-4 उत्तम हो।
2. जब चं0 उत्तम और खाना नं0 2, 5, 9, 12 उत्तम।
3. खाना नं0 2, 5, 9, 12 में बु0, शु0, या राहु।
4. वृ0 या शु0 की चीजें धर्म स्थान में देना मुबारक होगा।
5. काला, काना, संतान रहित टेवे में मंगल बद लेते हैं।

हस्त रेखा

2 शंख, 8 सीधे खत, गृहस्थ रेखा सीधी हो, 8 या 11 चक्र या 6 उंगलियां हों, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिले। वृ0 का पर्वत बिल्कुल न हो। हाथ पर त्रिकोण हो। भाग्य रेखा की जड़ पर त्रिकोण हो।

नेक हालत

स्वयं धनवान हो या न हो मगर संसार के सब सुःख उसके पास होंगे। दुःख के समय परमात्मा की सहायता मिलेगी। सांच को आंच नहीं, वरना स्वयं आग जले की तोल का आदी हो। अपना भाग्य परमात्मा और आत्मिक शक्ति से बनाए। जब तक शरीर पर सोना रहे दुःखी न हो। स्वास्थ्य मंदा न होगा। संसार में दमकता सोना होगा। किसी का मोहताज न होगा। फकीर या लंगोटबंध साधू न होगा। बाबा की आयु 80 वर्ष से कम न होगी। परन्तु टेवे वाला और उसका बाबा कभी एक साथ न होगा। घर के सभी व्यक्तियों की लम्बी आयु का पट्टा लिख देगा, अपने भाग्य को जाने न जाने मगर छुपे भेद को समय से पहिले ही बता देगा। जब तक उपस्थित रहेगा मरने वाले के प्राण नहीं निकलेंगे। हो सकता है कि बाबा उसके पैदा होन से पहले ही चल पड़े या 8 वर्ष की आयु में ऐसा हो जाये, नहीं तो बाबा की आयु 80 वर्ष होगी।

1. भाग्य को जगाने का स्वामी, सिर धड़ से उतर जाने तक साथ देगा। वीरान जंगल में सब कुछ खोकर शरीर के कपड़े तक गवां कर जहां पर भी बैठेगा वहां ही हरियाली और साने की खाने, धन को ढूंढ़ लेगा। स्वास्थ्य धन परिवार से कभी दुःखी न होगा।

–जब खाना नं0 2, 4 उत्तम हों।

2. हर ओर सोना ही सोना, भरे भंडार, छुपे भेद बतलाने की हिम्मत, आयु लम्बी होगी।

–जब चन्द्र उत्तम हो और खाना नं0 2, 5, 9, 12 उत्तम हों।

3. कभी संतान रहित न होगा पुत्र 6 तक होगें अपनी और सबकी आयु लंबी होगी। –जब शु0 खाना नं 2, 6, 8 में हो।

4. खानदान की लंबी आयु का ठेकेदार होगा खासकर अपनी और बाप की । -जब बुध नं0 9 में न हो ।

5. शिवजी (चन्द्र) अपनी दयालुता से रावण गुरु (वृ0) को सोने की लंका दान कर देने की शक्ति देगा । मरते को पानी और दुखिया के आंसू पोंछने वाला धर्मवीर होगा । -जब मंगल नेक हो या मं0 खाना नं0 2 से शुभ संबंध हो ।

मंदी हालत

1. कब्र, वीराने ओर खजाने राख से भर देगा । जमाने की हवा को मौत के खूनी तूफान से गुजा देगा ।
   -जब या0 या मं0 खाना नं0 4, 7 में हो।
2. गंदा बदनाम आशिक होगा । -जब वृ0 मंदा या शत्रु से घिरा हो (हाथ पर बुर्ज नं0 2 नीचा हो)।
3. आय ठीक होते हुये भी कर्जई, स्वास्थ्य, धन दोनों मंदे, उल्लू की तरह जिस जगह बैठे वहां ही सब्जबाग कदमा साबित हो और स्वयं श्मशान की खाक सिर में डाले और खून जले साधू की भांति होगा ।
   -जब मंगल मंदा या बद हो (दिल रेखा पर मंगल बंद त्रिकोण < > /\ /\ निशान हो, गृहस्थी रेखा सीधी खड़ी हो या पर्वत नं0 2 या 4 पर मं0 बंद के निशान हों) ।
4. बार-बार जन्म लेने का दु:ख भोगे और आयु कम ही होगी
   -जब खाना नं0 2, 5, 9, 12 में बु0 , शु0 , रा0 , श0 पापी होकर बैठे हों
5. छोटे दिल का दरिद्री, बिमारी का भंडार, बैठे बिठाय मुसीबत खड़ी कर ले । -जब बुध मंदा हो ।
6. खून की कमी माली धन व शारीरिक हैरानी से भरा होगा ।
   -जब खाना नं0 12 खाली हो (हाथ की उंगलियों के नाखून पीले) ।
7. भाग्य की कोई किरण न होगी ।
   -जब सूर्य अच्छी हालत में न हो (भाग्य रेखा सू0 रेखा से न मिले) ।

8 जीवन खानापूरी का नाम हो ।
   -जब राहु मंदा हो (बुर्ज नं0 2 पर सात खड़े खत) ।

9 निर्धन, कम दिल वाला, दरिद्री हो।
   -जब केतु मंदा हो (उंगलियों की पारियों पर दो शंख) ।

10 पक्का इरादा, स्वतंत्र विचार, बढ़ने का विचार, उत्साह भरी उम्मीद, सब बातों से उल्ट प्रभाव हो ।
   -जब (शनि प्रबल हो वृ0 से) तर्जनी मध्यमा की तरफ झुके ।

उपाय -

मंदे समय में वृ0 या शु0 की वस्तुऐं धर्म स्थान में देना लाभदायक होगा ।

वृहस्पति खाना नं0 9

(सुनहरी खानदान मगर स्वयं धन का त्यागी और योगी जिसके धर्म मर्यादा और बुजुर्गी साया सहायता पर होगी)।

माया छोड़ संसार की, न धर्म बनता ।
धर्म स्वयं उल्लंघन, सभी कुछ ही जलता ।
धन की थैली पांच तीजे[3], योग पालन 12 हो[1] ।
माया धन मूत्र समझे, फोका पानी गंगा[2] हो ।
पांच चौथे बु0 बैठा, राजा योगी होता हो ।
पापी शत्रु पांचवें आया, बेटे[4] दुखिया मरता है ।
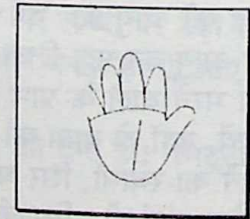
1. खाना नं0 2, 5, 9, 11 में बु0 , शु0 या पापी ग्रह न हों । 2. धन, परिवार, गंगानद।
3. जब 3, 5 दोनों खाली तो माया उसके पीछे दौड़े और जब सूर्य उत्तम हो तो कभी धर्महीन न होगा ।
4. पहिली निशानी धर्महीनता व खुद पसंदी होगी, पर जब नं0 1 खाली हो तो स्वास्थ्य मंदा और दिल की बिमारियां हों ।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा सीधी डंडे की तरह खड़ी होवे ।

नेक हालत

अपना भाग्य पुरखों की सहायता या धर्म से बढ़ेगा। प्राण जाये पर वचन न जाये का कायल, वचन से धर्म और धर्म से धन पाये, हारे नहीं, ज्यों-ज्यों आयु बढे योगी, ब्रह्मज्ञानी होता जाए, आयु कम से कम 75 साल होगी। जन्म समय उसके बड़े मालदार होंगे, जमीन के मालिक होंगे। रूपया गिनने की बजाय तोले जायें। चाहे स्वयं त्यागी होगा और योगी भी मगर उसका शाप भी शुभ फल देगा। उसका और उसको फोका पानी भी गंगा जल की तरह होगा (यानि गंग-दरिया, आल-औलाद), धन-दौलत की आमदनी व बरकत होगी। माता-पिता का सुःख, घर वाले रास्ता दिखाऐं। हकीमी जानता हो, चाल-चलन उत्तम हो। शराब न पीता हो, परहेजगारी। सर्राफ, जौहरी कमाल का होगा। रूहानी धर्म-कर्म सदा ऊंचा होगा। दिमागी खाना नं0 9 (वृ0) का उत्तम फल। धन ही हालत खाना नं0 3, 5 से पता चलेगी, यदि दोनों खाली तो मेहनत से अमीर हो जायेगा परन्तु सख्त प्रयत्न से सफल होगा।

1. प्राणों और वचनों का पालन करेगा। योग पालन वह करता हो। जगत् धर्म में पक्का। योग पालन की अच्छी या बुरी हालत खाना नं0 12 के ग्रहों पर होगी। -जब खाना 2, 5, 9, 11 में शत्रु ग्रह बु0, शु0, श0, रा0 न हो।
2. राजा होते हुए भी योगी होगा। -जब बु0 खाना नं0 4, 5 में हो।
3. कभी धर्महीन न होगा, यदि होगा तो संसार में न रहेगा, दुनिया में सफल हो, स्वास्थ्य उत्तम सफलता मिले, चाहे वृ0 मंदा ही हो जाये। -जब सूर्य कायम हो।
4. धन के लिए भाग्य शनि की आयु (33-39) (साढ़े 16-साढ़े 19) से गिनी जायेगी, धन बहुत परन्तु औलाद के लिए शनि का फल मंदा होगा। -जब शनि नं0 5 में हो।
5. कभी शाह, कभी गरीब, कभी फकीर मलंग, कभी अमीरी के ठाठे, कभी गरीबी के समुद्र की रेत की चमक भी न होगी।
 -जब शु0 और चं0 दोनों ही खाना नं0 3, 5 से देखें (वृ0 के खड़े खत बुर्ज नं0 4 या 7 पर हों (खाना नं0 9 की हदबंदी पर हो)।
6. वृ0 का प्रभाव तीन गुणा हो जाए और जो नर ग्रह नं0 3, 5 से देखता हो उससे संबंधित प्रभाव भी पक्का हो जाए। प्रमाण यदि उसके जन्म से पहिले रूपया गिन -गिन कर प्रयोग किये जाते हों तो बाद में तराजू से तोल कर प्रयोग किये जायेंगें अर्थात् धन के ढेर लग जाये। - जब नर ग्रह खाना नं0 3, 5 से देखे।

मंदी हालत

1. निर्धन, नास्तिक धर्म को छोड़ जाये परन्तु नर्धनता कारण न हो।
 - जब दृष्टि आदि से वृ0 की हालत मंदी हो।
2. हर समय अपने आप खुदगर्ज खुद पसंदी का तूफान ज़ोरो पर हो, औलाद मंदी, बेटे से दुखी होकर मर जाता हो, पहली निशानी धर्महीनता होगी।
 - जब शत्रु बु0, शु0, श0, रा0, पापी खाना नं0 5 में हो।
3. सेहत मंदी दिल की बिमारी हो।
 - जब खाना नं: 1 खाली हो (उंगलियों के नाखूनों का रंग पीला)।
4. अपने भाग्य के लिए दुनिया के विरुद्ध आप ही मेहनत करनी होगी।
 - जब खाना नं: 3, 5 दोनों खाली (भाग्य रेखा अकेले डंडे की तरह खड़ी हो)।
5. कम आयु, मंद भाग्य बल्कि मंगल बद का बुरा प्रभाव होगा।
 - जब बुध मंदा हो (उंगलियों की पोरीयों पर 11 चक्र हो)।

वृहस्पति खाना नं: 10

(पहाड़ी इलाके का गृहस्थी, हर वस्तु के लिए कलपता दरवेश)

लिखा माया दौलत न था जो विधाता।

बनाएगा क्या तू यह आँसू बहाता।

खवाबी महल[1] न कीमत अपनी,	*ना ही पिता धन छोड़ता हो।*
लेख मंदा चाहे अकल सयानी,	*सिर्फ शनि[2] ही तारता हो।*
रहम लालच शनि चन्द्र[3] चौथे,	*राख सोने [4] की होती हो।*
शु0, मं0 जब चौथे बैठे,	*रवि से सोना [5] खुद देती हो।*
10 वें घर का नीच वृहस्पति [6],	*रवि से सोना करता हो।*
शनि का गिरदां पहरा होवे,	*हर दो चूल्हे धरता [7] हो।*
रवि मगर खुद जला जलाया,	*मदद चन्द्र की पाता हो।*
शनि ने हो जो पत्थर फूकें,	*लाल रवि कर देता हो।*
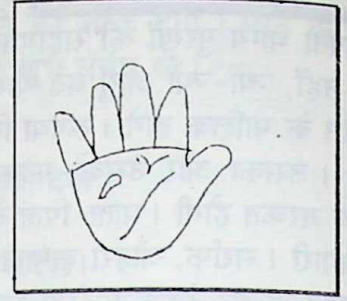
1. नाक साफ रखना मदद देगा।
2. शनि 11 तांबा भी सोना हो विशेषकर जब खाना नं0 2, 4, 5, 6 में सूर्य या चन्द्र कायम हो। शनि के काम, जब खाना नं0 2, 4, 5, 6 सब खाली हो तो मंद भागी, नं0 2 खाली, कम धन उत्तम स्वास्थ्य।
3. शनि नं0 4-6 हो तो 18 वर्ष की आयु में पिता का जीवन शक्की है, चं0 नं0 4 हो तो माता 16 से 27 वर्ष की आयु में शक्की होगी।
4. वृ0 कायम करना, केतु का उपाय चलते पानी में तांबे का पैसा बहाना, बहाते रहना सहायक होगा।
5. जब 4 में शः, चः, बुः या नं: 5 में सूर्य हो तो शुः का फल (संतान धन, स्त्री) बरबाद।
6. सूर्य नं: 4 में हो।
7. शनि नं: 10 में हो।

हस्त रेखा

सूर्य के बुर्ज बुध की ओर एक सीप, 10 चक्कर या आयु रेखा चन्द्र पर समाप्त हो यानी पितृ रेखा बनी हो। वृः और शः के बुर्ज दोशाखी रेखा से मिले।

नेक हालत

अपने भाग्य का उदय, शारीरिक कार्य (हाथ से करने वाले) से होगा। जिस कदर कर्मी-धर्मी और नेकी करने वाला हो उतना ही गरीब, उतना ही दुखिया और हर ओर से निराश फोकी उम्मीदें। न मिले राम ना माया, लालच की मंदी हवा हो। जिस कदर चालाक हो आराम पाये। परन्तु इश्क बदकारी धोखा ही देगी। धन न होते हुए भी अकल का धनी हो। भाग्य का उन्नत या नीच होना और टेवे वाले को माता-पिता का सुख, शनि की अच्छी बुरी हालत पर चलेगा।

जब शनि उत्तम हो, और खाना नं0 5, 6 में सूर्य या चन्द्र कायम हो तो वृहस्पति (का मकान) सेहन, मकान के किसी भी एक तरफ परन्तु बीच में नहीं या धर्म स्थान का साथ नेक शनि का काम देगा। शनि की तबीयत चालाकी कामयाबी का भेद होगी। मामूली गोल लोहा उसके लिए सोने का काम देगा। स्वयं भाग्यवान होगा। शनि के काम उत्तम होगें, सहायक होगें। सांसारिक सुख कार्य, माता-पिता का सुख लम्बा नेक रहेगा।

1. मिट्टी भी सोना देगी, अगर इश्क चोरी छुपा कर न रखेगा। स्त्रियां बेशक 2 या कई हों परन्तु अपनी बना कर रखी हुई हों तो कोई मंदा प्रभाव न होगा। - जब मंगल या शुः खाना नं: 4 में हो ।
2. माता-पिता का सुख सागर जैसा शनि वैसा होगा। शनि उत्तम तो 33 से 39 साल में से भाग्यवान और उल्टी हवा के चक्कर में धूमना पड़ेगा।

   - शनि की हालत पर फैसला होगा (आयु रेखा चन्द्र के बुर्ज पर खत्म हो या पितृ रेखा बन रही हो।)
3. वृः अब नीच न होगा, उत्तम हो जाएगा, सोना होगा, जले हुए पत्थर से भी सोना बन जाए।

   - जब सूर्य नं: 4 में हो।
4. मंगल की चीजें व रिश्तेदार, कार्य, भाई की मदद या उसके साथ शुभ संबंध रखने से 28 साल की आयु में उत्तम हालत का स्वामी और सब के पूजने की जगह होगा। - जब मंगल खाना नं: 4 में हो।
5. घर घाट में पूरी बरकत होगी। - जब शः खाना नं: 2 में हो।
6. सोने-चांदी के कार्यो से फायदा, मगर शनि के कार्यो से हानि, आग की मंदी घटनाएं हों।

   - जब सूर्य खाना नं: 3, 5 हो और शः नं: 9 हो।
7. राजदरबार के कार्यों में धूमना, उनसे मोती पैदा हों और नेक हों।

- जब सू: या चं: खाना नं: 2 में हो।

8. टेवे का बुरा असर, टेवे वाले के बाप की निर्धन और बेटे की माली सहायता चाहे जीवन में, चाहे मरने के बाद अगर कभी कोई हो तो सब बाबे पर होगा। बाप पर बुरा असर न होगा ।

- जब सूर्य खाना नं0 1, 4, 5 पर हो ।

9. संतान लड़के ही लड़के, तांबा भी सोना हो जाये । खुशहाल होगा, उत्तरदायित्त्व पूर्ण होगा ।

- जब बुध उत्तम और वृ0 को बरबाद न करता हो (उंगलियों की पोरियों पर 10 चक्कर हों)।

मंदी हालत

ऐसा मनुष्य स्वयं धर्म मर्यादा मगर निर्धन, ज्यूं-ज्यूं नेकी बढ़े निर्धनता बढ़े। जमाना इसका शुद्ध तेल भी पिशाब के बराबर भी न माने । बचपन बढ़ापा दोनों मंदे। पिता भी निर्धन होगा। मरते समय कोई धन हीं छोड़ कर मरेगा । न कभी अच्छी हालत देखने को आएगी। ख्वाब चाहे महलों के, घर पर चारपाई को बीमार पशु के तबेले में ही देखता हो। आरजू पूरी न हो ।

उपाय

(1) गाये और पगड़ी पर पीले केसर का तिलक लगाना और नाक साफ करके काम शुरु करना सहायक सिद्ध होगा।

(2) पिता की हालत सुधार के लिए 40-43 दिन चलते पानी में तांबे का पैसा बहाना सहायक होगा।

(3) वृ0 नं0 10 में मंदा हो, वृ0 को सोने को कोढ़ होगा, हर तरफ लानत मलायत मिले। हर दरवाजे का मंदा मायूस दरवेश हो।

1. फालतू खर्च बदी का सहायक। जाहिल सम्प्रदायिक होगा। हर बात का फैंसला उसके उलट होगा।

-जब शनि मंदा हो (सूर्य के बुर्ज पर बु0 की ओर एक संदफ हो)।

2. गरब पर तरस खाकर जब कभी भी अच्छा काम करे दंड़ भोगे। अपनी जान पर दूसरों के जुल्म देखे यदि किसी को भूल कर भोजन दे तो जहर के इल्जाम में पकड़ा जाए।

-जब शनि खाना नं0 4, 10 , 1 या चं0 खाना नं0 4 में हो ।

3. सोना राख हो जाए, दिल में भलाई सोचने से सांस में जहर भर जाए (केतु कायम करना या वृ0 कायम रखना सहायक होगा)।- जब केतु बरबाद हो।

4. सब ओर मंदी हालत, न मान मिले न माल, निर्धनता में कुत्ते की तरह थोड़ी रोटी को भी तरसता रहे।

- जब श0 खाना नं0 1, 4, 10 में हो ।

5. माया कोसो दूर भागे, परन्तु ईश्वर से डरने वाला, स्वास्थ्य अच्छा रहे, माली हालत नाज़ुक (खराब अर्थ में)।

-जब सिर्फ खाना नं0 2 खाली (हाथ के नाखून पतले झुके और टेड़े हों)।

6. मंद भाग्य परिवार में अकेला । अपनी मेहनत से कामयाब आयु को कोई भी सहायता न देगा।

-जब खाना 2, 4, 5, 6 सभी खाली हो (भाग्य रेखा उमर रेखा से अलग डंडे की तरह गुरू हो)

7. स्त्री पर स्त्री मरे या लम्बा साथ न दे, एक बच्चा देकर भाग जाए या अलग हो जाये। - जब सूर्य नं0 5 में हो।

8. पिता के लिए निर्धनता का अलार्म होगा। टेवे वाले की छोटी आयु में अप्राकृतिक खून के जहर के प्रभाव से मर जाये। धन की हालत थोथा चना बाजे घना सा हो। लोक कहे इसके विवाह के लिए जब कि वह 34 साला आयु तक अंदर से खाली ढोल हो जाये। (नाक साफ रखना और नाक छेदन करना सहायक होगा) - जब बु: खाना 4,9,10 में हो।

9. शनि के कार्य या चीजें या संबंधी शनि की मंदी घटनाएं, आग जहर, झगड़े फसाद आदि के बुरे परिणाम होगें।

- जब सूर्य खाना 3,5 और शनि खाना नं: 9 में हो।

10. स्त्री लक्ष्मी, संतान, सफर सभी मंदे, चोरी हो सकती है। - जब खाना नं 5,4,9 में सू:, श:, या बु हो।

11. जिसका संबंध हो उसका भी बेड़ा ग़रक करे। मंदी प्रसिद्धि हो। घर में कुत्ते को रोटी, चींटी को आटा न मिले, उसके उल्ट चलने वाला जब भी सामने आये खुद ही फौरन गर्क हो जाये और वह (आने वाला) पछताने का भी मौका न पावे।

- जब शनि स्वयं वृ: को सहायता दे।

उपाय

1. माथे और पगड़ी पर पीले केसर का तिलक लगाना और नाक साफ करके काम शुरु करना सहायक सिद्ध होगा।
2. पिता की हालत सुधारने के लिए 40-43 दिन चलते पानी में तांबे का पैसा बहाना सहायक सिद्ध होगा।
3. वृ:नं: 10 में मंदा हो तो वृ: के सोने को कोढ़ होगा, हर तरफ से लानत मिले। हर दरवाजे का मंदा मायूस दरवेश हो।

वृहस्पति खाना नं: 11

शनि का राज्य (इमान से खाली) के समय सिवाए धर्म बाकी सब कुछ, बल्कि
कफन तक पराया, खजूर के पेड़ की भांति अकेला।

कफन दूसरों पर जो लू देता रहेगा।
बिना क़फन घर से न बाहर मरेगा

इश्क हस्द से गर हो गुरु जलता,	*मर्द माया पर डोलता [1] हो।*
बुध दबाया हो शनि [2] मंदा,	*सिफर गुरु स्वयं होता हो।*
धर्म पालन से हो गुणो 11,	*गर उत्तम गृहस्थी बनता हो।*
पेशाब पड़ेगा उसको नहाना,	*नाली चलन जब मंदा हो।*
ऊंच हुआ चाहे शुक्र [3] टेवे,	*दुखी स्त्री उसकी होती हो।*
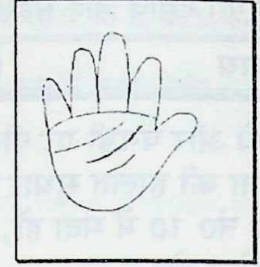
1. मं: 3 में तो, घर की मौतों से दुखिया, बु: नं: 3 में हो तो अच्छी कमाई करता हुआ भी कर्जई होगा।
2. ऐसे मनुष्य से किसी को लाभ न होगा विशेष कर जब नं: 3 खाली हो आमतौर पर अपने लिए नं: 3 खाली उत्तम होगा। नं: 3 में मित्र ग्रह 23 साल की आयु में मदद देगें। 3. स्त्री दुखी मर जाए या तलाक दे जायें।

हस्त रेखा

9 चक्कर या सर की श्रेष्ठ रेखा हो।

नेक हालत

अपने भाग्य का शुभ प्रभाव, गरीबों पर दया, धर्म पालन उपदेश से होगा, जब तक घर में एक साथ रहकर काम करता जावे, खुशी से निर्वाह करने वाला होगा। परन्तु जब खजूर के पेड़ की भांति अकेला रह जाए तो वृ: सिफर मंदा हो जाये। पिता के रहने तक सांप भी सजदा कर मगर ज्योही पिता का साया उठा, मर्द, की माया राजा, साधु वृक्ष सब का साया उठ जाएगा। संक्षेप में पिता लाखो का होते हुए भी मरते समय पुत्र के लिए कुछ भी न छोड़ कर करें। बेटा, पिता के धन से लाभ ना पावे। दिमागी खाना नं: 15 (शनि से संबंधित) खुद्दारी मगर हस्द से बुरी, दिमागी खाना नं: 35 (चन्द्र से संबंधित) पेशानी, गुजरी बातों का याद आना। धर्म अदालत, दरबार का मालिक राजा जहां शनि भी पहले वृ: का प्रभाव 11 गुणा उत्तम होगा। किए हुए वचन, वायदे पूरा करने से उत्तम हालत बनेगी।

1. वृ: सोया हुआ। फैसला शनि पर मगर टेवे वाले के लिए फिर भी हर समय उत्तम।
   - जब खाना नं: 3 खाली हो।
2. 23 साल ऐश के बाद फिर अंधेरी रात हो जायेगी अत: वृ: को कायम रखना जरुरी है।
   - जब खाना न: 3 में सू:, चं:, मं: मित्र हों।
3. अपना ही कोई भाई बंधु मिलने से या मिलाने से भाग्य उदय होगा, 12 साल ऐश के होंगे फिर प्राय: मंदा जो जरुरी नहीं कि हो ही।
   - जब खाना नं: 5 में सू:, चं:, मं: हो
   (भाग्य रेखा के समान्तर नं: 11 में दूसरा खत)।
4. सू: यानि राजदरबार या आग के काम से कमाया तांबा भले उसे सोने का काम दें। वृ: नं: 10 तरह अब वृ: नं: 11 का मंदा असर यदि कुछ हो भी तो पिता की बजाए बाबे पर होगा।
   - जब सू: खाना नं: 1,4,5 में हो।
5. वृ: चुप होगा मगर गुम न होगा।

– जब राहु खाना नं: 9 में हो।

6. जो वृः का मुफत माल नदारद मगर खुद पैदा किया अवश्य हो और ज्यादा धनी होगा।

– जब बुध उत्तम हो।

(हाथ की पोरियों पर 9 चक्र, जब बुध 6 में हो सर रेखा श्रेष्ठ या दो हों)।

7. चाहे पिता की मदद न होगी मगर वह स्वयं सदा प्रसन्नता से गुजारा करेगा और उत्तम फल देगा।

– जब शनि उत्तम हो।

8. शनि वृः दोनों का फल उत्तम होगा। – जब शनि साथी हो।

(बुध खाना नं: 2 में, शनि (10) हाथ में दो शाखी से मिले हो))।

मंदी हालत

अमूमन बुध (बहन और बुआ) का फल मंदा ही होगा। धर्म विमुख राजा की भाँति स्वयं वह किसी को लाभ न दे मगर टेवे वाले की अपनी हालत उत्तम होगी। पिता की मृत्यु के बाद मच्छर से भी लड़ पाने की शक्ति न रहेगी। चालचलन गंदा तो गंदी नालियों में नहाए होगा। इश्क के संबंध में सुन्दर मिट्टी तक भी न पाएगा। परिवार चाहे कितना हो, कफन पराया ही मिलेगा, विशेषकर मंदे ग्रहों के सम्बंधी की मौत पर कहीं बाहर ही जाकर मरेगा, अत: दूसरों की मौत पर कफन पर दान करना उपाय है।

1. हस्द, (इर्ष्या) इश्क की अधिकता से तबाही हागी। उसका सोना गंदी मिट्टी की तरह बिक जाएगा क्यूंकि इश्क वृः की शक्ति को जला देगा। – जब चं: नं: 1 या जब वृः सोया हुआ दृष्टि आदि के संबंध से मंदा हो रहा हो।
2. बुढ़ापे में मंदा हाल, आयु के 90 वां साल मंदा, आंखे कमजोर और शनि का अपना प्रभाव मंदा होगा।
   –जब बु: नं: 6 में और चं: खाना 2 में हो।
3. वृः की पहली उम्र का असर शक्की हो। – जब खाना नं: 3 मंदा हो।
4. धर की मौतों से दुखिया मगर ससुराल के लिए उत्तम। – जब मं: खाना न: 3 में हो।
5. अच्छी आमदन के होते हुए भी कर्जई, पिता से खुद दुखी हो। – जब बुध नं: 3 में हो।
6. स्त्री दुखिया हो। – चाहे शु: कितना ही उच्च हो।
7. मं:, वृ0:, श: तीनों का फल मंदा हो। – जब चन्द्र मंदा हो।
8. धर्म को बेचने वाला चाहे राजा ही क्यू न हो, किसी को लाभ नहीं मगर अपनी हालत अच्छी हो।
   –जब बुध दबाया या मंदा हो।
9. वृः सोया होगा जिसका फैसला शनि पर होगा, कद लम्बा होगा, मर्द होगा, नर्म दिल,धर्मात्मा हो। यदि अपनी ही उंगलियों के पैमाने से 68 उंगल हो तो भाग्य हीन और 52 उंगल हो तो भाग्यवान।
   – जब खाना नं: 3 खाली हो।

वृहस्पति खाना नं: 12

(बुरे का भला करने वाला, उत्तम ज्ञानी वैरागी)

प्रार्थनायें भले की सबकी अगर तू करेगा।
खजाना न शक्ति का तेरा घटेगा।

हालत राहू पर धन है[1] चलता, केतु धर्म स्वयं बोलता हो।
चुप समाधि वर्षा सोने की, धर्म [2] कडां दिया बोलता हो।
8-9 घर 2,10 खाली, माया दौलत सब छोड़ता हो।
हुआ शनि जब 2-9 साथी, पाता दौलत मच्छ रेखा हो।
गुरु[3] घरों जब पापी [4] बैठे, बु0, शु0 स्वयं मंदा हो ।
गुरु उत्तम 2[5] राहु [6] बिगड़े, साधु-सेवा से बढ़ता हो।
नेकी करे सर शत्रु कटे, सहाने पानी जब धरता हो।
बैठा शुक्र चाहे टेवे कैसा, असर अच्छा ही होता है।
बुध आयु तक केतु मंदा [7] पाप राहु तक दुखिया हो।

मंदी हालत में चन्द्र (खेती, जमीन आदि) के वीरान, खुले मैदान की फोकी उम्मीदें, 42 साल आयु तक पिता निर्धन, दुखिया कलपता ही रहेगा।
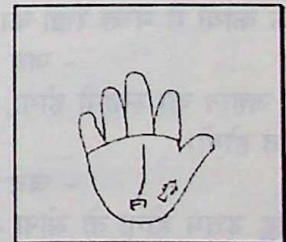
1. मंदी हालत में चन्द्र (खेती, जमीन आदि) के वीरान, खुले मैदान की फोकी उम्मीदें, 42 साल आयु तक पिता निर्धन, दुखिया कलपता ही रहेगा।
2. जमाने की हवा का पूरा और शुभ प्रभाव होगा या हवाई गैस के कामों से सदा लाभ ही होगा।
3. खाना 2, 5, 9, 12।
4. रा:, के:, श:, खाना नं: 9-12
5. 11, 19, 31, 42, 53, 67, 84, 101, 114 साला आयु।
6. दगा फरेब, धोका, झूठी शहादत, बदकारी आदि , खुद साख्ता मंदे काम।
7. बुध मंदा तो 34 साला आयु तक केतु का प्रभाव मंदा, मगर शुः (स्त्री भाग) कभी मंद न होगा और न ही संसारिक माया की कमी होगी। नेकी से रात का आराम मिलेगा।

हस्त रेखा

3, खत, 6 शंख, 12 चक्कर (जब उंगलिया 6 हो) भाग्य रेखा की जड़ पर राहु का चिन्ह हो या मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या शुक्र के पर्वत पर या शुक्र और चन्द्र दोनों पर्वतों के बीच मुहं ऊपर किए हुए और उर्ध रेखा या उम्र रेखा उसके मुह में हो।

नेक हालत

गुरु पवन माया चाहे सोना ही बख्शे,
मगर मर्द त्यागी जो देखे न बरते।

अपने भाग्य का शुभ प्रभाव सुख से संबंधित काम, योग, तपस्या, पूजा पाठ से होगा। छोटी आयु में राहु के समय (पिता को खर्च की अधिकता) की चिंता। माया पर पेशाब करने वाला गृहस्थी। उसके घर में गंगा होगी। (खाना) नं: 9 का उत्तम प्रभाव। माया लक्ष्मी स्वयं पांव पकड़ती होगी, चाहे बुरा बु: मंदा या के: बुरा हो, मगर माया की कमी न होगी। शुक्र कहीं भी कैसा भी हो उत्तम होगा। ऐसे व्यक्ति के आर्शीवाद से लाभ और सताने से हानि होगी। संसार के लिए भंडार खोले तो अपना घर सोने से भर ले। चूप समाधि की आदत से सोने की वर्षा होगी। दयालुता के असूल पर धर्म कड़ा मुबारक होगा (जो रात का आराम देगा) नेक काम करने का असूल, राहु के हाथी को वृ: के सोने की जंजीर से बांध देने का शस्त्र होगा जिससे रात का आराम और धन मिलेगा। कभी निर्धनता का मारा साधू न होगा। 11 साल की आयु से मंत्री की भांति उत्तम होगा (दिमागी खाना नं: 12) राजदारी का स्वामी, त्यागी हो, अच्छा खाता पीता होगा। छुपी हुई शक्ति उत्तम होगी। खर्चा चाहे अति अधिक हो पर कबीलदारी पर ही लगेगा। किसी के घर मेहमान बनकर गया हुआ, धर्म स्थान में पूजा पाठ करता या आयु के निम्न वर्ष (आयु के साल 9, 11, 19, 31, 42, 43, 67, 84, 89, 10 7, 114) उत्तम ही होंगे और गृहस्थ का सुख मिलेगा, शर्त यह कि झूठी गवाही, धोखा, फरेब, बेईमानी (राहु) परहेज़ करें, अपनी समाधि और परलोक के विचारों की लहर में या साथी गृहस्थियों के भले की मस्ती और धुन में मग्न होगा। जातक को कोई सताएगा तो शाप पाएगा और उसकी (जातक की) सेवा से आशीष पायेगा। (शुक्र अब अपना पूरा प्रभाव कम से कम 25 साल आराम देगा और अपने लिए मन्त्री समझदार होगा।

1. शनि के कारोबार मोटर लारी मशीन आदि से उच्च भाग्यवान हो। रात को आराम पाये। राजदारी का स्वामी। कूच की तैयारी की फिक्र में शर्त यह कि शनि मंदा न हो यानि अब शनि को राहु, केतु किसी न किसी तरह न आ मिलते हो। फैंसला सांस पर हो। यदि जब दोनों या दायां सांस चल रहा हो तो शुभ कार्य, देर तक रहने वाले कार्य शुभ फल देगें। बायें सांस में किया काम या वैसे ही किया काम कोई शुभ फल न देगा।

- जब श: साथ-साथी या खाना नं: 9 में हो।

(मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या बुर्ज नं: 9 में मछली का चिन्ह जिसके मुख में अर्थ रेखा हो या उम्र रेखा इसमें खत्म हो)

2. शनि के कार्यो में मच्छ रेखा का अच्छा भाग्य मगर फिर भी त्यागी हो।

- जब श: साथ या साथी 2-11 में हो।

3. वृ: दो जहान का स्वामी होगा, रात का आराम देगा परन्तु सन्तान की लगन, फिजूल खर्ची और शत्रु से बचाव और मृत्यु समय उत्तम हालत होगी।

- जब राहु (उच्च) नं: 6 में।

4. यदि राहु उत्तम होगा तो सोना और धन सब उत्तम और सुख देगें वरना सोना भी पीतल के भाव बिकता और दु:ख का कारण होगा (यानि धन की हालत का फैसला स्वयं राहु की हालत पर होगा।)

- जब राहु की हालत वृ: के दो जहांनों की हालत (किस्मत रेखा की जड़ में राहु का निशान) हो।

5. धर्म समाधि का फैसला केतु की हालत पर होगा। बड़ा ही अमीर और संतान हर तरफ से सबका सुख हो।
   - जब केतु उच्च या उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 शंख)

मंदी हालत

1. चाहे अपनी आयु लम्बी परन्तु दूसरों के लिए भारी मनहूस।
   - जब बुध मंदा हो (उंगली की पोरी पर 12 चक्र -6 उंगली)
2. बदी का काम मौत का कारण बनेगा, लोगों के सामने हाथ फैलाने से राख मिलेगी।
   - जब वृ: सोया हुआ या दुष्टि से या शत्रु ग्रह की जहर से मंदा हो चुका होगा।
3. 42 साल की आयु तक फोकी उम्मीदें विशेषकर बुध, शुक्र हर दो ग्रहों के मंदे प्रभाव होंगे।
   - जब खाना 2-5-9-12 में पापी सिवाय के: नं: 9-12 के।
4. राजा होता हुआ भी लाभ न उठायें अपितु फकीर हो जाये वृ: सोया हुआ होगा।
   -जब खाना 2-8-9-10 खाली हो (भाग्य रेखा मध्यमा की शिखर पर चढ़ जाए)।
5. बुद्धिमान मगर विद्या काम न दें और कार्य लाभ न दें। विचार धर्म विरुद्ध हो, फिजूल खर्च खड़ा रहे पिता को राहु की आयु तक कष्ट रहे।
   - जब राहु नीच 9-12 में हो (वृ: के पर्वत पर 3 खड़े निशान)।
6. स्वयं भाग्यवान परंतु संतान के विघ्न होंगे। - जब मंदा वृ: हो।
7. चन्द्र धरती जो खेती के प्रयोग में खुले मैदान, वीरान और चन्द्र के दूसरे कामों में खाली उम्मीदें।
   - जब मंदा वृ: हो।
8. केतु 34 साल तक मंदा ही प्रभाव देगा। - जब बुध मंदा हो।

उपाय

वृ: की मंदी चीजों के काम, हर समय गले में माला, गुरु, साधु या पीपल कटवाना,
मंदे भाग की निशानी होगी।
वृ: की पीली चीजें, पीला तिलक लगाना या नाक का पानी साफ रखना सहायक रहेगा।

****

सूर्य

(सबका पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी)

सूर्य

(सबका पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी)
गर्म शौक तेरा है नींव उन्नति।
मगर बढ़ न जाये कि हर चीज़ हो जलती।।

पाप[4] मं: बुध[1] फैसला करता, ग्रहण होता खुद पाप से हो।
उत्तम रवि हो जिस दम बैठा, भला चं:, बु:, शु:, हो।
तख्त केतु 6 मं: बैठा, उच्च रवि खुद होता है।
आग जली चाहे 6-7 होता, दान मोती का देता हो।
मदद मित्र पर बाप से बढ़ता, नमक छोड़े खुद फलता हो।
शत्रु साथी से केतु[2] मरता, दान दिए सब बचता हो।
पांच पहिले घर ग्यारह बैठा, शत्रु मदद पर होता हो।
ग्रहण टेवे हो जिस दम आया, पाप समय तक मंदा हो।
रवि देखे जब चन्द्र भाई, तख्त बैठा न जब कि हो।
आधी आयु जब चन्द्र होगी, लेख भला सब होता हो।
बुध नजर जब रवि पर करता, दर्जा दृष्टि कोई हो।
असर भला सब दो का होगा, सेहत माया या दिमागी हो।
रवि दृष्टि शनि पर करता, बुरा शुक्र का होता हो।
शनि रवि से पहिले बैठा[3], नर ग्रह स्त्री उत्तम हो।
शनि शुक्र जब सूर्य देखें, मौत मरे दु:ख होती हो।
मकान बनावे रिश्तेदारों के, माया खत्म हो जाती हो।

1. सूर्य रोशनी गर्मी, वृः तेज, मंः किरणें, बुध आकार, चन्द्र चमक।
2. सूर्य स्वयं अकेला नीच या मंदे घरों का तो बरबाद करने वाला गुस्सा, संतान का भाग्य व आयु या बाप की मदद मंदी होगी। राहु से अपने विचारों की/पर गंदगी, शनि से बेईमानी, शुक्र से इश्क, केतु से कानों का कच्चा, पैरों की चाल ढ़ाल।
3. सिवाय सूर्य मंदी हालत के समय स्वयं सूर्य का अपना उपाय काम देगा।
4. नेक हालत का फैसला पाप (राहु- केतु) की हालत पर होगा।

आकाश में रोशनी, पृथ्वी की गर्मी, राजा भिक्षु से, सच्चाई और पालना और उन्नति की शक्ति को सूर्य का नाम दिया है। जिस का होना दिन और न होना रात, मनुष्य के शरीर में रुह, अपने शरीर से दूसरे की सहायता की हिम्मत का नाम सूर्य है। सर्दी (चन्द्र), रोशनी गर्मी (सूर्य का अपनापन) लाली (मंगल) और खाली जगह का घेरा (बुध का आकाश व आकार) इसके जरुरी भाग है और समय की हवा जगत गुरु, वृ: के ज्ञान संसारी बुद्धि और भाग्य की नीव इस की देन है जिसे हर सांस लेने वाले तक पहुँचाना वृ: का काम है। चलते रहना अपना अंत न बताना और इधर-उधर हुए बिना एक ही जगह रात-दिन करते रहना इसी सूर्य देव का ही एक आश्चर्य है।

12 घरों में सूर्य की हालत

सतयुगी[1] राजा घर पहिले का, दाता सखी जब 2 का हो।
धन भंडारी दौलत स्वयं तीसरे होगा, जोड़ मरे घर 4 का हो।
औलाद बढ़ेगी हर दम पांच के, फिक्र धन नं: 6 का हो।
परिवार कमी चाहे होगी सातवें, राजा तपस्वी 8 का हो।
आयु लम्बी 9 बढ़ता परिवार, दसवें स्वास्थ्य धन उत्तम हो।
धर्म पूरा घर 11 उसका, रात सुखी घर 12 हो।

1. बाप की पूरी मदद करो, बेटे से उम्मीद न करो। चाहे बाप से धन न मिले पर बेटे को देकर जायेगा।

सूर्य दुनियावी राजा, जातक के जिस्म और राजदरबार का असर

खाना नं: 1 :-

पिता की पूरी सहायता करेगा, बेटे की तरफ से सहायता की आशा न करेगा, बाप से चाहे धन न मिले परन्तु संतान को धन अवश्य देकर जायेगा। राजा होगा जिसे सिवाए न्याय के और कोई सम्बन्ध (धर्म आदि से) न होगा, हुकूमत गर्मी की, दुकानदारी नर्म तबीयत की शुभ होगी, पर रहम से भरा होगा।

खाना नं: 2 :-

मन्दिर की ज्योति जो किसी मजहब के अनुसार दबी नहीं है, धर्म देवता, माली हालत मध्यम, स्वभाव सतयुगी। छोटी जगह का राजा जो अपने भाग्य की शर्त नहीं करता, मगर साथियों बच्चों, सम्बधियों को जरुरी धनवान कर देता है चाहे आप निर्धन क्यों न हो। सेवा उन्नति की नींव होगा।

खाना नं: 3 :-

मृत्यु को रोकने तक की शक्तिवाला जिससे मृत्यु भी डरे। खुद हलवा पूरी खाये दूसरों को भी खिलाए। जो शुभ कार्य कर दिखलाएगा, झूठे को काट खाएगा। बुध जो इस घर का स्वामी है अपने जंगल को इतना घना कर देगा कि सूर्य नं: 3 की धूप जमीन तक ही न आने पाए, मगर सूर्य की अपनी गर्मी से जंगल को ही आग तक लगने को तैयार होगी। या तो जंगल में हरियाली हो या बुध हरे रंग की बजाए खाकी रंग हो जाये। मगर ऐसा व्यक्ति यदि दूसरों को पालेगा तो स्वयं भी पलता जाएगा नहीं तो जल कर मर जायेगा।

खाना नं: 4 :-

राजा के घर जन्म ले या न ले परन्तु स्वयं राजा अवश्य हो। आप ने चाहे जन्म से पैसा न देखा हो परन्तु संतान को (रेशम के कीड़े की तरह) पैसा खर्चने की शक्ति दे जायेगा। माता जीवित हो न हो मगर बाप की तरफ से हो सकता है कि माताएं अवश्य हो, परन्तु स्वयं चालचलन वाला होगा। ऐसा व्यक्ति स्वयं चाहे हानि उठा लें, दूसरे की हानि नहीं करेगा। यदि पराई स्त्री को साथ रखे तो संतान न पावे या निसंतान होगा। अगर दान देगा तो मोती देगा।

खाना नं: 5 :-

मनुष्यता की शराफत और दुनियावी मर्यादा से भरा राजा जो अपने परिवारिक खून को अपना मंदिर बना लेगा। जन्म से ही भाग्य का जलता दिया होगा जो किसी के जलाने से न जलेगा। यानि जन्म से ही भाग्य का स्वामी होगा। आयु के साथ धन बढ़ेगा। उसके खर्च किए हुए धन से संतान के लिए धन, अनाज के रास्ते खुल जायेगें, मालामाल होगा। मनुष्यों में कोई बंदर नहीं, बंधे हुए व्यक्तियों, बंदरों को आजाद् करवाने का हामी होगा।

खाना नं: 6 :-

आसमान तो गर्म, सूर्य की गर्मी जमीन भी जलने लगी जिसकी आंच रात को भी ठण्डी न हुई। तू कौन मैं खामखाह के किस्से में आग जली बेवकूफ शाह तीसमारखां। खेत में कनक के बीज जलने लगे। ऐसी हालत में वही बचा जिसने अपने घर पानी की जगह दूध दिया, और बुरा करने वाले को भी आशीश दी। ऐसा आदमी जिद पर आया हुआ वैसा ही होगा जैसा कि एक देश से निकाला हुआ राजा अपनी प्रजा को आग की लपटों में जलता हुए देख कर रोने की बजाये हंस देगा। वह स्वयं निसंतान या मंद बुद्धि ना होगा। ऐसा व्यक्ति कभी मन और वाणी से मंदा न होगा चाहे उसे भाग्य का लाख मुकाबला करना पड़े।

खाना नं: 7 :-

ऐसे व्यक्ति के पैदा होने पर ऐसा लगेगा कि घर का सूर्य पैदा हुआ। परन्तु चढ़ते चढ़ते वह दुमदार तारा बन जायेगा। उसने सब कुछ समझ और नेक बुद्धि से किया मगर परिणाम उल्टा ही निकला, मगर जब उसने स्वयं हौसला किया तो सारा जलने से आधा ही बचा लिया। अंत में जब जिम्मेवारी उसने खुशी से संभाली तो सुख की रोटी मिलने लगी और साथ वाले भी आबाद हुए। राज दरबार का साथ मिला। खेती पकी मगर अनाज से जले की बू आने लगी, यानि ऐसा राजा होगा जिसका ताज गुम हो गया हो अर्थात् सब कुछ होते हुए भी कुछ न होगा। बेशक राज गद्दी पर जन्म लेकर भी गद्दी पर न बैठ जाए। हाकमी गर्मी की दुकान नर्मी का हामी होना, ठीक रहेगा। अगर कोई जला देवे हम भी उसे जलना सिखाएंगे, मगर खुद न जलेंगे।

खाना नं: 8 :-

ऐसे व्यक्ति जन्म से ही कहने लगेगा, मरने वाले पूछ कर मरें जन्म लेने वालों पर कोई बंधन नहीं। जो आए अपना खर्च साथ लाए और जाने वाला कोई चीज साथ लेकर न जाए। जन्म चाहे शमशान का हो मगर गुरु गद्दी, राज गद्दी का स्वामी हो उसको नहीं हटाएगा, मगर अपने अपने हाथों से हारा भाग्य वापिस न पाएगा। यानि भंडारी रहे तो भंडारे भरे परन्तु यदि भिक्षु बने तो भिक्षा न पाए। जब तक अपने खानदानी खून पर हमला न करेगा, बरबाद न होगा। मर गए का अफसोस तो है मगर जीवित करने की भी हमारी ही जिम्मेवारी है का स्वभाव और शक्ति रखेगा।

खाना नं: 9 :-

हकीमों को बिना दवाई ठीक करने की हिम्मत देने वाला, शाह और स्वयं भी बड़ा हकीम,

डॉक्टर। अपने परिवार के अलावा अपने साथ सभी को पालेगा। 'पिछली को छोड़ और आगे को न घबरा', लेकिन संसार का सूर्य तेरे साथ चल रहा है की भांति कार्य करने वाला होगा।

खाना नं: 10 :-

पैसा तो खरा है मगर बाज़ार में कोई उसका सौदा नहीं देगा। संसार उसके सच्चे होने पर उससे डरता है। असली बची आग़ को भूत प्रेत की आग़ दुनियां समझती है। मगर फिर भी राजा घमण्डी गुस्से वाला दूसरों को माफ करना तो एक तरफ अपने मां बाप को भी फांसी का हुकम लिख देगा। नाक पर मक्खी नहीं बैठने देगा। जब तक रहेगें झुक कर नहीं रहेगें जब झुकना पड़ा तो हम नहीं रहें और अगर रहेगें तो सिर्फ उसके साथ जो हम प्याला हम निवाला हो, की प्रवृत्ति वाला। दिखावे को सच्चा मगर दिल से झूठा होने की बदमाशी की निशानी अगर नहीं देखी तो वह कर दिखाएगा।

खाना नं: 11 :-

गो लालची गर धर्म तपस्वी होगा। यदि कोई बेचकर खाएगा तो हमारा क्या खाएगा, के विचार का बुलंद स्वामी; जिस तरह नेकी से बढ़े बढ़ता चले। लेकिन जब स्वयं रोटी कनक (सूर्य) के साथ मांस (श0) मिला कर खाए तो सूर्य श: के झगड़े में केतु (नर संतान) बरबाद हो। परन्तु परिवार में ऐसा व्यक्ति आप चाहे किसी भी खून से हो 'हम नेकी कर दिखाएगें' का पक्का देवता होगा।

खाना नं: 12 :-

सुख की नींद सोने वाला बेफिक्र राजा ऐसा जिसके राज्य में बंदर भी घर बनाना सीखें, लेकिन जब धर्म हानि का आदी हो तो अंधी देवी, नाक कटे पुजारी, दिन दहाड़े चोरी की घटनाएं। बेआराम जीवन, जिसके लिए साधू की सेवा, शुक्र की पालना सहायक होगी। सुबह की मीठी हवा का शानदार जमाना न भी हो और जले भी तो आकाश का सूर्य मंदा जमाना न रहने देगा। उसे चारों ओर जितनी भी आफते (मौसम) हो मगर वह बरबादी (पतझड़) न देखेगा और न ही निर्धन और संतान रहित होगा।

12 ही घरों में सूर्य की उत्तम हालत का प्रभाव और अन्य ग्रहों से सम्बन्ध।

उत्तम सूर्य वाला संसार को चमकाये, धन देता हो, लम्बी (100 वर्ष) आयु पावे, अंदर बाहर सब सच्चा हो। मंदे समय बुरा प्रभाव रात के स्वपन की भांति छुपे ढंग पर रहे। किसी का सवाली न हो बल्कि स्वयं खैरात पूरी कर दे। भीख चाहे न दे मगर किसी की झोली से भी कुछ न ले। स्वयं चोटे खाकर बढ़ेगा मगर दूसरों को चोट न मारेगा। चाहे मृत्यु को कोई अच्छा नहीं गिनता फिर भी सूर्य उत्तम वाले की मृत्यु भली ही होगी। 22 साल की उम्र मे राजदरबार से धन कमाने लगेगा। सूर्य की गर्मी धुप और उनका नाप तोल राहु से पता चलेगा। उत्तम सूर्य के समय चन्द्र, शुक्र और बुध का प्रभाव नेक उत्तम होगा चाहे केतु नं. 1 या मं: नं: 6 हो तो सूर्य का प्रभाव नेक उत्तम ही होगा। सूर्य किसी भी घर में और कैसा भी बैठा हो।

चन्द्र से संबंध :-

सूर्य देखे चं: को (पर सूर्य नं: 1 न हो):

चन्द्र को फल चन्द्र के आधे समय तक सूर्य के प्रभाव में दबा हुआ होगा। इसके बाद वह अपना जुदा असर सूर्य की तरह उत्तम फल देगा। सूखे कुएं भी पानी देने लग जायेंगे। (यह असर जन्म
कुण्डली 24-12-6 साला आयु में हो और वर्षफल 12-6-3 मास हो)

चं: देखे सूर्य को:-

अब चन्द्र सूर्य को कोई सहायता न देगा अपना प्रभाव चाहे कभी मंदा कर ले ।

शुक्र से संबंध :-

सूर्य की जड़ 5 में- (पापी और उसी समय शुक्र के खाना नं: 2-7 में चन्द्र राहु 1)।

माता पिता की आयु शक्की। जिस घर में शुक्र बैठा हो उसी घर की शुक्र से संबंधित चीजों की हालत मंदी। सूर्य बैठा होने वाले घर पर शुक्र कोई बुरा प्रभाव न हो।

बुध से संबंध :-

बुध 6 और सूर्य कायम: अपनी कलम से राजधानी का धन बढ़े। ईमानदारी का धन साथ दे।
सूर्य देखे बुध को 1०० प्रतिशत सूर्य को सहायता होगी।
सूर्य देखे बुध को 50 % ससुराल अमीर, स्त्री का भाग्य शीशे की भांति चमके।
सूर्य देखे बुध को 25% योगाभ्यास गणित, ज्योतिष आदि उत्तम हो।
बुध देखे सूर्य को: (दर्जा दृष्टि कुछ भी हो) बुध का प्रभाव उत्तम-- स्वास्थ्य, बुद्धि, स्त्री सभी पर प्रभाव उत्तम।

शनि से संबंध :-

श: देखे सूर्य को 25% सूर्य का प्रभाव बरबाद मगर शु: आबाद होगा और उत्तम फल का, गणितज्ञ सम्पादक होगा।

श: देखे सूर्य 50 % शनि की चीजें सहायक होगी, जैसे मकानों की विद्या।

श: देखे सूर्य 100 % जादूगरी का स्वामी होगा।

शनि हो पहिले घरों में और सूर्य बाद के घरों में हो तो :-

सू: का प्रभाव मंदा और शनि उसके (सूर्य) प्रभाव में अपना मंदा प्रभाव अवश्य मिलाता होगा। यानि सूर्य की रोशनी स्याही से भरी होगी। शारीरिक कमजोरी होगी। मगर चन्द्र (सर्दी) मंगल (लाली) वृहस्पति, (हवा) बु: (आकाश) जो सूर्य में आवश्यक अंग हो जाने पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। यानि सूर्य की दी हुई भाग्य और कमाई पर मंदा प्रभाव न होगा। ऐसी हालत में रहने के मकान में दक्षिण (पूर्व की ओर मुंह करके दाई तरफ) पानी का कोरा बर्तन भरा हुआ दबायें और उसका पानी 40-43 दिन तक सूखने न दें।

सामान्य :-

सूर्य देखे शनि को यानि सूर्य हो पहिले घरों में शनि हो बाद के घरों में तो शुक्र बरबाद, स्त्री पर स्त्री मरें शारीरिक शक्ति कम न होगी।

सूर्य को जब अपने मित्र (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) की सहायता हो या टेवे वाला नमक कम या बिल्कुल न खाये तो वह नेकी और सांसारिक कामों में पिता से आगे बढ़ जायेगा।

जन्म कुण्डली में सूर्य के खाना नं: 1-5-11 में होने से टेवा बालिग होगा जो बच्चे के गर्भ में आने से ही प्रभाव देने लग जायेगा। ऐसी हालत में यानि जब सूर्य खाना नं0 1-5-11 जन्म कुण्डली या वर्षफल बैठा हो।

खाना नं: 1 का सूर्य नं: 1 के साथी ग्रहों को, चाहे मित्र हो या शत्रु, दोनों को मदद देगा। नं: 5-11 में सूर्य होने पर दूसरे ग्रह स्वयं सूर्य की सहायता करेगें चाहे वह सूर्य के शत्रु ही हों। टेवे में ग्रहण (सूर्य-राहु), (चन्द्र- केतु) के समय सूर्य 45 साला आयु तक कोई भला फल न देगा, बल्कि मंदा फल ही देगा, माना गया है।

सूर्य स्वयं अकेला नीच या मंदे घरों में हो तो वह स्वयं कभी नीच न होगा मगर सूर्य की जगह केतु (नर संतान का सुख) बरबाद या मंदा होगा। बेहद गुस्सा बरबादी का कारण होगा और इसका उपाय दान कल्याण माना गया है।

सूर्य जब कभी नं: 1 में आए, अपनी जन्म कुण्डली में चाहे कहीं कहीं भी हो, शुक्र का प्रभाव नीच होगा। मगर सूर्य स्वयं के लिए उत्तम होगा। ऐसी हालत में बुध की पालना सहायक होगी।

खाना नं: 2-6-8-10 -11-12 में अकेला बैठा सूर्य इन घरों से संबधित चीजों पर अपना अच्छा प्रभाव न देगा। परन्तु यह भी अर्थ नहीं कि बुरा प्रभाव देगा। शत्रु ग्रहों के साथ यानि सूर्य-शुक्र, सूर्य-शनि, सूर्य-राहू, सूर्य-केतु चाहे किसी भी घर में हों साथ बैठे हुए ग्रह की उस खाना नं: से संबंधित वस्तुओं पर जिन में कि वह बैठा हो दोबारा उसी घर में आने पर (वर्षफल में) मंदा प्रभाव देगा। ऐसी हालत में 22 से 45 साला आयु की मध्य शत्रु ग्रह अपनी जाती मियाद पर भी बुरा प्रभाव देगें। मसलन सूर्य शुक्र नं: 5 में हो तो जब भी कभी वर्षफल में नं: 5 में फिर आवें (वह आयेगी केवल 34 या 25 वर्ष) शुक्र की मियाद में स्त्री, आवा भट्टी पर शारीरिक चमड़ी पर मंदा प्रभाव देगा। बुध की पालना से शत्रु ग्रह को नेक कर लेना सहायक होगा। लेकिन यदि शत्रु ग्रहों (शुक्र, शनि, राहु, केतु) के साथ ही सूर्य के साथ उसके मित्र ग्रह (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) भी बैठे हो तो मंदा प्रभाव मित्र ग्रहों से सम्बन्धित चीजों, उस खाना नं: की जहां बैठे हों, पर होगा और शत्रु बचा रहेगा। शत्रु ग्रह यदि एक दो तीन की गिनती से सूर्य से पहले घरों में और दृष्टि के असूल पर भी पहली तरफ में बैठे हों तो सूर्य का मंदा प्रभाव टेवे वाले पर होगा। लेकिन यदि शत्रु ग्रह बाद में बैठे हों कुण्डली वाले की जगह मंदा प्रभाव शत्रु ग्रह और घर पर होगा।

मंदे प्रभाव का उपाय:-

यदि सूर्य का स्वयं अपना ही प्रभाव दूसरे ग्रहों पर बुरा हो रहा हो तो सूर्य के मित्र ग्रह (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) को नेक कर लेना सहायक होगा। खाना नं: 6-7 में बैठा होने के समय आम मंदी हालत में बुध का उपाय सहायक होगा तथा चन्द्र नष्ट करने से भी सहायता मिल सकेगी। (यानि रात को रोटी के बाद चूल्हे की बाकी बची आग पर दूध के छींटे मार कर उसे बुझाते रहना सहायक होगा)। जब कोई ग्रह सूर्य से नष्ट या बर्बाद हो रहा हो तो स्वयं सूर्य का उपाय करो। जब सूर्य का अपना प्रभाव नष्ट हो रहा हो तो शत्रु ग्रह, जो उसे बर्बाद कर रहा हो, को नेक करना सहायता देगा।

सूर्य के शत्रु (शत्रु, पापी) ग्रहों के घर (मलकियत व पक्का घर) 2-6-7-8-10-11-12 में अकेला बैठा सूर्य उन घरों के मालिक घरों से संबंधित वस्तुओं पर अपना शुभ प्रभाव बंद करेगा।

शत्रु	का घर	सम्बंधित वस्तुएं
शुक्र	2	स्त्री धन, स्वाद, बचत जो कि अपनी कमाई से हो, पति रहित या प्यार से फंसाई स्त्री। सम्बंन्धियों से माता, बुआ, फूफी, मौसी, आलु, गाय-स्थान, घी, अभ्रक, सफेद काफूर, बगैर सींग (भौंडी गाय) शारीरिक अंग, गुदा।
केतु	6	संतान (लड़का) व उसका सुख, माता पिता के संबंध के रिश्तेदार (वह रिश्तेदार जो टेवे वाले की पैदाइश से पहले कायम थे, माता, नाना, नानी आदि रफतार चाल साहूकारा, खरगोश, चिड़ा यानि चिड़िया का नर, शारीरिक भाग कमर।
शुक्र	7	बाहरी स्त्री, शरीरिक त्वचा की सुंदरता, शादी गृहस्थी फल, चरी ज्वार, सफेद गाय, कांसी का बर्तन, हर दो प्यार, शारीरिक त्वचा, चमड़ा।
शनि	8	स्त्री-पुरुष, बिच्छू, कनपटी।
शनि	10	जद्दी जायदाद, पिता या माता का सुख, नमक काला व तेल लोहा, लकड़ी, दृष्टि, आयु, बाल 3 साल से रहने का मकान, मगरमच्छ या सांप का घर, भैंसे, घुटना।
शनि	11	जन्म समय आयु तक अपनी आय, खरीदा हुआ मकान, संतान की आयु व गिनती, पहला हाकिम, शारीरिक, शक्ति राहु, केतु के कार्यो का निर्णय, चूतड़।
राहु	12	धन श्राप, हड्डी, पारिवारिक खून, सर दिमागी काम काज, स्त्री पुरुष की आपसी आयु का संबंध, विचारों का बहासरना अचानक पैदा होना, बदनामी की प्रसिद्धि, कोयले, हाथी खोपड़ी, सर की हड्डी।

सूर्य खाना नं: 1

(सतयुगी राजा, हाकिम)

हुई राख दुनिया है, दिन रात जलती।
सिर्फ धर्म बाकी है, एहसान धरती।।

धर्मी [1] राजा खुद उम्र सदी की, पांच पहले घर 11 जो
शनि कव्वा चाहे नेक हो कितना, हड्डी गन्दी यज्ञ डालता हो।
दूजे चन्द्र शनि ग्यारह बैठा, माया रुतबा बढ़ता हो।
शुक्र मगर जब सात आया[2] उम्र छोटी पिता मरता हो।
शनि टेवे हो आठ जब बैठा, मुर्दा स्त्री पर स्त्री हो।
पांचवे मंगल हो जब कभी आया, बेटा, बेटे पर मरता हो।
मित्र मंदे खुद सूर्य मन्दा, बुध मन्दे आकार न हो।
मिला शुक्र बुध टेवे , उम्र रिजक दरबार का हो।
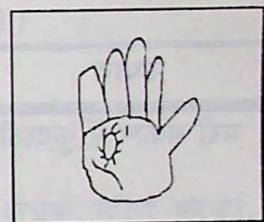
1. आखों पर निश्चय, पुराने विचार और गरीबों की सहायता करने वाला, नेक धर्मात्मा नं: 7 खाली तो शादी से भाग्य जागेगा।
2. स्त्री की सेहत मन्दी (टी:बी: तक)।

हस्त रेखा:-

शुक्र बुध दोनों सूर्य की स्वास्थ्य रेखा से मिल जाएं और सूर्य रेखा स्वयं ठीक हालत में बुर्ज नं: 1 पर पाई जावे। सूर्य का सितारा सूर्य के अपने बुर्ज पर बुध की तरफ हो। सूर्य का बुर्ज कुण्डली का खाना नं: 1 है मगर सूर्य नं: 1 में तब ही होगा जब सूर्य के बुर्ज पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा कायम हो वरना सूर्य खाना नं: 5 का होगा (सूर्य की सेहत रेखा नं: 11 के आखीर तक)।

नेक हालत

टेवे वाला धर्मार्थ मकान बनाए और कुएं लगवाने का शौकीन हो। राजा की भान्ति अफसर होगा। पुराने विचार, धर्म की पालना करने वाले होंगे । उस के अधिक भाई बहन होने की शर्त नहीं है। क्याफा (सूर्य कायम नं0 1 सूर्य का सितारा बुध की ओर) बाप की आखरी उम्र तक पूरी सेवा करेगा, और सहायता करेगा, मगर अपने बेटे से उम्मीद न रखेगा । बाप से उसे चाहे धन न मिले मगर बेटे को जमा धन दे जाएगा । शराब पीने से दूर मगर गरीब की सहायता करने को हर दम तैयार । दो धारी तलवार के स्वभाव का स्वामी होगा और शरीर में सांप का गुस्सा होगा । कुछ भी हो उसका रिज़क बंद न होगा । वह स्वयं बना अमीर होगा । राज दरबार लम्बा साथ देगा । सफर से धन मिलेगा या पैदा करेगा । अपना शरीर व रूहानी प्रभाव उत्तम होगा । तमाम अंग अंतिम

समय तक शक्तिशाली होंगे, ईमानदारी का धन फलता रहेगा और बरकत देगा। संतान बेशक गिनती की होगी, मगर संतान का सुख और औरत का सुख आखिर तक होगा। वह अपनी आँखों पर निश्चय करेगा, मगर कानों पर एतबार न करेगा। परोपकार और सेवा साधन, संतोष माया तथा तरक्की की नींव होगी।

1. यदि मित्र ग्रह साथ या उनकी मदद मिले तो माया धन को पैदा करेगा, मगर उसका गुलाम न होगा।

2. उत्तम पद, भाग्यवान होगा, धन दौलत उत्तम, अपने लिए हर तरह से रिज़क उत्तम, कभी मंदा न होगा। चाहे सूर्य को जुदा घर में ग्रहण ही क्यों न लग जाए। -जब चन्द्र नं0 2 और श0 नं0 11 हो,शुक्र बुध आपसी दृष्टि में हों।

हस्त रेखा :- सेहत रेखा कायम हो, सूर्य के बुर्ज से रेखा बुध के बुर्ज नं0 7 में चली जाये।

3. नेक धर्मात्मा होगा, बदकारी हरामकारी से कोसों दूर भागता होगा। शुक्र का फल प्रायः शुभ होगा। दिमागी शक्ति जिन में सूर्य का उत्तम व नेक प्रभाव हो। -जब बुध खाना नं0 7 में हो।

मंदी हालत

खाना 1-5-11 में सूर्य के होने के समय धर्म अवस्था के लिए सदा ही शनि 1/4 हिस्सा प्रभाव शामिल होगा। चाहे सूर्य कितना ही अच्छा हो, योगी राजा के हवन (यज्ञ) कुंड में कोव्वा गन्दी हड्डी लाकर ही डाल देगा, आग का जोर चाहे कितना भी ऊंचा हो रहा होगा।

1. पिता बचपन मे ही गुजर जावें। स्त्री की सेहत मंदी, जलता हुआ जिस्म बल्कि तपेदिक भी हो खास कर जब दिन के समय स्त्री भोग का आदी भी हो। -जब शुक्र नं0 7 हो।

2. लड़के पर लड़का मरे। -जब मंगल नं0 5 हो।

3. सब ग्रह धोखा दें अपना बाज़ारी मूल्य शून्य, अंधेरे जीवन का मालिक। खुदकुशी तक की नौबत। जलती हुई आग की गर्मी से भरी हुई तक का मंदा भाग्य होगा। -जब दोस्त ग्रह मंदे हों।

4. स्त्री पर स्त्री मरे। -जब शनि नं0 8 हो।

5. सोया हुआ सूर्य, छोटी उम्र की शादी (24 साल से पहले) शुभ होगी नहीं तो अपने आप जगा सूर्य (राजदरबार की नौकरी या स्वयं कमाई शुरू करने की हालत में सूर्य उम्र के 24वें साल मंदा फल देगा।

-जब खाना नं0 7 खाली हो।

उपाय

जद्दी मकान में कुदरती पानी (हैंड पम्प) कायम होने से 10 साल बाद भाग्य उदय होगा।

सूर्य खाना नं0 2

(सखी दाता, अपने भुजा बल का स्वामी)

है खाना मुबारक, कमा खुद जो सीखे।
हुए मंद सूर्य , मुफ्त दूध जो पीते।

दर्जा सखावत राज हो ऊंचा,	*शत्रु बैरी सब मरता हो।*
पिता माता बुध पाप कबीला,	*सभी घरों को तारता हो।*
छटे चंद्र खुद चंद्र बढ़ता,	*आठ चंद्र रवि[1] मरता हो।*
पहले मंगल और चंद्र 12,	*दुखिया आँसू घर भरता हो।*
न ही स्त्री जाति बढ़ती,	*न गुरु प्रधान[2] हो।*
याद इतनी ही जरूरी,	*छोड़ देना दान[3] को।*

1. नं0 8 खाली हो तो स्वयं सूर्य तथा खाना नं0 2 की चीजों का शुभ प्रभाव हो।
2. सू0, वृ0 का जुदा प्रभाव न दिखेगा या अब वृ0 स्वयं सूर्य के अनुसार चलेगा।
3. दान लेना अशुभ वल्कि पूरी तबाही हो।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा या सूर्य रेखा जब वृ0 का रुख करे मगर शनि के पवर्त पर न हो।
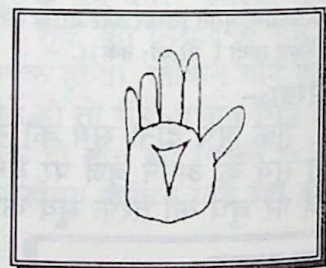
नेक हालत

1. मामा की हालत उत्तम होगी। अपनी लड़कियों के रिश्तेदारों के खानदान हरे भरे हों। 11 दिन, 11 मास, 11 साल की आयु में शत्रु की मौत होगी । वृ0 का प्रभाव अलग न दिखेगा बल्कि सूर्य भी वृ0 की भांति होगा, सवारी तथा चौपाया का सूख होगा । जिस कदर सखी दाता उसी कदर बढ़े शत्रु दबे रहें । अपने भुजा बल पर भरोसा करने वाला। माता-पिता, मामा और अपनी बहन, लड़की का कबीला (राहु) ससुराल का कबीला अपनी स्त्री समेत (केतु) नर संतान का कबीला इन सबको पार लगाने वाला तथा पालने वाला होगा। -जब सूर्य वा वृ0 साथ, साथी या दृष्टि से नं0 8-2-6-12-5-9-10 घर, मगर शनि का संबंध न हो (भाग्य रेखा या सूर्य रेखा वृ0 के बुर्ज का रुख करे मगर शनि के बुर्ज में या शनि के बुर्ज के नीचे खत्म न हो) ।
2. स्वयं हाथों से काम करने वाला होगा । हुनर जानने वाला होगा, बाबत कारोबार ।
-जब सूर्य नं0 2 कायम(अनामिका बिल्कुल सीधी) हो ।
3. चंद्र का फल नेक और सूर्य का प्रभाव भी ऊंचा, शक्तिशाली होगा । -जब चंद्र नं0 6 हो ।
4. बहादुर होगा । -जब बुध नं0 8 हो (अनामिका का सिरा गोल होगा) ।
5. हुनर मंद होगा । -जब राहु नं0 8 हो (अनामिका का सिरा चौड़ा हो) ।
6. दस्ती काम को व्यापार से अच्छा समझे । -जब बुध नं0 8 (कनिष्ठका अनामिका की ओर झुकी हो) ।
7. स्वयं सच्चा और सच्चाई पसंद होगा । -जब केतु नं0 8 में (अनामिका का सिरा नोकदार) हो।
8. बहुरूपिया, प्रसिद्धि को चाहने वाला होगा । -जब बुध नं0 9 (अनामिका छोटी) में हो ।
9. तस्वीरें बनाने वाला होगा, पेंटर आदि । -जब राहू नं0 9 (अनामिका बहुत लंबी) में हो ।
10. दस्ती काम की शक्ति वाला होगा (टैक्नीशियन) ।
-जब केतु नं0 9 या बुध नं0 10 (अनामिका लंबी) हो ।
11. शौकीन विचारों का स्वामी होगा । -जब मंगल नं 9 (अनामिका बहुत लंबी) हो ।
12. सूर्य स्वयं तथा खाना नं0 2 की चीजों का उत्तम प्रभाव देगा । -जब खाना नं0 8 खाली हो ।
13. मान और बुद्धि का स्वामी होगा । -जब शनि नं0 10 हो(मध्यमा अनामिका दोनों बड़ी हों) ।
14. कभी खुश, कभी उदास, हर दम तबीयत बदलने वाला होगा । -जब श0 नं0 11 हो ।

मंदी हालत

न स्त्री जाति बढ़ती, न गुरु प्रधान हो ।
याद इतनी हो जरूरी, छोड़ देना दान को ।

इस घर में बैठा सूर्य अपने शत्रु ग्रह की चीजें(स्त्री, धन, पति हीन या माशूक स्त्री, आलू, घी, अभ्रक, सफेद-काफूर, बगैर सींग की गाय, राग, स्वाद, माता, बुआ, मासी, गुदा) पर अपना नेक प्रभाव बन्द कर देगा । जर, जोरू, जमीन के झगड़े, मिट्टी मे आँधी के बादल (तबाही का कारण होंगे) स्त्रियों की गिनती, अपने भाईयों की माताएं, औरतें तथा बहनें घटती ही जायेंगी जिसके लिए शनि का उपाय नारियल, तेल, बादाम धर्म स्थान में देते रहना सहायक रहेगा । जिस कदर जोरू, जर, जमीन के झगड़े बढ़ाता जाएगा, सूर्य मंदा होता जाएगा ।

1. दान लेना तबाह कर देगा, अच्छा है कि वह स्वयं कमा कर खाना सीखे । -जब चन्द्र नं0 8 हो ।
2. हर तरह से दुखिया या तंग हाल होगा तीनों ग्रहों का फल मंदा होगा । -जब मंगल खाना नं0 1 चन्द्र खाना नं 12 हो ।
3. लालची होगा । -जब मंगल खाना नं0 8 होगा (अनामिका का सिरा चौकोर हो) ।

सूर्य खाना नं0 3

(धन का राजा, स्वयं कमा कर खाने वाला)

हुआ धोखा कुदरत न किस्मत का डर था ।
बजा बिगुल मंदा चलन जब तो बद था ।
बाप दादा चाहे गरीबी,[1] या पडौसी मर गये ।
लेकिन उम्र पिछली[2] अपनी, माया जर न कम रहे ।
जहर मंगल व बद कोई चलती, न ही बुरा बुध, शुक्र हो ।

माया खड़े दिन चोरी लुटती, हुआ बुरा जब चंद्र हो ।
मंदा असर बुध टेवे पापी, केतु मामों घर मारता हो ।
उम्र लम्बी संतान हो अपनी, सोया सूर्य चाहे जागता हो ।

1. जब नं0 9-11 का मंदा प्रभाव हो । 2. जब चंद्र उत्तम तो आखिरी यकीनी तौर पर अवस्था उत्तम होगी ।
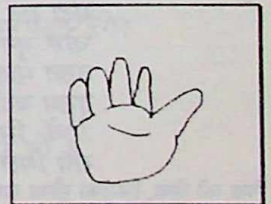
हस्त रेखा सूर्य रेखा से शाख मंगल नेक हो ।

नेक हालत

धन का राजा आप कमा कर खाने वाला, पूरी खूबसूरती का मालिक होगा । टेवे में अब चंद्र का फल अब रद्दी न होगा और नाही मंगल बद होगा । बल्कि बुध या शुक्र का फल भी उत्तम होगा । अपनी और अपनी संतान की आयु लम्बी होगी । न भाग्य मंदा न कुदरत धोखा दे । दिनों की चाल अक्ल से धोखा, फरेब से कभी मंदा हाल न होगा और दुखिया न होगा । दिमागी काम से बुध का प्रभाव सदा नेक होगा । ज्योतिष विद्या, गणित विद्या सदा भली रहे । चोरी के माल से सदा दूर रहे । मंदा चाल-चलन तेरी जिस्मानी तथा नसीबों की खूबसूरती को बदनाम कर देगा ।

1. अंतिम अवस्था में कभी निर्धन न होगा बल्कि अंतिम समय में, अपने कबीलों के सूर्य को तरक्की पर होता देखता जाएगा । चंद्र की चीजें खास कर (माता, घोड़ा आदि) का फल नेक और उनकी लम्बी आयु का साथ हो । -जब चंद्र उत्तम हो ।

2. सूर्य की चीजें खाना नं0 3 संबंध (दिन की संतान), भाई-भतीजे कभी मंदा प्रभाव न देंगे । मगर बुध के स्वयं की संबंध चीजों के नेक प्रभाव की शर्त न होगी लेकिन अब सपाट हाथ का साथ हो तो बुध उत्तम होगा (जद्दी जगह, उदाहरणतः उंगलियों के बीच की गांठे मोटी हों) । -जब बुध साथ-साथी हो ।

मंदी हालत

1. दिन दहाड़े चोरी होगी । चाहे सूर्य सोया हो या जागता हो ।
 -जब चंद्र मंदा हो ।
2. बाप दादा निर्धन होंगे । -जब खाना नं0 9 मंदा हो ।
3. पड़ौसी बरबाद होंगे । -जब खाना नं0 1 मंदा हो ।
4. मामा घर पर बुरा प्रभाव हो । -जब बुध या पापी मंदा हो ।

सूर्य का प्रभाव मंदा होगा जब चाल चलन मंदा हो या स्वयं मंदे काम करे, मगर भाग्य या कुदरत धोखा न देगी और ना ही मंगल बद का टेवे वाले पर बुरा प्रभाव होगा मगर दूसरों के लिए बद की बदी(मंदे ग्रह का फल) का साथ जरूर होगा ।

सूर्य खाना नं0 4

(दूसरों के लिए जोड़-जोड़ कर मरे, बच्चों के लिए दबाया धन)

तमा माया में क्यों तूं छोड़ा बसेरा।
करोड़ों पति नाम लेवा जो तेरा ॥

मंगल हालत परिवार कबीला, चश्मा रिज़क गुरु चंद्र घर ।
कीड़ा रेशम ज़र धन[1] देता, बुध शनि दानों के घर ।
माया लालच शर्म से अपनी, पेट हरामी भरता हो ।
आग लगी न लंका बुझती, गांठ काटे धन हरता जो ।
पांच चौथे घर चंद्र मोती, व्यापारी उत्तम बुध 10 का हो ।
मंदा पापी औलाद हो मंदी, नोहराता शनि घर सात का हो ।
मंदा राहू शनि तख्त पर[1] बैठा, असर सूर्य कुल मंदा हो ।
चोर[3] गुरु 10 मंगल काना, इजाद मौजूद[4] खुद होता हो ।
तख्त माता 5 शुक्र बैठा, सात शनि खुद उच्च का हो ।
तुख्म बदी किसी काम न आता, नामर्द औरत या हिजड़ा हो ।
10वें मित्र, 5 शत्रु बैठा हो, मोती चाहे चन्द्र पांच का हो ।
रवि मिले कुल नष्टी होंगे, उपाये भला खुद[5] मंगल हो ।

1. माता पिता की सेवा, जिसका मौका कम ही मिलता है, नींव होगी ।

2. बुध जंगल की वर्षा और शनि पहाड़ी इलाके की वर्षा की तरह माया धन बढ़ता जाएगा । बेशक स्वयं पत्ते खा कर गुजारा करे । मगर अपने पीछे रेशम ही छोड़ जाएगा ।
3. वृ0 नं0 10 के समय शनि के काम या सामान (लोहा, लकड़ी) मंदा फल दे ।
4. जब चंद्र उत्तम तो ऐसा काम जो उसके बड़ों ने न किया हो, फायदा देगा । समुद्र सफ़र से मोती पैदा होंगे ।
5. सिर्फ अंधों को ही मुफ्त खुराक या भिक्षा देना खाना नं0 5 तथा 10 में ऐसी विष को धोखा देगा ।

हस्त रेखा :-

सूर्य के बुर्ज से रेखा चंद्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का संबंध न हो । चंद्र और सूर्य के बुर्जों के मध्य रेखा दोनों बुर्जों को मिलाती मालूम होवे, मगर मिलावे न । शराफत रेखा जब बीच में से ऊपर को झुकी हो । सूर्य रेखा दिल रेखा पर समाप्त हो ।

नेक हालत :-

रेशम के कीड़े की तरह स्वयं चाहे पत्ते खा कर गुजारा करे और इसी प्रकार जीवन पूरा कर दे, मगर उसे धन का फिक्र न होवेगा । मरते समय धन दौलत जमा रूप में छोड़ जाएगा । उसकी संतान के सदस्य करोड़पति होंगे । स्वयं दरयादिल, बुद्धिमान और हुकूमत का स्वामी होगा । चन्द्र बैठे हुए घर से माया लेगा धन की वर्षा या माया का अचानक मिलना बुध (जंगल धीमी धीमी देर से पाऐ) और शनि(पहाड़ जल्द जल्द और जोर की) बैठा होने वाले घरों पर होगी । अच्छा स्वास्थ्य धन का फव्वारा हर दम चलता रहेगा माता-पिता की सेवा (जिस का मौका कम मिलता है), फालतू धन जमा होने या करने की बुनियाद होगी । स्वयं धन या दौलत और रिजक के चशमा का हाल चंद्र और वृहस्पति बैठे घरों से मिलो । परिवार कबीला की हालत मंगल की हालत पर फैसला देगी ।

1. नई इजाद से लाभ का स्वामी हो । -जब चंद्र नं0 4 (चंद्र के बुर्ज पर सूर्य का सितारा) हो ।
2. राजदरबारी यात्रा से मोती पैदा होंगे । उत्तम व्यापारी हो । -जब बुध नं0 10 हो ।
3. धैर्य स्वभाव तथा नर्म स्वभाव का होगा । -जब मंगल कायम हो ।
4. अब वृ0 नीच न होगा । बल्कि पूरा सोना और वृ0 का उत्तम फल होगा । -जब वृहस्पति नं0 10 में हो ।
5. सोने-चांदी के काम मुबारक। इजाद या ऐसा काम जो कि उसके बड़ों ने ने किया हो फायदा देगा । समुद्र के सफ़र से मोती मिले । -जब चंद्र उत्तम, वृ0 नं0 4 और मंगल बद न होगा (चंद्र के बुर्ज पर वृ0 का सीधा खत या सूर्य रेखा हो जिस का मुंह सूर्य के बुर्ज की ओर या वृ0 के बुर्ज को हो)।
6. माता-पिता की ओर से पूरा भला और उत्तम खून भला लोग, भले काम, भाग्य का उत्तम ।
   -जब शु0, चं0 हर दो साथी (वृ0 के बुर्ज नं0 9 पर होगा -0-) ।
7. सफरों से लाभ, उत्तम व्यापारी। -जब बुध साथ-साथी हो।

मंदी हालत :-

माया के लालच या संसारी शर्म से हरामखोरों का बोझ गले लगेगा, जलती हुई लंका की आग से तंग होगा। चोरी की आदत, मंदे शौंक और लोगों की गांठ काटने से स्वयं अपना धन बरबाद और हर जगह हानि हो। हनुमान जी की दुम की आग से रावण की लंका में आग के शोले नजर आयेंगे, जिन के बुझाने के लिए सारी दुनिया का पानी पहिले ही समाप्त हो चुका होगा । यानि अपनी बरबादी, मरने से पहले अपने सामने ही सब कुछ जलता देख जाए मगर आँसु न बहा सके ।

1. संतान मंदी होगी । -जब पापी मंदे हो ।
2. दिन को नज़र आये रात को न दिखे (रतांध)। -जब शनि खाना नं0 7 में हो ।
3. सूर्य का सब प्रभाव मंदा होगा । चंद्र की मदद मिलने पर चंद्र के उपाय में शनि से तबाह की हुई या शनि की तबाह हुई चीजों को सूर्य के उपाय के जरिये या सूर्य की मदद से कीमती लाल (मंगल भी नेक) कर देगी। राहु के मंदे असर के समय ससुराल घराना से पापी ग्रहों की चीज़ें लेना जहर का सबूत होगा । -जब राहु मंदा 1, शनि नं0 1, वृ0 नं0 10 में हो ।
4. सोने की चोरी की घटनायें होंगी । शनि लोहे की लकड़ी के काम मंदा फल देंगे। मगर आग की घटनाएं गुमनाम तथा छुपे झगड़े सोने की चोरी की घटनायें होंगी । शनि लोहे की लकड़ी के काम मंदा फल देंगे। मगर आग की घटनाएं गुमनाम तथा छुपे झगड़े फसाद खराबी (धन की) मगर चंद्र (कपड़ा, चांदी), वृ0 (सोना) और माता-पिता संबंध, कार्य उत्तम फल देंगे।
   -जब वृ0 नं0 10 में हो ।
5. एक आँख से काना होगा मगर भाग्य उत्तम होगा । -जब मंगल नं0 10 में हो ।
6. नामर्द न अक्ल न गांठ बिन बुलाया मेहमान । -जब चं0 नं0 1-2, शु0 5, श0 नं0 7 हो ।

7. सब ही ग्रहों का (सिवाए मंगल के) फल मंदा होगा। ऐसे समय मंगल का उपाय जद्दी मकान के द्वारा करे। उदाहरणत: वहां यज्ञ, मुफ्त खुराक बांटने का या भिक्षा देना सिर्फ अंधो को ही देना उत्तम होगा, जो खाना नं0 5-10 दोनों की ज़हर धो सकेगें। उसी समय खाना नं0 5 में शु0 या पापी हो, खाना नं0 4 में, शु0 , बु0 या 2, 5, 9, 12 में या 3, 6 में ये ग्रह हों यानि

-जब चं0 , वृ0 या बुध से कोई एक भी सूर्य के सामने बैठे खाना 10 में हो।

खाना नं0 10 में वृ0..........शु0 , बु0 नं0 2, 5, 9, 12 में,

खाना नं0 10 में चंद्र ....राहु, केतु नं0 4 में,

खाना नं0 10 में बुध...........चंद्र नं0 6 या 3 में हो।

8 शादी और औलाद में गड़बड़, हर तरह की मंदी अवस्था होगी।

क्याफा - चंद्र के बुर्ज से सूर्य रेखा निकल कर बुध के बुर्ज के अन्दर चली जाये।

-जब चंद्र उत्तम, वृ0 नं0 4 मगर उसी समय मंगल बद हो।

सूर्य खाना नं0 5

परिवार तरक्की का मालिक , कीना भरा)

पक्षी मुर्ग बाल बच्चे जो पाले,
पड़ा सोचा तू किस वजह लंगर तू ड़ाले।

अपना दिल[1]न जब तक,	*(कीना) वफजून[2] से चूर हो।*
लिपटी हुई न आरजू,	*कोई कफन[3] से हो।*
ग्रह पांचो से[4] अपने घर का,	*या पापी 9-11 जो।*
सूर्य की वह होंगे प्रजा,	*हंस,[5] हुमा भी तारता हो।*
बेटे जन्म से हर दम फलता,	*कदर बेशक न करता हो।*
पाँच पहले घर शत्रु तरसता,	*राजसभा रवि भरता हो।*
स्त्रियां मरती गुरु दस बैठे,	*लड़के श0 नं0 3 मारता हो।*
गुरु रवि जड़[6] शत्रु कटते,	*संतान भला न होता हो।*
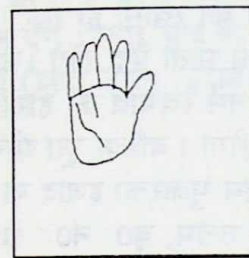
1 चंद्र या खाना नं0 4,
2 मंदा केतुया मंगल बद शत्रुता दूसरों से ८हस्द,
3 खास कर जब वृ0 उत्तम हो।
4 वृ0 (9-12), सूर्य (कायम), चं0 (4), शु0 (2-7), मं0 (1-8), बुध (3-6), पापी रा0, के0, श0 (9-11)।
5 हंस, मोती खाने वाला पक्षी (हुमा) एक ऐसा जानवर माना गया है कि वह जिस के सिर से गुजर जाए राजा बन जाए।
6 सूर्य की जड़ खाना नं0 1-5, वृ0 की जड़ खाना नं0 9-12।

हस्त रेखा

सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के बुर्ज पर हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम होवे और सूर्य का बुर्ज कायम हो। स्वास्थ्य रेखा बुध से चल कर हथेली में खाना नं0 11 तक समाप्त होवे।

सूर्य आत्मा, जिस्म और स्वास्थ्य का स्वामी है। इसलिए इसकी दूसरी रेखा का नाम स्वास्थ्य रेखा है। स्वास्थ्य या तरक्की रेखा हथेली मे श0 के हैडक्वाटर से ऊपर सूर्य की ओर बुध के बुर्ज को जाती है। या सूर्य का प्रभाव बुध (दिमाग) में पंहुचाने लगती है। इस रेखा का हाथ में न होना कोई बुरा प्रभाव नहीं देती बल्कि उत्तम स्वास्थ्य की निशानी है और हाथ में इस रेखा का होना उत्तम स्वास्थ्य के इलावा आयु, सिर और दिल रेखा आदि के टूट फूट के बुरे असरों से बचता है। स्वास्थ्य रेखा बुध, चंद्र और मंगल बद को हथेली से जुदा करती है। जिस जगह स्वास्थ्य का आखिरी या उम्र रेखा का आखिरी समय या खातमा या मौत की जगह है।

नेक हालत

औलाद के पैदा होने के दिन से रोटी पानी की बरकत होगी और पूर्वी दीवार में रसोई सू0 नं0 5 का उत्तम फल देगी। दो धारी तलवार, सफा दिल तो सब उत्तम, नहीं तो भेड़िये ने कान से पकड़ कर भगाई हुई भेड़ की तरह का मंदे भाग्य का साथ, स्वयं जलता होगा (मगर राजदरबार, संतान फिर भी मंदे होंगे)। औलाद की बुद्धि और परिवार की तरक्की का स्वामी, स्वयं गृहस्थी होगा। राजा होगा तो परोपकारी होगा। लेकिन यदि साधु भी हो तो लम्बी आयु का स्वामी होगा। यानि उसे यदि राजा न तारे तो साधु अवश्य तारेगा। बकरी तथा भेड़िये दानों एक ही जगह आराम से रखने की शक्ति वाला होगा। बुढापा सदा उत्तम होगा।

ग्रह पांचो से अपने घर का, पापी 9-11 जो
सूर्य की वह होंगे प्रजा, हंस हुआ भी तारता हो।

-जब मंगल नं0 1-8, बुध 3-6, पापी नं0 9-11(रा०, के0 ,श0) हो।

2 हंस हुआ भी तारता होगा। जिस तरह हंस मोती खाने वाला हो, उसी तरह अब ऐसा व्यक्ति राजा समान हाकिम और अच्छी हालत का स्वामी होगा जिस का रिजक कभी बंद न होगा।

-जब वृ0 नं0 9-12, चंद्र नं0 4, सू0 कायम हो, सूर्य की तरक्की रेखा कायम हो शुक्र खाना नं0 2-7 में हो)।

3 हर तरह की बरकत होगी। औलाद की उन्नति होगी। सूर्य शनि का झगड़ा न होगा बल्कि एक दूसरे की सहायता करें। माता पिता का सुख लम्बा और उत्तम होगा। -जब शनि नं0 11 में हो।

4 मिसल राजा इक्बाल मंद होगा। -जब चं0 नं0 4 में हो।

5 सूर्य अब शत्रु ग्रह को भी सहायता देगा जो घर नं0 1-5 में हो। राज दरबार में या हर जगह उस का मान होगा।

-जब शत्रु ग्रह नं0 5 में हो।

6 कोई भी आरजू कफन में लिपटी बाकी न होगी। दिमागी खाना नं0 20 स्वयं की बुद्धि नं0 22 बड़ों के मान का स्वामी होगा। बुध का सारी उम्र जुदा फल न दिखेगा, जिस तरह सूर्य बादलों के बिना होता है, फल देगा। -जब वृ0 उत्तम हो।

मंदी हालत

1 विवाह एक से अधिक, स्त्री पर स्त्री मरे। -जब वृ0 नं0 10 में हो।

2 लड़के पर लड़का मरे। धुंआ धाड़ दु:ख का रद्दी पहाड़। संतान पर माली खराबी का बहाना होता है और संतान मंदी या बरबाद हो। -जब शनि नं0 3 में हो।

सूर्य खाना नं0 6

(आग जला, धन से बेफिक्र भाग्य पर संतुष्ट)

जो तरसे न रोजी को, पत्थर का कीड़ा,
तो माथे की तेरी को, धो कौन देगा।

न जरूरी राज दौलत, न हुआ निसंतान हो।
चलन मंदा लाख स्त्री, गुजर उत्तम शर्त हो।
दीवार तोड़ी न पिछली अपनी, न ही भली हठ धर्मी हो।
रस्म पुरानी कायम चलती हो, सूर्य उत्तम सब उन्नति हो।
उम्र रवि[1] पर बाण न रुकता, चंद्र बुरा पांच पापी हो।
शनि 12 पर शुक्र मरता, पिता मरे दो खाली जो।
10 मंगल हो लड़के खाता, राज गाले बुध 12 का।
पापी दौरा जो तख्त का करता, ग्रहण लगा हो भाग्य का।
तीन कुत्ते गर दुनिया पाले, केतु पालन चाहे[2] तख्त का हो।
पाताल अग्नि से लड़का निकले, लाख पापी चाहे मंदा हो।
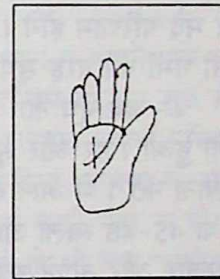
1. सूर्य के आम दौरा की आयु 22 या 11 साला है।
2. राहु या शनि नं0 1(मंदा हाल), केतु नं0 1-7 सब कुछ उत्तम होगा।
   केतु(संतान, मामा) पर मंदे असर के समय, बंदर(सूर्य) को सूर्य की चीजे (गुड़) देना शुभ होगा। वरना बुध का उपाय सहायता करेगा।

हस्त रेखा - **सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो।**

नेक हालत

अब मंगल नं0 4 होता हुआ भी कभी मंगल बद या मंगलीक या मंदा न होगा। जिस तरह आग तथा पत्थर में कीड़े को भी रोजी मिलती है उसी प्रकार ऐसे प्राणी के माथे की लकीरों को धोकर भी कोई उसका रिज़क बंद नहीं कर सकता। इस पर वह अपने भाग्य का भरोसा करने वाला होगा। राजदरबार की दौलत से बेफिक्र मगर आग की तरह जल्दी गर्म हो जाने वाले स्वभाव का होगा। दिमागी खाना नं0 23 रसूख पसंदगी का स्वामी होगा। स्त्री और दूसरी चीजें सुंदर होगी। मगर उसे उस की खूबी या सिफत की परवाह न होगी। चाहे लाख स्त्रियों का मिलापी, चलन मंदा मगर धन की कमी न होगी, रिजक मंदा न होगा। राजदरबार का संबंध उत्तम। जन्म नानके के घर या पैतृक घर से बाहर होगा। जन्म के समय घर वार सभी कुछ राजस्थान (रेतीला) होगा। एक बार तो अवश्य कार्य में गिरावट आएगी जो संतान के जन्म से ठीक हो जाएगी राजदरबार कई बार छोड़ कर फिर मुलाजम होगा, मगर लड़के के दिन जिस जगह की रोजी से संबंध चल रहा होगा सदा के लिए उसी जगह टिक जाए। अर्थात् लड़के के जन्म से या तो काम न बदले या बदले तो आगे से स्थिर हालत का हो जाएगा और जीवन भर साथ देगा। संसारी तीन कुत्तों में से किसी की पालना सहायक होगी।

जवाई लड़की के पति) को लाभ होगा जो सूर्य को उत्तम करेगा, जंवाई लड़की के पति) को लाभ होगा।
1. घर मे पुराने असूलों को चलाए रखना सहायक होगा जो सूर्य को उत्तम करेगा, जंवाई लड़की के पति) को लाभ होगा।
-जब सू0 उत्तम और जागता हो यानि नं0 2 में सूर्य के मित्र चं0, मं0, वृ0, हो।
2. राज दरबारी उत्तम, नर संतान जरूर पैदा होगी संतान के योग चाहे लाख मंदे हों। संसारी तीन कुत्तों की पालना सहायक होगा। बिना उपाय ही 48 साला आयु के बाद सब बुरे दिन अपने आप ही ठीक हो जाऐंगे।-जब केतु नं: 1-7 हो या जब कभी 1-7 आए।

मंदी हालत

अकेला बैठा सूर्य इस घर में अपने शत्रु ग्रह केतु की चीजें (नर संतान और उसका सुख, मामा-नाना, नानी-साहूकारा, रफतार, खरगोश, चिड़िया का नर) पर अपना नेक प्रभाव बंद कर देगा। मकान की पिछली पश्चिमी दीवार तोड़ कर रोशनी करना या हठदर्मी का असूल उत्तम बनाना, सूर्य की आग से उस के शरीर को जला देगा। रात का आराम, चारपाई और बुढ़ापे में नजर का सहारा या लड़का मंदा होगा। केतु की जानदार चीजें (संतान या मामा) और स्वयं अपने स्वास्थ्य पर मंदे प्रभाव के समय सूर्य की चीजें गंदम (बाजरा) देना शुभ होगा। केतु की बेजान चीजों के मंदे प्रभाव समय बुध को नेक कर लेना सहायक होगा। सूर्य के अपने मंदे प्रभाव के समय (राजदरबार की खराबियों) चंद्र की चीजें (घोड़ा, चांदी दरिया का पानी) कायम कर लेना या चंद्र नष्ट कर देने से यानि शाम की रोटी के बाद आग को दूध से बुझाना सहायक होगा।
1. 22 साला (सूर्य की) आयु में पिता और टेवे वाला दोनों में से सिर्फ एक ही सरकारी आमदनी का स्वामी होगा और यदि दोनों ही किसी कारण एक साथ नौकरी पर हों तो एक शहर या जगह में एक साथ रहकर सरकार से धन नहीं ले सकते। जुदा ही रहेंगे। टेवे वाले के लिए राज दरबार कई बार खुलता और बंद होता है। पिता की आयु समाप्त करने के लिए वह पिता पर भारी होगा। जिसके लिए धर्म स्थान में कुत्ते की खुराक की चीजें देते रहना सहायक होगा। पिता की आयु टेवे वाले की 5-11.1/2, -23 साल से शक्की होगी। इसलिए धर्म स्थान में कुछ देते रहना चाहिए, ताकि पिता के सेहत, आयु, धन बचा रहे।
- जब खाना नं- 2 खाली हो।
2. अग्नि बाण, सूर्य की आयु 11-21-22 पर मंदा प्रभाव होगा। -जब चंद्र बुरा और पापी नं0 5 हो।
3. अमूमन स्त्री भाग और स्त्री बरबाद होगी। -जब शनि नं0 12 में हो।
4. लड़के पर लड़का मरता जाए। घर में किसी तरह भी जमीन की तह में अन्दर रखी रहने वाली आग न हो तो बचाव होगा। सोते समय चंद्र की चीजे़ (सिरहाने)रख कर प्रात: लोगों मे बांटना सहायक होगा। -जब मं0 नं0 10 में हो।
5 राजदरबार गर्क और मंदे परिणाम होंगे। रक्तचाप की बिमारी मंदा होगी। गर्मी के दिनों में दुपहर के समय बिल्कुल सिर पर आए हुए सूर्य की तेज धूप की गर्मी की तरह सूर्य की आग राजदरबारी संबंध में जलन पैदा करती है।
-जब बुध नं0 12 में हो।
6 भाग्य को ग्रहण लगा हुआ। हर और सूर्य की मंदी रोशनी होगी जन्म समय माता पिता की हालत मंदी हो। मगर रा0 श0 की आयु या वर्ष फल में खाना नं0 1 में आने के समय एक बार जरूर ही ग्रहण जैसा मंदा समय आएगा, जो संतान के दिन या केतु नं0 1-7 में आने के समय या 45-48 साला आयु मे समाप्त होगा। -जब रा0 या श0 नं0 1 में हो।
7 सूर्य ग्रहण या राजदरबार और अपने स्वास्थ्य की मंदी घटनाओं के समय धर्म स्थान में दूसरे लोगों की खैरायत की हुई चीज अपने पास रखना सूर्य की रोशनी को बहाल कर देगा। -जब रा0 नं0 2 शनि नं0 8 में हो।
8 स्वयं या स्त्री एक आंख से काना हो। -जब चं0 नं0 12 में हो।
9 जन्म अपने घर घाट से बाहर या नानके घर होगा। जद्दी मकान की दीवार का पिछला भाग फोड़ कर रोशनी कर लेने से भाग्य का उजाला न होगा, बल्कि अग्नि बाण के भड़कते शोलों की आग से सारा ब्रहाण्ड भरा होगा। जद्दी रस्मों को बंद कर देना कभी आबादी या और खुशहाली न देगा। -जब राहु नं0 1, केतु नं0 7 में हो।

सूर्य खाना नं0 7

(कम कबीला, डरता डरता मर रहे)

जबान नर्म हाकिम, व्यापारी हो जलता।
जमाना क्यों है उसे पामाल करता।
घर पहिले के खाली होते, सातवां फौरन सोआ।
दिन उसी ही सूर्य निकले, 8 जब दूजे होया।

नीच सूर्य हो, ना देना,	माया ज़र परिवार हो ।
बुध गुरु या शुक्र उम्दा,	2 भलां तीन पांच जो ।
रिज़क बाहर सारी उम्र,	मौत आखिर घर में हो ।
गुजरते बुध आयु अपनी,	खेले माया ज़र में वो ।
गुरु चंद्र या मंगल दूजे,	वजीर बुलंदी बनता हो ।
शत्रु मगर जब घर ही बैठे,	साथ पराई ममता[2] हो ।
गुरू[3] शुक्र व पापी राजा,	जुदा हुआ बुध नष्टी हो ।
मौत मारे[4] घर इकदम इतना,	मिले[5] कफन न दफनी हो ।
हाल गृहस्थी सूर्य माया,	सोने से घर मिट्टी पाया ।
जन्म समय था लाख जो साया,	बोलते बोलते आग जलाया ।
गुरु मंगल उस घर से भागे,	शुक्र रहे ना चंद्र जागे ।
पापी ग्रह भी गिने अभागे,	मिली मदद बुध सब ही जागे ।
न धन रहे धनाढय,	न गुल रहे गुलजार हो ।
सब माल तथा जान बरबाद हो,	गर बुध का ना दान साथ हो ।

1. 13, 29, 41, 45, 64, 75, 86, 98, 114 साला आयु में ।
2. स्त्री रहे तो लाजवन्ती रहे वरना वह और उसका घराना ससुराल सब बरबाद हो ।
3. तपेदिक की बिमारी में पुरुष स्त्री दु:खों के पुतले होंगे जो हद 34 साल आयु तक का समय मंदा होगा ।
4. तपेदिक, आत्महत्या, आग की घटनाएं, गबन आदि बहाने होंगे । गृहस्थ से तंग होकर भागे हुए फकीर का सा भाग्य होगा । बेहद गुस्सा, खुदगर्जी जिस की नींव होगी ।
5. जमीन मे तांबे के चौकोर टुकड़े दबाना जब गृहस्थी हालत मंदी हो, नहीं तो चन्द्र नष्ट (दूध से आग बुझाना) का उपाय सहायक होगा-जब शनि का टकराव हो रहा हो।

हस्त रेखा :- *शुक्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज को। शुक्र का पंतग हथेली पर कायम हो। खाना नं- 7 जो बुध का बली घर है। बुध जुदा प्रभाव नहीं करता।*

क्याफा :

सेहन गली के साथ होगा यानि घर के साथी गली बाजार और मकान के मध्य सिर्फ खाली दीवार होगी। जिस पर कोई छत न होगी। गली और सेहन की बीच की दीवार छोटी ही होगी बाहल गली में खड़े हों तो दीवार के साथ सेहन के साथ लगता हुआ मकान नज़र आएगा। तो सूर्य नः 7 का प्रभाव देगा।

	दी दीवार
क सेहन	
ब बाहर से	दे देखें सड़क

नेक हालत

दिमागी खाना नं 24 होंसला, मुझ से दूसरा अपनी शान न बढ़ाने पाये का आदी होगा। बुध की 34 साला आखिरी हद बन्दी गुजरने पर माया ज़र और परिवार ही हद शुरु होगी। स्वयं अपनी जान तथा जिस्म पर सूर्य का बुरा असर न होगा, बल्कि टेवे वाले का अपना परिवार उत्तम तथा फिर आगे औलाद के दिन से माया दौलत की बरकत, मगर माता पिता, कुनबा व ससुराल खानदान के राज दरबारी संबंध में सूर्य का बुरा असर घास पर आग पड़ी हुई की तरह बुरा ही होगा। सूर्य कभी मंदा ना होगा। सब कुछ उत्तम होगा मर्द स्त्री दोनों की आयु लम्बी होगी। फकीर नं: 3 न होगा। (प्रथम तो बद किस्मत ही हो तो भी बना फकीर होगा), सफर से जिन्दा जरुर वापिस आएगा और उँचे सूर्य की तरह किसी सवाली को अगर भिक्षा देगा तो चांदी या मोती ही देगा। मगर मिट्टी खाना नं: 7 शुक्र गृहस्थी मिट्टी का घर न होगा। बेशक कितने दुख देखने पड़े फिर भी अपने में एक उदाहरण पुरुष होगा। स्त्री का सुख 15 साल ही हल्का होगा, स्त्री रहे तो लाजवन्ती के फूल की तरह उंगली रखते ही मुरझा जाने वाली और अपनी इज्जत स्वयं बचाने वाली होगी, तो जीवन भर आराम से रहे। वरना वह न रहे अगर बद हो फिर भी रहे तो उसका घर (ससुराल तरफ या शुक्र साथी ग्रह जन्म कुण्डली के हिसाब) ही न रहे। फिर भी रहे तो संसारिक धन दौलत माया लक्ष्मी की जगह मन्दी मिट्टी या पराई ममता (गैर मुसीबत) ही गले लगेंगी। फिर भी रहे तो उस घर में (टेवे वाले का खानदानी या शुक्र बैठा होने का घर, जन्म कुण्डली के हिसाब) कोई न रहे। बहरहाल ऐसा व्यक्ति बुध की आयु 17 से 34 से इकबालमन्द होगा।

1. चाहे रिज़क सारी आयु परदेश में होगा, मृत्यु अपने जद्दी मकान पर होगी। -जब नं: 2-3-5 या बुध गुरु या शुक्र उत्तम हो।
2. स्त्री भाग हल्का, मगर मंदा नहीं गिनते, पराई ममता गले लगी रहे। - जब शनि, बुध केतु नं: 2 में हो।
3. ऊंचे दर्जे का मन्त्री होगा। - जब वृ:, मं:, या चं: नं: 2 में हो।
4. आमदन धन अच्छा मगर अकल की शर्त नहीं। - जब बु: उच्च या बुध नं: 7 या मंगल की सहायता नं: 7 में हों।

मंदी हालत

घर की मंदी हालत उस के जन्म के दिन से बोलना सीखते-सीखते मंदी (हूंज बुहारी की तरह) और जन्म दिन से बुआ फूफी बरबाद । टेवे वाले में रुहानी नुक्स आम होंगे । लड़का गूंगा या पागल होवे। इस घर में अकेला बैठा हुआ सूर्य अपने शत्रु शुक्र की चीजे(शादी या गृहस्थ का फल, स्त्री की बाहर की शान, जिस्म की जिल्द, काँसी के बरतन, चरी ज्वार, सफेद गाय, हर दो प्यार) पर अपना अच्छा प्रभाव बंद कर देगा ।

1 नर्म जुबान हाकिम और गर्म स्वभाव दुकानदार होने की हर दो हालत में टेवे वाला बरबाद ही होगा । बेहद गुस्सा, दाल सब्जी मे हद से ज्यादा नमक खाना, मन पसंदी, मंदी प्रसिद्धि बरबादी तथा मंदी हालत की निशानी है । परिवार की कमी और सोने की जगह घर मिट्टी से भरता जाए । आत्म हत्या तक की सलाह मगर हौंसला वा मुकाल (वृ0 का उपाय सहायता करे), यदि सब ग्रह मंदे, स्त्री सु:ख 25 साल ही हल्का होगा ।

2 कोई न कोई स्त्री दुखी हो कर उस के गले लगती रहेगी। कोई स्त्री (गृहस्थी बोझ बनी रहेगी) उसकी अपनी स्त्री भी अपने माता-पिता को हर दम दुखी देख कर रोती रहेगी और हो सकता है कि ससुराल बाकी ही न रहे, मगर खुद इकबाली रहे । पराई ममता गले लगे । -जब शु0 या पापी नं0 2 में हो ।

3 घर में इतनी मौत हो कि न कफन मिले और न ही लाशों को दफनाने वाला या जलाने वाला ही मिले । राजदरबार में खरबीयाँ दमा, तपेदिक या स्त्री पुरुष दुखों की जोड़ी, मंदा जमाना हद 34 साला आयु तक होगा । मंदी हवा और जहरीली हवा हर गृहस्थी से संबंधित साथी का दम घुटता हुआ, मरीज मे मर्ज का पता, हकीम के घर का पता न चले । पितृ ऋण का बोझ धोखा देता रहे। आत्महत्या, आग की घटनाएं, गबन गृहस्थ से तंग आ कर भागे हुए फकीर की तरह का जीवन भाग्य होता । दीवानगी दिमागी खराबियों तक की नौबत चली जाए । बदमिजाजी, खुदगर्जी, बेहद तबाही का गुस्सा। राजदरबार की कमाई तबाह हो।

-जब गु0 , शु0 या पापी नं0 11 और बुध किसी ओर घर में बरबाद हो ।

4 लोगों में अविश्वसनीयता (बेइतबारी) । -जब बुध नं0 9 में हो ।

न धन रहे, धनाढ्य हो, न गुल रहे गुलजार हो ।
सब मालो जान बरबाद, चाहे कितना भी घरबार हो ।

5. जन्म समय लाख हजारी, बोलना सीखने तक या टूं-टूं करने पर ही कागज पर फैलने वाली स्याही की भांति भाग्य का मंदा हाल होगा । -जब बुध का साथ या मदद न हो ।

6 फुलबहरी होगी । -जब मं0 या शनि नं0 2-12 और चं0 नं0 1 में हो ।

7 नर्म जुबान का अफसर, गर्म जुबान का दुकानदार हो तो बरबाद । दोहता पोता की पैदायश पर स्वास्थ्य मंदा होगा ।
-जब के0 नं0 1 या बु0 नं0 11 में हो ।

8. सर्दी के मौसम में धूप मे तपस कम होने की तरह सूर्य का प्रभाव सोया हुआ या मंदा ही होगा और उसी दिन ही उत्तम होगा जिस दिन खाना नं: 8 का ग्रह नं: 2 में आ जावे। आयु के 13, 29, 41, 54, 64, 72, 78, 86, 98, 119 साल में ।
- जब खाना नं: 1 खाली हो।

उपाय

संसार की जाहिरदारी उत्तम रखना शुभ। दुकानदारी नर्मी की, अफसरी गर्मी की चाहे फर्जी ही हो, नहीं सूर्य ही तेरी अपनी मिट्टी उड़ा देगा। अगर शनि का टकराव आ जाए यानि शनि नं: 1 में आ जाए तो चन्द्र नष्ट (शाम की तेरी रोटी पकाने के बाद चूल्हे की आग को दूध से बुझाना) करने से सहायता होगी। माली गृहस्थी या केतु (नर संतान) की मंदी हालत के समय जमीन में तांबे के चौकोर टुकड़े दबाना सहायक होगा या थोड़ा मीठा मुंह में डाल कर या वैसे ही पानी के कुछ घूंट पी कर काम करना शुभ होगा। स्याह रंग या बिना सींग वाली गाए की सेवा करना शुभ फल देगा, उसका रंग देखना जरुरी है, सफेद रंग (शुक्र दही रंग) अशुभ, स्याह रंग (शनि रंग - लोहे रंग) शुभ, बगैर सींग गाय शुभ रहेगी। मगर लाल रंगे (सूर्य या मंगल शक्की नेक/बद) पर होगी। इसके अतिरिक्त रोटी खाने से पहले भोजन का टुकड़ा आग में आहुति रूप डालना गृहस्थ में सहायता करेगा।

सूर्य खाना नं: 8

(तपस्वी राजा, सांच को आंच)

सच्चाई में ब्रह्माण्ड जब तुम से कांपे।
तो फिर झूठ दुनिया का क्यों तू है ढापें॥

राजा तपस्वी जिस घर बैठे, मौत भागी खुद कोसों हो।
मर्द नामर्दी ब्रह्माण्ड जागे, जिन्दा करेगा मुर्दों को।
उम्र रवि से राज तरक्की, भण्डारी दौलत ज़र बनता हो।
हालत पानी खुद किस्मत, लेख साथी बुध होता।
सगे दुनिया दिलदादा चोरी, लग्न बहुरूपी गन्दा हो।
इश्क तबाही करता ऐसी, नाम रहे न लेवा को [1]
शनि तीसरे गुरु हो मन्दा, दरवाज़ा दक्षिण बद मंगल हो [2] ।
पांच पहले घर शुक्र बैठा, उम्र छोटी जले जंगल वो।
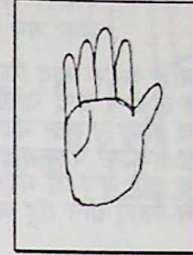
1. को - कोई।
2. थौड़ा मीठा मुंह में डाल कर पानी पीना सहायक होगा।

हस्त रेखा:-

सूर्य के बुर्ज से रेखा मंगल, बद को, भाग्य रेखा न हो, सूर्य रेखा न हो, या भाग्य रेखा और सूर्य रेखा दोनों न मिले।

नेक हालत:-

स्वयं का भाग्य का हाल पापी ग्रहों की अच्छी या बुरी हालत पर फैसला देगा। तेरी सच्चाई की आग सारे संसार की बदी की लहर को जला देगी और तेरे छुपे शत्रुओं को भी जला छोड़ेगी। तपस्वी राजा जिससे मौत भी कोसों दूर भागती हो यानि उसके होते हुए उसके खून के किसी भी रिश्तेदार की मौत नहीं हो सकती। जब मौत हुई होगी वह इधर-उधर बाहर गया हुआ होगा। दिमागी खाना नं: 25 पापी ग्रहों से मुश्तरका (बहुरूपियापन) नकल करने की शक्ति का मालिक होगा। सूर्य की आयु से (22 साला आयु) 22 साल तक राजदरबार में तरक्की, धन दौलत का भण्डारी होगा। सूर्य की गर्मी की आग अब जलाने की बजाए आकाश से वर्षा करने लगेगी। उजड़े मकानों को बसाने वाला पानी भरे बादलों को बरसा लेने वाला पत्थर (शनि) से आग, आग से पानी (मंगल नं: 8 का मालिक, मं: अब सूर्य की सहायता से मंगलीक न होगा) और पानी से मिट्टी (नं: 8 चलाया करता है शुक्र को जिस घर का नं: 7) है या सारा संसार पैदा करने वाला होगा। मारक स्थान के बिच्छू मं: बद के जहरीले जले हुए पत्थरों (शं:) से संखिया और संखिया से हिजड़ों और नामर्दों को जवान मर्द गिना देगा। बल्कि उसके होते हुए मुर्दे भी जीवित हो जाएगें। जब तक यह संसार के तीन कुत्तों में से कोई एक कुत्ता या चोरी करने वाला न हो।

1. मंगल बद और शनि के मंदे असर की बजाए अब सब फल नेक होगा। दोस्त ग्रहों और स्वयं सूर्य का फल हर और हर तरह उत्तम होगा। - जब मित्र ग्रह नं: 1 या साथ साथी या मंगल नेक हो।

मंदी हालत :-

इस घर में बैठा अकेला सूर्य, शनि की चीजें (पुड़पड़ी, स्त्री लिप्सा, बिच्छू, ज़हरीले जानवरों) की सहायता से बुरा प्रभाव देगा। ख्याल रखें कि कहीं वह प्यार जिसने अक्सर कौमों को खाकर छोड़ा तेरी तबाही के सामान न इकट्ठे कर रहा हो। यदि स्वयं बड़ा भाई या गाय की सेवा करने वाला हो तो लम्बी आयु की निशानी होगी। सफेद गाय मंद भाग्य होगी। दक्षिण के दरवाज़े का साथ मौतों की पहली निशानी होगा। सगे दुनिया (दुनिया के तीन कुत्ते या किसी एक हालत का भी जो हो) या चोरी का प्यारा (दिल दादा) हो। बहुरुपियापन की लगन या शौक हो या गंदे प्यार में गलता हो तो ऐसा तबाह होगा कि न खुद उसका निशान बचे और न ही नाम लेवा हो।

1. उम्र छोटी और जंगल में जलता होगा जब दक्षिण के दरवाज़े का साथ हो और जब बड़ा भाई न हो और टेवे वाला जब अपने बड़े भाई से जुदा हो या उल्ट हो तो मंगल बद होगा। - जब शनि खाना नं0 3, वृहस्पति मंदा खाना नं0 1-5 में या मंगल बद हो।

क्याफा :- **शुक्र का पतंग, काग़ रेखा होगी।**

2. काग़ रेखा का मंदा फल हो। - जब शुक्र खाना नं0 1-5-10 में हो।
3. दूसरों को तो मौत तक से बचाये मगर खुद अपनी किस्मत के मैदान में बहुत हल्का (मंदा ही होगा)। - जब वृ0 मंदा हो।

4. माली हालत में हल्का मंदा ही होगा। – जब बुध खाना नं0 2 में हो।

सूर्य खाना नं0 9

(लम्बी उम्र, भारी कबीला, खानदानी परवरिश वाला, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य)

उम्र लम्बी में पाप तो खूब बढ़ेगा।
मगर धर्म को क्यों तू ऊँचा करेगा।।

खबीश कदर[1] खुद किस्मत अपनी, सात पुश्त तक तारता हो।
दान लेना न चन्द्र चांदी, न ही मुफ्तखोरी पालता हो।
पांच तीजा न शुक्र मंदा, न ही बुरा अब चन्द्र हो।
हाथ हकीमी बरकत दुनियां, राजगुरु चाहे मंदिर हो [2]।
साथ दृष्टि बुध जो मंदा, जलता सूर्य खुद अपना हो।
पांच पहले तीन राहु जो बैठा, ऐशी, धर्म में कच्चा हो।
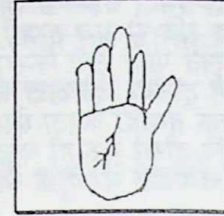
1. खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा मगर इनाम न मांगेगा। परोपकार का असूल अपने घर से चला कर पूरा करता रहेगा।
2. ऐसा प्राणी जिसके खानदान में उसके जन्म से पहले किस्मत की हर तरफ मंदी हालत थी, अब उसके जन्म से कुल खानदान का पुराना मंदा समय खत्म हो गया और उनकी किस्मत का ग्रहण हट कर सब तरफ उत्तम रोशनी (भाग्य) और अच्छी (काम में आने वाली) आग पैदा होगी।

हस्त रेखा :- *किस्मत रेखा की जड़ पर चार रेखाई शाखा हो।*

नेक हालत :-

उम्र लम्बी, दिमागी खाना नं0 26 मसखरगी हद से ज्यादा बेवकूफ कर दे, भोलापन सदा नेक होगा और रोशनी का रास्ता हमेशा सहायक होगा, दृढ़ निश्चय उत्तम देगा। बढ़ता हुआ कबीला पोते-पड़पोते सब का सुख देख कर जाएगा। खानदानी पालना करने वाला किसी का कुछ बने या न बने मगर वह अपने खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा, मगर बदले में कुछ न मांगेगा और न ही खुद कभी रोटी से भूखा मरेगा। मगर वह अपनी सात पुश्तों का रखवाला और सहायक होगा। परोपकार का असूल अपने घर से चलाकर कुल दुनिया के लिए पूरा कर देगा। राजदरबार और वृ0 से संबंध चाहे मंदे ही क्यों न हो मगर उसके हाथ में इलाज की बरकत तो ज़रूर होगी। सात पुश्त तारने वाला होगा। अब खाना नं0 तीन बहन-भाई, पाँच अपनी संतान का प्रभाव उत्तम होगा। शुक्र चाहे कुछ हल्का मगर चन्द्र अब बुरा असर न देगा। माता-पिता की रोटी कमाने का ढंग (धन्धा) अमूमन सरकारी नौकरी होगी। खर्चा कबीलदारी के कामों में बहुत होगा। खाना औलाद भी अब हरा-भरा होगा चाहे इसमें पापी या मंदे ग्रह बैठे हों।

1. उसका खानदान, उससे पहले उसके बाप-दादा और स्वयं अपनी लम्बी उम्र का ठेकेदार होगा।
   – जब दोस्त ग्रहों का ताल्लुक हो।

क्याफा *किस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखी खत।*

2. किस्मत अमूमन जवानी (34 साल की आयु के बाद) में जागेगी – जब बुध खाना नं0 5 में हो।

मंदी हालत :-

चन्द्र की चीजें खासकर चांदी का दान लेना, मंदे चन्द्र की निशानी है और मुफ्तखोरी से सूर्य छिपने का समय (गिरावट का समय) निकट होगा।

1. सूर्य का मंदा प्रभाव ज़ोर पर होगा। घर में पीतल के बड़े-बड़े पुराने बर्तन बुध का ज़हर हटाएंगे
   – जब बुध का साथ या बुध खाना नं0 3-5 में हों।

2. हद से ज्यादा गर्म या नर्म होने से बर्बाद होगा। धर्म में कच्चा और मुफ्खोर ऐशी पट्ठा होगा –जब राहु खाना नं0 1-3-5 में हों।

सूर्य खाना नं0 10

(सेहत मान धन की मालिक मगर वहमी)

अतायत जो बड़ों की करता चलेगा।
ज़माने में तेरा कुछ बन के रहेगा।।

बड़े बुर्जुग आला (उम्दा) चाहे लाखों उसमें, *अकेला रवि न उत्तम हो।*
रंग शनि, राहु [1] सिर जब नंगे, *लेख नसीबी रोता हो।*
गुरु, मंगल न जिस दम साथी, *पांच-छठा मंद चन्द्र हो।*
छठे-सात चाहे हो कोई पापी, *अल्पायु दुःख मंदिर हो।*
4 शुक्र टेवे मंदा, *उम्र छोटी पिता मरता हो।*
उच्च कायम 2 चन्द्र बैठा, *सुख 24 न माता हो।*
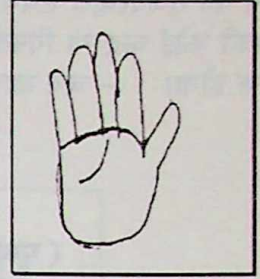
1. सफेद पगड़ी (शर्बती रंग) उत्तम मगर सिर पर काले, नीले रंग या नंगा सिर हानिकारक होगा।

हस्त रेखा :- सूर्य रेखा शनि के बुर्ज पर हो।

नेक हालत :-

मान स्वास्थ्य और धन का मालिक, मगर एक वहमी आदमी होगा। मगर सिर पर सफेद या हल्के शर्बती रंग (जो काले, नीले न हों) की पगड़ी या टोपी उत्तम होगी।

मंदी हालत :-

इस घर में अकेला बैठा सूर्य अपने शत्रु शनि की चीज़ों को (जद्दी विरासत पिता या उनका सुख, नज़र, उम्र तक काली, तेल, लोहा, लकड़ी, भैंस, बाल, मगरमच्छ, तीन साल रहने का घर, पिजड़, घुटना) पर अपना नेक प्रभाव बंद कर देता है। जब तक ससुराल का साथ या उनके घर ही रह पड़ना या राहु से संबंधित काम या चीज़ों का साथ हो तो राहु सदा ही सूर्य ग्रहण या मंदा कच्चा धुआँ पैदा करता रहेगा। अपने नुक्स का ढिंढ़ोरा पीटना और मुसीबत में दूसरों के आगे रोना मंदे समय की और बर्बादी की पहली निशानी है। चाहे कोई दर्जा विद्या या डिग्री हासिल की हो और उसके बड़े बेशक कितने उत्तम भाग्यवान हो मगर वह नंगा सिर रहने का आदी होने पर आमतौर पर चिल्लाता ही होगा और उसके लिए हर जगह नाकामयाबी ही होगी। पश्चिमी दीवार में रोशनी या पश्चिमी दीवार (अपने मकान की), पड़ोसी संतानहीन या राहु की लानत से जलता हुआ होने, मंदे सूर्य की आम निशानी होगी। राजदरबार में स्याही से सिफारिशी कागज़ स्याह करके कई बार देखा और देखा न उसे कभी पार देखा बल्कि नर ग्रह की सहायता (साथ-साथीपन) के बिना न उसे दरजहां देखा। फिर भी देखा सूर्य की आग की गर्मी और अपने स्वयं में गुस्सा के ज़ोर से मंदे हाल वाला देखा और औलाद तबाह देगा। किस्मत अपनी के लेखे में न कभी शाह देखा फिर शाही लिस्ट में भी न उसे लिखा देखा। फिर मगर देखा तो सफेद पगड़ी या दस्तार से ही उसे गुरु के दरबार देखा, तो आखिर में उसे शाहों का शाह देखा। मगर बुध की उम्र 34 साल ही न यह हाल देखा। फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी अलंकार देखा यानि अकेले सूर्य का प्रभाव मंदा ही होगा खासकर नंगा सिर या बाहर की स्याही या स्याह कपड़े पहनने वाला या सिर पर या सारे शरीर पर काले, नीले कपड़े मंदा मनहूस प्रभाव देंगे। हल्के शर्बती, रंग, उत्तम होंगे।

1. अल्पायु दुःखों का भरा हुआ जिस्म, धर्म और औलाद की हर तरह से हानि देखा होगा।
   – जब खाना नं0 5-6 और चन्द्र मंदा और वृहस्पति, मंगल का साथ न हो।
2. उम्र 12 दिन होगी जब नर ग्रह साथ-साथी या सहायता पर न हो। – जब चन्द्र खाना नं0 5 में हो।
3. घोड़ा, माता तथा पगड़ी सब ही निष्फल बल्कि वृ0 भी व्यर्थ मगर राजदरबार उत्तम सूर्य को असर प्रबल होगा।
   – जब चन्द्र खाना नं0 4 में हो।
4. पिता टेवे वाले की छोटी उम्र में ही चला जायें। – जब शुक्र खाना नं0 4 , शनि मंदा हो।
5. उच्च चन्द्र जो टेवे बैठा, भला दौलत ज़र होता हो, साल 24 न माता सुखिया, राज असर चाहे उम्दा हो। 24 साल की उम्र में माता दुखिया, अमूमन चल बसी होगी मगर ज़रूरी ही नहीं कि वह मर जाये।– जब चंद्र खाना नं0 2, उच्च कायम हो।
6. 34 साल की आयु तक मच्छर से भरपूर भाग्य यानि न स्वयं सुखी न पिता को आराम, न स्वयं योगी अलंकार और न शाही मदद की कोई गुजांयश, न संतान कायम। न ही सुख शाह, न राजदरबार में ऊंचा दर्जा, मगर बाद में उसे शाहों का शाह भी माना है।
   – जब खाना नं0 6-7 में कोई पापी बैठा हो।

7. सूरज, शनि का लम्बा झगड़ा होगा, अगर राजदरबार उम्दा हो तो शनि के मकानों व दूसरी संबंधित चीज़ों का असर मंदा होगा बल्कि शनि की महादशा के समय 19 साल पिता को कष्ट, जुदाई और धन-दौलत की मंदी होगी। दरिया और तह ज़मीन का पानी (कुआँ, हैड पम्प) सदा मदद देगा। – जब शनि मंदा हो।

8. सूर्य का राजदरबारी संबंध में सोया हुआ प्रभाव होगा, यानि बुद्धि ज्ञान के अनुसार ताकत या अच्छी आदतों के होते हुए भी दरबार में उसकी कोई कद्र या गिनती न होगी, दरिया, नदी, नाले में, चलते पानी में 40 -43 दिन तक लगातार तांबे के पैसे बहाते जाना सहायक होगा। – जब खाना नं0 4 खाली हो।

सूर्य खाना नं0 11

(पूर्ण धर्मी मगर अपनी ही ऐश पसंद)

ज़ुबान तेरी जो गोश्त खाने को मांगे।
लिखे खुद निसंतान विधाता कलम से।।

पूरा धर्मी नेक चलते पूरा,	*परिवार मुखिया आप हो।*
शराब खोरी गोश्त छोड़े,	*तीन बेटा बाप हो।*
मंद शनि, बुध तीजे आया,	*आठ चन्द्र खुद बैठा हो।*
उम्र लम्बी चाहे हरदम होगा,	*हरामकारी का पुतला हो।*
5 चन्द्र दे उम्र जो 12,	*औलाद पैदा न होती हो।*
खुराक शनि निसंतान होता,	*दान मुबारिक मूली हो।*
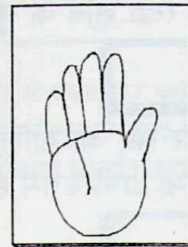
1. मूली (सब्जी, गाजर आदि) सफेद रंग या शनि की चीज़ों का दान (रात को सिरहाने रख कर प्रातः धर्म स्थान में दे आना, बादाम शनि की चीज़ है) इस जगह शनि की काले रंग की चीज़े न लें। बुध मंदा या शनि खुराक कर लेने के बाद का दोष ज़िन्दा बकरे छोड़ने से दूर होगा।

हस्त रेखा सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं0 11 बचत में समाप्त हो।

नेक हालत

यदि दाल खोर तो नर संतान जल्दी आएगी। चाहे लालची मगर राजा की पदवी का आदमी। अगर धर्म में पूरा हो तो परिवार सुखी हो। अमूमन पूरा धर्मी मगर अपना ही ऐश पसन्द होगा। आयु लम्बी होगी।

मंदी हालत

इस घर में अकेला बैठा सूर्य अपने शत्रु शनि की चीज़ों (उम्र तक, अपनी आमदनी, खुद खरीद किए हुए बने बनाए मकान, औलाद की आयु, शान, गिनती, जन्म समय, पहला हाकिम, नफसानी शक्ति, राहु, केतु के कामों का फैसला) पर अपना नेक असर बंद कर देगा। गोश्त खाने वाला हो तो कम से कम 45 साल की आयु तक की जैसे कि अपनी संतान का मांस उबाल कर खा रहा हो। नर संतान व्यर्थ, अंत में निसंतान होगा खासकर जब उसके मकान के साथ लगती हुई गली और वृक्ष वाला सेहन हो। शनि और बुध की मंदी कार्यवाहियां तबाही को पहले ही बता देगी। स्वप्न में सांपों के तमाशों, ज़ुबान का खोटापन (लड़ाई-झगड़ा या गाली देने की आदत) वायदा फरामोश, झूठी शहादत, खोटी, अमानत, फरेब धोखाधड़ी, यानि जो लट्ठ मारे या झूठ शराब गाले या पत्थर शनि की चीज़ों का साथ सूर्य की चमक पर स्याही फेर देगा। वृ0 के दरबार जिस जगह शनि हलफ उठाए किस्मत का फैसला कर रहा हो उसी कलम से अपने बाप सूर्य पर कत्ल का हुक्म लिख देगा। यानि शनि की चीज़ें (गोश्त, शराब) की खुराक या मंदी चीज़ों के प्रयोग से संतान की तबाही का हुक्म सादर कर देगा जिसे राहु, केतु की आयु 45 वर्ष की उम्र तक मसूखं कराना मनुष्य शक्ति से बाहर होगा। शनि की खुराक से जब ऊपर लिखी बात आ रही हो तो 45 साल की आयु के बाद ज़िन्दा बकरे छोड़ने से लानत दूर होगी।

1. उम्र लम्बी और झूठ और हरामकारी का पुतला होगा। सूर्य, बुध दोनों की चमक गुम होगी मगर उसकी अपनी आयु यकीनी तौर पर लम्बी होगी। – जब चन्द्र खाना नं0 8, शनि मंदा, बुध खाना नं0 3 में हो।

2. आयु 12 साल, जब नर ग्रह साथ-साथी या सहायता पर न हो। नर संतान व्यर्थ की, लाश मुर्दा पैदा हो। (मूली, शलगम, गाजर सब्जी), शनि की चीज़ (बादाम)इस जगह काली चीज़ (शनि की) न लेंगे, को सिरहाने रख कर सवेरे धर्म स्थान में देना शुभ होगा।
– जब चन्द्र खाना नं0 5 में हो।

सूर्य खाना नं0 12

(सुख की नींद, मगर पराई आग़ से जल मरने वाला)

हस्त जाती जलता या ममता पराई।
शहादत, गबन दे ज़मानत तबाही।।

रवि, शनि न झगड़ा कोई, — न ही शुक्र बुध मंदा हो।
असर गुरु चाहे बेशक शक्की, — मर्द स्त्री सब सुखिया हो।
साधु हुआ न होगी लावल्दी, — लाभ पापी न देता हो।
माया मिले या हो तंगदस्ती, — धर्महीन न होता हो।
पापी तख़्त पर [1] राज खराबी, — नींद खुराक न मिलती हो।
समय मंदे जब देता मुआफी, — फतह कलम सिर करती हो।
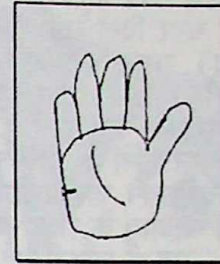
1. दस्ती कमाई या हुनरमंदी होने में सूर्य ग्रहण होगा, मगर व्यापार (बुध) उत्तम रहेगा।

हस्त रेखा :- **सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं0 12 खर्च पर खत्म हो।**

नेक हालत

सूर्य की बुनियाद पर अब राहु का साया चल रहा होगा। सुखिया रात का मालिक मगर पराई आग़ या ममता में अपने आप गिर कर मरने वाला होगा। अब सूर्य और शनि का किसी भी तरह झगड़ा न होगा और न ही शुक्र या बुध मंदा होगा। वृ0 का प्रभाव चाहे शक्की, मगर मर्द, स्त्री का जोड़ा सुखिया, धनी हो या न हो। मालिक रहे या नौकर बन कर रहे, निर्धनता से चाहे भंगी घर बिके, मगर धर्महीन संतान रहित या लंगोटा बंद साधु न होगा। अगर होगा तो लम्बी जागीरों का स्वामी, आज़ाद जीवन साफ रुह ब्रह्मज्ञानी और ज़िन्दा दिल होगा अर्थात् जितना धर्म में पक्का उतना सुखी गृहस्थी होगा। किस्मत के मैदान में अगर बहुत चमकता लाल न हो तो कम चमक का भी न होगा। घर में आटा पीसने की चक्की (जब जन्म कुण्डली में शुक्र, बुध एक साथ हो) के होते हुए रिज़क कभी बंद न होगा। अगर राजदरबार सहायता न करे तो व्यापार से लाभ होगा। दस्ती शनि की मशीनों के काम से घाटा पड़ेगा (सूर्य ग्रहण होगा) फिर भी धर्म पालना आबाद करती रहेगी और जब तक मकान का सेहन कायम रहे, सूर्य का असर मंदा न होगा या जिस कदर खुले सहन का साथ रहे, भाग्य का मैदान बढ़ता रहे।
1. अब शुक्र (गृहस्थ) बर्बाद न होंगे बल्कि शुक्र रद्दी होता हुआ भी नेक प्रभाव देगा।– जब शनि खाना नं0 6 में हो।
2. केतु की आयु (24 साल) के बाद स्वयं कमाई करने वाला होगा या हरी-भरी जीवन की फुलवाड़ी का स्वामी होगा।
– जब केतु खाना नं0 2 में हो।

मंदी हालत

इस घर में अकेला बैठा सूर्य, राहु की (अपने शत्रु) की नीचे दी गई चीज़ों पर नेक प्रभाव बंद कर देता है। (सिर की हड्डी, दिमाग़ी चाल विचारों का आना-जाना, अचानक पैदा होना, मर्द, स्त्री की आपसी आयु का संबंध, बदनामी की प्रसिद्धि, कोयले, खोपड़ी, हाथी शराब या बददुआ) राजदरबार में खराबियां, दस्ती टैक्नीशियन के कामों में हानि मगर बुध उत्तम प्रभाव का होगा। जिस कदर मकान का सेहन खुला सूर्य का उत्तम प्रभाव बढ़ेगा, दिल की स्याही, ईर्ष्या, अंधेरे मकानों का साथ, पराई ममता, किसी की झूठी शहादत, ज़मानत, गबन या अमानत का मार लेना, सब के सब सूर्य की उत्तम आग़ को गंदे पेशाब से बुझाते होंगे। राहु से संबंधित कारोबार ससुराल सम्बन्धित आदि से मुश्तरका काम करना हर तरफ मंदा भूचाल खड़ा कर देंगे या चीज़ों का साथ-साथी होना मंदा प्रभाव देगा।
1. रात की नींद, सुबह का नाश्ता दोनों बर्बाद तंगदस्ती सूर्य के प्रभाव में खराबियां होगी। मंदे समय में दर गुजर करने का हथियार या दुश्मनों को माफ करते रहना सफलता विजय देगा। – जब पापी खाना नं0 1 में हो।
2. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काने – जब चन्द्र खाना नं0 6 में हो।

****

चन्द्र

(आयु की किश्ती का समुद्र, जंगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोलेनाथ)

बढ़े दिल मुहब्बत जो पांव पकड़ती।
उम्र नहर तेरी चले ज़र उछलती॥

दिल का स्वामी चन्द्र है जो कि सूर्य से रोशनी लेता है और संसार में उसका छोटा राजा है। सूर्य चाहे कितना ही गर्म होकर आज्ञा दे लेकिन चन्द्र उसे ठण्डे दिल और शांति से पूरा करता है और सदा सूर्य के पैरों में रहना पसन्द करता है। चन्द्र का घर हथेली में चाहे सूर्य से दूर है मगर दिल रेखा सूर्य के पांव में ही बहती है। स्त्री (शुक्र), भाई (चन्द्र), साले, बहनोई (मंगल नेक) और अपने भाई (मंगल बद), गुरु तथा पिता (वृहस्पति) सब इस दिल के दरिया या चन्द्र रेखा की यात्रा को आते हैं जो सूर्य की चमक से दबी हुई आँखों (शनि) और दिमाग़ (बुध) को शांति ठंडक चन्द्र का प्रभाव देता है या यूं कह सकते हो कि इस दिल के दरिया के एक किनारे एक संसार के सभी संबंधी और दूसरी ओर मनुष्य का अपना शरीर तक आत्मा (सूर्य) और आँखें, सिर (शनि, बुध) बैठे हैं और दिल रेखा उन दोनों के बीच चलती हुई दोनों ओर से अपनी शांति से आयु बढ़ा रही है या मनुष्य के शरीर को वृ० की हवा के सांस से हिलता रखने वाली चीज़ यही दिल रेखा है। अतः कईयों ने दिल रेखा को आयु रेखा भी माना है और इसके मालिक चन्द्र की चाल से आयु के सालों की हदबंदी बांधी है।

चाँदी की तरह चमकती चाँदनी रात चन्द्र का राज्य है। जिसके शुरू में राहु, अंत में केतु और बीच में शनि स्वयं रखवाला है, यानि पापी टोला[1] (राहु, केतु, शनि) तीनों एक साथ अपनी जन्म वाली और जगत् माता के ही दरबार में हर एक के आराम और स्वयं माता के अपने दूध में ज़हर डालने की शरारतों के लिए तैयार रहते है, बेशक दूध (चन्द्र) और ज़हर (पापी ग्रह) मिल रहे हैं फिर भी दरिया दिल चन्द्र माता संसार में समुद्र के पानी में सूर्य की परछाई अवश्य होगी जिसकी शरारत के लिए संसार की हवा या मनुष्य की सांस का स्वामी वृ० हर जगह विराजमान है। अथात् :-

चन्द्र मालिक ग्रह उम्र जो दुनियां, गुरु राजा ग्रह मण्डल [2] हो।
जन्म वर्ष चाहे कहीं हो बैठा, असर आता रवि का हो।
वक्त शत्रुता एक पे मंदा, बीज नाश नहीं करता हो।
बाद केतु, गुरु पहले बैठा, मंदा स्वयं चन्द्र होता हो।
गुरु होवे जब पहले बैठा, दृष्टि मगर न मिलती हो।
माता-पिता हो दुखिया बेटा, ज़हर चन्द्र भर जाता हो।
चावल (चन्द्र) का जितना पुराना, कीमत बुढ़ापे बढ़ती हो।
नज़र चन्द्र में गुरु जो बैठा, माया बालाई मिलती हो।
बुध, चन्द्र से हो जब पहले, रेत ज़हर पानी भरता हो।
3-4-7-9 ग्रह बैठे, राख हुए कुल जलता हो।
बुध भले तक दूध [3] चन्द्र का, मिले पापी फट जाता है।
मालिक उम्र जो कुल ज़माना, बिगड़े [4] शुक्र न बनता हो।
बिम्ब सूर्य का हर दम मिलता, मंगल बदी सब जलता हो।
ख़ाली चोथा चाहे कोई अकेला, असर उत्तम खुद देता हो।
रवि देखे जब चन्द्र भाई, तख्त बैठा न जबकि हो।
आधी उम्र जब चन्द्र होगी, लेख भला सब होता हो।

1. सूर्य छुपने के बाद पक्की शाम का स्वामी = राहु
   सूर्य निकलने से पहले प्रातः का स्वामी = केतु
   सारी की सारी रात का स्वामी = शनि
2. दरमियान ग्रहों की चाल के लिहाज से चन्द्र के प्रभाव में सबसे पहले वृहस्पति का समय, फिर सूर्य और आखिर पर चन्द्र स्वयं के असर का ज़माना होगा यानि चन्द्र के प्रभाव में वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र तीनों का ही हिस्सा शामिल होगा।
3. सदा जाग्रत रहने वाला घोड़ा :-
   मैदान जंग में विजयी होगा: – खासकर खाना नं० 3 का चन्द्र।
   धन-दौलत खाद्य अन्न की देवी – खासकर खाना नं० 7 का चन्द्र।
   चन्द्र मृत्यु से बचाए, लम्बी आयु दे– खासकर खाना नं० 8 का चन्द्र।
4. फटा हुआ दूध, दही या (शुक्र) का काम न देगा या मंदे चन्द्र वाले की शुक्र के कामों से फायदा न होगा मगर चन्द्र की चीज़ें लाभ देगी जबकि उन चीज़ों में दूध की सफेदी न मिली हुई हो, पानी की बर्फ लाभदायक हो मगर आसमानी रंग की बर्फ हानिकारक तथा चन्द्र की स्वच्छता रंगत की सफेदी है।

आम हालत 12 घर

ज़िन्दा माता ज़र दौलत पहले, दूजे दौलत खुद अपनी हो।
कमी रिज़क न चोरी तीजे, चौथे खर्च [1] से चौगुनी हो।
तबीयत धर्म 5 दौलत चलता, धर्म भी आन 6 मंदा हो।
अवतार लक्ष्मी घर 7 होता, मारा हुआ न पाप (राहु, केतु) का जो।
माता मंदी 8 उम्र पे चन्द्र, घड़ा मोती 9 माया हो।

चन्द्र

आयु की किश्ती का समुद्र, जंगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोलेनाथ

दुनियां पानी 10 ज़हरी समुद्र, नाममात्र घर 11 हो।
आराम माया कुल दुनियां चाहती, कोई चाहे न इक दु:ख को।
चन्द्र 12 की चमक हो ऐसी, जले जलावे हर सुख को।

1. खाना नं० 4 खाली हो तो सारी आयु उत्तम फल देगा।

आम हालत अन्य ग्रहों से संबंध :- **अपने हाथों माता की सेवा करने का समय 24 साल की आयु।**

1. कष्ट का समय एक पर ही मंदा होगा खानदान नष्ट नहीं होने देगा।
2. टेवे में जब पहले घरों में वृ० हो और बाद के घरों में केतु तो चन्द्र मंदा ही होगा। लेकिन जब तक बुध उत्तम होगा चन्द्र का प्रभाव दूध की भांति उत्तम ही रहेगा और सोया चन्द्र भी उत्तम फल देगा और स्वयं ऐसा चन्द्र जागता हुआ घोड़ा होगा।
3. शुक्र देखे चन्द्र को तो– स्त्रियों की उल्ट राय होगी, विरोध होगा।
   चन्द्र देखे शुक्र को तो– फकीर कमाल का, सब नशेबाज़ों का सरदार।
4. जैसी भी टेवे में सूर्य की हालत हो (सूर्य की छाया) ज़रूर ही चन्द्र के असर में साथ मिलता रहेगा और मंगल बद ड़र के कोसों दूर भागता रहेगा।
5. चं० के घर अकेला बैठा हुआ ग्रह चाहे कोई भी हो उत्तम फल देगा और जब चं० का घर खाना नं० 4 खाली ही हो तो स्वयं चं० सारी उम्र ही नेक फल देगा चाहे कैसी हालत का ही क्यों न हो या हो जाये।
6. किसी के पांव छू कर उसकी आशीष लेना चं० के उत्तम फल पैदा करने की सबसे उत्तम नींव है।

7. चन्द्र से बुध का संबंध :-

चन्द्र यदि कुण्डली में बुध से पहले घरों में हो तो चन्द्र का प्रभाव बुध पर प्रबल होगा। छुपा हाल अच्छा मगर सांसारिक तौर पर दोनों का ही मंदा फल होगा। यदि बुध कुण्डली में चन्द्र से पहले घरों में हो तो बुध का प्रभाव चन्द्र पर प्रबल होगा। नीचे लिखी तीनों हालतों में धन की हार न होगी दिल का संबंध खराब होगा। आत्म-हत्या तक की नौबत हो सकती है। दृष्टि से आमने-सामने तो जातक एक और स्वभाव वाला हो।

10 0 % दृष्टि अति हानिकारक, पौड़ियों (सीढ़ियों) के सामने कुएं खराबी का सबूत,
50 % दृष्टि बहुत ही हानिकारक,
25% दृष्टि मामूली हानिकारक,
दोनों में हर एक जुदा-जुदा होने की हालत में दूसरों के घर में यानि खाना नं० 4 चं० के घर में बुध हो या खाना नं० 7 बुध के घर चं० अकेला हो तो नेक फल देगा। लेकिन यदि इकट्ठे ही ऐसे घरों में हो यानि खाना 4-7 में तो कभी नेक फल न देंगे।

8. चन्द्र से शनि का संबंध :-

चन्द्र देखे शनि को तो– शनि का मंदा असर मगर चन्द्र का उत्तम।
शनि देखे चन्द्र को तो– चन्द्र का बर्बाद मगर शनि का उत्तम पैदा होगा।

दोनों जुदा-जुदा मगर मुश्तरका दीवार वाले घरों में बैठे हुए हो तो आपस में शत्रु होने के कारण जुदा-जुदा रहेंगे। ऐसी हालत में कुएँ की दीवार फाड़ कर मकान (शनि) या सर्दखाना बनाना चन्द्र के दूध में विष मिलाने के समान होगा। माता मरे, दौलत और संतान समाप्त हो जाए। बल्कि अधरंग होकर अपना शरीर भी आधा नकारा हो जाए, आदि बुरे प्रभाव होंगे।

9. चन्द्र के पापी ग्रहों से सम्बंध:-

शत्रु या पापी (रा०, के० या श०) ग्रहों के संबंध से (साथ-साथी या दृष्टि से) केतु का असर मंदा लगे और स्वयं चन्द्र का खालिस दूध फटा हुआ होगा, मगर शुक्र न बनेगा या यूं कहो कि फटा दूध (चं० मंदा दही या शुक्र) का काम नहीं दे सकता बशर्ते कि उन चीज़ों में दूध की सफेदी शामिल न हो क्योंकि चं० की असलियत रंग की सफेदी दूध समान है मगर फटे हुए दूध का पानी अपने दूध की शक्ति फिर भी दे जाता है। अत: मंदा चं० फिर भी कई दूसरों की भलाई के काम में सहायता ज़रूर देगा या मंदे चन्द्र वाले को शुक्र से संबंधित चीज़ों, काम से फायदा न होगा मगर स्वयं चं० की ही चीजें (बहने वाले पानी) आदि से लाभ रहेगा पानी की बर्फ सहायक मगर आसमानी बर्फ हानिकारक, दूध, सफेद चीज़े चं० नेक का सबूत देगी।

10.. पापी टोला, सदा चं० के दूध में ज़हर ही मिलाएगा मगर ऐसे टेवे में उपाय केवल चं० का ही होगा। जब यह शत्रु ग्रह को देखता हो तो अपना शुभ असर बंद कर देता है। जब चं० के सामने पापी ग्रह बैठे हो तो चं० का बुरा प्रभाव (यदि किसी हालत में मंदा चं० हो) टेवे वाले की जगह उसके करीबी रिश्तेदारों पर होगा। जैसे चं० देखता हो सू० को और सू० के घर खाना नं० 5 में बैठे हो पापी रा०, के०, शनि। 11. जब टेवे में सूर्य, मंगल इकट्ठे हों तो चन्द्र प्राय: भला नहीं हुआ करता।

12.चं० देखता हो वृ० को और वृ० के घरों में खाना नं० 2-5-9-12 में (बु०, शु०, रा०, श०) पापी बैठे हों तो चं० का फल रद्दी होगा।

चन्द्र के पानी और विद्या का टेवे वाले पर प्रभाव :-

चन्द्र को यदि पानी माने तो कुण्डली के 12 घरों में टेवे वाले का पानी किस किस्म का और कौन सी हैसियत का होगा। पानी के इलावा यदि विद्या का चं० से संबंध हो तो उसका परिणाम निम्नलिखित होगा :-

खाना नं० 1 :- **1. घर में रखे बर्तन या घड़े का अच्छा पानी।**

2. विद्या पर लगाया पैसा व्यर्थ नहीं जाएगा, अवश्य आएगा, विद्या सहायक होगी, जिसका विशेष लाभ राजदरबार होगा।

खाना नं० 2 :-

1. पहाड़ से ज़ोर निकलता हुआ उत्तम पानी माता और विद्या, जायदाद रद्दी और नकद नारायण, दोनों में से एक तरफ में आखिरी पूरी दर्जे में उत्तम होगा। माता के होते विद्या होगी जिसके दरिया की बाढ़ बुध की हदबन्दी हो। पिता के होते हुए धन या बाप को (टेवे वाले की) विद्या के सुख की कोई शर्त न होगी। मगर स्वयं टेवे वाले के अपने लिए उसकी विद्या संसारी ज्ञान समझ या वाकफीयत का बहाना ज़रूर होगी और भाग्य की नींव रहेगी। स्वयं पढ़े दूसरों को पढ़ाए, मगर यह शर्त नहीं कि विद्या विभाग ही भाग्य का बहाना हो। मगर चन्द्र की दूसरी वस्तुएं ज़रूर भाग्य में सहायता देगी जैसे घोड़ों का व्यापार, चांदी के (चन्द्र की वस्तुएं) कारोबार, सिंचाई विभाग आदि भाग्य के सहायक हो सकते हैं। आम स्कूल मास्टरी करने की कोई शर्त नहीं।

खाना नं० 3 :-

1. जंगल सहारा या रेगिस्तान का पानी।
2. जिस कदर विद्या बढ़े पिता की माली धन की हालत कमज़ोर होती जाएगी। मगर विद्या रूकेगी नहीं। विद्या अपनी कीमत अवश्य देगी। जब तक दरिया पर पुल हो यानि टेवे में केतु अच्छी हालत में हो और चं० को बर्बाद न कर रहा हो वरना माता ही पिता का काम देगी ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, विद्या की कीमत कम होती जाएगी या ऐसा व्यक्ति विद्या विभाग में होता हुआ ऊपर से नीचे को गिरेगा या विद्या से कमाया धन घर बार के कामों में तरक्की कम ही करेगा।

खाना नं० 4 :- 1. चश्मे का पानी मीठा।

2. विद्या हरदम सहायक, विद्या के पूरे करने में सब ओर से सहायता अपने आप मिलती रहे। चाहे कैसे भी विद्या मांगे सुख देने वाली विद्या माता के असली खून का सबूत देगी।

खाना नं० 5 :-

1. आबादी को हरा-भरा करने वाली नदी।
2. विद्या पर लगाया धन पूरी कीमत न देगा, मगर ऐसा व्यक्ति बच्चों की विद्या या तकनीकी विद्या की पूरी डिग्री का स्वामी होगा। मगर इसको वह डिग्री या विद्या की कीमत न मिलेगी यानि विद्या की नदी का पानी आम लोगों में पूजने की जगह टट्टी, पेशाब धोने के काम आएगा। आम लोगों का भला करते हुए भी कोई उसका भला न चाहेगा। संबंधी दुनियावी साथी नदी की मुरम्मत का विचार न करेंगे बल्कि मंदा ज़रूर करेंगे अपने लिए विद्या व्यर्थ नहीं होगी। यानि स्वयं अपना मन ना के बराबर और विद्या अपनी कीमत कुछ भी न देगी चाहे कितना ही विद्वान क्यों न हो।

खाना नं० 6 :- 1. पाताल का पानी, कुआं, हाथ, पम्प आदि।

2. विद्या सहायक होगी लेकिन मूल्य और खर्च से, जिसके लिए कई तरह के कष्ठ करने पड़ेगें।

खाना नं० 7 :-

1. मैदान और खेती की ज़मीन को हरा-भरा करने वाली नदी।
2. शादी होने से पहले-पहले विद्या पूरी कर लेगा या यदि विद्या चलती रहेगी तो शादी रूकी रहेगी लेकिन विद्या होगी काम की, बेशक थोड़े ही दर्जे की हो। दूध होगा मगर गाय की बजाय बकरी का जिसमें विद्या की वही हालत होगी जो बकरी अपना दूध देने में किया करती है, यानि बकरी दूध तो देगी मगर मेंगने डाल कर, मगर धन की हालत के लिए बकरी का दूध होता हुआ भी चांदी के भाव ही बिकेगा या वह मनुष्य स्वयं लक्ष्मी अवतार होगा।

खाना नं० 8 :- 1. अमृत या ज़हर।

2. विद्या हुई तो माता को तरसते रहे यह ज़रूरी नहीं कि माता मर गई हो। माता हुई तो विद्या नहीं अब दूध या विद्या सूखे दूध की तरह होंगे। यानि ऐसा दूध जिसमें खुश्क पाऊडर में दूध की सब सिफते ज़रूर होगी या यूं कहें कि यदि पढ़ेगा तो पूरा नहीं तो संतान को भी पढ़ने से रोकते रहेंगे या वह दोनों को ही तरसते मर जांएगे।

खाना नं० 9 :- 1. समुद्र।

2. सब को आराम देने वाला विद्या का स्वामी मंगर स्वयं विद्वान होने की शर्त नहीं। बल्कि फिर भी ज़रूरी नहीं कि वह अनपढ़ ही हो फिर भी सुख का मालिक राजा इन्द्र की तरह सब का दाता होगा।

खाना नं० 10 :- 1. पहाड़ों की रुकावट से बंद पड़ा पानी।

2. दूसरों को तो क्या पढ़ाना बल्कि स्वयं भी विद्या रहित, यहां तक कि पढ़ाने वाले को पानी मांगने पर पत्थर स उत्तर दे उस विद्या में हर ओर रुकावट के पत्थर ही पड़ते होंगे, जो व्यर्थ होंगे, मगर खुश्क दवाईयों की हकीमी और प्रयोग की किस्मत के इल्म का ज्ञानकार ज़रूर होगा। बेशक हर जगह मान की जगह मुंह ही काला होता रहे, जब तक खाना नं० 8 मंदा हो लेकिन अगर खाना नं० 2 उत्तम हो तो सब कुछ दो गुना शुभ होगा।

खाना नं० 11 :- 1. बरसाती नाला।

2. पढ़ेगा पूरा वरना अनपढ़ हाफज़ जी होंगे। यही लाभ हानि विद्या का होगा।

खाना नं० 12 :-

1. आसमानी पानी ओले बर्फ आदि पाखाना बंद, गंदी नाली बंद रौ का पानी।

2. यदि पापी ग्रह मंदे तो मंदी लहर यानि ज्यों-ज्यों विद्या बढ़े घर घाट उजड़ता जाए वरना यदि सू० नेक और वृ० उत्तम हो तो ऐसा नेक पानी जिसमें गंदगी का नाम न हो और पानी साफ होगा जो कि एक बंद जमीन साफ नाली क्या खाली जगह में गुजर रहा हो। अगर आसमान से गिरे तो बर्फ बन जाए। मिट्टी और गंदगी से दूर रहेगा तो भी अंत में पानी से बदल कर दूध ही होगा। बेशक भार और शक्ल में बदली हो जाये यानि विद्या छोटी हो या बड़ी मगर उसके द्वारा विद्या के आराम और सुख में पानी की हैसियत होते हुए भी दूध की तासीर और रंगत होगी या साधु समाधि के लिए मिट्टी की जगह चांदी का फर्श हाज़िर होगा या वह और उसकी विद्या चांदी की भी परवाह न करेगी, मगर सोने की रंगत में झलकती होगी या लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फाजिल, पढ़े या न पढ़े, मगर पढ़े हुए का बाप ज़रूर होगा और विद्या की कीमत हो या न हो मगर मुफ्त की दुकानदारी में पूरे दर्जे की तालीम की कीमत हासिल कर लेगा।

जौ का निशान :-

अंगूठा जुदा छोड़कर जिस पर निशान का हाल जुदा दिया गया है, दोनों हाथों की अंगुलियों की पोरियों पर उनके जोड़ों के मिलने की जगह पर जौ अनाज के दानों की शक्ल जैसे सांसारिक जीवन में खुशी-गमी से संबंध है। यह निशान सब अंगुलियों पर अधिक से अधिक 32 तक होने माना गया है ऐसे निशान गिनती में 21 तक की हालत में चं० का प्रभाव स्वयं अपने लिए शुभ माना है और 21 से अधिक निशानों वाला व्यक्ति संसार से जुदा होगा जो 9 ग्रह और 12 राशियों (9+12=21) की सारी चालों से जुदे ढंग पर चलेगा। अगर निशान गिनती में 32 हों तो सुख-दु:ख बराबर।

खाना	निशान	प्रभाव
1	12	सारी आयु धनी, प्रसन्नता से गुजारा करने वाला।
2	22 से 32	संसार से जुदा ही होगा।
3	17	धनवानी बिना मान बेइतबार होगा।
4	14	औसत दर्जे का जीवन होगा।
5	19	धर्मात्मा राजदरबार में मान हो।
6	20	बुद्धिमान सलाहकार।
7	13	धनवान मगर गृहस्थ में दु:ख।
8	16	बदबख्त जुआ खेलने वाला।
9	18	भला लोग, भले काम नेक स्वभाव।
10	15	चोर, डाकू फिर भी पूरी न पटे।
11	–	चन्द्र शून्य या निर्पक्ष या मंदा ही होगा।
12	21	कमबख्त, मंद भाग्य होगा। भाग्य की उत्तमता का यकीन नहीं, मंदा मनहूस होगा।

जिस कदर यह निशान 32 की गिनती से बढ़ते जाए उसी कदर ही प्रसन्नता का समय या भाग्य बढ़ता होगा। अगर निशान गिनती 33 हो तो 32 मंदी के मुकाबले 33 खुशी होगी यानि 33/32 खुशी अगर निशान गिनती 39 हो तो 32 मंदी के मुकाबले 39 खुशी होगी यानि 39/32 खुशी।

चन्द्र खाना नं० 1

(माता के जीवित होने तक ज़रो दौलत, खालिस दूध)

हुक्म पूरा माता का गर तू करेगा। — उम्र रिज़क माया न तेरा घटेगा।।

दूध खालिस ज़र [1] पहले चन्द्र, — नहर वीराने आती हो।
काम मंदे या मुफ्तखोरी, — शान पहली भी जाती हो।
बहन, भाई गुजरते पहले, — आम निशानी होती हो।
इल्म तपस्या हर दो मिलते, — दूध बेचे कुल घटती हो।
माता चन्द्र जब तख्त [2] पर बैठे, — असर 2 गुना होती हो।
उच्च शुक्र चाहे कितना टेवे, — दुखिया स्त्री उस रहती हो।
शनि, सूर्य जब 6 वें बैठे 2, — तवा मिट्टी घर चढ़ता हो।
मित्र चौथे चाहे 10 वें आये, — मोती सफर कुल दरिया हो।
आठ भला 7 उत्तम हो, — रेत जली भी दौलत हो।
उपाय विद्या [3] हो जिस दम करते, — शान भली सब शौकत हो।

1. सोये चन्द्र को 24 साल की आयु से पहले जगाना (खाना नं० 7 में गाय आदि शुक्र की चीज़ें कायम करना) अच्छा होगा वरना 24 साल में स्वयं जागा चं० आयु के 25 वें साल हर तरफ मंदा प्रभाव होगा। चन्द्र कायम जायदाद जद्दी सदा उत्तम फल और बढ़ती जाए।
2. वर्षफल में खाना नं० 1 में जब आए :- 1-13-25-37-49-61-73-85-97-10 9 साल की आयु में।
3. चन्द्र खाना नं० 1 के उसी खाना नं० में अलग-अलग जगा दिया गया।

हस्त रेखा **चन्द्र से सूर्य के बुर्ज खाना नं० 1 को रेखा हो।**

नेक हालत **अपनी माता के खालिस दूध की सिफतों से कामयाब, जीवन लम्बी आयु 90 साल और सांसारिक भाग्य में खालिस दूध की कीमत का स्वामी होगा, राजदरबार से मान तरक्की होगी। आयु सुख 27 साल और संतान का सुख**

विशेष कर होगा। ऐसे प्राणी के जन्म लेने से पहले उसके कई एक भाई गुजर गए होंगे और वह स्वयं तरस-तरस कर बड़ी इच्छाएं और साधनों के साथ हुआ होगा।

माता-पिता की माली हालत और उनकी जायदाद जद्दी भी उसके जन्म पर कोई ऐसी शानदार न होगी। अमूमन 28 साल की आयु में पहले या 28 वें साल में शादी का संबंध अपनी या किसी करीबी रिश्तेदार अपने खून की चं० की आयु बर्बाद और संतान का फल मंदा कर देगा। यही बुरी हालत 24 साल की आयु के पहले या 24 साल स्वयं अपनी कमाई के पहले या 24 वें साल स्वयं अपनी कमाई से नया मकान बनाने या अपनी नर संतान के पैदा होने पर होगी। खासकर 24 वें साल शादी का संबंध तो चं० का फल बर्बाद कर देगा। चाँदी के बर्तन में दूध के प्रयोग बढ़े, परिवार बढ़े और शीशे का या बुध का संबंध बुध की चीज़ें खासकर हरा सब्ज, हरा रंग, स्वास्थ्य की खाक उड़ा देंगे। संतान की गिनती उनकी उम्र की बरकत और सुख के लिए उनको दरिया पार ले जाते समय जब पता हो कि दूसरी जगह 10 0 दिन से अधिक समय के लिए ठहरना है तांबे का पैसा दरिया में गिराकर जाये वरना दरिया का मल्लाह अपनी मल्लाही उजरत, मासूल किराये के बदले में संतान पर ही हमला कर देते हैं और उसकी संतान तक दु:खी और छोटी आयु की होने लगती है। **चं० की चीज़ों का दान लेने या लाभ उठाने की नीयत से बेचने की जगह उल्टे दूध की खैरायत करना या दूसरों को पानी की जगह मुफ्त दूध पिलाते रहना चं० के नेक फल को और भी बढ़ाता जाएगा।**

धन की कल्पना खूनी लाल रंग मंगल की और चीज़ों के साथ से और छोटों की पालना या मेहमानों रिश्तेदारों की हर दिल अजीजी प्यार चांदी के थाल से पूरी होगी। रात को आराम का जीवन व्यतीत करने के लिए चारपाई के चारों पाये पर तांबे की मेखें गाड़ना नेक होगा। अगर यह न हो सके तो मामूली खाली पानी के कुछ घूंट कभी-कभी बढ़ के पेड़ को डालने उत्तम होंगे जो उसे हर जगह मान और शांति देगा।

वीरान मैदानों में पानी की नहर आ जाने की तरह उसके जन्म से ही माता के जीवित होते हुए माता का भाग्य और दयालुता से धन-दौलत की बरकत होगी। 24 से 28 साल की आयु में दूध की नदियां अच्छी हालत बहा देगी और माया की कल्पना न रहेगी। विद्या, तपस्या का स्वामी होगी जब तक माता को हुक्म बजा लाता रहेगा और उसके चरण छूकर उसका आशीर्वाद लेता रहेगा, उम्र रिज़क की कभी कमी न होगी। मां-बेटा दोनों का बुढ़ापा उत्तम होगा।

चाँदी के बर्तन में बुध की नाली मंदा फल देगी। उदाहरणत: चाँदी का गंगा सागर या केतली ऐसे बर्तन का बुध की आयु तक टेवे वाले की 34 साल की आयु से शुरू करने या टेवे वाले की माता की सेहत टेवे वाले की 48 साल की आयु तक मंदी होगी। वह न सिर्फ रात दु:खी बल्कि अंधी भी हो सकती है। मां के बाद हर ओर मिट्टी रेत उड़ेगी। अत: माता के मरने से पहले ही उसके हाथों से चं० की चीज़ें चावल, चांदी आखिरी आशीर्वाद की तरह ले लेना ना सिर्फ माता के बाद आयु रिज़क धन के लिए मददगार होंगे बल्कि माता के पेट में बैठे बच्चे की तरह इस संसार में उसे माता की गोद का आराम देंगे, माता के बिना ऐसे टेवे वालों के भाग्य के दरिया में माया दौलत व संसारी सुख का पानी न होगा या वह माता के बिना दु:खी ही होगा। खुद माता की आयु के लिए 24 से 27 या अपनी आयु के 24 वें साल और 27 वें साल सफ़र में होते हुए भी कोशिश से वापिस आकर माता के पांव छूते रहना माता की आयु बढ़ाएगा। वरना ऐसे समय 24 से 27 और ऐसी हालत में टेवे वाला घर से बाहर सफ़र में माता से जुदा हो, माता की सेहत मंदी बल्कि मौत की निशानी होगा। मं० की चीज़े मिट्टी में दबाना सहायक होंगी।

1. समुद्र के सफर से मोती पैदा होंगे। -जब सूर्य, मंगल या वृहस्पति खाना नं० 4-10 में हो।
2. जली रेती भी धन देगी। -जब खाना नं० 7-8 उत्तम हों।
3. जायदाद जद्दी बिना मेहनत पैदा हो या मिले और वह उत्तम फल दे और बढ़ती होगी। पराई अमानत भी पास ही रह जाए। -जब चन्द्र कायम हो।
4. हर प्रकार की सवारी का सुख होगा धन-दौलत बढ़ेगा। -जब वृ० खाना नं० 4, श० खाना नं० 10 में हो।
5. बहू, सास, मां-बेटी की तरह उत्तम हालत, मगर संतान की मंदी हालत बचाने के लिए विवाह के दिन से कुत्तों को घर में रखना सहायक। -जब शु० खाना नं० 7 में हो।
6. सूखी रेत से भी मीठी खांड बनेगी और उत्तम जीवन होगा। लेकिन यदि खाना नं० 8 मंदा हो मीठी खांड से भी हर ओर रेत हो जाए। -जब शु०, बु०, या मं०, बु० खाना नं० 7 में हो।
7. बुद्धि कम, धन अधिक राजदरबारी कामों से समुद्र पार लम्बे सफ़र लाभदायक हो। -जब बु० खाना नं० 7 में हो।

मंदी हालत

पापी ग्रहों या चन्द्र के शत्रुओं की चीज़ें, काम, रिश्तेदार से संबंध या वैसे ही दुनियावी मंदे काम और मुफ्तखोरी की आदत से पहली शान भी जाती रहेगी। लाभ के लिए चन्द्रकी चीज़ें खासकर दूध बेचने से अपना परिवार कम होता जायेगा। शुक्र चाहे कितना ही उच्च हो उसकी माता के बैठी स्त्री दुखिया ही होगी।

कुदरती पानी (वर्षा का) चावल, चांदी और चन्द्र की चीज़ें कायम रखना सदा सहायय होंगी। बूढ़ी औरतों की आशीष अपनी माता से कम न होगी, सोए हुए चन्द्र को (जब खाना नं० 7 खाली हो) 24 साल की आयु से पहले जगाना, यानि घर में शुक्र की चीज़ें गाय, नौकर, स्त्री नौकरानी कायम कर लेना ठीक होगा नहीं तो 25 वें साल से मंदा प्रभाव देगा। मंगल की चीज़ें दबाने से मदद मिलेगी।

1. मिट्टी के तवे चढ़ेगें, बहुत निर्धनता होगी। -जब श०, सू० दोनों खाना नं० 6 में हो।

2. हर समय का आशिक स्वभाव उसके भाग्य के सोने को मिट्टी कर देगा। शुक्र के कामदेव की लहर की देवी, स्त्री के होते ही शादी के लगन के समय से ही चन्द्र टेवे वाले की मां, सास, दादी, नानी बर्बाद दुःखी, मंगल के संबंध में पेट भाई निकम्मे और मंदे परिणाम देगा खासकर जब शादी ऊपर दिए गए सालों में हो। -जब वृ० खाना नं० 11 में हो।
3. दिन-रात दुःखिया बेआराम हो। -जब मं० बद मंदा बुध या खाना नं० 8 मंदा।

क्याफा साथ-साथी चन्द्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज के अन्दर जाकर समाप्त हो।

चन्द्र खाना नं० 2

(स्वयं पैदा की हुई माया की देवी)

लगे बजने घड़याल मंदिर जो घर में।
बजा देंगे घंटा लावल्दी का घर में॥

बंद नस्ल न टेवे होगी, योग मंदा संतान चाहे हो।
वरसा मिलेगा घर का ज़रूरी, चीज़ें चन्द्र जब [1] रखता हो।
मंदिर [2] कच्चे चाहे माता बैठी, असर पक्का गुरु घर[3] का हो।
लिखत भूली कोई जन्म हो पिछला, कमी पूरी कर जाता हो।
उम्र लम्बी हो खुद उसे आता, चक्र दूजे 48 हो।
4-6-10-8-9-12, शत्रु बैठे न पापी कोई।
बाद उम्र खुद माता अपनी, दस्ती मुबारक देती जो।
चीज़ चन्द्र घर कायम रहती, आशीर्वाद आखिरी हो।
मंद गुरु चाहे तख्त हो मंदा, बुरा मंदिर न होता हो।
ज़हर टेवे की चन्द्र धोता, दौरा तख्त [4] का करता जो।
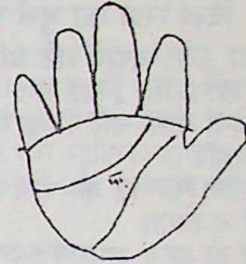
1. चन्द्र की चीज़ों के न होते हुए बुढ़ापा मंदा या उत्तम फल न देगा और अमूमन चन्द्र खाना नं० 12 का फल देगा।
2. गुरु बैठा होने का घर या गुरु खाना नं० 2 का दिया हुआ फल, हर दो हालत से जो उत्तम वही प्रभाव हो।
3. खासकर जब शनि खाना नं० 4- पितृ रेखा- पिता तथा जायदाद सुख।
   खासकर जब बुध खाना नं० 6- मातृ रेखा- माता, भाग्य उत्तम।
   खासकर जब सूर्य खाना नं० 1, शनि खाना नं० 11, भगवान् जैसी शक्ति।
4. 2-14-26-38-50-62-81-86-98-110 साल की आयु।

हस्त रेखा

चन्द्र से वृहस्पति को रेखा हो। दिल रेखा या भाग्य रेखा, चन्द्र से शुरू होकर वृ० पर समाप्त हो, दिल रेखा का वह हिस्सा, जो वृ० के बुर्ज के अन्दर-अन्दर हो प्यार रेखा कहलाता है, देखें शुक्र खाना नं० 2 में।

जौ का निशान अंगूठे की तीनों पोरियों पर हो सकता है। अंगूठे की नाखून वाली पोरी या बीच वाली पोरी की जड़ पर जौ का निशान अगर सही तो स्वयं की जायदाद, सुख आराम धन होगा। चन्द्र कायम बचपन का समय चन्द्र की ठंडी रोशनी की तरह उत्तम प्रभाव तथा नेक भाग का होगा वरना चन्द्र बुढ़ापे में नेक फल देगा। चन्द्र की जायदाद चीज़ों का लाभ होगा। निचली पोरी पर निशान अगर टूटा-फूटा हो, चन्द्र शत्रुओं से घिरा हुआ या मंदा और खराब, किसी पोरी पर हो तो बुढ़ापा मंदा ही होगा जिसके लिए चन्द्र खाना नं० 6 देखेंगे।

नेक हालत

ऐसे व्यक्ति की अमूमन बहन नहीं होती मगर भाई ज़रूर होंगे, यदि अपने न भी हो तो स्त्री के ज़रूर होंगे और वह अकेला भाई या सिर्फ बहनों का ही भाई न होगा, बल्कि धनवान समय का शाह, घुड़सवारी, संतान, माता-पिता का सुख, जब वृ० उत्तम हो लड़ाई के मैदान के सामान में कभी कमी न होगी। न ही कभी हार तथा हानि होगी। चन्द्र उत्तम तथा उच्च फल और वृ० खाना नं० 2 का नेक फल साथ होगा और जब चन्द्र खाना नं० 2 वर्षफल के हिसाब (2-14-26-38-50-62-81-86-98-110 साल की आयु में) खाना नं० 1 में आए तो वृहस्पति और चन्द्र दोनों का ही बराबर उच्च तथा उत्तम फल होगा। जब चन्द्र की चीज़ें कायम रखता हो जायदाद जद्दी और विरासत का हिस्सा घर से ज़रूर मिलेगा। टेवे वाले की खानदानी नस्ल कभी बंद न होगी चाहे संतान का योग लाख मंदा हो। गुरु बैठा होने वाले घर का प्रभाव सदा पक्का और उत्तम होगा या गुरु खाना नं० 2 का फल जो भी दोनों हालत में उत्तम हो साथ होगा। जब भी मौका मिले चन्द्र पिछले जन्म की कोई भूली लिखत की कमी को पूरा कर देगा। बुध (चाहे खाना नं० 9) कभी मंदा फल न देगा। जन्म अमूमन शुक्ल पक्ष का होगा, नहीं तो चन्द्र आखिरी आयु में शुभ फल देगा। यदि चन्द्र की चीज़ें कायम रहें तो चन्द्र और बुढ़ापा दोनों शुभ फल देंगे और वह कभी मंदी हालत का न होगा। माता की ममता की आँखें कभी बूढ़ी न होगी यानि माता चन्द्र के दो चक्र या टेवे वाले के 48 साल की आयु तक कम से कम ज़रूर साथ देगी। जिसके बाद भी ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए, हो सकता है कि 3 चक्र पूरी कर जाए। अपनी आयु को लम्बी रखने के लिए खुद बनाए मकान की तह में चाँदी की चीज़ें दबाना सहायक होगा या चन्द्र की चीज़ें चलते पानी का हर दम साथ शुभ होगा। घर का फर्श जब तक कच्ची मिट्टी का रहे चन्द्र का दरिया एक बर्फीली नदी (सदा चलने वाली) का उत्तम फल होगा। नहीं तो शहर की गंदगी से भरा बरसाती नाला अचानक तेज़ और भयानक पानी से भरा होगा। सफेद या पीले घोड़े के साथ परिवार में कमी न होगी। बड़ी बुढ़िया

की सेवा से परिवार और लड़ाई के समान में कभी कमी न होगी। माता के जीवन में उसके हाथों से चांदी और चावल (चन्द्र की चीज़ें) लिए हुए माता की आयु के बाद टेवे वाले की माता का आखिरी आशीर्वाद (चन्द्र का फल उत्तम) का काम देंगे।

1. माता की आयु अमूमन टेवे वाले की 48 साल की आयु तक ज़रूर साथ देगी। -जब खाना 4-6-8-9-10-12 में राहु, केतु, शनि पापी ग्रह कोई न हो।
2. स्वयं अपनी तथा ससुराल की धन की हालत निर्वाह ठीक होगी। -जब चन्द्र जागता हो।
3. चन्द्र की हालत तथा माता की आयु का फैसला वृहस्पति की हालत पर होगा जैसे वह जन्म कुण्डली में हो लेकिन बाकी सब बातों में वृ० का उत्तम प्रभाव चन्द्र खाना नं० 2 के साथ होगा।
   -जब खाना नं० 4-6-8-9-10-12 में राहु, केतु, शनि पापी हो।
4. चन्द्र का फल उच्च होगा। कामयाब आशिक, चाहे सांसारिक हर ओर नेक फल होगा।-जब शुक्र उत्तम हो।

क्याफा दिल रेखा का बुर्ज खाना नं० 2 के अन्दर-अन्दर का टकराव।

मंदी हालत 1. घर में घंटे घड़ियाल, (मंदिर की तरह) लावल्दी का घंटा बजा देंगे।

2. बेशक खाना नं० 2 का चन्द्र भाग्य का स्वामी और उच्च होता है मगर अब केतु खाना नं० 12 का भी उच्च है जो चन्द्र के लिए ग्रहण देगा यानि चन्द्र विद्या केतु संतान दोनों में से केवल एक फल उत्तम होगा। यानि विद्या हो तो संतान नहीं और संतान हो तो विद्या नहीं।
3. चन्द्र खाना नं० 12 का फल देगा और गुरु, शुक्र भी मंदा ही फल देंगे। ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे के लिए किसी भी काम का आदमी न होगा। -जब खाना नं० 1-2-7-10-11 मंदे हों।
4. अव्वल तो आयु अमूमन 25 साल ही होगी वरना 25/34 साल की आयु का समय हर तरह से मंदा व गरीबी से भरपूर होगा। ऊपर का मंदा हाल अमूमन 50 (25 से 75 साल की आयु का मध्य) मंदा ही होगा। -जब सूर्य खाना नं० 1 में हो।
5. बुढ़ापे में मंदा हाल और उम्र का अमूमन 75 साल का समय मंदा होगा। -जब शनि खाना नं० 10 में हो।
6. नज़र कमज़ोर और शनि का स्वयं का प्रभाव मंदा होगा। -जब बुध खाना 6 में हो।
7. बुढ़ापे में मंदा हाल और आयु का समय 90 वर्ष मंदा होगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 11 में हो।
8. शनि की आयु (9-18-36) में माता की आयु तक शक्की होगी। -जब खाना नं० 9-10-12 में पापी हो।
9. सब ग्रहों का मंदा असर होगा। मगर वह (राशिफल के) उपाय योग्य होंगे।
   -जब खाना नं० 1 में चन्द्र के शत्रु ग्रह बुध, शुक्र, राहु, और केतु खाना नं० 1-2-7-11 मंदे हों।
10. अब बेशक वृहस्पति और चन्द्र दोनों आपसी सहायता पर हो मगर फिर भी बकरी देगी दूध मेंगने डाल कर ही। यानि कारोबार में बरकत होगी तो सही मगर रगड़े झगड़े के बाद। -जब बुध खाना नं० 3 वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

उपाय - सब्ज रंग बुध कपड़ा चन्द्र लड़कियों बुध को 40 /43 दिन तक लगातार देते जाना बुध की ज़हर को धोएगा।

चन्द्र खाना नं० 3

(चोर तथा मौत का रक्षक, उम्र का मालिक फरिश्ता जिससे मौत भी डरे)

भरा माया होगी जहाजों का बेड़ा। पिए दूध स्वयं बहन, भाई जो तेरा।।

बुरा[1] चन्द्र न फल कभी दे, खाली पड़ा 9-11 हो।
होगा शुक्र भी उत्तम टेवे , न ही मंगल बद होता हो।
माता चन्द्र फल पिता का शिवजी[2], नेक जभी बुध होता हो।
उल्ट हालत जब तख्त पे आती[3], भला चन्द्र, बुध उत्तम हो।
पहले सूर्य हो शनि 11, बुध पाया घर 5 का हो।
भला गुरु हो 9 जब बैठा, राजयोग सब होता हो।
विचार बुद्धि धन-दौलत लम्बा, दिल से छोटापन नेक ही हो।
ठीक उत्तर शरारत देगा, हुआ चन्द्र[4] चाहे नष्ट हो।
8 मंदा[5] या आठ पे दुखिया, समय निशानी मंदा हो।
चोरी कोई न बेशक करता, माया दौलत धन हानि हो।

1. आयु के हर तीसरे दिन, मास, साल। 2. दोनों में से एक ही ज़िन्दा या दो का काम देगा।
3. 3-15-27-39-57-67-75-87-99-111 साल की आयु।
4. साथ या मंदा प्रभाव हो।
बुध लड़की या बहन का जन्म (वास्ते कमी संतान) चन्द्र की चीज़ों का दान, केतु लडके का जन्म दोहते का साथ, घर के सदस्यों की कमी पर सूर्य की चीज़ों का दान। राहु ससुराल संबंध नाग हानि (अनसुनी) शरारत, कन्यादान शुक्र (स्त्री विवाह, गाय का आना) चोरी बनावटी धन सूर्य की चीजें गूड़ रंग।
5. खाना नं० 8 के मंदे ग्रह की आयु या स्वयं अपनी 8 साला आयु में मंदे ग्रह से संबंधित चीजों से मंदी निशानी होगी।

हस्त रेखा मंगल नेक से रेखा चन्द्र को या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर समाप्त होवे अपनी लिखाई या खाना नं० 8 की हालत चन्द्र की नेक या बद तासीर बता देगी। खाना नं० 8 की हालत स्वयं हाथ की लिखाई का ढंग होगी।
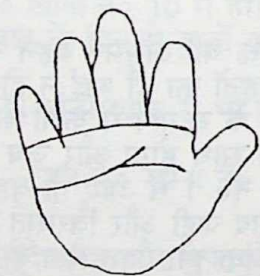
लिखाई	प्रभाव
बड़ा और मोटा हर्फ	खुले दिल वाला
साफ साफ पढ़ा जाने वाला	मज़बूत तथा सख़्त दिल वाला
लम्बी-लम्बी लकीरें	बेगैर सोचे समझे जल्दी करना
सीधा साफ	कुदरती अकल वाला
बारीक	अच्छी लियाकत वाला
गोल तथा बराबर के अक्षर	अच्छा फैसला करने वाला
अक्षर बुझा हुआ	शर्मनाक डरपोक
खूबसूरत तथा फूलदार	गप्पी

नेक हालत

1. चन्द्र का सरोवर अब शांति का दाता और जगत माया का पूर्ण अलंकार तथा योगी होगा। साधु हो तो रिद्धि- सिद्धि का मालिक, गृहस्थ हो तो धन-दौलत का भंडारी। हर दो हालत में वह धनी अवश्य होगा या मर्दों की बरकत, आयु की वृद्धि, स्त्रियों की सेवा बल्कि पूजा होगी और तीनों काल उन्नति ही उन्नति होगी। मर्द स्त्री की आपसी सेवा उत्तम प्रभाव देगी। खाना नं० 3 का शुक्र अगर कुल खानदान का तारने वाली लक्ष्मी तो चन्द्र नं० 3 साधना या रिद्धि-सिद्धि का दाता और मालिक होगा। जन्म के गरीब या यतीम को चन्द्र नं० 3 की हालत में कुदरत की ओर से बड़े लम्बे हाथों से सहायता मिलेगी और मजलूम को एक दम आराम के सामान मिल जाएंगे।

   इतना तो फल जरुरी कर देगा, चीजे चन्द्र। मौती से बच रहेगा, सब माल, जानों मंदिर।।

2. सांसारिक मंदे प्यार से घृणा करने वाला, शिवजी की तरह मृत्यु पर भी काबू पा लेने की तरह ऊंची हिम्मत का स्वामी होगा। न कभी रिज़क की कमी, न ही कभी चोरी होगी। लड़ाई में सदा जीतेगा माता भी अब पिता और चन्द्र स्वयं वृ० खाना नं० 3 का काम देगा या बुध की उम्र में दोनों में से एक कायम, कुल घर में मौतें कम होंगी या बे मौका मौतें न होगी। चन्द्र अब चोरी, मौत का रक्षक होगा, जब तक पाप राहु, केतु मंदा न हो, बुध की पूजा शुभ होगी वरना नमक हराम दलाल या घर की बदनस्ल लौंडिया (नौकर) दूध की कीमत में दूध देने वाला पशु भी साथ में बिकवा देंगे यानि चन्द्र का फल बहुत ही मंदा होगा।

   –जब बुध उत्तम या चन्द्र कायम हो।

3. आयु के हर तीसरे दिन मास, साल कभी बुरा प्रभाव न देगा। शुक्र उत्तम और मंगल कभी बद न होगा। चाहे कहीं भी कैसा भी बैठा हो अगर किसी कारण पुरुषों की कमी हो जाए तो स्त्रियों की कमी या स्त्रियां दुःखी हालत में न होगी।

   –जब खाना नं० 9-11 खाली हो।

4. चन्द्र और बुध दोनों ही उत्तम हो जाएंगे। बाकी 3 बचने वाले मकान का भाग्य, 3-15-27-39-51-63-75-87-99-111 साल की आयु स्त्रियों की इस घर में पूजा और पालना होगी और वह उन्नति का कारण होगी और चन्द्र खाना नं० 3 का खानदान पर उत्तम प्रभाव होगा। –जब बुध मंदा हो और चन्द्र खाना नं० 1 आ जाए बुध खाना नं० 11 हो।

5. राजयोग होगा माता-पिता का सुख सागर उत्तम और लम्बे समय तक उत्तम फल देगा। स्वयं शांति और धन का चश्मा सा चलता होगा। –जब सूर्य खाना नं० 1, शनि खाना नं० 11, बुध खाना नं० 5, वृहस्पति खाना नं० 9 और खाना नं० 4 भला हो।

क्याफा - पितृ रेखा हो।

6. दूध और मिट्टी हर दो के कारोबार भले पशुपालन और पशुओं से लाभ होगा। –जब राहु, केतु उत्तम हो।

क्याफा

अंगूठा छोटा अंगुलियां त राशी हुई।

7. आयु कम से कम 80 साल हो। –जब बुध खाना नं० 11 में हो।
8. दिमाग़ी खाना नं० 27 गौर तथा खोज की शक्ति का स्वामी, दिली ख्याल धन-दौलत लम्बे पैमाने का चाहे दिल छोटा ही हो, मगर बुद्धि अच्छी हो, नीयत नेक, शरारत का ठीक जवाब देने वाला और हिम्मत रखने वाला होगा। चाहे चन्द्र नष्ट ही क्यों न हो चुका हो। –जब मंगल खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. खाना नं० 8 के मंदे ग्रह की आयु या स्वयं अपनी आयु 8 साल में मंदे ग्रह की चीज़ों से मंदी निशानी होगी। अब चोरी तो चाहे न होगी मगर धन हानि अवश्य होगी।
2. अव्वल तो मंगल बद होगा ही नहीं मगर शनि की मिलावट या स्वयं की चीज़ों या हालात के कारण या मंगल नष्ट करने से लड़की का पैसा (लड़की बेचनी) और बकरी का दूध छाती में ज़हर का प्रभाव देंगे। चोर की चोरी से डरते घर में ताला लगा कर रखने की जगह आए मेहमान को अगर दूध नहीं तो पानी से खाली न जाने दें, नहीं तो आयु की किश्ती में दरिया का पानी जले और उजड़े रेगिस्तान और वीरान जंगल की लम्बी रेत में जलता होगा।
3. धन की बरकत के लिए लड़की की पैदाइश पर चन्द्र की चीज़ें दान देना शुभ होगा। बुध की पूजा अमूमन उम्दा वरना नमक हराम दलाल की तरह दूध की कीमत में दूध देने वाला जानवर भी साथ ही बिकवा देगा।

4. बलाए बद से बचने के लिए राहु (ससुराल) के साथ या संबंध पर कन्यादान शुभ होगा।
5. घर के सदस्यों की गिनती बढ़ाने हेतु तथा बलाए बद से बचाव हेतु लड़के के जन्म पर (केतु के साथ) या संबंध पर सूर्य की चीज़ों का दान शुभ हो।
6. ज़र चोरी मौत जहमत से बचाव के लिए शादी या गाय आने पर (शुक्र के साथ) बनावटी सूर्य से संबंधित चीज़ों का दान शुभ यानी वह चीज़ें जो सूर्य रंग की तो हो मगर चमकदार न हो।
7. जब बुध या मंगल खाना नं० 10 हो तो माता और भाई के लिए चन्द्र और मंगल से सम्बन्धित चीज़ों का बुरा प्रभाव होगा। जुदाई या रंजिश आदि हो, मगर फिर भी अपने लिए शुभ और परिणाम बुरा न होगा। मंगल का स्वयं का वह मंदा फल जो चन्द्र खाना नं० 11 का हो सकता है (पूरा हाल चन्द्र खाना नं०11) यानि चन्द्र अब खाना नं० 3 में होता हुआ वही फल देगा जो चन्द्र खाना नं० 11 में हो या जो चन्द्र केतु एक साथ का हो सकता हो।

–जब केतु खाना नं० 11 में हो।

चन्द्र खाना नं० 4

(खर्चने पर और बढ़ने वाली आय की नदी दरिया)

शुक्र सुख में क्यों तू न धन का करता।
कदर दुखिया जाने हो आँहें जो भरता॥

आँख मैली तू क्यूं करता, रिज़क जब मालिक देता हो।
दूध बेचे ज़र [1] चश्मा जलता, मुफ्त दिए ज़र बनता हो।
मंद पापी न शुक्र हो, न ही बुरा 8 दूजा हो।
आयु मंदी न पिछली अवस्था, बंद मुट्ठी [3] ग्रह उत्तम हो।
माता-पिता [4] कुल घर के तारे, शगुन फला दूध होता हो।
केतु [5] गुरु जब मंदिर टेवे, ज़हर टेवा सब धोता हो।
साथ चन्द्र से 4 का टोला, बढ़ती माया कुल चौगुनी हो।
तीन कमेटी तीनों मंदा, पापी मंदा 9 स्त्री जो।
5 रवि, गुरु 2 घर बैठा, राजा समुद्र मोती हो।
बुध कभी 10 मंगल आया, मिसल राजा स्वयं योगी हो।

1. ज़र दौलत का चश्मा मालोधन की कमीबेशी के लिए माया दौलत के हाल में देखें। अब आयु के संबंध में राहु, केतु का संबंध (मंदा प्रभाव) न होगा, चाहे वह खाना नं० 1-6-8-12 में कहीं ही हो। शर्त यह है कि जन्म शुक्ल पक्ष का हो और जन्म यदि शुक्ल पक्ष का न हो तो राहु, केतु का संबध (मंदा प्रभाव) साथ होगा।
2. जब अकेला चन्द्र खाना नं० 4 में हो या फैसला आंख की हालत पर होगा।
3. खाना नं० 1-4-7-10। 4. जद्दी कारोबार शुभ फल देगा।
5. वृहस्पति, केतु खाना नं० 2 या बाबा, पोता या दोहता कुत्ता मंदिर या पितृ यज्ञ में इकट्ठे।

हस्त रेखा **धन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे त्रिकोण △ /हो।**

नेक हालत

1. चन्द्र की असलीयत का फैसला अब मनुष्य की आँख पर होगा या खाना नं० 8-10-11 शनि की हालत पर होगा। आयु 85 से 96 साल होगी।
2. जब अकेला चन्द्र खाना नं० 4 हो तो खर्चने पर और भी बढ़ने वाला माया का दरिया। माता चाहे असली चाहे सौतेली तथा माता खानदान शुभ फल के होंगे। चन्द्र के काम चीज़ें संबंधी (बजाजी) में माता साथ से लाभ और सहायता मिलेगी।
3. दिमागी खाना नं० 28 शुक्र से मुश्तरका पुरानी याददाश्त की शक्ति, सवारी का सुख और खानदान हर रिश्ते की वही हालत होगी जैसा कि उस रिश्ते का संबंधित ग्रह टेवे में हो। जैसे मंगल अच्छा तो बड़ा भाई ताया, मामा सभी अच्छी हालत के होंगे। चन्द्र की चीज़ें ज़र तथा धन रहेगी। 12 साल संतान के पैदा होने का समय होगा। माता-पिता और अपने घर कबीले में सब को तार देगा। चन्द्र अब दूध समान होगा यानी जब और जिस किसी का चन्द्र खाना नं० 4 में हो तो उस शुभ काम शुरू करते समय दूध से भरा हुआ बर्तन बतौर कुम्भ रख लेना शुभ होगा।

अब पापी और शत्रु (शुक्र, बुध) ग्रहों का मंदा प्रभाव न होगा बल्कि राहु,केतु जो पाप गिने जाते है वह अब माता के दूध की तरह कसम खाकर पाप और बुरा नहीं करेंगे। मंगल बद और शनि में अब ज़हर नहीं रहेगी। सब पापी ग्रह अगर भला नहीं तो बुरा भी न करेंगे और न ही खाना 8-2 कभी बुरा होंगे बल्कि खाना नं० 1-7-4-10 के ग्रह उत्तम हालत के होंगे। न आयु की कमी न बुढ़ापा मंदा, जन्म शुक्ल पक्ष तो बुढ़ापा उत्तम करना वरना बचपन उत्तम, और चन्द्र के साथ या पापी ग्रहों की ज़हर मिला प्रभाव शामिल होगा।

4. जद्दी काम उत्तम फल देंगे, पुरानी अमानत लेने वाला वापिस ही न आएगा। –जब वृ० खाना नं० 6 में हो।
5. माया धन 4 गुणा उत्तम होगी। नर ग्रह बेटे की तरह बुध, शुक्र, बहू, बेटी की तरह चन्द्र को सहायता देंगे।

–जब चन्द्र के साथ कोई तीन ग्रह कुल मिलकर 4 का टोला हो।

6. भला लोग, उत्तम खानदानी का सबूत होगा।

–जब शनि खाना नं० 9- 11 में हों।

7. पूरा इकबाल पसंद और नर संतान के जन्म दिन से इकबाली होगा। राजदरबार से संबंधित समुद्री सफ़रों से मोती पैदा होंगे। मिसल राजा योगी होगा। इतना सुखी कि उसे दुःख का पता ही न हो और कभी शुक्रिया तक भी न करेगा। हर दो ग्रह (शुक्र तथा मंगल) का फल उत्तम, राजदरबार से धन और लम्बी समुद्रों से बेशुमार लाभ होगा। कामदेव से दूर होगा।

–जब सूर्य, वृहस्पति खाना नं० 5, वृ० खाना नं० 2-9 सूर्य खाना नं० 5, शुक्र या मंगल या बुध खाना नं० 10, अकेला चन्द्र खाना नं० 4, अकेला शुक्र खाना नं० 7 में हो।

मंदी हालत

1. अगर किसी को दूध देने का दिल नहीं या किसी चीज़ की कमी ही है तो कम से कम आंख तो मैली न करो।
2. दूध बेचने या जलाने के पेशे से धन का चश्मा जलता होगा जिसकी मुरम्मत आदि के लिए पानी के बदले में मुफ्त दूध देना सांसारिक सुख सागर की नींव होगा।
3. सिर फट जाए, राहु का मंदा असर बुध (बुध की चीजें काम या संबंधी) पर होगा। –जब राहु खाना नं० 10 में हो।
4. स्वयं रोटी देकर ज़हर के अपराध में सज़ा पाए। वृहस्पति, केतु खाना नं० 2 हो या जब बावा, पोता या दोहता कुत्ता एक साथ धर्म स्थान में जाए या कोई यज्ञ करे तो टेवे की सब विष धुल जाएगी। –जब वृ० खाना नं० 10 में हो।
5. हर एक ग्रह का मंदा प्रभाव होगा। खाना नं० 4-9 के सब ग्रह या पापियों के ज़हर की घटनाएं मंदी। मंगल बद (पेट नाभि) बुरा हो तो संभव, शनि (आँख विष भरी) विषैला साँप हो तो संभव, शनि का हैडक्वाटर खाना नं० 8 मौत पापियों के झमेले की जगह हो तो संभव , मगर खाना नं० 4 पाप (राहु, केतु) के बुरे करने का मैदान न होगा। चाहे वह खाना नं० 2-6-8-12 में कहीं भी हो। सुख की अधिकता के कारण जब वह शुक्रगुजार न होगा तो इतना दुःखी हो जाएगा कि आंहें ही भरता होगा।

–जब चन्द्र के साथ दो कोई और ग्रह या कुल 3 का टोला या पापी मंदे या खाना नं० 9 में शुक्र/शनि हो।

चन्द्र खाना नं० 5

(बच्चों के दूध की माता तथा आत्मिक नदी)

सलाह नेक की जो, बुरा करते लेता।
भला उससे बढ़कर नहीं कोई होता।।

मर्द हीरा संसार काटे,	*झुकना खुद आता नहीं।*
लेख राजा आयु[1] लम्बे,	*बोल[2] पर मीठा नहीं।*
दरिया को सीधे चलते,	*आसान राह न होगा।*
पर कब रुकेगी नदी,	*पानी भरी जो होगी।*
शुक्र मंदे 3 दूजे बैठे,	*मित्र मंदे 9-11 जो।*
बुध तीजे गुरु 9-2 मारे,	*जलता मगर 10-12 हो।*
असर भले चाहे 3-8 मंदा,	*बुध मोती 7-11 हो।*
नष्ट लालच खुदगर्जी होता,	*चिड़ियों से बाज लड़ाता हो।*

1. मंदा बोल ही मुसीबत आने की निशानी होगी और बुध की मंदी वस्तु का आना इसकी निशानी होगी।
2. जब नर ग्रह साथी हो या मदद पर हो तो :- सूर्य खाना नं० 10 - आयु 12 दिन। सूर्य खाना नं० 11 - आयु 12 साल।

हस्त रेखा **दिल रेखा सूर्य के बुर्ज की जड़ तक ही समाप्त हो। चन्द्र की बुर्ज रेखा सेहत रेखा से मिले।**

नेक हालत

1. बच्चों के दूध की माता तथा आत्मिक नदी, जिस तरह निकलता और बहता हुआ पानी सदा उत्तम होता है उसी तरह ही बच्चों के पालन और धर्म के स्वभाव पर धन की बरकत की हालत होगी। रास्ता सच्चाई तेरा पल्ला सदा भारी रहेगा। अदला इंसाफ की तू है मज़ान (तराज़ू)।
2. दिमागी खाना नं० 29 कद्दोकामत और बराबर की बुद्धि पुरुषों में हीरे उत्तम सा आदमी होगा। मगर उसको किसी के आगे झुकना नहीं आता। कट जायगा तो चाहे मगर झुकेगा कौन। राजा के भाग्य और लम्बी आयु का स्वामी होगा।
3. राहु अब टेवे में ठंडा होगा। आयु 100 साल पूरी लम्बी होगी। चिड़ियों (केतु खाना नं० 6 अपनी मामूली संतान) से बाज (बुध साहसी शत्रु) को मरवाने के साहस का स्वामी होगा। न्याय की तराजू का स्वामी, रहमदिल मनुष्य लड़ाई-झगड़े में जिस की ओर हो जाए वही और जीतगी। उसका पल्ला भारी होगा। व्यापार अमूमन मंदा होगा। मगर राजदरबार (धन-दौलत की आमदनी का जरिया) में मान होगा। जंगल पहाड़ को आबाद करने वाला धर्मात्मा होगा।
4. रफाय आम (आम चलने के नियम) के असूल की पालना करने से उसकी संतान के गांव आबाद होंगे।
5. नेक परिणाम होंगे। –जब मित्र ग्रह (सूर्य, वृ0) खाना नं० 2-3, शत्रु ग्रह (बुध, शुक्र) पापी खाना नं० 9-11 में हों।
6. चन्द्र अब मोती की कीमत और उत्तम फल देगा। खाना नं० 3-8 मंदा होते हुए भी चन्द्र का असर उत्तम ही होगा। –जब बुध खाना नं० 7-11 में हो।
7. नर संतान 5 से कम न होगी चाहे पापी ग्रहों का साथ हो, संतान पर कभी मंदा प्रभाव न होगा। –जब केतु उत्तम हो।
8. अब चन्द्र खाना नं० 5 सोया हुआ लगे, अतः चन्द्र से संबंधित काम के समय मंगल की मदद लेकर जाना यानि खाने-पीने की चीज साथ ले जाना और स्वयं भी घर से चलते समय मीठा भोजन करके चलना मददगार होगा। –जब खाना नं० 9 खाली हो।

मंदी हालत 1. खाना नं० 10-12 में नेक ग्रह होते हुए भी चन्द्र का प्रभाव मंदा ही होगा। जब खाना नं० 10 के ग्रह से चन्द्र बर्बाद होगा या समुद्र का पानी तक जल जाए मगर खाना नं० 10 स्वयं बर्बाद न होगा और खाना नं० 12 का ग्रह स्वयं बर्बाद हो जाए मगर चन्द्र बर्बाद न होगा।

2. आम दुनियादार तो अपने मंद भाग्य के लेख से मारे जाए मगर ऐसा व्यक्ति जब कभी भी बर्बाद होगा स्वयं अपनी ज़ुबान मंदी करने से बर्बाद होगा अक्ल में चाहे वह लाखों में एक हो। -जब बुध की चीज़ें संबंधी खासकर बहन, बुआ लड़की साली सबके सब मंदे बर्बाद या बर्बादी का बहाना या बुध से संबंधित कारोबार भी यही असर देगा।
3. जैसा कि उसका दिल होता नहीं, ज़ुबान मंदी या ढिंढोरा पीटने की आदत होती है जिससे कोई भेद छुपा नहीं सकता। अत: अपना भेदी ही उसे बर्बाद करे। लालच, खुदगर्जी नष्ट होने की नींव होगी। ऐसे व्यक्ति को किसी का बुरा करते समय दूसरे आदमी, सूर्य या दीवार से पूछ लेना कि बुरा किया जाए या नहीं सहायक होगा।
4. शतरंज के घोड़े चन्द्र की तरह ढाई घर की टेढ़ी चाल चलेगा, जिसके अनुसार बुरा प्रभाव खाना नं० 3-8-10-12 पर भी होगा। -जब चन्द्र मंदा हो।
5. बिज़ली की शक्ति के मालिक मौत के यमों की तरह मंदे नतीजे होंगे। -जब खाना नं० 2-3 में शत्रु ग्रह पापी बुध शुक्र खाना नं० 9 में मित्र ग्रह सूर्य, वृहस्पति हों।
6. बुध के काम या चीज़ें तथा कारोबार और शरीर के भाग (बुध से संबंध) जीभ बोलना आदि मंदे होंगे और आने वाली मुसीबत की निशानी और उसकी नींव भी बुध की चीज़ों का आना ही होगा। जंगल (बुध) पहाड़ (शनि) का कामयाब मुसाफिर (लाभ) न होगा।
7. आयु 12 दिन हो। -जब सूर्य खाना नं० 10 में हो और जब नर ग्रह साथी या मदद पर हो।
8. आयु 12 साल हो। -जब सूर्य खाना नं० 11 में हो और जब नर ग्रह साथी या मदद पर हों।

चन्द्र खाना 6

(धोखे की माता तथा खारा कड़वा पानी)

एवज़ तुझको दुनिया, हे तेरा ही देती।
नहीं पहले की गर, तो कर देख नेकी॥

आठ दूजे बुध, मंगल 12, मंद हुई [1] न धन हो।
माता, बेटा न दो कोई बैठा, पिता रोवे खुद भाग्य को।
4-12-8, 34 मंदे [2], शुक्र, केतु, बुध मंदा [3] हो।
उल्ट मगर दिन 6 कोई तड़पे, शफा घड़ी इक देता हो।
कुआँ [4] लगे 6-12-24, मुसाफिर पानी या खेती जो।
श्मशान जाए कुल नहा उस अपनी, मरे माया बिन बरती वो।

1. अकेला चन्द्र तो जवानी का समय उत्तम, शत्रु-मित्र बुढ़ापा उत्तम।
2. खाना नं० 4-8-12 मंदे हों तो चन्द्र का फल 34 साल की उम्र तक मंदा।
3. शुक्र मंदा हो तो ससुराल खाना बर्बाद। बुध मंदा हो तो माता खानदान बर्बाद। केतु मंदा हो तो पिता खानदान बर्बाद।
4. अस्पताल या मुर्द घाट में कुआँ लगाना सहायक होगा।

हस्त रेखा **चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो, अंगूठे की बीच वाली पोरी पर ⬭ जौ का निशान हो, मगर सही साबुत हो। चन्द्र के समय से जायदाद का फल मध्यम होगा, लेकिन बाकि सब हालतों के लिए उत्तम होगा। अगर टूटा-फूटा हो (चन्द्र शत्रु ग्रहों से घिरा या मंदा) तो बुढ़ापा मंदा।**

नेक हालत
1. जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं की तो करके देख। उम्र 80 साल। दिमागी खाना नं० 3 बोझ या बराबर पन, जैसा मुंह वैसी चपेड़ से, अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा।
2. चन्द्र का फैसला वास्ते मान-सम्मान- खाना नं० 2 से होगा।
चन्द्र का फैसला वास्ते चश्मा रिज़क- खाना नं० 4 से होगा।
चन्द्र का फैसला वास्ते आयु - खाना नं० 8 से होगा।
चन्द्र का फैसला वास्ते रात का सुख, गृहस्थी - खाना नं० 12 से होगा।
3. छ: दिन से तड़पते हुए मुर्दे के मुंह में पानी डालते ही उसे आराम हो जाए। -जब खाना नं० 2-4-8-12 सब उत्तम हों।
4. अब चन्द्र कोई ऐसा मंदा फल न देगा। अगर किसी और कारण माता का स्वास्थ्य निकम्मा या माया धन के चन्द्र की दूसरी चीज़ें, काम, कारोबार, रिश्तेदार ठीक साबित न हों तो पिता (वृहस्पति) को दूध पिलाना या धर्म स्थान में चन्द्र की चीज़ें दूध आदि देना उत्तम फल पैदा करेगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 2 में हो।

मंदी हालत
1. शुक्र और केतु जब भी भले न रहेंगे, पिता खानदान बर्बाद। माता खानदान पर बुरा प्रभाव जो 34 साल तक मंदा हो। -जब खाना नं० 2-4-8-12 सभी मंदे हों।
2. चन्द्र भाग रद्दी, तकिया मुसाफिरा जीवन। आत्महत्या तक की नौबत जो कि मगर गरीबी कारण न हो। -जब बुध खाना नं० 2-12 में हो जाए।
3. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काने हो। -जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
4. माता बचपन में ही गुजर जाए। यदि जीवित हो तो दूसरे के लिए दोनों मुर्दे से बुरे और मंदे प्रभाव के ।

-जब मंगल खाना नं० 4-8, बुध खाना नं० 6 में हों।

5. टेवे वाला छोटी आयु का, यदि माता जीवित हो तो दोनों मुर्दे के समान हों।
-जब मंगल खाना नं० 6-12 और बुध खाना 8 में हो।

6. चन्द्र की आयु 6-12-24 में धर्मार्थ कुआँ या कुएँ पर मुफ्त पानी पिलाने वाले का प्रबन्ध करना या आम लोगों के प्रयोग के लिए लगाना या खेती में लगाया कुआँ मंदा होगा। मगर अस्पताल /श्मशान के आहाते के अंदर लगाना वर्जित नहीं है। स्वयं के आराम के लिए कुआँ कोई मंदा न होगा, संतान माता पिता खानदान की आयु पर हमला होगा। उसकी चांदी, मिट्टी के बराबर का मूल्य देगी। धन-दौलत, धर्म, ईमानदारी शारीरिक स्वास्थ्य मंदा, दूध का प्रयोग मंदा, रात को दूध पीना विष का काम देगा। पिता खानदान पर मंदा प्रभाव देगा। -जब चन्द्र को केतु बर्बाद करे।

उपाय

धर्म स्थान में कभी-कभी चन्द्र के मित्र ग्रहों (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) से संबंधित कोई न कोई चीज़ देते रहना या वैसे ही धर्म स्थान में जाकर सिर झुकाना सहायक होगा। स्वास्थ्य के लिए दूध ज़रूरी हो तो केवल दिन के समय पी लें। रात के समय फटा दूध या दही या पनीर शुभ फल देगा, दूध को फाड़ कर पानी या दही में से पानी निकाल कर बाकी रहा पनीर बरता जाए।

चन्द्र खाना नं० 7

(बच्चों की माता, खुद लक्ष्मी अवतार)

नहीं दिन है परिवार बढ़ने को लगते।
भरेंगे खज़ाने जो अपने ही धन से॥

धन[1] ना बेशक पहले इतना,	*न ही चाहे परिवार[2] हो।*
खुद अकेला चन्द्र बैठा,	*लक्ष्मी अवतार[3] हो।*
मूल्य बेचे दूध, पानी,	*पूत माया जलता हो।*
दूध [4] स्त्री साथ लाती,	*माया बेटा बढ़ता हो।*
पापी शुक्र, बुध हर कोई जलता,	*शादी उम्र जब चन्द्र हो 24।*
साथ पापी गुरु, मंगल मंदा,	*बुध जले आठ मंदिर जो।*
मंदा शुक्र घर चन्द्र मंदे,	*बुध भला न केतु हो।*
मौत जद्दी घर घाट ही अपने,	*लेख मंदा लाख बेशक हो।*
बुध राजा सरदार नशों का,	*खाक खज़ाने भरता हो।*
आठ खाली बुध उत्तम बैठा,	*पहुँच खुदाई 5 करता हो।*
राजा तख्त या शत्रु साथी,	*साथ पाप स्वयं चन्द्र हो।*
उम्र मंदी मंगल तक उसकी,	*माया जले बुध मंगल जो।*

1. शनि खाना नं० 3 में हो। 2. वृहस्पति खना नं० 7 में हो।
3. शुक्र बैठा होने के घर का फल।4. शादी समय स्त्री के घर से पति के घर तक चन्द्र की चीज़ें स्त्री के साथ आएं।
5. कवि, ज्योतिषी अगर फकीरी तो अव्वल दर्जा वरना चालचलन शक्की होगा, बुद्धि की बारीकी, दूध दिल साफ देगा।

हस्त रेखा

दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या बुध के बुर्ज पर ही समाप्त हो जावे। चन्द्र रेखा सिर की रेखा से मिलकर समाप्त हो जावे तो आयु समाप्त प्रभाव होगा। ऐसी हालत में फकीरी रेखा नशेबाजी रेखा, शरारत रेखा, सिर, दिल सभी रेखाएं मिल जायें। स्वास्थ्य रेखा दिल रेखा को काटे।

नेक हालत **शनि तीजे वृहस्पति सातवें, कितना ही कंगाल हो। स्वयं अकेला चन्द्र सातवें, लक्ष्मी अवतार हो।**

चन्द्र चाहे अब बुध का फल अमूमन खराब कर देगा मगर स्वयं अपने प्रभाव से वह ग्रह चाली बच्चों की माता चन्द्र पूरा उत्तम और स्वयं नेक लक्ष्मी का अवतार होगा जब तक राहु, या केतु का बुरा असर शामिल न हो। ऐसा व्यक्ति पैदा होते समय चाहे कितना ही निर्धन हो और परिवार भी लम्बा न हो, फिर भी अपने जन्म से मिट्टी में चांदी की तरह चमकदार होगा। जायदाद जद्दी या स्वयं पैदा की हो या न हो मगर नकद नारायण ज़रूर होगा। मृत्यु अपने घर घाट में ही होगी। बहू, बेटी, मां, बहन के प्यार से दूर रहेगा। प्यार-मुहब्बत से दूर, दूध की तरह साफ दिल होगा, राजदरबार में शान और चन्द्र की चीज़ों के सम्बन्ध का सुख होगा। चीज़ें चाहे जानदान या बेजान हो। कविता तथा ज्योतिष का माहिर भी हो सकता है वरना चालचलन शक्की होगा। तिलस्मी भूत समान होगा अक्ल की बारीकी या खुदाई पहुँच दर्जा कमाल, अगर फकीरी भी हो तो सबसे उत्तम और नेक प्रभाव की होगी। दिमागी खाना नं० 31 शुक्र से मुश्तरका रंग रूप में फर्क आदि की शक्ति दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग का फर्क भांप लेने का स्वामी होगा। स्वयं टेवे वाले के लिए संसार का सुख और शुभ स्त्री का आराम होगा।

1. अन्दर की बुद्धि और खुदाई पहुँच दर्जा कमाल की होगी। -जब बुध नेक और खाना नं० 8 खाली हो।
   क्याफा :- अन्दरुनी अक्ल रेखा या चन्द्र के बुर्ज से बुध के बुर्ज खाना नं० 7 को रेखा हो।
2. धन-दौलत और परिवार की देवी चाहे शनि खाना नं० 3 (धन की कमी) वृ०, मं० खाना नं० 7 (परिवार की कमी) क्यों न हो।
   -जब बुध उत्तम हो।
3. सांसारिक हर कारोबार और गृहस्थी हालत में हर ओर शांति मिले। -जब शुक्र नेक हो।
   क्याफा :- चन्द्र से शुक्र के बुर्ज खाना नं० 7 की रेखा शांति रेखा हो।

मंदी हालत

बूढ़ी माता से झगड़ा टेवे वाले की मिट्टी तक उड़ा देगा। दूध, पानी मूल्य बेचने से संतान और धन घटता होगा। अमूमन शादी के समय स्त्री घर आने के समय या उससे पहिले से चन्द्र की जानदार चीज़ें, घोड़ी, माता की आयु शक्की गिनते मिलते है। जब शादी की आयु 6-12-24 हो तो पापी, शुक्र और बुध तीनों का फल मंदा होगा। लेकिन अगर घर में चन्द्र की चीजें चांदी या दूध या नदी का पानी (मगर अपने वज़न के बराबर) मौजूद हो तो आल औलाद बढ़ती रहे, वरना चन्द्र, शुक्र का झगड़ा वरना चन्द्र की जानदार चीज़ें घोड़ी माता तो बेशक चल बसे। जो ज़रूरी नहीं कि गुजर जाए लेकिन लक्ष्मी की बरकत और भी बढ़ती जाए। बुध के संबंधित कामों या माया दौलत के संबंध में बुरा प्रभाव ही देगा।

1. बचपन का समय मंदा, मंगल मंदा होगा। –जब गुरु खाना नं० 7 या पापी का साथ, बुध खाना नं० 8-2 में मंदा हो।

क्याफा **सिर रेखा और दिल रेखा आपस में मिल कर एक ही रेखा हो जाए या सिर रेखा स्वास्थ्य रेखा को काट जाए या दिल रेखा सिर्फ बुध के बुर्ज तक ही हो, पेशा बर्बाद। रेखा चन्द्र से बुध को रेखा और मंगल बद हो।**

2. शुक्र बैठा होने वाला घर मंदा होगा मगर धन मंदा न होगा और न ही भाग्य मंदा हो। –जब चन्द्र मंदा हो।
3. बच्चे छोटी-छोटी आयु में गुजरते जाए। –जब शुक्र पाप के साथ किसी भी जगह इकट्ठे हों।
4. सास, बहू, चन्द्र, शुक्र का झगड़ा। सब नशेबाजों का सरदार। जायदाद बर्बाद करे चाहे हथियार से मौत हो, मगर आयु फिर भी लम्बी होगी। –जब शुक्र खाना नं० 1, बुध खाना नं० 1, शनि का साथ या संबंध हो।
5. शादी के दिन स्त्री के घर से पति के घर तक स्त्री के साथ ही अगर चांदी की चीज़ें दूध या चांदी आये या स्त्री टेवे वाले के घर में पहली बार दाखिल होने से पहले उसके पति के घर में चन्द्र की चीज़ें दूध, चांदी दरिया का पानी स्त्री के वज़न के बराबर पहले ही मौजूद हो तो औलाद बढ़ती रहेगी वरना चन्द्र, शुक्र का झगड़ा या स्त्री आते ही टेवे वाले की माता या धन बर्बाद होने शुरू हो जाएंगे।

चन्द्र खाना नं० 8

(मुर्दा माता, जला दूध)

बुजुर्गों के दिन चीज़ चन्द्र जो देता। रुके न कभी सांस, जब तक हो लेता।।
सूर्य मंदा, पापी बुरे, मंगल बद भी हो, राहु, केतु, बुध मिलते गुरु, शुक्र नीच भी हो।

खबीस व अकारब मालो दौलत अपने और बेगाने को, चन्द्र 8 वें चाहे सब हारे पर हारे न आयु को।

ससुराल तारे, दामाद [1] तारे, तारेगा मामा को भी।
उल्टी गंगा होके[2] तारे, आयु के आखिर भी।
चलन धर्म [3] न जब कोई उम्दा, कुआँ पेशानी [4] भरता हो।
नज़र कठीला हर हो जलता, सेहत दौलत खुद मंदा हो।
नाम बड़ो [5] के दूध जो देता, हुक्म बुरा न ग़ैबी हो।
महल कुएं छत जिस दम बनता, दमा लावल्दी मिरगी हो।
पापी शुक्र, बुध 11 बैठा, खाली पड़ा खुद मंदिर हो।
माता चौथे 8-24 मारे [6], चीज़ भली न चन्द्र हो।
बुध मगर जब दूजे बैठा, नौंवे गुरु चाहे 12 हो।
माता-पिता दो आयु लम्बा, असर चन्द्र का उम्दा हो।
बुध, मंगल न पापी उत्तम, जान स्वयं चन्द्र मंदी हो।
3-4 कोई दूजे मंदा, चन्द्र, शुक्र फल रद्दी हो।
चरण बड़ों के पापी धोते, उम्र समुद्र लम्बा हो।
असर बुरा न राहु टेवे, मंदिर[7] शनि, गुरु वर्षा हो।
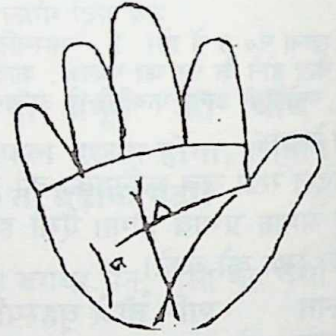
1. चन्द्र की आयु 12-24-48 साला आयु के बाद। 2. सूर्य या शुक्र उत्तम।
3. जब शुक्र मंदा या स्त्री का संबंध मंदा, शनि मंदा। सेहत मंदी, हथियार से मौत, पाप राहु ससुराल, केतु औलाद बर्बाद अचानक हमले।
4. बुध, शनि मंदा। 5. श्राद्ध आदि खासकर जब चन्द्र खाना नं० 8 तथा वृहस्पति खाना नं० 4 में हो।
6. आयु के 4-8-24 साल में माता गुजरे। 7. शनि, गुरु के घर या खाना नं० 2 पर शनि, गुरु का प्रभाव उत्तम हो।

हस्त रेखा

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो। मंगल बद से चन्द्र को रेखा। पितृ रेखा या भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण बना दे। आयु रेखा या भाग्य रेखा दो शाखी हो < Λ जावे कलाई की ओर खाना नं० 9 के करीब आपस में मिल जाए।

नेक हालत

1. अब टेवे में राहु का प्रभाव बुरा न होगा और न ही मंगल बद होगा। चन्द्र की बेजान चीज़ों पर भला और उत्तम प्रभाव देगा। अब चन्द्र नष्ट या मुर्दा न होगा। –जब वृ०, श० खाना नं० 2 में हो।
2. स्वयं की आयु लम्बी होगी और माता के बैठे कभी आयु की हार न होगी या पहले स्वयं मरेगा, फिर माता बाद में, जिसकी आयु कुएं के बराबर कम से कम 80 वर्ष तक लम्बी होगी। –जब बुध उत्तम हो।
3. उल्टी गंगा होकर तारे। –जब सूर्य या शुक्र कोई उत्तम हो।

4. माता-पिता दोनों की आयु लम्बी और चन्द्र का प्रभाव उत्तम होगा।

-जब बुध खाना नं० 2 और वृहस्पति खाना नं० 9 या 12 में हो।

मंदी हालत 1. चन्द्र बेशक किसी भी तरह मंदा हो, मगर टेवे वाले की खानदानी नस्ल कभी बंद न होगी यानि वह निःसंतान नहीं मरेगा। दिमागी खाना नं० 32, शान से मुश्तरका सफाई ज़ाहिर, धुंधलापन तथा मानसरोवर, मगर अंदर से कष्ट का, अपनी ओर गंदी नाली के भाग्य का स्वामी होगा। उसको जद्दी जायदाद और शुक्र के काम स्त्री खेती आदि उसके अपने किसी काम न आएगी और दिनों के फेर ही होते रहेंगे। यदि उसके जद्दी मकान के निकट कुआँ या तालाब हो तो जीवन भर और भी मंदा साबित हो।

2. चन्द्र अपने दूसरे दौरे के बाद यानि 12-24-48 वर्ष की आयु के बाद बुरा प्रभाव देगा। दुनियां की नज़र में शादी, मगर वह स्वयं दुखिया होगा। मौसी, नानी, दादी मुर्दा, माता, जला दूध सब दुखिया। पहली निशानी मंदा चालचलन होगी जिससे ससुराल और औलाद भी बर्बाद होंगे लड़कियां चाहे पैदा हो और गिनती में अधिक होगी।

-जब मंगल या बुध या पापी मंदे हों।

3. चन्द्र की मियाद खाना नं० 4-8-12 हद 24 तक माता की आयु मंदी होगी और चन्द्र की जायदाद चीज़ों का फल मंदा होगा।

-जब पापी शुक्र, बुध खाना नं० 11 और खाना नं० 2 खाली या पापी ताकत के मालिक हो।

4. माता-पिता का संबंध जायदाद और संतान मंदे। -जब खाना नं० 3-4 में कोई 3 मंदे ग्रह हों।

क्याफा

आयु रेखा भाग्य रेखा दोनों मिलकर खाना नं० 9 में कलाई की ओर हो दो शाखी < ∧ हो जाए।

5. दूध में कड़वी रेत या विषैली खांड की किस्मत या पेशाब भरा लानत का कुआँ होगा, संतान, सेहत दोनों ही मंदे होंगे।

-जब शुक्र मंदा या मंदी स्त्री का संबंध या बुध और शनि दोनों मंदे हों।

क्याफा

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो या मंगल बद के बुर्ज नं० 8 से चन्द्र खाना नं० 4 के बुर्ज में रेखा चली जाये।

6. नज़र, बाल-बच्चे, दोनों बर्बाद। मंदा प्रभाव। नाक छेदन उत्तम, राजदरबार मंदा, आम शारीरिक दोष हो। 34 साल की आयु तक मंदा जीवन और धन न जाया जाए। -जब बुध खाना नं० 4-12 या शनि, राहु खाना नं० 12, बुध, सूर्य मंदे बर्बाद।

क्याफा

आयु रेखा या भाग्य रेखा, चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण हो। खाना नं० 1 में या साथ ही शत्रु या पापी।

7. अपनी स्वयं की बेवकूफी से शुक्र या चन्द्र की चीज़ों का मंदा असर, मगर कुदरत मंदा असर न देगी।

-जब खाना नं० 2 मंदा या खाना नं० 2 में राहु, वृहस्पति या बुध, वृहस्पति या बुध हो।

उपाय

संतान के तकाजे में श्मशान के अहाते के अंदर के कुएं का पानी अपने घर में रखना सहायक होगा। यदि बड़ों के नाम पर दूध का दान श्राद्ध आदि न करें तो दमा, मिरगी, लावल्दी होगी या कुआं की छत कर मकान बना के खासकर जब चन्द्र खाना नं० 8, वृ०, शुक्र खाना नं० 4 हो। बड़ों के चरण छूना या पानी में धोना, धोते रहना लम्बी आयु देगा।

8. चाहे घोड़ा कुआं दूध का साथ न चलता होगा, मगर इन चीज़ों के बर्बाद होते हुए भी दोबारा कायम करना, करते रहना लम्बी आयु के लिए भला होगा।
9. महसूस करने की शक्ति गुम होने से मंदे समय की पहली निशानी होगी।
10. बच्चों और बड़ों बूढ़ों बुज़ुर्गों की आशीर्वाद उनके पांव धोकर लेते रहने से हर ओर बचाव होगा।
11. खेती की पैदावार और जायदाद का फायदा टेवे वाले के ससुराल (स्त्री खानदान) को मिलेगा।
12. अगर जौहरी या जुआ खेलने वाला हो तो बदबख्ती होगा।
13. घर में चन्द्र की चीज़ों का होना लम्बी आयु की निशानी होगी।

चन्द्र खाना नं० 9

(घड़े बराबर मोती, दुखियों का रक्षक समुद्र)

असर तुख्म सोहबत- ढ़ई कृतघ्न का।
फर्क दूध गाय जो-होता थोहर का।।

मोती गुणा 9 चन्द्र गिनते, औलाद [1] दौलत सब बढ़ता हो।
ग्रहण हुआ चाहे शत्रु बैठे, धर्म पालन जग करता हो।
शत्रु, पापी, बुध पांच या तीजे, शरण चन्द्र की [3] आता हो।
ताकत चन्द्र, मंगल शक्की तो, माहिर गणित होता हो।
चौथे बैठा नर ग्रह कोई टेवे, दूध भरी खुद किस्मत [2] हो।
पितृ रेखा सुख सागर लम्बे, कर्म-धर्म दया दौलत हो।
गुरु जगत सब साथ या साथी, समुद्री हवाई बढ़ता हो।
छोटी बेड़ी से हरदम अपनी, बेड़ा जंगी कर लेता हो।

1. जब चन्द्र कायम हो तो 9 गुणा मोती, जब खाना नं० 3 में उत्तम या सहायक ग्रह (दोस्त) चन्द्र धन-दौलत उत्तम। जब खाना नं० 5 में मित्र हो तो संतान धर्म उत्तम हो।
2. सब से जुदा हज़ारों में एक विशिष्ट यानि जिसके बराबर का दूसरा कम ही हो।

3. बेशक चन्द्र के शत्रु चन्द्र से संबंधित चीज़ों के कारोबार में कोई बुरा प्रभाव न देंगे मगर फिर भी समुद्र में रेत (बुध), मिट्टी (शुक्र), पहाड़ी चट्टान (शनि) और तूफान (केतु) पैदा करते ही होंगे।

हस्त रेखा **भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।**

नेक हालत

1. शराफ़त और चन्द्र की शक्ति में सबसे उत्तम और दिमागी खाना नं० 33 बुध से मुश्तरका गणित असूलों का वाकिफ़ और पूरा-पूरा जानने वाला होगा। भला लोग, भले काम नेक स्वभाव, धर्म-कर्म तीर्थ यात्रा का शुभ नाम या तरु यात्री, नेक अर्थ व काम का आदमी होगा और दुःखी को आराम देने वाले भाग्य का होगा। 30 साल तीर्थ यात्रा का मौका ज़रूर मिले। बेशक उसके दिल के समुद्र में कृतघ्न इन्सान की नस्ल से तमाम दुनिया को गंदा कर देने वाला कूड़ा करकट ही क्यों न डाला जाए फिर भी सांसारिक हालत में वह खुदाई रहनुमा होगा।
2. खाना संतान (5) अब अपने आप रोशन होगा चाहे खाना नं० 3 में या चन्द्र के साथ ही पापी बैठे हों। अब खाना नं० 9 का चन्द्र, 5 में बैठा हुआ खाना नं० 5 के ग्रह खाना नं० 9 में बैठे हुए समझकर संतान का प्रभाव देखा जाएगा। निष्कर्ष में ऐसे व्यक्ति की संतान अवश्य होगी। आयु 75 वर्ष होगी।
व्यक्ति की संतान अवश्य होगी। आयु 75 वर्ष होगी। मिट्टी के घड़े के बराबर का 9 गुणा मोती उत्तम फल होगा। -जब चन्द्र कायम हो।
3. दुःखियों का रक्षक रफाय आम। मिट्टी के घड़े के बराबर का 9 गुणा मोती उत्तम फल होगा। -जब चन्द्र कायम हो।

क्याफा

शराफत रेखा चन्द्र की बुर्ज से वृ0 के बुर्ज में रेखा हो।

4. संतान और धर्म में सब ओर बरकत बढ़ती होगी चाहे शत्रु पापी ग्रहों का साथ हो, धर्म पालना करने वाला ज़रूर होगा। -जब खाना नं० 5 में दोस्त या सहायक ग्रह हो।
5. धन-दौलत की बरकत हो। -जब खाना 3 में दोस्त या मददगार ग्रह हो।
6. दूध भरी उत्तम किस्मत होगी, पितृ रेखा माता-पिता का सुख सागर लम्बे समय तक धर्म-कर्म और दया दौलत की बरकत होगी। -जब खाना नं० 4 में कोई नेक ग्रह बैठा हो।

क्याफा

भाग्य रेखा शुरू ही चन्द्र के बुर्ज़ खाना नं० 4 से हो।

7. समुद्री और हवाई हर दो ताकतों की बरकत होगी। मामूली बेड़ी (जन्म गरीब घर) का होता हुआ भी भारी, जंगी बेड़ों (उत्तम जीवन तथा भारी परिवार) का स्वामी हो जाएगा। सब ग्रह चाहे कोई भी खाना नं0 3-5 में बैठा हो तो चन्द्र के वश में होंगे। अब चन्द्र बड़ा भारी समुद्र होगा। -जब वृहस्पति का साथ या संबंध हो।

मंदी हालत

1. गाय का दूध और थोहर के दूध की सफेदी हर दो की मिली हुई तासीर की जांच में अक्ल धोखा देगी। साथी ग्रह और खाना नं० 9 के ग्रहों का प्रभाव ज़रूर शामिल होगा। -राहु की हालत और चन्द्र का संबंध हो।
2. अब चन्द्र के समुद्र का पानी सिर्फ इतना ही होगा जो एक कुत्ता (केतु) या भेड़ बकरी (बुध) पी कर खत्म कर दे यानि माली हालत 34 बल्कि 48 साल के बाद अच्छी होगी और उस समय तक चन्द्र की चीज़ें या रिश्तेदार या चन्द्र से संबंधित कारोबार कोई खास लाभ न देंगे यह अर्थ नहीं कि हानि हो। -जब केतु खाना नं० 2, बुध खाना नं० 5 में हो।
3. शुक्र और चन्द्र की उम्रों के मध्य माता की नज़र बर्बाद हो। -जब शुक्र खाना नं० 3 में हो।

चन्द्र खाना नं० 10

(आक मदार का दूध ज़हरीला पानी)

कब्र मुर्दों की कौन जल्दी भरेगा।
उसी ठेकेदारी को अब तू पूरा करेगा।।

किश्ती तेरी मंदिर अपना, पानी दरिया 5 हो।
पासवान घर तीजे बैठा, लंगर डाला 6 वें हो।
चांद चमकता रात [1] हो आधी, घोड़ा सफ़र का साथी हो।
वैद्यु धन्वन्तरि साथ चाहे होते, मौत [2] पानी से होती हो।
आंख शरारत हिकमत मंदी [3], उर्ध रेखा माया आती हो।
ज़हर कातिल उस इकदम होगी, धर्म नाली जब गंदी हो।
खाली मंदिर नर चौथे बैठे, काम जर्राही 24 जो।
खुश्क कुएं ज़र दौलत भरते, हुआ चन्द्र चाहे जहरी हो।
जिसकी खबर को वह गए, बीमार मुर्दा [4] हो गया हो।
मीठा शर्बत देते-देते, ज़हर कातिल [5] हो गया हो।
चार मुसाफिर केतु [6] पाँच हो साधु, महल मंदिर धुआं राहु ज़लता हो।
बाण अग्नि (सूर्य) 6, चक्र 8 पे (बुध), तूफान कबीले चलता हो।
साल रेखा 10 कुदरती पानी, असर चन्द्र स्वयं उम्दा हो।
टेवे कौन ग्रह 6-5 कोई, चीज चन्द्र दिन दुखिया हो।

1. यदि खाना नं० 7-1-10 में सूर्य न हो तो असर भला ही होगा। 2. जब सूर्य खाना नं० 7 में हो तो मृत्यु पानी से और दिन में होगी।
3. मंगल खाना नं० 7 और सूर्य बैठा होने के बाद के दूसरे ही घर में शनि हो तो अंगहीन नहीं होगा। शनि खाना नं० 1 हो तो स्त्रियों से बर्बाद हो। शनि खाना नं० 3 हो तो चोर डाकू हो फिर भी मंदा हाल।

4. जब खाना नं० 3 मंदा या खाना नं० 3 में चन्द्र के शत्रु हों। 5. जब खाना नं० 5 मंदा या खाना नं० 8 में चन्द्र के शत्रु हों।
6. पापी खाना नं० 4 औलाद मरती जाए।

हस्त रेखा :- **दिल रेखा मध्यमा की जड़ शनि के बुर्ज तक हो। आयु रेखा दिल रेखा से मिल जाए। सिर रेखा, उम्र और दिल रेखा तीनों मिल जाए।**

नेक हालत

1. अपनी ज़िन्दगी में ज़र के पहाड़ों से घिरे हुए दरिया को पार करने के लिए, खाना नं० 2 किश्ती की हालत खुद मुसाफिर सांसारिक साथियों की हालत, खाना नं० 5 दरिया के* पानी की हालत निकलने की जगह और बहने की हालत खाना नं० 3 पासवान या मल्लाहों की हालत, ज्यों बेड़ी के चलाने से संबंध रखते होंगे, खाना नं० 6 लंगर बेड़ी आखिरी अटकने की जगह अंजाम आखिरी की हालत दिखाएगी।
2. दिमागी खाना नं० 34 जगह या मुकाम की याद का स्वामी होगा।
3. स्वयं की आयु सांप कौवे की आयु की तरह लम्बी, 90 साल से कम न होगी।
4. पापी ग्रहों का अब खाना नं० 5 पर कोई बुरा प्रभाव न होगा और न ही कोई उपाय ज़रूरी है। स्वयं भाग्य के लिए खाना नं० 2 जागता होगा, यानि धर्म स्थान में आना-जाना भाग्य को बढ़ाता रहेगा। मगर स्त्रियों की कबूतरबाजी से बचकर ही चलना सहायक होगा।
5. 24 साल की आयु चन्द्र की आयु 24, 12, 6 में जर्राही चीरने-फाड़ने की डॉक्टरी का शुरू किया काम खुश्क कुएँ में माया भर देगा चाहे चन्द्र कैसे भी विषैला हो चुका हो। -जब खाना नं० 2 खाली, खाना नं० 4 में नर ग्रह हों।
6. माता-पिता का सुख सागर लम्बा मगर स्त्रियों (माशूका या बेवा) बतौर फर्ज बर्बाद करेगी।
   -जब शनि खाना नं० 4 या शुक्र खाना नं० 1 में हो।
7. खुश्क कुएँ भी पानी देने लग जाएंगे। उजड़े घर आबाद हो जाएं। हर ओर चन्द्र के शुभ असर से दूध चाँदी और मोती ही मोती बरसें तथा शुभ समय हो। -जब सूर्य तथा वृहस्पति या मंगल खाना नं० 4 में हों।

मंदी हालत

1. संसार भर की विषैली नदियों का पानी का समुद्र जो पहाड़ से निकलने की बजाये उल्टा पहाड़ में गिर कर पहाड को भी बर्बाद कर रहा होगा। जैसा चन्द्र होगा ऐसा व्यक्ति आँख के फरेब से बदनाम होगा और शनि की आँख की शरारत कारण होगी। हकीम चाहे कमाल का फिर भी बर्बादी बल्कि कब्रिस्तान को मुर्दों से भरने का बहाना होगा। पानी में घुली दवाईयां और रात को बीमार का इलाज मंदा प्रभाव देंगे। शनि (मकान), राहु (ससुराल) दोनों का मंदा हाल होगा। जब भाई-बन्धुओं के संबंध से कोई मकान या शनि की ठोस चीज़ ले तो चन्द्र की चीज़ें स्वयं अपना ही कुआं तक मौत का बहाना बन जाए।
2. चन्द्र का पानी कुदरती जल या ज़मीन के नीचे का पानी, कुआं, हैंडपम्प, दरिया, चश्मा, नदी, नाला झरना, आसमानी बर्फ के गोले-ओले 10 साल तक लगातार रखा रहने या जारी रहने के 15 साल बाद चन्द्र की सब ज़हर धो देगा। रात को दूध पीना ठीक न रहेगा। घर में दूध देने वाले पशु न रह सकते हैं और न फायदा देंगे।
3. चन्द्र की चीज़ें आने पर दुःख खड़े हो जाएंगे। -ज़ब खाना नं० 5-6 में कोई भी ग्रह बैठा हो।
4. शनि के काम काराबार या चीज़ें जो शनि से संबंधित हों उत्तम फल देंगे। धन-दौलत उर्ध रेखा लोगों का गला काट कर या दग़ा, फरेब, झूठ, लानत से माया की बरकत के ढंग की होगी। पितृ रेखा माता-पिता का प्रभाव तो अवश्य उत्तम होगा। मगर वह स्वयं स्त्री से चाहे पतिहीन, जिसकी पालना अपनी जिम्मेदारी से करे, चाहे बाज़ारी या दूसरी प्रेमिकाएं बर्बाद करें और फ़िजूल धन को खराब करें या करता हो। -जब शनि खाना नं० 1-4 में हो।
   -जब शनि खाना नं० 3 में हो।
5. चोर, डाकू फिर भी मंदी हालत हो। -जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।
6. मृत्यु दिन के समय पानी से होगी। -जब पापी खाना नं० 4, शुक्र खाना नं० 7 में हो।
7. संतान मरती जाए माता की आयु शक्की हो। -ज़ब खाना नं० 2-3 में पापी ग्रह हों।
8. चन्द्र का हाल मंदा ही होगा।
9. *जिसकी खबर को वह गए, बीमार मुर्दा हो गया। मीठा शर्बत देते ज़हर क़ातिल हो गया।*
   पानी में घुली दवाईयां बुरा प्रभाव देंगी मगर खुश्क दवाईयां इस वहम से बरी होगा।
   -जब खाना नं० 3 मंदा या खाना नं० 3 में चन्द्र के शत्रु ग्रह पापी बुध, शुक्र हो।
10. जब धर्म की नाली गंदी हो, चन्द्र की चीज़ें ज़हर कातिल का काम देंगी। -जब खाना नं० 5-6 में पापी या बुध, शुक्र हो।

क्याफा **दिल रेखा शनि के बुर्ज खाना नं० 10 में मध्यमा की जड़ तक ही हो।**

11. तीनों ही ग्रहों का मंदा फल, हर जगह मनहूस साबित हो। -जब चन्द्र, बुध, शनि तीनों का आपसी ताल्लुक हो जाए।

क्याफा **दिल रेखा, सिर रेखा, आयु रेखा, तीनों मिल कर एक रेखा हो जाए या एक होती मालूम हों।**

12. तमाम कबीले पर दुःखों का तूफान चलता होगा।
    -जब खाना नं० 4 में केतु, 5 में वृहस्पति, 2-10 में राहु, 6 में सूर्य, 8 में बुध हो।
13. शरीर का कोई न कोई हिस्सा मरा हुआ होगा।
    -जब मंगल खाना नं० 7 और सूर्य बैठा होने के बाद के दूसरे घर में शनि हो।
14. चोर, धोखेबाज़, तैरते को डुबोने वाला, चोर, डाकू का संबंध आम होगा। -जब मंगल बद हो।
15. फेफड़े और छाती की बीमारियां होंगी। -जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा **उंगलियों के नाखून लम्बे हों।**

चन्द्र खाना नं० 11

(होते हुए भी न के बराबर, निरपेक्ष शून्य समान, मंदा)

दिए दूध है पूत दुनियां में मिलता।
नहीं दिल तू खाक दुनियां में जीता।।

तीन हुआ घर मंदा टेवे,
नेक चन्द्र बुध 5 वें होते,
साथ पापी या शुत्र साथी,
पोता खेले न बैठे दादी,
भला गुरु ज़र दौलत बढ़ती,
उम्र माता न बेशक लम्बी,

5 ज़हर [1] स्वयं चन्द्र हो।
तख्त आया [2] या मंदिर [3] हो।
केतु मंदा खुद होता हो।
दूध पत्थर दु:ख धोता हो।
4 रवि, बुध बैठा जो।
शनि उत्तम सुख दुनियां हो।
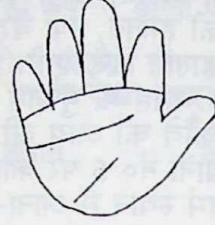
1. मंदी हालत में देखें। 2. 11-23-36-48-57-72-84-94-10 5-119 साल की आयु।
3. 4-17-27-47-55-69-81-95-10 3-115 साल की आयु।

हस्त रेखा × चन्द्र या दिल रेखा वृ० के बुर्ज खाना नं० 2 को जा निकले मगर वृ० तक न हो या चन्द्र के बुर्ज से रेखा हथेली पर खाना नं० 11 में ही खत्म हो जाये।

नेक हालत

1. दूध की खैरात से दूध, पूत संतान धन बढ़ती होगी। दिमागी खाना नं० 35 वृ० से मुशतरका गुजरी हुई घटनाओं की याद, सांसारिक सुख मकान, आयु संबंधी आदि का। –जब शनि उत्तम हो।

क्याफा

दिल रेखा, शनि तथा वृहस्पति के बुर्जों के बीच खाना नं० 11 में समाप्त हो।

2. धन-दौलत उत्तम होगा। –जब वृ० उत्तम हो।
3. आय के संबंध में शांति, माकूल ठीक कमाई का स्वामी होगा। –जब सूर्य, बुध खाना नं० 4 में हो।

क्याफा चन्द्र के बुर्ज खाना नं० 4 से खाना नं० 11 में रेखा हो।

4. रिश्तेदार तथा आयु बल्कि दोनों जहान का नेक प्रभाव होगा। –जब बुध खाना नं० 5 में हो।
5. अब खाना नं० 11 का चन्द्र अति उत्तम फल देगा और राजदरबार में औसतन 12 साल खूब धन मिलेगा।
   –जब वर्षफल में चन्द्र 1-2 में आये।

मंदी हालत

1. चन्द्र इस घर में निरपेक्ष नाममात्र ही होगा। कभी तूफान ज़ोर की लहरों से भरा हुआ समुन्द्र और कभी ऐसा जैसे उसमें पानी तक न हो बल्कि खाली ज़मीन बाकी बची रेत तक की चमक न हो।
2. केतु का फल अब मंदा ही होगा। दादी पोते का झगड़ा या दादी बैठे पोता न खेले, यानि टेवे वाले की माता पोते को न देखेगी या उसक माता के होते हुए नर संतान न होगी। यदि हो जाए तो अब कभी उसे दादी देखे, संतान या वह स्वयं पतिहीन या बर्बाद हो जाए। यदि दादी पहले ही पतिहीन या अंधी हो तो संतान बेशक कायम होगी। फिर भी लड़के की 12 साल की आयु में या शनि के समय तक दादी, पोता दोनों में से एक ही या दोनों ही न होंगे। घर में हैडपम्प के पानी गिरने की जगह पर अमूमन चक्की का पहुआ पत्थर होगा। इस पत्थर को टेवे वाले की मां हर रोज़ धोती रहे या माता सिर और आँखें दूध से धोया करे तो विष घटती जाए या भैंरों के मंदिर में दूध देना सहायक होगा। चूंकि चन्द्र खाना नं० 11 के समय केतु कमज़ोर ही होता है। अत: संभोग के समय सोने की सलाख को आग में खूब लाल करके दूध में बुझा लिया करें। यह अमल ग्यारह बार करें। नर संतान या ताकत मर्दी नर बच्चों तक उनकी लम्बी आयु के संबंध में यदि केतु बहुत ही निकम्मा हो चुका हो यानि ऐसे व्यक्ति के दर्द जोड़ या गठिया आदि हो चुका हो या किसी और कारण दूध का प्रयोग वर्जित हो तो यही गर्म किया सोना पानी में बुझा कर प्रयोग कर लेना लाभदायक मुफीद और कार आमद होगा। फिर उस दूध का प्रयोग उन नुक्सों को दूर करेगा। यदि पौरुष शक्ति में शक हो तो वृ० सोना आदि ऐसी दवाईयां जिनमें सोना या सोना का कुश्ता आदि शामिल हो, गई शक्ति को बनाएगा। चन्द्र के साथ वृ० सोना हो तो दोनों कभी मंदे नहीं हो और न ही दुश्मन से मार खाते हैं।
3. माता बचपन में या चन्द्र या शनि की मियाद दिन में मंदी सेहत, तबाह माली हालत या मर जाएगी।
   –जब शनि खाना नं० 3 में हो।
4. बचपन मंदा होगा और नीचे की पांच बातें विष का प्रभाव देगी।
   –जब खाना नं० 3 मंदा हो।

1. बहन का जन्म या बुध की चीज़ें, बुध से संबंधित कारोबार – बुधवार को।

2. शादी चाहे अपनी या अपने किसी संबंधी की
3. मकान बनाना, खरीदना, गिराना शनि के काम — शुक्रवार को।
4. दान लेना या देना किसी चीज़ का कारोबार से संबंध, केतु की चीज़ों का, केतु के काम — शनिवार को।
5. गुरु उपदेश सुनना, सुनाना, वृ० की चीज़ें, काम से संबंध — सवेरे केतु समय। — शाम के समय पक्की राहु समय।

उपाय *अच्छा होगा कि जब स्त्री को बच्चा पैदा होने के दर्द शुरू हो तो टेवे वाले की माता वहां से किसी और जगह चली जाये और 43 दिन तक न बच्चे को देखे न हाथों में लेकर देखे। यदि टेवे वाले की स्त्री के भी चन्द्र खाना नं० 11 को हो तो टेवे वाले की स्त्री की माता, सास भी इसी तरह 43 दिन के लिए दूर चली जाये।*

कुआँ लगने पर माता की मौत संतान की मौत, सफ़र दरिया समुद्र में हानि, किसी व्यक्ति की गुमराही से माल और ज़र का नुक्सान हो। -जब केतु खाना नं० 3 में हो।

उपाय माता की मदद के लिए चन्द्र की चीज़ें दूध के पेड़े या दूध जो तौल में इतना हो कि वह एक आदमी की पूरी खुराक हो, 11 गुणा करके बच्चों में बांट दें यानि 11 X 11 = 121 पेड़े या इतना दूध जो 11 आदमियों के लिए काफी हो, यदि कोई वहम करें तो दरिया में गिरा दें।

चन्द्र खाना नं० 12

(रात के समय बाढ़, तूफान से बस्तियाँ उजाड़ने वाला दरिया)

छोड़ी याद मंज़िल बुढ़ापा उजाड़ा।
गया जल बिका उससे तेरा ही क्या था।।

सुल्तान बोद पिदरम [1], इकबाल था शाहाना।
है याद करके रोता [2], घर उजड़े हो वीराना।
मैदान [3] पानी चलता, तीर्थ था जो हुआ।
आबाद करके दुनियां, खुद गर्क जा हुआ।
लेख जाती, खुद चन्द्र अपना, पांच-छठे 9-2 हो।
बुध, रवि घर तीजे बैठा, तारे गंगा कुल घर सबको।
साथ-साथी या असर पापी का, नाला गंदा बरसाती हो।
दूध माया ज़र दौलत जलता, नरक चन्द्र खुद पानी हो।
तख्त माता जब टेवे पाती, धर्म-कर्म ज़र घटता हो।
दौरा मगर जब 12 करती, उजड़ी खेती घर जलता हो।
नीम बूढ़ी से पानी टपकता रहा, माता बूढ़ी का पोता भटकता रहा।
(मंगल बैठे हुए का घर), (केतु का घर)।
पानी पर पानी बरसता रहा, बीकानेर बेचारा तरसता रहा।
(खाना नं० 4 वाला घर), (बुध का घर)।

1. जब बुध, शुक्र या पापी खाना नं० 2-12 में हों।
2. 12-24-35-46-59-71-83-97-10 6-111 साल की आयु।
3. खाना नं० 5-7-9 मैदान, खाना नं० 2 निकास का पहाड़, खाना नं० 10-11 रुकावट के पहाड़, खाना नं० 4 चश्मा, खाना नं० 9 समुद्र, खाना नं० 3 रेगिस्तान का पानी, खाना नं० 6 पाताल का पानी, कुआँ, खाना नं० 8 आबादी का मैदान खाना नं० 7 जहां खेती की जा रही हो, स्वयं के भाग्य का फैसला (नेक हालत में भी लिखें)।
4. खाना नं० 2 ग्रह के अनुसार- मान धन।
   खाना नं० 5 ग्रह के अनुसार- आगे आने वाली संतान।
   खाना नं० 6 ग्रह के अनुसार- सांसारिक संबंध रहने की आयु, दरिया की गुजरान।
   खाना नं० 9 ग्रह के अनुसार- भूतकाल के धर्म-कर्म, बड़ों के किए हुए बडप्पन।
5. 4-17-28-48-55-68-80 -90 -10 1-116 साल की आयु।

हस्त रेखा

चन्द्र रेखा हथेली पर खाना नं० 12 बुर्ज में समाप्त हो।

नेक हालत

1.
नीम बूढ़ी से पानी [1] टपकता रहा, माता बूढ़ी का पोता [2] भटकता रहा।
पानी पर पानी [4] बरसता रहा, बीकानेर [3] बेचारा तरसता रहा।

1. मंगल बैठा होने वाले घर का हाल।
2. केतु बैठा होने वाले घर का हाल।
3. बुध बैठा होने वाले घर का हाल।
4. चन्द्र खुद का खाना नं० 4 जो पानी समुद्र का ही है, पानी पर पानी और बरसता होगा।

2. चन्द्र खाना नं० 12 में बैठा हो और उसी समय मंगल, केतु, बुध 12 घरों में जिस किसी घर में बैठे हों वहां क्या हाल होगा। चन्द्र का स्वयं अपना खाना नं० 4, चन्द्र का घर खाना नं० 4 वाले घर में बैठे हुए ग्रह पर पानी पड़ता होगा। खुद मंगल नं0 4 जो अमूमन मंगल बद या मंगलीक हुआ करता है। अब आग से जला देने की जगह ठंडा असर देगा। मगर केतु जो खाना नं० 4 के समय ठंडे कुएं में गिरे कुत्ते की भांति तड़पा करता है अब और भी वर्षा में भीगते हुए कुत्ते की तरह मंदा होगा। इसी तरह ही बुध खाना नं० 4 का, चन्द्र खाना नं० 12 के समय माता खानदान पर और भी मंदा हाल होता होगा। इसी तरह बाकी ग्रहों का अब खाना नं० 4 में बैठे हुओं का प्रभाव देंगे।

खाना नं०	मंगल बैठा होने वाले घर का हाल
1.	राजदरबार में ज़हर के बदले शहद मिलता रहेगा।
2.	ससुराल के धन का दरिया फालतू होकर बगैर रोके उसके घर में आता होगा और रोकने से भी न रुकेगा।
3.	भाई बन्धु पानी की जगह दूध की नहरों में नहाते होंगे।
4.	बड़े भाई ताया या माता का बड़ा भाई या बाबे का बड़ा भाई बेशक उम्र में लम्बे हों या न हों मगर जब तक होंगे कभी दुःखी न होंगे।
5.	उसकी औलाद के खेड़े लगेंगे, बहुत से शहर या गाँव होंगे।
6.	जिस रिश्तेदार से उसकी लड़कियाँ या लड़के या माता खानदान के नाते होंगे वहाँ धन का दरिया बहने लगेगा।
7.	गृहस्थी इतनी अच्छी कि पानी मांगे तो दूध मिले।
8.	मरना है तो मरेंगे मगर गल, सड़कर दुर्घटना से नहीं।
9.	बड़ों के घर घाट में जायदाद जद्दी में दूध की नदियां होंगी उसे स्वयं चाहे शहर से बाहर निकल जाने का हुक्म हो चुका हो।
10.	सिर पर चाहे कितनी मुसीबतें आये दिल का दरिया कभी न रुकेगा और वह कभी दुःखी न होगा।
11.	गुनाहगार होते हुए भी संसार के जज उसे बेगुनाह ही कहेंगे।
12.	दूध में शहर की जोवन रात को हर तरह का आराम मिले और दिल को शांति होगी।

खाना नं०	केतु बैठा होने वाले घर का हाल
1.	जिस घर में कदम रखा कचहरी से पकड़ने के वारंट आने लगे।
2.	ससुराल में गए तो अपनी जूती गुम या चोरी हो जाने के अलावा उनको भी नंगे पाँव कर दिया।
3.	स्वयं तो संतान से दुःखी थे ही मगर भाई भी चीख रहे हों।
4.	नालायकों की औलाद खानदानी सबूत देगी (नालायकी में)।
5.	बेटा जो भी होगा बाप बन कर ही दिखाए (मंदे अर्थों में)।
6.	उसके रिश्तेदार चाहे उसको सुख न देंगे मगर खुद सुखिया शायद ही होंगे।
7.	अपने ही घर का कुत्ता या अपनी संतान स्त्री आदि ज़मीन पर पेशाब करने की बजाए उस पर पेशाब करेंगे।
8.	लड़के अचानक गुम होते हो या मरते हों, बलाए बद से।
9.	मामा खानदान नाहक मंदी आंधियों से उड़ रहे हों, और बर्बाद हो रहे होंगे।
10.	रास्ते जाती-जाती आंधी अपना ही घर उड़ा ले जाएगी।
11.	इंसाफ़ चालचलन, कुत्ते का शिष्य होगा यानि मामूली लालाच (रिश्वत आदि मिलने) पर इंसाफ की मिट्टी उड़ा देगा और भूत के सहायक समान प्रेमिका, सुन्दर बद स्त्री की थोड़ी सी बू आने पर चालचलन ढीला कर देगा।
12.	कमाई बहुत लाखों की मगर गिनने में शून्य ही हो।

खाना नं०	बुध बैठा होने वाले घर का हाल
1.	राजदरबार मंदा उजड़ा हुआ प्रभाव देगा।
2.	ससुराल खानदान उजड़े बीकानेर वीरान के दृश्य लेगा।
3.	भाई बन्धु के बाजु कटे हुए।
4.	माता खानदान में मातमी ही रहेगी।
5.	संतान मंदे पानी में बह रही होगी, चन्द्र की बीमारियाँ दिल या आँखों के ड़ेले की बीमारियाँ।
6.	लड़कियां जिस जगह विवाही हो वह चिल्ला रहे हो।
7.	गृहस्थी हालत (स्त्री जाति) मंदी रेत में जल रही हों।
8.	लम्बे खर्च की बीमारियों का कोई अंदाज बाकी न रहा हो।
9.	बड़ों की उजड़ी जायदाद को रोते-रोते आँखों का पानी समाप्त हो गया हो।
10.	पहाड़ों के बराबर सुन्दर मकान, रात को सोए अचानक उजड़ कर रेगिस्तान हो जाए।
11.	बेगुनाह होते हुए भी दूसरों की फांसी अपने गले आ लगे।
12.	जिसका सहारा लेने की सोची वह पहले ही आगे भागता नज़र आया।

1. वर्षा का पानी सहायक होगा। चुप रहना और पिछड़े रहना स्वयं ही तबाही का कारण होंगे।
2. चन्द्र की जानदार चीज़ों का फल अच्छा, खुद विद्वान, बुद्धिमान और विद्या में उत्तम होगा।
3. अपने घर में खानदान को तारने वाला होगा। –जब सूर्य, बुध खाना नं० 3 में हों।
4. चन्द्र अब मामूली धनी की जगह उत्तम दूध की तरह माया धन देगा। –जब वृहस्पति उत्तम और सूर्य उत्तम हो।

मंदी हालत

1. अब चन्द्र रात को बाढ़ लाने और बस्तियाँ उजाड़ने वाला बंद गंदी बद रौ के पानी से भरा दरिया होगा, जिससे खेती उजड़ती होगी या यूं कहें कि माता-पिता का दिया सब कुछ उजड़ जाए। मगर अपना कमाया न उजड़े या माँ-बाप जो उसके नाम कर दे वह उसकी बर्बादी का कारण बन जाए।
2. संसार में कोई दु:खी नहीं होना चाहता, मगर चन्द्र खाना नं० 12 स्वयं आग की जगह पानी से जलता और दूसरों को जलाता जाएगा।
3. रात की नींद और सिर की जिल्द कभी ही सुख की होगी। चन्द्र की बेजान चीज़ों का प्रभाव अमूमन मंदा होगा।

पानी बादल में भरकर जलता, रेत मैदानों भरता हो।
उजाड़ खेती जागीर भाग्य, अफीम खाए ले सुथरा वो।
दूध, धन ज़र पानी देता, नर्क चन्द्र धन डोलता हो।
धर्म-कर्म चंडाली साया, मान इज्जत कुल फकता हो।

4. गंदा बरसाती नाला होगा। हर तरह से बुरा हाल खासकर जब चन्द्र खाना नं० 1 में आवे सुसराल की जायदाद फूंके और स्वयं की भी न छोड़ता हो। धर्म-कर्म दौलत की बर्बादी टेवे के अनुसार वृ० की सहायता या वृ० के उपाय उसके धर्म के स्थान में आते-जाते रहने से चन्द्र का पानी ढ़लती हुई बर्फ की तरह काम में आने वाला तथा सहायक होगा।

खाना नं० 12 का चन्द्र खाना नं० 1 में आने से समय यानि 12-24-35-46-59-71-82-97-106-111 साल की आयु में खेती को उजाड़ने वाला पानी होगा जिससे घर घाट सब बर्बाद होंगे और अपने जन्म वाले घर आने के समय यानि खाना नं० 12 का चन्द्र वर्षफल में 12 में आने पर वह सब मंदे असर देगा जो कि चन्द्र खाना नं० 12 में लिखे हैं।

खाना नं० 2 का चन्द्र जायदाद जद्दी के संबंध में एक ऐसा दरिया जो दिन प्रतिदिन संसार वालों के लिए खेती की जगह छोड़ता जाये और अपना रास्ता पीछे या किसी और तरफ़ करता रहे, जिससे कि आबादी वालों को बाढ़ का समय लाभ ही हो। मगर चन्द्र खाना नं० 12 का दरिया का पानी आबाद घरों को उजाड़ता और खेती की ज़मीन को बहा ले जाता और हर तरफ गंदा पानी और रेते आदि भरता जाएगा जिसके प्रभाव से टेवे वाला अपने जन्म के बाद चन्द्र के समय से अपनी खासकर जब चन्द्र खाना नं० 12 खाना नं० 1 में आवे या जब खाना नं० 2 का खाना नं० 12 में ही आए तो बड़ों की जायदाद शान का अपने जन्म से पहले और बाद का मुकाबला करके देखता हुआ इस पहेली का उत्तर कि अब क्या है और पहले क्या था केवल आंसुओं से ही देगा, मुंह से बोलेगा कुछ नहीं।

5. दिमागी खाना नं० 36 राहु से मुश्तरका समय गुज़रने पर मर्द पछताए या गुज़रती हुई घड़ी से आगे जाने वाली घड़ी कोई ऐसी लम्बी न होगी। ज्यूं-ज्यूं समय गुज़रेगा हाल आगे कुछ न कुछ मंदा या हल्का ही होता जाएगा।

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना,
या ख्वाब में ही देखा या हो गए दीवाना।
सुल्तान बाद पिदरम इकबाल था शाहाना,
तकसीर उनकी आजम या हो गया बहाना।
है याद करके रोता, घर उजड़े हा१ वीराना,
जाहिल बना वही, जो था माहिरे ज़माना।

6. टेवे वाला अब यह कहता होगा मुझे गुज़रा समय याद आता है, शायद ख्वाब में ही देखा या वैसे ही दीवाना पागल हो गए। मेरा बाप बादशाह था और समय का ठाठ शान बादशाहों का, कसूर उनका बहुत बड़ा हो गया या वैसे ही कोई बहाना हुआ जिससे कि वह अब समय को याद करके रोता है। घर उजड़ कर वीरान जंगल, वीरान बियाबान हो गए हैं और वह स्वयं नालायक बन रहा है जो कि सारे संसार को जानता था।
7. निर्धन दुखिया हो। आधी आयु तक से डूबने का डर ही होगा। ऊपर की सब मंदी हालतों की आखिरी हदबंदी आयु का 48 वां साल होगा, जिसके बाद चन्द्र खाना नं० 12 की जगह खाना नं० 3 का फल देगा।

-जब मंगल खाना नं० 1, सूर्य खाना नं० 2 में हों।

-जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।

8. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काना होंगे।
9. जो चीज़ भी बाप अपने बेटे (जातक) के नाम लगा देगा, कोड़ी-कोड़ी करके जलेगी, बिकेगी, वज़ह कोई भी हो या हो जाये।

-जब खाना नं० 2-6-12 में बुध, शुक्र या पापी हो।

****

शुक्र

बदी खुफिया [4] तू जिससे दिन-रात करता।
वक्त मंदा वही तेरे सिर पर पड़ता।।

ऐश पसंदी इश्क खुदाई, अकेला बुरा नहीं होता हो।
पाप [1] नस्ल का खून गृहस्थी, मिट्टी माया का पुतला हो।
मर्द टेवे में स्त्री बनता, स्त्री टेवे खुद मर्द हो वो।
उठी जवानी [2] इश्क में अन्धा, बूढ़े [3] नसीहतें करता हो।
रवि दृष्टि शनि पर करता, बुरा शुक्र का होता हो।
शनि, रवि से पहले बैठा, नर [5] ग्रह स्त्री उम्दा है।
नज़र शुक्र में जब शनि आता, माया दीगर खा जाता हो।
दृष्टि शुक्र पर जब शनि करता, मदद ग्रह सब करता हो।
शुक्र बैठा जब बुध से पहले, असर राहु का मंदा हो।
बुध पहले से शुक्र मिलते, केतु भला खुदा होता हो।
शत्रु [6] दोनों का साथ जो बैठे, असर दोनों न मिलता हो।
शुक्र मालिक है आँख शनि का, तरफ चारों ही देखता जो।
चोट शनि हो जब कहीं खाता, अन्धा [7] शुक्र खुद होता हो।
घर 5 वें परिवार बच्चों का, नीच छठे खुद होता हो।
असर साथी ग्रह 7 वें देगा, जलती मिट्टी घर 8 का हो।
ज़हर मंगल बद 9 वें बनता, धर्मी शनि घर 10वें हो
चश्मा दौलत ज़र 11 उठता, तारे 12 भव सागर जो।
काग रेखा घर पहले बैठी, भला गृहस्थी दूजे हो।
भाई मर्द घर तेरे होगा, जोड़ा औरत दो चौथे हो।

1. राहु, केतु मुश्तरका (मसनुई शुक्र)।
2. खाना नं० 1 से 6
3. खाना नं० 7 से 12
4. जिस घर को शुक्र देखता हो वहाँ का ग्रह मंदे समय, वर्षफल के समय शुक्र मंदा।
5. सिवाय सूर्य।
6. शुक्र का शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु ; बुध का शत्रु चन्द्र।
7. जिस घर शनि हो शुक्र में वहीं असर दृष्टि भी उस घर की ओर होगी। मगर दृष्टि की चाल पिछली तरफ खुद शुक्र की अपनी होगी।

आम हालत :-

1. शुक्र के ग्रह (बुर्ज) को सांसारिक भाग्य से कोई संबंध नहीं। सिर्फ प्यार-मुहब्बत की फालतू दो से एक ही आँख हो जाने की शक्ति शुक्र कहलाती है। सब ओर से बिगड़ी या सब की बिगड़ी बनाने वाला सब कुछ ढला-ढलाया शुक्र होगा।
2. स्त्री संबंध गृहस्थ आश्रम बाल-बच्चों की बरकत और बड़े परिवार का 25 साल समय शुक्र का समय होगा। इस ग्रह में पाप करने-कराने की नस्ल स्वयं राहु, केतु आपसी बनावटी शुक्र) का खून और गृहस्थी हालत में मिट्टी और माया वजूद है।
3. मर्द के टेवे में शुक्र से अर्थ स्त्री और स्त्री के टेवे में उस का पति अर्थ होगा। अकेला बैठा शुक्र टेवे वाले पर कभी बुरा प्रभाव न देगा और न ही ऐसे टेवे वाला गृहस्थी संबंध में किसी दूसरे का बुरा कर सकेगा।

शुक्र से बुध का सम्बन्ध :-

जब दृष्टि के हिसाब से (दर्जा दृष्टि 25-50-100 % हो) आमने-सामने के घरों में बैठे हों तो चमकती हुई चांदनी रात में चकवे-चकवी की तरह अकेले -अकेले होने का प्रभाव नीचे की तरह होगा।

1. अगर बुध कुण्डली में 1-2-3 के क्रम हद 12 तक शुक्र से पहले घरों में बैठा हो तो इस तरह से दोनों के मिले हुए असर में केतु की नेक नीयत का उत्तम प्रभाव शामिल होगा। लेकिन अगर शुक्र कुण्डली में बुध से पहले घरों में हो तो इस तरह मिले हुए दोनों के असर में राहु की बुरी नीयत का प्रभाव शामिल होगा।
2. दृष्टि वाले घरों में बैठा होने के समय शुक्र का प्रभाव प्रबल होगा। लेकिन जब बुध पहले घरों का हो और मंदा हो तो शुक्र में बुध का मंदा असर शामिल हो जाएगा, जिसे शुक्र नहीं रोक सकता तथा गृहस्थ में मंदे परिणाम होंगे।

अ) जब अकेले-अकेले बंद मुट्ठी के खानों (1-4-7-10) से बाहर हर एक-दूसरे से 7 वें बैठे हों :- यानि

शुक्र नं० 2 और बुध नं० 8
शुक्र नं० 3 और बुध नं० 9 — में हो तो दोनों ही ग्रहों और
शुक्र नं० 6 और बुध नं० 12 — घरों का मंदा फल होगा।
शुक्र नं० 8 और बुध नं० 2

ब) मगर शुक्र नं० 12 और बुध नं० 6 में दोनों का उच्च फल होगा, जिसमें केतु का उत्तम फल शामिल होगा। ऐसी हालत में (यानि अपने सातवें) बैठे होने के समय दोनों का असर आपस में न मिल सकेगा।

3. जब दोनों ग्रह अलग-अलग, मगर आपस में दृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हो तो जिस घर में शुक्र हो वहाँ बुध अपना असर अपनी खाली नाली के द्वारा लाकर मिला देगा और शुक्र के फल को कई बार बुरे से भला कर देगा। लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के शत्रु ग्रह (सू0, चं0, रा0) हो तो ऐसी हालत में शुक्र कभी भी बुध को ऐसी नाली लगा कर अपना असर (शुक्र) अपने में मिलाने नहीं देगा। यानि ऐसी हालत में बुध किसी तरह भी शुक्र को रद्दी निकम्मा या बर्बाद नहीं कर सकता।

शत्रु ग्रहों से संबंध :-

सूर्य और शनि आपस में शत्रु हैं यदि एक साथ इकट्ठे बैठे हों तो टेवे वाले पर बुरा असर नहीं होता जोड़-घटाव बराबर होती रहा करती है। लेकिन जब शनि के साथ शुक्र बैठे को कोई भी ग्रह देखें तो शनि देखने वाले ग्रह को जड़ से मार देगा। यदि टेवे में सूर्य और शनि का झगंड़ा हों तो शुक्र मारा जाएगा। सूर्य जब शनि को देखे तो शनि की बर्बादी होने की जगह शुक्र का फल बर्बाद होगा। लेकिन यदि शनि देखे सूर्य को तो शुक्र आबाद या उसका फल उत्तम होगा। बहरहाल यदि शुक्र के साथ (साथी या दृष्टि के ढंग पर) जब शत्रु ग्रह हो तो शुक्र और शत्रु ग्रह सब की ही चीज़ें, रिश्तेदार या कारोबार संबंधित (शुक्र या शत्रु ग्रहु) पर हर तरफ से उड़ती हुई मिट्टी पड़ती और मंदी किस्मत का समय होगा।

शुक्र से राहु का सम्बन्ध :-

शुक्र (गाय) और राहु (हाथी) इन दोनों का आपसी संबंध कहाँ तक अच्छा फल दे सकता है।

1. जब कभी दृष्टि द्वारा दोनों मिल रह हों, शुक्र का फल बर्बाद होगाा। लक्ष्मी और स्त्री दोनों ही बर्बाद और समाप्त होंगे।
2. दो बाहम शत्रु ग्रह साथी दीवार वाले घर में बैठे हुए जुदा-जुदा ही रहा करते है, लेकिन अगर शुक्र अपने शत्रु ग्रहों के घर बैठा हो और राहु साथी दीवार वाले घर में आ बैठे तो शुक्र का वही मंदा हाल होगा जो कि शुक्र के साथ ही इकट्ठा राहु बैठे जाने या दृष्टि मिलने पर मंदा हो सकता है।
3. जन्म कुण्डली में शुक्र अगर अपने शत्रु ग्रहों को देख रहा हो तो जब कभी वर्षफल के हिसाब शुक्र मंदा हो या मंदे घरों में जा बैठे तो वह दुश्मन ग्रह जिनको कि शुक्र जन्म कुण्डली में देख रहा था शुक्र के असर को विषैला और मंदा करेंगे चाहे वहाँ शुक्र को अब देख भी न सकते हो। ऐसे टेवे वाला जिससे खुफिया बदी किया करता था अब वही (उन चीज़ों, रिश्तेदार या कारोबार संबंधित उन दुश्मन ग्रहों, जिनको शुक्र ने जन्म कुण्डली में देखा था, के संबंध में) दुश्मनी और बर्बादी का सबब होगा।

शुक्र की दो रंगी मिट्टी :-

खाना नं0 1. *उठती जवानी में ऐश व इश्क की लहरों से मिट्टी की गूजना में अंधा होना। काग़ रेखा या मच्छ रेखा , एक तरफा ख्याल का स्वामी, तख्त के मालिक रजिया बेगम मगर एक हब्शी गुलाम पर मिटी।*
खाना नं0 2. *उत्तम गृहस्थ हर तरह से सिवाए बच्चे बनाने के अपनी ही खूबसूरती और स्वभाव के आप मालिक, खुदपरस्ती स्कूल मिस्टरेस हर एक की प्रिय स्त्री, मगर वह स्वयं किसी को पसंद न करे।*
खाना नं0 3. *मर्द की जगह बैल का काम दे ऐसी खैंच दे कि टेवे वाले पर कोई न कोई स्त्री मर ही जाया करती है। स्त्री मर्द जैसी हिम्मतवाली।*
खाना नं0 4. *एक जगह दो स्त्री या दो पुरुष मगर पुरुष-स्त्री दोनों ही ऐसी दो गाय या दो बैल कि बच्चा दोनों से न बने।*
खाना नं0 5. *बच्चों भरा परिवार या ऐसे बच्चों के पैदा करने वाला जो उसे बाप न कहें या न कह सके।*
खाना नं0 6. *न पुरुष, न स्त्री, खुसरा, मर्द (नपुसंक) बांझ स्त्री धन भी लक्ष्मी भी ऐसी जिस का मूल्य कोई न दे।*
खाना नं0 7. *सिर्फ साथी का असर जो और जैसे तुम वैसे हम। बुढ़ापे में उपदेश दे।*
खाना नं0 8. *जाली मिट्टी और हर सुख में शुक्रगुजार, उत्तम तो भव सागर से पार कर दे।*
खाना नं0 9. *शुक्र को स्वयं अपनी बीमारी के द्वारा धन हानि, मगर घर में ऐशो आराम के सामान या धन की कमी न होगी।*
खाना नं0 10 *शनि स्वयं यदि स्त्री हो तो ऐसी जो पुरुष को निकाल कर ले जाए अगर मर्द हो तो ऐसा कि वह किसी न किसी दूसरी स्त्री को अपने प्यार में रखा ही करता है।*

खाना नं011. लट्टू की तरह घूम जाने वाली हालत। मगर बचपन की मोह माया की भोली-भाली स्वभाव की मूर्त और रिज़क के चश्मे की निकलना।

खाना नं012. भव सागर से पार करने वाली गाय यानि स्त्री लक्ष्मी जिस की स्वयं अपनी सेहत के संबंध में सारी ही आयु रोते निकल जाए।

शुक्र खाना नं01

(काग [1] तथा मच्छ [2] रेखा की रंग-बिरंगी माया)

यदि धर्म दुनियां न स्त्री में बिकता।
कोई लेख विधाता मंदा न लिखता।।

आँख दोनों न शुक्र देखे,	शनि नज़र का मालिक हो।
अगर दोनों का यकंसा लेते,	शनि नं01 प्रबल हो।
स्त्री रिज़क से पहले आए,	शनि उत्तम जब अपने घर।
शादी मगर जब 25 हो,	दौलत रहे न स्त्री घर।
शुक्र मंदे से मरती माता,	बुरा सूर्य न होता हो।
सात छठे घर मंगल 12,	पूरी सदी पुत्र, पोता हो।
बुध मंदा संतान हो मंदी,	गृहस्थ मंदा रवि करता हो।
शनि बुरे मंदे होंगे साथी,	तीनों मंदे सब मरता हो।
धर्म हालत 8 हो गुरु जैसा,	उच्च शनि मच्छ रेखा हो।
तीन छठे बुध हो जब बैठा,	श्रेष्ठ रेखा सिर होता हो।
सात पहले घर शत्रु साथी,	रवि आया या पापी हो।
शुमार इश्क 2 स्त्री [3] पकड़ी,	दमा, तपेदिक, खांसी हो।
ऐश स्वभाव इश्क चाहे लूटे,	लेख लिखित न मंदी हो।
घर सातवां दस खाली होते,	मच्छ रेखा बन जाती हो।

1. अगर शनि मंदा हो या खाना नं07-10 खाली न हो और उनमें सिर्फ पापी या बुध न हो तो काग़ रेखा होगी।
2. यदि शनि उत्तम या खाना नं07-10 खाली या उनमें सिर्फ (राहु, केतु, शनि) पापी और बुध हो तो मच्छ रेखा होगी।
3. दो स्त्रियों से एक ही समय बच्चे बनाने पर।

हस्त रेखा

शुक्र के पर्वत पर अंगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा हो। शुक्र से शाखा सूर्य के पर्वत पर हो। शुक्र का पतंग पूरा हो।

नेक हालत

1. धर्महीन हो जाये तो बेशक इश्क में मज़हब का फर्क समझे या न समझे, मगर उसका राज दरबार कभी मंदा न होगा। शुक्र अब प्रभाव के लिए एक तरफ चाल का स्वामी होगा। यानि जिस पर कृपा दृष्टि उसके लिए प्राण तक न्यौछावर कर दे। जिसके विरुद्ध उसकी मिट्टी तक उड़ा कर रख दे। शुभ हो तो मच्छ रेखा यानि सब सुख औलाद आदि। यदि अशुभ तो काग़ रेखा यानि शुक्र सिर्फ एक ही आँख से देखता या काना होगा। हर धन में शनि की हालत उसकी (शुक्र की) नज़र होगी। फिर भी सवारी का सुख और चौपाया का आराम साथ होगा।
2. धर्म की नेक तथा बद हालत का फैसला खाना नं08 के ग्रहों और वृ0 की हालत पर होगा।
3. दिमाग़ी खाना नं01 इश्कबाजी और शनि से आपसी इश्क जवानी 16 से 36 आयु में उठती जवानी के समय स्त्री जाति का परस्त्री (अपनी धर्म पत्नी से अर्थ नहीं) की सुन्दरता की रंग-बिरंगी दिल को अच्छी लगने वाली कहानी के ऊंचे पुल बांध दिए और खुद पसंदी जाति घमण्ड और कामदेव की आग़ में जलते हुए सैकड़ों मील चलते मगर सोए हुए निकल गए। जिस की वज़ह से दिल और दिमाग़ पर काबू ही न रहा और आखिर पर स्त्री की खातिर ईमान भी बिकने लगा।

क्याफा

शुक्र का पतंग सूर्य के बुर्ज पर केवल अनामिका की जड़ में।

4. स्त्री का प्रभाव (संतान तथा आराम) को थोड़ा हल्का सा खराब करे। मगर प्यार को धर्म में घृणा नहीं। इस रेखा के प्रभाव से मनुष्य धर्महीन, स्त्रियों के पीछे घूमने वाला होना, शुक्र से बाहर से आशिकाना मगर अन्दर से सूफीयाना फल देगा। स्वभाव फिर भी

फटे खरबुजे की तरह (फूटा) होगा, **स्त्री का स्वास्थ्य मंदा होगा, स्वयं का ठीक होगा। अपने भाग्य के संबंध में भाग्यवान होगा। अपनी तथा बच्चों की शारीरिक हालत शुभ होगी। अपने कामों के लिए दूसरों से सलाह लेना ठीक होगा।**

1. स्त्री अपनी कमाई शुरू होने से पहले घर आएगी जो घर की मालिक और हर तरह से राज्य करेगी
   – जब शनि जन्म कुण्डली में अपने घर उत्तम हो।
2. आयु पूरी 10 वर्ष, पुत्र, पौत्र देखेगा – जब मंगल नं0 6-7-12 हो।
3. मच्छ रेखा का उत्तम प्रभाव होगा। **विष्णु भगवान् की तरह दूसरों को पालने वाला होगा।** चाहे धन के आने में माया के पहाड़ दम के दम में खड़े होते होंगे लेकिन जब तक घर में नौकरानी न हो, माया के पहाड़ों पर चरने की जगह कम ही होगी। यानि धन की थैली चाहे दिन को भरती हो मगर शाम को खाली ही देखी जाती होगी
   – जब शनि उच्च हो या खाना नं0 7-10 खाली हो या इन घरों में राहु, केतु, बुध, शनि हों तो 7-10खाली ही समझा जाएगा। अगर मंगल 6 से 12 में न हो तो 7,10 खाली होते हुये काग रेखा होगी यानि राहु, केतु खाना नं: 4-10में हो और बुध या शनि खाना नं: 7 और मंगल खाना नं: 6 से 12 में हो।
4. सिर की श्रेष्ठ रेखा उत्तम, दिमाग़ी हालत। मुकद्दमों का फैसला टेवे वाले के हक में होगा, चन्द्र का प्रभाव अमूमन बुरा न होगा– जब बुध 3-6 में उच्च हो।

मंदी हालत

शनि, शुक्र घर पहले बैठे, काग़ रेखा कहलाती है।
मालिक चाहे हो तख्त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।

1. जवानी इश्कबाजी घर की नम्बरदारी (मोहरीपन, मुखियापन, रास्ते दिखाने वाला) न सिर्फ अपनी बल्कि संबंधियों की भी तबाही का बहाना होगा।
2. शुक्र मंदा हो, माता छोटी उम्र में चल दे, या मरने से भी अधिक दुखिया। जब तक माता स्त्री से दूर रहे, दुःखी न हो लेकिन जब दोनों इकट्ठी हों तो दोनों में से एक अंधी ही लेंगे मगर सूर्य कभी बुरा न होगा।
3. काग़ रेखा खासकर उम्र के 25 वें साल शादी के समय न धन, न स्त्री ज़िन्दा रहे। – जब खाना नं: 7-10खाली ना हों।
4. स्त्री की पागलपन की हालत, बीमार, गृहस्थी जलती मिट्टी के समान। जमींदारी की पकी हुई खेती में आग़ लगी हुई की तरह गृहस्थी हालत। स्त्री के टेवे में पुरुष की ओर से तलाक गिनते हो। शादी समय शुद्ध चांदी स्त्री को ससुराल से मिले तो खाना आबादी हो। – जब राहु नं0 7 हो।
5. संतान मंदी हो – जब बुध मंदा हो (शुक्र का पतंग हो सिर्फ कनिष्ठा की जड़ पर हो)।
6. गृहस्थ मंदा होगा – जब सूर्य मंदा हो (शुक्र का पतंग अनामिका की जड़ तक हो)।
7. साथी रिश्तेदार मंदे संबंध देंगे। शुक्र खाना नं010 का फल देगा। उसकी स्त्री ऐशो ईशरत में सदाबहार फूल, स्त्री को आमतौर पर मासिक धर्म के बाद स्वस्थ गिनते है। मगर ऐसे ग्रह वाली स्त्री मासिक धर्म के बिना संतान की शक्ति से भरपूर और ऐसे फूल की तरह प्रिय होगी जो कि ऋतु के बिना हर समय अपनी बहार दे रहा हो। उसमें सुन्दरता प्यार की लगन और मोह माया पूरे किनारे तक भरा हो। स्वयं ऐशी पट्ठा होगा। – जब शनि मंदा हो।

क्याफा शुक्र का पतंग मध्यमा की जड़ तक हो।

8. हर ओर मौतें ही मौतें नज़र आएगी पूरा शुक्र का पतंग होगा न सिर्फ खुद बर्बाद, बल्कि दूसरे साथियों को भी बर्बाद करने के भाग्य का मालिक होगा। – जब बुध, सूर्य, शनि तीनों मंदे हों।

क्याफा

शुक्र का पतंग बुध के पर्वत से चलकर शनि के बुर्ज 10 तक पूरा हो।

9. **इश्क का परवाना या दमा, तपेदिक या बुखार के समय स्त्री भोग या किसी दूसरी स्त्री संबंध से बिगड़ा बुखार हो। गोमूत्र तथा जौ की खुराक सहायक होगी। सरसों बहुत मिलते हुए अन्न कम से कम सात नाज या चरी का दान शुभ। पुरुष कन्यादान, स्त्री गोदान करें तो शुभ होगा।**
   – जब नं0 1-7 शत्रु ग्रह चन्द्र, राहु, सूर्य हो और बुध (सिवाए बुध नं0 3) मंदा हो सूर्य नं07 या शुक्र का साथ-साथी हो।

स्वास्थ्य कौड़ी-कौड़ी कर के हार देगा। मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। साथी ग्रह के संबंधित रिश्तेदार के साथ से स्वयं शुक्र और संबंधित साथी दोनों तंग होंगे। नहीं तो सात साल बीमार या आधा मुर्दा तो अवश्य होगा।

10 पराई ममता गले लगी रहे,

क्याफा

अंगूठे की जड़ शुक्र के बुर्ज नं0 7 में सूर्य का सितारा हो या सूर्य के बुर्ज से शुक्र के बुर्ज नं07 में रेखा या शुक्र नं07 से सूर्य के बुर्ज नं0 1 में पूरी रेखा हो।

उपाय :- दिल पर काबू, इश्क पर काबू, किस्मत की मंदी चाल बदल देगी, दूसरों की सलाह सहायक होगी।

शुक्र खाना नं02

बने माया तेरी पशु जो मिट्टी।
तू फिर मांगता क्यों, सोने की हट्टी।।

गऊ घाट [1] जब कुटिया उसकी,	*केतु गुरु बुध उत्तम हो।*
माया धन स्वयं मस्तक चलती,	*शहशाही घर आला हो।*
शेर दहाना [2] हो घर उसका,	*काम करे या सोने का।*
ग्रहण घेरा जब हो कभी टेवा,	*मिट्टी हो फल किस्मत का।*
आठ खाली 9-12 मंदे,	*स्त्री धन सब मंदा हो।*
अपने भाई और लड़के उसके,	*हालत गुरु पर चलता हो।*
बर्बाद स्त्री बाज़ारी करती,	*पाप गुरु घर बैठा हो।*
नेक चले सब किस्मत फलती,	*उड़ती मिट्टी जब उल्टा हो।*
8 छठे ग्रह 2-10जागे,	*असर शनि 9 देता हो।*
शनि वली घर 9 जब बैठे,	*शुक्र गुणा दो होता हो।*
टेवे शनि हो 9 जब बैठे,	*प्रभाव शुक्र 2 देता हो।*
पाया शुक्र ही जब घर दूसरा,	*असर शनि 9 होता हो।*

1. बाकी 5 बचने वाला मकान या ऐसा मकान जिसका अगला हिस्सा तंग और पिछला चौड़ा हो।
2. बाकी 3 बचने वाला मकान या ऐसा मकान जिसका अगला हिस्सा चौड़ा और पिछला तंग हो।

हस्त रेखा

अकेली शुक्र रेखा वृ0के पर्वत पर स्थित हो। प्यार रेखा संतान रेखा, विवाह रेखा को काटे। भाईयों की रेखा लम्बी और टेढ़ी वृ0 को हो। दिल रेखा का सिर्फ उतना ही हिस्सा जो कि वृ0 के बुर्ज के अन्दर हो प्यार रेखा के नाम से याद होगा।

नेक हालत

1. मिन्नतकश गैर हरगिज न होगा, खुदा का ही अक्सर एहसान होगा। जूती खोर साधु वह बिल्कुल न होगा, गृहस्थी न हो, चाहे गुरु जगत् हो। कभी खाली घर न वह बच्चों से होगा, वक्त साठ साल ज़रे धन का होगा। अपना रिज़क धन और ससुराल की धर्म अवस्था सदा नेक होगी। दुनियावी तथा खुदाई दोनों ही प्यार का स्वामी।

क्याफा

प्यार रेखा, वृ0के पर्वत में शुक्र का लेटा हुआ खत।

2. राशि नं02 में कोई भी ग्रह नीच नहीं होता बल्कि इस घर का मालिक शुक्र (मिट्टी या स्त्री है) जो पहाड़ पर सफेद झंडा लटकाए हुए, जो लड़ाई में सुलह करा लेते हैं। हर एक बीज की रक्षा करता है। शुक्र की इस अच्छाई के लिए उसे लक्ष्मी अवतार माना है। इसी नींव पर शुक्र नं0 2 के समय अपनी गृहस्थी स्त्री का संबंध नेक और उत्तम होगा।
3. दिमागी खाना नं0 2 वृ0 से आपसी, शादी की इच्छा मगर 37 से 7072 साल बूढ़ी स्त्री की तरह उल्फत (प्यार से पहले का समय) और प्यार के बाद का गलवा (वियोग) या सिवाए प्यार वह कामदेव की शक्ति के बाकी दोनों भागों का मालिक यानि भूख तो बहुत अधिक हाज़मा कम कै (उल्टी) करते-करते घर ही भर दिया। स्त्री सिवाए औलाद बनाने के बाकी सब से उत्तम होगी। जानो जानदारों का उत्तम हाल होगा। चाहे बीमारी के झगड़े का कोई हिसाब न होगा, मगर रिज़क कभी खराब न होगा। बल्कि दिन दुगना रात चौगुना हिसाब होगा या गाय या शुक्र की देवी अब गुरु स्थान और अपने असली संसार में गऊ घाट में अपने ठीक स्थान तथा आराम करने की जगह (राहु के बनावटी शुक्र की बैठक) पर होगी। जिससे बाल बच्चों की बरकत। शादियों के नेक नतीजे,

गृहस्थी सुख की वृद्धि और शुक्र का असली नेक फल होगा। अपनी कमाई शुरू करने के दिन से कम से कम 60साल तो धन (शनि) आएगा। उसकी बाहर की चाल सूफीयों की सी (वृ० जैसी) मगर अन्दर की प्यार (शुक्र) भरी होगी यानि सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को गई, यानि बगुला भक्त होगा। उसके लिए बुराई करना अपने लिए ही बुरा होगा। चालचलन का संभालना हर नेक नतीजे की नींव होगा। आम तौर पर आयु लम्बी तथा शत्रु दबे रहेंगे।

4. गृहस्थ सदा भला ही होगा
   – जब शनि अब टेवे में कहीं भी हो, वह शुक्र के लिए शनि नं० 9 का दिया शुभ फल देगा चाहे शनि का अपना बैठा होने वाले घर का फल खराब ही क्यों न हो।
5. वृहस्पति, केतु और बुध का उत्तम फल होगा और शनि का फल भी शुभ ही होगा। धन का उत्तम भाग्य अपने ही माथे पर होगा। घर बार राजाओं की भांति होगा।
6. जब उसका घर गऊ घाट अगला हिस्सा तंग, पिछला खुला हुआ, गऊ की शक्ल का होगा तो बाकी 5 बचने वाले मकान के भाग्य वाला होगा।
7. अपने भाई तथा लड़के का भाग्य तथा दूसरे संबंध का हाल गुरु वृहस्पति की हालत पर निर्भर करेगा।
8. भाई बन्धुओं की बरकत और सांसारिक सहायता होगी। – जब वृ० 6-12 हो।

क्याफा शुक्र के बुर्ज न० 7 पर भाईयों की लम्बी-लम्बी टेढ़ी रेखाएं।

9. प्यार में दर्जा कमाल और कामयाब प्यार (प्रेमी) करने वाला होगा। – जब वृ० नं० 2, मं० नष्ट हो।
10. शुक्र स्वयं जागता और शनि स्वयं अपना नं० 9 का प्रभाव देगा लेकिन यदि शनि ही हो खाना नं० 9 में तो शुक्र का दोगुणा नेक प्रभाव होगा। हर दो इश्क हकीकी और संसारी में कामयाब। स्वयं कमाई शुरू करने के दिन से 60 साल कमाई का समय होगा। पशुओं तथा कच्ची मिट्टी के कामों से रिज़क संतान बढ़ती होगी। – जब शनि खाना नं० 2-9 हो।

मंदी हालत

शेर दहाना [1] हो घर उसका, काम करे या सोने का।
ग्रहण [2] घटा जब हो कभी टेवा, मिट्टी हो फल किस्मत का।

1. 3 बचने वाला मकान अगला हिस्सा खुला पिछला तंग।
2. टेवे में ग्रहण लगा हो– सूर्य-राहु = सूर्य ग्रहण, चन्द्र-केतु = चन्द्र ग्रहण।

1. स्त्री के टेवे में शुक्र नं० 2 का अर्थ उसका मर्द संतान पैदा न कर सके, मर्द के टेवे में शुक्र नं० 2 से अर्थ उसकी बांझ स्त्री होगी यानि उसमें कामदेव की शक्ति (बुध का गुण) तो होगी मगर संतान पैदा करने की शक्ति कम होगी, कामदेव शुक्र वीर्य माना है।
2. चाहे अपनी संतान का तकाजा। मगर फिर भी दूसरे का लड़का बिना गोद लिए अपना लड़का बन बैठे।
   – जब खाना नं० 2 में पापी या सिर्फ पाप का साथ हो।

क्याफा

शुक्र के पर्वत पर भाईयों की रेखा की तरह पर्वत नं० 2 को देखते-देखते लम्बे-लम्बे खत रेखाएं।

3. स्त्री दुखिया करे, चाहे कमाई का योग कितना ही हो। – जब खाना नं० 9-12 मंदे हो।
4. पतिहीन स्त्री की बतौर फर्ज जिम्मेदारी और प्रेमिका आवारा या बाजारी स्त्री बर्बादी का बहाना होगी। वीर्य का कतरा आवारा गिरते ही शुक्र की मिट्टी के कण बना कर उड़ा देगा। – जब वृ० के घरों 5-2-9-12 में राहु, केतु हो।
5. स्त्री-पुरुष स्वयं बच्चा न बना सकेंगे न उसके काबिल होंगे मगर सुन्दर अच्छा अय्याश साफ सुथरे रहने वाले होंगे। धन घटे हर ओर मंदी हालत स्त्री बांझ। – जब खाना नं० 8 खाली हो।
6. संतान शादी में गड़बड़ स्वयं कमाई करने के योग वाली स्त्री संतान को जन्म देने और गृहस्थी योग में मंदा ही फल देगी अगर नेक ठीक चले तो जीवन आराम से भरा होगा। – जब वृ० 8-9-10 में हो (संतान रेखा विवाह रेखा को आ काटे)।

उपाय :- **ऐसे प्राणी स्त्री चाहे पुरुष के खून या वीर्य में कमी, संतान की बीमारियां हो मगर पेशाब की नाली में पुरुष चाहे स्त्री शायद ही कमी या खराबी होगी। इसलिए खून में संतान पैदा करने की दवाईयां (खुराक के तौर पर) जिनमें मंगल की चीज़ें शामिल हों, अगर आवश्यकता पड़े तो सहायक होगी।**

शुक्र खाना नं० 3

बुरा क्यों जो इज्जत तू औरत की करता।
वक्त पर है तेरे जो स्वयं मर्द बनता।।

केतु [1] भले पतिव्रता औरत, चोरी कभी न होती हो।
गुरु ज़हर 9 मंदा स्वास्थ्य, शनि रेखा 9 पितृ हो।
बुध मंदा घर 11 बैठे, शुक्र मंदा ज़र घटता हो।
महल बाड़ी चाहे पर्वत ऊंचे, नींद 34 न सुखिया हो।
मित्र मंगल 7 दूजे बैठा, आठ मंदा न चन्द्र हो।
लकीर लेटी खुद शुक्र सीता, पार गऊ भव सागर हो
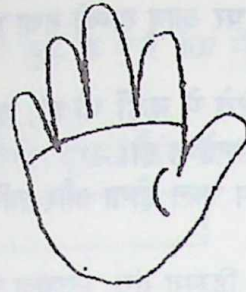
1. शुक्र खाना नं० 3 वाले पर स्त्री मरती ही होती है मगर स्वयं की स्त्री गाय की जगह बैल और शेर स्वभाव (खूंखार तंग करने वाली होगी मगर हौसले वाली होगी) बुरी स्त्री भी लाभ देगी।

हस्त रेखा

गृहस्थ रेखा, मंगल नेक से शुक्र के पर्वत में अंगूठे की जड़ में झुक जाए, धन रेखा शुक्र के पर्वत से होकर मंगल नेक पर समाप्त हो।

नेक हालत

चाहे यह मनुष्य हर स्त्री का प्यारा होगा, इश्क का परवाना, मगर उसके स्वयं के लिए अपनी स्त्री का मान करना शुक्र नेक की नींव होगी। अब शुक्र गाय की जगह बैल की हैसियत का होगा यानि अपनी स्वयं की स्त्री मामूली हैसियत होने की बजाय टेवे वाले के सगे भाई की तरह की जैसी हिम्मती सहायक होगी। ऐसी स्त्री चाहे दूसरों के लिए भयानक पशु (शेर जैसी) हो मगर अपने मर्द के लिए कायर या खुशामंद पसंद ही होगी जिससे बैठे बैठे मृत्यु का देवता और चोरी और सभी घटनाओं से बचाव होता रहेगा। दिमाग़ी खाना नं० 3 मंगल से मुश्तरका प्यार या माता-पिता के प्यार का स्वामी होगी, 1 से 15 साल आयु का प्यार या माता-पिता का प्यार। अगर पकड़े ही गए तो प्यार से क्यों घृणा और सामने आती हुई थैली पर इन्कार न होगी, के स्वभाव का स्वामी होगा। पराई और बुरी स्त्री और बुरे पुरुष भी सभी फायदा और सहायता देंगे।

संक्षेप में- शुक्र खाना नं० 3 वाले पर कोई न कोई स्त्री मोहित हो जाती है। उदाहरणतया ऐसा प्राणी सड़क के किनारे जा रहा था पीछे से आवाज़ आई कि ऐ मुसाफिर मैं भी तो तेरी साथिन हूँ। कुछ दिन हुए विवाह का शुभ मुर्हूत मनाया था और मैं फिर भी आपको ढूंढ़ रही थी। मगर वह कांपती आवाज़ में उत्तर दे कि मेरी स्त्री तो हमारे घर है। बातों-बातों में वह स्त्री उसके गले चिमट ही गई जिससे वह शक में ही रहा कि असल स्त्री कौन है, कहाँ है आखिर उसकी हाँ में हाँ मिलाता समय गुजारता आगे चला गया। ऐसी मज़बूरन गलतियों के कारण टेवे वाले को अपनी स्त्री से दब कर ही रहना पड़ेगा।

3. स्त्रियों की साधारतय: इस घर में कदर होगी और स्त्री स्वयं पतिव्रता होगी। जिसकी दम तक कभी चोरी न होगी।
   – जब केतु उत्तम हो।
4. उत्तम पितृ रेखा का लम्बा प्रभाव होगा अर्थात् माता-पिता का सुख सागर लम्बा। – जब शनि नं० 9 हो।
5. मिट्टी की लकीर की तरह बहुत कम हालत की मिट्टी की बेजान चीज़ें भी बोलती हुई सीता पतिव्रता की तरह उत्तम फल देगी। शुक्र अब चन्द्र का भी उत्तम फल देगा। मुफ्त की रोटी या गुजारा आसानी से होता होगा। 20साल की तीर्थ यात्रा का शुभ उत्तम फल होगा, पितृ रेखा का फल उत्तम लम्बे समय तक फल होगा। – जब मित्र ग्रह बुध, शनि, केतु या मंगल नं० 2-7 में हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा बुर्ज नं० 3 से चल कर बुर्ज नं० 7 पर समाप्त हो या धन रेखा शुक्र के बुर्ज 7 से शुरू होकर मंगल के बुर्ज नं० 3 में समाप्त हो। यदि बुध भी नेक हो।

6. मिट्टी की हालत में भी तालाब की मिट्टी ऐसी मिट्टी होगी जो पशुओं के पेट की बीमारियां दूर करने के लिए उसके हाथ से दी हुई शुभ होगी। शुक्र अब वृ० और सू० से भी उत्तम फल देगा। बुध, केतु अब चन्द्र का असर शुक्र में पैदा होने पर शुक्र से शत्रुता न करेंगे। खाना नं० 8 के बुरे ग्रह का मंदा प्रभाव भी नेक करके मौत का मुंह तोड़ देगा।
   – जब नं० 8 मंदा न हो बल्कि चन्द्र भी उत्तम हो।

क्याफा :- कलाई रेखा या अंगुलियों की पोरियों पर शुक्र के लेटे खत।

7. शुक्र का जब खाना नं० 9-11 में उसके मित्र-शत्रु पर बुरा प्रभाव न होगा, अपने खानदानी मर्दों पर शुभ प्रभाव होगा हर तरह से प्रसन्न होगी। उत्तरदायित्व पूर्ण करके निश्चिन्त हो।

– जब वृ० दोबारा खाना नं० 2 में आए या वृ० का दूसरा दौरा शुभ यानि आयु का 49वां साल।

मंदी हालत

1. स्वयं शुक्र का विषैला प्रभाव और मंदा स्वास्थ्य बल्कि सारी कुल की ही मंदी सेहत और दुखिया। हर ओर बीमारी जहमत।

– जब वृ० नं० 9 हो।

2. शुक्र स्वयं बर्बाद होगा, 34 साल की आयु तक चाहे लाख कितने ही धन महल गाड़ियां हों। सुख की नींद नसीब न होगी। **धन हर रोज़ घटता ही जाएगा।**

– जब बुध खाना नं० 11 में हो।

3. अब 9-11 के ग्रह बर्बाद न होंगे, बल्कि वहाँ शत्रु ग्रहों के वक्त खुद शुक्र बर्बाद होगा।

– जब खाना नं० 9-11 के ग्रह हो।

4. लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट के लिए अनाज की कीमत के बराबर मेहनत किए बगैर रोटी न पाएगा।

– जब शुक्र, मंगल बद का संबंध (अंगुलियों की पोरियों पर लेटे खत)।

5. शुक्र खाना नं० 3 का मंदा असर सिर्फ धन पर होगा औरत का हाल इसके टेवे वाले के अपने लिए बर्ताव के संबंध में उम्दा न होगा। गुरु (16 से), चन्द्र (24), बुध (34) साल की उम्र तक के भाग्य का असर मंदा हो। लड़कियों (बुध) स्त्रियों (शुक्र) का मंदा हाल और भाई बन्धुओं के हाथों से धन हानि आम होगी। लड़कियों के हाथ और संबंध में धन बर्बाद होगा। **अपने बनाए मकानों का सुख न होगा न ही पिता (वृ०) की जायदाद या उसका (पिता का) सोना जातक के किस काम आएगा। पिता की तरफ से बुध की चीज़ें (लम्बी-लम्बी किताबों की लाईब्रेरी) संगीत के सामान राग रंग के सामान प्रायः बाकी मिलेंगे।** – जब बुध, मंगल मंदा हो।

शुक्र खाना नं० 4

नुक्स चार अपना इश्क औरतों का।
चश्म पोशी करते भी लानत ही देखा।।

साथ टेवे न ग्रह कोई साथी, सात दूजा भी खाली हो।
औलाद कमी की अजब कहानी, ज़िन्दा स्त्री दो बैठी हो।
नशा उजाड़े सात शनि से, चन्द्र फकीरी रेखा हो।
बैठा कोई ग्रह 2-9 टेवे, एक स्त्री ही जीवित हो।
शनि मंदा बुध, राहु मंदा, भला शुक्र न चन्द्र हो।
गुरु, केतु भी चलते उल्टा, लेख स्त्री ग्रह मंदा हो।
बुध स्वभाव साथ शनि का, लेख स्त्री गुरु चलती हो।
पापी बैठे बुध मंगल राजा [1], औलाद कल्पना हरती हो।

1. पहली ही स्त्री से यदि मर्द पूरी तरह दो बार शादी कर ले तो शुक्र की दो स्त्री होने की शर्त न रहे। संतान जल्दी होगी, मगर अब स्त्री की सेहत खासकर गर्भाशय बर्बाद होती हो। ऐसे समय मंगल की चीजें, काम, कारोबार, रिश्तेदार जो मंगल से संबंधित हो से शुक्र को मदद मिलेगी। घर की सबसे पुरानी दहलीज मंदे समय सहायक होगी।

हस्त रेखा

फकीरी रेखा, नशा रेखा, शराफत रेखा सीधी लकीर लेटी हुई जो चन्द्र, शुक्र को मिलाये।

नेक हालत

ज़मीन सफ़र सदा होता रहेगा जो नेक हालत और उत्तम परिणाम देगा, शादी के 4 साल बाद खूब आराम मिले, बाग लगाने का मौका मिले। उसके भाग्य की कलम उसके वृहस्पति के हाथ होगी, जब तक वृ० से शनि का संबंध न हो। वरना बुध के अपने स्वभाव के नियम पर बुध की हालत से फैसला होगा। फिर भी मर्द के लिए उसकी स्त्री के भाग्य की सहायता साथ न होगी, मगर वह स्वयं ऐश करेगी। दिमाग़ी खाना नं० 4 चन्द्र से आपसी दोस्ती या मुलाकात की शक्ति, ऐश पर पर्दा, खूबी पर नज़र डालने की शक्ति, उल्फत, प्यार और प्यार के बाद का गलवा, प्यार के तीन हिस्सों का स्वामी जहाँ दिल और आँख मिले-मिलाते जाना। एक

चारपाई पर दो अतिथि या एक अतिथि के लिए दो चारपाईयों तो ज़रूर होगी, मगर आराम करने की जगह या नवार सदा भीगा ही रहेगा या सब होते हुए माया बर्बाद, संतान की कमी होगी। ऐसे समय चन्द्र का उपाय सहायता देगा वरना कुएँ में वृ० की चीज़ें गिराना सहायक होगा।

स्त्रियां एक ही समय में दो जीवित होंगी एक बूढ़ी मां की तरह बड़ी आयु की, दूसरी ऐशो आराम की मालिक हरफनमौला समय की बेगम होगी। मगर संतान की फिर भी कमी होगी या नि:संतान होगी।

– जब खाना नं० 2-7 खाली और शुक्र किसी दूसरे का साथी ग्रह न बन रहा हो।

शुक्र चौथे जब पानी आया, स्त्री हुआ विराग।
एक से दो भी हुई, पर बुझी न उनकी आग।

मंदी हालत

पत्थर (शनि) भी रेत हो गर, तो रेत (बुध) उड़ता होगा।
औरत की हो आज़ादी (बदमाश), बुध, केतु मंदा होगा।

1. इस घर के शुक्र से संबंध में यह साफ होगा कि सुन्दरता जवानी के बाज़ार में बिकने लगी। जिसके तबादले में जवाब होगा कि चोरी कर लेने की जगह किसी को चोर न कहना न सिर्फ दिली खून को जोश देगा बल्कि जान लेने का हमला करने के बराबर होगा।
2. बंद कुआँ या कुएँ पर छत **डाल कर मकान बनाने पर पूरी लावल्दी का सबूत होगा। प्यार-मुहब्बत बुरे अर्थों में बर्बादी के लिए दीमक से कम न होगी। ऐब पर पर्दा खूबी पर नज़र डालना सहायक होगा। 22-24-25-32-34-47-51-60साल की आयु में शादी अशुभ होगी।**
3. नुक्स (जब शुक्र अकेला और खाना नं० 2-7 खाली हो) अपना इश्क औरतों का, चश्मपोशी करते वह लानत ही देगा।
4. स्त्री का भाग अच्छा या बुरा वृ० की हालत पर होगा। – जब शनि, वृहस्पति साथ न हो।
5. नशे से बर्बाद होगा। बुध की चीज़ें और काम बहाना होंगे बल्कि वृहस्पति, केतु भी निकम्मे होंगे। शुक्र और चन्द्र के मिलाने वाली नशे की फकीरी रेखा। – जब शनि का साथ हो।
6. फकीरी रेखा बहुत निर्धनता हाथ तंग मगर भगवान् की सहायता ज़रूर होगी तथा उत्तम। – जब चन्द्र का साथ हो।
7. प्यार तबाही का कारण होगा और संतान की कमी होगी। – जब शनि मंदा हो।
8. शुक्र और चन्द्र की लड़ाई, बहू और सास का झगड़ा हर दो ग्रहनाकस। मामा बर्बाद मंदी और खराब हालत की नींव स्वयं चन्द्र पर होगी।

   – जब वृ० खाना नं० 1 में हो।
9. शुक्र मंदा फल देगा लड़कियां बर्बादी का कारण होंगी। उसकी स्त्री, मर्द के खानदान के लिए मंदी और अशुभ होगी।

   – जब बुध खाना नं० 6 या चन्द्र मंदा हो।
10. संतान की कमी दूर होगी।

   – जब मंगल, बुध बल्कि पापी ग्रहों से कोई भी अपने दूसरे दौरे के अनुसार खाना नं० 1 में आ जाये या शुक्र का साथी हो जाये।

शुक्र खाना नं० 5

(बच्चों से भरा परिवार)

ज़माने की माताएँ औरत जो तेरी।
नस्ल तेरे बच्चों की तुझे कौन देगी।।

आग़ जली न मिट्टी उड़े, उड़ेगी जिस दम वो।
जो ग्रह [1] पहले 9 वें, अंधा, काना हो।
दोस्त शुक्र ग्रह कायम होते, पार माया भवसागर हो।
शत्रु मगर 7 पहले बैठे, पतंग फटा शुक्र घर शुक्र हो।
कायम ग्रह नर शुक्र देखे, माया दौलत सब चढ़ता हो।
12 जले घर शुक्र मंदे, बैठा भला चाहे 3–8 हो।
दृष्टि शुक्र न जब कोई करता, चोर शुक्र स्वयं होता हो।
एक अकेला न कोई मंदा, औत गया ही आवा हो।

सेवा गऊ और चन्द्र होते, संतान सोना घर भरता हो।
चलन मंदे बच्चे बाहर बनते, आग जली जोड़ी मरता हो।

1. जो गृह खाना नं० 1 या 9 में हो उस ग्रह के संबंधित रिश्तेदार सिवाय सूर्य नं० 1 और वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

हस्त रेखा **स्वास्थ्य रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा शुक्र से चल कर बुध पर समाप्त हो जाये।**

नेक हालत

बच्चों के परिवार से भरी हुई स्त्री जिसके बैठे (या शुक्र की चीज़ें कायम होते) रिज़क कभी बंद नहीं होगा।

1. दिमागी खाना नं० 5 ऐश तथा परिवार के प्यार वाला और देश भक्ति का परवाना हो। अगर सूफी तो भवसागर से पार यदि आशिक दुनियां हुआ तो वृक्ष में अड़ी कटी पतंग की तरह का भाग्य होगा। बल्कि एक को क्या रोते यहां तो कबीला ही मंदा हो गया होगा। एक आदमी ने कुत्ता, बिल्ली पाले, आदमी ने मकान बदला तो कुत्ते ने मालिक को न छोड़ा, बिल्ली पिछले मकान की तरफ भागी। तेरे चालचलन से ही तेरे भाग्य खासकर माली हालत का भेद खुल जायेगा मगर स्त्री और संतान पर फिर भी मंदा प्रभाव न होगा।
2. **सूफी धर्मात्मा होगा और भवसागर से पार करने वाली गऊ माता की तरह उत्तम लक्ष्मी और कुल को तारने वाली स्त्री होगी।**
   – जब मित्र ग्रह बुध, शनि, केतु कायम हो।
3. माया धन बढ़ता, देश परिवार के प्यार को चाहने वाला तथा शुभ होगा।
   – जब नर ग्रह कायम या साथ-साथी हो।
4. खाना नं० 1-9 के ग्रह से संबंधित रिश्तेदार शुक्र से धन की बरकत पाएंगे या टेवे वाले को उस ग्रह के संबंधित कारोबार दौलत की बरकत देंगे। – जब बुध या पापी खाना नं० 1-7 में हो।
5. हर तरह की बरकत होगी। – जब सूर्य खाना नं० 1, मंगल खाना नं० 3 में हो।

मंदी हालत

1. अपना मंदा चालचलन शनि करवाता रहे। मंदा भाग्य मंदे चालचलन का सबूत देगी। शुक्र कम ही मंदा होगा। अब संतान पर कभी बुरा असर न होगा, यानि संतान ज़रूर होगी। अगर होगी तो खाना नं01-9 के ग्रह सिवाय सूर्य नं० 1 या वृहस्पति नं09 का संबंधित रिश्तेदार जैसे राहु (ससुराल), मंगल (बड़ा भाई, ताऊ) आदि अंधा या काना या उस ग्रह से संबंधित कारोबार बर्बादी का कारण होंगे। – जब शुक्र मंदा हो या मंदा कर लिया जाये।
2. खाना नं012 जलता होगा, चाहे खाना नं03-8 अच्छा ही हो। टेवे वाले पर मंदा प्रभाव न होगा। मगर साथियों पर शुक्र अब वृक्ष में फंसे हुए पतंग की तरह लिपटा हुआ भाग्य की हानि देख रहा होगा। चन्द्र उसे डोर का काम देगा। इश्क सांसारिक कामकाज होगा, देश प्रेमी होगा। – जब दुश्मन ग्रह सू0-चं0-रा0 खाना नं0 1-7 में हो।
3. शुक्र (स्त्री या शुक्र से संबंधित कारोबार खुद चोर हो और चोरी में गया माल शायद ही वापिस हो) और ऐसे टेवे वाले की स्त्री ही ऐसी न होगी बल्कि वहाँ तो आवा ही उत गया, सब एक जैसे होंगे जो भी न हो सकने वाली कही सत्य हो। दिन को ज्ञान, रात को इश्क स्नान। धर्म सिर्फ एक धोखे का ही पर्दा बनाया गया है, के विचार का आदमी होगा।
   – जब शुक्र की दृष्टि में कोई भी ग्रह न हो।
4. आशिकाना प्रेम के नतीजे की हुई शादी या माता-पिता के विरुद्ध किया विवाह सौन्दर्य की वजह से की शादी हो तो ऐसे प्राणी की औलाद उसे बाप न कहेगी या बाप न मानेगी। औलाद बाप के काम न आएगी।
5. चन्द्र का मंदा असर अब शुक्र पर हो। चन्द्र अब शुक्र के पतंग की डोर का काम देगा मगर अब उपाय भी चन्द्र का ही मददगार होगा। – जब चन्द्र मंदा हो।
6. शत्रु ग्रहों का अब शुक्र पर या शुक्र के फल पर कोई मंदा असर न होगा। – जब शत्रु ग्रह साथ बैठे हुए हो।
7. गऊ और माता की सेवा करने और साफ पवित्र दिल रहने से घर बार में धन-दौलत की बरकत होगी और चालचलन की बर्बादी से जब बच्चे बाहर बनने और बनाने लगे तो मर्द औरत की जोड़ी दुःखी, जल कर बर्बाद हो।

उपाय

सेहत के संबंध में शुक्र की जगह (गुप्त अंग) पर मर्द चाहे औरत दूध और दही से धोते रहना शुक्र की उड़ती मिट्टी (दुनियावी अफवाह) से बचाव होगा, बल्कि शुक्र का स्थान (लिंग, योनि) आदि साफ रखते हुए गृहस्थी परिवार माल सामान में माया के आने-जाने की नाली भी साफ गिनी जाएगी।

शुक्र खाना नं06

(शान से रखी तो दौलत के महल वरना नीच दौलत– कुलक्ष्मी)

जवानी तू न गर बच्चे भुलाता।
बुढ़ापा न दुनियां में तुझको रुलाता।।

ज़ाहिरदारी और मान उत्तम, असर गिना घर दो का हो।
आठ मंदा दो साथ जो मिलता, शुक्र देता फल 12 को।
गुरु रवि कोई 6-2 बैठे, शुक्र रेखा मच्छ होता हो।
साथ शनि या मंगल होते, हीरा रिजक, ज़र चश्मा हो।।
राज़ संबंध बेशक नीचे, साया धन का होता हो।
लड़का गर उस घर कोई जन्मे, साल 12 न दूसरा हो।
छठे-सात घर शत्रु बैठे, केतु साथी गुरु 12 जो।
रवि, गुरु चाहे चन्द्र मिलते, असर सभी का मंदा हो।
बुध मंदे की सेहत मंदी, शनि बुरे ज़र घटता जो।
केतु हुआ मंद दुश्मन बैरी, बांझ स्त्री या खुसरा हो।
शुरू शरारत पाप हो करता, मंगल नतीजा देता हो।
जन्म मंदा ग्रह तख्त पर आता, ज़हर टेवा सब धोता हो।
शुक्र बुरा न खुद कभी होगा, असर बुरा हमसाया हो।
भला जन्म ग्रह जब कभी मंदा, दृष्टि मारा ज़र माया हो।

शुक्र का पतंग– कामदेव रेखा

यह रेखा पतंग या (दिल रेखा) जो बुध और शनि को मिलाए घर की रहनुमाई या भाई बन्दों पर संयम या नम्बरदारी ज़ाहिर करती है। ऐसा व्यक्ति धर्महीन होने के इलावा स्त्री जाति की प्रशंसा के पुल बनाने और ज़ुबानी याद में समय गुजारने का हामी होगा और दूर बैठे जवान की तरह इश्क को याद करता होगा। स्वास्थ्य अच्छा, जवान और आँखों की शक्ति सलामत हो। स्त्री जाति तथा अपनी स्त्री के खानदान के संबंध नेक होगा मगर सूर्य की किरणें इस शुक्र के दरबार में मैला सा रंग दिखाती है। यानि वह सरकार के घर से पैसा कमाने वाला सीधा संबंध नहीं रखता होगा मगर राज दरबार वालों की कमाई से अपना कारोबार लगाए बिना नहीं रह सकता। इतना ज़रूर है कि वह अपने साथ चलने वालों को कई बार खराब कर देता है (शुक्र नीच का फल होगा) और गृहस्थ के कामों में बुरा प्रभाव होता है, क्योंकि शुक्र और सूर्य आपस में मित्र नहीं है इस रेखा का उसके स्वयं पर कोई बुरा असर न होगा। टूट-फूट से दिमाग़ी कमज़ोरी, दीवानगी और बुध के बुर्ज से शनि तक की पूरी लम्बाई की हालत में उसके विचारों में पशुता और परेशानी हुआ करती है ऐसे प्राणी (शुक्र खाना नं06) की स्त्री सदाबहार और खुद ऐशी पट्ठा होगा। स्त्री के टेवे शुक्र खाना नं06 के टेवे में यही बात उल्ट कहेंगे। उसकी स्त्री को ज़मीन पर नंगे पाँव नहीं चलना चाहिए अच्छा तो यह है कि जुराब आदि डाले ताकि तलवा फर्श से न छुए। गाय, बैल धन-दौलत चोरी या गुम हो जाना निशानी होगी। वृ0सांस, दमा आदि सूर्य शरीर और गुस्सा नीच हालत की निशानी है। दिल रेखा के सही होते यानि चन्द्र कायम होते हुए शुक्र का असर कभी बुरा न होगा, मगर चन्द्रोदय बुरा प्रभाव देंगे शुक्र जब कभी भी खाना नं01 में स्वयं नीच हो उसने मंगल बद का असर न दिया शुक्र गुम से चाहे बुद्धि जाती रही। बुध ने साथ छोड़ा स्त्री को कष्ट हुआ मगर धन गुम न हुआ। अगर शुक्र नीच से अक्ल गुम हुई तो भाग्य ने हार नहीं दी। लल्लू को कव्वालियां रब सिद्धियां पावे। यानि रोज़ी अक्ल के हिसाब से होती तो नादान या बेवकूफ से तंग रोज़ी वाला और कोई न होता यानि शुक्र का नीच हो जाना अपने लिए मंदा नहीं होता यानि इस ग्रह का दुनियां से संबंध होना, न होना विशेष फर्क नहीं। दुनियां का आशिक न होगा तो दुनियां का त्यागी ज़रूर होगा, विराम से नहीं बल्कि अक्ल की कमी से। खराब रेखा से कृपा न करने की आदत, स्वभाव का बदल जाने वाला होगा।

नीच हालत

शुक्र खाना नं0 6 गरीबों की सहायता और उनको रुपया पैसा खिलाएगा बुद्धि के उल्ट कई काम करेगा। अपने घर का फायदा न पाएगा, स्त्री, परस्त्री या स्त्री सुख न होगा। **आखिरी आयु में आराम होगा, जिसके लिए चन्द्र का उपाय सहायक हो,** जब यह रेखा शुक्र की पतंग सिर्फ बुध के पर्वत खाना नं0 7 कनिष्ठा की जड़ पर ही हो तो शुक्र खाना नं07 होगा और सूर्य के बुर्ज खाना नं01

पर अनामिका की जड़ ही में हो तो शुक्र खाना नं0 1 का होगा और जब शुक्र का पतंग सिर्फ मध्यमा की जड़ में ही हो तो शुक्र खाना नं010का फल देगा जिसके लिए शुक्र खाना नं010 का हाल देखें।

हस्त रेखा

सेहत रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली की बड़ी आयत खाना नं0 6 में समाप्त हो, शुक्र पर राहु का निशान हो।

नेक हालत

लल्लू करे कव्वालियां, रब सिद्धियां पावे।
लड़के उस घर से डरे, कुड़ियां पल्ले पावे।।

स्वयं अपना दिखावा उत्तम तो सांसारिक शान उत्तम होगी। आखिरी आयु में आराम के लिए चन्द्र का उपाय सहायक। दिमागी खाना नं06 केतु से मुश्तरका दिलचस्पी या पक्का प्यार हर काम के लिए तैयार या लगा रहने वाला काम पूरा किए बिना न छोड़ने का हामी। मगर भाग्य का ऐसा चक्कर कि इन्तज़ार करते-करते समय निकल गया और अंत में वस्ल की रात और आशा का फल निकम्मा ही मिला। संतान के लिए नीच फल बाकी वही फल जो शुक्र खाना नं0 2 का है।

1. शुक्र खाना नं0 12 का उत्तम फल होगा। राज दरबार का संबंध चाहे नीचा। – जब खाना नं0 8-2 का मंदा प्रभाव शामिल हो या खाना नं0 2-8 में शुक्र के शत्रु सू0, चं0, रा0 ग्रह उपस्थित हो या वैसे ही खाना नं0 8-2 मंदे हो रहे हों।
2. शुक्र कभी बुरा होगा –जब तक चन्द्र कायम हो।
3. उत्तम जीवन। मगर शुक्र का अपना प्रभाव रा: के: की हालत पर होगा, –जब मंगल साथ साथ हो।
4. मच्छ रेखा चाहे अपनी या अपने पिता की। –जब सू: या वृ: खाना नं: 2-6 और खाना नं: 12 में कोई ग्रह अवश्य हों।
5. खूब धनवान होगा। शुक्र कीमती हीरा मगर संतान नालायक ही होगी। भाई बन्धु और गृहस्थी साथियों की बरकत और सहायता। बल्कि मच्छ रेखा चाहे पिता की तरफ से यानि 7 भाई तीन बहने या मच्छ रेखा अपनी तरफ से 7 लड़के तीन लड़कियां।
   –जब सू: या वृ: या दोनों खाना नं: 6-2 साथ-साथी हो।
6. शुक्र खाना नं: 6 वाले पुरुष-स्त्री को अच्छा होगा कि वह ऐसे पुरुष-स्त्री से शादी करवाए जो अकेली बहन, अकेला भाई न हो अर्थ यह है कि शुक्र खाना नं: 6 सिर्फ उस समय ही मंदा होगा जब मंगल (भाई-बन्धु) की तरफ से वह अकेला ही हो।
7. शुक्र के मित्र ग्रह (श:, बु:,के:) पहले स्वयं मंदे असर का सबूत देंगे या शुक्र के शत्रु ग्रह (सू:, वृ:, चं:, रा:) अपनी मंदी या बुरी हालत जाहिर करेंगे जिसके आने की पहली निशानी (मकान मशीन (शनि), बहन, बुआ, लड़की (बु:) संतान या शारीरिक जोड़, कान, रीढ़ की हड्डी) आदि (केतु) से शुरु होगी, जिस की सहायता में टेवे वाले के जद्दी मकान की तहखाना, तह ज़मीन के अन्दर या दीवारों का अपनी बनावट के अन्दर से छुपाए मगर खुद बनाए पोल या बहुत बड़े-बड़े बर्तन, गोल शक्ल के चाहे मिट्टी या धातु के हो (बुध की चीजे) या शनि के समान हो लोहे के बड़े, कद से बड़े बक्से, लोहे का सेफ आदि तह जमीन में दबे हुए)। फैंसला बुध की हालत तथा बुध को शनि की सहायता की शक्ति पर होगा। राहु केतु शरारत की सब से पहिले खबर देगें और मंगल आखिरी परिणाम बना देगा। यानि शुक्र का प्रभाव उसके सहायक साथी साथ वाले ग्रहों से फैसले पर पहुँचेंगे।

मंदी हालत

1. शुक्र और उसका साथी दोनों बरबाद मंदे, चांदी ठोस घर में रखनी शुभ,
   –जब खाना नं: 6-7 में कोई भी साथी हो सिवाए मं: वृ:।
2. शुक्र अब मंदा असर देगा: औलाद हर तरह से मंदी, पिता बचपन में चल दे और स्त्री का फल (संतान आदि) 28 साला आयु के बाद उत्तम।
   –जब खाना नं: 2 खाली या सू: नं: 6 और नं: 2 खाली हो।
3. स्त्री जिस तरह शान से रखी, धन के महल बने वरना नीच धन होगा, कुलक्ष्मी होगी।
   –जब बुध खाना न: 5 मंदा हो।
4. खाना नं: 3-4-7-9 के ग्रहों का मंदा हाल होगा मगर नं: 10का ग्रह सहायता देगा। या बुध न: 1 में आ जाने पर सब कुछ आ जायेगा।
   –जब बुध खाना न: 5 मंदा हो।
5. सब ही ग्रहों का फल मंदा होगा चाहे सू:, चं:, वृ: सब की सहायता हो जाए। –जब केतु साथी और वृ: खाना नं: 12 में हो।

-जब राः खाना नंः 2 में हो।

6. पहली स्त्री मर जाए। राहु के समय तक शत्रुओं से कष्ट हो।
7. सेहत मंदी होगी और हाशिया दिए हुए सब ही खाना नम्बरों का प्रभाव मंदा बल्कि बर्बाद कर देगा मगर ऐसी हालत में खाना नंः 1 का ग्रह सहायता देगा या खुद बुध खाना नः 1 में आने के समय से सब कुछ फिर से हो जायेगा।
   -जब बुः मंदा सिवाए बुध खाना नंः 5 और खाना नंः 9 बड़ों का खानदान, खाना नंः 3 भाई-बन्धु, खाना नः 4 माता खानदान तथा माता खाना नंः 6 मामा, खाना नंः 7 स्त्री लक्ष्मी, खाना नंः10 पिता की आयु नंः 11 आय, खाना नंः 12 रात का सुख।
   -जब बुध नंः 8 हो।
8. शुः का फल मंदा होगा, नर संतान की कमी होगी
   -जब शनि मंदा हो।
9. धन दौलत प्रतिदिन घटता जाएगा।
10 गंदी नाली, औरत बांझ या मर्द खुसरा होगा। नर संतान न होगी या दुःखी रहेगा। अगर होगी तो लड़कियों के टोकरे भरे होंगें। अक्ल की चाहे कमी हो मगर रिजक की कमी न होगी। फिर भी त्यागी होगा। पराई और मंदी स्त्रियां बर्बादी का वैसे ही गले पड़ने की तरह बहाने बनेगी।
   -जब केतु मंदा या साथ-साथी खाना नंः 6 हो।
11.शुक्र खाना नंः 6 वाले पुरुष या स्त्री के नर संतान पैदा करने के संबंध में कोई बीमारी न होगी अगर होगा तो उसकी गुप्त अंग की जिल्द में नुक्स होगा वह भी फालतू कीड़े पैदा होगें। खासकर जब संतान पैदा करने के सवाल को भूले हुए, स्वप्न में भी याद न लाया जाए।

उपाय :- संतान की मंदी हालत

पैदा न होना या होकर मर जाना या लड़कियाँ ही लड़कियाँ पैदा होने के समय ऐसे प्राणी मर्द चाहे स्त्री के गुप्त अंगों की सफाई के लिए मंगल की चीजें जिससे कीड़े मर जाते हो, प्रयोग करे। डाक्टर की सलाह लेकर ऐसी चीजों से धोए। (लाल दवाई या सौंफ का उबाला रस किसी और दवाईयों से मिलाकर धोने के लिए बनाया पानी इस्तेमाल करें जिस का रंग मंगल का रंग हो, लें।

12.घर की नम्बरदारी से सबको सूखे तालाब में भी डूबो देगा, खास कर जब स्त्री के लिए मुंह से प्रशंसा या इश्क में फर्जी पुल बनाते हो। -जब शुः दृष्टि से खाली या बर्बाद हो।
13.नर संतान जब भी हो तो दूसरा बच्चा 12 साल बाद ही हो। -जब शुक्र सोया हो या मंदा हो, नीच हो।
14.धन बर्बाद शुक्र का हर तरह से मंदा फल ही होगा। मंदे समय की शरारत पहले पापी ग्रहों द्वारा ही होगी और नतीजा मंगल की हालत पर ही होगा। पापी ग्रहों के द्वारा का अर्थ है कि पापी ग्रहों की चीजें कारोबार संबंधी आदि।
   -जब वृः खाना नं० 7 से 12 या सूः भी खाना नः 6 के बाद के घरों में हों।
15.जन्म कुण्डली का मंदा ग्रह जब नंः 1 में आएगा, टेवे की सारी विष धो देगा, शुक्र स्वयं भी बुरा न होगा। साथ वाले ग्रह का बुरा प्रभाव होगा, स्त्री के नंगे पैर फिरना पैर के तलवे का धरती पर लगना संतान की कमी देगा। शुः खाना नः 6 का फैसला बुध की हालत (बुध को शनि की सहायता या शक्ति) पर होगा। स्त्री के सिर पर बालों में सोना रखना धन और लक्ष्मी की वृद्धि में सहायक होगा पेशाब गाह को दही से धोते रहना उत्तम होगा। शादी के समय अगर माता पिता होने वाले जवाई या बहू, जिसका शुक्र नंः 6 में हो, को खालिस सोने के दो टुकड़े संकल्प कर दे तो सारी आयु वह संतान के संबंध में सहायक होगें।
16.जो काम करें मन्दा परिणाम । अक्ल खराब होगी। वृः, सूः, चंः तीनों ही का फल मंदा या तीनों ग्रह सोये होगें या तीनों ही ग्रह से संबंधित चीजों का कोई लाभ साथ या सहारा न होगा। -जब खाना नंः 7 में शुः के साथ ग्रह या कोई भी बाहम शत्रु लड़ रहे हो।

क्याफाः- शुक्र का बुर्ज नीच हो।

शुक्र खाना नंः 7

(जैसा यह वैसी वह साथी का प्रभाव, अकेला नेक)

एवज़ गैर पतिव्रता अपनी जो भूली।
जली माया घर की यह क्या नार आग़ ले ली।

सफर गुजर हो उस की लम्बी, रिजक तिलक परदेसी हो।
लगन पराई स्त्री मंदी, चंडाल गुस्से जड़ कटती हो।
नकल फौरन हो [1] रानी करती, उम्दा होता जब ग्रह कोई हो।
सात पहले 9-11 बैरी, माया दौलत सब बढ़ती हो।
शनि 9 वें घर 11 बैठा, सामान आराम कुल दुनिया हो।
चन्द्र टेवे जब तख्त हो पाता, जले शुक्र खुद रोता हो।
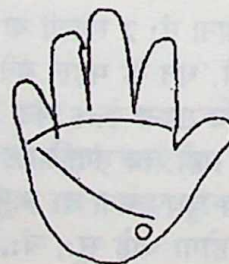
4 रवि और चन्द्र पहले,	साथ शनि खुद रोता हो।
4 रवि और चन्द्र पहले,	साथ शनि भी बैठा हो।
नामर्द हुआ या सुथरा गिनते,	सांड खस्सी जन खुसरा हो।
औलाद केतु और शनि गृहस्थी,	हालत राहु खुद माली हो।
परिवार कबीला बुध की गिनती,	चाल शुक्र 4 तरक्की[2] की हो।
4 दूजे बुध नेकी करता,	आठ रवि बुध मंदा हो।
साथ राहु या हो गुरु मंदा,	असर शुक्र सब मंदा हो।

1. खाना नं01 का ग्रह या जब शुक्र खाना नं01 में हो या जो साथी ग्रह की तासीर और शनि की आखों जैसी चाल होगी, यदि शनि की एक आंख भी साबित हो जाए तो शुक्र उत्तम होगा।

2. ऐसी लक्ष्मी जो चारों और ही चली जा कर रक्षा कर सके।

% शनि	क	केतु
गृहस्थी	शुक्र (लक्ष्मी)	संतान
हालत		

राहु खुद माली हालत

बुध परिवार

हस्त रेखा :- सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के बुर्ज की जड़ में समाप्त होगी या शुक्र के बुर्ज पर बुध का चक्र हो।

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं07 (आयु, जिंदगी बढ़ने की इच्छा) बुध से मुश्तरका लम्बी आयु मगर तरक्की से अर्थ नहीं। समय और गृहस्थ में चलते जब तक अकेले हो दिन की उकसाहट के पीछे न जाएगें, मगर दो दिल की दोरंगी का किसी दूसरे से एक रंग होने में प्यार का नाता कभी मंदा न जाएगा।
2. अकेला शुक्र बहुत नेक होगा मगर जो साथी हो उसी का असर और फल देगा। मगर जिस के घर में हो उसी का धर्म होगा और शनि की आंखों की रफतार होगी। जिस के लिए खाना नं010में शनि का हाल देखे और टेवे अनुसार जहां शनि बैठा हो उसकी आखों के गिनती के अनुसार अगर शनि की एक आंख भी साबित हो तो शुक्र शुभ फल देगा।
3. सफर में ज्यादा समय गुजरेगा और उत्तम होगा या यूँ कहे कि जब तक स्वयं कमाए उस समय तक सफर और परदेस में होगा। आयु का कभी धोखा न होगा जद्दी घर का आराम कम ही मिलेगा और न ही नई बैठक (पुरुषों के बैठने की जगह) बनेगी।
4. जैसा कि खाना नं01 का ग्रह होगा या जब भी शु0खाना नं01 में आये (3 साल आयु) या टेवे में जब कोई ग्रह उत्तम हो तो शुक्र भी उत्तम होगा या नं01 का ग्रह शुक्र का फल और शुक्र खुद नं01 में साथ बैठे साथी का फल देगें। शादी, गृहस्थ और स्त्री खानदान की हालत शुक्र की उम्र 25 साल का समय उत्तम होगा।
5. **स्त्री उत्तम नेक स्वभाव जब तक स्त्री रंग में हद से अधिक सफेद या आम दरजा से अधिक सुन्दर न हो या सफेद गाय का संबंध न हो जावे, वह शुभ ही होगी, किसी लेने देन या इधर उधर के झगड़ों में दखल न देगी।**
6. आयु भर जोड़ी सलामत, सुखी अपना गृहस्थ और माता पिता की हालत उत्तम होगी स्वभाव की नर्मी, इंकारी, भाग जाने की निशानी और माया की बरकत की सीढ़ी होगी आयु 80-90 साल के करीब होगी। -जब शु0 कायम और उत्तम हो।
7. सफ़र से जिंदा घर वापिस आएगा, मौत कभी परदेस में न होगी।
   -जब वृ0सोया हुआ हो। शुक्र के बुर्ज खाना नं0 7 पर वृ0 के खड़े खत पर छोटे-छोटे हो।
8. माया दौलत सब बढ़ती और शुक्र का फल उत्तम होगा। -जब नं0 1-7-9-11 में शत्रु ग्रह सू0, रा0 चं0 हो।
9. शुक्र वही फल देगा जैसा इन चारों में से कोई भी होवे। -जब 1-9-7-11 में मित्र श0 बु0, के0, हो।
10. आम लोगों के आराम के सामान कारोबार बरकत देगें। -जब श0 नं0 9-11 हो।
11. शादी के दिन से पुरुष के लिए शुक्र और बुध दोनों का उत्तम फल, 37 साला समय तक उत्तम। -जब बु0 4-6-2 में शुभ हो।
12. विवाह शादी और शुक्र से संबंधित काम सदा नेक फल देगें। -जब शुक्र नेक हो।
13. संतान की हालत केतु की हालत पर, गृहस्थी की हालत श0की हालत पर, माली धन की हालत राहु की हालत पर, परिवार की हालत बु0 की हालत पर फैसला होगा।

क्याफा **स्वास्थ्य रेखा शुक्र के बुर्ज नं07 पर समाप्त या शु0 नं07 पर बु0 का 0 चक्र हो।**

14. कामदेव से दूर होगा।
   -जब अकेला शुक्र नं0 7 और अकेला चन्द्र नं0 4 हो।

मंदी हालत

1. धन स्त्री के बहुत काम में लगेगा बल्कि मिट्टी की पूजना में भी लगेगा, इश्कमिजाजी सब कुछ धन जायदाद बर्बाद जिस का सबब अपनी खुद गर्जी हो व दिमागी नकल (राहु की शरारत) होगी। गुस्सा (सूर्य की गर्मी) नीच होगी। आयु 85-90वर्ष तक की होगी। स्त्री खानदान के पुरुषों का टेवे वाले के साथ कारोबार में हिस्सा डाल कर साथी होना धन और गृहस्थी खराबियों के बहाने होंगे।
2. संसारी लेन देन या व्यापार का हाल मंदा होगा, संतान के विध्न। -जब शु0, वृ0 मिल रहे हो।
3. चोरी, धन हानि की घटनाएं होंगी। 4-16-28-40-52-60-76-88-100-114 साला आयु में। -जब वर्षफल में शु0 के शत्रु खाना नं01 में आये और मं0 3 भी मंदा हो।
4. शुक्र का फल मंदा और भाग्य बरबाद ही होगें। -जब चं0 नं0 1 हो।
5. स्त्री चाहे पुरुष, खस्सी, खुसरा सांड नपुंसक, नामर्द बांझ होवे या सुथरा जो संसार छोड़कर विराग से भर रहा हो। -जब सू0 नं0 4, चं0 नं0 1, रा0 नं0 7 में हो।
6. शुक्र खाना नं० 8 के साथ के ग्रह के समय हर दो का मंदा हाल। स्त्री पर स्त्री मरे खासकर जब घर की छत में आसमान की ओर से रोशनी आए। -जब खाना नं० 8 में बुध या सूर्य हो।
7. स्त्री का मंदा हाल, स्त्री को सारी आयु तक नीला कपड़ा अशुभ। -जब राहु नं: 8 में बुध या सुर्य हो।
8. शुक्र हर तरह से मंदा प्रभाव देगा खासकर जब कि वह बिल्ली की जेर चमड़े के बटुए मे हो, शनि के काम मंदे। खाऊ मर्द उड़ावे मंदी हालत में स्त्रियों को खूब ऐश करावे, खुद बर्बाद हो। -जब राहु साथ-साथी या मंदा हो।
9. शुक्र सोया हुआ या मंदा न होगा, बल्कि उत्तम प्रभाव देगा, पराई स्त्री का लगन और गुस्सा बर्बादी की नींव होगी। -जब खाना नं: 1 खाली हो।
10. शुक्र हर तरह से मंदा होगा। खुदगर्जी बरबादी की नींव होगी जिससे जद्दी जायदाद का फायदा न उठायेगा। -जब खाना नं: 4 मंदा या खाना नं: 4 में शु: के शत्रु सू:, चं:, रा: हों।
11. संतान न होगी या दुखिया होगा। -जब वृ: खाना नं: 2 में मंगल नष्ट हो।
12. जब खाना नं: 8 खाली हो। -जब शुक्र के पक्के घर खाना नं: 7 में उसका दूसरा साथी बुध मिट्टी में रेत, मर्द-स्त्री में विषय की शक्ति और साथ वाले घर 2 में बुध, केतु सहित कामदेव की नाली और 8 में मंगल और शनि (शैतान) सही या गलत किसी भी ढंग से अपना मतलब निकाल लेगा माने गए है। शर्म व खाना नं० 7 में शुक्र, बुध की चक्की को चलाने वाली लोहे की कीली भी खाना नं: 8 का ही ग्रह गिना गया है जो गृहस्थी की हालत में सांसारिक शर्म व हया के 8 गुणा शक्ति में गिनते हैं। इसलिए खाना नं: 8 खाली होते हुए शर्म और हया का हवाई पर्दा उठ जाने से स्त्री में विषय (गंदी नाली) में कामदेव का खून खूब ज़ोर पर होगा जिसके कारण बेहयाई तक हो सकती है। स्त्री-पुरुष में किसी एक को या दोनों को तपेदिक या जिल्द जलते रहने की बीमारियां हो सकती है।
13. **स्त्री शुक्र के गुप्त अंग की खराबियों के कारण दिल की खराबियों, दिल की बीमारियां हो जाने के समय शनि की चीज़ें (पानी की तरह बहने वाली नर्म जिल्द को बिना जलाए खुश्क रखने वाली जैसे शराब (अलकोहल) आदि, जिसके लिए बुद्धिमान डॉक्टर या हकीम की सलाह के साथ (तरीका) प्रयोग का फैसला करना आवश्यक है, से सहायता होगी।** -जब शनि खाना नं: 6 में हो।

शुक्र खाना नं० 8

(जली मिट्टी की हालत स्त्री)

कब्र दूसरे की न जब कोई पड़ता।
कसम पर ज़मानत क्यों फिर तू करता।।

बने बड़ी घर दो कोई बैठा,	*असर जाती 8-2 का हो।*
खाली पड़ा हो घर जब दूजा,	*पाप शुक्र सब मंदा हो।*
सुराल नाव ज़र भर कर डूबे,	*बर्बाद खाना संतान का हो।*
लकीर पत्थर जो स्त्री बोले,	*जनाही मंगल बद हो।*
दान छोड़े, सिर मंदिर टेके,	*शत्रु कलम सिर होता हो।*
चन्द्र, मंगल, बुध कायम होते,	*असर शुक्र न मंदा हो।*

हस्त रेखा
शुक्र से मंगल बद को रेखा। स्त्री का स्वास्थ्य जब मंदा हो तो चरी (ज्वार) का दान देना या उसे ज़मीन में दबाना उत्तम होगा।

नेक हालत
1. मेहनत की रोटी कोई विष नहीं होती मगर मेहनती को आराम कर लेना भी ज़ुर्म नहीं।
2. स्त्री सख्त स्वभाव (मर्द ने कहा कि दाल पतली है, और स्त्री ने हाथ पर चिमटा मारा, मर्द ने फौरन कहा कि दाल पतली है मगर स्वाद है, कह कर जीवन बिताया) स्त्री की ज़ुबान का असर पत्थर की लकीर होगा जो बुरा कहे एकदम सच होगा। नेक कही बात के पूरा होने की शर्त न होगी इसलिए स्त्री को तंग करना दोनों के लिए अच्छा न होगा।
3. दान लेना छोड़ दें और मंदिर में सिर झुकाता रहे, शत्रु का सिर अपने आप कट जाएगा।
4. शुक्र खाना नं० 8 वाला कहता है कि उसे सब कुछ पता है मगर उसे पूछता कोई नहीं इसलिए वह बोल कर थक कर बैठे हुए मर्द की तरह अपनी खदी के तन्दूर में जल रहा होगा।
5. शुक्र भी खाना नं० 2 के ग्रह का ही प्रभाव देगा। –जब खाना नं० 2 में कोई ग्रह हो।

मंदी हालत
1. यह ग्रह सदा मंदा न होगा, इसके लिए मंद फल का आम समय 11 साल की आयु तक ज़ोर में होगा, 12 साल की आयु में शुक्र जब खाना नं० 12 में या जब कभी खाना नं० 12 में आये नेक फल देगा। बदी के दरिया को बाढ़ 1 से 11 साल की आयु = 11 साल, आयु का 27 वां साल = 1 साल, 34 वां साल = 1, 39 से 45, 7 साल (कुल 11+1+1+7 = 20साल), 25 साल की आयु तक शादी करनी अशुभ होगी जब तक चन्द्र, मंगल या बुध जो अमूमन ऐसे टेवे में मंदे ही हुआ करते हो कायम हो शुक्र का बुरा प्रभाव टेवे वाले पर न होगा, इन ग्रहों की संबंधित चीज़ें कायम करना या संबंधित रिश्तेदार चन्द्र (माता), मंगल (भाई), बुध (बहन) का आशीर्वाद लेते रहना सहायक होगा।
2. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालते रहना शुभ होगा। गाय की सेवा या गायदान से बरकत होगी। धर्म स्थान में सिर झुकाते रहना तेरे शत्रुओं का सिर उड़ाता रहेगा। अगर ऐसा न हो तो चालचलन शक्की होगा।
3. जब खाना नं० 2 खाली हो।
   –चाहे लड़ाई में सहायता देगा मगर स्वयं अपने सिरहाने चंडाल मंदी मिट्टी की तरह गृहस्थी की हालत होगी। बड़ों का साया डोलता या हर समय खतरे में होगा। स्त्री के स्वास्थ्य के मंदे धन के लिए ज्वार का दान या ज़मीन में दबाना सहायक होगा। खीचों बाहर कुएं में, गिरने वाला उल्टा मर्द, स्त्री होगा, ससुराल की नाव को भर कर डुबोने वाला और खाना नं० 5 शादी के बाद का आने वाला समय संतान भी बर्बाद होगी। वही गोबर में मिलावट से बिच्छू पैदा होने की तरह कष्ट पर कष्ट अपने लिए खड़ा करेगा।
4. किसी के लिए कसम खाना ज़मानत देना कभी उत्तम और नेक फलदायक न होगा। जनाही मर्द और औरत मंगल बद का असर खासकर जब मंदे मर्द या स्त्री का साथ हो जाये। जब चालचलन का हल्का हुआ तो आतशक सुजाक आदि सब मंदी बीमारियों का शिकार होगा। गायदान सबसे उत्तम उपाय होगा। शुक्र खाना नं० 10मंदी हालत में देखें।
   –जब दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु, का साथ खाना नं० 8-2 में हों।

शुक्र खाना नं० 9

(मिट्टी काली आंधी– मंगल बद)

गिना है बेहतर चाहे, मेहनत का खाना।
मगर शेखी क्या, खून हरदम बहाना।।

हाल बड़ा लाख हो उम्दा, मर्द माया न इकट्ठा हो।
औलाद औरत, ज़र अपना मंदा, साथ पापी बुध होता हो।
मंदा चौथे या शत्रु बैठा, तख्त [1] चक्कर जब लाता हो।
गुरु, चन्द्र कोई मंदा होता, गृहस्थ माया सब जलता हो।
चीज़, चन्द्र या मंगल साथी, असर शुक्र 9 चन्द्र हो।
नीम वृक्ष टुकड़े चांदी, भला गृहस्थी मंदिर हो।

1. 4-16-28-4052-64-76-88-100-114 साल की आयु खाना नं० 4 को मंदा करने वाले या शुक्र के दुश्मन जो खाना नं० 4 में हो सूर्य या राहु या चन्द्र।

हस्त रेखा :- धनु राशि से कोई रेखा आकर विवाह रेखा को काट दे।

नेक हालत

1. चाहे बुजुर्गों का धन-दौलत बढ़ता होगा। औलाद का हाल ऐसा भला न होगा और खुद उसके अपने यहां मर्द और धन दोनों शायद ही इकट्ठे होंगे। मगर तीर्थ यात्रा ज़रूर उत्तम होगी। वह व्यक्ति अक्लमंद वज़ीर तकदीर वाला होगा। लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट की रोटी की कीमत के बराबर मेहनत करके रोटी खाएगा। स्वयं मेहनती होगा या होना पड़ेगा। आराम करने की जगह हद से अधिक मेहनत करने वाला या खून बहाते रहना कोई शुभ फल न देगा। माली हालत के लिए नीम के वृक्ष में चाँदी के चौकोर टुकड़े दबाना शुभ होगा।
2. दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत स्वयं बुला कर मोल ले ली, जिसे खूबसूरत समझते थे वह स्वयं अपनी बदसूरती से डराने लगा, के कौल का हाल होगा।
3. **मकान की नींव में या मकान में चन्द्र की चीज़ें (घोड़ी, कुआँ चाँदी) के साथ या मंगल (शहद) के कायम रखने से शुक्र उड़ती हुई मिट्टी की जगह 9 गुणा उत्तम और चन्द्र (शांति, माया, दौलत की सहायता) का उत्तम फल देगा।**

   -जब चन्द्र या मंगल का साथ हो।

मंदी हालत

1. भाग्य के संबंध में काली मिट्टी की आंधी।
2. शुक्र की 25 साल की आयु में शुक्र के कारोबार (शादी या चीज़ें (गाय, खेती)) या रिश्तेदार शुक्र से संबंधित के साथ से घर की चाँदी की बनी दीवारें भी जली हुई मिट्टी की तरह मंदी हो जाएगी।
3. माली हालत के लिए मंगल बद, औलाद तथा धन मंदा, बुध और केतु का फल अमूमन मंदा और राहु (शरारत और खराबी) का बहाना ही होता रहेगा, जिसके लिए नीम के वृक्ष में सुराख करके चाँदी के चौकोर टुकड़े डाल कर फिर सुराख को नीम की लकड़ी से ही भर देना शुभ होगा।
4. 17 साल की आयु से नशे और बीमारियाँ आम तंग करेंगी। शुक्र और भी मंदा होगा, अस्पताल से बीमार मुर्दा उठा कर लाए हुए की तरह शादी के दिन की होली में दुल्हन का खून बर्बाद और उसकी मंदी सेहत के कारण खर्चे पर खर्चा। रक्षा बंधन सुर्ख चूड़ी नीचे चाँदी और ऊपर लाल रंग पहने, जब शनि खाना नं० 1 में आये या मकान बने सब कुछ उत्तम हो जाये।

   -जब पापी या बुध किसी तरह भी आ मिले या साथ-साथी हो।
5. धन माया बर्बाद हो जब खाना नं० 4 वाले ग्रह खाना नं० 1 में आए यानि 4-16-28-4052-64-76-88-10114 साल की आयु में। -जब खाना नं० 4 में मंदे शुक्र के शत्रु ग्रह शुक्र के बुर्ज खाना नं० 7 में रेखा अगर शराफत रेखा बुर्ज नं० 4 से न हो।
6. गृहस्थ मंदा (सिर्फ संतान और धन के लिए)। -जब चन्द्र खाना नं० 7 या चन्द्र का मंदा चाहे किसी जगह हो।

क्याफा

कनिष्ठा की जड़ में चन्द्र का आधा आकार निशान हो।

7. खून की कमी की बीमारियाँ होंगी, पहली निशानी नाखून सफेद हो जाएंगे। -जब खाना नं० 1 खाली हो।
8. संतान के विघ्न होंगे। लोगों से साथी सांसारिक लेने-देने व्यापार का मंदा हाल होगा।

   -जब वृहस्पति और शुक्र मिल रहे या वृहस्पति मंदा हो।

क्याफा

अंगुलियों के नाखून ज़र्द रंग, शुक्र के बुर्ज नं० 7 और वृहस्पति के बुर्ज नं० 9 को मिलाने वाला लेटा हुआ खून हो।

शुक्र खाना नं० 10

(स्वप्न हूरां स्वयं शनि, शनि उत्तम तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री)

सदा फूल औरत जवानी पर मरता।
गवां खाली औलाद पीरी तरसता।।

4 दृष्टि खाली होता, — शुक्र, शनि बन खेलता हो।
उत्तम शनि से बुध हो उत्तम, — हादसा न कभी देखता हो।
दीवार पश्चिमी जब तक कच्ची, — परिवार धन ज़र उत्तम हो।
नज़र भली न जब शनि अपनी, — शुक्र अंधा लेखा रोता है।
पाँच पहले ग्रह चाहे कोई बैठा, — आराम उम्र सारी होता हो।
साथ मगर जब शत्रु साया, — मंगल, चन्द्र, केतु मंदा हो।
चन्द्र बैठा 7-4 या दूजे, — साथी कोई न उसका हो।
पत्थर मिट्टी जब खांड हो बनते, — लारी मोटर कुल उत्तम हो।
शनि जन्म घर शुक्र आता, — पाया तख्त या सातवां हो।
काम शनि न जब तक करता, — असर मुबारक हर्जा हो।
11-9 वे शनि टेवे बैठा, — साथी कोई न होता हो।
बुध असर सब उत्तम देगा, — बाग-बगीचे उम्दा हो।
औरत मिट्टी की लक्ष्मी बनती [1], — चलन नाली न गंदी जो।
बदली स्त्री कुल मिट्टी होती, — दुखिया नज़र तक शक्की हो।

1. स्त्री जाति को ज़ेर नज़र रखता और अिमूमन उसके स्वप्न देखेगा, चन्द्र और मंगल का फल भी निकम्मा ही होगा।

हस्त रेखा :- शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ में स्थित हो।

नेक हालत

1. जवानी में सदाबहार फूलों की तरह पराई स्त्री के सम्बंध का बहुत मौका मिलेगा। ऐसा मर्द/स्त्री अमूमन स्त्री जाति/मर्द धन को अपनी नज़र में रखता होगा और अमूमन उसके ही ख्वाब देखता होगा जिससे चन्द्र मंगल का फल मंदा ही होगा। कपड़ा, चमड़ा जब धोकर साफ हो सके तो वह दिन-रात, नर-मादा की तमीज क्या, लानत और मैदानी गार और पहाड़ी चट्टानों की सैर से क्यों नफरत हो, के कौल का व्यक्ति हो।
2. धर्मी शनि का शानदार उत्तम प्रभाव। खुद शनि का स्वभाव (शैतान, चालाक, होशियार) हर ग्रह का नेक प्रभाव जबकि शनि के मंदे कामों से दूर रहे।

   -जब शनि साथ-साथी या खाना नं० 1 में हो।
3. शुक्र अब स्वयं शनि का ही उत्तम फल देगा, मिर्जा (पति), हल्का (स्त्री) सारंगी भारी। ऐसी जो किसी दूसरी स्त्री के मर्द को निकाल कर ले जाए, पूरी कामदेव से भरी हो और मद पर आई हुई स्त्री। -जब खाना न० 4 खाली हो।
4. बुध भी उत्तम फल देगा, हादसा कभी न होगा यानि स्त्री के होते हुए कही जा रहे हो मोटर लारी में और कुदरत की और से कोई दुर्घटना होने को हो तो जब तक वह इस सवारी से उतर न जाएगी हादसा न होगा। इसी तरह उसके बैठे होने तक मकान न गिरेगा। बाग-बगीचे मकान आदि उत्तम होंगे। स्त्री की सेहत उत्तम, मर्द, स्त्री दोनों धर्म मूर्ति होंगे। जब तक पश्चिमी दीवार कच्ची रहे तो धन उत्तम, बुढ़ापे में आराम। -जब शनि उत्तम या शनि खाना नं० 9-11 मगर शत्रु का साथ न हो।

क्याफा :- शुक्र की पतंग सिर्फ शनि के बुर्ज और मध्यमा की जड़ में हो।

5. सारी आयु और खासकर जवानी में खूब ऐश आराम हो। यानि शनि के इश्क की हर ओर से सफलता होगी। बुढ़ापा शुभ होगा।

   -जब खाना नं० 1-5 में कोई न कोई ग्रह शत्रु या मित्र बैठा हों।
6. पत्थरी मिट्टी की उम्दा खांड का उत्तम फल देंगे। मोटर लारी, सब से उत्तम असर के फलते-फूलते होंगे।

   -जब अकेला चन्द्र खाना नं० 2-4-7 में हों।

मंदी हालत

1. औलाद में विघ्न या न ही होना या होकर मर जाए या औरत की संभोग में हद से अधिक रुचि। स्त्री के गुप्त अंग को दही से साफ रखना तो खाना नं० 10का शुक्र जो शनि बन जाता है, अब शुक्र की चीज़ों से अपनी असली हालत में होकर संतान की सहायता

करेगा। ऐसे व्यक्ति के खून में संतान की पैदाईश के संबंध में खून में कोई कमी या बीमारी न होगी। मगर होगी तो पेशाब को मर्द/स्त्री की जिल्द में नुक्स हो सकता है।

2. मंदी सेहत के समय गाय या कपिला गाय का दान शक्ति की मंदी ज़हर से बचाता होगा। ऐसा मरीज व्यक्ति गाय का दान करवाने के बाद एकदम एक तरफ हो जाएगा यानि यदि उसकी आयु बाकी न रही होगी तो चल देगा गले सड़ेगा नहीं। लेकिर यदि जीवन बाकी हो तो ठीक हो जाएगा, बीमारी हर हालत में जाती रहेगी। अमूमन नतीजा शुभ ही हुआ करता है। जवानी इश्क का घर तो बुढ़ापे में संतान के संबंध में रोता रहेगा। पराई स्त्री से कामदेवी संबंध 12 साल तक केतु (संतान) मंगल (भाई) और चन्द्र (माता, दौलत (बर्बाद हो) काली कपिला गाय शनि के प्रभाव से बचाएगी। स्वयं शुक्र खाना नं० 1 (10-22-32-47-58-70-79-96-108 -120) साल की आयु या खाना नं० 7 (4-16-33-44-50-66 -76-94-98-111) साल की आयु या शनि जन्म कुण्डली के हिसाब अपने बैठा होने के घर में आने के दिन से शुक्र हर तरह से शुभ होगा जबकि ऐसे टेवे वाला शनि के मंदे काम न करे।
3. मर्द का 12 साल का समय मंदा होगा। -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु का साथ हो।
4. शुक्र भी मंदा फल देगा। स्त्री अक्ल या आँखों से अंधी होगी और हर तरह से दुखिया होगी। -जब शनि मंदा हो।
5. प्राय: खाना नं० 10और 5 के ग्रह आपस में शत्रु हो जाते हैं अत: गाय का सांप की ज़हर से विघ्न या स्त्री को आँखों की तकलीफ शनि से हो सकती है अगर किसी वज़ह से 10 गऊए बर्बाद हो जाये तो कोई बहम नहीं। ग्रहचाली ज़हर हो। बकरी का पालन, गाय और स्त्री के लिए शुभ होगा। -जब शनि खाना नं० 5 में हो।

शुक्र खाना 11

(सुन्दर स्त्री-पुरुष माया के संबंध में घूमता लट्टू)

इश्क लहर औरत न हो इतनी बढ़ती।
चिमट बाद जिसके हो जाती नामर्दी।।

तीन भाई खुद स्त्री होते,	*भंडारी जगत् कुल बनता हो।*
साथ माता न बेशक देवे,	*कन्या स्त्री धन बढ़ता हो।*
साथ दृष्टि बुध जो मिलता,	*घटती मर्द कुल अपनी हो।*
रिजक दौलत न बेशक घटता,	*मंदा असर बुध पापी हो।*
तीन खाली 2 शुक्र [1] मंदा,	*संतान नर मारती हो।*
बादशाही 3 दौलत घटता,	*बुध गिना नामर्दी हो।*
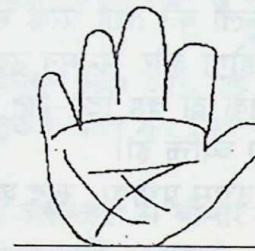
1. शुक्र की महादशा का 20साल का समय मंदा।

हस्त रेखा :- शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं० 11 बचत में समाप्त हो।

नेक हालत

1. बचपन की मोह माया में लगे रहना अक्सर स्वभाव होगा।
2. सुन्दर स्त्री/मर्द, धन का/की भंडारी अमीर माल वाला या फिर हिज़ड़ा, शुक्र या जिल्द की बीमारियां।
3. सांसारिक कामों में लगे हुए अपने कामदेव की शक्ति ही भूल बैठे। मिट्टी की मासूम स्त्री इसलिए नहीं कि उसका खून खानदानी है मगर इसलिए कि उसका कोई दूसरा ग्राहक नहीं। क्योंकि अपनी ही नज़ाकत वह सब से बढ़ रही है। कुछ ऐसे भी हालात है कि कोई दूसरा उसका कुछ बना नहीं सकता या यूं कहो कि वह कुएं में गिरी बेशर्मी के तान हंस रही होगी या हंसती नज़र आती होगी। मगर उसका दिल चन्द्र का पानी शादी (शुक्र) के दिन से ही जल चुका होगा या जल रहा होगा।
4. छुपे (खुफिया) काम करने का आदी होगा। हरदम स्वभाव बदलने वाला होगा। मगर धन से खाली न होगा। मौत सिर कटने से होगी और 12 साल खूब धन न आए तो हिज़डा ही होगा। 5 लड़कियों की शादी के बराबर धन कायम होगा चाहे शादी कोई भी न की जाए या की हो।
   -जब बुध या चन्द्र कायम हो।
5. लड़कियों के साथ से ही धन की ज़्यादती होगी।
   -जब राहु खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. हर काम पर्दे में करने वाला। दिखाने को भोला-भाला, अंदर से हजरत, हरदम स्वभाव बदलने की आदत जो कोई अच्छी बात न होगी। चाहे दिमाग़ की कमज़ोरी कहो चाहे शनि की चालाकी। अमूमन मौत सिर कटने से ही होगी। स्त्री अब घर की खजांची अशुभ होगी। कपिला गाय शनि के बुरे प्रभाव से बचाएगी।
2. चाहे धन-दौलत मंदा न होगा। मगर मर्द की अपनी कुल खानदान घटती ही जाएगी। लड़कियां घर का धन बर्बाद करेंगी, बुध और पापी ग्रहों का मंदा फल होगा और शुक्र का कोई एतबार न होगा। -जब बुध खाना नं० 3 या साथ-साथी।

क्याफा *हथेली पर खाना नं० 6 वाली आयत जो दिल रेखा तथा सिर रेखा से बनती है, इससे सूर्य के बुर्ज नं० 1 (अनामिका) और शनि के बुर्ज नं० (मध्यमा की हदबंदी पर क्रॉस का निशान हो या सिर रेखा के नीचे एक और (-) लकीर छोटी सी हो।*

3. मंगल की सहायता :-

दृष्टि के साथ-साथ या किसी भी तरह भी या खुद मंगल का उपाय या स्त्री के भाईयों की सहायता शुक्र को मंदी ज़हर से बचाएगी। यानी धन भी होगा और परिवार भी। शादी के तीन साल बाद बर्बादी होने लगेगी और नामर्दी तक हो सकती है। हाथ से वीर्यपात, एतलाम की अधिकता या गुप्त अंग बिल्कुल व्यर्थ। वीर्यपात की बीमारियां आदि से बिगड़ी हालत के समय शनि (लोहे फौलाद का कुश्ता या किसी और तरह या मछली का तेल) या चन्द्र (चाँदी का कुश्ता या किसी तरह दूध की चीज़ें) इस मर्ज़ की दवाईयों के साथ मिलाकर 4043 दिन तक ऐसे ढंग पर प्रयोग करें कि फौरन खून जोश भड़क उठना हा जाए। सोना दवाईयों में मिला भी सहायता कर सकता है जब केतु टेवे में निकम्मा न हो, वरना शनि और चन्द्र की चीज़ें ही दवाईयों में सहायता देगी। दूसरी ओर नर संतान मरती जाए या कायम ही न हो सके। 20साल शुक्र की महादशा का मंदा समय होगा। बुध की पालना सहायक होगी। स्त्री चाहे भाग्य, आय की स्वामी मालूम होती हो, मगर वह स्वयं की तबाही का कारण होगी। मंदे समय तेल का दान कल्याण करेगा। -जब खाना नं० 3 खाली हो।

शुक्र खाना नं० 12

(आड़े समय हर जगह सहायता की देवी, भव सागर से पार करने वाली गाय)

लहर माया चलती फिरा कुल ज़माना।
गया भूल क्यों फिर तू जिस घर को जाना।।

जन्म समय चाहे मिट्टी उड़ती, शादी समय पौ बारह [1] हो।
तीन गुणा नर चन्द्र उन्नति, असर भला दो मिलता हो।
राजा संबंध हरदम ऊंचा, 37 साला सुखी स्त्री हो।
नशा बैरी कुल एकदम होता, रात भली ज़र दौलत हो।
गुरु, शनि मच्छ रेखा सातवें, सुखिया औरत न होती हो।
बुध बैठा जब कायम 6 वें, परिवार सुखी औलाद का हो।
खाली मंदा सात दूजा होते, शुक्र होता सब मिट्टी हो।
तीन-छठे जब उत्तम टेवे, कामधेनु गाय होती हो।
जवान औरत बुध टेवे मंदा, रात धुएं से दुखिया हो।
राहु मगर जब साथ ही बैठा, गृहस्थ 25 तक मंदा हो।
नाम स्त्री पर दान जो देता, सेहत स्त्री ज़र दौलत हो।
मंदे मदद न जब कोई करता, लेख सहायक खुद स्त्री हो।
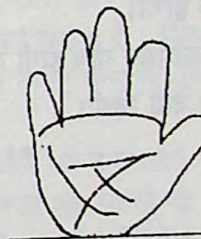
1. *बहुत ही अच्छा, उत्तम समय हो।*

हस्त रेखा :-

शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं० 12 खर्च में समाप्त होते या हाथ में मच्छ रेखा हो।

नेक हालत

1. जवानी की रात और मिले हुए आराम में चारपाई से नफरत क्यों जबकि लोगों को शिक्षा देने के लिए बुढ़ापा बहुत पड़ा है। बाबू साहिब की मंजे-चारपाई की कहानी, स्त्री की बीमारी और स्वभाव की नासाजी कभी समाप्त न होगी। स्त्री स्वयं पतिव्रता और सुखबन्ती होगी।

2. स्त्री की पूजा और प्यार करने वाली गाय माता की तरह भाग्य की मालिक होगी। जन्म समय चाहे मिट्टी उड़ती हो शादी के समय से उत्तम हालात होंगे। चन्द्र और नर ग्रहों का तीन गुणा उत्तम प्रभाव और खाना नं० 2 का प्रभाव भी उत्तम होगा या शुक्र खाना नं० 2 का उत्तम फल साथ होगा। राजदरबार हरदम ऊंचा। स्त्री का कम से कम 37 साल का सुख होगा। रात का आराम और धन का सुख होगा।
3. मच्छ रेखा मगर स्त्री स्वयं दुखिया ही होगी परिवार और संतान सुखिया ही होंगे।

–जब वृहस्पति, शनि खाना नं० 7 या आपस में साथ-साथी हो।

क्याफा

हाथ पर मच्द रेखा का निशान या हथेली के खाना नं० 12 में शुक्र के लेटे खत हो।

4. रागी, कवि और भण्डारों का मालिक होगा। उम्र बहुत लम्बी 96 वर्ष तक मर्द चाहे स्त्री।

–जब बुध खाना नं० 2-6 में और कायम हो।

मंदी हालत

1. हर मुसीबत के समय पहले उसकी स्त्री को भोगेगी, फिर उसके मर्द को कोई कष्ट होगा। ***इसलिए स्त्री का स्वास्थ्य मंदा ही होगा, यानि मर्द की जान को स्त्री और स्वयं की स्त्री की जान को उसके हाथ (औरत की ओर) से दान कराना या वैसे ही स्त्री के नाम पर गाय दान या कोई भी चीज़ दान रूप में देते रहना स्त्री के स्वास्थ्य और अपने धन की बरकत देगा। जहाँ कोई सहायता न करेगा। मंदे एवं कठिन समय उसकी स्त्री का भाग्य एकदम सहायता देकर उसे पार करेगा जब तक ऐसा व्यक्ति नास्तिक न हो या जब तक वह मालिक को याद रखे। स्त्री के अपने हाथ से शाम के समय नीला फूल (राहु की चीजें) बाहर वीराने में दबाने से सब दूर होंगे।***
2. शुक्र मंदी मिट्टी की तरह बुरा फल देगा। –जब खाना नं० 2-7 खाली मंदे हों।
3. स्त्री स्वयं और उसकी ज़ुबान और स्त्री का आराम सब के सब मंदे प्रभाव के होंगे। –जब बुध मंदा हो।
4. **गृहस्थ 25 साल की आयु तक बर्बाद, नीली गाय शुभ न होगी।**

   राहु की चीज़ों का साथ और संबंध भी मंदा ही होगा। –जब राहु खाना नं० 2-7-6-12 में हो।
5. **शुक्र गाय का साथ हर समय शुभ होगा।**

   क्योंकि शुक्र अब एक ऐसी कामधेनु गाय होगी जो बिना बच्चा पैदा किए सारी आयु अपनी स्वामी के प्यार में दूध देती रहेगी।

****

मंगल (शस्त्रधारी)

दो रंगी अच्छी ना, इक रंगा हो जा ।
सुर असुर तू हो मोम, या पत्थर हो जा ।

दान भलाई , दुनिया जितनी,	नेक मंगल खुद होता हो ।
तुख्म बदी का, बदला खूनी,	हिस्सा मं0बद लेता हो ।
मौत नमानी (मूर्खा) रास्ता तीजे,	नेक मंगल जा रोकता हो ।
मारक घर 8 दुनिया लेते,	जिसमें मं0बद बैठता हो ।
चं0रवि की मदद जो पाता,	मं0बदी ना होता हो ।
माता चं0से बेशक डरता,	मंगलीक वही घर माता हो ।
पापी[1] कोई दो, शत्रु साथी,	मं0मंदा ना होता हो ।
नेक कुलों की दूर लावल्दी,	बेड़ा गर्क बद करता हो ।

1. कोई पापी (श0 रा0 के0) या कोई दो आपसी शत्रु (बुध केतु) ग्रहों के साथ से मं0 मंदा ना होगा ।

आम हालत 12 घर:-

तेग अदल घर पडते जंगी,	मालिक लंगर लौह दूजे हो ।
शेर होता घर तीसरे कैदी,	आग समुद्र चौथी वो ।
पाँच रईस बाप हो दादा,	केतु कमी घर6 की हो ।
विष्णु पालन घर7 वे करता,	बेडी गर्क8 भाई हो ।
तख्त बना घर 9वें शाही,	राजा होता घर 10का हो ।
11 लेते जो भेस फकीरी,	नष्ट राहु घर 12 हो ।
बुध मंदे से मंदे असर दे,	शेर पले घर बकरी जो ।
घर चौथे ग्रह फैसला[2] करते,	बदी मं0या नेकी वो ।

2. तमाम शरीर के बीच का भाग नाभि(मं0 की किरणे माना, जिनसे मं0का रंग पता लग जाएगा ।

मंगल से शनि का संबंध

1. शनि नेकी और बदी के फरिश्ते, केतु और राहु दोनों ही शनि के एजेंट हैं, अत: शनि में नेक और बद दोनों ओर जाने का स्वभाव है । यह आँखो की शक्ति का स्वामी है जिसे अच्छा या खराब जैसा चाहे कर सकता है । निष्कर्ष मे सामने आये को पहचान लेना या लिखे हुए को देख कर पढ़ लेना शनि की शक्ति है । शनि तो शत्रुता नहीं करता मगर मं0 स्वयं शनि से शत्रुता करता है । मं0के घर खाना नं0 3 में शनि निर्धन, कंगाल होगा ।
2. मं0 ऐसा नेक और सीधा चलने वाला है कि जब कभी इसे बुराई तरफ जाने की उकसाहट हुई तो फिर ये पीछे ना हट सकेगा और अपनी सारी शक्ति बुराई की तरफ उकसाने वाले को ही दे देगा । यह नजर का स्वामी तो नहीं मगर नजर का प्रभाव का परिणाम इसका भाग है । किसी को नजर लग गई या नजर से ही किसी जगह बैठे हुए सैंकड़ों मील की चीज को ख्वाब की तरह देख आना इस की शक्ति है। शनि के घर नं010में मंगल राजा होगा जब अकेला मं0 या मं0 श010में हो ।

दोनों की आपसी दृष्टि के समय :-

चूल्हे में जला भाग (हाथ पर चूल्हे का निशान) एक चोर फरेबी की तरह का बना देगा और शनि नं01 और मं0नं04 का दिया मंदा फल साथ होगा ।

1 **मं0देखे शनि को :-** अब मं0की चीजें काम संबधी या मं0 स्वयं सिफर संतान से हीन होगा मगर शनि की चीजें काम संबंधित दुगना नेक और अच्छा होगा ।

2 **शनि देखे मं0को:-** दोनों डाकू एक ही नियम के मिले हुओं की भाँति दोनों ही ग्रहों का नेक और अच्छा फल होगा ।

मंगल से राहु का संबंध:-

मं0देखे राहु को तो राहु का बुरा असर ना होगा ।

राहु देखे मं0को तो बाजुओं, पेट या खून की खराबियों से जिस्म के दायें भाग में बड़ा कष्ट हो। चं0का उपाय सहायता दे ।

मंगल से केतु का संबंधः-

जब सिर्फ दोनों ही आपसी दृष्टि या मुकाबले पर आ जाए तो भाग्य के मैदान में मं0(शेर) केतु (कुत्ता) की लड़ाई की तरह भाग्य का हाल होगा, यानि दोनों मंदे होंगे। **ऐसे समय में वही उपाय सहायक होगा जो मंगल, केतु आपसी में लिखा है ।**

आम हालत

जब टेवे मे सू0 बु0 इक्टठे हों तो मं0नेक होगा अगर सू0 श0 इक्टठे तो मं0 बद होगा । खाना पीना, भाई-बंधुओं की सेवा, लड़ाई, झगड़ा शारीरिक दु:ख, बीमारियां, 20 साला आयु का समय मं0 है । सारे शरीर के बीच का भाग नाभि मं0की राजधानी और सू0की सीधी किरणों की जगह मानी है । अत: कुण्ड़ली की नाभि खाना नं04 के ग्रह मं0की नेक और बुरी हालत का पता बतायेंगे, यानि जैसे नं04 में बैठे होने वाले का असर होगा, वही हालत मं0 के खून की होगी । न सिर्फ दान इसका जरूरी पहलू और कुल दुनिया के भलाई काम और भंड़ारे खोलने की हिम्मत उसकी नेकी का पता बतायेंगे, बल्कि कुल खानदान की लावल्दी दूर करेगा । अकेला बैठा मं0जंगल के शेर समान होगा । मं0नेक अपने असर की निशानी सदा उस ग्रह की चीजों के जरिये देगा, जो कि टेवे मे उत्तम हो और उस ग्रह के अपना असर देने का समय हो और मं0 बद टेवे से मंदे ग्रह की चीजों के जरिये उसके मंदा असर देने के वक्त बरे असर की हवा का आना पहिले बता देगा । हर हालत मे मं0 के असर से एक साल लगातार और बीच के ढंग की रफतार न होगी, चाहे मं0नेक शेर बहादुर हमले की शक्ति का हो या मं0बद डरपोक हिरण की तरह कोसों ही दूर भागता हो ।

मंदी हालत

बदी का तुख्म, खून से लेना हरदम जरूरी ओर जब घी (शुक्र) और शहद (मं0 नेक बराबर के हो तो जहर मं0बद होगा । यानि टेवे सबसे पहले शुक्र और उसके बाद सूर्य का फल एक के बाद दूसरे का मंदा होगा । लेकिन अगर सू0या चंद्र की मदद मिल जाए [illegible]बद ना होगा (खाना नं04 में देखें), कोई दो पापी(श0 रा0श0 के0 या कोई दो आपसी शत्रु में (बुध-केतु, सू0श0) मं0के साथी [illegible]0 बद ना होगा । जब अपनी मार पर आयेगा तो एक का बुरा न करेगा बल्कि अगर हो सके तो कुल खानदान का ही बेड़ा [illegible]रेगा । जब बुध मंदा हो तो मं0बद और भी मंदा होगा और खूनी शेर बहादुर की बजाय बकरियों में रहने वाले पालतू शेर की [illegible]पनी असलीयत से बेखबर होगा ।

[illegible] दो रेखा < >Λ V ⊿ त्रिकोण या द्वीप की शक्ल मं0बद या मं0के बुरे प्रभाव की निशानी होगी । सिर रेखा को अपनी कुदरती हालत अगर अन्त तक बढ़ाये तो मं0मंदे के घर या खाना नं08 की हदबंदी, खाना नं06 से मं0जुदा ही हो जायेगी । शुक्र के बुर्ज नं07 की उत्तरी हद बंदी की लकीर अगर और आगे बढ़ाये तो नं08 का दक्षिण मिलेगा या यूं कहें कि स्वास्थ्य रेखा मं0 बद खाना नं08 का पूर्व होगा ।

मंगल के अपने भाई बंधु:-

मं0खाना	मंगल की आम हैसियत	टेवे वाले के भाईयों की तादाद क्या होगी
1.	इंसाफ की तलवार ।	छोटे भाईयों की शर्त नहीं मगर अकेला भाई न हो ।
2.	दूसरों हेतु पालन योग,	पैदाईश से वह खुद ही बड़ा भाई होगा ।
3.	चिड़िया घर का कैदी शेर जिसे अपनी ताकत का पता न हो ।	बहन भाई जरूर होंगे मं0की उम्र और बुध बैठा होने वाले की की खाने की गिनती के बराबर, 7 या 14 साला आयु के बाद तीन भाई ।
4.	भाई की स्त्री धनी अपनी माँ नानी सास सब पर मौत तक भारी ।	आप बेशक जन्म से छोटा हो मगर वह टेवे वाला 28 साला आयु तक खुद ही बड़ा भाई हो जाएगा । वरना उसका बड़ा भाई बेबुनियाद लावल्द या मंदी सेहत का स्वामी हो ।
5.	रईसों का बाप दादा जब तक मं0नेक हो, लेकिन जब मं0 बद तो आँख से ही तबाही करता जाये ।	खाना नं0 3 में अगर नर ग्रह = 4 भाई, स्त्री ग्रह = 3 भाई, पापी ग्रह = 5 भाई , बुध अकेला = 2 भाई ।
6.	साधू संन्यासी के स्वभाव वाला जो खुद अपना आप ही मारै।	एक अकेला ही धर्मवीर होगा।
7.	विष्णु जी, भाई की औलाद की पालना सहायक होगी ।	मच्छ रेखा या लावल्दी जब मं0को बुध का साथ मिले ।
8.	मौत का फंदा	4,8,13 बल्कि 15 साला आयु के बाद दूसरा भाई बल्कि कई बार तो एक अकेला ही रह जाये ।

9.	तख्त, शाही खजाना, भाई की स्त्री की सेवा और ताबेदारी मं0की बुलंदी की नींव होगी ।	जितने बाबे उतने ही आप भाई ।
10	अगर शनि उत्तम तो राजा की भाँति जो भाई के लिए जीवन भर सहायक होगा ।	जितने ताये चाचे उतने ही स्वयं भाई वरना मच्छ रेखा ।
11.	फकीरी भेस जो बुध और शनि की नकल करेगा यानि जैसे बु0 श0 टेवे में हो ।	फैंसला वृ0पर होगा यानि जिस घर में वृ0बैठा हो उसी घर का नं0का असर मं0का लिखा असर लेंगे और अमूमन जब वृ0नं01 से 10में हो तो 9 भाई तक हो सके, जब वृ011 में हो तो 2 भाई तक हो सके, जब वृ012 में हो अकेला ही भाई या सिर्फ एक और तथा वह भी कम सुखी ।
12.	गुरु चरणों का ध्यान रखने मगर धर्म न जाये ।	बड़ा भाई जिंदा न रहने देगा । मगर टेवे वाले के जन्म लेने स पहले उसको वाला, सर जाये बड़ा भाई जरूर जीवित हो । मगर स्त्री के टेवे में अपने बड़े भाई को तबाह करने की कोई शर्त नहीं ।

मंगल खाना नं01

(मैदान जंग ओर इंसाफ की तलवार)

अगर मं0बद तो दुमदार सितारा, बदी से दूर तो अपनी जड़ मजबूत वरना उसका खून भी पाखाना से कम कीमत देगा ।
थमे कटती तलवार शहजोर हो कितना । रूके दांत 32 ना खुद बोल अपना ।

राज ताल्लुक जिस्म[1] हो उम्दा,	*काम शनि[2] लाभ देता हो ।*
वक्त गुजरते पाप शनि का,	*वजीर जंगी[3] राजा होता हो ।*
ससुराल भाई घर अपने तारे,	*पत्थर पानी मे तैरता हो ।*
खून कीमत ना परवाना देवे,	*पुतला बदी का बनता जो ।*
बुध तीजे[4] दो मंदिर खाली,	*बहन नसीबे बढ़ती हो ।*
चंद्र रवि 2-12 साथी,	*उम्र पिता पर भारी हो ।*
चंद्र, रवि, बुध पापी साथी,	*सात चक्कर से बैठता[5] हो ।*
नेकी कर वो संसार इतने,	*मौत पराई लेता हो ।*
मं0बदी पर जिस दम आता,	*दुमदार सितारा चढ़ता हो ।*
मर्द आयु ना बेशक घटता,	*धन बुरा ही होता हो ।*
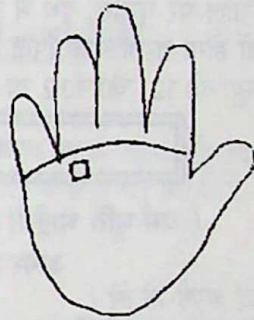
1 ससुराल के कुत्ते और आम साधू का साथ भाई की सेहत के लिए जहर होंगे।
2 लोहा लकड़ी मशीनरी या मकान के समान आदि ।
3 शत्रुओं से भगवान् की ओर से बचाव रहेगा ।
4 जब मं0नं01 और बुध नं03 दानों सोये हुए तो अपनी और भाई दोनों की किस्मत सोई हुई ।
5 मं0की उम्र 13 - 15 या कुल 28 साला आयु ।

हस्त रेखा:-सूर्य के पर्वत पर चौकोर □ हो, मं0नेक से रेखा सूर्य के पर्वत में चली जाये ।

नेक हालत

1. अकेला भाई ना होगा स्वयं चाहे वह छोटा चाहे बड़ा । दांत आमतौर पर 32 होंगे 31 दांत भी मं0नेक ही होता है, 28 साला आयु से धनवान जरूर होगा । किसी की नेकी और अपनी सच्चाई को कभी नहीं भूलता । दिमागी खाना नं08 सूर्य से मुशतरका-हमला रोकने की हिम्मत और जंगी भाग्य का स्वामी जब खुद बड़ा भाई हो ।
2. लड़ाई के मैदान की तलवार का स्वामी होगा । राजदरबार, अपना शरीर सदा उत्तम और शनि के काम और रिश्तेदार शनि से संबंधित(ऐसा व्यक्ति जो उम्र में टेवे वाले का मगर रिश्तेदारी में बड़ा या छोटा हो) जैसे कि (कोई बराबर का भतीजा, दोहता, पोता) चाचा आदि लाभ देंगे ।
3. कम से कम 28 साल अपनी कमाई या नौकरी का समय या आय अच्छे दर्जे की होगी ।
4. शत्रुओं से बचाव होता रहेगा और शनि या पाप (रा0 के0) की मियाद गुजरते ही राजा का लड़ाकू वजीर या अच्छी हालत का स्वामी होगा।
5. अपने भाईयों और ससुराल को तारने वाला बल्कि पानी में तैरने वाला पत्थर होगा, खासकर जब रंग काला हो ।

6. खुद नेक सच्चा और नेक और सच्चाई पसंद होगा । उसकी अपनी जबान का थोड़ा सा भी मंदा शब्द खाली ना जाएगा । उम्र कभी छोटी ना होगी ।
7. बहन शायद ही होगी अगर होगी तो रानी समान बुलंद भाग्य होगी मगर अपना भाई कभी शाह कभी फकीर होगा ।

-जब बुध नं03 और नं02 खाली होगा ।

मंदी हालत

1. ऐसे जन्मे चंद्र भान, चूल्हे आग न मंजेबान।
2. जिस कदर बदी से दूर उसी कदर अपनी जड़ मज़बूत होगी वरना अपने खून की कीमत पाखाना से भी कम होगी । मुफ्त माल लेने की आदत से दरबदर होगा ।
3. खानदान के लिए दुमदार सितारा होगा और निकलते ही 4043 दिन के अंदर - अंदर अपना राजा या प्रजा पर बुरा प्रभाव दिखा देगा। यानि मं0बद की आग से भरी हवा चलने लगेगी । घर बरबाद भाई बंधु संसारी फुजले (परवान) की भी कीमत ना देंगे । शनि की आयु में माता-पिता की उम्र तक भारी, ऐसा आदमी नेकी और अहसान का बदला कभी वापिस न देगा । जब बदी करने का आदी होगा तो ससुराल भाई और खुद अपनी लावल्दी तक नौबत होगी । अपनी और भाई की किस्मत सोई हुई होगी चाहे लाख हिम्मत करने वाले हो ।
4. घर 9-11 के लिए गुरु का उपाय, वृ0की चीजों को कायम करेगा और नं07 के लिए शुक्र की पालना या शुक्र की चीजों या कामों का फल शुभ देंगे । ससुराल का कुत्ता भाई की बीमारी का बहाना होगा और फकीर साधू का साथ शुभ ना होगा क्योंकि वह गृहस्थी आराम वाला नहीं होगा, 39 साला आयु के बाद यह शर्त नहीं ।

-जब बुध नं03 और नं07-9-11 सब खाली हों ।

5 पराई मौत खुद खरीद कर बरबाद होवे । खुद तलवार का धनी और नसीबे का मालिक मगर 13-15 हद 28 साला तक माता पिता दोनों ही की सब हालत बल्कि आयु तक मंदी बरबाद ही लेंगे । -जब नं07 में सू0या चं0या वृ0के साथ बुध पापी हो।

6 मुफ्त के माल या खैरायत के माल पर गुजारा, दूध में जहर होगी । खुद की किस्मत जलती होगी और जिस्म में खून की जगह पानी होगा । आलसी, निर्धन, दुःखी होगा वरना माता पिता के लिए मनहूस मंद भाग होगा। टेवे वाले की छोटी उम्र में ही माता-पिता चल बसेंगे । -जब सू0 नं0 12, चं0 नं0 2 या सू0 नं0 2, चं0 नं0 12 हो ।

मंगल खाना नं02

(धर्म मूर्ति भाईयों की पालना करता हुआ, लौह लंगर का मालिक, अगर मंगल बद तो आस्तीन का साँप)

गिरे नजर से भाई अपने जो तेरे ।
पहाड़ा दो दूनी[1] का दो तुझ को घेरे ।

1. दो दूनी = 2 X 2 का जवाब 2 ही होगा, कभी चार ना होगा, यानि तरक्की की उम्मीद ना हो ।

बड़ा भाई खुद आप ही होगा,	*वरना बड़ा खुद बनता हो ।*
रिजक दौलत हो [1]साथी सभी का,	*अपनी शर्त ना करता हो ।*
दहेज स्त्री से हरदम फलता,	*दौलत राहु से पाता हो ।*
शत्रु जहर बद मं0मरता,	*लड़ाई में जा मरता हो ।*
साथ हकूमत लाखों पाले,	*गाँठ ना अपनी बांधता हो ।*
लावल्द कभी ना दो घर[2] होंगे,	*शर्त कबीला पालता हो ।*
गुरु, रवि, बुध, शनि हो मिलता,	*8,9वें 1012 जो ।*
सारी उम्र गुजरान हो उत्तम,	*शत्रु असर ना मिलता जो ।*

1 दूसरी को पाले तो बढ़ता जाये वरना घटता जाए ।
2 खुद अपना और ससुराल का घर ।

हस्त रेखा :- गृहस्थ रेखा वृः के बुर्ज में जा निकले।

नेक हालत

1. जन्म से खुद बड़ा भाई होगा, वरना खुद बड़ा बनता होगा। भाईयों से उसका भाईपन न रहेगा , लौह लंगर का स्वामी, जब खुद बड़ा भाई हो, अपने जाती खून, भाई बन्धुओं को पालता हुआ, खुद कभी तंग दुःखी, भूखा न मरेगा, बल्कि लौह लंगर हर वक्त बढ़ता ही होगा। वरना उसकी दो दूनी चार की बचत दो ही रहेगी कभी चार ना होगी।

2. खासकर मं:, मं: बद की तबीयत का हो या यूँ कहें कि साथियों की जरुरत के लिए जिस कदर भी माया दौलत की जरुरत असली हो हर समय मिलेगी खुद अपनी शर्त ना होगी। - जब मं0 खाना नं0 2 कायम हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा मं0के बुर्ज नं0 से उछलकर वृ0के बुर्ज नं0 2 में खत्म हो।

3. ससुराल राहु की चीजें या संबंधियों से धन पायेगा, इरादे का पक्का, हकूमत का इच्छूक, स्त्री का लाया दहेज फले, पर कभी लावल्दी ना होगी। ससुराल घर सदा बरकत होगी और वो हर तरह से सुखदायी होगें, जब तक ससुराल में चन्द्र की चीजें काम संबंधी या कुँआ आदि कायम हो। - जब मं0 में बुध या केतु का किसी तरह से भी असर ना मिलता हो।

क्याफा

चौकोर हाथ उंगलियों के सिरे चौड़े हो।

4. खुद बना अमीर होगा। धन अपने आप जमा होता जाएगा। सारी आयु हर तरह से सुखी। अच्छा खाना, पहनने वाला, शक्तिशाली शरीर, जरुरत के समय पैसा हर वक्त हाजिर, आय चाहे हो या ना हो गरीबी तंगदस्ती कोसो दूर भागे। - जब 8-9-10-12 में से वृ0, सू0, बु0 या श0 का प्रभाव मिल रहा हो सिवाए बुध नं0 2 के।

क्याफा

उंगलियों नाखून वाले सिरे की तरफ से गाजर की तरह मोटी होती चली जाए और बाहम मिलाने पर उनमें कोई सुराख नजर न आवे।

5. ऐसी ग्रह चाल के वक्त अगर बुध के काम, संबंधी या चीजे जो नं08-9-1012 से संबंधित हो तो उनकी जहर से खून मंदा और इरादा कच्चा होगा। - जब बुध नं0 2 हो।

6. खुशनसीब हाकिम जिसको कल की फिक्र नहीं। - जब केतु का साथ हो।

मंदी हालत

दूसरों के लिए छाती का सांप और स्वयं अपनी मौत लड़ाई झगड़े में जंग में अचानक हो। - जब मं0 बद हो।

मंगल खाना नं03

(लोगों के लिए फलों का जंगल मगर अपने आप की माया और आराम में सब्ज़कदमा, मं0बद चिड़िया घर का शेर)

झुकी सर कलम कटती तलवार तिरछी,
पड़ा खम ना जालिम पकड़ तेग जिस ली।

एतबार मं0न तीजे गिनते, नेक मिला [1] बद मं0हो।
शेर दहाना बैठक होवे [2], तदबीर जंगी सब कामल हो।
चं0रवि 9--11-7 वें, नेक मं0खुद होता हो।
उल्ट गुरु बुध जिस दम[3]होवे, जहरी मं0बद बनता हो।
असर मन्दा ना राहु टेवे, सुखी गृहस्थी होता हो।
ऐयाश भोगी सब ठनठन होवे, मंगलीक टेवे जब बनता हो।
शनि टेवे में 9 जब होवे, मौत बीमारी बचत हो।
महल, मकानां सब कुछ उत्तम, शनि असर शुभ देता हो।
तरम तबियत इकदम बढ़ता, मौत आई तक रोकता हो।
उल्ट गरम हो जिसदम चलता, ज़ेरजारी[4] दुख भोगता हो।
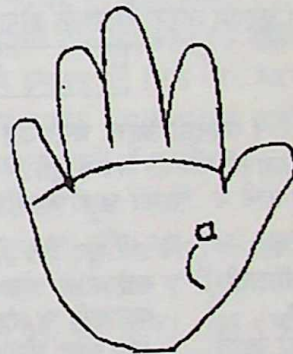
1 राजा वरना फोकी ठन-ठन।
2. बाकी 3 बचने वाले मकान का भाग्य होगा।
3. अब बुध खाना नं03 और वृ0खाना नं011 को नेक ही होकर रहना पड़ेगा।
4. पानी के नीचे।

हस्त रेखा:- मं0नेक पर चौकोर या गृहस्थ रेखा मं0नेक के अन्दर अन्दर खत्म हो

नेक हालत

1. भाई बहन जरूर होंगे चाहे छोटे या उनसे बड़े हो। असल में मं0 का असर शक्की होगा, लोगों के लिए तो वह फलों का जंगल मगर अपने लिए चिड़ियाघर का पिंजरे में पकड़ा कैदी शेर होगा, जिसे अपनी बहादुरी काा पता न होगा। लेकिन जब उसके मुंह खून लग जायेगा तो वह फिर सर खून चढ़ने से न ड़रेगा विशेषकर जब वह स्वयं बड़ा भाई हो। अगर मं0नेक हो तो आरजुओं को तारने वाला

शिवजी की तरह भोला भंडारी। अगर उसकी बैठक का मकान शेर दहाना हो तो वह व्यक्ति लड़ाई की तदबीर का बुद्धिमान पुरुष होगा। नरम तबीयत हो तो तरक्की दिन प्रतिदिन होती जायेगी। आयु 90साल हौंसला और नजर उत्तम और तीन बचने वाले मकान के भाग्य का स्वामी होगा। शेर समान होगा और बुरे लोगों को मारने वाला होगा, मगर सांसारिक व्यवहार में मित्र और सहायक होगा। ससुराल अमीर होंगे या उससे अमीर हो जायेंगे। उसको धन का हिस्सा देंगे इसका अर्थ यह नहीं कि उनका लड़का नहीं होगा तो धन देंगे। वह वैसे ही धनी होने पर धन देंगे वह किसी पर ज्यादती होते नहीं देख सकेगा। दिमागी खाना नं017 वृ0से मुश्तरका अदल व मुंसिफ मिजाजी।

—जब वृ0 सू0 चं0नं07, 9, 11 हो।

2. राहु का टेवे में बुरा असर न होगा सुखी गृहस्थ होगा। —जब वृ0खाना नं09 में हो।
3. ससुराल अमीर होंगे और दौलत देंगे।
4. मौत बीमारी से बचाव, अच्छा स्वास्थ्य, मकान, धन में हर तरफ सुखी और शनि का उत्तम फल होगा। —जब शनि नं09 हो।

मंदी हालत

1. चालबाज धोखेबाज होगा। खाना पीना लाभकारी चीज हे इसदम का क्या भरोसा कि कौल का आदमी होगा। फोकी ठन ठन एयाश गरीब शाह होगा। उम्र 90साल सब्जकदमा (मनहूस हालत) अगर अकड़ खाँ रहा तो मृत्यु बीमारी से तंग और कर्जे के बोझ के तले रोता हुआ। सिर छोटा, पेट मोटा, खून खराब होगा। नर संतान की मंदी हालत होगी जिसका नतीजा भी भला ना होगा।
   —जब मं0बद हो या बद होरहा हो।

क्याफा

मं0नं03 का बुर्ज चर्बी से भर कर इतना मोटा हो जाए कि मं0, शु0, वृ0 के बुर्ज जुदा-जुदा ना दिखे।

2. संबंधियों की मौतों से दुखी मगर अपने लिए उत्तम हो।
   —जब वृ0खाना नं011 में हो।
3. जब मं0बद या मंदा हो तो आ बैल मुझे मार के मंदे परिणाम मगर उसकी स्त्री के खानदान को मदद मिलती रहे। हर तरफ मंदा हाल
   —जब वृ0या सू0या चं0नं07, 9, 11 हो।
4. घरबार में माली खराबियां मगर कुण्डली वाले के खानदान को मदद मिलती रहे या देता रहे जब शनि नं011 हो तो कुदरत की तरफ से मौत आदि ना होगी।
   —जब बु0या श0नं03-11-9 या बु0श0दोनों नं03-7 हो।

उपाय हाथी दांत का कायम करना सहायक होगा।

मंगल खाना नं04

(जलती आग, बदी का सरदार जलाने पर आये तो मर्द माया के समुद्र भी जला दे)

पकड़ हौंसला तो मुसीबत सब कटती,
मगर लेख उल्टे में हिम्मत ना हो बनती।

चं0मुट्ठी बंद बाहर नष्टी, रवि छटे खुद बैठा हो।
मदद ग्रह नर चंद्र मिलती, बदी मं0मा होता हो।
बुध केतु 8,4 या 3, मदद रवि ना चंद्र हो।
मं0बदी मंगलीक हो जलते, आग समुद्र मंदिर हो।
गुलजार भरा जो कबीला अपना, 28 भस्म जो करता हो।
माता नानी और सास जनानी, मौत चारों की मांगता हो।
6वें चंद्र बुध माता मंदी, परिवार पापी 9 मंदा हो।
अकल 12 बुध टेवे मारी, पेट जला खुद दुखिया हो।
किसी जगह 8,4 या 3, मं0 टेवे खुद बैठा हो।
बाकी घरों बुध केतु आये, जहरी मंगल बद बनता हो।
लकड़ी खुश्क से आग बनाना, काम शनि का होता हो।
मुर्दे सुखा कर चूल्हा जलाना, राख मं0बद करता हो।
बैठा सामने शनि के जलता, कोसों मं0 बद फूँकता हो।
नज़र गैबी दो मालिक होता, आकाश पाताल में देखता वो।
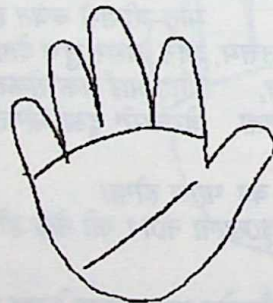
पढने लिखने की शक्ति दृष्टि, मालिक नजर शनि होता हो ।
पहाड़ फटे जब नज़र से उसकी, असर नजर बद करता हो ।
राहु सवारी नेक मं0 की, मील लाखों से देखता जो ।
बैठे-बिठाये अकल जो करती, मं0 देखने की शक्ति देता हो।
राहु होगा बुनियाद दोनों की, बुरा भला हो जब कोई दो ।
नेक हालत में मदद दे शिवजी, विष्णु पालन खुद करता जो ।
गुरु रवि 8 चंद्र बैठा, 4,9,3,11 जो ।
उत्तम असर दूध सागर देगा, दांत सुबह पानी धोता जो ।

1. खाना नं03, 4, 8 में मं0 होने वाला घर छोड़कर बाकी किसी दो घरों में ।

हस्त रेखाल:- श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ रेखा चं0से शुरू होकर मं0नेक पर समाप्त हो ।

नेक हालत

1. मं0बद न होगा बल्कि जहर के बदले दूध का उत्तम असर देगा । शरारत के बदले ठीक जवाब देने की हिम्मत का स्वामी, कबीले को पालने वाला होगा, दिल का साफ और सरल, सच्चा । -जब
अ. कोई दो पापी इक्ट्ठे मुश्तरका हो (श0 रा0 या श0के0) या दो बाहम शत्रु ग्रह (बुध, केतु)।
ब. चं0या शुक्र अकेले या मं0के साथ मुश्तरका खाना नं03-4-8 में हो, तो खुद उनका अपना असर बेशक कुछ ही और कैसा ही हो मगर मं0को मंगलीक या मं0बद न होने देगें।
स. जब चं0खाना नं01-4-7-10से बाहर किसी जगह नष्ट हो रहा हो या सू0नं06 या मित्र ग्रह (सू0 चं0 वृ0 नं03-4-8-9 में हों यानि मित्र ग्रह (सू0 चं0, वृ0) मं0 को मदद दे रहे हो तो मं0बद ना होगा।
नीचे लिखे हालतों में मं0 को सूर्य की मदद ना होगी:-
1. जब खाना नं01-8 में मं0 के साथ सू0ना हो ।
2. जब खाना नं07-10 12 में सू0 अकेला हो, या सू0 नं0 5-9 के साथ केतु हो या सू0 6-12 के साथ राहु हो। या सू0नं07 शुक्र हो या सू0नं0 10के साथ शनि हो या सू0 नं012 के साथ बुध हो।
2. भाई की स्त्री, दबी दौलत उत्तम शुभ होगी। बड़े भाई की ओर या उनकी औलाद पर कोई बुरा असर ना होगा। - जब मं0नेक हो।

मंदी हालत

1. **मोती भरे समुद्र ना लेख घर का जलता। माता शिकम के अंदर जो पांव तू ना धरता।।**
2. 32 दांत वाला तो बुरा बचन कह कर किसी का बुरा करेगा, मगर मं0बद या मंगलीक तो नज़र से ही तबाह करता होगा। उजड़े जंगल में उखड़े हुए या कटे हुए सूखे वृक्ष की लकड़ीयों से चूल्हा गर्म करना शनि का काम होगा, मगर बसे घराने से मूल्यवान और आवश्यकता वाले पुरुष को काट कर उसकी सुखाई गई लाशों से भट्टी जलाना मं0 बद का काम होगा।
3. मं0बद का मालिक ऐसे घर में जन्म लेगा जहां कि एक दो पुश्त पहले कोई बुजुर्गी पूरा वृ0(ब्रह्मगुरु) खालिस सोना या शाहाना हो चुका हो और हर तरफ पूरा हरा बाग़ लहराता और हर तरह से मालिक की नजरे इनायत हों, जिसे ऐसा बदनसीब बरवाद कर सके। उजड़े खानदानों और वीरान घरों में कभी मं0 या मंगलीक पैदा ना होगा। ऐसा व्यक्ति अमूमन सख्त कड़वा स्वभाव, अकड़ खां, एय्याश स्वभाव कम अकल हुआ करता है कोताह अन्देश और तकरीबन सारी आयु गुलामी में गुजार देगा। खुद मियाँ फजीहत औरों को नसीहत करने वाला होगा। मुंह फाड़ कर हरेक को उसके खिलाफ या ऐब की बातें सुना देगा।
4. बेमुहार ऊंट की तरह गर्दिश का घुमने वाला, बुरी नजर वाला, काला, काना, लावल्द आँख का नुक्स चालीस चंद्रा । हर तरह से मंदा, हर समय जलती आग और बदी का सरदार होगा। समुन्द्र को आग से जला देने वाला या ऐसी आग जो पानी से बुझने की बजाय ही सारे समुन्द्र को तह तक जला दे। खुद मां, सांस, नानी, स्त्री की आयु तक भारी होगा। भाई (बड़े) की स्त्री, दौलत और छुपे धन पर 28 साल आयु तक हर तरह से मंदा असर देगा। अगर किसी कारण से बड़े भाई जीवित हो तो वह लावल्द या मुर्दे के बराबर तंग होने या मन्दी सेहत के स्वामी होगें।
5. मं0बद के प्रभाव को नीचे लिखी हालते और भी मन्दा कर देगी:-
अ. जब मकान की तह जमीन के 8,18,13,3 कोने हो या मकान के अंदर तहखाना बंद किया हुआ या तहखाना फाड़ कर कुए के साथ मिलाया हो ।
ब. दरवाजा दक्षिण में हो या घर से बाहर निकलते वक्त आग दायें और पानी बायें या मकान रिहायश के ऊपर वृक्ष का साया या कीकर या बेरी का वृक्ष सहन में या पिछली दीवार के साि लगता पीपल का कटा हुआ रुंड मुंड वृक्ष साथी या सामने साथ ही लगता हो ।
स. घर के दायें बांये भड़भूंजे की भट्टी या आग के काम या मकान के अंदर कब्र या साथ लगता कब्रिस्तान हो ।

द. संतान रहित की जगह लेकर बनाया गया मकान या कूंए (चाहे पानी वाला या खुश्की) पर छत ड़ालकर बनायाा गया मकान हो या ऐसा मकान जिससे आम रास्ते में से आ कर हवा सीधी टकराने वाली हो, घर से निकलने का बड़ा रास्ता दक्षिण को हो।

6. जब भी एय्याश स्वभाव हो कम अकल होगा, उम्र भर गुलामी में गूजारे, क्योंकि वह कोताहअंदेश होता है।
7. खाना नं0 8, 4, 3 में सू0, चं0, वृ0 ना हो या सू0 या चं0 या वृ0 की मदद न हो और सू0, वृ0, चं0 भी हो लेकिन अगर शनि या केतु (मंदी हालत) का साथ हो जाये तो भी मं0 बद ही होगा और मं0 बद मंगलीक की आग जोर पर होगा, जिससे घरबार, धर्म और पानी के समुद्र की तरह माया दौलत के सब खजाने जलते जायें। बुध, पापी ग्रहों की चीजें, संबंधी या काम बुध से संबंधित और पापी ग्रह बरबाद हों या करें। जब अकेला मं0 हो और मं0 8, 4, 3 में से किसी एक घर मं0हो और बाकी दो में बुध केतु हो तो मं0 बद होगा जिसके समय पतिहीन औरतें और अपना की कबीला बरबाद करे।
8. **हर खाना नं0के लिए मंगल बद के हाथ की शक्ले :-**

किस्म	खाना नं0	प्रभाव
मं0बद	1-8	अपनी जान और खून के संबंधियों पर बुरा होगा या सिर्फ धन दौलत पर मंदा हो। जब केतु मंदा हो खाना नं0 8 का मंगल बद सिर्फ धन दौलत के मंदे स्वपन दिखाएगा, दोनों ही घरों पर मंदा हो अपने और दोस्तो, संबंधियों पर एक ही समय मंदा होगा। क्याफा :- सेहत रेखा मंगल बद को।
मं0बद	2	अपनी जान और खून की संबंधियों की औरतों की जान पर मं0बद, जब शनि मंदा हो।
मं0बद	5,9,12	अपने और खून की संबंधियों की जानों पर मंदा हो।
मं0बद	5,9,12	दूसरों पर मंदा हो जब बुध मंदा हो।
मं0बद	6,1011	दूसरे पर मंदा हो सिर्फ धन दौलत के लिए।
मंगलीक	7	दूसरों की स्त्रियों की जानों पर मंदा, जब शनि मंदा हो।
मंगलीक	4	अपनी ही स्त्रियों, मां, सास, जनानी पर मंदा जब शनि मंदा हो।

9. मं0 नं04 का मंगलीक माल व जान व धन व परिवार दोनों तरफ से मंदी आग होगा। मगर सिर्फ एक ही घर बरबाद हो। मंगलीक (सिवाय 8, 12) वो अपनी 28 साला आयु तक बड़े भाई कोले मरे या अगर जिंदा तो लावल्द कर यादे या उसके बाजू बरबाद हो जावें। मं0 नं0 8 साला आयु तक अपने छोटे भाई और मं0 12 वाला 28 साला उम्र तक अपने बड़े भाई पर मंदा होगा।
10 70साला उम्र तक अपने वंश (जिसमें जन्मे) पर मंदा, उसके बाद 70 साला उम्र आने पर दूसरे वंश (बाप, दादा के संबन्धी) पर मंदा हो आखिरी उम्र में अंधा और सेहत में दुःखी होकर मरे।
11.बुध तायी चाची होगी। अपने घर की जहर बरबाद करती होगी जो ये बुध होगी। -जब बुध केतु नं08।

क्याफा

हाथ पर मंगल के पर्वत 8 पर लेटे खत।

12.बरबादी के लिए अपने ही घर की जहर होगी जो प्राय कोई ताया चाचा होगग 7

-जब शुक्र या मंगल से कोई 4-8 में हो।

इन हालतों में विधवा चाची ताई व विधुर चाचा, ताया की आशीष लेते रहना मदद दे।

13.मंगल बद के वक्त एक तरफ मं0 और दूसरी और मं0 की दृष्टि में नर ग्रह हो तो खून के संबंधियों पर (हकीकी पर) मंदा हो। यदि स्त्री ग्रह हो तो स्त्रियों को बरबाद करे या खुद टेवे वाले पर मंदा। यदि ऐसी हालत में सख्त या पापी बुध, पापी ग्रह की चीजों का फल बरबाद हो या बरबाद करे।
14.अपने लेख में सूखी घड़ी तंग हाल, भाईयों से अलग दुःखी, जिस वृक्ष के नीचे बैठे वह जड़ से उखड जाये या जहरीले साँप की तरह औरों को भी बरबाद करे। आवाज ढोल की तरह बुलंद होगी। -जब शत्रु ग्रहों का साथ हाथ पर मंगल का चिन्ह हो।
15.छोटी उम्र में माता की उम्र तक मंदा साबित हो। जुबान की बीमारी और चोरों का शत्रु होगा।

-जब बुध या चन्द्र नं06, शनि के साथ मं0बद हो।

क्याफा

उम्र रेखा चंद्र के बुर्ज पर आखीर में त्रिकोण बनावे।

16.अपने परिवार के लिए मंदा साबित हो।

-जब पापी नं09 हो।

17.दु:खों से मारा हुआ बेवकूफ तंग, अंदर के जलते हुए खून से तड़फता फिरे। -जब बुध नं0 12 में हो।
18.कायर, दरिद्र हो। -जब वृ0नं0 8 में हो।
19.चोर, फरेबी, चूल्हा की भांति मंदा हाल। -जब शनि नं0 1 हो।

उपाय

हर रोज पानी से दांत साफ करना, चन्द्र का उपाय या बढ़ (बरगद) के वृक्ष को दूध में मीठा डाल कर चढ़ावें, गीली की हुई मिट्टी का तिलक पेट की खराबी को दूर करेगा। आग की घटनाओं पर छत पर खांड की बोरियाँ, घोड़े के मुंह में देसी खांड, शहद में मिट्टी का बरतन भर कर शमशान में (लावल्दी के समय या और संतान की बरबादी), मृगछाला (लंबी बीमारी से छुटकारा), चाँदी चौकोर की मदद देगा। दक्षिणी दरवाजा लोहे से कील देवे। काले, लावल्द, काने, ढाक के वृक्ष से दूर रहे। सूर्य (तांबा, गुड1, गेहूं), चन्द्र (कुआं, घोड़ा, चांदी), वृ(सोना, बुजुर्ग, साधू) को कायम करे, चिड़े-चिड़िया को मीठा डाले, हाथी दांत पास रखना मदद देगा।

मंगल खाना नं05

(रईसो का बाप दादा यदि बद तो शरारती, जद्दी घर से बाहर लगातार रहना लावल्दी ही देगा)

भरा सुख से सागर, जहाजो का बेड़ा।
खुश्क दम में करदे, न महबूब तेरा।

बाप दादा [1] वो रईसां होगा, नींद पूरी [2] न सोता हो।
योग दृष्टि ऐसा बदला, नजर तबाही बद का हो।
नेकी बदी 5 ताकत गिनते, चं0 भला नेक शुक्र हो।
3-9 चाहे दुश्मन बैठे, बाहमी मदद ही करता हो।
तकलीफ पीछे आराम हो मिलता, जन्म [3] औलाद से बढ़ता हो।
रात सिरहाने पानी रखता, राहू मन्दा नहीं होता हो।

1. जब नं010 खाली।
2. जब नं0 9 और 10 दुश्मन हो।
3. जब मं0 जागता हो या मन्दा न हो और नं0 10 खाली हो।

मंगल के शेर की दृष्टि:-

शेर से डरे हुए जानवरों की तरह सब ग्रह बुराई या मंदा असर करने के वक्त अपनी दृष्टि बदल लेंगे मगर बाहमी दोस्ती दुश्मनी बहाल होगी और चं0 शुक्र सदा ही नेक ही फल के रहेगें, आपसी दोस्ती-दुश्मनी सबकी नियम के मुताबिक होगी।

दृष्टि बदली	कौन देखगा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	किस फर को	12	वा-दस्तूर	नेक होगा	3	4	7	10	9	नेक होगा	11	वा-दस्तूर	वा-दस्तूर

हस्त रेखा

मं0नेक से शाख जब सेहत रेखा को काटे।

नेक हालत

1. खाना नं0 3 के ग्रह अब मं0 के आधीन और खुद मं0 नं0 9 के ग्रहों चाहे मित्र चाहे शत्रु पर मेहरबान होगा या 3-5-9 सब के ग्रह अब आपस में सहायक होगें और शुक्र और चं0 चाहे टेवे में कैसे ही हो नेक फल देगे। मं0की नेकी और बदी हर दो कामों के लिए 5 गुणा शक्ति होगी। नीम का वृक्ष जिस कदर बूढ़ा होवे उससे ऐसी कीमती पानी निकले जो हजारों दवाईयों के काम आये। इसी तरह ऐसा व्यक्ति जितना बूढ़ा उतना अमीर होता जाये।
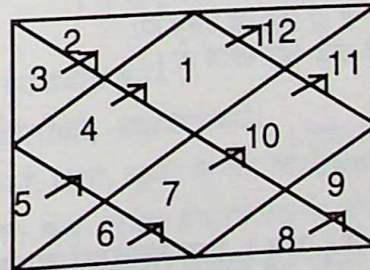
2. संसारिक कामों में न्यायप्रिय होगा, जिसका फैसला खाना नं0 3 से होगा, खुद या खानदानी हकीमी या डाक्टरी का जरूर संबंधित होगा।
3. दृष्टि बदली हुई होगी सिर्फ उस वक्त जब कोई भी ग्रह मन्दा होने या बुरा करने की हालत पर हो रहा हो। मसलन चं0 जब अपने पानी से तूफान लाये या कुआं गर्क होने लगे तो 8 का चन्द्र, नं0 5 मं0 के समय अपना बुरा असर खाना नं0 9 या अपने माता पिता पर करेगा उस वक्त जबकि वह खुद अपने बड़ों के नाम पर श्राद्ध दूध की खैरायत बन्द करे तो उसके माता-पिता को दमा मिरगी संतान रहित मिलेगी।
4. वह विद्वान तथा संतान वाला होगा। स्त्री और संतान सुख होगा। उसके बुजुर्ग चाहे कैसे हो मगर वो और उसकी संतान के लिए हर गुजरी हुई पिछली घड़ी शुभ और कष्ट के बाद आराम देने वाली होगी संतान नेक और सुख देने वाली होगी मगर ख्याल रहे कि सुख की नदी सिर्फ खूबसूरत पर ही ना खर्च होती जाये। रईसों का बाप और दादा होगा (बच्चे पोते रईस हो)।
5. संतान के जन्म दिन से बढ़ेगा जब मं0 जागता हो और मन्दा न हो यानि खाना नं0 9 में कोई न कोई ग्रह जरुर हो या बड़ा भाई कायम हो और नं010खाली हो।

मंदी हालत

1. मंदे असर का वक्त जब कभी भी होगा, रात होगी, जिसकी निशानी केतु से संबंधित चीजो से पर होगी शरारती नजर से तबाही करता होगा।
2. आग का डर खतरा तथा नजर का डर होगा। संतान का सुख कम होगा, सफर गले लगे रहेगा और औलाद को अठारा [1] की बीमारी। माता-पिता के भाई-बन्धु पुरुषों की मौतें। अपने भाई की संतान की मौतें, मगर स्त्री, लड़की भाभी या किसी भी स्त्री जाति की मौत ना होगी। करीब संबंधियों पर बुरा असर हो। अपने जद्दी घर घाट से लगातार बाहर रहना लावल्दी देगा।

   1- अठारा संतान का हर आठ अंक या 18 पर गुजर जाना यानि 8 दिन, 8 साला और आखरी हद 18 साल की आयु पर गुजर जाना।
3. तेरा महबूब ही तेरे जहाजों के बेड़े की तबाही का कारण होगा।
4. रात की पूरी नींद नसीब न होगी जिसके लिए रात को सिरहाने पानी रख कर सोने से मं0बद और राहू की मंदी शरारतों से बचाव होता रहेगा। - जब नं0 9-10 में शत्रु (बुध, केतु) हो।

मंगल खाना नं06

(तरसेवें की औलाद, संन्यासी साधू, अगर मंगल बद तो फसादी)

बजे नाम लड़के पे बाजा जो शादी ।
ग़मी देर करती ना उस जगह पे आती ।

न कमी[1] औलाद माया,	*ना ही दुखिया बाप हो ।*
भाई बंधु होवे सुखिया,	*बढ़ता जिस दम आप हो ।*
वरना	
वही हो शिव शम्भु,	*गिरा[4] कोठे लगा तम्बु[2]।*
केतु शुक्र बुध चंद्र जाती,	*मंदा जानो पर होता हो ।*
रवि बैठा चाहे टेवे रद्दी,	*असर भला वो देता हो ।*
गुरु रवि या हो बुध मंदा,	*संतान होती नर एक ही हो ।*
शुक्र भला हो 7 हो उम्दा,	*फलती नस्ल तीन पुश्तो हों ।*

खुशी[3] संतान ना हरगिज फलता, ना ही दिखावा उत्तम हो।
जिस्म पे उनके सोना आता, दुखडे खड़े और मातम हो ।
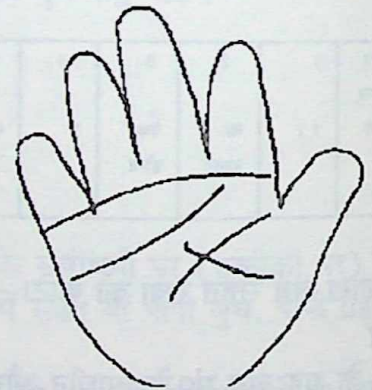
1.जब जागता तथा कायम हो ।
2.शनि(जाति गृहस्थ), बुध(भाई) की मदद ।
3.जब केतु मंदा हो तो 34 साला उम्र तक ।
4.मकान गिरा कर तम्बू लगा दे ।

उपायः- बुध चंद्र द्वारा संतान (केतु-शत्रु), चालचलन का उपाय सहायता देगा ।

हस्त रेखाः- मं0नेक से रेखा आयत खाना नं06 में समाप्त हो ।

नेक हालत

1. हिम्मत से भरा हुआ पाताल और पानी में भी आग जला देने की शक्ति का स्वामी, कबीले का रक्षक, खुद हाकिम तथा संसारी न्यायप्रिय हो । साधु संन्यासी की तरह अपने आप मारने वाला अकेला ही धर्मवीर होगा।
2. सूर्य अब टेवे में कहीं भी कैसा भी बैठा हो उत्तम फल देगा । बुध के कारोबार दोस्ती तथा लिखाई की विद्या, राग विद्या, बोलना-चालना व्याख्यान आदि का शौकीन व मस्ताना होगा । कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी जो लिख देगा वह मिटाने पर भी न मिटेगा । अपने चाल चलन पर पूरा काबू होगा। राहू का अब नं0 12 में कोई मंदा असर ना होगा वरना मगर केतु शक्की ही होगा ।
3. जिस दम खुद बढ़ेगा बड़े भाई और दूसरे साथी बढ़ेगें जिसके सबूत में अनाज भरने की कच्ची मिट्टी की कोठियां 14 साला आयु तक कायम होगी। वरना वह गिरा कोठा लगा तम्बू तैसा हाल हो। जाती गृहस्थ के वास्ते लडकियों की पूजना, भाईयों की मदद, माता द्वारा बुध की पूजा यानि लड़कियों और केतु और शत्रु से बचाव का उपाय सहायक होगा । -जब मं0 जागता हो या कायम हो ।
4. पोते-पड़ोते देख कर मरे तीन पुश्त तक औलाद की बरकत और परिवार बढ़े ।
   -जब शुक्र भला या नं0 7 उम्दा या नं0 7 में श0 बुध, केतु हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा अंगूठे की तरफ झुक जावे।

5. संतान की कोई कमी ना होगी बल्कि संतान उत्तम ही होगी, 24 साल संतान होती रहे । -जब वृ0, सू0, बु0 उत्तम ।
6. संतान के लिए मंदे मगर गुरु, सू0 और बु0 उत्तम होने पर संततान का परिणाम नेक होगा । -बेशक के0 नं0 8, श0 नं0 5 हो ।

मंदी हालत

1. खुशी के बाजे से मातम की आवाज क्यूं आने लगी । जिस जगह बैठकर संतान के नाम पर खुशी की महफिल करता होगा वहीं ही कुछ दिन के अंदर मातम के आंसू बहाता होगा । उसके भाई उससे माली हालत में कम होंगे अगर किसी तरह अच्छी हालत के हो गये हों तो भारी हानि देखें, अतः उसके भाईयों को चाहिए कि वह मं0नं06 वाले भाई को कुछ न कुछ दे रहें जिससे कि उनका बचाव होता रहे । अगर वो भाई ना लेवे तो चलते पानी में ऐसी चीजें जो कि वो उसको देना चाहे वहाँ दें ।
2. केतु (मामों, संतान): शुक्र-स्त्री भाग्यु(स्त्री नहीं): बुध लड़की, बहन, बुआ: (चं0) दूध वाले पशु माता: केतु, शु0 बु0 चं0चारों ग्रहों से संबंधित रिश्तेदारों की जानों पर मंदा होगा। स्वयं झगड़ालू पर नर संतान की कमी करने वाला । मामें दुखी या बरबाद, तरस के ली हुई संतान ।
3. नर संतान सिर्फ एक लड़का हो, मगर लावल्द न होगा । -जब गु0, सू0, बु0 मंदा हो ।
4. 34 साला आयु तक संतान जरूर कायम होगी । संतान की खुशी मनाना संतान की मंदी हालत की निशानी होगी । पहला लड़का शायद ही कायम रहे अतः मिठाई की जगह नमक की चीजे बाँटना शुभ होगा । संतान के शरीर पर सोना डालना भी उनके लिए जहमत डालना होगा । जब तक शरीर पर सोना न डालेगी, सोना कमायेगी, सोना डालने पर सोने को खाक में उड़ायेगी ।
   -जब केतु मंदा हो ।
5. बहन भाई कम होंगे, दुख का बहाना हो । -जब बुध नं0 12 हो ।
6. माता छोटी उम्र में चली जाए । -जब बुध नं0 8, सू0,चं0 की मदद हो ।
7. पहिले खुद छोटी उम्र में गुजर जाये, बाद में माता भी गुजर जाये । -जब बुध नं0 4 हो ।

उपाय

1. *खुद अपना गृहस्थ मंदी हालत में होने के समय शनि का उपाय करें।*
2. *भाईयों की मदद के लिए लड़कियों की पूजा तथा आशीर्वाद सहायता करे।*
3. *संतान के लिए चं0(माता, दूध, चांदी), बुध (लड़की, बहन, बुआ, फूफी, मासी) का उपाय ।*
4. *चालचलन की मजबूती लंगोटे का यतिपन, निर्धनताः केतु-देरवेश मिट्टी उड़ती और तूफानी हालत के घर जन्म का होते हुए भी समय का शेर बहादूर और शत्रुओं को पांव तले दबा लेने की हिम्मत का प्राणी होगा ।*

मंगल खाना न07

(मीठा हलवा, विष्णु पालना अगर बद तो मनहूस)

मिलेगा सभी कुछ, जो दरकार घर में ।
शर्त सिर्फ इतनी, दोबारा न तलबे ।

शान मकानां सब कुछ उत्तम,	*धन दौलत परिवार ही सब ।*
सब का सब ही रद्दी होगा[3],	*बुध[1] मिले मं0 से जब ।*
बुध शनि घर 6-7 बेटे,	*मौत पराई लेता हो ।*
बुनियाद भतीजा[2] अपनी गिनते,	*तुख्म सोहबत ना छुपता हो ।*
शुक्र, गुरु कोई हो घर पहले,	*राज हुकूमत बढ़ता हो ।*
गणित विद्या प्रवीण गिनते,	*खून वजीरी होता हो ।*
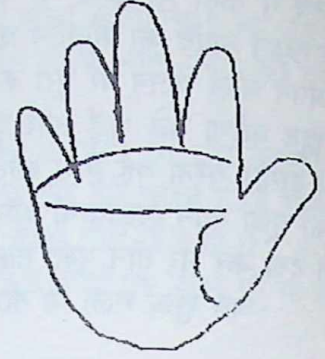
1. शनि का मकान बनाकर गिराते जाना वाला उपाय सहायक होगा। जब बुध नं01-7-8 या किसी और जगह मंदा हो, व्यापार विधवा बहन, भाई का आपस संबंध ।
2. नेक अर्थों में ।   3. मंदा।

हस्त रेखाः- मं0नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में खत्म हो। मं0नेक से रेखा बुध में जा निकले ।

नेक हालत

1. भाग्य की तकड़ी तौलने वाला छुपा देवता धन में अगर देगा तो बेशुमार धन दौलत वरना खाक ही उड़ेगी। अर्थ ये कि मध्यम दर्जे का जीवन नहीं होगा ।
2. मीठा हलवा, मीठी रोटी पकवान से अधिक उत्तम जीवन होगा । अगर उत्तम हुआ तो मच्छ रेखा, नहीं तो संतान रहित ही होगी। भाई के औलाद की पालना मुबारक होगी । स्त्री सुख पुरा, छोटा वजीर, धर्मात्मा, नेक नाम, दुख समय रोते को ढांढस बंधवा कर साहस और मदद देकर हंसाने वाला हो ।
3. विष्णु जी की तरह पालना करने वाला, सांसारिक न्याय प्रिय होगा । मगर सोहबत का असर कभी खाली न होगा । राज हकूमत बढ़ता होगा । गणित में प्रवीण होगा और वजीरी खून का संबंध होगा । जागीर और दौलत की बरकत होगी ।
4. जिस भी किसी चीज की इच्छा हो वह एक बार तो जरूर मिलेगी मगर दूसरी बार या बारबार मिलने की कोई शर्त ना होगी ।
   -जब गुरु या शुक्र कोई नं0 1 हो।
5. गुरु शुक्र कोई घर जब पहले योग पूर्ण खुद मं0 करता।   -जब धन-दौलत परिवार ही सब मिले मं0से ।

मंदी हालत

1. *मं0 7वें सब कुछ उत्तम, धन-दौलत, परिवार ही सब ।   सब का सब ही रद्दी होगा, बुध मिले मं0से जब।।*
2. मनहूस मन्दी हालत कोढ से कम न होगी, खासकर जब खुश्क, खाली कुँए का साथ हो या बुध की चीजों का व्यापार और बुध के संबन्धियों द्वारा या साथ से होने लगे वहन जल्द बेवा हो और पतिहीन बहन का साथ ही रहना टेवे वाले हो संतान रहित देगा और बुध की गन्दी चीजों का साथ मंदे प्रभाव का सबूत देगा। मसलन विधवा बहन या साली या भतीजी, भाभी, बुआ, दोहती, पोती का साथ ही रहना । कलम या उसकी मुफ्त मिली नीव, मकान में चमगादड़ या चौड़े पत्तों के दूध, मोहर, तोता या मैना, खुश्क फूल कलीगिरी का काम, सफेदी का काम, दूसरी चीजों का ठप्पा या ढांचा, भोंड़ी गाय या बकरी, खाली बांस या खुश्क घास के अम्बार, शराब-कवाब, या भूत की खुराक, सीड़ियां बारबार बना कर गिराना, ढोलक या तबले का हर समय बजना (बतौर अपने शौंक से) सब मंदे परिणाम देंगे। मगर शनि के उपाय द्वारा छोटी सी दीवार बनाते रहना और गिराते रहना सहायक होगा।
   -जब मंगल बद हो या बुध खाना नं0 1, 7, 8 या किसी और जगह मंदा हो।

क्याफा

मं0 के बुर्ज नं0 3 से रेखा बुध के बुर्ज नं0 7 पर जा निकले या सिंह रेखा आखीर में दो शाखाएं हो जाएं।

3. खून मंदा या जिस्म का सीधापन अगर डॉक्टर या हकीम राय दें तो मंजूर (जली हुई ईंट शनि की चीज) और दही की लस्सी (शुक्र) ठीक ढंग से प्रयोग करना सहायक होगा।
   -जब कभी बहन आये मीठे से खाली ना जाये। आपस में इक्ट्ठे रहने के समय विधवा बहन को सुबह मीठा देकर काम शुरु करना सहायक होगा। घर में ठोस चाँदी कायम रखने से परिवार की बरकत होगी।

4. मौत पराई अपने सिर पर लेगा। पूरा मंगल बद मगर कबीला परवर (पालने वाला) होगा। भतीजे अपने भाग्य की मदद की नींव होंगे। -जब बुध, शनि खाना नं0 6-7 में हों।

मंगल खाना नं0 8

(मौत का फंदा बलि की जगह)

वचन बेवा देती जो नेकी का तुझको।
बुझे आग खुद ही जला देती घर को।
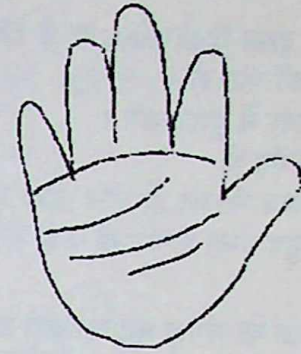
खाली मंदिर[1] से मंगल उत्तम, असर शुभ देता हो।
तीन-चौथे 9 पहले चन्द्र, ज़हर मंगल न रहता हो।
बुध मंगल ना इस घर मंदा, कायम अंधेरी कोठरी जो ।
तंदूर मिट्टी हो जब घर जलता, बचता बाकी ना कोई हो ।
चीज़ मंगल ना मंदी कोई, मंद मुसीबत बुध से हो ।
बुध बढ़ेगा जितनी जल्दी, उतना बुरा बद मंगल हो ।
इस्तकलाली मर्द हो पक्का, जिस्म मेहनत पूरी करता हो।
शक्ति शुभ आक्रमण रोके, बैठा चंद्र चाहे कैसा हो ।
मालिक टेवे ना मं0मंदा, मंद करीबी खून पै हो ।
आयु दौलत खुद अपनी लम्बी, जलता जलाता औरों को हो ।

1. खाना नं02 ।

हस्त रेखा:- मंगल नेक से शाख मंगल बद को ।

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं0 8 शनि से आपसी, पक्के इस्तकलाल (जो कह दिया सो करे) का पुरुष होगा । परिणाम चाहे जय हो या पराजय । उसका जिस्म पूरी मेहनत करने का आदी होगा । उसका शत्रु चाहे कितना ही आग से भरा हो, शत्रु का हमला रोकने की पूरी शक्ति का स्वामी होगा । स्वयं न्याय प्रिय स्वभाव का होगा ।
2. मंगल का फल नेक तथा उत्तम होगा। -जब मंगल सोया हुआ या खाना नं0 2 खाली हो या नं0 2 में मंगल के मित्र ग्रह चं0 वृ0हो।
3. मंगल बद ना होगा । -जब नं0 1, 3, 4, 8, 9 में चंद्र हो ।
4. अब बुध मं0 दोनों ही सबसे नेक फल देंगे जब तक जद्दी मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी कायम हो । -जब बुध नं0 8 हो ।

मंदी हालत

मंगल 8वें आठ बरस तक, फर्क छोटा भाई गिनते हैं ।
लाख मुसीबत खड़ी है करता, अंत बुरा नही गिनते हैं ।

1. टेवे वाले और उसके छोटे भाई की आयु में अमूमन 8 या चार बरस का फर्क होगा । कई बार 13-15 साल तक भी छोटा भाई नही होता। कई बार तो छोटा भाई होता ही नहीं। छोटे भाईयों का बेड़ा ही गर्क करने वाला साबित हो । आने वाले भाईयों को रोके और वापिस भेजे। अगर उसकी अपनी 8 वर्ष की आयु से पहिले या अपने से छोटे की 8 वर्ष की उम्र के बाद कोई और भाई जीवित हो तो सब के लिए दु:ख या मातम की निशानी होगी ।
2. मंगल का बुरा असर टेवे वाले पर न होगा। जब मंगल को चंद्र, सूर्य वृहस्पति की सहायता ना मिले या जब मंगल बद हो तो मंगल से संबंधित बड़ा भाई, ताया, मामा (जो माता का बड़ा भाई हो), करीब संबंधियों पर माता के पेट में आने के वक्त या जन्म समय से ही बुरा असर होना शुरू होगा । मगर अपनी माता पर किसी तरह भी मंदा प्रभाव ने देगा वो अच्छी सेहत, लम्बी उम्र और कल की फिक्र न करने वाली होगी उस की अपनी आयु और धन भी लम्बे होंगे । चाहे आयु का स्वामी चंद्र कभी भी कैसा ही बैठा हो जलता जलाता दूसरों का होगा । विधवा का बुरा वचन या बददुआ तेरे भाग्य और किस्मत की उम्दा शान को जला देगी। उसकी आशीर्वाद ऐसा तारेगा कि वारे न्यारे कर देगा । मंदी हालत में तंदूर में लगाई हुई रोटी बनाने का तवा जब गर्म हो जाये और उस पर ठंडे पानी के छींटे ड़ाल कर फिर रोटी पकाने से घर की बिमारियां दूर होंगी ।
3. अगर किसी कारण से छोटा भाई जीवित हो तो उसका खून या भुजा मंदे या निकम्में होंगे । -जब बुध केतु नं02 हो ।
4. अकेला बैठा मंगल बद 28 साला आयु तक मौत का फंदा होगा । खाली कब्र होगी जिसमें जो भी बदनसीब हो आ लेटे । मं0अब मंगल बद होगा जिसमें धन दौलत के मंदे स्वप्न आम होंगे मगर जानों पर फिर भी मंदा न होगा । गले में हर वक्त चांदी को कायम

रखना शुभफल देगी। दक्षिण द्वार या वैसे ही घर में जमीन के नीचे भट्टी सदा के लिए कायम सीमेंट से बना कर जो हर विवाह शादी पर खोले और फिर बंद करे या जमीन के नीचे तंदूर मंदा होगा । इतने मातम हों कि कबीला तक भस्म हो जाये। ऐसी भट्टी पर जिस किसी भी पुत्र या पुत्री की शादी के लिए खाद्यान्न बनाया जाये वह संतान रहित होंगे । मंदी हालत की निशानी और बहाना बुध की चीजें होगी। मंगल की कोई चीज भी दु:ख का कारण होगी। तंदूर में लगाई मीठी रोटी कुत्ते को 4043 दिन देते रहना सहायक होगा

-जब खाना नं0 2 खाली न हो मंगल बद होगा।

क्याफा

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण △ या दो रेखा < > ∧ V या मंगल के बुर्ज नं0 3 में उल्टी गृहस्थ रेखा यानि अंगूठे के जोड़ की तरफ गृहस्थ रेखा की पीठ हो ।

5 माता बाल्यकाल में गुजर जाये । -जब बुध नं06 में हो ।

6 दु:खी तथा निर्धन हो ।

-जब मं0 बद हो यानि चं0या सू0या वृ0खाना नं0 1, 3, 4, 8 में ना मिलते हो ।

7 जिस कदर बुध उम्दा होगा उसी कदर मंगल मंदा होगा। -सिवाय खाना नं0 8 या 6( ) के बुध टेवे में कहीं भी हो ।

उपाय:- नं08 के मंगल बद का वही उपाय हो जो मंगल नं04 में लिखा है ।

मंगल खाना नं09

(बड़ो से चलता आया सिंहासन, यदि बद तो नास्तिक बदनाम)

बड़े भाई की ताबेदारी जो रहता,
जमाना गुलामी ना तुझे कोई कहता ।

सामान हकूमत पहले बने, पीछे जगत में आता हो ।
उम्र 13 घर धन गिनते, 28 राजा खुद बनता हो ।
शुक्र चंद्र का नेक[1] हो मंगल, असर उत्तम मच्छ रेखा हो ।
राज रवि हरदम प्रबल, बैठे टेवे चाहे कैसा हो ।
बुध मंदा खुद मं0मंदा, भला पिता ना माता हो।
बड़ा भाई जब साथी उसका, गुजर बुरा ना होता हो ।
शेर मैदानी किस्मत उसकी, हाथ फैलाए न होता हो ।
माता पिता की हालत अपनी, चंद्र गुरू पर चलता हो ।
सेवा भाई न गुलामी गिनते, विजय जगत दो मिलता हो ।
शेर राजा वो जंगल कटते, लंगा जले भाई लड़ता हो ।
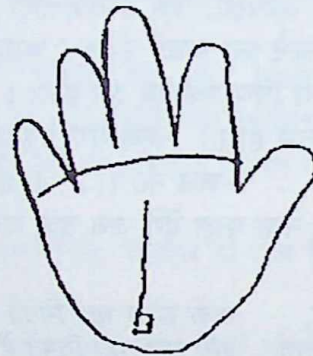
1 जब शुक्र या चंद्र की दृष्टि या साथ हो जावे ।

हस्त रेखा किस्मत रेखा की जड़ में चौकोर हो ।

नेक हालत

दम दमे में दम ना हो, चाहे खैर हो 3-5 की[2] । बुध अकेला छोड़ के सब, उत्तम हो ग्रह चाल की ।

2. किस्मत के मैदान का शेर भागते हुए गीदड़ से मांग कर खाए ।

1. एक जंगल में दो शेर या एक जगह दो खानदानी बहादुर राजा इकट्ठे गुजारा नहीं कर सकते मगर ऐसे टेवे मे भाईयों की अलहदगी से लंका जलने की तरह उनकी हालत होगी यानि इकट्ठे रहने से दो भाई भाग्य के मैदान में दो शेरों का जोड़ा होंगे । अकेला ही मं0 हो तो बड़ों से चलता आया शाही जख्त जन्म से ही तैयार हो जाये । स्वयं संसारी न्याय प्रिय हो । भाई की स्त्री किस्मत का आधार होगी । जितने बाबे उतने ही स्वयं भाई होंगे ।
2. शुक्र चं0 का फल नेक (जब शुक्र या चं0 का साथ या दृष्टि द्वारा संबंध हो जाये) और स्वयं अपना सूर्य टेवे में चाहे कैसा बैठा हो प्रबल होगा, नेक बल्कि उच्च फल देगा और जद्दी मकान यानि उसके बुजर्गों के संबंध में सूर्य नं0 2 का दिया फल पैदा हो, खाना नं03-5 अवश्य ही शुभ होंगे ।
3. अकेला मं0 धन की मच्छ रेखा का फल देगा जब बड़े भाई मं0की चीज़ें काम या संबंधी का साथ हो। गुजारा सदा उत्तम होगा। संसार में बहादुर शेर की तरह उजले भाग्य का स्वामी होगा और गरीबी से तंग आकर किसी के आगे हाथ न फैलाने वाला होगा।

4. माता-पिता की हालत का फैंसला चं0(माता), वृ0(पिता) की हालत पर होगा । जंगी खून और शाही जंगी धन से राजाओं जैसा पालन और स्वयं उसी काम से राजाओं जैसी हालत का स्वामी होगा जिसे संसार में राज्य तथा धन एकत्रित करने का सामान बहुत मिलेगा। जंगी खून व काम और जंगी शाही धन सदा मदद देगा, कर्म धर्म और आयु सब उत्तम हो।
5. 13 साला तक माता पिता की हालत उत्तम करे और 28 साला आयु में खुद राजा की गिनती का मनुष्य हो । जिसका निर्वाह बहुत उत्तम हो ।

मंदी हालत

यदि मं0 बद तो नास्तिक बदनाम भाग्य के मैदान के शेर को अब गीदड़ से ही मांग कर खाना पड़ेगा, माता पिता दु:खी (जंग) लगे होंगे । –जब बुध ममदा हो भाग्य रेखा की जड़ में मं0बद का निशान < ∧ त्रिकोण आदि हो ।

मंगल खाना नं0 10

(चींटी के घर भगवान् राजा)

बिके घर से सोना तो हो दूध जलता ।
रहा जब ना चं0 तो परिवार घटता ।

खाली दृष्टि मं0राजा, नजर शनि पे चलता हो ।
मदद शनि से चीता बनता, हमला मर्द न करता जो ।
शुक्र चंद्र ओर पापी दूजे, संतान[1] देरी से पाता हो ।
राज मुबारक चं0चौथे, परिवार शनि 3 देता हो ।
चं0रवि गुरु 6,3 बैठे, जलता जंगल[2] जर[3] घटता हो ।
लड़के पोते हो अकसर मरते, सुखिया पिता न माता हो ।
4 रवि 6 चंद्र बैठा, मालिक[4] टेवा खुद काना हो ।
शनि मगर जब चौथे आया, कैद राजा की पाता हो ।

1. हिरण का साथ या पालना शुभ होगा। 2. बुध । 3. गुरु । 4. जब माता घर का कुत्ता बने ।

हस्त रेखा :- गृहस्थ रेखा, शनि पर कायम हो ।

नेक हालत

1. चींटी के घर भगवान् आये की तरह परिवार को तारने वाला होगा अर्थात् जिस घर में जन्म लेगा वह घर पहले तो चाहे गरीब घराना ही होगा या हो मगर बाद में जरूर धनाढ़य का घर बन जाएगा और धन स्वयं पैदा करेगा । वह कभी संतान रहित ना होगा । दुनियावी शान का स्वामी हो जब बड़ा भाई मौजूद होवे । असल में मंगल नं010के शेर की आंखो की दृष्टि का स्वामी शनि ही होगा या भाग्य के फैसले के लिए शनि जैसा भी टेवे में हो उसका रासता दिखाने वाला होगा । यानि मं0नेक और बद का फैसला शनि की हालत पर होगा। अगर मं0का प्रभाव शेर की हैसियत का ना हो तो अकेला मं0हिरण की तरह नेक और उत्तम होगा। चीता तो जरुर होगा जो पुरुषों पर हमला ना करेगा मगर बाकी सब सिफतों में किस्मत के मैदान में चीता ही होगा।
2. भाई का जीवन, भाग्य में माया की आय का आधार होगा। जितने ताये चाचे उतने खुद भाई नहीं तो मच्छ रेखा। आयु 96 वर्ष, धनी, अच्छी सेहत, गृहस्थी आराम, लड़ाई की शक्ति साहस का पक्का होगा।
3. राजदरबार उत्तम फल देवे, दूध में शहद की तरह सुखी जीवन हो परिवार दिन रात बढ़े और बरकत होवे। – जब चं0नं0 4 हो।
4. शेर से ज्यादा शरारती चीता होगा। – जब शनि का साथ साथी या मदद हो।
5. जायदाद, मकान चाहे कितने मगर नकद माया कम हो। – जब शनि नं0 3 हो।
6. सब असर उत्तम हो। – जब नं0 5 खाली हो।
7. राजा समान हर तरह से उत्तम फल हो। – जब दृष्टि आदि हर ओर से खाली और मं0अकेला ही हो।

मंदी हालत

घर से सोना बेचते ही दूध जलेगा और जब दूध गया तो संतान और कबीला बरबाद होगा।

1. एक म्यान में दो तलवारें, एक जंगल में 2 शेर या एक समय दो राजाओं के राज्य की भांति मन्दा असर हो या बरबाद करने वाला काला जादू हो।
   – जब दुश्मन ग्रहों का साथ हो।

2. संतान बहुत देरी से होगी ।

उपाय

हिरण का साथ या पालना करना या मं0बद काला, काना, संतान रहित की सेवा सहायक होगी।

- जब शुक्र या चं0 या पापी नं0 2 में हो।

3. बुध मंदा होगा, जंगल उजाड़ की तरह हालत का स्वामी होगा। वृ0 नष्ट, सू0 बरबाद, मंदा सोना, मंदी हवा जो जलाती फिरे। अपनी कमाई बरबाद, लड़के पोते मरते हो और माता पिता सुखी न हो।
   - जब नं0 3-6 मं0, चं0, गुरु या सू0, मं0 बद हो।

क्याफा

आयु रेखा शुरु से अंत तक 2 रेखा वाली हो।

4. टेवे वाला एक आंख से काना होगा जब माता घर का कुत्ता बने (नानके घर दोहता रहने लगे)।
   - जब सू0 नं0 4 या चं0 नं0 6 हो।
5. ना चोर ना डाकू, बिना कसूर बदनाम चोरी के गुनाह से राजा की कैद में बरबाद। - जब शनि नं0 4 हो।
6. दूसरों के लिए मं0 अब मं0 बद ही होगा मगर खुद आबाद होगा। - जब नं0 5 में कोई भी ग्रह हो।
7. लड़के पर लड़का मरे। - जब सू0 नं0 6 हो।

मंगल खाना नं0 11

मिले कुत्ता दुनियां [1], कि हर दम जो होते।
असर शेर देगें चाहे, कितने ही सोते।

चीता मं0दरबार गुरु के, पकड़ा गुरु जंजीर में हो।
हाल वृ0जैसा टेवे, असर वही खुद मं0हो।
मं09 वे का असर देवें 13, गुरु हालत चाहे कैसी हो।
बुध शनि जब उत्तम बैठा, सुखीया 24 जर 28 हो।
उल्ट हालत बद मं0 होगा, केतु भला न लड़का हो।
पाप उम्र [2] तक दुखिया करता, ना ही सुखी खुद होता हो।
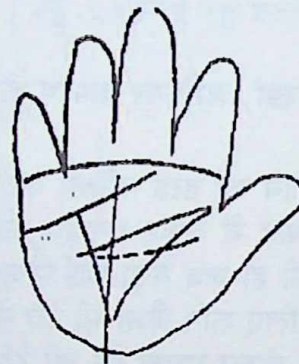
1. संसारी तीन तरह के कुत्ते।
2. राहु 42 केतु 48 , दोनों एक साथ 45 साला आयु।

हस्त रेखा:- मं0नेक से रेखा खाना नं011 बचत में हो।

नेक हालत

घर में अपने रखना मंगल, शहर के बरतन भे 1 मीठा जीवन
शहद उत्तम उसका होगा, फल 2 बध हो जसके खरे।
फूल छोड़ मक्खी 3 शनि ही जब, नेक और उत्तम मिले।
दम के दम ले आएगी सब, शहद के बरतन भरे।

1 गुरु चरणों के चरणामृत का आदी खूनी भोजन कब लेगा। ऐसा प्राणी दूध से पला पालतू शेर फकीरी हालत अच्छे अर्थो में मगर भेस में राजा समान होगा, जिसे संसार के तीन कुत्ते और केतु की चीजें काम, संबंधी शुभ फल देगें। 13 साला आयु से उसके माता पिता के पास धन का भंडार जमा हो। राज्य का साथ और सुख कायम हो और 28 साल की आयु में माता पिता की वही हालत होगी जो उसके जन्म लेते समय चमकती शान वाली थी।

2. सोने की जंजीर में गुरु के हाथों में पकड़ा चीता होगा। यानि जैसी वृ0की हालत वैसी मं0की हालत जो बुध और शनि की नकल करेगा
3. जिस घर वृ0 हो उस घर में लिखे हुए भाईयों की गिनती का स्वामी या वृ01 से 10हो तो 9 भाई, 11 हो तो 2 और 12 हो तो प्रायः अकेला भाई।
4. 13 साला आयु से मं0का 9 दिया हुआ उत्तम फल देगा चाहे वृ0कैसा भी हो।

5. 24 से 28 साला आयु तक माया खूब जमा होगी। -जब बुध शनि उत्तम हो।

मंदी हालत:-

1. मं0के बुर्ज नं03 पर वृ0का सीधा खड़ा खत (काग रेखा) हो चन्द्रभान मनहूस अच्छी खासी आमदन होते हुए भी कर्जइ माता पिता का फल व्यर्थ जब तक वृ0 (बाप दादा) की जायदाद को कौड़ी कौड़ी कर के न बेच देवे तभी उसका धन ठीक होने लगेगा। - जब नं0 3 खाली या मन्दा हो।
2. मं0बद की हालत में न सिर्फ केतु (संतान) 42,48,45 साल की आयु तक मामू बरबाद भाई बन्धु और मं0की जानदार चीजे दुख का कारण होगी, लेकिन वे खुद भी सुखी ना होगें लड़के जन्म दिन या केतु की पालना 3 कुत्ते आदि मं0के नेक समय के आने की निशानी होगी।

मंगल खाना नं012

दिया मीठा लोगों, चाहे मीठा खिलाया
कमी जर ना दौलत, सभी कुछ हो पाया

राजा होगा सुख का मं0 घर गुरु प्रवेश हो।
जन्म कुटिया या कि जंगल, चाहे वह दरवेश हो।
साथ गुरु या दूजे बैठे, पाया केतु घर तेरा हो।
मच्छ मुआवन हर दो तारे, बुध पापी नहीं बोलता हो।
8 तीजा ना मन्दा होगा, ना ही बुरा खुद राजा हो खाना 1
साल 24,28 में उत्तम होगा, या जब लडका पहला या दूसरा भाई हो
गुरु, शुक्र और केतु टेवे, आठ पहले 3-11 जो।
मदद मं0की हरदम करते, बैठा कोई चाहे कैसा हो।
8-3-9-12 बैठा, बुध असर खुद अपना अपना 1हो।
रवि बैठा 3-11 उत्तम, मौत बीमारी रोकता हो
रवि मन्दे में असर मं0का, तीन पहले फिर 11 हो।
असर राहु ना टेवे होगा, चुप हुआ वो बैठता हो।
बुध टेवे 8-4 जो आता, मंगल 6 वे चाहे 12 हो।
उम्र छोटी स्वयं पहले मरता, बाद उड़ावे माता को।

1. बुध का अपना ही 3-8-9-12 में दिया हुआ मन्दा प्रभाव।

हस्त रेखा :- मं0नेक रेखा खाना नं012 खर्च में हो।

नेक हालत

1. अब बुध का नं01 का कभी बुरा असर ना होगा चाहे नं01 वाला ग्रह कैसा ही बैठा हो और केतु नं01 का फल नेक होगा। ऐसा व्यक्ति गर्म स्वभाव वाला स्वतन्त्रा का स्वामी होगा और राहु का सारे टेवे में मन्दा असर ना होगा बल्कि राहु अब चुपचाप ही होगा।
2. गरजता हुआ शेर, दमकता परिवार, पकड़ते शत्रु और कड़कती तलवार का स्वामी होगा। साधु, गुरु, वृ0की पालना सेवा करने वाला या गुरु चरणों का ध्यान रखने वाला होगा। धन का खजाना चाहे हाथ में हो या ना हो मगर रात की नींद का बेआराम ना होगा।
3. वह सुख का राजा होगा चाहे जन्म किसी निर्धन की कुटिया या उजड़े जंगल की हालत के घर का ही हो। हाथी के लिए महावत, साधु के लिए समाधि। शेर के साथ गाय, कुत्ता और बकरी के साथ की तरह दूसरों से मिलने के लिए उसके अपने स्वभाव का मिलन होगा। अब बुध और पापी ग्रहों की कोई आवाज ना होगी, मगर बुध 3-8-9-12 फिर शक्की ही होगा। सारे टेवे में सब ग्रह नेक होकर चलेगें और नं0 11-8-3-1 के ग्रह अब कभी मन्दा असर ना देंगे, मगर केतु (कुत्ता भौं भौं) और बुध (बकरी दूध में मेंगने) अपनी नसल की आदत नहीं छोड़ सकते। सिवाय खाना नं01-3-8-11 में जहां कि उनको (बुध, केतु को) भी चुप होना पड़ेगा।
4. 24-28 साला आयु या जब लड़का पहला, भाई दूसरा पैदा हो तो उत्तम होगा।
5. मच्छ रेखा निर्धन को धन और अमीर को सिहासन। हरदम बड़े परिवार लौह लंगर सवाया। ठीक आयु रेखा। कब्र से जिंदा वापस आए या फांसी लटकते पांव तले तख्त देना ताकि गला ना घुट जाय। बिन बुलाये सहायक आ उपस्थित हो। पृथ्वी और आसमान के बीच सब शत्रु छुप कर गारों में गुजरा करेगें। मं0की मदद पर होगें चाहे कैसे ही बैठे हो।

- जब केतु नं0 3 या वृ0 का साथ वृ0 नं0 2 या वृ0 शु0 केतु 8-1-3-11 ।

6. मौत बीमारी से सदा बचाव होता रहेगा जब तक नं011 का ग्रह नं08 का शत्रु न हो।

- जब सू0नं03-11 में हो।

मंदी हालत

1. बुध अपना मंदा असर बहाल रखेगा और मं0का उस पर कोई जोर न चल सकेगा।

- जब बुध नं03-8-9-12 में हो।

2. मं0का बुरा असर, सू0का मंदा असर नं03 पर बाद में नं01 और फिर नं011 पर होगा।

- जब सू0मंदा हो।

3. मं0चाहे 12 नं06 हो पहिले खुद छोटी आयु में मरेगा बाद में माता भी जल्द ही गुजर जाएगी।

- जब बुध नं04-8 मगर चं0या सू0के संबंध ना हो।

मंगल बद के समय निम्न हालते आम होगी

4. सांस की मंदी हालत(वृ0से संबंधित), स्त्री दुख या माया की कल्पना (शुक्र से संबंधित), संतान की कमी दुख (केतु से संबंधित), शत्रुओं की गुमनाम शरारतें, फिजुल खर्चा, जहमत बीमारी (राहु से संबंधित), मकान अपना या दूसरे का सजो समान शनि से संबंधित ।

मं0(तलवार) का बुध (दलील) से प्यार नहीं बेवकूफी का ठेकेदार, बेवकूफी के कामों में धन बरबाद, स्त्री सुख नष्ट, व्यापार मंदा बल्कि दृष्टि की शक्ति का भी बुरा असर गिनते है यदि अन्धा नहीं तो काना जरुर होगा (ज्यादा से ज्यादा 2 बड़े भाई), मगर उसकी 28 साला आयु तक वह खुद ही बड़ा होगा या अमूमन उसके बड़े भाई नहीं होंगे अगर हो तो दुखी और संतानहीन हो, लड़की के टेवे में यह शर्त नहीं। उनकी (टेवे वाली लड़की) लड़की के बड़े भाई की मदद के लिए ऐसे टेवे वाले के सिर पर मं0के रंग की पोशाक सू0या वृ0 के रंग या चीजे वृ0चोटी, सू0खाकी रंग की पगड़ी सहायक होंगे। उसके बड़े भाई को चाहिए कि मं012 वाले को पानी की जगह दूध पिलाये और अपने पास चं0की चीजे, चावल चांदी रखे। मीठा खाना और मीठा खिलाना धन और आयु के लिए सहायक होगा। सू0को पानी देना (मीठा डालकर) शुभ होगा । कुत्ते को मीठी रोटी देना सहायक होगा।

5. अपनी 28 साला आयु तक बड़े भाईयों की आयु तक भारी होता है सिवाय उस बड़े भाई के जिसके टेवे में नं010में मं0हो, ऐसी हालत में जब कभी नं012 वाले का बुरा असर बड़े भाई पर होता मालूम हो वह बुरा असर उस मियाद पर खुद नं012 वाले पर ही हो जाएगा।

- जब नं03 में कोई भी दो या दो से अधिक ग्रह हो।

6. मंदी हालत के समय अपने धर्म स्थान से सहायता सहायक होगी और चं0मं0 दुध में शहद या खांड़ मिला कर दूसरे संसारी साथियों को देना या मीठी रोटी का खुद प्रयोग करना और दरवेश, फकीर कुत्ते आदि को भी मीठी रोटी का हिस्सा देना और अंत में सू0को पानी देना या मीठा मिला पानी देना सदा नेक फलदायक होगा।

6. मं0का असर मंदा होगा। भुजा निकम्मी दुखिया होगी, धर्म स्थान में पताशे देना (बुध) मं0 शं0का फल नेक कर देगा। बेशक मं0 बुध, शनि तीनों ही कुण्डली के बाकी घरों में कितने ही मंदे क्यूं न हो।

- जब शनि नं02 में हो।

****

बुध

(शक्तिमान वनस्पतियों का राजा)

खुला करते सुराख मैदान बढ़ाता।
बढ़ी अक्ल इसकी खर्च खुद जो करता।।

उल्ट पांव चमगादड़ लटका, छुपी शरारत[1] करता हो।
घर पक्का जिस ग्रह का होगा, वहां वही बन बैठता हो।
साथ बुरे ग्रह सबसे मंदा, भला भले से होता है।
चन्द्र, राहु का हो जब झगड़ा, बुध [2] मारा खुद जाता है।
बुध नज़र जब रवि हो करता, दर्जा दृष्टि कोई हो।
असर भला सब दो का होगा, सेहत माया या दिमागी हो।
बुध, चन्द्र से हो जब पहले [3], रेत ज़हर पानी भरतद्म हो।
तीन-चौथे 7-9 ग्रह बैठे [4], राख हुए कुल जलता हो।
शुक्र बैठा जब बुध से पहले, असर राहु का मंदा हो।
बुध पहले से शुक्र मिलते, केतु भला खुद होता हो।
बुध, शुक्र न इकट्ठे मिलते, उम्र जाया यों करता हो।
शत्रु दोनों का साथ जो बैठे, असर दोनों न मिलता हो।

1.बुध बैठा होने वाले घर का मालिक ग्रह जब खाना नं० 9 में बैठ जाए तो बुध की तरह वह खाली चक्कर या बेकार निष्फल होगा।
2.मंदे बुध वाले को नाक छेदन करवा लेना और दांत साफ रखना, लड़कियों की सेवा सहायक हो।
3.खासकर गुरु और चन्द्र ही मंदे।
4.शुक्र का शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु; बुध का शत्रु चन्द्र वगैरा।

आम हालत 12 घर:-

घर 2-4 या 6 वें बैठा [1], राज, योगी बुध होता हो।
7 वें घर में पारस होता, ग्रह साथ को तारता हो।
9-12-8 तीसरे 11, थूके कोढ़ी बुध होता हो।
घर पहले 10घूमता राजा, परिवार [2] धन 5 देता हो।

1. सिर्फ खाना नं० 4 के बुध में राहु, केतु का प्रभाव नहीं, इसलिए राजयोग है बाकी हर जगह पाप बुध के दायरे में होगा।
2. ज़हर से भरा बुध जब बैठा हो।
   अ) खाना नं० 3 में कबीले पर भारी और खानदान पर मंदा हो।
   खाना नं० 8 में जानदार चीज़ों और जानों पर मंदा हो।
   ब) खाना नं० 9 टेवे वाले की अपनी ही हर हालत धन-दौलत मालोजान पर मंदा हो।
   स) खाना नं० 11 में आमदन की नाली में रोड़ा अटका दे।
   खाना नं० 12 में कारोबार और रात की नींद बर्बाद करे।

ज़हर से भरा बुध स्वयं मारा जाए तो बेशक मगर 1 से 4 (सिवाए खाना नं० 3 जहाँ कि दूसरों के लिए थूकना कोढी मंदा होगा) पर मंदा न होगा, 5-10में डर तो ज़रूर देगा। 11-12 में हड़काए कुत्ते की तरह जिसे काटे वह आगे हड़का कर भागे। बुध अमूमन खाना नं० 1-9 से 12 में शनि की सहायता करेगा यानि विषैला लोहा मार देने वाली विष, निर्धन करने वाला होगा। 3 से 8 में सूर्य की सहायता, धन के उत्तम चाहे 3-8 में हज़ारों दुःख खड़े करेगा।

राहु का सम्बन्ध :-

जब बुध और राहु दोनों इकट्ठे या दोनों में से हर एक जुदा-जुदा मंदे घरों में बुध अमूमन 3-8-9-12 में, राहु अमूमन 5-7-8-11 में हों तो अगर जेलखाना नहीं अस्पताल या पागलखाना या कब्रिस्तान वीराना तो अवश्य मिलेगा, कसूर या बीमारी चाहे न हो। फ़िज़ूल दुःख मंदे खर्चे आम होंगे। फौलाद का बेजोड़ छल्ला जिस्म पर सहायक होगा और दोनों ग्रहों की चीज़ें या काम करने से बुध, राहु इकट्ठे गिने जाएंगे।

बुध का अर्थ :- **बहन, बुआ, फूफी, मौसी, साली, व्यापार तथा दूसरे बुध के काम होगा।**

राहु का अर्थ :- **ससुराल, नाना-नानी, बिज़ली, जेलखाना आदि राहु के काम हैं।**

बुध से केतु का सम्बन्ध :-

जब दोनों दृष्टि से आपसी मिल रहे हों, बुध का आम साधारण जैसा कि टेवे में बैठे होने के हिसाब से हो, मगर केतु का फल, नीच केतु या मंदा ही होगा। बुध के बिना सब ग्रहों में झुकने-झुकाने की शक्ति कायम न होगी।

सामान्य फल :-

1. बुद्धि के काम, व्यापार, हुनरमंदी, दस्तकारी, दिमाग़ी बुद्धिमता से धन कमाने का 34 साल की आयु का समय बुध की हुकूमत होना, किसी भी चीज़ के न होने की हालत बुध का होना या उसकी हस्ती कहलाती है।
2. ज़हर से भरा बुध खाना नं० 1 से 4 में (सिवाए खाना नं० 3 जहाँ कि दूसरों के लिए थूकता हुआ कोढ़ी मंदा होगा) साथ बैठे ग्रह पर कभी मंदा प्रभाव न देगा। स्वयं चाहे अपने बुरे प्रभाव टेवे मगर कोई मन्दी घटना न करेगा।
3. 11 से 12 को जिस ग्रह को काटे वह हड़काए कुत्ते की तरह दूसरों को भी आगे हड़काता चला जाएगा।
4. चन्द्र, राहु के झगड़े में बुध बर्बाद होगा।
5. बुरे ग्रह के साथ बैठा उस ग्रह का प्रभाव और भी मंदा कर देगा और भले ग्रह के साथ बैठने से न सिर्फ उस भले ग्रह को और भी भला कर देगा, बल्कि स्वयं भी भला हो जाएगा यानि जिससे मिलेगा उसकी ही शक्ति का प्रभाव देगा। यह ग्रह वृक्षों पर उल्टे पाँव लटके हुए चमगीदड़ की तरह अंधेरे में जागकर छुपी हुई शरारत करता होगा। मकान में मंदे बुध की पहली निशानी होगी कि नए बने-बनाए मकान में किसी न किसी कारण से सिर्फ सीढ़ियां गिराकर दोबारा बनने का बहाना होगा। चारदीवारी और छत नहीं बदली जाएगी।
6. मंदे बुध वाले को नाक छेदन करवाना और फिटकिरी आदि से दांतों को साफ करना, लड़कियों की पूजा करना सहायक होगा। अगर घर के बहुत से सदस्यों का बुध खराब हो या स्वयं अपना बुध टेवे में मंदे घरों में आता रहे तो बकरी की सेवा या बकरी दान करना उत्तम फल देगा। अगर ज़ुबान, में थथलापना हो तो वह थथलापन के अलावा और कोई मंदा फल न देगा चाहे टेवे में मंदा हो। घर में एक के बाद एक बीमार पड़ जाए की लानत खड़ी हो जाने के समय बुध से बचाव के लिए हलवा कद्दू (जो पक्का रंग पीला और अंदर से खोखला हो चुका हो) पूरा का पूरा धर्म स्थान पर देना सहायक होगा।
7. पाप, राहु, केतु, बुध के दायरे में चलता है, सिवाए खाना नं० 4 के जहां कि बुध राजयोग होगा क्योंकि वहाँ राहु, केतु पाप न करने की कसम खाते हैं।
8. शुक्र मंदे को अवश्य सहायता देगा मगर पाप मंदे के समय बुध स्वयं भी मंदा ही होगा और मौत गूंजती होगी, बल्कि ऐसी हालत में अगर शुक्र भी ऐसे घरों में हो जहाँ कि बुध मंदा गिना गया है तो वह शुक्र को भी बर्बाद करेगा।
9. अकेला बैठा हुआ बुध निकम्मा तथा बिना शक्ति का होगा और उस ग्रह का फल देगा जिसका कि वह पक्का घर है जहाँ कि बुध बैठा है। बात को धोखा से बचाने के लिए यह बात साफ होनी चाहिए कि घर की मालकियत दो तरह की होती है एक तो बतौर घर का स्वामी और दूसरी हालत में हर घर किसी न किसी ग्रह का पक्का घर मुकर्रर है।

उदाहरण :- खाना नं० 1 में मंगल बतौर राशि का स्वामी ग्रह या बतौर घर की मालकियत बैठा होगा मगर पक्का घर खाना नं० 1 का स्वामी सूर्य होगा।

उदाहरण :-

बुध हो खाना नं० 1 में और सूर्य हो खाना नं० 12 में, अब खाना नं० 1 है, पक्का घर सूर्य का इसलिए बुध खाना नं० 1 में बैठा सूर्य का फल देगा जो कि उस सूर्य के लिए खाना नं० 12 में स्थित है क्योंकि बुध खाना नं० 1 के समय सूर्य खाना नं० 12 में बैठा है। लेकिन यदि सूर्य बैठा हो तो खाना नं० 4 में हो तो खाना नं० 1 में बैठा हुआ बुध वही प्रभाव देगा जो कि सूर्य खाना नं० 1 का निश्चित है।

2. बुध बैठा हो तो वही ऊपर कहे गए खाना नं० 1 में हो तो बुध का बुरा प्रभाव अगर कोई हो तो मंगल पर हो सकेगा क्योंकि घर की मालकियत या राशि का मालिक मंगल है। अगर उस राशि का मालिक ग्रह यानि वह ग्रह जो घर की मालकियत या राशि का मालिक हो जहाँ कि बुध बैठा है उस समय (जब बुध खाना नं० 1 में हो) खाना नं० 9 में बैठ रहा हो तो वह ग्रह खाना नं० 9 वाला बेबुनियाद और मंदा होगा। ऐसी हालत में बैठे हुए बुध का मंदा प्रभाव नीचे की सूची से पूरा-पूरा ज़ाहिर हो जाएगा।

बुध खाना नं० में बैठा हो	किस ग्रह का फल देगा	अमूमन किस ग्रह को बर्बाद करेगा खासकर किस ग्रह को मंदा करेगा जो कि उस समय खाना नं० 9 में बैठ रहा हो
1	सूर्य	मंगल
2	वृहस्पति	शुक्र
3	मंगल	शुक्र
4	चन्द्र	चन्द्र
5	वृहस्पति	सूर्य
6	केतु	केतु, बुध
7	शुक्र, बुध	शुक्र
8	मंगल, शनि	मंगल
9	वृहस्पति	वृहस्पति
10	शनि	शनि
11	वृहस्पति	शनि
12	राहु	राहु, वृहस्पति

खाना नं० 3-8-9-11-12 का मंदा बुध बेवकूफ कोढ़ी मल्लाह जो खतरे के समय अपनी बेड़ी को खुद ही गोता देने लगे और आमदन की नाली में रोड़ा अटकाने वाला हो बैठे।

दूसरे ग्रहों की सहायता :-

बुध बैठा हो खाना नं० 1 से 2 तो शनि ग्रह को मदद देगा।
बुध बैठा हो खाना नं० 3 से 8 तो सूर्य ग्रह को मदद देगा।
बुध बैठा हो खाना नं० 9 से 12 तो शनि ग्रह को सहायता देगा।

दूसरे ग्रहों के साथ संबंध :-

किसी ग्रह के साथ :-	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल
बुध का संबंध कैसा होगा :-	राख	पारा	मानिद में पानी	दही	शेर के दांत
किसी ग्रह के साथ :-	बुध	शनि	राहु	केतु	
बुध का संबंध कैसा होगा :-	x	कलई	हाथी की सूँड़	कुत्ते की दुम	

बुध और शनि कुंडली के सांझी दीवार वाले घरों में होने के समय शहतीर या गार्डर खड़े करके उन पर सेहन बनाने पर बुध बर्बाद होगा, पागलपन, सिर की खराबियां, बहन, बुआ, फूफी बर्बाद होंगी।

बुध का अण्डा अक्ल का बीज नहीं मगर अक्ल की नकल ही बुध का अण्डा है जो कुण्डली के खाना नं० 9 में पैदा होता है। ग्रह कुण्डली में खड़ा अण्डा (मैना आम बकरी) बुध कुण्डली के खाना नं० 2-4-6 में होगा। लेटा हुआ अण्डा (तथा भेड़) बुध कुण्डली के खाना नं० 8-10 में होगा। गंदा अण्डा बुध कुण्डली के खाना नं० 12 में होगा। आम हालत मां, बेटी बुध कुण्डली के खाना नं० 1-7 में होगी। चमगीदड़ किसी चीज़ का साया या अक्स अगर असल चीज़ (जिसका साया है) का पता न लगे कि वह कहाँ है बुध कुण्डली के खाना नं० 3-9 में होगा। दूध वाला बकरा मगर बकरी दाढ़ी वाली बुध कुण्डली के खाना नं० 5 में होगा। चौड़े पत्तों वाला वृक्ष, मैना का उपदेश, लाल कंठी वाला तोता, वृ० की नकल बुध कुण्डली खाना नं० 11 में होगा।

बुध की खाली नाली :-

हर तीसरे घर के ग्रह यानि 1-3 कभी आपस में नहीं मिल सकते इसलिए आपस में असर भी नहीं मिला सकते। लेकिन यदि बुध की नाली से मिल जाएं तो वह आपसी बुरा प्रभाव न देंगे, अगर शुभ हो जाए तो बेशक हो जाए।

शुक्र, बुध दोनों इकट्ठे ही शुभ है और खाना नं० 7 दोनों का पक्का घर है लेकिन जब जुदा-जुदा हो जाए और अपने से सातवें पर हो तो दोनों का फल रद्दी, लेकिन जब तक उस सातवें की शर्त से दूर हो, मगर हो दोनों जुदा-जुदा तो बुध जिस घर में बैठा हो वह बुध उस घर के सब ग्रहों का और उस घर में आकर बैठा होने का अपना असर शुक्र के बैठा होने वाले घर में नाली लगाकर मिला देगा। यानि दोनों ग्रहों का असर मिला-मिलाया हुआ इकट्ठा माना जाएगा। फर्क सिर्फ यह होगा कि शुक्र अपने घर का असर उठा कर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर शुक्र बैठा होने वाले घर में जा मिलाता है। संक्षेप में जब कभी शुक्र का राज्य हो तो शुक्र बैठा होने वाले घर में बुध बैठा होने वाले घर का असर साथ मिला गिना जाएगा। मगर बुध की तख्त की मालकियत के समय अकेले ही उन ग्रहों का होगा जिनमें कि बुध बैठा हो। शुक्र बैठा होने वाले घर के ग्रहों का असर बुध वाले घर में मिला हुआ न गिना जाएगा। बुध, शुक्र के इस तरह असर मिलाने के समय यदि बुध कुंडली में शुक्र के बाद के घरों में बैठा हो तो बुध का अपना स्वयं का प्रभाव बुरा होगा और अगर बुध कुंडली में शुक्र से पहले घरों में बैठा हो और उठा कर अपने बैठा होने वाले घर का अपना असर बुरा न होगा बल्कि भला ही गिना जाएगा। इस मिलावट के समय अगर बुध वाले घर में शुक्र के शत्रु ग्रह

भी शामिल हों तो शुक्र इजाजत न देगा कि बुध अपने बैठा होने वाले घर का अपना असर शुक्र के घर में मिला दे यानि ऐसी हालत में बुध की नाली बंद होगी और शुक्र को जब बुध की सहायता न मिले तो अब शुक्र, बुध के बिना पागल होगा। लेकिन यदि बुध के साथ वहां शुक्र के मित्र ग्रह हों तो शुक्र कोई रुकावट न देगा। बल्कि बुध को ज़रूर अपना असर शुक्र बैठा होने वाले घर में ले जाना पड़ेगा। हो सकता है कि ऐसी मिलावट में खाना नं01 में हो केतु, दोनों में ही शामिल हो (यह हालत सिर्फ उस समय होगी जब राहु, केतु अपने से सातवें घर होने के कारण से बुध और शुक्र भी आपस में सातवें घर पर होंगे) तो मंदा परिणाम होंगे। खासकर उस समय जब बुध हो शुक्र से बाद के घरों में और साथ ही राहु, केतु का दौरा भी आ जाए, यानि उनमें से कोई एक तख्त की मालकियत के दौरे के हिसाब से आ जाए, (उस समय जबकि इस मिलावट में राहु, केतु, शुक्र, बुध के साथ मिल रहे है और राहु, केतु अपने उधर राज पर एक साथ होने का भी समय है) कुंडली वाले के लिए नाजुक स्थान का भयानक समय होगा, मगर यदि यह शर्तें पूरी न हो या बुध हो शुक्र से पहले घरों में तो यह मंदा समय न होगा। मंदा समय सिर्फ राहु, केतु के दौरे के समय का होगा। शुक्र या बुध के दौरे (ग्रह के दौरे से अर्थ ग्रह संबंधित का खाना नं01 में आने का समय होगा के समय यह लानत न होगी। इस बुध की नाली का खास लाभ मंगल से संबंधित है। कई बार मंगल को सूर्य की सहायता मिलती हुई मालूम नहीं होती या चन्द्र का साथ होता हुआ मालूम नहीं होता। इस नाली के कारण से मंगल को सहायता मिल जाती है और मंगल जो सूर्य, चन्द्र के बिना मंगल बद होता है, मंगल नेक बन जाता है। इसी तरह ही मंगल, बुध बाहम शत्रु है, मंगल के बिना शुक्र की संतान कायम नहीं रहती। बुध जब मंगल के साथ हो तो वह लाल कंठी वाला तोता होगा और स्वयं उठकर और मंगल को साथ उठाकर शुक्र से मिला देगा या शुक्र की औलाद बचा देगा जिससे कुंडली वाला निःसंतान न होगा, ऐसी हालत में बुध या शुक्र के बाहम पहले या बाद के घरों में होने पर बुध के जाती असर की बुराई की शर्त न होगी। भलाई का प्रभाव ज़रूर होगा क्योंकि मंगल ने शुक्र के दौरे के पहले साल में अपना असर अवश्य मिलाना है यानि बुध की नाली 100 %, 50प्रतिशत, 25% और अपने से सातवें होने की दृष्टि से बाहर एक और ही शुक्र और बुध की बाहम दृष्टि है और यह इसलिए है कि शुक्र में बुध का फल मिला हुआ माना जाता है। मिलावट में राहु के साथ हो जाने के समय जब शुक्र ने बुध को बाहर ही रोक दिया तो शुक्र में बुध का फल न मिला तो बुध के बिना शुक्र पागल होगा या शुक्र खाना नं0 8 के प्रभाव वाला होगा। इसी तरह पर शुक्र के बिना बुध का असर सिर्फ फूल होगा फल न होगा अर्थात् विषय की शक्ति तो होगी मगर बच्चा पैदा करने की ताकत का शुक्र को फायदा न मिलेगा।

बुध की दांत :-

दांत कायम हो तो आवाज़ अपनी मर्ज़ी पर काबू में होगी यानि वृ0 की हवाई शक्ति पर (संतान के जन्म) काबू होगा। मंगल भी साथ देगा। यानि जब तक दांत (बुध) न हो तो चन्द्र मदद देगा, जब दांत न थे तो दूध दिया जब दांत दिए तो क्या अन्न (शुक्र) न देगा। यानि बुध हो तो शुक्र की अपने आप आने की आशा होगी। लेकिन जब दांत आकर चले गए (और मुंह के ऊपर के जबड़े के सामने के) तो अब मंगल, बुध का साथ न होगा। न ही वृ0 पर काबू होगा या उस व्यक्ति या स्त्री की अब संतान का समय समाप्त हो चुका होगा। जबकि दांत गए दांत क्या गए वृ0 समाप्त तो लावल्द हुआ।

बुध का भेद :-

जब कुंडली हर प्रकार से मुकम्मल (पूरी) हो और खाना नं01 का अक्षर देकर तरह से बात समाप्त हो चुकी हो, तो बुध का खास भेद या बुध का स्वभाव देखने के लिए नीचे का असूल काम में आएगा। ग्रह कुंडली के किसी न किसी घर में चाहे अकेले-अकेले घरों में चाहे एक ही घर में कई एक या आठ एक ही साथ हों, (राहु या केतु अपने से सातवें के असूल पर होने के कारण से दो में से एक ज़रूर रह जाएगा), तो हर एक की अपनी शक्ति के भाग को खाना नं0के अक्षर से जिसमें कि वो ग्रह बैठा हो गुणा देकर नौ ही ग्रहों के जवाब का कुल योग लेकर 9 पर भाग करें।

1. बाकी कुछ न बचे तो बुध का स्वभाव उस कुंडली के खाना नं0 5 में बैठे हुए ग्रह का होगा। यानि बुध के खाली ढांचे में राहु, केतु पकड़े गए। यानि जब बुध की शक्ति सिफ़र (शून्य) हो उस कुंडली में राहु, केतु का किसी भी दूसरे ग्रह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में राहु, केतु की दृष्टि बुध के दायरे में बंद होकर सिफ़र (शून्य) हो उस कुंडली में राहु, केतु का किसी भी दूसरे ग्रह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में राहु, केतु की दृष्टि बुध के दायरे में बंद होकर शून्य होगी। मगर राहु, केतु का जाति असर ज़रूर कायम होगा क्योंकि बुध में हमेशा ही राहु, केतु का असर शामिल गिना जाता है, सिवाए खाना नं04 में जहां कि राहु, केतु का अपना प्रभाव शून्य होगा। राहु घड़ी की चाबी तो केतु घड़ी का कुत्ता है। दोनों को चलाने वाला वृ0है मगर वह घूमते बुध के दायरे में ही है। अगर खाना नं0 5 खाली हो तो जिस घर में सूर्य हो और जैसा भी हो वैसा ही बुध होगा।

2. यदि कोई अक्षर पूरा भाग न दिया जा सके कुछ बाकी थोड़ा-बहुत दशमलव भिन्न में बच जाए तो उस दशमलव भिन्न की मिकदार के लिए जो कि स्थापित है वह ग्रह कुंडली में जहां बैठा हो उस ग्रह की शक्ति तथा स्वभाव का बुध होगा। यह स्वभाव बुध का अपना स्वभाव होगा जैसा कि शनि का स्वयं का स्वभाव राहु, केतु, शनि के पहले या बाद के घरों में होने पर निश्चित है।

ग्रह का नाम	टेवे में किस घर का है	ग्रह की शक्ति	खाना नं0के अक्षर को ग्रह को मिकदार से गुणा किया
वृहस्पति	4	6/9	24/9
सूर्य	3	9/9	27/9
चन्द्र	6	8/9	48/9
शुक्र	5	7/9	25/9
मंगल	5	5/9	25/9
बुध	3	4/9	12/9
शनि	12	3/9	36/9
राहु	2	2/9	4/9
केतु	8	1/9	8/9
कुल		= 45/9 = 5	219/9 = 24+3/9

उदाहरण कुंडली में :-

अ) कुल में से पूरे-पूरे हिस्से छोड़ दें तो 3/9 बाकी रहा यानि शनि की शक्ति है जो खाना नं012 में बैठा है ये बुध का स्वभाव हुआ यानि बुध जो खाना नं0 12 में अकेला बैठा है वह खाना नं012 में बैठे हुए शनि के स्वभाव का है। दी हुई कुंडली में पहले घरों में राहु बाद में केतु और आखिर पर शनि, शनि का अपना स्वभाव खराब फल का है इसलिए जब बुध का समय होगा शनि दो गुणा मंदा फल देगा क्योंकि बुध, शनि दोनों ही खराब स्वभाव के है।

ब) बुध का स्वभाव जिस ग्रह से मिलता हो उपाय उस ग्रह, बुध दोनों का मिलाकर करना होगा।

स) खाना नं03 या 9 के बुध के लिए लाल गोली की मदद ले। मगर ध्यान रहे कि यदि बुध नेक स्वभाव साबित हो तो लोहे की बजाय शीशे की गोली ले जिस पर या जिसमें वह रंग करें या शामिल हो, जो रंग कि उस ग्रह का हो जिस ग्रह के स्वभाव का बुध ऊपर के ढंग का साबित हुआ हो।

द) खाना नं012 के बुध के लिए नष्ट ग्रह वाले की सहायता का इलाज या केतु (कुत्ता रंग-बिरंगा काला-सफेद मगर लाल न हो) को कायम करना शुभ होगा।

वास्तव में बुध खाली खलाव सफेद काग़ज, शीशा और फटकरी होगा। जब उस पर जरा भी मैल या किसी भी और ग्रह का ताल्लुक हुआ तो उसकी गोलाई का ठिकाना मालूम करना वैसा ही मुश्किल होगा जैसा कि ज़मीन का अक्ष मान लेना। इसलिए उसकी जांच पूरी कर लेना ज़रूरी होगा बहरहाल बुध खाना नं09 या 3 या किसी और घर का मंदा प्रभाव उस साल या समय ही नेक होगा, जिसमें कि वह अपने स्वयं के स्वभाव के असूल पर नेक हो जाए मगर जन्म के पहले साल या पहले मास में उसका हीरा ज़हर से खाली न होगा। अगर होगा तो जन्म-मरण का झगड़ा समाप्त होगा।

सूर्य और मंगल के मुकाबले में बुध का फल गायब या सूर्य, मंगल के नेक के साथ अपना 1/2 समय चुप होगा, मगर छुपी शरारत ज़रूर करता ही होगा (मंगल नेक वही है जिसमें सूर्य हो) और यह सूर्य के साथ चुप होगा। सूर्य रेखा और चन्द्र रेखा दिल रेखा को मिलाने वाली त्रिकोण मंगल बद का प्रभाव देगी जिसका प्रभाव दिल की शक्ति पर होगा चाहे बुरी तरफ ही हो। बहरहाल दिल की शक्ति अधिक होगी।

बुध खाना नं01

(राजा या हाकिम, मगर खुदगर्ज शरारती बदनाम)

मिल तख्त औरत को कितना ही ऊँचा।
जवानी में तोहमत का खतरा ही होगा।।

फिक्र दुनियां छोड़ो बाबा, समय सुलझाने को है।
लड़के जैसी लड़की राजा, लेख जग जाने को है।

तबला चाहे न अपना उत्तम,	राग सबका दिल हरे।
रंग काला हो गर उसका,	पानी में पत्थर तरे।
बुध घर पहले पांचवें,	सूर्य का [1] परिवार।
बारिश धन की हो रही,	दिन न [2] गुज़रे चार।
शनि चलेगा बुध इशारे,	पाप [3] पड़ा खुद रोता हो।
धर्म पक्का न बेशक कदरे,	राज सेहत ज़र उम्दा हो।
बुध चीज़ों पर बुध चाहे मंदा [4],	तोताचश्म चाहे होता हो।
शराबी कवाबी बेशक कितना,	रिज़क मंदा न अपना हो।
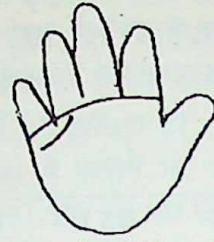
1.जब खाना नं07 में कोई ग्रह हो खासकर शनि या शुक्र हो। 2. जिस घर में सूर्य हो उस घर के संबंधित रिश्तेदार।
3. राहु- ससुराल, केतु- औलाद हर दो उसकी जान को रोते होंगे या मंदा असर देने वाले होंगे।
4. मंगल जब खाना 12 में हो तो बुध का खाना नं01 पर मंदा प्रभाव न होगा।
5. जाग उठने।

हस्त रेखा :- सूर्य के बुर्ज से बुध के बुर्ज की रेखा।

नेक हालत

1. आकाश में किसी भी चीज़ का न होना बुध का होना कहलाता है या खाली खलाव सूर्य का दायरा फर्जी चक्र इस ग्रह की हस्ती होगी।
2. खाली मंगल का फल चाहे निकम्मा कर दे मगर सूर्य का असर कभी मंदा न होगा बल्कि ऐसे आदमी का खून ऐसा होगा जो पारे की तरह गर्मी से ऊपर-नीचे चलता हो।
3. अपने स्वभाव का घूमता हुआ राजा होगा।
4. सूर्य की हैसियत पहले पुराने ज़माने की माया दौलत की कमी का फिक्र छोड़ो, अच्छे समय की निशानियां होने लगे, अब लड़कियां भी राज भोगेंगी और स्वयं भी सुख की सांस लेगा।
. जिस घर में सूर्य हो उसके घर के संबंधित रिश्तेदार थोड़े दिनों में धनी हो जाएंगे।
. राजदरबार से लाभ होगा।
7. धर्म से किसी कदर दूर रहने वाला होगा, मगर रिज़क आमदन कभी मंदा न होगा।
8. न सिर्फ शनि बल्कि अब सब ही पापी ग्रह बुध के इशारे पर चलेंगे।
9. पानी में पत्थर को तैराने की शक्ति वाला खासकर जब रंग काला हो। -जब खाना नं0 7 में कोई ग्रह हो खासकर शनि या बुध हो।
10 स्त्री, अमीर नेक घराने से नेक तथा उत्तम होगी। -जब सूर्य का संबंध हो।

क्याफा :- सूर्य के बुर्ज से बुध के पर्वत को रेखा।

मंदी हालत

1. जब बुध सोया हो, मंदा हो या मंदा कर लिया जाए ।
2. स्त्री का राज बेशक उम्दा या स्त्री के टेवे में चाहे राजयोग मगर उससे या उसकी जवानी में फिर भी बदनामी या तोहमत का डर ही होगा।
3. मंगल का असर कभी मंदा या बर्बाद हो तो बेशक मगर सूर्य का कभी मंदा न होगा।
4. शरारती बदनाम होगा।
5. जब मंगल खाना नं0 12 हो तो बुध का खाना नं0 1 पर कभी मंदा असर न होगा चाहे वह टेवे में कैसा भी मंदा हो।
6. मंदी हालत में बुध की चीज़ों पर मंदा होगा। अंडे खाने से स्वास्थ्य बिगड़ेगा लेकिन 1/2 आयु पर धन के लिए उत्तम होगा।
7. स्वयं बुध का अपना प्रभाव हरित रंग चीज़ें व्यापार हिकमत मंदे ही होंगे।
8. राहु- ससुराल, केतु- संतान का हाल मंदा ही होगा जिसकी निशानी वह शराब और मांस प्रयोग करने वाला होगा।
9. परदेश में रहने वाला रागी मगर लालची होगा जवानी का समय उत्तम होगा।
10 दांत 30 से कम या 32 से अधिक मंद भाग्य और बुध खाना नं0 12 का असर साथ होगा, जब 32 हो तो बुरा सुखन (मनहूस) बंद दुआएं, बुरी आवाज़ का मंदा असर ज़रूर होगा। खाना नं0 2 का असर साथ लेंगे।
11.मंदे बुध वाले को एक जगह पर टिक कर बैठना आवारा चक्र से अच्छा होगा।
12.बुध का अपना असर मंदा। तबला मंदा, मगर राजयोग दूसरों का दिल अपने काबू करेगा या वह दूसरों के लिए लाभकारी होगा। -जब अकेला बुध और खाना नं0 7 खाली हो।
13.नशेबाज़ी का सरदार, ज़ुबान का चस्का बर्बाद करेगा। -जब चन्द्र खाना नं0 7 में हो।

बुध खाना नं02

(योगी, राजा, मतलब परस्पत, ब्रह्मज्ञानी)

पता उसके पिता [1], अगर मौत चलता।
दुआएं पैदाइश, न लड़के की करता।।

अकेला बैठा सबको तारे,	*राज, योगी बनता हो।*
आठ 6 घर खाली होते,	*श्रेष्ठ[2] रेखा सिर पाता हो।*
राज नसीबा दुश्मन मारे,	*शुक्र, मंगल न मंदा हो।*
कलम ज़ुबान से मोती गिरते,	*ससुराल घराना तारता हो।*
आठ 6 वें ग्रह बैठा कोई,	*भरता तबेला कन्या हो।*
आयु 16 से 19 उसकी,	*पिता [3] न उसका बैठा हो।*
साथ चन्द्र का जब कभी मिलता,	*आयु पिता न शक्की हो।*
इज्जत गुरु 9-12 देता,	*आयु माता की लम्बी हो।*
शनि मिले तो सांप हो उड़ता [4],	*साथ भला न साली हो।*
भेड़, तोता हो जब कभी रखता,	*मंद कहानी होता हो।*
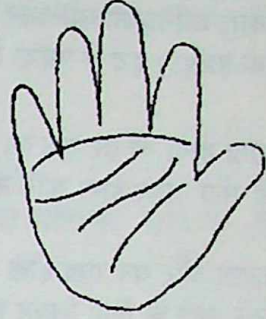
1. लखपति पिता बेटे (टेवे वाले) के लिए शून्य होगा।
2. दिमाग़ी खराबियों का कभी शिकार न होगा। चाहे पिता का सुख न होगा, मगर स्वयं पक्का इरादा होगा, राजयोग होगा। चाहे संतान से दुःखी मगर संतानरहित न होगा।
3. नाक छेदन करवा कर सिर्फ 4-5 दिन सुराख कायम रखा जाए।
4. उत्तम शुभ अर्थों में हर ओर उत्तम, मगर ससुराल मंदे ही हाल में होते जाएंगे।

हस्त रेखा :- **सिर रेखा जब जुदी होकर वृ0के पर्वत की ओर जाए।**

नेक हालत

1. लम्बी गहरी (कुशादा) बाहर को उभरा हुआ मस्तक का स्वामी होगा, जिसमें बुद्धिमता और साथ लाया हुआ स्वयं के भाग्य का नेक प्रभाव शामिल होगा। मगर वह अपनी ही तान पर मस्त योगी, राजा और कुछ-कुछ मतलब परस्त होगा। अपने लिए स्वयं वृ0के सोने का स्वामी, मगर शुक्र का फल मंदा होगा।
2. काफिर को मारने वाला, शत्रुओं को बर्बाद करेगा मगर राजाओं को परिवार की बरकत देगा।
3. अपनी स्वयं वृ0सोने की हैसियत मगर पिता के लिए सोने का कोढ़ या कली का टांका (मंदे अर्थों में), चाहे पिता का सुख न होगा मगर स्वयं अमीर होगा, उसकी अपनी आयु भी लंबी होगी। माता पर कोई बुरा असर न होगा। माता की आयु लंबी (लगभग 80 वर्ष) हो। उसे अपने आप पर भरोसा होगा, कबीलों का भारी बोझ उठाएगा। प्रयत्न से उत्तम जीवन का स्वामी होगा।
4. ससुराल, घर को तारने वाला गिनती का आदमी हो।
5. शत्रुओं पर विजयी, शुक्र, मंगल की चीज़ों का नेक असर होगा।
6. हाजिर जवाब होगा। -जब राहु खाना नं08 में हो, कनिष्ठा का सिरा चौड़ा हो।
7. उत्तम भाषण दे सकेगा। -जब राहु खाना नं09 में हो, कनिष्ठा बहुत लंबी हो।
8. ज़ुबान और कलम में शक्ति हो। -जब मंगल खाना नं08 हो, कनिष्ठ का सिरा चौकोर हो।
9. पक्की राय, शक्ति का स्वामी, ज़ुबान से इतनी शक्ति कि सब नुक्स छिपा लें। -जब मगल खाना नं09 में हो, कनिष्ठा बहुत ही लंबी हो।
10. सब को तारने वाला योगी राजा होगा। -जब बुध अकेला खाना नं02 में हो।
11. सिर की श्रेष्ठ रेखा, दिमागी खराबियों का कभी शिकार न होगा। -जब खाना नं06-8 खाली हो।
12. पिता की आयु कभी शक्की न होगी अगर चन्द्र स्वयं रद्दी न हो रहा हो तो न ही पिता की उम्र और न ही खज़ाना बर्बाद होगा। दिल की पूरी शक्ति होगी हो सकता है कि खूनी भी हो। -जब चन्द्र खाना नं012-8 से मदद दे।

क्याफा

सिर रेखा से रेखा उठकर ऊपर दिल रेखा में जा मिले।

13. रास्ता दिखाने वाला होगा। -जब केतु खाना नं0 8 हो, कनिष्ठा का सिरा नोकदार हो।
14. उत्तम बोलने की शक्ति वाला होगा। -जब केतु खाना नं0 9 में हो कनिष्ठा लंबी हो।

15.स्वयं की अपनी इज्जत मान और माता की आयु लंबी हो। -जब खाना नं0 9-12 में वृ0 हो।

16.अब बुध खाना नं0 2 में बैठा हुआ वृहस्पति- पिता पर कोई बुरा प्रभाव न देगा, अगर करे तो मंगल पर बेशक शरारत कर सकता है, जो ज़रूरी नहीं कि मंगल का बुरा करे। -जब खाना नं0 6 में मंगल अकेला या मंगल, वृहस्पति दोनों खाना नं06 में हों।

17.दस्ती काम करने वाला व्यापारी मगर पैसे का पुत्र हो। -जब सूर्य खाना नं0 8 में हो।

क्याफा :-अनामिका, कनिष्ठका की ओर झुक जाए।

18.उड़ता सांप (नेक हालत) हद से ज्यादा तेज़ होगा। -जब शनि खाना नं0 6 में हो।

मंदी हालत

1. बुध एक ऐसी राख होगा जो हर एक का मुंह मिट्टी से खराब कर देगा।
2. अब केतु का भी मंदा असर होगा यानि नर संतान की कमी, देरी या संतान से दु:खी। बल्कि संतान के सुख से रहित परन्तु नि:संतान न होगा।
3. हरी कनी से कटता और धन राख होता होगा। व्यापार सट्टा, जुआ फर्जी माली व्यापार का प्रभाव मंदा ही होगा। पिता लाखोपति होता हुआ भी टेवे वाले के लिए सिफ़र ही होगा या पिता का सुख न होगा। बल्कि 16 से 21 और आखिरी हद 34 से 36 के करीब पिता की मृत्यु होगी। अगर वह जीवित हो तो मरे से भी बुरी हालत का होगा। पिता का धन बर्बाद यानि पिता जब तक ज़िंदा रहेगा या जब तक पिता की कीमत देता जाएगा पिता ज़िंदा रहेगा यानि पिता की साल भर की कमाई के बराबर एक बार ही घाटा या हानि होता रहेगा और जीवित चलता रहेगा।

क्याफा

सिर रेखा जब शुरू में आयु रेखा से न मिले।

4. बुध की चीज़ें बहन, लड़की, बुआ सभी विष का प्रभाव देंगी। नाक छेदन 4-5 दिन तक कम से कम 96 घंटे सुराख कायम रहे तो सहायता मिलेगी, 16-21 साल से पहले पहल अधिक लाभदायक मगर बाद में भी नाक छेदन सहायता ही करेगा।
5. गौर खोज ध्यान में रहने का स्वामी अपने दिमाग़ पर पूरा भरोसा, मगरुर शरीर उत्तम, मगर धन का हल्का होगा। -जब सूर्य खाना नं0 8 में हो।
6. साली का साथ अशुभ जैसे शुक्र खाना नं0 12 और बुध खाना नं0 2 ऐसी हालत में यदि साली आकर टेवे वाले के पास या साथ रहने लग जाए तो पहले शुक्र (स्त्री) को बुध खाना नं012 में जाकर बर्बाद करेगा और फिर स्वयं बुध खाना नं012 के मंदे परिणाम होंगे यानि दोनों ही ग्रहों का खाना नं012 का मंदा फल होगा, मगर हर दो का मंदा या दोनों ही ग्रह बर्बाद इस तरह हो कि बाकी घर शुक्र खाना नं0 3-8-9 का मंदा हाल होगा यही हाल भेड़, तोता आदि पालने की पहली निशानी होगी। -जब खाना नं0 12-3-8-9 या शुक्र ऐसे घरों में जहां बुध मंदा हो।
7. बुध क्लाक टावर की घूमती चिड़िया होगा यानि उसके असर का एतबार न होगा। -जब शनि और सूर्य प्रबल हो।
8. अब पिता की जगह दादे पर बुरा प्रभाव होगा तथा वृ0क ी चीजों और रिश्तेदारों का भी ऐसा बुरा हाल होगा। -जब वृ0 खाना नं0 8 में हो।
9. बुध की मियाद 17 साल की आयु से शुरू होकर शनि का समय आने तक यानि 33 से 36 साल की आयु से पहले शनि 32 या 35 साल की आयु पिता की कमाई धन टेवे वाले को जद्दी मकान से पूर्वी-पश्चिमी (खाना नं012 के) कुएं में जाती होगी। चन्द्र की चीज़ें धर्म स्थान में देना शुभ होगी। -जब चन्द्र, शनि खाना नं012 में हो।

बुध खाना नं03

(थूकने वाला, कोढ़ी मंदा)

चरण घर में रखते, लगी कुछ न देरी।
चले सब गए, आयु बाकी है तेरी।।

पहले मंगल, बुध हरदम उच्च, दौलत कबीला बढ़ता हो।
असर चीज़े बुध उत्तम देगा, मंदे केतु जा मरता है।
4 शुक्र संतान में देरी, आयु लंबी रवि 11 जो।
मामा शुभ धन होगा, वैद्य दमे का उत्तम हो।
आठ चन्द्र से शुक्र मंदा, शनि, राहु भी जलता हो।

छठे-सात हो पापी बैठा,
अंधेरे जंगल में मुसाफिर [1] लुटते,
9 मरते हों 11 उजड़े,

खालू (फूफा) पिता, मामा मरता हो।
आग़ चक्र बुध जलता हो।
चार-पाँच 3 गरकता [2] हो।

1. अंधेरा जंगल = मंदा बुध, मुसाफिर = केतु, चक्र आग़ = मंगल बद।
2. 9+11+4+5+3 = 32 दांत जब तक कायम, उन घरों पर बुध मंदा असर देता होगा, मगर स्वयं बुध का अपना असर भला ही होगा। जब मंगल खाना नं01 में हो तो अपनी और भाई की किस्मत की सहायता के लिए वृहस्पति 9-11 और शुक्र खाना नं07 की संबंधित चीज़ों तथा कारोबार सहायक होंगे।

हस्त रेखा :- सिर रेखा मंगल नेक में समाप्त हो।

नेक हालत

1. अपने भाई बंद तथा बिरादरी वाले उसके अपने लिए ज़रूर सहायक तथा नेक प्रभाव होंगे।
2. दूसरों के लिए जद्दी कोढ़ी (बहुत मंदा) अपनी सहायता के लिए शेर के तेज़ दांतों का मालिक। मगर धन-दौलत के लिए अपने लिए कभी मंदा न होगा।
3. आयु 80 वर्ष से कम न होगी।.
4. बुध हरदम उत्तम प्रभाव देगा, दौलत कबीला बढ़ता होगा। बुध की चीज़ों का उत्तम फल होगा। अगर मंदा असर हो भी तो केतु बर्बाद होगा। अपनी तथा भाई के भाग्य की सहायता के लिए वृ0 खाना नं0 9-11 और शुक्र की संबंधित चीज़ों के कारोबार सहायक होंगे। -जब मंगल खाना नं0 1 में हो।
5. केतु (औलाद मामा) का उत्तम फल और दमे के मरीज का उत्तम हकीम होगा। स्वयं सूर्य और बुध दोनों की चमक या शान न होगी। मगर आयु ज़रूर लम्बी होगी। -जब सूर्य खाना नं0 11 में हो।
6. अब बुध का हर तरह से उत्तम फल होगा। -जब खाना नं0 3 का सोया बुध यानि 9-11 खाली हो।

मंदी हालत

1. अगर ज़ुबान में थथलापन हो तो बुध का असर बेशक मंदा न होगा वरना खाना नं0 3 का बुध जद्दी कोढ़ी जो किसी की जड़ काटने के लिए शेर के तेज़ दांतों या तलवार से अधिक बुरा करने की शक्ति का मालिक होगा और अपने ही कबीले पर भारी (जाती, खून से संबंधित) और खानदान (ताये, चाचे, दादा) में खून के संबंधियों पर मंदा होगा। जब तक मंगल नेक हो बुध की ज़हर से बचत होती रहेगी वरना मंदी किस्मत के चक्र में फंसा हुआ जगह-जगह का उजड़ा हुआ मुसाफिर होगा। खाना नं03 असल में बुध की अपनी राशि या दुनियावी हालत में एक भारी जंगल माना गया है। बुध खुद खाली खलाव आकाश का चक्र या फर्जी दिमाग़ी ढांचा होगा, संक्षेप में संसार के जंगल में मंदी आंधी चल जाने के समय वृक्ष जड़ों से कट कर इस कदर ऊंचे उड़ेगें कि सारा आकाश (बुध) ज़ुबान से थथलाता होगा। कोई इधर कटा, कोई उधर कटा कोई ऊंचा उड़ा और कोई वृक्ष किसी प्राणी की चोटी पर टकरा कर उसका नाश कर रहा होगा, थोड़े शब्दों में बुध खाना नं0 3 की हालत मंदी जिस कदर थोड़े समय नुक्सान पर समाप्त हो जाए भला ही होगा, क्योंकि यह जालिम लौंडी अपने खानदान के भाई-बन्धु (खाना नं0 3 के संबंधित रिश्तेदार) सबके सब गर्क करवा कर अपनी दांतों की चमक ज़ुबान के राग़ और छोटी आयु के भोलेपन की दिलदादा होगी।
2. अंधेरे जंगल में मुसाफिर लुटने की तरह भाग्य के मैदान में खराबियां होंगी। फ़िज़ूल फर्जी चक्र के दायरे में आकर प्राणी खराब होता और कष्ट में होता होगा। आग़ का चक्र (मंगल बद) का बुध जलता हो मंदे 32 दांतों वाला कई घरों को तबाह करेगा।
3. खाना नं0 9 में बैठे हुए ग्रह के संबंधित रिश्तेदार की चीज़ें और कारोबार उजड़े हुए, उजाड़ देने वाले असर के खाना नं0 11 में बैठे हुए ग्रह से संबंधित रिश्तेदार मुर्दा या मुर्दे की तरह मंदी हालत पैदा करने वाले। खाना नं0 3-4-5 में बैठे हुए ग्रह के संबंधित रिश्तेदार गर्क होते या गर्क करते होंगे। मुंह में दांत (आम तौर पर 32) कायम होने तक बुध का मंदा असर खाना नं0 9-11-4-5-3 पर होता रहेगा। 34 साल की आयु तक जोर पर होगा। 42 तक शरारत 45 तक मध्यम नर्म हालत में मंदा और 48 पूरे होने पर बुध बदजात के बुरे प्रभाव से छुटकारा होगा। हर हालत में बुध का खुद अपना प्रभाव टेवे वाले पर भला ही होगा।
4. मंदी हालत की किरणें केतु की चीज़ें काम संबंध संतान मामा पर सबसे पहले चमक देगी। इसलिए केतु कायम करना (कुत्ता आदि पालना या 3 सांसारिक कुत्तों की सेवा करना) सहायक होगा। अमूमन बुध की आयु 34-17-8, 1/2-4, 1/4 साल की आयु तक की संबंधित चीज़ें (जैसे पूजा पाठ पुरखों की शान धर्म ईमान की खानदानी स्वर्णमय नींव आदि) अमूमन खाना नं० 9 और खाना नं० 9 के ग्रह के संबंधित रिश्तेदार या कारोबार मौतों का शिकार या मातम का बहाना होंगे। खाना नं० 11 से संबंधित चीज़ें जैसी कमाई का खर्चा संबंधियों से पहले मकामी ऑफिसर की मेहरबानियां या धन की आमदन के दूसरे रास्ते और खाना नं० 11 के

रिश्तेदार या कारोबार, खाना नं० 9 की तरह मौतों का शिकार या मौतों का बहाना तो न होंगे, मगर उजड़ जरूर जाएंगे जैसा कि फलदार हरा-भरा जंगल उजड़ चुका हो। खाना नं० 4 की चीज़ें जायदाद जद्दी आय का फव्वारा, शांति, छुपी मदद, ऊपरी आमदन खाना नं० 4 के रिश्तेदार गर्क होंगे। यानि वह अपनी वर्षों से चली आई ही जगह छोड़ कर किसी ऐसी जगह चले जाएंगे जहां कि उन्होंने और उनके बड़ों ने जन्म नहीं लिया होगा अर्थ यह है कि मौतें भी नहीं होंगी, उजाड़ भी नहीं होगा। मगर जगह की तबदीली तो शायद ज़रूर ही होगी। इसी तरह ही खाना न० 5 और खाना नं० 3 का जवाब होगा। बुध से संबंधित चीज़ें मूंग की दाल आदि का प्रयोग आम तौर पर बीमारी का बहाना हुआ करेगा।

5. दक्षिण का दरवाज़ा बुध खाना नं० 8 का फल देगा और सब तरह खासकर स्त्री धन ससुराल की तबाही देगा। हर रोज दांत फटकरी से साफ करना सहायक होगा। रात के समय मूंग सालम पानी में भिगो कर प्रात: उसे जानवरों को डाल दें और 43 दिन तक करते जाएं व्यापार में सहायता होगी, पलाश ढाक के चौड़े पत्ते दूध से धोकर बाहर वीराने में, जिस जगह किसी का वहम न हो, दिन के समय एक गढ़े में डालकर और उसके ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा (शनि) रखकर मिट्टी डाल दें। जिस चीज़ से गढ़ा खोदें और जिस बर्तन में दूध लें उसे घर वापिस न लाएं मगर पत्थर का रंग जन्म कुंडली के हिसाब खाना नं० 9-11 के ग्रह के उल्ट न हो। इसी तरह यह पत्ते मकान के मध्य या पश्चिमी दीवार की तह में भी दबाने ठीक माने हैं। मगर घर से बाहर वीराने में दबाने अधिक शुभ हैं, घर में लगा हुआ पत्थर दूध से धोते जाना सहायक है। पीले रंग की कोड़िया जला कर उनकी राख दरिया में डाल देना भी बुध कोढ़ी से बचाएगा।
6. कलम का फल मंदा न होगा और चन्द्र का भी प्रभाव उत्तम होगा, चाहे चन्द्र बर्बाद हो रहा हो। —जब शुक्र कायम हो।
7. संतान में देरी होगी। —जब शुक्र खाना नं० 4 में हो।
8. शुक्र का फल मंदा, शनि, राहु भी बर्बाद होगा। —जब शत्रु ग्रह चन्द्र खाना नं० 8 हो और खाना नं० 6 में मित्र न हों।
9. पिता की माया, मामा चालू, घर सब बर्बाद हों। —जब पापी ग्रह खाना नं० 6-7 में हों।

उपाय

हर रोज फटकरी से दांत साफ करना सहायक। आए दिन की कयामत को दूर करने के लिए अच्छा होगा कि बकरी (बुध की चीज़ों) का दान कर दिया जाये, जिस तरह से गाय दान की जाती है। पक्षियों की सेवा सहायक होगी।

बुध खाना नं० 4

(राजयोग)

जन्म तेरे पर हंस माता क्यों रोई।
पता उसे लगा आयु बाकी न कोई।।

धन का तो दरिया चलता है,	*जो समाप्त नहीं होता।*
बहन, बेटी राज मिलता,	*दिल मगर होता नहीं।*
बुध दूजे था पिता पर भारी,	*चौथे माता पर मंदा हो।*
तीन-चौथे 6 चन्द्र साथी,	*हीरा अमूल्य दुनियां हो।*
चन्द्र, रवि घर 3-5-11,	*साथी गुरु 9 बैठा हो।*
पाप-पापी हो सबने छोड़ा,	*परिवार उम्र धन लम्बा हो।*
पाप मंदा खुद मर्द हो मंदे,	*सफ़र सलाही डोलता हो।*
माता मगर जब मंदिर [1] बैठे,	*सूखे घड़े ज़र भरता हो।*
उत्तम स्त्री ग्रह नर होते,	*पारस बना बुध होता हो।*
ऋण पितृ जब टेवे बैठे,	*माता दौलत घर जलता हो।*
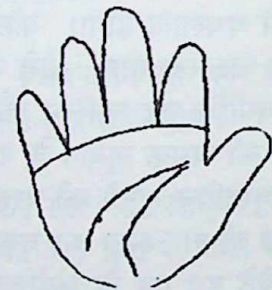
1. जब वृहस्पति उम्दा या चन्द्र खाना नं० 2 या खाना नं० 2 खाली हो।

हस्त रेखा

1. दिल रेखा और सिर रेखा मिल जाए। सिर रेखा, दिल रेखा को काटे। सिर रेखा झुककर चन्द्र के पर्वत पर समाप्त होगी।
2. सिर रेखा आखिर पर चन्द्र के पर्वत में आम हालत की जगह अचानक झुकती जाए, तो दिल की कमज़ोरी होगी।
3. अगर आम हालत में चन्द्र के पर्वत में जा निकले तो दरिया का पानी गहरा, बहुत धन या और ठंडा रेत संसारी-सांसारिक सुख सागर उत्तम और तोते, मैना की तरह मर्द, स्त्री की जोड़ी उत्तम तथा आबाद होगी

नेक हालत

1. हर एक की मां-बेटी से डरने वाला। दूसरों की मुसीबत अपने ऊपर लेकर मरने वाला। मगर सब्र वाला होगा।
   -जब स्त्री या नर ग्रह उत्तम हो।
2. जब अकेला ही बुध हर तरह से उत्तम और सबके लिए अपने साथ स्वयं पारस होगा। चन्द्र का सांसारिक फल माया धन उत्तम, मगर छुपा प्रभाव दिल की शांति और दूसरों की शांति के संबंध में मंदा ही लेंगे।
3. राजयोग (सरकार के घर का हिस्सेदार), बुध और चन्द्र हर दो ही उत्तम फल सूखे घड़े धन से भर देगा। 32 दांत हो तो भी मंगल बद या मंगलीक न होगा बल्कि सारे कुनबे को तारने वाला होगा। बुध और शुक्र दोनों का फल उत्तम होगा।
   -जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
4. परिवार धन और आयु की बरकत होगी और पापी ग्रह कोई बुरा प्रभाव न देंगे।
   -जब खाना नं० 3-5-11 में से किसी में भी सूर्य, चन्द्र और वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।
5. माता-पिता का सुख सागर लम्बा होगा। -जब चन्द्र खाना नं० 6-3 या खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा

मातृ रेखा जब सिर रेखा वृ० के बुर्ज के नीचे तक जाती मालूम न हो और सिर्फ शनि के बुर्ज तक ही रह जाए आयु रेखा होगी। जब मंगल के बुर्ज खाना नं० 3 से शुरू होकर चन्द्र के बुर्ज खाना नं० 6 में समाप्त हो तो मातृ रेखा हो। जब वृ० के बुर्ज से शुरू हो तो आयु रेखा, जब आयु रेखा वृ० की जड़ या खाना नं० 2 में या चन्द्र के बुर्ज में खत्म हो तो पितृ रेखा, ख्याल रहे कि वृ० के बुर्ज पर समाप्त हो तो सिर रेखा होगी।

6. राजयोग :- उजड़े मैदान भी आबाद और सिर रेखा का उत्तम फल और लम्बा समय उनमें प्रसन्नता होगी। सरकार के घर से हर तरह की सहायता और बरकत होगी। -जब गुरु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. इसके जन्म पर माता हंसी कि बेटा पैदा हुआ है, शुभ होगा, मगर जल्दी ही रोने लगी जबकि उसे पता लगा कि उसकी (माता की) तो उम्र अब बाकी नहीं रही। बुध की जानदार चीज़ें बकरी, तोता घर में आएंगे तो चन्द्र की चीज़ें माता, घोड़ा चलते बनेंगे या मर जाएंगे। माता की आयु शक्की ही होगी। अगर जीवित तो धन-दौलत की हालत और वह खुद मुर्दे से बुरी हो। मंदे बुध के समय सूर्य की चीज़ों का उपाय सहायक होगा, धन के लिए वृ० का उपाय सहायता देगा।
2. मर्दों की हालत मंदी होगी। -जब राहु मंदे घरों में या मंदा हो।
3. सफ़र और दूसरे सांसारिक साथ सलाहकार मंदे नतीजे देंगे। -जब केतु मंदा या मंदे घरों में हो।
4. स्त्री धन और आम गृहस्थी सुख सब कुछ जलता और बर्बाद होगा। -जब ऋण पितृ 2-5-9-12 में शुक्र, राहु या शनि पापी ग्रह हों।
5. आत्महत्या करने तक आमदा। -जब चन्द्र खाना नं० 6 में या मंदा बर्बाद हो।

क्याफा **खुदकशी की रेखा- सिर रेखा चन्द्र के बुर्ज पर बहुत झुक जाए, सिर रेखा और दिल रेखा मिल जाए, सेहत रेखा,** दिल रेखा **को काटे।**

बुध खाना नं० 5

(प्रसन्न, उसके मुंह से निकला ब्रह्म वाक्य उत्तम होगा, मासूम की आवाज़)

जुबान से पता नस्ल तेरी जो चलता।
उसे काबू फिर क्यों न तू अपने करता।।

चन्द्र हो या नर ग्रह, बैठे 9-3-11हो।
बुध आ निकले पाँचवें, दादा, पोता तारा।
शुक्र, चन्द्र हो जैसे टेवे, असर वही बुध देता हो।
पैसा गले का खज़ाना गिनते, खून नस्ल सब उत्तम हो।
असर शनि सब उत्तम होगा, संतान कभी न मंदी हो।
मदद ज़रूरी शुक्र देगा, चीज़ चन्द्र से तरता हो।
गुरु, चन्द्र जब टेवे मंदा, बुध [1] ज़हरी आ होता हो।
तीन-चौथे 7-9 ग्रह बैठा, राख [2] हुआ सब जलता हो।

1. चाहे पिता के लिए मंद भाग्य, मगर संतान पर कभी मंदा न होगा। बाकी 5 बचने वाले मकान की किस्मत होगी।

2. खासकर जब बुध टेवे में चन्द्र से पहले घरों में हो। मगर आमतौर पर चन्द्र या वृहस्पति 3 या 9 में उत्तम फल और सूर्य खाना नं० 9/3 के समय भाग्य 34 के बाद जागेगा। हर हालत में खाना नं० 5 का सोया बुध उत्तम फल देगा।

हस्त रेखा :- सेहत या तरक्की रेखा कायम हो ज़रूरी नहीं कि शुक्र के बुर्ज की जड़ तक हो। सही हालत यह होगी कि हथेली में खाना नं० 11 की जड़ तक ही हो।

नेक हालत

1. ज्ञान भंडार उसके मुंह से निकला ब्रह्म वाक्य (अचानक निकला शब्द) का उत्तम मगर शुभ फल होगा।
2. राजा को भी तार दे। टेवे वाले के लिए धन और परिवार का दाता, मगर सूर्य के असर के लिए गुड़ में रेत और राजदरबारी संबंध में गेहूँ की रोटी में रेत मिली हुई, वह भी निकम्मी या नहाने के बाद शरीर पर रेत पड़ जाए या पेशाब के बुलबुलों की तरह भाग्य का फर्जी उभार मगर आखिर पर फर्जी चक्र लगा देगा।
3. अब सूर्य और बुध दोनों का उत्तम फल होगा, चन्द्र से संबंधित चीज़ें तारने वाली होंगी।
4. शनि का फल उत्तम पाँच बाकी बचने वाले मकान, बाल-बच्चों की बरकत होगी।
5. संतान स्त्री और स्वयं अपना भाग्य सब उत्तम जब अपना घर गऊ घाट हो। सूर्य राजदरबार भी सहायता पर होगा और बुध का स्वयं नेक फल साथ होगा। -जब सिर रेखा की लम्बाई सिर्फ खाना नं० 11 तक हो और स्वास्थ्य रेखा कायम हो।
6. मनुष्यता की सिफते, जद्दी मकान का असर हर तरह से उत्तम होगा, गृहस्थी, संतान की हालत हरदम उत्तम होगी। -जब दृष्टि का घर खाली या खाना नं० 5 का सोया हुआ बुध हो।
7. 34 साल की आयु के बाद भाग्य का सूर्य चढ़ेगा। -जब सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति खाना नं० 3-9 में हों।
8. बुध खाना नं० 4-6-7-8-9 के ग्रहों को मार देगा। -जब चन्द्र खाना नं० 1-2-4 में बैठा हो या वह 6-12 में मंदा हो रहा हो।
9. जिस तरह गुरु (वृहस्पति), को ज्ञान (सूर्य) सहायक है उसी तरह ही लड़के (सूर्य), को तड़ागी (बुध) सहायता देगा।

मंदी हालत

1. खाना नं० 3-4-7-9-5 सब का प्रभाव मंदा और खाना नं० 1 के ग्रह की तो मिट्टी ही बोलती होगी। लेकिन यदि स्वयं ही चन्द्र या वृहस्पति खाना नं० 3-9 में हों तो उत्तम फल होगा।
2. चन्द्र की चीज़ों से सहायता होगी या चन्द्र की चीज़ें तारती होंगी और शुक्र (स्त्री) हर तरह से सहायक होगा। सूर्य की चीज़ों का फल उत्तम होगा। पिता के लिए बेशक मंद भाग्य हो, मगर संतान पर कभी मंदा प्रभाव न होगा।
3. गले में तांबे का पैसा खज़ाने की बरकत होगा।
4. बुध ज़हरीला प्रभाव देगा, इंसान और पशु में सिर्फ ज़ुबान बुध की चीज़ का फर्क है, मगर पता नहीं चलता कि अब उस ज़ुबान को क्या हो गया यानि स्वयं उसकी अपनी ही ज़ुबान खराबी का बहाना होगी।

-जब चन्द्र या वृहस्पति जब नीच या रद्दी, खासकर बुध टेवे में चन्द्र से पहले घरों में हो।

बुध खाना नं० 6

(गुमनाम योगी और दिल का राजा)

निकले सुखन मुंह से पूरा जो होगा।
ज़ुबान मीठी तेरी भला दूसरों का।।

श्रेष्ठ रेखा जब शुक्र उत्तम, बुरा मंगल न चन्द्र हो [1]।
भला गुरु, शनि, सूर्य बैठा, योग राजा ज़र मंदिर हो।
हाल शुक्र घर दूजा जैसे, चाल वही बुध चलता हो।
कायम बैठा ग्रह जो कोई टेवे, उत्तम असर सब देता हो।
बुध चीज़ें न होंगी मंदी [2], आयु छोटी चाहे कितनी हो।
लड़की हो जो उत्तर विवाही, सुखिया कभी न होती हो।
हकीम लालच जड़ अपनी कटता, सुखिया साबिर खुद फलता हो।
सूर्य, शनि, गुरु दूजे बैठे, जागीर, राजा धन बढ़ता हो।
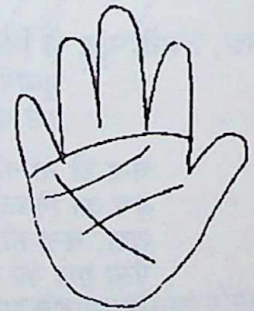
1.चन्द्र की जानदार चीज़ें (माता, घोड़ा आदि) का बेशक कोई फायदा तथा आराम न होगा, मगर चन्द्र की बाकी चीज़ों की पूरी मदद होगी।
2. दिमाग़ी कारोबार और व्यापार का पूरा फायदा, मगर हुनरमंदी दस्ती काम आदि हल्का ही फल देंगे।

हस्त रेखा :- बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो। सिर की श्रेष्ठ रेखा कायम हो।

नेक हालत

1. ऐसे टेवे वाला माता के पेट में आने के समय से ही अपना प्रभाव शुरू कर देगा।
2. बुध अब कुत्ते की तरह हर समय मालिक के पीछे दुम हिलाने वाला और वफादार लौंडी की तरह उत्तम फल देगा आखिरी समय ज़ुबान बंद न होगी और ज़ुबान का बोला शब्द अच्छा या बुरा ज़रूर पूरा होगा, हर एक पूछता होगा कि उसकी एक आवाज़ से कुल ज़माना ही क्यों गूँज उठा।
3. फ़कीरी से स्वयं बना अमीर और फूल की तरह जीवन का मालिक होगा। गुमनाम, राज, योगी और मन का राजा। खाना नं० 2 या शुक्र की हालत पर बुध का आम असर होगा। जो ग्रह कायम होगा, बुध उसी का असर देगा या टेवे में जब भी कोई ग्रह उत्तम हो (खासकर खाना नं० 2 के) बुध फौरन उसी की नकल करेगा। अमूमन जैसा शुक्र हो वैसा ही बुध का भी फल हो जाएगा।
4. बुध की जानदार चीज़ों तथा संबंधित रिश्तेदारों की आयु छोटी हो जो ज़रूरी नहीं कि छोटी ही हो मगर बुध की चीज़ें कभी मंदा फल न देगी। सब्र वाला रहे तो हरदम फलेगा। समुद्री सफ़र का परिणाम शुभ होगा।
5. दिमाग़ी काम व्यापार और विद्या से संबंधित कारोबार, अक्ल की बारीकी और दिमाग़ी काम का पूरा फायदा मिलेगा मगर दस्ती काम हुनर मंदी आदि हल्का ही फल देंगे। झगड़ों का फैसला अपने हक में होगा।
6. खेती की ज़मीन से फायदा लिखाई और व्यापार का शुभ फल हो।
7. ईमानदारी के धन की बरकत होगी।
8. शुभ कामों में बुध की चीज़ों (फूल, लड़की, कन्या) का शगुन शुभ होगा।
9. बुध का जाती फल बुध की जाती चीज़ों पर कभी मंदा न होगा सारी कुंडली में जब भी कोई ग्रह उत्तम फल देने वाला होगा, बुध भी फौरन उसी ग्रह के नेक फल का हो जाएगा या यूँ कहो कि बुध खाना नं० 6 के समय पर उत्तम ग्रह दो गुणा उत्तम हो जाएगा।
10. चन्द्र की जानदार चीज़ों के अलावा चन्द्र का बाकी सब नेक फल होगा। छापाखाना काग़ज आदि के कामों से फायदा होगा।
    –जब बुध अकेला दृष्टि खाली हो।
11. स्त्री अमीर घर की होगी। –जब शनि खाना नं० 9-11 में हो।
12. राजयोग धन और धर्म मर्यादा की स्वामी जागीरदार होगा।
    –जब खाना नं० 1 में सूर्य या वृहस्पति या शनि हो।
13. राजयोग काग़जी कामकाज छापाखाना आदि लोगों के काम के लिए (जैसे अखबार, रसाले आदि छापना) ईमानदारी का धन साथ दे। –जब वृहस्पति कायम हो।

मंदी हालत

1. बुध अब भाग जाने वाली लड़कीयों की तरह होगा जो जाती हुई मालिक के लड़के को भी उठा भागेगी। नमकहरामी करता होगा।
2. उत्तर का रास्ता या दरवाज़ा (जो नया बनाया होगा) मातम कुंड की तरह बुरा प्रभाव देता होगा, खासकर वो लड़की उत्तर दिशा में (जद्दी मकान से) विवाही गई हो कभी सुखी न होगी।
3. लालची हकीम हो तो खुद ही अपनी जड़ काटता और बर्बाद होगा।
4. खाना नं० 6 का बुध टेवे वाले की 34 साल की आयु में मंगल बद का असर देगा, माता मरे या बर्बाद हो जाए आदि।
5. जब बुध मंदा हो दूध का बर्तन बाहर वीराने में और जब चन्द्र सहायक हो तो गंगा जल की बोतल खेती की ज़मीन में दबाना सहायक होगा। –जब शुक्र रद्दी होवे।
6. माता छोटी आयु में गुजर जाए, घर बर्बाद हो। –जब मंगल खाना 4-8 में हो।
7. संतान 34 साल की आयु के बाद कायम हो, स्त्री के बाएँ हाथ पर चांदी का छल्ला सहायक होगा।
    –जब शुक्र खाना नं० 4 में हो, जब केतु मंदा हो।
8. नज़र कमज़ोर और शनि का जाती प्रभाव मंदा होगा बुढ़ापे में मंदा हाल और आयु का समय अक्सर 90साल होगा।
    –जब वृ०, चं० खाना नं० 2 या वृ० खाना नं० 11 और चं० 2 में हो।

बुध खाना नं० 7

(संसार के लिए पारस, लड़के के टेवे में दूसरों की तारे, लड़की के टेवे में बुध अपने लिए कभी मंदा न होगा)

मरे कफन पहने खुदा घर जो चलते।
भला फिर भी जाएंगे लाखों का करके।।

जागता बुध हीरा होगा, सोया [1] मिट्टी जलता हो।
जान चीजें बुध हो मंदा, साल 34 ज़हरी हो।
खाली थैली [3] लेख अपना, न ही शाही उम्दा हो।
साथ-साथी ग्रह जो बैठा [2], डूबा पत्थर तैरा हो।
चीजें शुक्र या चन्द्र जाती, उत्तम नेकी ब्रह्माण्ड की हो।
चन्द्र, शनि या मंगल पापी, नेक भला न कोई हो।
चन्द्र आया घर पहले टेवे, सफ़र समुद्र मोती हो।
बैठा शनि हो जब घर तीसरे, ससुर अमीर होता हो।
10वें पहले चाहे शत्रु ज़हरी, नेक प्रभाव सब उनका हो।
गुरु 9 वें घर मिट्टी उड़ती, भला शुक्र चाहे बैठा हो।
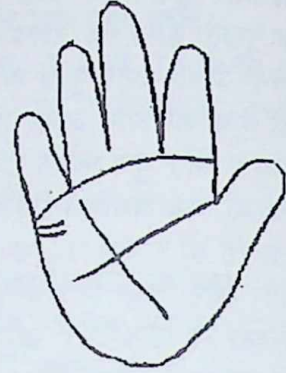
1. चाहे अक्ल की बारीकी साथ न देगी मगर सांसारिक शान तथा सुख सागर भला ही होगा।
2. सिवाए मंगल के जिसके साथ या ताल्लुक से यानि मंगल 1-7-8 हर दो मंदे और चन्द्र खाना नं० 7 भी दूध में मेंगने होगा। यानि 34 साल की आयु तक उसका स्वयं और खानदानी हाल बहुत हल्का, मगर हाजिर माल का व्यापार उत्तम फल देगा मगर स्वयं दौलत का रक्षक ही होगा।
3. जन्म रेगिस्तान बीकानेर की भांति रेतीले प्रांत में, दरिया नदी, नाले के निकट हो सकती है।

...त रेखा :- सिर रेखा की लम्बाई सेहत रेखा की हद तक हो। शादी रेखा बुध पर गिनती में दो हों।

...क हालत

1. बुध अब स्त्री की बफादार बहन जानिसार साली और मिट्टी में रेत की तरह एक ही जिस्म होकर दूसरे ग्रहों की मदद करेगा। संसार के लिए पारस होगा चाहे अपने लिए मिट्टी ही होना पड़े। लिखारी कलम का ऐसा जो तलवार को भी काटा दे, रास्ते चलते-चलते ही किसी का कुछ न कुछ तो ज़रूर ही बना देगा।
2. बुढ़ापा सदा उत्तम होगा।
3. हाजिर माल के व्यापार से लाभ, दस्ती काम से फायदा, फौजदारी मुकद्दमें या तकरार फसाद में उलझन कभी न होगी। तलवार की जगह कलम पर अधिक ज़ोर देगा। चाहे अक्ल की बारीकी साथ न देगी मगर खज़ाने की दौलत सदा सहायता पर होगी।
4. अपना कुल (खानदान) तारने वाला हीरा होगा। -जब जागता हुआ बुध खाना नं० 1 में कोई न कोई ग्रह ज़रूर हो।
5. समुद्री सफ़र मोती देंगे। -जब चन्द्र खाना नं० 1 में हो।
6. स्त्री का घराना अमीर हो जाएगा। -जब शनि खाना नं० 3 में हो।
7. इन ग्रहों का प्रभाव कभी मंदा न होगा स्वयं चाहे आपस में या बुध से लड़ते ही रहे।
   -जब खाना नं० 101 के ग्रह चाहे मित्र चाहे शत्रु हों।
8. शुक्र से संबंधित चीज़ों में शुक्र तथा बुध दोनों का अपना-अपना प्रभाव उत्तम स्त्री के इश्क में गर्क रहेगा जो उसे सुख ही देगा।

मंदी हालत

1. टेवे वाले की बहन, बुआ, साली या टेवे वाले की लड़की सब की सब बर्बाद दुखिया होंगी।
2. स्त्री की बिगड़ी हुई बहन (बुध) तेरे ही भाईयों से मिलकर तेरी ही स्त्री की मिट्टी खराब करेगी यानि मंदा बुध टेवे में मंगल और शुक्र का फल भी मंदा ही कर देगा। -जब केतु खाना नं० 1-8 में हो।
3. साहुकारी का फल भी उत्तम न होगा। मंदी रेत। बचपन का समय मंदा। मगर बुढ़ापा फिर भी उत्तम चाहे अपना भाग्य मंदा। फिर भी साथ के ग्रहों को तारता होगा। 34 साल की आयु तक शुक्र का भी फल मंदा होगा।
   -जब सोया हुआ बुध खाना नं० 1 से दृष्टि खाली हो।
4. रुखा गृहस्थ, मिट्टी उड़ती स्वयं बुध मंदे रेत की तरह बुरा फल देगा। चाहे गृहस्थी कारोबार के लिए शुक्र का फल नेक ही क्यों न हो। -जब वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

बुध खाना नं० 8

(बीमारी जहमत और लानत का घर, छुपा तबाही का फंदा माली हानि करने वाला कोढ़ी)

कब्र तक की लानत, फरिश्ता भी भागे।
जले आग़ ऐसी, नज़र जो न आए।।

साथ ग्रह नर बुध [1] न मंदा, न ही बुरा बुध मंगल हो।
मंद समय साल 34 का, हाल वही जो नर ग्रह हो।
मौत मंदी का बाजा बजता, खाली मंदिर जब होता हो।
नाग ज़हर ग्रह नीच में भरता, तीर मंदे ग्रह चलता हो।
बैठा कोई हो ग्रह जब दूजे, ज़हर भरे बुध लानत हो।
आयु गुरु पर बुध जो खड़के, न ही पिता न दौलत हो।
4 रवि या चन्द्र उत्तम, जहर धोता बुध अपनी हो।
छठा मंदा ग्रह मंडल मंदा, मुआफी गुरु को मिलती हो।

1. बुध के साथ खाना नं० 8 में नर ग्रह या मंगल खाना नं० 12 हो तो बुध का खाना नं० 8 पर मंदा प्रभाव न हो।

हस्त रेखा :- **सिर रेखा मंगल बद में समाप्त हो या अंत में दो शाखी हो जाए।**

नेक हालत

1. बुध खाना नं० 8 को अगर किसी नरं ग्रह का साथ मिले तो कभी मंदा न होगा और उसका वही उत्तम प्रभाव होगा जैसा कि नर ग्रह का हो। –जब नर ग्रह का साथ खाना नं० 8 में हो।
2. 34 साल की आयु में बुध अपना ज़हर धोएगा। अब केतु बर्बाद न होगा, माता की आयु और चन्द्र की चीज़ों का फल नेक होगा। –जब सूर्य चन्द्र या खाना नं० 4 उम्दा हो।
3. बुध का खाना नं० 8 पर मंदा असर न होगा। –जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
4. अब बुध और मंगल दोनों का खाना नं० 8 का फल उत्तम होगा हालांकि दोनों अकेले-अकेले खाना नं० 8 में मंदा असर दिया करते है। –जब मंगल खाना नं० 8 का साथ हो।
5. ज्ञानी होगा। –जब बुध खाना नं० 8 में हो, कनिष्ठका का सिरा गोल हो।

मंदी हालत

1. चाहे बुध अब सेहत के संबंध में टेवे वाले के अपने शरीर (खून और नज़र मंगल, शनि) की तो अवश्य मदद करेगा मगर दांतों और नाड़ियों के द्वारा (उनकी मंदी हालत करके) अपना ज़हर उगलता होगा। वह एक ताजा कोढ़ी फांसी की रस्सी या विषैले दांत की भांति चलता होगा।
2. ऐसी छुपी सज़ा मिले कि बड़े से बड़ा भी अज़ल का फरिश्ता चिल्लाने लगे मगर कसूर का पता कभी न चले। नतीजे पर अगर करे तो सिर्फ धन की हानि करेगा। अगर ज़्यादा नहीं तो 1/2 कर देगा या कभी ज़रूर कर देगा मगर शून्य कभी न होगा।
3. राजदरबार में अचानक धोखे की घटना से जिनका परिणाम सिर्फ माली हानि होगा। जैसे लड़की के दिल में आया जवानी का परिणाम क्या होगा, जब जन्म से ही कब्रिस्तान का बाजा बजने लगे, सोच कर कहने लगी, अपनी जेब न सही तो दूसरों को ही उल्टा लेंगे। होनहार काम में लगी मगर परमात्मा से विमुख नौजवान पर नज़र जा पहुँची। उसके मालिक से उसकी बदचलनी और लापरवाही की बेबुनियाद तोहमतें खड़ी कर दी। मालिक के शक को दूर करने के लिए फिर उसी नौजवान के पास हंसती-हंसाती आँखें दो चार करने लगी, जबकि वह दोनों मालिक की नज़र से गुजरे। बस क्या था उस बेहया लड़की ने अपना जूता खोला असली अर्थ 80० का 40० यानि 1/2 आय करने का पूरा कर दिखाया। वह गरीब इज्जत बचाने के लिए मांगी हुई कीमत देकर चलता बना मगर भेद न पा सका कि वह स्वप्न था या असल में कोई जागती हुई कहानी हो। उसी प्रकार राजदरबारी घटनाओं में नौकरी का एकदम 1/2 दर्जे पर चले जाना या धन की हानि होना आम होगा मगर बुध खाना नं० 8 की बेहया लड़की बिन बताए सिर काटने के लिए कभी अपनी जवानी में बूढ़ी न होगी।
4. **बुध की जानदार चीज़ें सब दुखिया बर्बाद और स्वयं बुध का प्रभाव मंगल की जानदार चीज़ों पर मंदा और बुध की निशानी के समय मकान की सीढ़ियां गिरती या गिरा कर नई बनाई होगी।** पूजा स्थान जब बदला जाए बुध का ज़हरीला चक्कर शुरू

होगा। जानों तथा कामों में तबाही का फंदा धन की हानि करने वाला। कोढ़ी ऐसी आग़ जो जलती नज़र न आए मगर हर तरफ राख ही राख करती जाए।

5. जब कभी भी वर्षफल के हिसाब बुध खाना नं० 8 में आए तो जन्म दिन शुरू होने से (पहले 34 दिन के समय और जन्म दिन शुरू होने के बाद का 34 दिन के समय में) 34, 34 दिनों के दोनों ही टुकड़ों में जब भी मौका लगे (एक दिन जन्म दिन आने से पहले एक दिन बाद में) ***मिट्टी का कुजा शहद या खांड भर कर बाहर बीराने में दबाना सहायक होगा। अगर हर तरफ पहले ही आग़ लग चुकी हो और 34 दिन की हर दो ओर की मियाद के अंदर-अंदर यह खांड वाला उपाय तो करे ही करे साथ ही मूंगी साबुत का, तांबे का बर्तन (घड़े की शक्ल) भरा हुआ जन्म दिन से पहले या बाद में दरिया में बहाना उत्तम होगा। अगर यह दोनों उपाय जन्म से 34 से 42 दिन पहले और बाद में 34 से 42 दिन के अंदर-अंदर दोबारा हो तो उत्तम फल देंगे। जन्म कुंडली में बुध खाना नं० 8 के समय काले सूर्मे से चूतड़ पर काली खाल कायम करना, छत पर वर्षा का पानी या दूध रखना या लड़की के नाक में चांदी का छल्ला डालना शुभ होगा मगर आतशी शीशा या लड़की के लाल रंग के कपड़े टेवे वाले के लिए हर जगह आग़ लगाने का बहाना होंगे।***
6. कभी भी भला प्रभाव न देगा। -जब बुध अकेला खाना नं० 8 में हो।
7. मंदा समय 34 साल की आयु होगी, मंदी मौत का बाजा बजता होगा और भट्टी का रेत जल रहा होगा। उस समय टेवे में जो भी नीच ग्रह हो उसके असर में साँप का ज़हर भरता और स्वयं उस ग्रह के असर को शुरू करने के लिए कमान का तीर बनेगा जो कि समय टेवे में मंदा हो। -जब खाना नं० 2 खाली हो वर्षफल का या कुंडली का हो।
8. वृहस्पति की आयु 16 से 21 में बुध का ज़हर पिता की आयु और उसकी धन-दौलत खतरे में होगी।
   -जब खाना नं० 2 में कोई न कोई ग्रह हो।
9. **बुध के बुरे प्रभाव के समय चन्द्र की चीज़ें उस ग्रह के रिश्तेदार या जानवर को दें जो वर्षफल के हिसाब खाना नं० 2 में आए और बुध भी उस समय खाना नं० 8 में हो।** उदाहरणत: ***जन्म कुंडली में चन्द्र खाना नं० 2 में आ गया और बुध उस समय खाना नं० 8 में बैठ गया, अब चन्द्र की चीज़ें केतु के जानवर या रिश्तेदार को देंगे, यानि खोए के 24 पेड़े (जिनमें खांड न हो) कुत्ते को देंगे या दरिया में डाल देंगे या किसी ऐसे रास्ते में एक तरफ करके रख दें जहां से कोई कुत्ता आदि उसे खा जाए। इसी तरह ही दूसरे ग्रहों का उपाय होगा जैसे बुध खाना नं० 8 में आए उस समय खाना नं० 2 में आ जाए शनि, मगर जन्म कुंडली में खाना नं० 2 में बैठा हो सूर्य अब सूर्य की चीज़ें (गेहूं, गंदम, गुड़ तांबा) शनि के जानवर को दे (यानि भैंस, मछली आदि को)। अगर जन्म कुंडली में खाना नं० 2 खाली हो तो वर्ष के अनुसार खाना नं० 2 में आए हुए ग्रह की बर्बादी के समय वही उपाय करें जो कि उस खाना नं० 2 में आए हुए ग्रह की मंदी हालत में उसके लिए खाना नं० 2 में दिया हुआ है।***

10 सिवाए वृ० सब ही ग्रहों के असर में मंदी हालत का चक्कर होगा। -जब खाना नं० 6 मंदा हो।

11.माता छोटी आयु में चल दे, वरना मां-बेटा दोनों का मंदा हाल होगा। संतान और मामा भी दुखिया होंगे।
-जब नर ग्रह खाना नं० 6, बुध खाना नं० 12-8 में हो।

12.पट्ठों के रोग हो सकते हैं। -जब खाना नं० 12 खाली हो।

बुध खाना नं० 9

(कोढ़ी तथा राजा एक साथ, कम उम्र मनहूस)

अजब भूल-भूलैया ज़ुबानी तमाशा।
दिखाते बहुरुपी, ले बिस्तर ही भागा।।

तीन पहले 6-7-9-11, चन्द्र, केतु, गुरु बैठा हो।
धर्म आयु धन कुल परिवारां, बुध कभी न मंदा हो।
ऋण पितृ गुरु एक अकेला, छठे, आठ 1011 जो।
अल्पायु का प्राणी होगा, उत्तम चाहे चन्द्र बैठा हो।
छुपे मंगल न रवि से भागे, न ही गुरु से डरता हो।
चन्द्र, केतु खाना नं० 11 बैठे [1], खाक ग्रह सब करता हो।
कारण किसी हो आयु लम्बी का, संतान, स्त्री सुख जलता हो।
साया 34 बुध उल्टा होगा, असर मंगल बद देता हो।
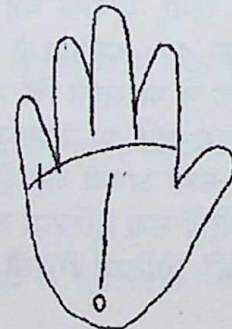
वर्ष चक्र में 11 [2] बैठा, *बुध ताबीजी आता जो।*
ज़हर भरी ग्रह मंडल टेवा, *पौधा जड़ समेत कटता हो।*

1. 7-15-25-37-49-66-76-96-108-120 साल की आयु।
2. अक्ल की नकल का बीज (अंडा) खाना नं० 9 में पैदा होता है जिसके अंदर की हालत खाना नं० 11 से मालूम होगी।

हस्त रेखा :- **सिर रेखा या धन रेखा बुध या भाग्य रेखा की जड़ में दायरा हो। शुक्र या बुध खाना नं० 9 सदा बुरा ही प्रभाव देंगे, बुध का वृ0 वही प्रभाव जो त्रिकोण △ का था।**

नेक हालत

अपने पेट के लिए चाहे रोटी न मिले मगर अपने कबीले का पालन ज़रूरी करता होगा। अक्ल की नकल का बीज (अंडा) खाना नं० 9 में पैदा होता है जिसके अंदर की हालत खाना नं० 11 से पता लगती है, यानि बुध का भेद खाना नं० 11 के ग्रह की हालत पर होगा। अगर खाना नं० 11 खाली हो तो वह बुध बेहया लड़की जो अपनी माता के संबंध में अपने जन्म देने वाले पिता के संबंध को भी बुरे संबंध का नाम दे दे तो उसी पिता से विषय करने की शान की मालिक हो।

1. बुध कभी मंदा न होगा बल्कि हर तरफ से खिला बाग होगा। खुश्क बादल भी मोती बरसा दे। धर्म उम्र धन उत्तम सदस्यों की बरकत होगी। *–जब खाना नं० 3-1-6-7-9-11 में चन्द्र, केतु, वृहस्पति हो।*
2. **दरिया के पानी से धोया, दरिया के पानी के छींटे देकर, पहला कपड़ा डालना दिन या दोपहर के समय मगर रात न हो। यदि चन्द्र खाना नं० 3-8-9-5 में हो तो बुध के अपने प्रभाव से आप बचाव होगा।**

मंदी हालत

1. इस घर में बुध बेबुनियाद और बहुत अधिक गहराई के खाली कुएं का महल होगा या ऐसे व्यक्ति के जन्म में भेद होगा जिसके जाहिर करने में उसकी अपनी ज़ुबान में भी थथलापन होगा।
2. मंगल या सूर्य दोनों के साथ से लसूड़े की गिटक की भांति भाग्य का हाल होगा (मंदे अर्थों में) और उम्र का मंगल बद या स्वयं बुध का समय 4-13-15-17-28-34 व साल, मास का दिन न कभी नेक और आयु के लिए ठीक होगा। चमगीदड़ के आये मेहमान जहां हम लटके वहां तुम लटको की तरह साथियों का हाल होगा जिसका उपाय नाक छेदन के बिना और कोई न होगा। अगर फिर भी चन्द्र की चलती चीज़ें या वृहस्पति पीले रंग में रंगी हुई चीज़ों से वह एक चलती नदी होगी। हरा रंग मंदा होगा जिसकी तूफानी हालत का कोई अंत नहीं होगा या वह जालिमों को फांसी देकर गिराने के लिए जादू का कुआं होगा जिसका अंत देखने के लिए सीढ़ी का न कभी प्रबन्ध होगा। यदि यह सब कुछ न हुआ तो वह न दो जहां होगा। अगर किसी तरह आयु वाला हो तो खानदान की परवरिश करने वाला नहीं तो 29 साल पिता दुःखी रहे। थथलाकर बोलने वाला हो। बुध जब आयु के 34 वें साल शुरू हो तो मंगल बद का असर होगा जिसका इलाज लोहे के ऊपर लाल की हुई गोली होगी। खाना नं० 9 में या खाना नं० 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला बुध यानि बुध जिस घर में बैठा हो उस घर का मालिक खाना नं० 9 में बैठ जाए। खाना नं० 9 के सब ही ग्रहों को (चाहे वह बुध के शत्रु हो या मित्र, बुध से कमज़ोर हो या ताकतवर) या खाना नं० 9 के उस ग्रह को जिसका कि बुध साथी ग्रह बन रहा हो। अपनी यानि बुध के खाली दायरे की तरह बेबुनियाद मुर्दा और निष्फल यानि जो कोई भी काम न दे या किसी भी काम न आ सके, कर देगा जैसे :-

जिस घर में बुध बैठा हो	उस समय खाना नं० 9 में बैठा हुआ कौन ग्रह बर्बाद होगा
6	बुध, केतु
1-8	मंगल
2-7	शुक्र
3-6	बुध
10-11	शनि
9	वृहस्पति
12	वृहस्पति, राहु
4	चन्द्र
5	सूर्य

3. उदाहरण के तौर पर घर से 9 मील कुएं के पानी का घड़ा भर कर वापिस चले। बुध बर्तन के तले में छेद कर देगा जिससे वापिस घर पहुँचने तक कपड़े खराब और पानी से खाली बर्तन होगा। हर तरफ निराशा यानि बुध अब भाग्य का कोढ़ी और राजा एक साथ होगा। वह ऐसा हवाई कोढ़ होगा जो स्वयं ही उड़ कर या चिमटे (वृ०, सू०, मं०) से उस नर ग्रह का उपाय करे जो नर ग्रह कि, खाना नं० 9 के ग्रह को या खाना नं० 9 में बुध के

साथी ग्रह हो जाने वाले ग्रहों या स्वयं बुध को ही बर्बाद करे। *फिर यहीं शरारत ध्यान में रखते हुए काम न बने तो स्त्री ग्रहों का उपाय, फिर भी काम न बने तो, नपुंसक ग्रहों की सहायता ले।* मगर उपाय से बर्बाद हो जाने वाले ग्रहों का ख्याल न भूल जाए।

मंदे असर का उपाय :-

4. *हर हालत में तथा धन तथा जीवन अगर कोई भी हो तो टेवे वाले की अपनी जान पर आयु तक होगी। स्त्री पागल की तरह आग में सिर जलाए और संतान मंदी तथा व्यर्थ हो। लोहे की गोल चीज़ जिस पर मंगल का रंग ही बुध की ज़हर से बचाएगा। नाक छेदन सबसे उत्तम और दरिया के पानी से धोया हुआ पीला कपड़ा शुभ, (जर्द रंग केसर का निशान) घर की तह ज़मीन में चांदी दबाना भला और जिस्म पर चांदी शुभ, गऊ ग्रास भी शुभ होगा। खुम्ब मिट्टी के बर्तन में डालकर धर्म स्थान में देना, राजदरबार के मंदे असर से बचाएगी। खुम्ब ऐसी सब्जी जो वर्षा के दिनों के बाद अपने आप पृथ्वी पर उग आया करती है और पका कर खाई जा सकती है।*
5. धोखा देना/दिया वचन पूरा न करना तमाशा दिखाते-दिखाते बिस्तर ही ले भागना ऐसे व्यक्ति का आम असूल होगा।
   -जब खाना नं० 11 में चन्द्र, केतु न हो।
6. अल्प आयु 8X8 = 64 साल की आयु का प्राणी होगा। चाहे आयु का मालिक चन्द्र कितना ही उच्च क्यों न हो वरना संतान में तथा स्त्री दोनों का फल मंदा होगा। -जब वृ० अकेला खाना नं० 8-6-10-11 में हो।
7. आयु तो अवश्य लम्बी होगी मगर शादी और संतान में खराबियां होगी। -जब खाना नं० 3-6-7 में चन्द्र या वृ० दोनों हों।
8. शरीर फसादी, ब्लड पायजन (Blood Poison) होगा। -जब खाना नं० 1 खाली हो।

क्याफा

हाथों की अंगुलियों के नाखुन हरे रंगे के होंगे।

9. पौधे जड़ों से उखाड़ देने की तरह खराबियां देगा, खासकर जब ताबीज की शक्ल में आए, जब किसी फकीर साधु से कोई ताबीज लिया जाए तो बुध ऐसे ताबीज के आने के दिन से आयु 17/34 दिन के अंदर ही अपनी ज़हर का सबूत देगा। इसके अलावा 76-96-108-120 साल की उम्र में बुध खाना नं० 11 में आएगा तो भी मंदा फल देगा।
   -जब टेवे के खाना नं० 9 का बुध वर्षफल के हिसाब 11 में आए।

10 बेवफा होगा, कनिष्ठा छोटी हो। -जब बुध अकेला खाना नं० 9 में हो।

बुध खाना नं० 10

(प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला, जी हजूरिया, शाम को रात कहे)

भला यार दोस्त न मक्कार होता।
बचेगा कहां तक तू खामोश सोता।।

तीन-चार-पाँच पहले चन्द्र, असर मकान तीन बाकी जो।
खाली मंदिर ज़र सफ़र समुद्र, सिदक भरा खुद मोती हो।
कान फटे पर राग़ जो मीठी, साँप आँखों से सुनता हो।
शनि भला हो सब कुछ उम्दा [1], वरना धोखा खुद मंदा हो।
शनि के इशारे बुध पे चलता [2], मंद उम्र खुद पापी हो।
साया वालिद भी शक्की होगा, भरोसा नज़र न अपनी हो।
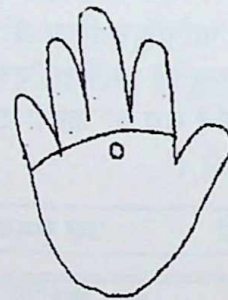
1. जब शराबी, कवाबी हो तो शनि मंदा होगा। पिता की इच्छा हो सुख दे या न दे। नज़र रहे या न रहे।

2. फैसला शनि की हालत पर होगा। मगर खुद बुध तो शनि के दरबार में पूरा जी हजूरिया होगा। अच्छे या बुरे हुक्म का एकदम लम्बी से लम्बी हद तक पूरा कर दिखाएगा। दो गुणा नेक या दो गुणा मंदा होगा।

हस्त रेखा :- बुध का दायरा शनि के बुर्ज पर हो।

नेक हालत

1. बुध अब सांप की सिरी, लोहे पर कली की पालिश की हैसियत का होगा, इसलिए उसकी चालाकी का जवाब खामोशी से न बन पड़ेगा।
2. ऐसा आदमी शरारती, मतलब परस्त, चालबाज़, जी हजूरिया, शाम को ही रात कहने वाला होगा। उसका राग इतना मीठा होगा कि कान कटने पर भी छोड़ा न जा सके।

3. तीन बाकी बचने वाले मकान, शेर दहाड़ने का प्रभाव होगा। जंगी चीज़ों का व्यापारी हो, मर्दों की बरकत, मगर स्त्रियों और बच्चों के लिए अशुभ हो। -जब चन्द्र खाना नं० 1-3-5-4 में हो।
4. समुद्र के सफ़र से मोती पैदा होंगे खुद शर्मसार तथा हुनरवान होगा।
-जब खाना नं० 2 खाली, हाथ की अंगुलियों के नाखुन गोल हों।
5. बुध, शनि का प्रभाव उत्तम यानि 6 सिरों वाले शेषनाग की तरह हर तरफ सिर पर साया और मदद हो, चाहे केतु बर्बाद हो जाए।
-जब शनि की हालत नेक हो।
6. बुध अब दो गुणा नेक होगा, सूखे घड़े मोतियों से भर देगा। -जब खाना नं० 2 नेक हो।

मंदी हालत

1. जब शराबी, कवाबी तो शनि मंदा और सांप के ज़हरीले टेढ़े दांत की तरह शरीर में घुसते ही जान निकाल देने वाला होगा।
2. ज़ुबान का चस्का खराबी की पहली निशानी होगा। असर में शनि अब बुध के इशारे पर चलेगा और बुध स्वयं सांप के दांतों के लिए ज़हर की थैली, लाख के महल, बारुद के पटाखे की तरह शनि की मक्कारी की बुनियाद होगा।
3. न सिर्फ 42 साल की उम्र तक बल्कि तीनों ही यानि राहु, केतु, शनि अपनी-अपनी आयु तक मंदे होंगे।
4. बुध अब जिस्म से जुदा कटी सांस की सिरी होगी जो शनि की हालत पर दो गुणा नेक या मंदे असर की होगी। वालिद के साये का कोई भरोसा न होगा, स्वयं अपनी नज़र का भी विश्वास न होगा। -जब शनि मंदा हो या कर लिया जाए।
5. बुध अब दो गुणा मंदा होगा जो आदमी को दोनों हाथों से मार-मार कर उसे दोनों आँखों से हर दो जहां में दुखिया कर देगा।
-जब खाना नं० 8 मंदा हो।

बुध खाना नं० 11

(धनी जन्म से, स्वयं बुध का ग्रह उल्लू का बच्चा और कोढ़ी मगर 34 साल की आयु के बाद हीरा मददगार होगा)

सोना भाव बढ़ता, लगे जब कसौटी।
समय नाश अपने अक्ल पहले सोती।।

बुध घड़ा कुंभ संसार[1] उल्टा, उम्र 34 तक मारता हो।
शनि, चन्द्र, वृ० संसार मारा, बुध आखिरी तारता हो।
साथ गुरु या चन्द्र बैठा, दूसरा खाली तीसरा मंदा हो।
सीप हीरा बन मोती देगा, तख्त चक्र [2] जब लाता हो।
बुध चक्र में शनि हो चलता, लेख गुरु पर होता हो।
बुध दबाया हो या मंदा, शनि, गुरु न उम्दा हो।
लगन 9 वें का 11 आए [3], ताबीज़ फकीरी बनता हो।
काम अक्ल न कोई दे, अपनी जड़ खुद काटता हो।
बाद मुसीबत मदद हो पाता, कमी अक्ल ज़र दौलत हो।
रोजे रोशन चाहे लेख न खुलता, खुशी मगर स्वयं रात को हो।

1.जन्म से 34 वर्ष तक ऐसा मंदा कि मनुष्य पानी में डूबे मुर्दे की तरह भाग्य का हाल होगा और चं०, श०, वृ० का फल मंदा करता रहे... मगर बाद में ऐसे मुर्दे के पेट से पानी निकालने वाले उल्टे घड़े की तरह सब ओर से डूबे हुए को जीवित प्रसन्न कर देगा- मंदी हालत में भ...
2. 11-23-36-48-57-72-84-94-10-119 साल की आयु।

हस्त रेखा :- **बुध से रेखा खाना नं० 11 बचत में हो।**

नेक हालत

1. शनि अब बुध के चक्र में होगा। 2. बुध का शुभ तथा बुरा होना वृ० की हालत पर निर्भर होगा।
3. 34 वर्ष की उम्र के बाद आराम मिलेगा और बुध तारने वाला हीरा होगा, धन की सब कमी दूर होगी।

क्याफा

बुध का दायरा जब तर्जनी तथा मध्यमा के बीच खाना नं० 11 में हो।
चाहे दिन का समय कम ही खुशी का होगा। वृ० और श० (ज़माने की हवा और संसार की) हर दो को अपने दायरे के चक्र में घुमाता होगा, मगर 34 के बाद रात शाहाना हाल सदा आराम तथा प्रसन्नता की होगी।

5. स्वयं शर्मसार और हुनरवार होगा हाथ की अंगुलियों के नाखुन गोल होंगे। -जब खाना नं० 2 खाली हो।
6. जिस वर्ष खाना नं० 11 का बुध खाना नं० 1 में आएगा, सीप में हीरे, मोती पैदा होंगे, 11-23-36-48-57-72-84-94-10-119 वर्ष की उम्र। -जब खाना नं० 3 मंदा हो।

मंदी हालत

1. अब बुध का ग्रह उल्लू का पट्ठा होगा, गले में तांबे का पैसा सहायक होगा जो इसको बेवकूफी के कामों में धन हानि करवाने से बाज रखेगा।
2. जब वर्षफल में खाना नं० 9 का बुध खाना नं० 11 में आया हुआ हो और टेवे वाला किसी फकीर से ताबीज़ ले तो बुध पूरा जड़ों से उखाड़ देगा यानि अति मंदा होगा।

बुध खाना नं० 12

(नेक लम्बी आयु अच्छा जीवन बिताने वाला मगर भाग्य के फेर से रात की नींद उड़ाने वाला जिसे दुखिया देखकर आसमान भी रो दे)

गई रात न आधी, वह क्यों रो रहा है।
लिखा सब फरिश्ता, उल्ट हो रहा है।
बुध भला न पुरुष के 12, बुरा टेवे न स्त्री हो।
साथ शनि, गुरु[1] हो जब मिलता, कुंड भरा बुध अमृत हो
वरना

चार, छठे 9-12 मारे [2],	*तीन दूजा नहीं बचता हो।*
गुरु, राहु खुद जड़ से कटते,	*सुखिया रानी न राजा हो।*
शनि, रवि कोई 12 बैठे,	*असर ज़हर न उन पर हो।*
साथ-साथी ग्रह शत्रु होते,	*ज़हर शनि में भरता हो।*
उम्र 25 गर शादी उसकी,	*गुरु पिता स्वयं रोता हो।*
बुध होगा तब नमक हरामी,	*मर्द माया सब डोलता हो।*
गुरु, शनि मच्छ रेखा, टेवा,	*असर उत्तम बुध देता हो।*
टेवा मालिक न ज़हर चाहे चढ़ता,	*चीज़ें ज़िंदा बुध दुखिया [3] हो।*
ग्रह घर 6 वां हर दो जलते,	*बुध ज़हर न घटता हो।*
मदद केतु से जिस दम पाते,	*औलाद दौलत सब फलता हो।*
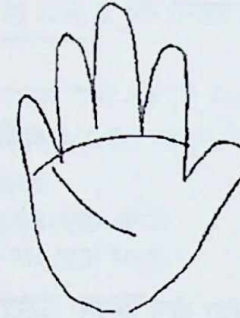
1. खाना नं० 12-2 में वृ० का साथ हो तो इज्जत ताकत मगर शनि के साथ से धन-दौलत परिवार मिलेगा।
2. बाकी 6 बचने वाले मकान का भाग्य तथा ग्रह खाना नं० 2-3-4-6-9-12 बर्बाद।
3. बहन, बुआ, लड़की, फूफी, मौसी अपने घर (टेवे वाले के) दुखिया मगर अपने ससुराल में प्रसन्न होगी। खाना नं० 12 के बुध का अपना स्वभाव देख लेना ही कारगर होगा। उदाहरणत: बुध का अपना स्वभाव जैसा बुध की भूमिका में दिया है।

हस्त रेखा :- बुध से रेखा खाना नं० 12 खर्च में हो।

नेक हालत

1. खाना नं० 12 में सिर्फ शनि तथा सूर्य उसके साथ बैठे उसकी ज़हर से बचते ही रहेंगे। बुध खाना नं० 12 साफ तौर पर दांत कहलाता है। मगर टेढ़ा दांत जिसके अंदर-बाहर जाने के लिए सुराख माना है सूर्य को बन्दर माना है और शनि से चीज़ें सांप गिनते हैं। बन्दर की सिफत है कि वह हर एक चीज़ को मुंह में डालने से पहले वह सूंघ लेगा। अगर विषैली हो तो पृथ्वी पर डाल देगा फिर भी यदि गल्ती हो जाए तो अपने जबड़ों के नीचे की थैलियों में हर एक खाने वाली चीज़ को डाल लेगा, एकदम निगलेगा नहीं। उसी तरह सांप के ज़हर की थैली उसके सिर में जुदा ही होती है और बुध का टेढ़ा दांत उस थैली से ज़हर निकाल कर किसी को मार देने का बहाना होगा। मगर वह थैली अपने आप ही ज़हर अपने से बाहर नहीं निकलने देती। इसी तरह पर बन्दर और सांप, सूर्य और शनि, बुध की ज़हर के साथ बैठे हुए बच जाते हैं बल्कि कई बार बुध विष के काम की चीज़ बना लेते हैं। मगर बुध खाना नं० 12 के समय खाना नं० 6 में बैठे सब ग्रह शनि, सूर्य समेत बर्बाद ही होंगे। अक्ल (बुध) के साथ अगर होशियारी, (शनि) का साथ खाना नं० 2-12 मिल जाए तो ज़हर से भरे हुए के लिए भी अमृत कुंड होगा जो मुर्दों को भी जीवित कर देगा।

2. अब बुध परिवार तथा धन-दौलत के सम्बंध में अमृत का भरा तालाब होगा।
-जब वृ० या श० खाना नं० 2-12 या वृ० या श० खाना नं० 3 में हो।
3. इज्जत शक्ति सांसारिक प्रसिद्धि सब कुछ होगा मगर धन-दौलत की चोरी या हानि या फालतू ही खर्चा हानि आदि होंगे।
-जब वृ० खाना नं० 2-12 में हो।
4. बुध भी अब उत्तम फल देगा जब तक शनि, वृहस्पति दोनों एक साथ मगर बुध से जुदा हो। टेवे वाले पर बुरा असर न होगा। मगर बुध की जानदार चीज़ें (बहन, बुआ, फूफी, लड़की, मौसी आदि) टेवे वाले के घर में दुखिया मगर ससुराल में सुखिया होगी।
-जब श०, वृ० खाना नं० 7 की मच्छ रेखा हो।

मंदी हालत

1. ऐसा प्राणी स्वभाव में एक पल तो शाबाश बढ़े चलो जवानों हमारे बैठे किस का फिक्र, दिलासे देता साथियों को आन की शान में ख्याली महलों के दिलासों में भड़काता होगा लेकिन उस समय दूसरे सांस में चिड़-चिड़ करता टूटे पत्थर की तरह कमरे के दरवाज़ें में घूमता न सिर्फ साथियों और अपने आप को बेआराम करता होगा बल्कि उसकी ज़ुबान की तेजाब भरी लहर से पड़ोसी भी चिल्लाते होंगे। ज़ुबान का बिना समय अपने मतलब के लिए बदल लेना और झूठ के हथियार से संगीन तलवारों को काला कर देना उसके बाएं हाथ का खेल होगा।

उसका दिमाग़ी ढांचा उसकी लिखाई के अक्षरों के दायरों को मिट्टी में दबे हुए जुगनू की तरह कर देगा, जो उसके साथियों के लिए मंदे धोखे से बरी न होगा।

दिमाग़ में आई हुई बात (यदि अच्छी या बुरी) को पूरा करने के लिए अपनी शक्ति और शारीरिक सिर से पैरों तक खर्च कर देगा बगैर यह सोचे कि मिट्टी का घड़ा कच्चा (बुध) पानी में डालने से पहले पक्का या कच्चा यानि बहुत विचार या समझने की कोशिश के बाद का परिणाम उसे कोई लाभ न देगा या मुंह के दांत तक निकाल लेगा। मंदी हालत की पहली निशानी शराब पीनी शुरू होगी जिस पर झूठ का रंग चढ़ता और आखिर पर दगा फरेब का पैमाना बढ़ता होगा यानि ज़ुबान से सच्चे और अंदर से झूठे होने का लुच्चेपन का ढंग आम होगा।

कोढ़ आम तौर पर एक के बाद दूसरे खानदान में चला जाता है मगर बुध खाना नं० 12 एक ऐसा कोढ़ और खालिस ज़हर होगा जो अचानक पल के पल में सारे शरीर को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दे।

दम दमे में दम नहीं, अब खैर मांगे जान की। बस समाप्त हो चुकी, रफ्तार सब ग्रहचाल की।।

2. बेवकूफ, नालायक मित्र जो बुरा करते समय किसी का भी अपने समेत खुद भला न सोचे, हर समय पर कोढ़ी।
3. चाहे कोई राजा हो चाहे निर्धन सब की ही रात की नींद अचानक उजाड़ने वाला। लूटे गए के किस्से सुनाने वाला। कारोबार पर मंदा होगा। मर्द के टेवे में बुध खाना नं० 12 शायद ही भला हो लेकिन स्त्री के टेवे में कभी बुरा नहीं गिनते। मगर जब मर्द टेवे में खाना नं० 12 का हो तो टेवे वाली स्त्री चाहे रानी क्यों न हो निर्धन दु:खी से वैसे ही तंग होगी जैसे कि उसका पति जो बुध खाना नं० 12 में दु:खी किया हो। यदि स्त्री का भी बुध खाना नं० 12 का हो तो राजा धनी होते हुए भी गृहस्थी हालत में मंदे होने से रात को कफन में सोते हुए बराबर वक्त पूरा हो। यदि जन्म कुंडली या वर्षफल में केतु उच्च तो सभी ठीक होगा। बुध की ज़हर घुल जाऐगा।
4. शुक्र के 2 भाग बुध और केतु माने गए। बुध ख़ाना नं० 12 में खाना नं० 6 (केतु का) को भी मंदा करेगा। इस तरह बुध, केतु बर्बाद अत: शुक्र भी पागल होगा। अत: संतान न होगी और माता-पिता को भी याद करते रहेंगे।
5. हवाई काम व्यापारी सच्चा मंदे असर वाला होगा।
6. 25 वर्ष की उम्र में शादी औरत व पिता दोनों रोते होंगे, मर्द माया दोनों बर्बाद उम्र का हर तीसरा वर्ष बर्बाद हो।
7. दांत 30से कम या 32 से अधिक मंदे असर की निशानी हो।
8. मंदे वक्त में बकरी भी दिल फाड़ देगी।
9. शरीर पर बुध की चीज़ें और सिर का ढांचा ज़ुबान, दांत नाड़ियों नाक का अगला हिस्सा खराबी का कारण होगा।
10. राहु का मंदा संबंध जेलखाना, पागलखाना, चोरी और आग़ की घटनाएँ गबन, बेईमानी से धोखा, फरेब, खोटे सिक्के आदि से धन हानि बेइज्जती और फ़िज़ूल जहमत बर्बाद ही हो।
11. केतु, दुनियां के तीन कुत्ते (बहन के घर भाई, ससुराल घर जंवाई, ननिहाल घर दोहता) या सांसारिक आम कुत्ता दरवेश आदि की सहायता शुभ। दूसरे सांसारिक बंधुओं की राय, सलाह नेक नतीजे देगा।, नाक छेदन उत्तम, ज़र्द चीज़ें सोने का साथ शुभ, फौलाद का छल्ला जिसको छोड़ या टांका न लगा हो खालिस फौलाद जिसे जंग न लगने पाए अपने शरीर पर कायम रखना शुभ होगा और

जिस कदर ज़्यादा और चमकदार साफ होगा उसी तरह लैम्प में साफ चिमनी या बिज़ली की लहर के लिए बल्ब का काम देगा और भाग्य की सोई हुई लहर को फौरन जगा देगा और एक शुभ समय कर देगा। मगर ख्याल रहे कि यह छल्ला किसी से मुफ्त न लिया जाए वरना फायदा न होगा। माथे पर तिलक की जगह केसर, ज़र्द (वृहस्पति) का तिलक लगाना भी सहायक होगा, मगर सब स्याह, राख का तिलक पिता पर भारी (बुध खाना नं० 2 का प्रभाव देगा) बुध का खाली बर्तन कोरा घड़ा आदि चलते पानी में बहाना सहायक होगा।

12.माता, मामा दुःखी, माता छोटी आयु में चल दे नहीं तो दोनों दुःखी।

-जब सूर्य या मंगल खाना नं० 6 में हो।

13.पिता की उम्र बर्बाद, बल्कि शक्की और उसके पिता की माया दौलत तबाह हो।

-जब वृहस्पति खाना नं० 6 में हो।

14.अपना खून भाई टेवे वाले के लिए मौत के यम और स्वयं बर्बाद होंगे।

-जब मंगल खाना नं० 6 में हो।

15.ससुराल (राहु 6) औलाद (केतु 6) पर जलती हुई रेत की वर्षा, अति दुःखी जीवन, मंदी हालत, विघ्न मौतें होंगी।

-जब राहु या केतु खाना नं० 6 में हो।

16.कम अक्ल जल्दबाज, मंदिर जाते रहना शुभ होगा।

-जब खाना नं० 2 खाली हो।

17.अगर जेलखाना नहीं पागलखाना तो ज़रूर नसीब होगा, बेशक कोई कसूर या बीमारी न हो। ऐसी हालत में मंदिर के अंदर जाकर सिर टेकना जहमत का बहाना होगा।

-जब राहु खाना नं० 8-12 में हो - हाथ की अंगुलियों के नाखुन बहुत छोटे हों।

18.माता भाग्य रद्दी, आत्महत्या तक की नौबत हो। -जब चन्द्र खाना नं० 6 में हो।

19.शनि की चीज़ें काम कारोबार रिश्तेदार सब मंदे असर देंगे।

-जब शनि खाना नं० 6 में हो।

20 बिना बर्तन के पानी तथा स्पंज आदि कायम रखना, रिज़क रोजगार और आमदन के लिए शुभ होगा।

-जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

21.राहु (ससुराल) के लिए मंदी, मौत दुर्घटना टक्कर आदि साधारण होगा। -जब राहु खाना नं० 2 में हो।

22.राजदरबार की आमदन के अलावा राजदरबारी संबंध भी खराब तथा मंदा कर दे।

-जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।

23.यदि चन्द्र खाना नं० 5 और शनि खाना नं० 9 हो तो चन्द्र और शनि सांसारिक संबंध में चलती हुई मोटरगाड़ी गिनने में बुध खाना नं० 12 या बुध, राहु खाना नं० 12 के समय अगर कोई नई मोटरगाड़ी खरीदी जाए और उसका रंग हरा (बुध का रंग) हो तो प्यार से लदी हुई लड़की की सवारी के समय ऐसे प्राणी के स्वयं अपने संबंध (अपने ससुराल संबंध जब बुध के साथ राहु भी हो) मोटर का हादसा होगा। जिसमें प्राणियों की मौत की शर्त न होगी मगर मोटर को उसके अगले हिस्से को पिस कर ज़मीन पर सजदा करना पड़ेगा।

उपाय

प्राणी को अपनी जान की रक्षा के लिए बुध खाना नं० 12 में दिया हुआ उपाय पहले करना सहायता देगा वरना मेंढक की तरह छलांगे लगाकर चलना पड़ेगा, अंग के कटने पर। ज़ुबान का काबू रखना, वायदे को पूरा करना, गुस्से की आग़ से दूर रहना बुध के ज़हर से बचाएगा।

****

शनि

जमाने में बदकार अक्सर जो रहते।
भले लोगों को बुद्धू अहमक है कहते।।

पाप नैया ना हर दम चलती,	न ही माला ग्रह कुल की।
शनि होता न मुसिफ दुनिया,	बेड़ी ग़रक थी सबकी।
साथ-साथी या पाप दृष्टि,	पापी शनि खुद होता हो।
लिखत केतु, बुध, राहु जैसी,	फैसला धर्म से करता हो।
पहले घरों दुम केतु होते,	इच्छाधारी [1] शनि होता है।
उल्ट मगर जब बैठा टेवे,	अजदहा खून बनता हो।
सांप शनि दुम केतु गिनते,	मुखड़ा राहु खुद होता हो।
ज़ुल्म रवि गो खुफिया होते,	कत्ल शनि दिन करता हो।
पहाड़ ठंड गुरु कायम धरती [2],	वैद्य धन्वतरि घर गुरु हो।
ज़हर फूंक घर शत्रु अपनी,	भला जाती [3] न स्वभाव जो।
औरत हामला पहले लड़के,	शनि देखे खुद अंधा हो।
बच्चे शुक्र न खुद कभी मारे,	सांप बच्चे [4] दो खाता हो।
रवि दृष्टि शनि पर करता,	बुरा शुक्र का होता हो।
शनि, रवि से पहले बैठा,	नर ग्रह [5] स्त्री उम्दा हो।
नज़र शुक्र में जब शनि आता,	माया दीगर खा जाता हो।
दृष्टि शुक्र पर जब कभी करता,	मदद ग्रह सब करता हो।

1. इच्छाधारी से मतलब हर तरह से हर तरह की मदद करने वाला।
2. चन्द्र।
3. काली चीजों (शनि की) पर शनि हमेशा बुरा असर देगा, जब भी कभी मंदा हो खासकर जब शनि ऐस घर हो जहां वो बच्चे मारता हो, जैसे खाना नं० 5 और टेवे में मंगल बद भी हो।
4. शनि खुद सांप मय बनावटी शनि एक ही वक्त दोनों इकट्ठे जब मंगल, बुध मंदा (राहु स्वभाव), वृहस्पति, शुक्र नेक (केतु स्वभाव)।
5. सिवाए सूर्य ।

शनि का स्वभाव

पहले घर में	बीच में	बाद में	प्रभाव होगा
राहु	शनि	केतु	खराब
राहु	केतु	शनि	खराब
राहु, केतु	केतु	शनि	खराब
राहु	केतु	शुक्र, केतु	खराब
राहु, शनि	केतु	केतु	खराब
शनि	राहु	केतु	खराब

1. ये भला-बुरा असर शनि बैठा होने वाले घर (सिवाय खाना नं० 2 और खाना नं० 10) की चीज़ों पर होगा। बाकी सब हालतों में अच्छा असर होगा।

आम हालत 12 घर :-

तीन गुणा घर पहले मंदा 1०, दो गुणा सदा तीसरे है।
एक गुणा घर छठे में मंदा, पर मंदा नहीं सदा ही है।
घर चौथे में सांप पानी का, पाँचवें बच्चे खाता है।
दूसरे घर में गुरु शरण तो, आठवें हैड क्वाटर है।
9-7 वें घर 12 बैठा, कलम विधाता होता है।
खाली कागज़ हो घर 1० वें, छठे स्याही होता है।
घर 11 में लिखे विधाता, जन्म बच्चे का होता है।
किस्मत का हो हरदम रक्षक, पाप स्याही होता है।

1. शराब खोरी पहली मंदी निशानी होगी, बेईमानी, फ़िज़ूल सोच-विचार तबाही का कारण होवे। काग़ रेखा का बीज जवानी इश्क होगा। नेकी फरामोश, झूठ का पुतला अपनी जड़ कटवा देगा। मंदी हालत में शनि की चीज़ों (काली रंग की चीज़ें) से प्यार होगा।

सामान्य हालत :-

1. संन्यास (उदासी और विराग) दुनिया छोड़ दो बाबा यह ज़जाल कुछ नहीं (दूसरी तरफ पकड़ लो सबको कोई कुछ नहीं या ये सब हमारे बैठे हुए क्यों उल्टे चल रहे है शनि के दोनों पहलू होंगे) या मकान जायदाद चालाकी की आँख से धन कमाना यानि 36 वर्ष की उम्र।
2. तमाम संसार के मकानों इंसानों की आँखों की रोशनी और हरेक की नेकी और बदी के आरामों के लिखने वाले एजेन्टो का मालिक शनि देवता जाहिरापीर होगा। नेक हालत पर जब अपने जाती स्वभाव के असूल के अनुसार नेक प्रभाव का हो तो वृ० के घरों (2-5-9-12) में बैठा हुआ कभी बुरा असर न देगा। शनि का एजेन्ट केतु होगा जो उसकी किश्ती का मल्लाह है।
3. बुध (कागज़) के दायरे में राहु, केतु की तरफ से जिस कार्रवाई की लिखत-लिखाई हो शनि उस पर धर्म से ठीक-ठीक फैसला करेगा। नेक प्रभाव के समय शनि मनुष्य जीवन के 1019-37 साल में उत्तम फल देगा।
4. अगर टेवे में 1-2-3 की गिनती के हिसाब से या दृष्टि के असूल पर पहले घरों में केतु हो और शनि बाद में तो शनि एक इच्छाधारी तारने वाले सांप की तरह मदद करेगा।
5. शनि अगर सांप माना जाये ता उसकी दुम केतु बैठा होने वाले घर में होगी और सिर उसका राहु बैठा होने वाले घर में गिना जाएगा। शनि का सिर राहु दुम केतु है। वृ० कायम हो तो शनि संसार में एक ठंडा हहा-भरा पहाड़ होगा खासकर जब चन्द्र भी ठीक हो, वृ० के घरों 2-5-9-12 में बैठा शनि का असर धन्वतरि वैद्य के असर का होगा।
6. गर्भवती स्त्री अकेले या घर में अकेले ही लड़के के सामने शनि का सांप खुद अंधा होगा और डंक नहीं मार सकता।
7. शुक्र पहले घरों में और शनि को देखता हो तो शनि के कीड़ों की तरह दूसरे साथी करीबी संबंधी मकान तथा शनि के सामान उसका धन खाते जाये।
8. छोटे बच्चों को अकेला सांप कभी ज़हर न देगा लेकिन अगर टेवे में 2 सांप वृ०, शु० बनावटी शनि (केतु स्वभाव अच्छा सांप) और मंगल, बुध एक साथ बनावटी शनि (राहु स्वभाव मंदा सांप) इकट्ठे हो तो बच्चों को भी डंक मार देंगे, खासकर जब शनि ऐसे घरों में बैठा हो जहां कि वह बच्चे खाता हो खाना नं० 5 या मंगल, बुध एक साथ राहु स्वभाव मंदा सांप होगा।
9. मंदी हालत के समय स्वभाव में अच्छा और बाहर दोनों ओर से काला हो चुका हुआ मौत का फंदा फैलाये दिन दहाड़े सबके सामने सारे बाज़ार कत्ल करने की तरह मंदा ज़माना खड़ा कर देगा। फकीर को भिक्षा देने की बजाय उल्टा उसकी झोली से माल निकाल ले लेगा। सबके धन की चोरी करता फिरता फिर भी निर्धन ही होगा। हरेक के आगे सवाली पर फिर उसी पर चोट मार देना ही असूल होगा। गंदा इश्क जनमुरीदी आम असूल या ढंग होगा। अंत में आग की मंदी घटनाएं और मौत तक मंदी मौत होगी। मंदी हालत में शनि का एजेन्ट राहु होगा जो विष का भंडारी है।

10 शनि जब कभी मंदा हो काली चीज़ों (शनि की) पर हमेशा बुरा असर करेगा। साथ-साथी या दृष्टि के द्वारा राहु, केतु किसी न किसी तरह भी शनि से आ मिलते हैं तो शनि पापी ग्रह कहलाएगा जिसकी नीयत उसके स्वयं स्वभाव के असूल से जाहिर होगी। मंदी हालत में शनि जन्म कुंडली में मंदे घरों का शनि जब दोबारा मंदे घरों में आ जाये तो इंसानी आयु के 9-18-27-36 साल ज़हरीली घटनाओं या भारी हानि से भरे होंगे। चन्द्र, राहु इकट्ठे या अकेले-अकेले जब खाना नं० 12 में हो तो शनि सदा मंदे प्रभाव का होगा चाहे टेवे में कैसा ही हो।

11.दो या ज़्यादा नर ग्रहों सूर्य, मंगल, वृहस्पति के साथ से शनि काबू हो जाता है और ज़हर नहीं उगल सकता, जिस कदर मुकाबले पर दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल का साथ बढ़ता जाये शनि और भी मंदा हो जाता है। शनि की चीज़ों का दान खैरात की भाँति जनता को देते जाता मुबारक होगा। जैसे बादाम तकसीम करना, लोहे का सामान अंगीठी, चिमटा, तवा आदि गरीबों या साधुओं को देना, मदद देगा। 10मज़दूरों को एक ही समय पर भरपेट खाना खिलाना भी ऐसी मदद देगा। मंदी हालत में अमूमन शनि बैठा होने वाले घर के दोनों तरफ ही दाएँ-बाएँ राहु, केतु बैठा होने के वक्त उनका भी मंदा प्रभाव होगा।

शनि बैठा हो	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राहु या केतु हो	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
का मंदा असर हो	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1

12.स्त्री ग्रहों के साथ या संबंध हो जाने पर शनि खाना नं० 1-7-4-10में अपने एजेन्ट राहु, केतु का बुरा असर देगा क्योंकि राहु, केतु को शनि की बुनियाद गिना जाता है। यही असूल शनि के साथ स्त्री ग्रह होने पर हर घर में हो सकता है अगर मुकाबले पर स्त्री ग्रहों के साथ उसके दुश्मन ग्रह बैठे हो तो शनि ऐसी हालत में स्त्री ग्रहों को तो कुछ न कहेगा मगर शत्रु ग्रहों को जड़ से मार देगा। ऐसी

हालत में शनि गर्भवती स्त्री के सामने अंधा सांप होगा जो कभी हमला न करेगा। जब स्वयं के स्वभाव यानि राहु, केतु शनि से पहले या बाद के घरों में होने के असूल पर शनि मंदा हो तो अपने शत्रु ग्रहों के घरों में बैठा हुआ उनको अपनी ज़हर से जला देगा।

खाना नं० 1 में बैठा हुआ सूर्य, मंगल को ज़हर देगा।
खाना नं० 3 में बैठा हुआ मंगल, को ज़हर देगा।
खाना नं० 4 में बैठा हुआ चन्द्र, को ज़हर देगा।
खाना नं० 5 में बैठा हुआ सूर्य, को ज़हर देगा।
खाना नं० 8 में बैठा हुआ मंगल, को ज़हर देगा।

जब टेवे में पहले घरों में राहु हो और खूनी अजगर शनि बाद में हो तो शनि खूनी अजगर मंदा होगा। पाप (राहु, केत) टोला का पापी राहु, केतु, शनि तीनों एक साथ ग्रहों का सरदार होने की वज़ह से यह ग्रह बदनाम ज़रूर है मगर अपने आप कभी पाप न करेगा।

13. अगर सूर्य गुप्त ज़ुल्म करे तो शनि दिन दहाड़े सबके सामने कत्ल करवा देगा।

14. वृ० के घरों में बैठा शनि कभी बुरा फल न देगा। मगर वृ० खुद शनि के घर खाना नं० 10में नीच फल का होगा। मंगल अकेला शनि के घर खाना नं० 10में बैठा हुआ राजा होगा। मगर मंगल के घर खाना नं० 3 में बैठा शनि नकद माया से दूर कंगाल करेगा। सूर्य के घर खाना नं० 5 में बैठा शनि बच्चा खाने वाला सांप होगा मगर शनि के घर खाना नं० 11 में सूर्य सबसे उत्तम धर्मी होगा। चन्द्र के घर खाना नं० 4 पानी में डूबा सांप अधरंग से मारे हुए को भी ठीक कर देगा। मगर शनि के हैड क्वाटर खाना नं० 8 में जो मंगल की मौतों का घर है चन्द्र नीच होगा। शुक्र ने शनि से आंख उधार ली है अत: ये शुक्र के घर खाना नं० 7 में उच्च होगा। राहु बदी का एजेन्ट है मगर राहु के घर खाना नं० 12 में शनि हरेक का भला करने वाला होगा। केतु नेकी का फरिश्ता मगर केतु के घर खाना नं० 6 में शनि चाहे मंदे लड़के और खोटे पैसे की तरह कभी न कभी काम आ ही जाने वाला होगा, प्राय: भयानक और अशुभ ज़हरीला सांप होगा।

15. राहु अगर शनि का सिर यानि राहु पर एतबार या राहु सांप की मणि हो तो केतु उसकी दुम या केतु पर भरोसा या कान, पांव और केतु का विषय उसकी रुह होगा यानि अपनी माता, भैंस शनि के विषय के वक्त उसका नर शनि पहचान लेगा, शनि देखे राहु को तो हसद से तबाह हो। राहु उल्ट चल रहा होगा मंदा प्रभाव देगा। राहु देखे शनि को यानि राहु का नीला थोथा जब शनि के लोहे पर लगे तो हमेशा ही तांबा सूर्य बन जायेगा।

16. शनि की आँखे, शनि टेवे के हर ग्रह को नीचे लिखी किस्म की आँखों से देखेगा।

खाना नं० 1 – इस खाने में शनि हो तो एक आंख से खाना नं० 7 में बैठे ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 2 – इस खाने में शनि हो तो 2 आंख से खाना नं० 8-12 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 3 – इस खाने में शनि हो तो 3 आंख से खाना नं० 5-9-11 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 4 – इस खाने में शनि हो तो 4 आंख से खाना नं० 2-8-1011 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 5 – इस खाने में शनि हो तो शनि अंधा सांप होगा जब खाना नं० 10खाली हो। लेकिन खाना नं० 10में वृ० या केतु हो तो नर औलाद पर औलाद होगी जीवित रहेगी।
खाना नं० 6 – इस खाने में शनि हो तो शनि रात का अंधा सांप होगा जब खाना नं० 2 खाली हो।
खाना नं० 7 – इस खाने में शनि हो तो हवा की आंखों में मिट्टी डालने की शक्ति का स्वामी होगा जब शनि कायम या जागता हो।
खाना नं० 8 – इस खाने में शनि हो तो शनि मौत भरी दुष्टता की आंख होगा जब खाना नं० 3 में पापी या खाना नं० 3 खाली हो।
खाना नं० 9 – इस खाने में शनि हो तो शनि जले हुए को हरा-भरा करने का स्वामी होगा जब खाना नं० 2 में शनि के दोस्त हो।
खाना नं० 10– इस खाने में शनि हो तो शनि चारों तरफ देखने वाली आंख से खाना नं० 2-3-4-5के ग्रह के संबंधी को देखता होगा।
खाना नं० 11 – इस खाने में शनि हो तो शनि बेगुनाह और मासूम बच्चे की आंख का स्वामी होगा जब खाना नं० 3 में पाप या खाना नं० 1 में शनि के मित्र ग्रह हो।
खाना नं० 12 – इस खाने में शनि हो तो शनि बीमार को स्वास्थ्य; दुखिया को सुखी, उजड़े को आबाद करने वाली आंख का मालिक होगा जब खाना नं० 2 में शनि के मित्र ग्रह या शुक्र, मंगल कायम हो।

शनि की अदालत :-

1. राहु अगर अपराधी का चालान पेश करने का शहादती (Prosecution-Witness) तो केतु उसको बचाने के लिए सहायक वकील (Defence Council) होगा। दोनों के बीच बात का धर्मीया फैसला करने के लिए शनि हाकिम समय की कचहरी का सबसे बड़ा जज़ होगा।

2. पापी ग्रहों (राहु, केतु, शनि) ने ही संसार पापी गुनाहगारों को सीधे रास्ते पर लाने और गृहस्थी संयम को कायम रखने के लिए अपने ही पंचायत ठहरा रखी है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वृ० ने (जो सबका गुरु है)। शनि के खाना नं० 11 (कुम्भ राशि) में अपनी धर्म अदालत स्थापित की है जहां कि शनि अपनी माता के दूध को याद करके (कसम खाकर वृ० का हलफ (धर्म और धार्मिक) वायदा उठाने के बाद राहु या केतु की शहादत के मुताबिक फैसला करता है।

क्याफा

अंगुली की पोरियों पर गेहूं, जौ का निशान हो तो कुल निशानों से 12 घटाएं शेष बचे उसी संख्या वाले घर में शनि का दिया फल होगा मसलन कुल निशान यदि 17 हो 17-12 =5 यानि अब शनि खाना नं० 5 में है और उसी तरह फल देगा, सूर्य का सितारा शनि के बुर्ज पर या सू0के बुर्ज पर शनि की ओर हो या शनि से रेखा सूर्य बुर्ज पर चली जाये।

शनि खाना नं० 1

(जब मंदा हो तो 3 गुणा मंदा वरना तीनों काल उत्तम बचपन, जवानी, बुढ़ापा)

भरे जन्म पर जो खजानेदवामी (पुराने)।
फरिश्ता अज़ल बोल देगी नीलामी [1]।।

शनि, शुक्र घर पहले बैठे, काग़ रेखा [2] कहलाती है।
मालिक चाहे हो तख्त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।
घर सातवां दस खाली [3] होते, मच्छ रेखा [4] बन जाती है।
माल माया सब दुनिया बढ़ते, उम्र सुखी कर जाती है।
काग़ रेखा फल काम जद्दी का, भाग चन्द्र भी उड़ता हो।
सामान शनि उत्तम होगा, मदद रवि जब पाता हो।
पाप मंदे शनि होगा मंदा, मंदा असर घर तीसरा हो।
मर्द माया फल काग़ रेखा का, उम्र मगर खुद लम्बी हो।
शराब खोरी या इश्क जवानी, मकान शनि जब बनता हो।
पापी उम्र तक राज फकीरी, वैद्य बीमारी मिलता दो।
असर शनि हो तेल मिट्टी का, आग़ चौथे पर बैठी जो।
जद्दी दौलत ज़र एकदम उड़ता, जलती मिट्टी सब पापी हो।
सात रवि 1011बैठा, शुक्र भला न होता हो।
शनि, मं0दो हरदम मंदा, खबीस बकारब रोता हो।
बुध टेवे घर 7वें आया, असर केतु 7 देता हो।
माता-पिता घर लाखों माया, भला चन्द्र जब होता हो।

1. मां-बाप तो बेटे की खुशी के बाजे बजाने में लगे हों मगर अज़ल का फरिश्ता उन सब चीज़ों की, जो कुछ भी पैदा होने के दिन घर में मौजूद हों, नीलामी की लिस्ट बनाता होगा या जन्म दिन का सब धन सामान व शनि उजड़ कर ही खत्म या नीलाम हो।
2. जब बुध मंदा तालीम अधूरी निशानी होगी।
3. जब राहु या केतु हो खाना नं० 4 या 10 या जब बुध या (शुक्र हो खाना नं० 7 में/शनि हो खाना नं० 7 में) व (जब शनि खाना नं० 1 में/शुक्र खाना 1 में हो) तो दोनों घर खाली गिने जाएंगे।
4. साथ ही मंगल भी खाना नं0 6 से 12 में हो तो मच्छ रेखा होगी, सिर्फ धन-दौलत बढ़ेगा घर के सदस्य और उनकी जाती कमाई की बरकत की कोई शर्त न होगी। मच्छ रेखा के समय शनि खुराक रिज़क व भगवान् की तरह पालने की हिम्मत का स्वामी होगा। शुक्र (लक्ष्मी) साथ लाए खज़ाने का दाता होगा वरना खाना नं० 7 खाली होते हुए भी काग़ रेखा होगी। उपाय वास्ते माली हालत सूर्य की मदद या बंदर पालना, उपाय वास्ते सेहत मीटे वाले दूध से बढ़ की जड़ की मिट्टी का तिलक लगाना, उपाय वास्ते कारोबार काला सुरमा तह ज़मीन में दबाना।

हस्त रेखा

सूर्य पर्वत पर शनि या + का निशान हो ।

नेक हालत

1. शनि अब एक आंख का मालिक होगा। अगर दयालु हुआ तो धनी बना देगा। अगर उल्ट हुआ तो पेट के लिए रोटी तक खत्म करा देगा।
2. शनि/शुक्र खाना नं० 1 में बैठा होने के समय रिज़क और माया दौलत पर असर करता है। चाहे मच्छ रेखा का उत्तम प्रभाव हो, चाहे काग़ रेखा की हालत में कौवे के खुराक की बदनसीबी गले लगे।
3. नेक हालत में शनि से संबंधित सामान का फल उत्तम होगा।

4. अब बुध अपने असर की बजाय केतु खाना नं० 7 का असर देगा, अब बहन या लड़की की जगह लड़का पैदा होगा, माता-पिता के घर माया लाखों में होगी खासकर जब चन्द्र उत्तम हो। पापी ग्रहों राहु, केतु, शनि की उउ तक।

–जब बुध खाना नं० 7 में हो।

5. शनि अब मंगल की खाना 6 से 12 होने वाली शर्त पर माली मच्छ रेखा का असर देगा। लेकिन अगर मंगल नेक न हो या 6 से 12 की हदबन्दी से बाहर हो तो भी शनि ज़रूरी नहीं कि काग़ रेखा का ही असर दे। लेकिन मच्छ रेखा माली का प्रभाव भी तो सिर्फ उस वक्त देगा जब उसके एजेन्ट राहु, केतु दोनों आ मिले यानि या तो वो दोनों राहु, केतु खुद अपनी मुश्तरका मिलने की मियाद यानि 45 साल की उम्र की हदबन्दी में आ जाए या उन दोनों में से कोई शनि को दृष्टि द्वारा आ मिले या शनि पापी ग्रह की तरह हो बैठे अर्थात् शनि का ही पापी बन कर चलना पाप की हदबन्दी में चाहे बेईमानी या ईमानदारी के जिस तरह भी हो सके धर्म की हालत में नेक प्रभाव देगा क्योंकि बेईमान या पापी का धर्म माया को इकट्ठा करना ही हुआ करता है।

–जब राहु, केतु खाना नं० 4-10में हो।

मंदी हालत

1. शरीर पर हद से ज्यादा बाल हो तो निर्धन होने की निशानी होगी। माता-पिता जन्म वक्त खुशी के बाजे बजवायें मगर वो अज़ल फ़रिश्ता 18 साल की आयु तक उनका सब कुछ बिकवा देगा। शराब खोरी या इश्क जवानी बहाना होंगे या शनि का मकान या ऐसा मकान जिसका पश्चिम को दरवाज़ा हो जब बने शनि मंदा प्रभाव दे, बल्कि 36-42-45-48 उम्र तक राज फकीरी, वैद्य बीमारी इकट्ठे ही चलते होंगे। साधारणतया: मच्छ रेखा बनाये काग़ रेखा उड़ाये। क्या कुछ जवाब देगा। सब कुछ कब तक जवाब होगा। शनि की मियाद तक शनि की काग़ रेखा का पूरा मंदा फल होगा। या यूं कहे कि शनि अब 36 से 39 और कई बार राहु, केतु की आखिरी मियाद राहु 42, केतु 48 दोनों एक साथ 45 साल की उम्र तक मकान जायदाद धन राजदरबार सब तरफ मंदा ही फल देगा।

2. पाप टेवे में *ही जब मंदी काग़ रेखा बन जाती है। मालिक चाहे हो तख्त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।*

3. विद्या तो विशेषकर अधूरी होगी।

4. ज़मीन में सुरमा दबाना, बढ़के वृक्ष की जड़ के दूध से तिलक लगाना विद्या, बीमारी में दु:ख में सहायक होंगे। धन की मंदी हालत में सूर्य की मदद सहायक होगी।

5. शनि अब 3 गुणा मंदा होगा, विद्या स्त्री धन और स्त्री की मंदी हालत बल्कि वह दुखिया ही होगी। चन्द्र भाग भी मंदा होगा।

–जब राहु, केतु मंदे हो या खाना नं० 7 में कोई ग्रह हो।

6. जद्दी कारोबार से मर्द और माया पर काग़ रेखा का फल होगा। जन्म लेते ही नीलामी का ढ़ोल बजने लगे, बेशक 9 ही ग्रहों का प्रभाव ज़हरीला पैदा हो मगर टेवे वाले की अपनी उम्र ज़रूरी लम्बी होगी।

– जब बुध मंदा हो।

7. शनि अगर मिट्टी के तेल का असर दे तो ऐसी ग्रहचाल के समय खाना नं० 4 में बैठे हुए शत्रु ग्रह की चीजें कारोबार या रिश्तेदार इससे संबंधित बुरा प्रभाव देंगे। पिता की हालत मंदी होगी। जद्दी धन-दौलत उड़ती और शनि, राहु, केतु तीनों का ही फल मंदा होगा स्वयं चोर फरेबी (चूल्हे की तरह) हो सकता है।

–जब खाना नं० 4 में शनि के शत्रु सूर्य, चन्द्र, मंगल या शुक्र के दुश्मन सूर्य, चन्द्र, राहु कोई भी ग्रह साथी सिवाय सूर्य, वृहस्पति।

8. राजदरबार का फल शक्की बल्कि मंदा ही होगा। –जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।

9. शुक्र का फल भला न होगा बल्कि मंगल का प्रभाव भी मंदा और स्वयं अपने भाग्य की मंद भाग्यता और खबीस वाअकारब सब दुखिया होंगे।

–जब खाना नं० 1011 में सूर्य हो।

10 चोर, फरेबी, बेईमान, झगड़ालू, धोखेबाज़। संतान का दु:ख, आय खराब, आंखों में नुक्स आदि।

–जब मंगल बद हो।

शनि खाना नं० 2

(गुरु शरण)

पांव नंगे मंदिर, जो तू भूल कहता।
जहर बाकी कोई, बला का न रहता।।

सास-ससुर घर आग़ हो जलती,	*शादी लग्न जब होता हो।*
भली जगह जब माता चन्द्र बैठी,	*पिता गुरु चल जाता हो।*
नेक बुरा चाहे कोई बैठे,	*8-9 वें 1012 जो।*
हसब हैसियत जीवन गुज़रे,	*जीवित जब तक रहता हो।*
गुरु मालिक 10लहर जो मुल्की,	*अमीर हासिद रवि 10का हो।*
बुरी शोहरत और खबीस पसंदी,	*11 गुरु जब बैठा हो।*
वैर शनि खुद पाप से करता,	*राहु टेवे आठ बैठा जो।*
जुआ-जुआरी 12 रवि का,	*वहम दिमाग़ी भरता हो।*
सात रखी हो धन की थैली,	*मर्द 6 वें जा बोलता हो।*
घर 12 से सुख गृहस्थी,	*चीज़ें शनि घर दूसरा [1] हो।*

1.खाना नं० 2 का शनि सिर्फ शनि की ही चीज़ों पर असर देगा।
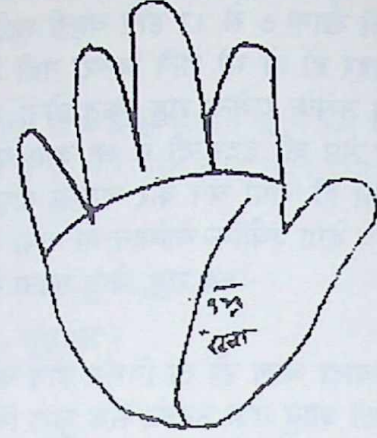
हस्त रेखा :- उम्र रेखा वृ० के पर्वत से शुरू हो।

नेक हालत

1. शनि का शनि की संबंधित चीज़ों पर प्रभाव का फैसला खाना नं० 8 के ग्रहों का शनि खाना नं० 2 से ताल्लुक की अच्छी-बुरी हालत पर होगा। दिमाग़ी खाना नं० 7 शुक्र से मुश्तरका ज़िंदगी बढ़ने की इच्छा तरक्की से मुराद है उम्र लम्बी से नहीं। बात को मुंह की हवा से ही ताड़ लेगा। शरीर पर मूसाम से 3-3 बाल पैदा हो तो परमात्मा को मानने वाला पूजा पाठी भक्त मनुष्य होगा।
2. तिलक की जगह तेल लगाना अशुभ होगा। मगर दूध या दही के तिलक लगाने से शनि या वृहस्पति हर दो का उत्तम और मुबारक फल होगा। भूरी भैंस मुबारक होगी।

   धन की थैली सातवें हो, मर्द की तादाद बोलते 6 वें है।
   घर आठवें से उम्र मिले तो, बने महल घर दूसरे है।

3. अच्छी सेहत का स्वामी मगर धर्म स्थान में कम ही जाने वाला होगा। देखने को बुद्धू मगर गिनती में मन्त्री होगा जो खुद सुखी रहम दिल न्यायप्रिय होगा। निर्धन कभी न होगा। किसी को दु:ख न देगा बल्कि गुरु की शरण या ध्यान रखने वाला जद्दी ज़मीनों का मालिक ज़रूर होगा।
4. जब तक ज़िंदा रहे अपने खुद मुख्तारी और नम्बरदारी या खुद काम करने के दिन से स्वयं कारोबार करते रहने के समय तक उत्तम हालत, आई चलाई बराबर का मालिक होगा।
5. संन्यास उदासी वियोग एक ओर रहने की शक्ति का स्वामी होगा। -जब शनि खाना नं० 2 में कायम हो।

क्याफा मध्यमा सीधी हो।

6. हद दर्जे की उदासी का मालिक होगा। -जब खाना नं० 8-9-1012 में कोई न कोई ग्रह ज़रूर हो।
7. सुख और उम्र लम्बी, मगर पिता वृ० अमूमन बर्बाद ही लेंगे। -यदि चन्द्र उत्तम हो।
8. अक्ल की बारीकी और खुदाई पहुँच दर्जा कमाल होगी। -जब वृ० खाना नं० 4 में हो।

क्याफा हाथ की तमाम अंगुलियों का झुकाव मध्यमा की ओर हो।

9. शनि का जाती बुरा या भला असर सिर्फ शनि की चीज़ों पर होगा जो खाना नं० 8 से खाना नं० 2 के संबंध से जाहिर हो जाएगा।
10 मकान जैसा और जब बने बनने दे, शुभ फल देगा।
11.शनि खाना नं० 2 में, केतु खाना नं० 8 में हो तो बच्चों के विचारों के स्वभाव का स्वामी होगा। -जब मध्यमा अंगुली का सिरा नोकदार हो।
12.शनि खाना नं० 2 में, केतु खाना नं० 9 में हो तो जल्दी समझने वाला होगा। -जब मध्यमा अंगुली लम्बी हो।
13.शनि खाना नं० 2 में, मंगल खाना नं० 8 में हो तो धनवान होगा। -जब मध्यमा अंगुली का सिरा चौकोर हो।
14.शनि खाना नं० 2 में, बुध खाना नं० 8 में हो तो बुद्धिमान होगा। -जब मध्यमा अंगुली का सिरा गोल हो।
15.मुल्की लहर का मालिक, पादरी, धर्म-कर्म वाला सोच कर कम खर्चने वाला। -जब वृ० खाना नं० 10में।

तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो।

क्याफा

16.तबीयत का गुलाम, इरादे का कच्चा, मुर्दा दिल साधु के विचार हर जगह टूटे हौसले का स्वामी होगा।
–जब वृ० खाना नं० 11 में हो।

17.मध्यम सी हालत में मंदी शोहरत को पसंद करने वाला होगा। –जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।

18.चाहे बुध खाना नं० 12 का कभी भला नहीं होगा (सिवाय शनि और वृहस्पति की मदद के) लेकिन अगर बुध की मियाद के अंदर 34 वर्ष की उम्र तक टेवे वाले के कोई लड़की पैदा हो और वो लड़की अपने ससुराल को दे दे तो वो लड़की ससुराल के लिए अमृत कुंड बन जाएगी। जब तक वह लड़की अपने मां-बाप टेवे वाले प्राणी की कमाई से परवरिश पालना या गुजर शुरू न करे। वरना टेवे वाले और ससुराल दोनों के लिए ही मंदी बीन बाजा का राग शुरू होगा। –जब बुध खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. शनि अगर जाती स्वभाव के असूल पर मंदा साबित हो तो शादी बल्कि सगाई के दिन से ही ससुराल के घर राख उड़ने लगे। टेवे वाला जिस कदर शनि की चीज़ें मकान, मशीन, मोटर गाड़ियां आदि कायम करता चला जाएगा उसी तरह ससुराल की ये चीज़ें बिकती चली जाएंगी या खराब होती जाएंगी।
2. नंगे पांव मंदिर जाकर भूल मान लेना बला के असर से बचाए।
3. सांप का बजरिया चन्द्र (दूध पिलाना आदि) के उपाय से ससुराल की हालत उत्तम होगी। काली या दोरंगी भैंस मनहूस फल देगी।
4. इस घर में दो आंख का मालिक शनि अगर मंदा हो तो राहु (ससुराल) की जड़ मार देगा जिससे टेवे वाले के लिए सिर दर्दी बुध की शरारतें खड़ी हो जाएंगी, मगर अब वृ० भला फल देगा। शादी के लग्न के वक्त ही से कुड़माई आदि ससुराल घर में वीरान करने वाली आग़ जलनी शुरू होगी और उनकी गरीबी दिन व दिन बढ़ती होगी। ससुराल की जड़ में आक मदार या ससुराल का घर चील कौओं के बैठने की जगह बर्बाद होगा। पापी ग्रह खुद आपस में एक-दूसरे का बुरा करने-कराने टेवे वाले के लिए खराबी दर खराबी खड़ी करते जाएंगे। राहु खाना नं० 8 के वक्त ससुराल घर में पुरुषों की कमी और राहु खाना नं० 12 के समय ससुराल घर में दौलत की कमी होगी। –जब राहु खाना नं० 8-12 में खुद शनि, राहु, केतु के खिलाफ चलता होगा।
5. बुरी शोहरत और खुद पसंदी का मालिक होगा। –जब वृ० खाना नं० 11 में हो।
6. मशहूर जुआरी या दिमाग़ी वहम का मालिक, आय खर्च बराबर। – जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
7. 28 से 39 साल की उम्र तक हमेशा बीमारी गले लगी रहेगी। –जब मंगल मंदा हो।

स्वभाव	ग्रह स्थिति	क्याफा
वहमी होगा	राहु खाना नं० 8	हाथ की अंगुलियों के सिरे चौड़े होंगे
जुदाई पसन्द होगा	राहु खाना नं० 9	हाथ की अंगुलियों बहुत लम्बी हो।
मुर्दा विचार का होगा	मंगल खाना नं० 9	हाथ की अंगुलियां बहुत ही लम्बी हो।
बेबुनियाद विचार का स्वामी	वृहस्पति खाना नं० 8	हाथ की अंगुलियां बहुत छोटी हो।
हद से ज्यादा उदासी, जुदाई पसन्द होगा	सूर्य, बुध वृ०खाना नं० 8	तमाम अंगुलियां मध्यमा की तरफ झुकी हो।
बुरी शोहरत पसन्द मध्यम सी हालत के स्वभाव का प्राणी	सूर्य खाना नं० 8	अनामिका मध्यमा की तरफ झुक जाए।

शनि खाना 3

(अगर हुआ तो तो दो गुणा मंदा होगा)

मिले राजा दो शेर, बकरी कहेंगे।
मगर मर्द माया जुदा ही रहेंगे।।

मदद केतु से खुद शनि बढ़ता, वरना केतु खुद काटता हो।
वैद्य धन्वतरि नज़र का होता, काम शनि सब उम्दा हो।
दरवाज़ा 2 दक्षिण या पूर्व मंदा, या लकड़ी शगुन न उम्दा हो।
साथ 1 मकान जब पत्थर गड़ता, मौतें ज़हर शनि देता हो।
केतु बैठा 10कायम साथी, माया दौलत सब बढ़ता हो।
बिगड़ा मंगल बद हो जब ज़हरी, गैर मदद उसे करता हो।
5 रवि से केतु मंदा, उम्दा शनि न होता हो।

नज़र दवाई मुफ्त जो देता, आँख कायम खुद रहता हो।
चन्द्र टेवे घर 10वें बैठा, सांप शनि जड़ कटती हो।
मौत कुआँ खुद अपना होगा, उर्ध रेखा माया मंदी हो।

1. बड़े दरवाज़े के सामने दाखिले पर मगर मकान से बाहर।
2. बाल-बच्चों के सहित रिहायशी मकान का दरवाज़ा।

हस्त रेखा :-शनि से रेखा उम्र रेखा को काट कर मंगल नेक में या गृहस्थ रेखा शनि के बुर्ज पर हो।

नेक हालत

1. तीन आँख का मालिक फरिश्ता अज़ल पुरुष और धन दोनों इकट्ठे कम ही होंगे, मगर उम्र की रक्षा ज़रूर होती रहेगी, जब तक ज़ुबान के चस्के लिए शराबी, कवाबी न हो।
2. मकान बनाने वाले राज मज़दूर मिस्त्री को रुपयों की थैली की क्या ज़रूरत उसे तो ईंट, पत्थर हर वक्त मौजूद चाहिए। इसी तरह से शनि का हर वक्त मकानों का प्रभाव उत्तम होगा खासकर जब कुत्ता रखे, दुनिया के तीन कुत्तों की सेवा करें। मकान बनेंगे, धन बढ़ेगें, आँखों का बड़ा उत्तम हकीम होगा। शनि से संबंधित काम तथा रिश्तेदार उत्तम फल देंगे।
   -जब केतु की मदद या केतु खाना नं० 3-10में हो।
3. गैर व्यक्ति भी मदद पर होंगे लोगों के काम बिगाड़ता मगर खुद आराम पाता हो।
   -जब मंगल बद या मंदा ज़हरी हो।
4. अगर कुत्ता न रखें तो कुत्ता (मंदा केतु) काटता ही होगा, शनि बर्बाद करेगा। जिस्म से चार-चार बाल पैदा हो तो गरीब, मंद बुद्धि, अय्याश होगा। अपने भाई बन्धु खराबी का कारण होंगे। माली हालत नकदी में मंदा ही होगा। अगर मंदा हो तो तीन आँख के मालिक फरिश्ता-ऐ-अज़ल की तरह दो गुणा मंदा होगा (सिर्फ धन की हालत में) मगर राशिफल का (उपाय योग्य) केतु का उपाय सहायक अगर केतु खाना नं० 10या 3 हो तो किसी उपाय की ज़रूरत नहीं।
   नज़र की दवाई दूसरों को मुफ्त देते रहने से अपनी नज़र में बरकत होगी।

दी हालत

1. पूर्व खाना नं० 1-5 या दक्षिण खाना नं० 3 के दरवाजा (सूर्य) का साथ हानिकारक होगा, दक्षिण के दरवाजे के साथ पत्थर गड़ा होने के वक्त या जब कभी भी होने लगे 40 दिन अंदर-अंदर एक के बाद दूसरी 3 मौतें हुआ करेगी।
2. मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी धन के लिए शुभ होगी।
3. केतु नर संतान और खुद शनि का प्रभाव मंदा होगा।
   -जब सूर्य खाना नं० 1-3-5 में हो।
4. शनि मंदा जड़ से काटता होगा। ऐसी हालत में अपने ही घर का कुआँ मृत्यु देगा और धन बर्बाद होता होगा। उर्ध रेखा का फल, बेशक चोर, डाकू मगर फिर भी मंदे हाल। -जब चन्द्र खाना नं० 10में हो।
5. चोरी धन हानि और दूसरी ऐसी खराबी आम हों। -जब शत्रु साथी हो।

शनि खाना नं० 4

(पानी का सांप)

खुश्क ज़हर से मरने वाला मरेगा।
घुली वो जब पानी न कोई बचेगा।।

3 चन्द्र दो पितृ रेखा, उर्ध रेखा गुरु तीसरा जो।
साथ-साथी जब चन्द्र बैठा, ज़हर शुक्र दूध मंदा हो।
10वें चन्द्र से दुखिया माता, उल्टी ज़हर खड़ी करता हो।
सेहत जिस्म हो जब कभी मंदा, सांप सफा खुद देता हो।
मकान नया खुद अपने बनते, सांप माता सिर चढ़ता हो।
ज़हर मगर जा मामू पकड़े, पेशा हकीमी उत्तम हो।
रात पिया दूध ज़हरी होगा, ज़हर दवा खुद बनती हो।
तेल बेचे जब सापं का दुनिया, संतान मरे निःसंतानता हो।
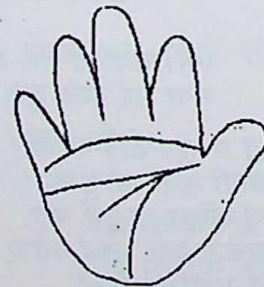
हस्त रेखा :- उम्र रेखा और दिल रेखा मिल जाए।

नेक हालत

1. ऐसे आदमी में दिमाग़ी खाना नं० 4 मुहब्बत के तमाम भाग उल्फत माता-पिता का प्यार, इश्क जवानी में औरत का प्यार, इश्क के बाद गलवा यानि दूर रहना वियोग मौजूद होंगे।

2. हकीम साहिब, चार आँख का मालिक शनि अब टेवे वाले पर कभी मंदा प्रभाव न देगा। अगर अधरंग आदि से नकारा होकर पृथ्वी पर गिर जाए तो सांप उसे खुद आकर डंक मार कर उसका अधरंग हटा कर स्वास्थ्य वाला बल्कि मुर्दे से भी ज़िंदा कर देगा। सिर्फ शनि की संबंधित चीज़ों से सेहत में शफा होगी। बल्कि बहुत गिरी हुई हालत और गरीबी बगैरा के वक्त शनि के काम या संबंधी शनि के सहायक होंगे। शनि की चीज़ें या हकीमी पेशा, अगर मंगल खाना नं० 5 वाले के खानदान में पिता, दादा, ताया, चाचा ज़रूर हकीम या डॉक्टर होंगे तो शनि खाना नं० 4 वाला भी खुद रिज़क के संबंध में हकीमी डॉक्टरी संबंधित से दूर नहीं रह सकता और ज़हरीले जानवरों के काटे का इलाज मुबारक और ज़हर खुद अपनी दवाई का काम देगी। लेकिन सांप का तेल बेचने से नि:संतान होने का सबूत ही मिलेगा चाहे औलाद के योग लाख उत्तम हो। इसी तरह अगर शराब पीना, सांपों के मरवाने या रात के वक्त नए मकानों की बुनियादें रखने से शनि नकारा कर लिया होगा और इस कारण अपनी ही छत से गिरा हुआ पत्थर अगर सिर नहीं तो आँखें ज़रूर खराब कर देगा।

3. माता-पिता का सुख सागर और अपना और सांसारिक काम में उत्तम ही होगा। -जब चन्द्र खाना नं० 2-3 में हो।

क्याफा

पितृ रेखा, उम्र रेखा वृ० के बुर्ज की जड़ की बजाय वृ० के बुर्ज खाना नं० 2 तर्जनी की जड़ के निकट से शुरू हो।

4. उर्ध रेखा का मालिक, तब सबको लूट खसोट कर जायदाद बना ले। -जब वृ० खाना नं० 3 में हो।

5. अपने नये बनाये मकान की बुनियाद रखते ही माता को सांप लड़े, मामे को ज़हर चढ़े की तरह जानो के लिहाज से माता, माता खानदान की जड़ में ज़हर और माली हालत के संबंध में अपने ही खानदानी खून अपने समेत शनि की मियाद तक मंदा असर देंगे शनि अब पानी का सांप होगा।

6. टेवे वाले पर शनि मंदा प्रभाव न देगा परन्तु औरत की कबूतरबाजी से शनि का मंदा प्रभाव होगा और शुक्र का फल ज़हरीला होगा।

7. रात को पिया दूध ज़हर समान होगा।

8. छाती पर बाल न हो तो बेएतबारा होगा।

9. मंदे स्वास्थ्य के समय सांप खुद शराब, तेल शनि की चीज़ें यानि ज़हरीली नशे वाली चीज़ें सहायता देगी और चन्द्र की चीज़ों से कोई फायदा या सहायता न होगी।

10 सांप को दूध पिलाना मछली, भैंस, कौवा, मज़दूर आदि की पालना करना शनि की ज़हर को धोएगा जिससे माता तथा माता खानदान का बचाव होता रहेगा और कुएं में दूध गिराना चन्द्र माली हालत के प्रभाव को नेक करेगा।

11. चन्द्र खाना नं० 10में माता दुखिया चन्द्र की चीज़ें उल्टा ज़हर खड़ा करें, चन्द्र खुद बर्बाद होगा। उसका असर जानों के हिसाब से टेवे वाले की माता खानदान के खून पर और धन की हालत में अपने खानदान पर ज़हर की तरह मंदा होगा या दूध में ज़हर होगा। पानी से खतरा मौत का होगा, धन बर्बाद जायदाद जद्दी के कोयले करेगा। सफ़र का सैलानी खर्चा, पतिहीन स्त्रियां, पतिहीन या प्रेमिका तंग करेगी। -जब चन्द्र खाना नं० 4-10 में हो या

क्याफा :- उम्र रेखा, दिल रेखा को मिल जाए।

शनि खाना नं० 5

(बच्चे खाने वाला सांप)

जले माया धन, जान बचता रहेगा।
मरे बेटे, पोते तो फिर क्या करेगा।।

सांप शनि का लड़के खाता [1],
बाकी सभी फल उत्तम होगा,
केतु से भले संतान हो बढ़ता,
स्वभाव शनि हो जब कभी मंदा,
सात 12 घर शुक्र आया,
मंगल [2] टेवे चाहे 10 वें बैठा,
मकान नया जब अपना बनता,

या शत्रु हो वह मकानों का।
शनि, वृहस्पति दोनों का।
मकान राहु से बनता हो।
पाप आयु तक जलता हो।
रवि, चन्द्र 5-109 हो।
संतान बुरी नहीं होती है।
सामान लावल्दी होता है।

महल लाखों संतान बनाया, बुरा कोई न होता हो।
रवि टेवे जब तख्त पै बैठा, शनि पाया घर पहला [3] हो।
अक्ल अंधा चाहे गांठ कजा पूरा, फिर भी माया ज़र कल्पता हो।

1. जद्दी मकान में सूर्य या चन्द्र या मंगल की चीज़ें कायम रखें लेकिन जब खाना नं० 10में राहु, केतु हो तो जद्दी मकान में सूर्य, चन्द्र या मंगल की चीज़ें जला दें। वर्षफल में बादाम मंदिर में लेजा कर आधे वापिस घर में कायम रखें। श०बच्चे मारता है जब मंगल बद हो।
2. संतान की गिनती और आयु पर तो बेशक मंदा न होगा मगर उनकी बाकी सब बातों (मसलन वृहस्पति खाना नं० 10में तो संतान स्वयं ही घर का सोना चोरी करके बाहर चोरों को लोहे के भाव पर बेच दे) पर हानि होगी।
3. वर्षफल में घूम कर।

हस्त रेखाः-शनि से रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटे।

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं0 15 वृ०से मुश्तरका खुद्दारी का स्वभाव का स्वामी होगा।
2. संतान की हालत केतु से और मकानों की हालत राहु से पता चल जाएगी। चाहे कुछ भी हो वह निस्संतान कभी न होगा।
3. भोला बादशाह खुदी (तकब्बर) और खुद्दारी का मालिक होगा। मगर छानबीन की आदत से जीवन सफल बना लेगा। स्वयं के बनाए या खरीदे मकान संतान की बलि लेंगे मगर संतान के बनाए खरीदे मकान कभी बुरा प्रभाव न देंगे।
4. संतान के लिए जद्दी मकान में मंगल या वृहस्पति से संबंधित चीजें कायम रखने से लाभ होगा।
5. छानबीन करने की शक्ति से जीवन को आगे बढ़ा लेगा। संतान बढ़ती होगी। -जब केतु भला हो।
6. मकान बनेंगे। -जब राहु भला हो।
7. अब शनि का संतान पर कोई बुरा असर न होगा और किसी उपाय की ज़रूरत न होगी चाहे अब गिनती और आयु संतान पर कोई बुरा असर न होगा। मगर ऐसी संतान माता-पिता के लिए कोई लाभकारी न होगी, बल्कि ऐसी संतान घर का ही सोना वृ० सामान, खुराक मंगल की चोरी कर निकाल कर बाहर चोरों को लोहे के भाव पर बेच देगा।
-जब शुक्र खाना नं० 7-12 या सूर्य, चन्द्र खाना नं० 5-9-10 मंगल या वृहस्पति खाना नं० 10में हो।
8. शनि अब धर्म देवता होगा। -जब खाना नं० 11 खाली हो।

क्याफा

सेहत रेखा कायम और खाना नं० 11 खाली हो।

9. भाग्य का शुभ प्रभाव 5-17-41-28-53-65-77-89-10-10 साल की आयु में होगा मगर संतान का फिर भी मंदा ही हाल होगा।
-जब वृ० खाना नं० 9 में हो।
10 पहला लड़का कायम रहे या न रहे मगर अब संतान पर शनि खाना नं० 5 का बुरा प्रभाव न होगा बल्कि उसके बदले में टेवे वाले का खानदानी पुरोहित बर्बाद होगा। सांसारिक तीन कुत्तों की पालना सहायक होगा।
-जब केतु खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. शनि जन्म कुंडली में खाना नं० 5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल वर्षफल के हिसाब खाना नं० 7 में आने के समय स्वास्थ्य का हाल मंदा ही होगा।
2. सारे शरीर पर बाल हो तो बेशक चोर, फरेबी भी बने, फिर भी मंदा भाग्य और बुरे नसीब वाला होगा। चाहे कलम पर पूरा काबू हो मगर निर्धन ही होगा। मुकद्दमा जहमत बीमारी का आम झगड़ा होगा।
3. मंदे वक्त पर किसी का धन, किसी की औलाद किसी का जिस्म बर्बाद हो।
4. **जद्दी मकान में जैसे :-**

सूर्य (मोगा) :- स्काई लाइट, (Sky light)बन्दर, तांबा, भूरी भैंस।
चन्द्र :- चावल, दूध, मोती चकोर।
वृहस्पति :- सोना, केसर।
मंगल :- शहद खांड सौंफ लाल, मूंगे हथियार की सी चीज़ें कायम करें।

लेकिन जब खाना नं० 10में राहु, केतु हो तो मंगल की चीज़ें जद्दी मकान में जला दें तो संतान की गिनती तथा धन में बरकत आएगी। **जब कभी वर्षफल के अनुसार शनि खाना नं० 5 में हो तो धर्म स्थान में बादाम ले जाए आधे वापस लाकर घर में कायम रखें। संतान पैदा होने पर मीठे की जगह नमकीन बांटे या खैरायत में दे।**

5. शनि की आयु 36–18–9 में खाना नं० 2 के ग्रह के संबंधी या उस ग्रह की चीज़ें जानदार को सांप काटे या नुक्सान दे। शनि अब राहु स्वभाव मंदा बनावटी सांप होगा।

–जब मंगल, बुध टेवे में इकट्ठे या दृष्टि से आपस में मिलते हो।

6. अंधा बच्चा खाने वाला सांप, नर संतान का शत्रु, शादियां, चाहे 7 हो और संतान बहुत हो, मगर अपना बनाया मकान या बना बनाया मकान खरीदें तो 48 साल की आयु तक सिर्फ एक लड़का या मकान ही होगा। विशेषकर जब खाना 7–12 में शुक्र और खाना 5–9 में सूर्य या चन्द्र न हो। संतान को तो लोहे के जंग की तरह बर्बाद कर देगा।

–जब खाना नं० 10खाली हो।

7. पाप राहु, केतु की आयु तक शनि का असर मंदा होगा, बल्कि उम्रभर गुलामी में गुजार दे।

–जब जाती स्वभाव के असूल पर शनि मंदा हो।

8. चाहे अक्ल का अंधा गांठ का पूरा भी हो फिर भी माया की कल्पना होगी।

–जब वर्षफल में सूर्य खाना नं० 1 या शनि खाना नं० 1 हो जाये।

उपाय

जद्दी मकान के खाना नं० 10पश्चिमी ओर में शनि के शत्रु ग्रहों जैसे :-

सूर्य :- **गुड़, तांबा, भूरी भैंस, बंदर।**

मंगल :- **सौंफ, खांड, शहद लाल मूंगे, हथियार।**

चन्द्र :- **चावल, चांदी, दूध , कुआं, कुदरती पानी, घोड़ा, चकोर पक्षी की चीज़ें कायम करें।**

या शनि की अपनी चीज़ बादाम धर्म स्थान में ले जाकर आधे लाकर घर में कायम रखें ख्याल रहे कि यह बादाम खाया नहीं करते। शनि ने अब बुराई न करने की कसम खा ली गिनी जाएगी।

शनि खाना नं० 6

(लेख की स्याही एक गुणा मंदा)

बुरा लड़का चाहे, पैसा खोटा न अच्छे।
मगर काम फिर भी वह अक्सर ही आते।।

उल्टी दृष्टि दूजा देखे, असर बुरा न दस पर हो।
असर शनि स्वयं वैसे होंगे, जैसा केतु कहीं बैठा हो।
बुध, केतु न दो कोई मंदा, न ही लावल्दी टेवा हो।
शादी पहले जब 28 करता, चन्द्र, शुक्र, केतु मंदा हो।
केतु टेवे घर 10की गिनती, हाल मुसाफिर उम्दा हो।
बाप से ऊपर नाम खिलाड़ी, आयु मर्द माया बढ़ता हो।
मित्र शनि 10चौथे बैठा, बुध पाया घर दूजा हो।
मौत फरिश्ता सिर जब कठता, मदद शनि न करता हो।
हालत कोई चाहे कैसी टेवा, हलफ़ शनि जब लेता हो।
बाद 42 ऐसा उम्दा, फलक स्याही धोता हो।

1. बुध, शुक्र राहू।

हस्त रेखा :- **शनि से रेखा आयत को जाए।**

नेक हालत

1. साधारतय: पर खाना नं० 2 देखा करता है खाना नं० 6 को। मगर शनि खाना नं० 6 के समय अब उल्ट हालत होगी और शनि अब खाना नं० 6 में बैठा हुआ खाना नं० 2 के ग्रह को देखेगा और वहां खाना नं० 2 में अगर शनि का मित्र भी चाहे शुक्र ही हो तो भी विषैला डंक मार देगा।

2. जिस्म से अगर एक मुसाम से दो-दो बाल पैदा हो तो बुद्धिमान् और हुनरवान होगा।
3. न्होराता वाला सांप जिसको दिन को तो नज़र आए मगर रात को अंधा हो या रात के किए हुए काम में शनि का कोई मंदा प्रभाव शामिल न हो सके।
4. अपने बिल से बाहर निकल कर फण सिर उठाते हुए ढंग पर किसी को जान से मार देने के लिए तैयार हुए सांप की तरह शनि अब उल्टी दृष्टि खाना नं० 2 में बैठे ग्रह को देखता होगा खासकर जब राहु खाना नं० 8 में हो। शनि स्वयं अपने खाना नं० 10के ग्रह पर शनि का कोई बुरा असर न करेगा। जैसा केतु का असर उस समय टेवे में हो, वैसा ही शनि के हुक्म पर औरों का हाल होगा। जहां केतु होगा वहां ही सांप का फर्राटा या प्रभाव की लहर जाएगा। शनि वर्षफल में जब शुभ घरों में आ जाए तो सिर पर साया करने वाला शेषनाग होगा। बुध मंदा न होगा और न ही लावल्दी का टेवा होगा, लेकिन यदि शादी 28 साल की आयु से पहले हो तो बुध, चन्द्र, शुक्र तीनों ही मंदे। 28 साल की आयु के बाद अगर शादी हो तो 24 साल लड़के ही लड़के पैदा होंगे। माता-पिता माली दौलत विद्या सबकी बरकत होगी।
5. मंदा समय सिर्फ 42 साल की आयु तक होगा जिसके बाद शनि पक्का नेक असर देगा। चाहे टेवे में सूर्य खाना नं० 12 ही क्यों न हो शनि यदि तारे तो कुल ज़माने की स्याही धो देगा। नालायक बेटा और खोटा पैसा फिर भी कभी न कभी काम आ ही जाता है।

-जब राहु जन्म कुंडली में या वर्षफल में खाना नं० 3-6 में उच्च हो जाए।

6. अब शुक्र आबाद और स्त्री सुखिया होगी।

-जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।

7. शनि नेक घरों में आ जाए या टेवे में वर्षफल के अनुसार नेक प्रभाव का हो तो गुरु, बुध का असर होगा और लड़की की जगह लड़के पैदा होंगे। सफ़र से परिणाम उच्च। बाप से भी उत्तम खिलाड़ी और हर प्रकार का खेल, करतब या चालचलन की रंग-बिरंगी हालत में सबसे ऊपर के दर्जे का मालिक। मर्द की आयु, माया की बरकत होगी।

-जब केतु खाना नं० 10या केतु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. शनि खाना नं० 6 अपने प्रभाव की मंदी हालत स्वयं शनि की चीज़ें जाहिर करेंगे यानि चमड़े के बूट, जूते या लोहे की चीज़ें जो बच्चों के प्रयोग की हो, आम तौर शनि के मंदे असर आने की पहली निशानी होगा। ऐसा व्यक्ति यदि शराब का आदी हो जाए या मकान बनाए खासकर जब शनि खाना नं० 6 (जन्म कुंडली में खाना नं० 6) दोबारा वर्षफल में खाना नं० 6 आए तो शनि ज़रूर अदालत, राजदरबार और महकमा पुलिस के संबंध में व मंदे और दुःख देने वाले परिणाम पैदा करेगा। शनि खाना नं० 6 की मंदी हालत की पहली निशानी के तौर पर आम तौर पर टेवे वाले की जूती या बूट गुम होंगे या खाना नं० 6 जन्म कुंडली का शनि खाना नं० 6 व वर्षफल में आए हुए शनि के समय नए बूट खरीदने की अति आवश्यकता पड़ेगी जिसके खरीदे जाने के बाद राज दरबारी सम्बन्ध में खराबियां या मंदे प्रभाव होंगे । यही हाल नई मशीने या शनि से सम्बन्धित चीज़े खरीदने पर होगा। सबसे अच्छा तो यही होगा कि चमड़े की शनि की नई चीज़ें पांव केतु के लिए खरीदी ही न जाए ताकि चमड़े के जूते सिर पर न पड़े।

   (चमड़ा स्वयं शनि की चीज़ है और केतु उसका सहायक ग्रह है जो पांव का स्वामी है लेकिन चमड़ा चूँकि मुर्दा चीज़ है और जिस्म की खाली उतरी हुई है इसलिए शनि भी चमड़े की चीज़ों के आने के समय मुर्दे की तरह मंदे असर देगा।)
2. **लेख की स्याही का मालिक अगर मंदा हो तो सिर्फ एक गुणा मंदा होगा और यदि यह विष से न मारे तो अपने जिस्म के लपेट (चक्र पर चक्र लेना) से घुट कर ही दुखिया कर देगा। शनि खाना नं० 6 का प्रभाव बेशक शक्की अच्छा या बुरा होगा मगर अब वृहस्पति का प्रभाव ज़रूर ही मंदा होगा, चाहे वृहस्पति उस समय (शनि खाना नं० 6 के समय) कहीं और कैसा भी बैठा हो। नारियल या बादाम पानी में बहाना शुभ फल देगा।**
3. 28 साल से पहले शादी हो तो शनि छाती पर सांप की तरह ज़हरीला प्रभाव देगा और बुध मंदा होगा जिससे 34-36 साल की आयु में माता तथा संतान बर्बाद होगी। मगर वह कभी मंदा न होगा। अब न सिर्फ शनि अपना प्रभाव देगा बल्कि शनि की अपनी चीज़ें और केतु की चीज़ों दोनों के मंदे परिणाम होंगे, शनि की मियाद 34-39 साल की आयु के बाद मकान बनाना शुभ बल्कि 48 साल तक मकान बनाना ठीक नहीं होगा।
4. सांप की सेवा से संतान बढ़ेगी।
5. केतु की बर्बादी को रोकने के लिए पूरा काला कुत्ता, सरसों तथा और राहु की चीज़ों का उपाय सहायक होगा।

6. मंगल के रिश्तेदार (टेवे वाले का बड़ा भाई उसके बाप का बड़ा भाई यानि ताया, माता का बड़ा भाई यानि मामा) का संबंध शनि का प्रभाव नज़र आदि मंदी होगी खासकर जब राहु खाना नं० 1 में हो तो मामा 21 वर्ष की आयु में अंधा होगा।
–जब मंगल खाना नं० 2 में हो।

7. **सिर कटने से मौत होगी, छुपे काम करने का आदी होगा। घर में रोटी पकाने के लिए मिट्टी के तवे या पूरी बद बख्ती होगी।**
–जब बुध, शुक्र, राहु खाना नं० 4-10या बुध खाना नं० 2 या सूर्य, चन्द्र, मंगल का साथ हो।

क्याफा

हथेली का खाना नं० 6 में सिर रेखा के ऊपर मगर दिल रेखा के नीचे शनि केबुर्ज के नीचे छोटी सी लकीर या क्रॉस, त्रिशूल का निशान हो।

8. मंद भाग्य होगा।
9. शनि विषैला मंदा सांप होगा जो गाय विद्या और धन हानि करेगा यानि शुक्र की जानदार चीज़ें गाय, बैल स्त्री आदि और चन्द्र की जानदार चीज़ें माता आदि पर भी हमला कर देगा। खासकर जब राहु खाना नं० 8 में हो या मंदा राहु हो रहा हो।
–जब शुक्र या चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

उपाय :- **शनि खाना नं० 6 की साधारण मंदी हालत से बचने या ज़हरीले असर को रोकने के लिए सरसों के तेल से भरा मिट्टी का बर्तन किसी तालाब या दरिया में पानी के अंदर ज़मीन की तह में दबा दें जहाँ वह बर्तन पानी के अंदर छुपा रहे। चूँकि जब खाना नं० 2 खाली हो तो खाना नं० 6 का शनि रात को अंधा होता है इसलिए अगर शनि के कारोबार या सामान के शुरू या पैदा करने के ज़रूरत पड़ जाए तो रात का समय ऐसे कारोबार सामान के शुरू या पैदा करने के लिए लाभकारी होगा। शर्त यह कि रात अंधेरी हो यानी उस समय चन्द्रमा न चमक रहा हो दूसरे शब्दों में पक्ष अंधेरा हो।**

शनि खाना नं० 7

(कलम विधाता रिज़क)

उल्ट रंगी बोतल जो नाज़नीन [1] थी।
कफन खेंचने को वो तेरा खड़ी थी।।

ना बुजुर्गी शान माया, ना इल्म दरकार हो।
हकीम सादिक दुनियां बनता, पल समुद्र पार हो।
बुनियाद शनि की शुक्र होता, ताकत गुना 7 होती हो।
दौलत हुकूमत साथ-साथ लाता [2], शर्त जागीर ना कोई हो।
गुरु, शुक्र बद मंगल मिलता, नसीब मारा वो होता हो।
परोपकारी दौलत उम्दा, वर्ना नयासिरी माया हो
बुध शत्रु 103 या सात का, आयु पिता ज़र मंदा हो।
चन्द्र करे जब मंदा टेवा, शनि मंदा खुद होता हो।
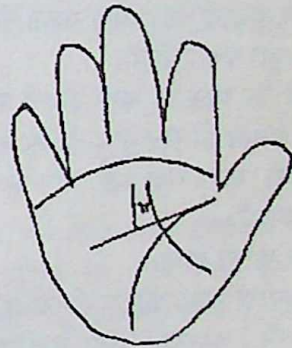
1. पराई नाज़नीन की मुहब्बत से अपनी औलाद मंदी बल्कि व्यर्थ ही हो।
2. जब शनि की तबीयत चालाकी का मालिक और औरतों से मुहब्बत रखने वाला1

हस्त रेखा:- **उम्र रेखा और सिर रेखा मिली हो, शनि से शाख सिर रेखा पर या शुक्र के बुर्ज में हो।**

नेक हालत

1. जिस्म पर एक मुसाम से अगर एक-एक बाल पैदा हो तो शनि नेक तथा उत्तम प्रभाव देगा।
2. किसके हुक्म से इधर देख रहे हो की धमकी देने वाला पक्का हठधर्मी, देखने की बजाए सुनने पर भरोसा रखने वाला और जुदाई पसंद होगा।
3. माल हराम तथा हरामकारी कफन मुफ़्त न देगा। आई चलाई चाहे लाखों की हो या हज़ारों की मगर ज़ागीर की शर्त न होगी।
4. कलम विधाता रिज़क उच्च गृहस्थी हालत। जन्म समय चाहे राई के बराबर मामूली आदमी हो मगर शनि की मियाद पर वो ज़र्रे से ऊँचा पहाड़ हो जाएगा। काग़ रेखा यानी शनि खाना नं० 1 के वक्त जिस तरह बहुत मंदी हालत हुआ करती है अब उसी तरह ही उल्ट हालत में हर ओर अच्छा होगा।

5. असल में शनि की नींव शुक्र ही होगा और प्रभाव की शक्ति 7 गुना होगी, दौलत हुकूमत का साथ होगा। अगर शादी 22 साल की आयु तक न हो तो टेवे वाले की नज़र बेबुनियाद अंधापन होगा। मकान बने-बनाये बहुत मिलेंगे।
6. परोपकारी हो तो धन आये वर्ना न्यासिरी माया होगी, जिस घर आये उसी को तबाह कर आगे चल पड़े वाली माया होगी।
7. चालाकी और होशियारी के लिए उड़ती हवा को फर्ज़ी तौर पर एक जानवर मानो तो उस जानवर की आँखों में मिट्टी डालने की हिम्मत का मालिक होगा।
8. राजदरबार में 5 लड़कियों की शादी करने के बराबर धन मिलेगा। उच्च शनि अपने समय में उच्च वृहस्पति का काम देगा या वृहस्पति या शुक्र का फल उम्दा होगा और वो अमीरों में अमीर होगा।
9. हज़ारों सफ़र करें। उसके बुजुर्गों की शर्त नहीं बगैर पुल बांधे ही समुद्र को पार करने की हिम्मत और उम्र, अच्छे जीवन का स्वामी होगा।
10 घर में लेटा हुआ पत्थर या खड़ा स्तूप (पिलर) उत्तम शनि की निशानी होगा।
11.शनि, शुक्र, बुध, राहु सब का उत्तम फल, सब सहायक होंगे, लेकिन पेशा शनि में शामिल होने वाले सब माल व दौलत खा जाए। -जब दोस्त ग्रह बुध, शुक्र, राहु खाना नं० 3-5-7-11 में हो।

क्याफा :- उम्र रेखा और सिर रेखा मिल जाए।

12.जायदाद जद्दी तो बेशक इतनी न हो मगर मासिक आयु हज़ारों की होगी। -जब मंगल नेक हो।
13.गाँव का मालिक रईस होगा। -जब बुध खाना नं० 11 में हो।
14.दो गुना मंगल नेक और दो नेक केतु का उम्दा फल होगा। मुआवन सहायक उम्र रेखा से लम्बी उम्र स्वास्थ्य उत्तम। संतान का सुख और शत्रुता के समय हरेक से स्पष्ट तौर छुपी मदद मिले। -जब मंगल, शुक्र, शनि एक साथ हो।
15.सहायक धन रेखा हो, माया धन बेहद ज्यादा कायम हो। -जब मंगल, वृहस्पति, या मंगल, शुक्र देखते हों शनि को।

क्याफा उम्र रेखा के साथ-साथ एक और सहायक उम्र रेखा।

16.सहायक रेखा उम्र तथा छुपी सहायता रेखा का उत्तम फल होगा। -जब मंगल, चन्द्र या मंगल, शनि देखते हो वृहस्पति को।

मंदी हालत

1. जिसके हुक्म से इधर देख रहे हो की तबीयत का स्वामी दुनियादार होगा।
2. शनि जन्म कुंडली के हिसाब खाना नं० 5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल वर्षफल के हिसाब खाना नं० 7 में आने पर सेहत के संबंध में बुरा प्रभाव होगा।
3. पराई स्त्री के प्यार के वक्त अपनी संतान मंदी बल्कि व्यर्थ होगी, सब कुछ बिक जाए, लेकिन जब तक पुराने जद्दी मकान की दहलीज़ कायम हो सब कुछ वाप़स का यम होगा।
4. शराब खोरी, काग़ रेखा और शनि के मंदे असर की पहली निशानी होगी, कैद गले लगी रहती होगी चाहे कितना ही बड़ा डाकू या मशहूर चोर हो। -जब शनि जाती स्वभाव से मंदा हो।
5. दु:खों का पुतला होगा। -जब मंगल, चन्द्र, शुक्र सब रद्दी हों।
6. हासिद कमीना मगर जाहिरदारी उत्तम दिखावा हो। -जब वृहस्पति मंदा हो।
7. बनावट शनि (वृहस्पति, शुक्र-केतु स्वभाव; मंगल, बुध-राहु स्वभाव) 27 साल हथियार का डर, 29 साल की आयु तक मंदी सेहत झगड़ालू नसीब मारा होगा। -जब मंगल, बुध एक साथ या वृहस्पति, शुक्र एक साथ हों।
8. शनि भी मंदा ही होगा धन के लिए, सिर की बीमारी होगी। -जब चन्द्र मंदा हो।
9. आयु, ज़र्द धन (सोना), पिता सब मंदे होंगे, जद्दी जायदाद और मकान मंदे हों। -जब बुध या शनि के दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 3-5-7-10शुक्र का साथ हो।
10 बेगर्ज मगर गंदा आशिक होगा स्त्री लम्बे अर्से तक बीमार रहे। -जब शुक्र का साथ हो।
11.हर तरह की बरकत घर में शहद का बर्तन रखना ज़रूरी वर्ना पोते के आने तक सब माया बर्बाद होगी। -जब खाना नं० 1 खाली हो।

12.मृत्यु सिर कटने से होगी। -जब बुध खाना नं० 1 में हो।
13.आँख खराब होगी। -जब बुध आये खाना नं० 7 में वर्षफल में।

14.हिजड़ा, निकम्मा आदमी रतौंध टेवे में रात के वक्त ग्रह काम नहीं करते।

15.शनि खाना नं० 1 का दिया हुआ मंदा फल देगा और 27 साल की आयु तक हथियार का डर होगा। -जब सूर्य खाना नं० 4 में हो। -जब मंगल बद हो।

उपाय:- **खाँड में भरकर वाँसुरी बाहर दबाना शुभ, शर्त यह कि शनि सोया ना हो अगर सोया हो तो शहद के बर्तन का उपाय मददगार होग।**

शनि खाना नं० 8

(हैडक्वार्टर)

खुशी जन्म की उसकी क्या वो करेगा।
जन्म से ही जिसके हो मातम पड़ेगा।।

ना शनि की चीजें मंदी, ना बुरा खुद आप वो।
चाल अच्छी होगी वैसी, जैसा बुध या पाप हो।
शत्रु ग्रह जब साथ या साथी, मंदा शनि खुद होता हो।
ज़हर भरेगा नाग में इतनी, मौतें खड़ी ही रखता हो।
असर शनि दे मंगल जैसा, बैठा टेवे में जैसा वो।
खाली पड़ा घर 12 टेवा, उम्र कब्र तक दुखिया हो।

हस्त रेखा :- **मंगल बद से रेखा शनि में, शनि का हैडक्वार्टर खाना नं० 8 होता है।**

नेक हालत

1. दिमाग़ी खाना नं० 14 तकब्बर और खुद पसंदी का मालिक होगा।
2. साँप और चोर मुर्दा भी हो तो भी उनसे डर ही लगेगा। शनि अब अपने हैडक्वार्टर में बैठा होगा जिसका कुछ पता नहीं कि भला असर करे या बुरा फल दे मगर असर शक्की ही होगा। ऐसा व्यक्ति अपना भला हरेक के भले में मानने वाला होगा या बिल में घुसे साँप की तरह शनि अपने हैडक्वार्टर में अकेला बैठा मौत के वारंट जारी करने वाला स्वयं ही पूरा जज हाकिम होगा।
3. जैसी बुध, राहु, केतु की चाल वैसी शनि की चाल अब अपने एजेन्टों के एतबार पर काम करेगा, मगर स्वयं शनि का जाती असर तथा अपनी राय की ढलान वैसी ही होगी जैसे कि मंगल हो। (अकेला बैठा कभी मंदा न होगा। ये घर मारक स्थान के बजाय अब शनि का हैडक्वार्टर होगा)।
4. चन्द्र के उपाय, अपने पास चांदी का चौकोर टुकड़ा रखने, से शनि की असलीयत का पता चलेगा।
5. शनि की चीज़ें न मंदी होगी न शनि का असर मंदा होगा मगर ये भी शर्त नहीं कि भला होगा समय के अनुसार जैसा मुनासिब होगा बदल जाएगा। -जब शनि अकेला हो।

मंदी हालत

1. शराब से परहेज़ शनि का असर मंदा न होने देगा।
2. छाती पर ज्यादा बाल हो तो उम्र भर गुलामी में गुज़ार दे।
3. इस घर में अब शनि के जितने ग्रह साथ हो उतनी ही मौत हो जाने के बाद ऐसा व्यक्ति जन्म लेगा, मंदी हालत में चन्द्र का उपाय यानी खालिस चांदी का टुकड़ा अपने पास रखना या पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करना शुभ होगा। यानी मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें। जब कभी हो स्नान करते समय अपने पाँव के तले कोई न कोई चीज़ ज़रूर रख लें। चाहे कंकर पत्थर ही क्यों न हो ताकि पाँव का तलवा सीधा ज़मीन की कच्ची तह से न लगे।
4. शनि खुद ही इतना मंदा होगा कि मौत ही मौत खड़ी रखेगा। नज़र का बुढ़ापे में धोखा होगा। -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल साथ या साथी हो।
5. कुल उम्र बल्कि आखिरी वक्त तक कम धन और दुखिया ही रहे। ऐसे टेवे वाले के जन्म लेते ही दूसरे साथी ग्रहों से संबंधियों को कब्र में जाना पड़ेगा। बुढ़ापे में नज़र का धोखा हो। -जब खाना नं० 12 खाली हो।

क्याफा :- **हाथ की अंगुलियों के नाखून काले रंग के हो।**

शनि के मंदे प्रभाव का रुख किस तरफ होगा :- **राहु को सिर और केतु को दुम समझ कर एक साँप की शक्ल बनाएं, राहु बैठा होने वाले घर से आगे जहाँ कहीं भी यानी जिस खाने में रेखा निकल कर सीधी ही जा सकती हो उस घर पर शनि का प्रभाव पड़ेगा। अच्छा या बुरा जो समय के अनुसार (जन्म कुंडली या वर्ष कुंडली) साबित हो। दुम केतु पहले या कुंडली के पहले घरों में हो तो शनि का प्रभाव उत्तम तथा सहायक होगा।**

शनि खाना नं० 9

(कलम विधाता मकाना मर्दा)

सोया रात निर्धन चले जब सवेरे।
उठाता नहीं कोई घर बार तेरे।।

ज़ागीर मालिक और भारी कबीला, पुश्त तीनों तक चलता हो।
बुरा वो यहाँ ना कभी करता, बुध कोढ़ी से डरता हो।
60साल तो उम्दा होगा, बल्कि उम्र हो सारी ही।
शर्त वृ० इतनी करता, हो परोपकारी भी।
शनि मालिक है आँख शुक्र का, तरफ चारों ही देखता [1] जो।
चोट शनि हो जब कही पाता, अंधा शुक्र खुद होता हो।
शनि बैठा जब उत्तम टेवे, शुक्र असर 2 देता हो।
शुक्र मगर जब आया दूजे, शनि 9 गुना होता हो।
मंगल टेवे जब चौथे बैठा, शनि जलाये 9 वें को।
फूँक तमाशा सारी दुनिया, खुद प्लेगी चूहा हो।
साल छठे बुध, शुक्र उम्दा, शत्रु बुरा न तीजे हो।
बेच कफन खुद धन पाता, खाली पड़ा जब दूजे हो।
पापी ग्रह हो जब शनि बनता [2], घूमता पत्थर होता हो।
कीनाबरी शाह होगा माड़ा (मंदा), मन की दलीलें सोचता हो।

1. जिस घर में शनि हो शुक्र में वही असर और दृष्टि भी शुक्र की उस घर की तरफ होगी मगर दृष्टि की चाल स्वयं शुक्र की अपनी पिछली ओर (जहाँ से बैठा हुआ शुक्र आगे के घरों को देख सकता हो) क ी होगी लेकिन अगर शुक्र बैठा ही हो बाद के घरों में तो भी वह (शुक्र) देखेगा तो वो शनि ही की तरफ मगर दृष्टि की दर्जा टेढ़ी आँख की तरह देखने के ढंग का ही होगा।
2. बच्चे की माता के पेट के समय का बनाया हुआ या खरीदा हुआ मकान।

हस्त रेखा:- भाग्य रेखा की जड़ पर क्रॉस, त्रिशूल हो या उर्ध रेखा हो।

नेक हालत

1. पुरुषों और मकानों के लिए कलम विधाता (बहुत उत्तम और नेक अर्थो में) शनि की मियाद पर या दुनिया से कूच के आखिरी समय तक कम से कम तीन मकान रहने वाले कायम होंगे या तीन मकान कायम हो जाना उसके आखिरी वक्त की निशानी होगा।
2. पहाड़ी हवा या प्रबल पहाड़ों के पंक्ति की तरह उत्तम और हरा-भरा करने वाली आँख का मालिक, सफ़र का सामान तथा मकान की विद्या में कामयाब, हमदर्द और सुखी होगा।
3. भारी कबीला, ज़ागीरों का मालिक सदा सुखी लम्बी उम्र, माता-पिता का सुख उत्तम होगा। वो किसी भी हालत में कर्ज़ छोड़कर नहीं मरेगा। तीन पुश्त दादा, पिता, पोता हरदम कायम का स्वामी और खुद शनि कभी मंदा असर न देगा। 60साल तो ज़रूरी बल्कि सारी उम्र उत्तम प्रभाव होगा मगर शर्त ये कि मनुष्य परोपकारी भी हो। माता-पिता के बाद अगर तकलीफ हो तो वृहस्पति का उपाय सहायक होगा, बाकी संसार में शत्रु उसे काटने वाले साँप की तरह मारने को दौड़ेगें। घर में जन्म का गड़ा हुआ पत्थर शुभ फल देने की निशानी होगा।
4. जब तक उत्तम बैठा हुआ हो तो शुक्र कहीं भी टेवे में हो वो (शुक्र) शनि के संबंध में शुक्र खाना नं० 2 का दिया फल देगा, लेकिन अगर शुक्र हो ही खाना नं० 2 में तो शनि 9 गुना नेक होगा। मगर चन्द्र भाग हर दो हालत में मंदा होगा।
5. हर तीनों (शनि, बुध, शुक्र) का प्रभाव उत्तम होगा, लोगों के आराम के कामों से फायदा हो, स्त्री अमीर खानदान से होगी।
   -जब बुध खाना नं० 6 या शुक्र खाना नं० 7 में हो।
6. कोई मंदा असर न देंगे, लेकिन अगर पिछली अंधेरी कोठरी में रोशनी कर दी जाए, दीवार तोड़ दी जाए, रोशनदान खासकर दक्षिण की ओर तो तीन साल में सब कुछ बर्बाद होगा।
   -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 3 में हो।
7. उर्ध रेखा का स्वामी, दुष्ट, भाग्य या जिसके धन से सड़े हुए मुर्दे की जगह बदबू आए या धन-दौलत के होते हुए भी मंदे जीवन का स्वामी हो। -जब खाना नं० 2 खाली हो।
8. संतान का हाल मंदा न होगा।

9. कुदरत की ओर से कोई बुरी घटना मृत्यु आदि दुःख देने वाली न होगी। –जब वृहस्पति खाना नं० 5, सूर्य, चन्द्र या मंगल खाना नं० 3 में हो।

10 मां-बाप दोनों की तरफ से उत्तम भाग्य, भला लोग होगा। स्त्री अमीर खानदान से और अच्छे भाग्य वाली होगी।
–जब चन्द्र खाना नं० 4 में हो।

11.दूसरों से हमदर्दी और माता-पिता की आपस में ठीक बनी हुई अब सूर्य और शनि का कोई झगड़ा न होगा।
–जब सूर्य खाना नं० 5 में हो।

12.गो माया ज़्यादा मगर माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा।
–जब वृहस्पति खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. माथे पर या पाँव की पीठ पर बाल हो तो मंद भाग हो।
2. किसी निर्धन को रात को भी अपने मकान में आराम नहीं करने देगा, उसे डर होगा कि कहीं वह उसका घर बार ही उठाकर न ले जाए।
3. बच्चे के माता के पेट के वक्त का बनाया या खरीदा मकान पिता को शनि की मियाद पर ज़िंदा न छोड़ेगा। राजदरबार में धीरे-धीरे कछुवे की चाल की तरह तरक्की होगी।
4. छत पर चौखट ईधन लकड़ी आदि मंदे असर की पहली निशानी होंगे। मंदे समय वृहस्पति का उपाय काम देगा।
5. अब संतान पर बुरा असर न होगा बल्कि पूरी मच्छ रेखा, 9 लड़के 3 लड़कियाँ जायज होंगी।
–जब केतु खाना नं० 5 में हो।
6. शनि खाना नं० 9 को जलाएगा, घर बार और सारी दुनिया को फूंक कर रहेगा। प्लेगी चूहे की तरह बीमारी लानत की गंदी हवा फैलाने वाला होगा। –जब मंगल खाना नं० 4 में हो।
7. ऐसा व्यक्ति अमीर तो होगा मगर दुष्ट मंद भाग्य जो दूसरों के कफन तक बेचकर दौलत इकट्ठी कर लेगा।
–जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा :- उर्ध रेखा हथेली के खाना नं० 5 से चलकर हाथ को दो भागों में बाँटने वाली हो।

8. शनि बिना नींव के घूमता पत्थर होगा, साहूकार से गरीब हो चुका निर्धन प्राणी अपने ही मन की दलील करता रहता और कीनाबरी से गर्क होता रहता होगा। वह अपनी संतान के जन्म के रास्ते में भारी मनहूस मंदा पत्थर फंसा रहा होगा। शनि खाना नं० 5 में संतान के मारने में एक ज़हरीला साँप माना है यानी जो संतान पैदा हो जाने के बाद भी उन पैदा हुए बच्चों को उनके पीछे भागकर उनको मारने के लिए ज़हरीले साँप की तरह उनको मारकर अपनी प्यास बुझाएगा मगर खाना नं० 9 का शनि संतान के संबंध में साँप की बजाय एक बड़ा भारी पत्थर का पहाड़ होगा जिसको पार करके बच्चों को अपनी माता के पेट से बाहर आना मुश्किल होगा। लेकिन जो बच्चा पैदा हो गया उसके पीछे शनि खाना नं० 9 का पहाड़ शनि के खाना नं० 5 के साँप की तरह नहीं भाग सकता। संक्षेप में शनि खाना नं० 9 के समय बच्चे देर के बाद पैदा होंगे और जो पैदा होंगे वह जीवित रहेंगे। खुद बदला लेने वाला वर्ना संतान को बदला लेने की नसीहत कर जाने वाला होगा आग़ की घटनाएँ वृहस्पति की चीज़ें सोना हवाई, पीला रंग और चन्द्र की चीज़ें चांदी, बजाजी और वृहस्पति के कामों से लाभ मगर शनि की चीज़ें और शनि से सम्बन्धित काम मंदा फल देंगे।
–जब शनि पापी ग्रह की तरह राहु, केतु किसी तरह शनि को मिलते या देखते हों।

शनि खाना नं० 10

(लेख का कोरा खाली कागज़)

परछाई दिल की आँखों पे इज्जत करेगा।
कदम पर कदम आगे बढ़ता चलेगा।।

मालिक नज़र ग्रह मंडल होता, दौलत शाहाना पाता हो।
नेक असर खुद अपना देगा, दूजा गुरु आ मिलता हो।
केतु बेशक हो टेवे मंदा, पापी बुरा न होता हो।
नेक शनि तो सबसे उम्दा [1], मंदे ज़हर खूनी होता हो।
शत्रु ग्रह या मंदा साथी, अन्धा शनि खुद होता हो।
नज़र उड़ेगी ग्रह सब ही की, ना ही शनि भला रहता हो।
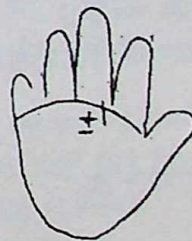
39 साला 48 होते, उम्र पिता का साथी हो।
शनि असर दे जब खुद मंदे, भली मदद गुरु होती हो।
तख्त चन्द्र, गुरु चौथे बैठा, ऐश सवारी देता हो।
4 मंदा या दुश्मन घेरा, 27 साला ज़र मंदा हो।
साल सातवां/तीसरा हर कोई उत्तम, चारों तरफ [2] शनि देखता हो।
धूम चक्र बुध सातवें आता, ससुराल अमीरी देता हो।

1. मगर आखिरी नतीजा मंदा जब खुद भला लोग धर्मात्मा हो लेकिन अगर शनि की तबीयत का तो हर तरह उम्दा।
2. 3-9-15-21-27-33-39-45-51-57-63-69-75-81-89-93-99-10-111-117 साल की आयु में।

हस्त रेखा :- **शनि के बुर्ज पर गणेश की शक्ल हो 卐 या शनि के पुर्वत पर मध्यमा की जड़ से रेखा हो।**

नेक हालत

1. खाना नं० 10 का शनि अगर खाना नं० 1 के ग्रह का सहायक हो तो 2 गुना उत्तम वर्ना खाना नं० 10का शनि खाना नं० 1 के ग्रह का 2 गुना शत्रु होगा।
2. पिता की आयु का टेवे वाले की कम से कम 48 साल की उम्र तक साथ होगा, शनि हर सातवें साल हर तरह से मान धन बरकत देगा और खुद शनि तथा वृहस्पति दोनों का ही उम्दा प्रभाव होगा, 3-9-15-21-33-39-45-57-63-69-75-81-87-93-10-111-105-117 साल।
3. अकेले शनि की हालत में उम्र का हर तीसरा साल उत्तम और शनि न सिर्फ चारों तरफ देखने वाला आँख का स्वामी या सहायता करने वाला भाग्य का कागज़ (शुभ अर्थों में), तमाम ग्रहों की दृष्टि का स्वामी और उनके लिए पिता समान होगा।
4. वृक्ष जंगल पहाड़ तरह-तरह की जायदाद का स्वामी ध्वजा धारी की तरह शाही धन। आसमान तक एक ऊँचा मान पाकर आखिरी समय ऐसा गिरेगा कि उनका ढूँढना कठिन होगा। विशेषकर जब वो धर्मात्मा हो लेकिन अगर शनि का स्वभाव साँप की तरह चौकन्ना और दूसरों पर कठोर मालिक होगा तो शनि खुद शेषनाग सिंहासन की तरह सहायक होगा। उसी तरह ही भारी पहाड़ की तरह स्थिर होकर शनि बैठा ही रहकर काम करने वाला हो या या ऐसे काम हो जिनमें बैठा ही रहना पड़े तो फायदा लेकिन अगर दौड़ने व भागने में हरदम मारा-मारा फिरने वाला हो यानी आऊटडोर ड्यूटी वाला हो तो मुर्दा साँप की तरह हरेक के पाँव के नीचे आता होगा। केतु बुरा हो तो बेशक बुरा हो परन्तु राहु, शनि कभी मंदा प्रभाव न देंगे।
5. पिता की उम्र लम्बी, टेवे वाले की कम से कम 39 या 48 साल की आयु तक पिता का साथ होगा और जातक की खुद अपनी आयु 90साल के करीब होगी। **राजसभा चाहे शादी या धर्म-स्थान मंदिर आदि यानी हर जगह बतौर अपनी नज़र मान होगा और वो उम्दा फकीर की झोली की तरह किस्मत जिसका भेद न खुले का स्वामी होगा जिसका फैसला खाना नं० 11 से होगा।**
6. **जिस कदर दूसरों का मान करे उसी कदर ही अपना मान बढ़ता जाए।**
7. शून्य बुध का गोल दायरा+वृहस्पति का सीधा डंडा। कुल 10या दोनों मिले हुए बुध, वृहस्पति के खाली आकाश का ब्रह्माण्ड होगा जिसमें शनि त्रिशूल की निशानी 111, वृहस्पति की रेखा को श्री गणेशाय नमः 卐 का सबसे ऊपर इज्जत निशान देगा यानी वो जादू की विद्या का स्वामी और आँखों से ही सुनता होगा।
8. जब तक शराब न पिए शनि की बरकत बढ़ती रहे उसका भेद किसी को प्रकट न होगा और अगर 48 साल की आयु तक मकान न बना पाए तो शनि टेवे वाले को मकान की कीमत तथा सामान के बराबर धन-दौलत देता जाये और जब मकान बन जाये शनि अपनी मदद का बोरिया बिस्तर गोल कर जाये। उस दिन से आगे और अधिक लाभ न देगा ये अर्थ नहीं कि बुरा असर देने लग जायेगा। अर्थ केवल यह है कि उस दिन के बाद यानि जब मकान बन जाये शनि मकान बनाने के लिए फालतू धन जमा न होने देगा।
9. हर तरह से ऐश व सवारी का आराम हो। -जब चन्द्र खाना नं० 1, वृहस्पति खाना नं० 4 में हो।
10 ससुराल खानदान अमीर होंगे और धन देंगे। -जब बुध वर्षफल खाना नं० 7 में आये।
11.चाहे अब शनि एक सोये हुए सांप की तरह होगा मगर प्रभाव अच्छा ही होगा।
-जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा

हाथ की अंगुलियों के नाखून दरम्याने हो।
12.शनि अब नेक ही फल देगा।

क्याफा

शनि के बराबर मध्यमा की जड़ में रेखा हो। जब शनि जागता हो।

मंदी हालत

1. दाढ़ी और मूंछ के बाल कम या बिल्कुल साफ हो तो कम हौसला, उसकी पैदा की हुई जायदाद न होगी। खाना नं० 10में प्रथम तो शनि मंदा ही न होगा लेकिन अगर हो जाये तो खूनी अजदहा होगा।
2. शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल या कोई और मंदा ग्रह अगर साथी, साथ हो तो सभी ग्रह अंधे बल्कि खुद शनि भी मंदा होगा।
3. हत्यारों से हत्या करने से 27 साला धन-दौलत का मंदा समय हो। जब शनि का असर मंदा हो तो वृ० की मदद सहायक होगी।

–जब खाना नं० 4 मंदा या खाना नं० 4 में शनि के शत्रु सूर्य, चन्द्र, मंगल हो।

शनि खाना नं० 11

(लिखे विधाता, स्वयं विधाता)

दंतकथा दुनिया से धर्मी जो डरता।
पकड़ पापी बेड़ी है खुद पार करता।।

दरबार गुरु के हलफ़ से पहले, धर्म अदालत बैठता हो।
राहु, केतु हो जैसे टेवे, फैसला उन पर करता हो।
ग्रह उत्तम को यह बढ़ाकर, जल्दी-जल्दी खुद बढ़े।
सिर्फ बुध से है वह डरता, कि न हो घर तीसरे।
साथ-साथी जब हो गुरु बैठा, धर्मी शनि खुद होता हो।
मंदे गुरु घर तीसरा मंदा, खाली तीजे शनि सोता हो।
लेख नसीबा तख्त पर [1] खुलता, आयु 84 रक्षा हो।
बुध दबाया हो या मंदा [2], बेकार शनि खुद होता हो।
रवि, मंगल घर 10 वें बैठे, चन्द्र आया घर 6 वें हो।
राजधन सब उत्तम होते, पाप स्याही धोता हो।
द्वार दक्षिण का साथी मिलते, असर धन मंदा हो।
अय्याश जनाही घर खुद होते, जिस्म आयु शनि जलता [3] हो।

1. 11-23-36-48-57-72-84-94-10-119 साल की आयु।
2. लड़की, भैंस का मंदा हाल बुध की चीज़ों के अशुभ परिणाम।

उपाय

1. शनि का उपाय सहायक जब शनि खुद के स्वभाव पर मंदा हो वरना साधारण हालत में वृहस्पति का उपाय।
2. जब राहु, केतु मंदे या उनकी चीज़ों की मंदी निशानियां या ग्रहण निशानी हो तो मंगल का उपाय और उपाय के दिन से एक वर्ष लगातार लंगोटे पर पूरा काबू रखें।

हस्त रेखा

वृहस्पति, शनि के पवर्तो की मध्यम जगह खाना नं० 11 पर क्रॉस होगा।

मंदी हालत

1. शनि की नेक तथा बद नीयत का फैसला राहु और केतु बदजात स्वयं की अपनी-अपनी हालत से होगा। नेक हुआ तो मिट्टी को हाथ डालने पर सोना कर देगा। अशुभ हुआ तो सोने की मिट्टी कर देगा।
2. धनवान मगर आँखों की चतुरता और फरेब से धन कमाए। अमूमन 48 साल की आयु अच्छी या बुरी का फैसला होगी। मगर हर दो हालत में आई चलाई चलती होगी।
3. शनि अब बच्चे के जन्म का हुक्म देने वाला स्वयं ही विधाता की तरह होगा यानि संतान के योग चाहे मंदे हो मगर अब ऐसा प्राणी कभी लावल्द न होगा। शनि स्वयं किस्मत का हरदम राखा और पाप राहु, केतु की स्याही धोने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति पक्का मर्द होगा परन्तु उसकी स्वयं की पैदा की हुई शायद ही कोई जायदाद होगी या माता-पिता से अमूमन जायदाद पाएगा। वह धर्म स्वभाव और धर्मी आँखों का स्वामी होगा।

4. सबसे पहले अब शनि कुल ज़माना और सब ग्रहों के गुरु, वृहस्पति का हलफ़ लेगा और फिर बाद में धर्म अदालत करेगा, जैसे राहु, केतु होंगे वैसे ही अपने धर्म ईमान से फैसला करेगा। उत्तम ग्रह को जल्दी-जल्दी बढ़ाकर स्वयं बढ़ेगा।

-जब तक बुध खाना नं० 3 में न हो।

5. अब शनि स्वयं धर्मी होगा खासकर जब टेवा धर्मी पाप राहु, केतु, चन्द्र के साथ या खाना नं० 4-10में हो लेकिन यदि वृ० मंदा हो तो खाना नं० 3 बुनियाद होगा अगर खाना नं० 3 खाली हो तो शनि सोया हुआ होगा और न सिर्फ स्वयं शनि का अपना फैसला बहाल होगा बल्कि तख्त पर आने के दिन 11-23-36-48-57-72-84-94-10-119 साल की आयु से शनि नेक फल देगा और 84 साल तक सहायता देता रहेगा।

-जब वृ० साथ-साथी हो।

क्याफा :- शनि के बुर्ज का मध्यमा की जड़ से शनि तथा वृहस्पति के दरम्यानी खाना नं० 11 में अगर रेखा जाये तो शनि मंदा होगा लेकिन अगर मध्यमा की जड़ या शनि के बुर्ज से हथेली के खाना नं० 11 में रेखा जाए तो शनि का फल उत्तम और सहायक होगा।

6. राजदरबार माया दौलत सब उत्तम और खुद राहु, केतु भी पाप की स्याही धो देंगे।

-जब सूर्य, मंगल खाना नं० 10और चन्द्र खाना नं० 6 या सूर्य खाना नं० 1 और चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

7. आम लोगों के फायदे और आराम की पूरी ताकत और नेक प्रभाव और खुद आराम पाये।

-जब शुक्र खाना नं० 7 में हो।

8. पानी का भरा हुआ घड़ा (शनि खाना नं० 11 में दृष्टि खाली) यानि जब या जिसका शनि खाना नं० 11 में हो तो ऐसे व्यक्ति को शुभ काम करने के समय पानी का भरा हुआ घड़ा मिट्टी का कच्चा बर्तन बतौर कुम्भ रख लेना अति उत्तम होगा।

मंदी हालत

1. खाना नं० 11 से चलकर खाना नं० 1 में आने के दिन से यानि 11-23-36-48-57-72-84-94-10-119 साल की आयु में शनि मंदा होता हुआ भी नेक फल देगा।
2. अंडे ही खा जाने वाला सांप बच्चे कहां छोड़ेगा की तरह शनि की खुराक यानि शराब खोरी से शनि के नेक प्रभाव समाप्त होंगे और मंदे समय की साधारण लहर होगी। अपना बनाया नया मकान पिछली अवस्था 54-55 में कायम होगा। लेकिन अगर पहली अवस्था शनि की आयु 36-39 से पहले बना ले तो आखिरी अवस्था में उसी मकान में लम्बे समय तक बीमार रहकर मौत हो। मंदे अस्पताल की तरह अपनी संतान और गृहस्थी जिम्मेदारियों की बेड़ी को समुद्र के मझधार के ठीक बीच ही छोड़ कर मर जाएगा कि उनकी आँहों को सुनने वाला शायद ही कोई संसारी गृहस्थी सहायक होगा या हो सकेगा।
3. दक्षिण के दरवाजे का साथ हो तो धन का मंदा हाल होगा और जब अय्याश जनाही हो और शराब खोरी अपना फर्ज ही बना ले तो अपना जिस्म आयु और स्वयं शनि का नेक प्रभाव सब मंदे और जलते ही होंगे, दंतकथा अफवाहें मंदे समय की पहली निशानी होगी। ठीक तो यही होगा कि जब कभी मौका आये शराब को मुंह में डालने की जगह ज़मीन पर गिरा दिया करे तो शनि का नेक प्रभाव बढ़ता है। उत्तम यही होगा कि शराब को जै राम जी की ही कर दे।
4. बुध की चीज़ें रिश्तेदार या कामकाज लड़की, बहन का मंदा हाल और हानिकारक होगा। फरेब और बेईमानी का पैसा अपने लिए ही कफन का बहाना होगा। अपने जन्म से पहले बने हुए मकानों और दरवाजों का रुख बदल देना यानि उखाड़ कर पूर्व से पश्चिम या उत्तर से दक्षिण की ओर यानि पहले से उल्टी ओर (खासकर दक्षिण को) अच्छे बनाए खेल को मंदा कर देगा और जीवन मातम का संसार बन जाएगा।
5. नया सिरी माया चाहे विद्या अधूरी मगर धन-दौलत भला ही होगा, बेशक ज़माने का उतार-चढ़ाव बहुत देखेगा, मगर गुजारा मंदा न होगा।
6. तीनों ही निष्फल होंगे और मंदे असर के साबित होंगे।

   -जब बुध खाना नं० 3, वृहस्पति खाना नं० 9, शनि खाना नं० 11 में हो।
7. मंदी सेहत के समय स्त्री से कम से कम एक साल दूर रहे नहीं तो बीमारी 3 साल के लिए बढ़ जाएगी।
8. शनि बेकार और निष्फल होगा।

   -जब बुध दबा दबाया या मंदा हो।
9. राहु, केतु की चीज़ों के मंदे असर की निशानियों के समय मंगल का उपाय सहायक होगा। यदि वृ० निकम्मा हो या बाप बुजुर्ग गुरु या लम्बी आयु का बूढ़ा कोई साथी न हो तो पुरोहित वृ० का उपाय सहायक होगा। मंदे समय में वृ० का उपाय और स्वयं के

स्वभाव के असूल पर अगर शनि मंदा हो तो स्वयं शनि का उपाय सहायक होगा। कुम्भ यानि पानी का भरा हुआ घड़ा कायम रखना सब ही मंदी हालतों में और सदा ही नेक फल देगा।

सामान्य उपाय :-

शनि की पानी की तरह बहने वाली चीज़ें तेल या शराब स्पिरिट आदि सुबह सूरज निकलने के समय ज़मीन पर गिराने से राजदरबार गृहस्थी हालत और आमदन के संबंध में हर तरह की खराबियों से बचाव देगा।

शनि खाना नं० 12

(कलम विधाता, आराम)

मदद सांप ज़हरी, जो तेरी करेगा।
ज़माने में शत्रु न बाकी रहेगा।।

नाग बैठे न जले [1] जंगल में, मछली [2] नहाये जल [3] में।
साधु [4] खुशी हो अपनी समाधि [5], गृहस्थी [6] खुशी हो धन [7] में।
लेखा [8] क्या देखे दर्पण [9] में, जब शुक्र, मंगल नहीं [10]घर में।
(या शत्रु आए हो दर में।)
असर शनि का प्रबल ऐसा, सांप हाथों में खेलता हो [11]।
बुध [12] बारह न पापी मंदा, शेषनाग सोया करता हो।
व्यापार कबीला बेहद लम्बा, अरब, करोड़ी होता जो।
उत्तम शनि चाहे तख्त हो होता, पेशाब दौलत पे करता वो।
पिछली कोठरी घोर अंधेरा, रोशन जभी न होती हो।
पाप बैठा जब उच्च हो घर का, उत्तम रेखा मच्छ होती हो।
सूर्य छठे दीवार [13] जो फटती, स्त्री, स्त्री पर मरती हो।
पदम असर न झूठ शराबी, मच्छ मुआवन उड़ती हो।

1. मंगल, बुध
2. मच्छ रेखा
3. चन्द्रमा खाना नं० 4 उत्तम नेक
4. खाना नं० 12 शुभ
5. उत्तम धन रेखा खाना नं० 7-9 नेक
6. बुध
7. कायम उत्तम
8. सूर्य, चन्द्र, मंगल
9. खाना नं० 2
10. शुक्र
11. उम्दा हालत
12. वृहस्पति
13. अंधेरी कोठरी के

दक्षिणी, पूर्वी कोने में बादाम शुभ। शनि मंदा होने से पहले बुध की मंदी निशानी दर्द आँख होगा।

हस्त रेखा

मच्छ रेखा जब आयु रेखा या उर्ध रेखा मछली के मुंह में हो तो शनि उत्तम फल देगा। लेकिन जब मच्छ रेखा के मुंह में सूर्य की तरक्की रेखा या बुध की सेहत रेखा गिर रही हो तो ज़ुबान का चस्का बर्बाद करेगा।

नेक हालत

1. शत्रुओं क़े संबंध में हाथ में त्रिशूल लिए वीर की तरह अच्छा व उत्तम जीवन गुजरेगा और सामान खुराक की कभी कमी न होगी। अगर सिर के ब़ाल उड़ जाये तो धनवान और सुखी होगा।

2. अब राहु, केतु का टेवे में बुरा फल न होगा और बुध भी अपनी शरारतों से बाज आ चुका होगा।
3. अक्सर हर 6-12 साल की आयु में नया मकान बनेगा, मकान बनने को न रोके जैसा और जब बने बन ही लेने दे क्योंकि मकान बहुत बनेगें।
4. ज़हर और सभी सांप हमेशा इंसान को मारने का बहाना नहीं होते, शनि अब रात के समय सिरहाने बैठ कर रक्षा करने वाला अज़दहा होगा जो जले हुए को आबाद करने वाली आँख का मालिक होगा। शनि का नेक असर इतना प्रबल होगा कि यदि सांप भी हाथों में आ जाये तो लड़ने की बजाय खेलता होगा। शनि स्वयं शेषनाग का साया करने वाला होगा। व्यापार कबीला हर दो पैमाने पर उत्तम दर्जे पर होगे चाहे शनि अरब, करोड़ों रुपया दे परन्तु वह व्यक्ति छुपी हुई फरेब बाजी का आदी होगा। वह माया पर पेशाब की धार मारता होगा।
5. रात का पूरा आराम और सुख के लिए कलम विधाता की ताकत का मालिक होगा।
   -जब खाना नं० 2 में शनि के शत्रु = सूर्य, चन्द्र, मंगल न हो।
6. जब तक पिछली अंधेरी कोठरी कायम हो और पाप राहु, केतु उच्च बैठा हो उत्तम मच्छ रेखा का फल होगा, ऐसे समय मंगल भी खाना नं० 6 से 12 में होगा।
   -जब राहु खाना नं० 3-6, केतु खाना नं० 9-12 में हो।

   क्याफा :- उर्ध रेखा मछली के मुंह में गिर रही हो।
7. **अब शनि तारने वाला इच्छाधारी सहायक सांप होगा।**
   -जब राहु खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. अगर झूठ बोलने वाला, स्त्री बाज और शरारती हो तो पद्म और सहायक उम्र या मच्छ रेखा का भी नेक असर न हो। ज़ुबान का चस्का बर्बादी का बहाना होगा।
2. आँखों की बीमारी के बाद मंदी सेहत फिर बाद में शनि का मंदा प्रभाव शुरू होगा।
3. स्त्री पर स्त्री मरती जाये विशेषकर जब अपने मकान की पिछली दीवार फोड़कर मकान को रोशन कर लिया जाए।
   -जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।
4. चन्द्र अब चुप होगा।
   -जब चन्द्र, राहु खाना नं० 12 में हो।
5. ज़ुबान का चस्का या बुध के काम चीज़ें रिश्तेदार बुध से संबंधित बर्बाद करे।
   -जब बुध मंदा हो।
6. तबीयत का गुस्सा राजदरबारी संबंध में सूर्य और शनि का आपसी झगड़ा साँप, बन्दर की लड़ाई का नज़ारा पैदा करेंगे।
   -जब सूर्य का संबंध हो।

क्याफा :- मछली के मुँह में सूर्य की तरक्की रेखा या बुध की सेहत रेखा गिर रही है।

****

राहु

रहनुमाएं गरीबां मुसाफरां
मुबारक यही तू जो आँसू बहाता।
हुई मौत - बीवी, चाहे शत्रु की माता।

फलक ढाँचा बहर दुनिया, दोनों नीला हो गया।
मदद पर जब राहु आया, दुनिया सर सब झुक गया।
मालिक [1] बदी का पाप एजेंसी, मौत [2] बहाने घढ़ता हो।
लिखा शनि का स्वप्न में पढ़ता, लिखा हुआ बद मंगल जो
साथ शनि स्वयं साँप का मणका [3], असर मगर खुद अपना हो।
बाद बैठा ले हुक्म शनि का, पहले बैठा खुद हाकिम हो।
शनि दृष्टि राहु पे करता, लोहा ताँबा रवि बनता हो।
राहु मगर हो उल्ट जो चलता, हस्द तबाही करता हो।
शनि बैठे को राहु देखे, राहु मंदा स्वयं होता हो।
मदद मगर न शनि को देवे, जंग लोहे को खाता हो।
मंगल राहु जब जुदा-जुदाई, मंत्री हाथी राहु बनता हो।
घर बैठक पर असर न कोई, मस्त खूनी चाहे कैसा हो।
मंगल बैठे जब साथ दृष्टि, असर केतु का देता हो।
असर मगर इस घर का गिनती, मिले असर जब घर में दो।
मंगल दृष्टि राहु पे करता, चुप राहु स्वयं होता हो।
उल्ट गर हो जब वह बैठा, बाजू मंगल के पकड़ता हो।
शनि रवि दो एक साथ टेवे, असर भला न दो का हो।
झगड़ा दोनों का लम्बा बढ़ते नीच राहु बद मंगल हो।

1. मंदे राहु के समय दक्षिण के द्वार का मकान का साथ न सिर्फ धन की हानि करेगा बल्कि उसका ताकतवर हाथी भी चींटी से मर जाएगा। जब तक खाना नं04 या स्वयं चन्द्र उत्तम हो, राहु कभी मंदा न होगा। चाँदी का उपाय सहायता करेगा।
2. मंगल खाना नं012 या 3 या सूर्य, बुध खाना नं03 या राहु स्वयं खाना नं04 के समय राहु कभी मंदा प्रभाव न देगा।
3. साँप की मणि जो उसके सिर में हो और जिसे साँप जान से भी ज्यादा मूल्यवान समझता हो।

दुनिया के फजीर का सोच-विचार जागते हुए ही इंसानी दिमाग़ में ख्वाबी लहर और कयासी ख्यालात की नकलों हरकत का 42 साल आयु का समय राहु का समय होगा। सब कुछ होते हुए भी कुछ न होना राहु शरीफ की वास्तविकता है। दिमाग़ी लहर का स्वामी, सब शत्रुओं से बचाव और उनका नाश करने वाला माना गया है।

आम हालत 12 घर :-

हाथी तख्त पर ग्रहण रवि का, 10वें शक्की खुद होता वह।
लेख पगूड़ा गुरु मंदिर का, रोता गुरु घर 11 हो।
आयु धन का राखा तीजें, गोली पक्का बन्दूकची हो।
पाप कसम वह करता चौथे, संतान बची न पाँच की हो।
धुआँ शुक्र बुध 7 वें उड़ता, कटती फाँसी घर 6 से हो।
मौत नकारा घर 8 बजता, ज़हरी चन्द्र जब (शनि) साँप से हो।
जले धर्म 9 राहु मिट्टी, शफा पागल को देता हो।
लाख उम्मीदें 12 फर्जी, हाथी खर्च न रुकता हो।

हस्त रेखा राहु, केतु की कोई रेखा बंधी हुई नहीं है। सिर्फ निशान बचे हों। जहाँ निशान मिले वह घर कुण्डली का होगा और अगर निशान भी न हो तो दोनों ग्रह अपने घर के होंगे। यानी राहु खाना नं012 में होगा केतु नं06 में होगा। मच्छ रेखा के समय राहु केतु उच्च घरों में यानी राहु 6-3, केतु 9-12 में। ये उच्च घर हैं। काग़ रेखा के समय यह दोनों नीच घरों के होंगे। यानी राहु खाना नं0 9-12 केतु 3-6 नीच घर।

नेक हालत 1. उत्तम प्रभाव के समय चोट लगने से नीला रंग हो चुके शरीर को फूंक से ही ठीक करने वाला मानिंद हाथी मगर सफेद रंग का हो।

2. आसमान के गुम्बद और संसार के समुद्र दोनों ही नीले रंग का मालिक राहु जिसकी सहायता पर आ जाए कुल संसार का सिर उसके सामने झुक जाए। मंगल के साथ या दृष्टि में होने से केतु का प्रभाव देगा। जब टेवे में मंगल शनि संबधित (जब मंगल स्वयं अपनी हैसियत में नेक मंगल हो) तो वह राहु सदा उत्तम और उच्च का होगा खासकर जब खाना नं04 खुद या चन्द्र उत्तम हो या मंगल खाना नं012 में हो (या सूर्य बुध खाना नं03) या राहु अकेला खाना नं04 हो तो राहु कभी मंदा प्रभाव न देगा बल्कि टेवे वाले की सहायता ही करता जाएगा और मंगल नेक के दौरान (खाना नं01 में आने के समय) पर चुप रहेगा।
3. मंगल बद जो लिखाये और शनि जिसे स्वयं लिखे उस लिखाई की ख्याली सफ़र की शक्ति का मालिक राहु स्वप्न में ही (यानी मंगल और शनि के मंदे प्रभाव का उसे पहले ही पता चल जायेगा) पढ़ लेगा। कुण्डली में शनि के बाद के घरों में बैठा हुआ शनि से हुक्म लेकर काम करेगा। लेकिन शनि से जब पहले घरों में बैठा हो स्वयं हाकिम होगा और शनि को हुक्म देगा। यह चन्द्र को मध्यम करता है मगर चन्द्र के साथ ही ठंडा और अकेला बंधा हुआ चुपचाप रहने वाला हाथी होगा चाहे सूर्य को यह ग्रहण लगता हो मगर गर्मी से और भी अधिक हानि करने वाला हिलता हाथी होगा। वृहस्पति के शेर और साधु को तो कोढ़ और दमा ही कर देगा मगर बुध के पक्षी और शनि के कव्वे को न सिर्फ आसमान में उड़ने की ही हिम्मत देगा बल्कि (बुध, शनि-बुध, राहु) दोनों ही ग्रहों का उच्च प्रभाव देगा। अगर यह एक शुक्र का जानी शत्रु और केतु को रास्ता दिखाने वाला सरदार है तो दूसरी ओर शनि के साँप की मणि और मंगल के महावत के साथ शेरों का शिकारी हाथी भी माना गया है ।

मंदी हालत

1. राहु मंदे के समय इसका मंदा असर राहु की कुल अवधि (42 साला आयु) के पूरा होने पर दूर होगा। धन सांसारिक आराम बरकत 42 के बाद एकदम मिल जाएंगे।
2. कड़कती बिज़ली, भूचाल आग का लावा, पाप की एजेंसी में बदी का स्वामी, हर मंदे काम में मौत का बहाना घड़ने वाली शक्ति, ठगी, चोरी और अय्याशी का सरगना, आनन-फानन में चोर मार करके नीले रंग कर देने वाली छुपी लहर का नामी फरिश्ता कभी छुपा नहीं रहता ।
3. जिस टेवे में सूर्य, शुक्र मुश्तरका हों राहु अमूमन मंदा प्रभाव देगा और जब सूर्य, शनि मुश्तरका हों और मंदे हों तो राहु नीच फल बल्कि मंगल भी बद ही होगा।
4. कुण्डली में यदि केतु पहले घरों में और राहु बाद के घरों में हो तो राहु का प्रभाव मंदा और केतु शून्य बराबर होगा।
5. यदि राहु अपने शत्रु ग्रहों (सूर्य, मंगल, शुक्र) का साथ ले कर केतु को देखे तो संतान नर और केतु की चीजें काम तथा रिश्तेदार बर्बाद होंगे।
6. सूर्य की दृष्टि या साथ से राहु का प्रभाव न सिर्फ बैठा होने वाले घर पर मंदा होगा बल्कि साथ लगता घर भी बर्बाद होगा।
7. मंदे राहु के समय दक्षिण के द्वार का साथ न सिर्फ हानि करेगा, बल्कि उसका शक्तिशाली हाथी भी मामूली चींटी से मर जायेगा।
8. मंदे राहु के समय यानी जब बुखार, सांसारिक शत्रु या अचानक, उलझन पर उलझन आवे तो :

क) चाँदी का उपाय मदद दे जब मन अशांत हो यानी मन की शांति बर्बाद हो रही हो।

ख) दाल मसूर लाल रंग की दली हुई, भंगी को प्रातः दें या वैसे ही भंगी को पैसा आदि खैरात करते रहें।

ग) मरीज़ के वज़न के बराबर जौं (अनाज कनक जौं) चलते पानी में बहा दें।

घ) जौं रात्रि सिरहाने रखकर प्रातः जानवरों या किसी गरीब को बाँट दें।

च) राजदरबार या व्यापार के आए दिन झगड़े और शनि के समय अपने शरीर के बराबर वज़न के कच्चे कोयले दरिया में बहा देना सहायता देगा।

राहु खाना नं० 1

(सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी, धन का प्रतीक मगर सूर्य बैठा होने के घर ग्रहण)

हुआ लेख अंधेर, बादल जो घेरा।
कोई पूछें आँसू, पसीना न तेरा।

हाथी बैठा तख्त पर तो, तख्त थरथराने लगा।
सूर्य बैठा जिस ही घर में [1], ग्रहण वहाँ आने लगा।

सूँड राहु की बुध हो बनता[2], केतु जिस्म बन चलता हो।
टोला तीनों का जिस दम मिलता, मौत फरिश्ता गूंजता हो।
चलती गाड़ी में रोड़ा अटका, माला भली जो टूटी हो।
होते सभी कुछ न कुछ होना, राम कहानी होती हो।
धन-दौलत और लड़के पोते, कायम सभी चाहे होता हो।
राहु चमक जब अपनी देवे, काम कोई न आता हो।
बुध, शुक्र हो जब तक उम्दा, ग्रहण असर न मंदा हो।
मंगल बैठा जब आ घर 12, राहु शून्य स्वयं होता हो।
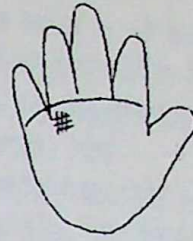
1. सिवाय सूर्य, बुध खाना नं० 3 बैठा होने का समय।
2. खाना नं० 1 से 6 पर सूँड का प्रभाव यानी बुध का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब हो रहा हो। खाना नं० 7 से 12 पर बाकी शरीर का प्रभाव यानी केतु का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब से।

हस्त रेखाः- **सूर्य के पर्वत पर राहु (जाल) का निशान हो।**

नेक हालत

सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी दौलत मंदी (धनी) की निशानी अपने शरीर पर और कबीलदारी के कामों चाहे खर्च ज़्यादा होगा, मगर शुभ होगा। कुण्ड़ली में सूर्य बैठा होने वाले घर में अंधेरा ही होगा और टेवे में सूर्य ग्रहण/चन्द्र ग्रहण के समय सूर्य/चन्द्र पर राहु के ज़हर का कोई भी मंदा प्रभाव न होगा। अगर अंधेरा होगा तो सिर्फ एक तरफ, तमाम संसार में अंधेरा न होगा। यानी यदि एक तरफ भाग्य हार देगा तो सूर्य की चमक दूसरी ओर हो जाएगी और ग्रहण हटते ही सूर्य की पहली शक्ति सूर्य की पहली वाली शक्ति रिज़क सब कुछ फिर से बना देगी।

1. खाना नं० 1 से 6 पर हाथी की सूंड (बुध जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो) और खाना नं० 7-12 पर हाथी के जिस्म (केतु जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो) का प्रभाव होता है।
2. बिल्ली की ज़ेर सूर्य रंग के कपड़े में रखी हुई उत्तम फल देगी या सूर्य से संबंधित चीज़ों का दान शुभ और अशुभ दोनों हालत में सहायक होगा।
3. एक अच्छा मालदार आदमी होगा मगर स्त्री की सेहत निक्कमी तथा शक्की हो।
   –जब शुक्र खाना नं० 7 में हो।
4. राहु का प्रभाव नदारद न भला न बुरा यानी राहु अब कुण्डली में चुप होगा मगर गुम न होगा।
   –जब मंगल खाना नं० 12 में हो।

राहु खाना नं० 1 के समय सूर्य बैठा हो जिस घर में	तो प्रभाव होगा
1.	राजदरबार में अपने दिमाग़ी विचारों में बेबुनियाद वहम और मंदी शरारतें खड़ी होंगी ।
2.	धर्म विरुद्ध, पूजा-पाठ से घृणा, ससुराल और धर्म स्थान दोनों मान की जगह उनका अपमान करने वाला।
3.	भाई बंधुओं पर दुःख मुसीबत खड़ी हो।
4.	माता खानदान और खुद मुसीबत जाती आमदन में रोड़ा अवश्य अटकाता होगा।
5.	अब राहु, सूर्य की सहायता करेगा औलाद अवश्य होगी बेशक हाथी की लीद से घर की रोसयाही करे।
6.	लड़के-लड़कियों के संबंधियों की ओर से तोहमतें मिलें या बुरा- भला कहा जाए।
7.	अदालती काम और गृहस्थ कामों में हानि।
8.	बिना कारण खर्चे या आदमी की रोटी कुत्ता खा गया की बातें।
9.	न स्वयं ही धर्म से लापरवाही होगी अपितु पूर्वजों के धर्म मंदिरों को नावलों की लाईब्रेरी बना देगा।
10	सांसारिक जीवन में बेएतबारी आम बर्ताव होगा।
11.	मुसिफ और न्यायपसन्दों को भी तक्कबर की बदबू से भर देगा।
12.	रात को सोते समय और आराम समय कोई न कोई लानत खड़ी रही होगी जिसका परिणाम कुछ हो या न हो।

मंदी हालत

अब राहु खाना नं० 1 की बिज़ली चमक रही हो, खाना नं० 1 से 6 पर हाथी की सूंड का साया यानी बुध का प्रभाव जैसा भी हो पड़ रहा होगा और खाना नं० 7-12 पर हाथी के बाकी शरीर का साथ यानी केतु का प्रभाव जैसा हो, पड़ रहा होगा।

1. जन्म समय सख्त वर्षा आँधी, नाना-नानी जीवित, टेवे वाले के जद्दी घर के निकलते ही सामने घर का हाल मंदा या वहाँ वीरान होगा, संतान न होगी, 40साला आयु तक राहु की चीज़ें संबंधी कार्य सब मंदे या मंदा प्रभाव देंगे।

   -स्वयं (खाना नं० 1) से संबंधित के लिए।
2. राहु का कड़वा धुआँ – मस्त हाथी की शरारती सूंड चोरी करनी तो कोतवाल का क्या डर के- एतकाय का हामी, चोर या बदनीयत कोतवाल की तरह जो स्वयं चोरी आदि करता हो या करवा रहा हो, जिस्म फैलाए हुकूमत की कुर्सी को तोड़ रहा हो।
3. राहु की उम्र (11-21-42) पर पिता के लिए मंद भाग (सांसारिक व्यर्थ मेहनत) ख्वारी व धन हानि का बहाना होगा।
4. तबदीली चाहे कितनी बार हो मगर तरक्की महदूद होगी।
5. सूर्य बैठे होने वाले घर के भाग्य को ग्रहण लगा होगा (स्वयं सूर्य को नही और सिवाय सूर्य, बुध खाना नं० 3 के समय) और राजा की जगह राज्य सिंहासन पर खरटि मारने वाला हाथी बैठे होने की तरह भाग्य का हाल होगा। चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना उसकी आम बात होगी। राम का नाम जपते-जपते अचानक माला टूट जाने की कहानी होगी। चाहे धन परिवार सब कुछ हो फिर भी कुछ न होना इसकी तासीर होगी (खाना नं० 1 की) और खासकर जब राहु की बिज़ली चमक रही हो (देखिए पक्का घर नं० 5) जो 42 साला आयु तक मंदे साथ का सबूत देगी। मंदे समय कोई आँसू तक न पोछेंगा।
6. शादी समय शनि या राहु की चीज़ों का कोई वहम न होगा मगर शादी के बाद ससुराल के यहाँ से शनि की चीज़ या राहु (बिजली आदि का समान) जिस समय टेवे वाले के पास आये राजदरबार या सूर्य बैठा होने वाले घर पर ग्रहण का समय हो जाये।
7. धर्म ईमान की खराबियां होंगी।

   -जब सूर्य खाना नं० 9 में हो ।
8. राहु का मंदा समय आम समय दो साल और एक साल के वर्षफल के हिसाब से 2 मास और सारी आयु के या आयु के पहले 42 साला हिस्से में 18 साल महादशा का समय हो सकता है, सूर्य ग्रहण (सूर्य+राहु, चन्द्र+केतु) के समय जो खराबियां होंगी वह अपनी स्वयं की ही पैदा ही हुई होंगी और जब कभी सूर्य बैठा होने वाला घर पहले ही मंदा हो तो माली खोलिया (आवारा फिरते-फिरते अपने आप बोलते रहने की बीमारी) का दु:ख होगा।

उपाय:- चन्द्र का उपाय सहायता देगा।

राहु खाना नं० 2

(राजा गुरु के मातहत, लेख पंगूड़ा, बरसाती बादल)

उम्र गुज़री मंदिर, मुफ़्त माल खाते।
मिले दिल कहाँ, फिर जो खैरात बाँटे।।

लेख पंगूड़ा 2-8 घूमें,	*मिट्टी, सोना दो मिलता हो।*
भूचाल माया चंद्र रोके,	*राजा [1] सखी वह होता हो*
उम्र लम्बी गुजरान हो उम्दा,	*जंगल वासी चाहे राजा हो।*
बचत शून्य या हो गुना 11,	*लेख झलक दो रंगा हो।*
लेख धुआँ जब शनि हो मंदा,	*मदद [2] चंद्र, गुरु करता हो।*
शनि, केतु, बुध फौरन उम्दा,	*मंगल, शुक्र घर भरता हो।*
धर्म मंदिर का पापी दुनिया,	*कब्र बैठा खुद तरसता हो।*
ज़ुल्म ज़माना बेशक कितना,	*कैद राजा ना होता हो।*
गुरु हालत पर माया चलती,	*धुआँ निशानी होता है।*
वर्षा मगर ज़र उस दिन होगी,	*शनि तख्त गुरु उम्दा हो।*

1. चाहे जगत् का ही राजा हो।
2. चंद्र (चाँदी की ठोस गोली), वृ० (सोना केसर पीली चीज़ें)।

हस्त रेखाः- **वृहस्पति के पर्वत नं० 2 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत

1. मध्यम दर्जा की जगह अब राहु की चाल आखरी दर्जा (नेक या बुरी) होगी।
2. गृहस्थ दर्जा बेहद लम्बा मगर माली दौलत की अच्छी या बुरी हालत का फैसला वृ० की हालत पर होगा। जिसकी निशानी राहु स्वयं ही अपनी चीज़ें काम या संबंधी राहु से दृष्टिगोचर होगा, मगर धन की वर्षा उस दिन होगी जब शनि खाना नं० 1 में आ जाये और वृहस्पति भी उत्तम हो।
3. यदि शनि के जाती स्वभाव के असूल पर या शनि खाना नं: 1 के हिसाब से उत्तम तो राहु का धुआँ उत्तम बरसाती बादल या आगे आने वाले अच्छे समय की निशानी होगी और शनि खाना नं: 1 या गुरु के उत्तम होते ही धन की वर्षा होगी। शनि मंदा तो ज़हर की गैस या मंदा कड़वा धुआँ जिससे दम और भी घुटने लगा।
4. यह घर राहु के लिए उसकी वास्तविक बैठक या गुरु का घर है जिसमें राजा समान है मगर चलेगा गुरु की आज्ञा अनुसार। पापी मंदिर में भी नहीं छुपते, जिस घर की कभी चोरी न हुई हो या वह घर जिससे चोर कोसों दूर भागे वह भी राहु की चोरी और दिन दहाड़े सीनाज़ोरी से बरी न होगा। **राहु मंदिर के नं: 2 में बैठा हुआ है और उसे चुराने को कुछ भी न मिले तो वह पुजारियों की आँखों के सामने और उनके पूजा करते-करते ही मंदिर की मूर्तियां बांध कर ले भागे। अर्थ यह कि राहु चोरी का स्वामी है और चोरी के वाकयात (माल या नकद) पर आम होंगे और वह भी जातक के सामने भी दिन दहाड़े। राहु का धर्म इतना ही होगा कि रात को कोई नुक्सान न होगा। दिन के समय अपनी संभाली जेब से भी माल चला जा सकता है। टेवे वाला के अपने अपना-आप चोर होने की शर्त नहीं मगर उसके पीछे चोर होंगे। चाँदी की ठोस गोली राहु की चोरी की शरारतों या ससुराल के मंदे हाल से बचाव करेगा।**
5. ऐसा व्यक्ति राजा या अधिकारी होगा चाहे जंगल का ही हो या जंगल का राजा हो और अगर धर्म मंदिर का साधु भी हो जाये तो भी हाथियों को खाना देने की शक्ति रखता हो।
6. वह सखी राजा के स्वभाव व हालत का स्वामी होगा।
7. भाग्य का लेख पंगूड़ा हो मिट्टी का सोना, सोने की मिट्टी होगी, उम्र उत्तम खुश जीवन हो।
8. नेक हालत में शुक्र का (25 साला समय) आयु धन के आराम का होगा।
9. कंगाल हो या घर छोड़ कर भागे राजा छोड़े, चाहे राजदरबार छूटे कुछ भी हो मगर वह किसी हालत में राजा की कैद में न होगा। मगर खैरायत के जमा हुए माल से चोरी का दाग न धो सकेगा। यानी जिस जगह और लोग अपनी मुसीबतों को टालने के लिए धन की खैरीयत दे रहे होंगे, वहाँ उससे चोरी हो ही जाएगी या कर लेगा।
10. वृहस्पति, शुक्र, चंद्र, मंगल जमा शनि केतु एक के बाद दूसरा चाहे मंदा भी होता जाए तो भी ऐसे टेवे वालों को राहु की सबसे ऊपर सहायता होती जाएगी ।

मंदी हालत

1. राहु की अवधि (42-21-10.5) यदि जद्दी मकान के उत्तर, पश्चिम कोना (छत) पर बैठकर पूर्व की तरफ मुंह करके अमूमन मकान कुंडली खाना नं० 2 की जगह में धुआँ रोटी पकाने के लिए नया मकान कायम होवे तो राहु न सिर्फ टेवे वाले का बल्कि उसके ससुराल और उसके अपने घर (खानदान) का धुआँ निकाल देगा जो टेवे वाले की 36 से 42 साल की आयु तक ज़ोर से मंदी हालत पर प्रभाव देता जाएगा। भाग्य का हाल ऊपर से नीचे घूमते पंगूड़े की तरह (सोने से मिट्टी - मिट्टी से सोना) दोनों ढंग की हालत होगी। मंदे वाकयात और गबन, चोरी आदि से धन हानि बहुत होगा आम होगी कैदखाना, जेलखाना, बेएतबारी, हर तरह और हर और का काला समय (बुरा समय) ज़ोर पर होगा।
2. **ऐसी हालत में चन्द्र (चाँदी की ठोस गोली) या वृहस्पति की चीज़ें (सोना, केसर, पीली चीज़ें) अपने शरीर पर या पास रखना सहायक होगा या अपने उत्तर पश्चिमी कोने, खज़ाने की जगह, खाना नं02 मकान कुण्डली के हिसाब से, वाले मकान में चन्द्र की चीज़ें रखें।**
3. ऐसा व्यक्ति चाहे सारी आयु मुफ़्त का माल खाते गुज़ार दे मगर स्वयं भिक्षा नहीं देना चाहेगा।
4. माया धन पर मंदे भूचाल को चन्द्र रोकेगा या माता से नेक संबंध होने पर सब कुछ उत्तम होगा।
5. भाग्य की हालत मंदे ज़हर से भरे हुए धुएं जैसी होगी। -जब शनि मंदा हो।
6. धर्म मंदिर खाना नं02 में बैठे हुए पापी (राहु, केतु, शनि) की तरह अपनी कब्र को भी तरसेगा यानी ऐसा व्यक्ति धर्म मंदिर में बैठकर भी पाप करने से पीछे नहीं रहेगा और अपनी आखिरी अवस्था खराब कर लेगा। 25 साला आयु तक केतु जो राहु खाना नं02 के समय खाना नं08 का हुआ करता है का फल उत्तम रहेगा। मगर 26 वें साल राहु और केतु दोनों ही का फल मंदा शुरु हो जाएगा।

राहु खाना नं03

(आयु तथा धन का स्वामी, रईस, गोली बन्दूक लिए पहरेदार)

अक्लमंद कभी तेरा शत्रु बनेगा।
बुरा यार अहमक से कमतर करेगा।।

साल खबर दो पहले देता, स्वप्न सच्चा उसे आता है।
जाल नर्क त्रिलोकी करता, संतान रहित कभी न होता हो।
आयु रद्दी और शर्त तरक्की, मालिक ज़ागीरों का होता हो।
मन्द 12 कोई दूजा साथी, 34 केतु बुध [1] मंदा हो।
बुध, रवि घर तीजे साथी, बहन दुःखी पतिहीन बैठी हो।
साथ मंगल से शाही सवारी, राजा महावत हाथी हो।
साथ बैरी ना राहु मंदा, न ही ग्रहण रवि होता हो।
स्त्री धन दौलत हर दम सुखिया, संतान अमीरी भोगता हो।
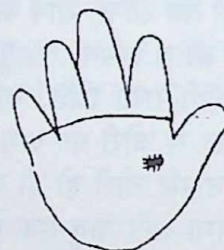
1. खाना नं012 में।

हस्त रेखाः- **मंगल के बुर्ज नं० 3 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत 1. ऊँचे आसमान की चोटी तक सहायता करने वाला अमीर जायदादों वाला होगा, राहु अकेला ही होने की हालत में स्वयं आयु और धन का राखा। हाथ में बंदूक गोली लिये पक्का निशान बाज और चौकन्ना पहरेदार है। ऐसा आदमी कभी किसी से न डरेगा चाहे शेर के शिकारी हाथी की तरह जंगल और वीराना ही क्यों न हो। बेधड़क होकर सहायता करने वाला होगा यदि वह शत्रु भी हो जाये तो भी बेवकूफ मित्र से कम ही बुरा करने वाला बल्कि आखिरकार शुभ ही होगा।

2. किसी वक्त के होने से 2 वर्ष पहले ही उसे उस का ज्ञान हो जाएगा और जो स्वप्न आयेगा वह सच्चा होगा, त्रिलोकी के नर्क का जाल काटेगा। निःसंतान कभी न होगा। लम्बी आयु और तरक्की। ज़ागीरों की मालकियत की शर्त ज़रूरी है, स्वयं सुखिया, शत्रु का सर कटने के लिए कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी। सूर्य का प्रभाव अब 2 गुना नेक होगा, आखिर समय जायदाद ज़रूर बाकी बची रहेगी और कर्ज़ा कभी भी न छोड़ कर जाएगा। दुश्मन पर हावी होगा।
3. शाही सवारी का हाथी या राजा की गिनती का आदमी होगा। -जब मंगल खाना नं० 3 में हो।
4. राहु अब शत्रु ग्रहों से मंदा न होगा और न ही मरेगा, शत्रु ग्रहों के प्रभाव में भी कोई खराबी न होगी बल्कि सब और से सुखिया होगा।

-जब शत्रु सूर्य, मंगल, शुक्र साथ या साथी हो।

मंदी हालत

1. भाई संबंधी धन को बर्बाद करेंगे, धन उधार बतौर कर्ज़ा लेकर मुकर जाएंगे या धोखा फरेब से तबाह करेंगे।
2. मंदे समय चंद्र का उपाय मदद दें।
3. 34 साला आयु तक बुध, केतु दोनों ही मंदे होंगे।

–जब कोई भी ग्रह खाना नं० 12 या साथ या साथी खाना नं० 3 में (सिवाय मंगल खाना नं० 3 के)।

4. सूर्य, बुध की आयु में बहन विधवा दु:खी हो मगर उस (टेवे वाला) को हर तरह का मान हो।

–जब सूर्य, बुध खाना नं० 3 साथी हो।

उपाय

हाथी दांत पास रखना बर्बादी कर देगा।

राहु खाना नं० 4

(धर्मी मगर धन के आम ग़म)

भला कहते स्नान गंगा जो करता।
वही तेरा स्वयं अपने घर का ही बनता।।

राहु खड़ा [1] न जब तक करते, धर्मी टेवा वह होता हो।
चन्द्र उत्तम या तख्त पे बैठा, हाथी माया में नहाता हो।
माया चन्द्र के घर से लेता, बुध घरों में भरता हो।
ससुराल धन ज़र शादी बढ़ता, केतु समय गुरु फलता हो।
लेख भला जो मामा घर का, मिटता उम्र सब चन्द्र हो।
साथ मिलेगा रवि, मंगल का [2], बैठा कोई जब [3] मंदिर हो।
10वें ग्रह नर चन्द्र साथी, मदद शनि चाहे हल्की हो।
साल गुज़रते आयु चन्द्र की, वर्षा धन-दौलत होती हो।
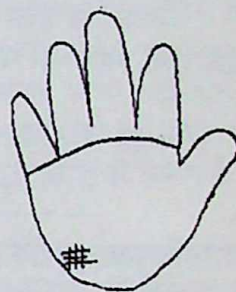
1. स्वयं अपनी कोशिश से और सिर्फ शौकिया ही राहु की चीज़ें कायम करना उदाहरण टट्टी खाना, नमरती, भट्टी बनाते बदलते रहना, कोयले की बोरियों के अम्बार जमा कर लेना सिर्फ छतें बदलना।
2. सूर्य या मंगल से एक या दोनों।
3. मंदिर - खाना नं० 2 ।

हस्त रेखा:- **चन्द्र के बुर्ज नं० 4 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत

1. धनी होने की निशानी होगी।
2. धर्मी टेवा, चन्द्र के बेज़ान चीज़ों का फल मध्यम बल्कि मंदा ही होगा। चन्द्र की सिफतें विद्या तथा बुद्धि का साथ, खर्चा चाहे मनमर्ज़ी पर करे मगर लम्बा और शुभ खर्चा होगा।
3. केतु और शनि बुरे कामों में अब राहु के साथ हाँ में हाँ नहीं मिलाएंगे और उनका अपना फल होगा राहु, स्वयं माता के चरणों में सिर झुकाए माता-पिता के संबंध में पाप न करने की कसम उठाये हुए नेक और धर्मात्मा होगा। जब तक अकेला ही हो या चन्द्र के साथ खाना नं० 4 में हो। वर्ना अपनी शरारती नस्ल का सबूत देगा। ऐसे व्यक्ति का अपना घर ही का स्नान, गंगा स्नान यात्रा करने से अच्छा होगा।
4. माया पर हाथी का साया या माया में नहाता (बहुत धनी) और जैसा चन्द्र होगा वैसा ही राहु के हाथी की सूंड में पानी भरा हुआ (या धन की हालत) होगा। धन चन्द्र बैठा होने वाले घर से लेगा यानी चन्द्र बैठा होने वाले घर की संबंधित चीज़ें काम या संबंधी से वह धन पैदा करने को सहायक होगा और जहाँ बुध बैठा होगा उस घर में भर देगा। यानी बुध जिस घर में हो उससे संबंधित रिश्तेदार या काम या चीज़ें उससे लाभ उठाएंगे और स्वयं उसे सहायता देंगे।

–जब चन्द्र उच्च या खाना नं० 1 में हो।

5. जैसे राजदरबार से धन कमा कर पुरखों के घर भर दे।

–जब चन्द्र खाना नं० 1, बुध खाना नं० 10में हो।

6. विवाह के दिन से ससुराल का धन बढ़ता होगा और टेवे वाला उनमें से अपना हिस्सा लेता होगा। –जब शुक्र उत्तम हो।

7. टेवे वाले पर राहु का साया होगा, सूर्य और मंगल सहायक होगा।

-जब सूर्य, मंगल या दोनों खाना नं० 2 में हो।

8. आयु का 12, 24, 48 साल में या संतान के जन्म दिन से माता-पिता के लिए शुभ और उत्तम फल होगा।

-जब केतु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. आयु के 24, 48 साल चन्द्र की बेज़ान चीज़ों का फल मंदा होगा। मगर वह धर्मी और बुद्धि का स्वामी होगा। 45 साला आयु से राहु, केतु दोनों ही का उत्तम फल होगा। मामा घर का उत्तम लेखा, चन्द्र की आयु 6, 12, 24 तक बर्बाद हो चुका होगा। स्वयं धर्मी होगा मगर मंदी हालत में धन के फिक्र ग़म आम होंगे, खासकर जब स्वयं जानबूझ कर राहु खड़ा किया जाये। राहु खाना नं० 4 वाला अगर मकान को छेड़े तो सिर्फ छत ही बदल कर न हट जाये बल्कि नीचे से ऊपर तक कुल इस छत से सम्बन्धित, चार दीवारी और छत दोनों को ही बदले वर्ना राहु खड़ा गिना जाएगा और धन की कोई न कोई हानि हो जायेगी या हानि का बहाना हो जाएगा। मकान या छत की मुरम्मत इस बात से बरी होगी यदि सिर्फ छत खराब हो गई हो तो नई छत में पुरानी छत का कुछ सामान मिला कर दोबारा छत डाल देवे जिससे कि नई डाली गई छत नई न गिनी जाएगी बल्कि मुरम्मत की गई मानी जाएगी।
2. धन-दौलत का प्रभाव हल्का रहेगा।

-जब चन्द्र उत्तम न हो।

3. सब ग्रहों पर धुआँ पड़ता होगा, मगर मंदा समय स्वप्न की तरह गुज़रता होगा और चन्द्र की आयु गुज़रते ही धन की वर्षा होगी सब नर्क धुल जाएंगे।

-जब चन्द्र, मंगल नर ग्रह (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) खाना नं० 10या चन्द्र खाना नं० 4 में हो।

राहु खाना नं० 5

(शरारती, संतान गर्क मगर सूर्य को तारे)

खुशी दिन त्यौहार काफिर जो बनता।
निशानी लावल्दी की पैदा वह करता।।

पहली स्त्री संतान [1] न देखें,	*शनि मंदा जब बैठा हो।*
लावल्द ज़रूरी जोड़ी गिनते,	*दिया बत्ती गुल करता हो।*
साल 21 घर पहला लड़का,	*आयु 42 दूजा हो।*
नं० दूसरा जिस दम आता,	*ससुर बाबा चल बसता हो।*
साथ चन्द्र, रवि तख्त पे बैठे,	*मदद राहु खुद करता हो।*
बैठी माता न साथी होवे,	*ज़िन्दी होवे मच्छ रेखा हो।*
रवि, चन्द्र या मंगल चौथे,	*चन्द्र घर 6 वें 12 हो।*
गिनती औलाद न लेख ही मंदे,	*योग नस्ल चाहे मंदा हो।*
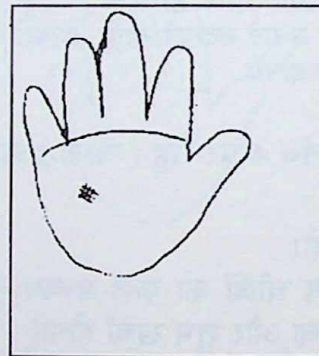
हस्त रेखा :- सूर्य की तरक्की रेखा पर राहु (जाल) का निशान।

नेक हालत

1. वृ0(धर्म मर्यादा, मान, बुद्धि, आमदन) और माया धन का उत्तम फल, खुद तेज़, उत्तम स्वास्थ्य और स्वयं सूर्य को शक्ति देने वाला, जिससे दरबार से संबंधित बरकत देवे। यदि माता ज़िन्दा तो उसके आखिरी दम तक संतान और धन दोनों की बरकत होगी। मगर वृहस्पति, शनि मुश्तरका नं० 7 के बराबर बड़ी भारी मच्छ रेखा न होगी। यानी नर संतान ज़रूर और जल्दी होगी मगर यह ज़रूरी नहीं कि 9 लड़के 2 बहने और धन का भी साथ देगी या हालत बादशाही होगी। बहरहाल परिवार तथा माया की ओर से सुखिया ही होगा।
2. आबिद (पूजा करने वाला) सूफी और ब्रह्मसनाश (पहचानने वाला) होगा, दौलत पर हाथी का साया चंद्र के साथ से चाहे औलाद (नर या मादा) के विघ्न ज़रूरी होंगे। मगर संतान की बाकी सब बातें गिनकर संतान के लिए कोई मंदा न होगी। बल्कि राहु अब चन्द्र और सूर्य की स्वयं सहायता करेगा। माता अमूमन लंबे समय तक टेवे वाला का साथ न देगी (छोटी उम्र में गुज़र जावे या वैसे ही जुदा हो जावे) मगर माता जीवित या साथ होने पर मच्छ (माली) होगी।

-जब चन्द्र खाना नं० 5, सूर्य खाना नं० 1, 5, 11 में हो।

3. औलाद के योग चाहे लाख मंदे हो लेकिन अब गिनती औलाद और हर तरफ से आयु और नसीबी की बरकत होगी। उसके भाई स्वयं समेत योगी राजा के समान और वह पाँच बेटें का बाप होगा। मगर उससे अधिक औलाद जिस कदर बढ़ेगी भाई औलाद से घटते ही होंगे।

–जब सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 4-6 या शनि, मंगल खाना नं० 5 में हों।

मंदी हालत

1. अचानक बिजली गिरने पर जान और बेज़ान का क्या फर्क होगा, की तरह ऐसे प्राणी की सेहत बीमारी पर फ़िज़ूल खर्चा आम होगा।
2. औलाद के त्यौहार या खुशी के दिन न मनाने वाले काफिर को औलाद देखनी ही कब नसीब होगी बल्कि उसकी औलाद (नर संतान) का दिया बुझा हुआ होगा। खाना नं: 5 में शनि-औलाद को मारने वाला साँप और खाना नं: 9 का शनि औलाद की जन्म के रास्ते में एक बड़ा भारी पहाड़ बन गया। शनि की इन दो हालतों के मुकाबले पर राहु खाना नं: 5 नर संतान के संबंध में एक ऐसी कड़कती हुई बिज़ली या ज़मीन के अंदर भूचाल पैदा करने वाला चलता हुआ लावा होगा जो कि संतान को माता के पेट में आते ही या गर्भ ठहरते ही अपने ज़हरीले असर से समाप्त कर दिखाएगा यही राहु खाना नं: 9 के संतान के संबंध में साँप की ज़हरीली सिरी (सिर का हिस्सा जब साँप का बाकी शरीर कट चुका हो) भागती हुई साबित होगी जो कि पैदा शुदा बच्चों को उनके भागने की ताकत पा जाने के दिन तक मारने से गुरेज न करेगी या राहु खाना नं: 5 में बच्चे माता के पेट में मर गए तो राहु खाना नं: 9 के समय खेलना-कूदना सीखते ही उस संसार से कूच करते गए हों (दूसरे शब्दों में नर संतान देरी से पैदा हो या बिल्कुल ही न पैदा हो या माता के पेट में ही गर्क होती हो)। अगर पैदा हो ही जाये तो 12 साल तक संतान की सेहत मंदी ही होगी। फिर भी बाबे, पोते का झगड़ा होगा। जिसकी पैदाइश पर टेवे वाले का बाप या ससुराल चलता बनेगा, यही हालत राहु की उम्रों में संतान पैदा होने या संतान की आयु होने पर हो सकती है। ऐसे टेवे में खास संभोग के समय स्त्री की इच्छा की ज़्यादती नर संतान की ज़्यादती का कारण होगा। अगर राहु खाना नं: 5 का बुरा असर उसकी औलाद पर न हो तो हो सकता है कि राहु खाना नं: 5 का बुरा असर टेवे वाले के पोते पर हो जाये।
3. हर हालत में न सिर्फ राहु की कड़कती बिज़ली और शरारती हाथी का फल मंदा होगा बल्कि शनि के ज़हर का बुरा असर दिन प्रतिदिन बढ़ता ही होगा, अमूमन नि:संतान होगा वर्ना पहली मर्द/स्त्री नर संतान ना देखे। बल्कि मर्द तथा स्त्री की जोड़ी पहले चाहे दूसरी (जब पहली स्त्री या मर्द तबदील ही हो जाये) नर संतान के देखने या अपने लड़कों के सुख को तरसती ही होगी।
4. आयु के 12 साल तक संतान ही सेहत और बाप (टेवे वाले) बाबे (टेवे वाले का बाप) की किस्मत बल्कि उम्र तक मंदी ही लेंगे। वृहस्पति साथ या साथी या राहु का बाबत दृष्टि आदि वृहस्पति से आपसी झगड़ा।
5. एक ही स्त्री से 2 बार शादी की रस्म या रिवाज़ दो दफा कर लेने से राहु की ज़हर दूर होगी।
6. जद्दी मकान में दाखिले के समय सब से पहली दहलीज़ के नीचे (तमाम की तमाम में) चाँदी का पत्रा देवे या शुक्र की चीजे (गाय, पशु आदि) कायम करें या चाँदी का ठोस हाथी (छोटा सा खिलौना सा) शनि की मंदी कार्यावाही से परहेज़ करे तो राहु का मंदा असर औलाद पर न होगा।

राहु खाना नं० 6

(फाँसी काटने वाला सहायक हाथी)

गिरे तुझसे जब खून भाई का कतरा।
नस्ल बंद तेरी का बढ़ता हो खतरा।।

असर वही जो शनि 12 के,
पहाड़ ऊँचे जा शत्रु मारे,
बुध, मंगल कोई 12 मंदा,
बीमारी ज़हमत का पता न चलता,
शगुन शुभ कुत्ता काला,
गोली सिक्का या काला शीशा,

फाँसी लगा खुद छुटता हो।
ताक त दिमागी ऊँचा हो।
आग जली [1] खुद होता हो।
माया छुटी घर लुटता हो।
छींक उल्ट न उम्दा हो।
असर उत्तम देता हो।
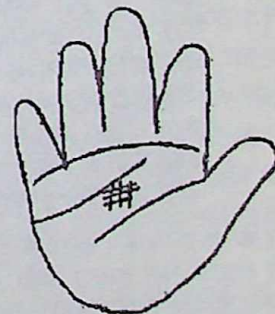
1. ससुराल की भाग्य कौसें कज़ाह होगा।

हस्त रेखा

हथेली की बड़ी आयत [_____] खाना नं० 6 में राहु का निशान।

नेक हालत

1. जातीं वस्तुएं और पोशिश (कपड़ा) पर उम्दा और नेक खर्चा होगा।
2. खाना नं0 6 में अकेला बैठा हुआ बिजली की ताकत का स्वामी और सैहजोर हाथी की तरह गले में फाँसी की रस्सी लगी हुई को भी काट देने वाला, हवा की तरह सहायक होगा, नामी चोर सज़ा से क्या डरेगा। नामवर चोरों को सज़ा देने वाला सदा ऐसे प्राणी का स्वयं सहायक-रक्षक होगा।
3. राहु अब मंदी शरारत से सदा दूर रहेगा, दिमाग़ी ताकत उत्तम देगा।
4. शनि खाना नं0 2 का दिया हुआ उत्तम असर साथ होगा, ऊँची ताकत वाले पहाड़ की ऊँचाई पर बैठे हुए शत्रु को तुरंत मार देगा।
5. सदा तरक्की की शर्तें हैं बार-बार तबदीली की शर्त न होगी।
6. दिमाग़ी खाना नं0 14 (शनि से) ताकतवर और खुदपंसदी का मालिक होगा।
7. पूरा काला कुत्ता सदा उच्च शगुन होगा।
8. सिक्के की गोली या काला शीशा सहायक होगा।

मंदी हालत

1. अपनी ही फौज को मारने वाला गंदा हाथी हर तरफ मंदा कीचड़ ही फैलाएगा।
2. नामी चोर सज़ा से क्या डरे।
3. तेरे हाथों से भाई के खून का गिरा हुआ कतरा तेरी नस्ल ही मार देगा।
4. आगे से उल्ट छींक मंदे प्रभाव की पहली निशानी होगी।
5. बीमारी का घर मगर अब उसका कारण मालूम न हो सके, धन-दौलत लुटता और घटता जावे।
   -जब बुध या केतु मंदा हो।
6. जब बड़े भाई या बहन से लड़े, चुल्हे की आग़ बुझे (टेवे वाले का खाना व रोटी बर्बाद हो जाये)।
   -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
7. धर्म ईमान नेकी तथा मान के लिए राहु स्वयं मंदा। सुसराल की किस्मत मानिन्दें कौसें कज़ाह परन्तु अक्सर मंदी हालत ही होगी। धर्म स्थान में बैठे हुए होने के इलावा सूर्य की गर्मी से अब ना सिर्फ खाना नं06 का (जहाँ कि राहु उच्च माना है) प्रभाव मंदा होगा बल्कि खाना नं02 और खाना नं07 भी मंदा ही प्रभाव देंगे।
   -जब बुध खाना नं012, सूर्य खाना नं02 में हो।

राहु खाना नं० 7

(चण्डाल, लक्ष्मी का धुआँ निकालने वाला)

फर्क बीवी बैठी या हो नज़र माता।
बढ़ेगी दिमाग़ी, ख्याली खुशी का।।

बुध [1] शुक्र का तराजू उल्टे, स्त्री [2] मंद परिवारां [3]।
धन का वह राखा होवे, खावे दोस्त यारां।
शनि देव उस रक्षा करेंगे, शत्रु मरे दरवारां।
मच्छ रेखा फल उत्तम देवे, बुध, शुक्र 2-11।
राज संबंध पदवी ऊँची, धन स्त्री न सुखी हो।
वृक्ष तले हो जिस जा बैठा, उखड़ा वही जड़ जलता हो।
केतु कुत्ता हो सबसे मंदा, अय्याश जनाही होता हो।
काग़ (पेशा) राहु ही जो जब करता, खतरा उम्र तक बढ़ता हो।
तख्त शुक्र से मिट्टी उड़ती, जलती सेहत ज़र माया हो।
उल्ट जभी सब हालत होती, अमीर होता सबसे उत्तम हो।

1. खुद तुला राशि के दोनों पलड़े (बनावटी सूर्य) गृहस्थी हालत।
2. स्त्री के टेवे में तलाक मंदी हालत आदि होगी। मर्द के टेवे में स्त्री की आयु बर्बाद या कई बार शादी या शादी या स्त्री के माँ-बाप का कुनबा बर्बाद, जब शादी 21 साला आयु में हो।
3. बुध, शनि, केतु कोई खाना नं० 11 या संसारी यार मित्र।

हस्त रेखा :- शुक्र या बुध के पर्वत पर राहु का निशान।

नेक हालत

1. स्वयं धनी मगर स्त्री तथा धन का गृहस्थी सुख (शुक्र का प्रभाव) मंदा होगा। ससुराल तथा स्त्री चाहे मंदे हो मगर सूर्य्र कभी मंदा न होगा और राजदरबार में ऊँची पदवी पर होगा उसे किसी के आगे गरीबी के कारण हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा।
2. बुध शनि हर तरह से सहायता देंगे और राजदरबार के सभी शक्तिशाली शत्रुओं को मार देंगे।
3. मच्छ रेखा (माली) धनी का पूरा उत्तम फल होगा। -जब बुध, शुक्र खाना नं० 2-11 में हो।

मंदी हालत

बुध, शुक्र का तराजू उल्टे, स्त्री मंद परिवारां।
दौलत का वह राखा होवे, खावे दोस्त यारां ।।

1. धनी मगर चण्डाल राहु जो हर तरफ मंदा धुआँ कर दे।
2. औरत के टेवे में 21 साला उम्र से पहले या 21 वें साल शादी व्यर्थ होगी यानी या तो वह खुद गुज़र जायेगी या तलाक हो जायेगा या उसका पति चल बसे या दोनों में से कोई एक या दोनों ही घर बार से भागे हुए और हर तरह से अपनी बदचलनी या मंदे जीवन से बदनाम होंगे। यही प्रभाव (मंदा) पुरुष के टेवे में राहु खाना नं: 7 के वक्त होगा। संक्षेप में 21 साला उम्र से पहले या 21 वें साल शादी होने पर (चाहे मर्द के टेवे में राहु खाना नं: 7 हो चाहे औरत के) घी के पराठे पर कुत्ते के पेशाब की तरह मंदा गृहस्थ। ऐसा अय्याश जनाही (जनानीबाज) कि उसे गंदे इश्क में अपनी (पति, बेटा-स्त्री का टेवा, औरत, बेटी-मर्द का टेवा) में कोई फर्क न होगा और जलती हर तरफ से मंदी हालत की नींव का कारण केवल अपने ही फर्जी विचारात होंगे। व्यापार सट्टा का फल मंदा ही होगा। टेवे वाले को सुख मिलने के बजाय, खुद स्त्री धन भी मंदे बल्कि दोनों का ही धुआँ निकले स्वयं धन का रखवाला होगा। मित्र उसे खाते जाएंगे। झगडे, घर में भी बेबुनियाद, औरतों की लानत और मौत बीमारी पर व्यर्थ लम्बे खर्चे, पुरुष की तलाक तक नौबत और गृहस्थ की हर तरफ से मंदी हालत होगी। औरत के टेवे में स्त्री की कई बार शादी या स्त्री के माता-पिता बर्बाद होंगे अगर टेवे वाले की (चाहे मर्द चाहे स्त्री) 21 साल से पहले या 21 वें साल में शादी हो जाये तो राहु मंदी हालत से शुक्र व बुध दोनों ग्रह (बनावटी सूरज) गृहस्थी हालत की तराजू उल्टी या शुक्र बुध के सब काम चीज़ें रिश्तेदार और लक्ष्मी का तो धुआँ निकाल देगा और कभी माफ न करेगा। मुसीबत का मारा ऐसा व्यक्ति जिस वृक्ष के नीचे बैठे वही बैठे वही बर्बाद हो। केतु का प्रभाव सबसे मंदा होगा।
3. अगर पेशा, काम (बिज़ली, जेलखाना, पुलिस) का हो तो आयु तक शक्की हो।
4. शादी के वक्त लड़की की तरफ से (जब राहु चाहे मर्द या चाहे औरत के खाना नं: 7 का हो) खालिस चाँदी की डली ऐन उस वक्त जब लड़की का संकल्प हो उसी दान करने वाले के हाथ से लड़की के दान किए जाने के बाद ही, लड़की के दान किया जाने की तरह दान करवा कर लड़की को अपने पास रखने के लिए दी जाये तो हर तरह से गृहस्थ में मदद होगी वर्ना मर्द और औरत हर दो की जुदाई और तलाक और मंदा बर्बाद जीवन होगा। यह चांदी की डली खुद व खुद समय के उतार-चढ़ाव से न कभी गुम होगी न कभी चोरी होगी। ध्यान सिर्फ यह रहे कि खुद उसे बेचकर न खाए। **बदनामी की मंदी मिट्टी उड़ती, औरत की मंदी सेहत और धन बर्बाद के समय घर में यही चाँदी की ईंट रात का चौकीदार होगी, शनि का उपाय नारीयल चलते पानी में बहाना सहायक होगा। कुत्ते से संबंध बर्बादी का कारण होगी।**
5. **राहु खाना नं: 7 जब वर्षफल के हिसाब आये (चाहे जन्म कुण्डली के हिसाब हो), तो घर में खालिस चाँदी की ईंटें और**
इसके इलावा एक बर्तन मे दरिया का पानी डालकर उसमें खालिस चाँदी का टुकड़ा डालकर टांका लगवा कर मुंह बर्तन
का बंद करे घर में रखे। जब तक वो बर्तन घर में रहे राहु के मंदे प्रभाव से बचाव होता रहेगा। पानी देखते जाये, कि बर्तन
का पानी खुश्क न होने पाये जब खुश्क होता नजर आये तो उससे पहिले ही उसमें और पानी मिला कर मुंह बंद करवा दिया करें ।
6. अगर शादी 21 साला उम्र से पहिले हो चुकी हो तो राहु नं: 7 वाला (चाहे स्त्री,चाहे पुरुष)चांदी के बरतन गिलास या चांदी को कोई
गोल (कटोरी आदि) **बर्तन में गंगाजल या किसी भी दरिया का पानी डालकर उसमें खालिस चाँदी का टुकड़ा डालकर**
(वज़न की शर्त नहीं चाहे कितना छोटा-बड़ा हो) धर्म स्थान में देवें (रख आवे) और ऐसा ही एक और बर्तन गंगा जल या
किसी नदी का पानी (चलता रहने वाला या कुदरती पानी– बारिश, ओले या बर्फ का पानी) भर कर उसमें खालिस चाँदी
का टुकड़ा डालकर औरत अपने पास रखे तो हर प्रकार से सहायता होगी।
7. बुध, शनि, केतु में से कोई खाना नं: 11 में हो उसी ग्रह से संबंधित चीज़ें काम या रिश्तेदार टेवे वाले को खाये या बर्बाद करें ।

-जब बुध, शनि, केतु खाना नं० 11 में हो।

8. दूसरी नर औलाद 42 साल के बाद नसीब होगी।
–जब मंगल, शनि मुश्तरका या मंगल, शनि अकेले-अकेले खाना नं० 5 में हों।

राहु खाना नं० 8

(नकारा कूच, मौत का मालिक, कड़वे धुएं का संदेश)

हुक्म मौत मालिक न फरियाद जोई।
सिर्फ दादापनी न दिलदार कोई ।

चाल चंद्र और हुक्म शनि का, असर राहु दो मिलता हो।
नेक मंगल जब 12 बैठा, राहु मंदा नहीं होता हो।
बाकी घरों बद मंगल ज़हरी, मौत नगाड़ा बजता हो।
चरबी [1] कच्ची छत [2] अपनी उड़ती, लेख नसीबा मंदा हो।
28 साला जब [3] मंगल आवे, शनि [4] फेरा खुद पाता हो।
सोया नसीबा पकड़ जगावे, उजड़ा खज़ाना भरता हो।
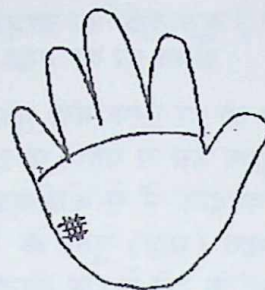
1. मंगल बद, सूर्य का शत्रु होगा।
2. राहु अब शनि के खिलाफ मंदा होगा।
3. मंगल नेक हो या खाना नं० 8 में आ जावे।
4. शनि नेक हो या खाना नं० 8 में आ जावे।

हस्त रेखा :- मंगल बद के पर्वत पर राहु का निशान।

नेक हालत

1. राजा तथा फकीर को एक न एक दिन बराबर कर देगा या उस का भाग्य कौसे कज़ाह की तरह रंग-बिरंगा होगा जिसका प्रभाव चलते पंगूड़े की तरह नीचे ऊपर शक्की ही होगा।
2. अब राहु का भेद चौकोर चाँदी का टुकड़ा 4043 दिन अपने पास रखने से खुलेगा। चाल चंद्र की और हुक्म शनि का और राहु खाना नं० 2 का दिया हुआ असर साथ होगा।
3. राहुअब मंदा न होगा ।
–जब नेक मंगल खाना नं० 12 में हो।
4. आयु के 28 साल मंगल नेक हो या खाना नं० 1-8 आ जावे तो सोया नसीबा जगा दे और उजड़ा खज़ाना भर दें।
–जब मंगल नेक या खाना नं० 1-8 या शनि नेक या खाना नं० 8 में आ जाये।

मंदी हालत

1. बेईमानी से कमाया हुआ पैसा उसको अपनी कमाई हुई को आठ गुना कम कर देगा। कड़वा धुआँ, नेक कुटुम्ब से होता हुआ भी काफिरों की करतूतों से बदनाम होगा अपने व्यक्तिगत विचारों के मंदे नतीजे होंगे। रंग-बिरंगे भाग्य का फैसला शनि पर होगा। जब सिर्फ छत बदली जाये तो चंद्र फौरन राहु के खिलाफ चलेगा और राहु शनि के खिलाफ चलेगा चाहे टेवे में कितना ही उच्च बैठा हो। राहु का फल खराब ही होगा अदालती झगड़े और उनमें लम्बे खर्च। जिस तरह मौत के आगे कोई चारा नहीं उसी तरह मंदे वक्त में कोई मद्दगार न हो। कोई फरियाद न सुने हर हालत में अपने आप ही हौंसला देने वाला और दिलदार होगा। राहु अपने असर में लेटा हुआ खूनी हाथी मौत का हुक्मनामा साथ लिए हुए कड़वा धुआँ और खुद ही मौत के लिए गिरफ्तारी का नगाड़ा बजा रहा होगा, अचानक दुर्घटना ज़हमत बीमारी और धन हानि करेगा। *खासकर जब राहु का सिर और केतु की दुम गिन कर शनि बतौर साँप सीधा हो बैठे और चंद्र को ज़हर देवे। ऐसी हालत में घूमती ग्रहचाल से सोना और मनुष्य शरीर मिट्टी में मिले हुए की तरह हाल होगा।*
2. *घर का सबसे बड़ा आदमी अगर पुरा राहु (काला, काना, नि:संतान) हाथी कद और हाथी के रंग का हो तो राहु का सारे घर पर बुरा प्रभाव न होगा।*
3. **दक्षिण का दरवाज़ा छत व फर्श दाखिले से अंदर जाते वक्त नीचा दर नीचा होता जाए।** सिर्फ छत बदली जाये। मकान के **साथ व भडभूंजे की भट्टी (जिसमें ताँबे का पैसा ड़ालना शुभ होगा) सब मंदे प्रभाव देंगे।**
4. जन्म कुण्डली के खाना नं० 8 का राहु जब वर्षफल के हिसाब नं० 8 में आये तो उसका हाथी कब्रों में गिरकर मर जाये यानी बहुत नुक्सान हो। उपाय (राहु खाना नं० 8 में आने वाले साल) जन्म दिन के बाद जब 8 वां मास शुरू हो तो बादाम हर रोज़ मंदिर में ले जाकर आधे वापस लेते आये और अपने आने वाले जन्म दिन तक उपय जारी रखें हाथी के गुज़रने के लिए पुल तैयार हो जाएगा।

5. उपाय :खोटे सिक्के (खराब शुदा जिनकी बाज़ार में कुछ कीमत न हो और ज़मीन से टकराने पर कोई आवाज़ न हो) या सिक्का दरिया में डालते जाना शुभ होगा तकरीबन 8 सिक्के या हर रोज़ एक सिक्का 43 दिन तक डालना है या 4 नारीयल, 4 किलो सिक्का के टुकड़े करके दरिया में डाल देने चाहिए।

6. मौत का नगाड़ा बजता होगा खासकर जब 21 साला उम्र में राहु के शत्रु ग्रह से सम्बन्धित काम किए जाएं, शुक्र, 21 साला शादी, सूर्य-बिज़ली के महकमे की नौकरी, मंगल-जंगली मुलाजमत में बेईमानी, फरेब, धोखा आदि के बुरे समय।
–जब टेवे में मंगल बद हो मंगल या बुध दोनों मंदे (किसी भी घर में सिवाय मंगल खाना नं० 12 के)।

7. शनि और राहु की उम्र (9 साला, 11 साला) पर चाचा की माली व औलाद की जड़ कटती होगी। खासकर जब चाचा शनि से संबंधित सामान खरीदे। शनि खाना नं० 6 के समय राहु खाना नं० 8 को किसी के मौत के हुक्मनामा की तकमील और जिसने जहाँ मरना है वहाँ ले जाकर मार देने का पूरा हक होगा और कमी रहने पर शनि खुद जज बन कर मौत का हुक्म देने के लिए साथ खड़ा होगा। –जब शनि खाना नं० 2 या 3 में हो।

राहु खाना नं: 9

(पागलों का सबसे बड़ा हकीम, डॉक्टर मगर बेईमान)

धर्म तेरा ढोलक या बच्चों को जाती।
बचेगी कहाँ तक जो हाथी से बजती।।

धर्म जला जब राहु भट्टी, चुप गुरु 5-11 हो।
सरसाम हटाता फूंक से अपनी, ठीक पागल को करता हो।
ग्रह चौथे का तख्त पे आते[1], राहु मंदा खुदा होता हो।
तख्त मगर जब खाली होवे, सेहत बुजुर्गों मन्दा हो।
झगड़े अदालती खून से करता, पक्की नि:संतान होती है।
संतान हालत स्वयं ऐसी करता, पैदा होती और मरती हो।
शनि टेवे जब 5 वें बैठा, हुक्म शनि से पाता हो।
योग सन्तान का ऐसा मंदा, न ही मरे न पैदा हो।
उपाय केतु या पालन कुत्ता, भाव सेवा चाहे कितना हो।
बार कई हो कुत्ता मरता, आयु औलाद की बख्शता हो।

1. 4-16-28-4052-64-76-88-100-114 साला आयु।

हस्त रेखा:- **किस्मत रेखा की जड़ (वृक्का बुर्ज खाना नं09) पर राहु का निशान।**

नेक हालत

1. पागलों के इलाज के लिए सबसे उत्तम जो सरसाम के बीमार को तो फूंक मार कर ही ठीक कर दे मगर लालच के मारे बेईमान जिसका धर्म ईमान भट्टी में जलता होगा, वृ0 अब चुप होगा मगर गुम न होगा। –जब वृ0खाना नं05-11 में हो।

मंदी हालत

1. **फकीर साधु के फ़िज़ूल खर्चे जो लुटेरे बन कर खा जाये।**
2. नर औलाद माता के पेट में या पैदा होते ही मरती जाये। बाप, दादा ससुराल तबाह भाई तंग करेंगे। लेकिन जब अपने खून के संबंधियों से अदालती झगड़े करे तो पूरी पक्की नि:संतान मिलेगी।
3. राहु अब 9 गुना मंदी ताकत का मालिक होगा जो चन्द्र को भी मध्यम कर देगा। खाना नं05, संतान खाना नं011 आमदन कमाई, पर भी राहु का मंदा ही असर होगा जन्म कुण्डली के खाना नं04 के ग्रह 6-16-28-4052-64-76-8010114 साल की आयु में जब कभी भी खाना नं01 में आये राहु का मंदा प्रभाव उन ग्रहों की चीज़ें, काम या रिश्तेदार खाना नं09 में संबंधित पर होगा ऐसा प्राणी धर्म के असूल और कारोबार को भट्टी में डालकर उड़ता हुआ धुआँ बना देगा। क्योंकि धर्म की ढोलक को राहु का हाथी जब अपनी सूंड से बजा रहा हो तो कितने दिन बजेगी। इसके उल्ट किसी भी तरह की कैद व बंधन वह पंसद न करेगा। बालिगों से संबंधित झगड़े संतान पर बीमारी बलाये बद मंदी छत, भट्टी, टट्टीखाना घर की दहलीज़ के नीचे से गंदा पानी गुज़रना, काला कुत्ता गुम होना, बिल्ली का रोना, काले रिश्तेदार की मौत, नाखून झड़ना, राहु के मंदे असर की निशानी होगी। केतु (कुत्ता या दुनियावी तीन कुत्ते) ससुर के घर जमाई, बहन के घर भाई, नाने के घर दोहता का पूरी नेक नीयत से पालना सहायक होगा चाहे कुत्ता कई

बार (11 दफा तक) मरे मगर संतान की आयु बख्शता होगा। खानदान में इकट्ठे रहना खुदमुख्तयार न होना, ससुराल से संबंध न तोड़ना मंगलबद की सलाह से बचना, वृ0 कायम रखना (चोटी, सोना) उत्तम या शुभ फल देगा।

–जब खाना नं0 1 खाली हो।

5. सेहत और मान मंदी होगी, दिमागी और बड़ों की और से परेशानी मिलेगी।
6. नर संतान न पैदा हो न मरे, औलाद का योग हर तरह से मंदा होगा। शनि खाना नं0 5 का दिया मंदा प्रभाव प्रबल होगा।

–जब शनि खाना नं0 5 में हो।

राहु खाना नं० 10

(साँप की मणि (सहायक) साँए की सिरी (भयनाक))

करे दोस्ती जब तू हाथी या राजा।
बड़ा रखना दरवाज़ा अच्छा ही होगा।।

दुगुना राहु हो नेक शनि से, मंदे नज़र आयु घटता हो।
टेवे मंळ्बाद आ जब बैठे, लीद हाथी घर मरता हो।
गर टेवा कोई अन्धा होवे, हाथी अन्धा खुद होता हो।
गैर डरे घर अपना मारे, मंदा नंगा सिर काला हो।
चंद्र अकेला चौथे बैठे, खाली धुआँ आ होता हो।
दिमाग़ फटे या हो सिर फटता, बिज़ली राहु ज़र कड़कता हो।
खाली मन्दिर से राहु सोता, तेज़ स्वभाव मंदा हो।
मित्र ग्रह [1] पर कीचड़ देता, उपाय मंगल का उत्तम हो।
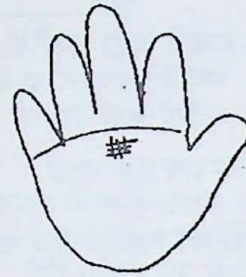
1. बुध, शनि, केतु।

हस्त रेखाः- शनि के बुर्ज मध्यमा की जड़ में राहु का निशान।

नेक हालत

1. पिता के लिए शुभ और स्वयं भी अच्छी स्वभाव वाला हर जगह मान पाने वाला। मगर फिर भी मित्र हाथी से कीचड़ का भय लगा रहेगा यानी राहु का अच्छा या बुरा प्रभाव शक्की ही होता है जो शनि के इशारे पर चलेगा यानी जैसा शनि वैसा राहु।
2. धनी होने की निशानी सहायक तो साँप की मणि का काम देवे जो शनि की ज़हर को भी चूस जावे।
3. राहु धन के लिए दो गुना शुभ होगा, शेरों का नामी शिकारी हाथी होगा, जिसके प्रभाव की गति भी दुगुनी तेज़ और शुभ होगी व्यापारी कमाल हो आयु लम्बी। –जब शनि उत्तम हो।

मंदी हालत

1. चाहे बाप के लिए अच्छा मगर माता के लिए (चंद्र के असर में) मंदा ही होगा और खुद अपनी सेहत भी शक्की होगी। जैसा भी हो राहु अब शक्की प्रभाव का होगा, जिसका फैसला शनि की हालत पर होगा। खर्चा चाहे लम्बा मगर अच्छा जब शनि नेक हो वर्ना सोने को लोहे और उसकी भी अफीम बना कर खा जाने के स्वभाव का स्वामी होगा। जो जद्दी जायदाद के कोयले कर दें।
2. साँप की सिरी (सिर्फ कटा हुआ सिर) जो मारने के लिए साँप से भी अधिक भयानक और कठिन हो तो तंग दिली और कंजूसी उसकी दूसरों से जुदाई शत्रुता पैदा करने का बहाना बनेगी।
3. **राहु का मंदा असर सिर्फ धन-दौलत पर होगा।**
4. **दृष्टि और आयु का खतरा होगा।**
5. हाथी की मंदी लीद से घर भर जाए (मंदी हालत) निर्धनी और कष्ट पर कष्ट आए (मंगल बद हो)।
6. राहु का अन्धा हाथी होगा जो औरों से डर कर अपनी ही फौज मारेगा।
   –जब अंधा टेवा हो यानी खाना नं० 10में कोई ऐसे ग्रह जो आपस में शत्रु हों सूर्य, शुक्र, मंगल साथी हो।
7. राहु का मंदा असर टेवे वाले पर न होगा। –जब मंगल नेक हो।
8. ख्याली दिमाग़ धुआं परेशानी का कारण दिमाग़ फटे या सिर कटे या नज़र गुम हो जाये और धन-दौलत बिज़ली की तरह मंदा प्रभाव होगा। तब मंगल का उपाय सहायता करेगा। –जब चन्द्र खाना नं० 4 में हो।
9. काला नंगा सिर रखना धन हानि की निशानी होगा। –जब मंगल का साथ न हो।

राहु खाना नं० 11

(पिता को गोली मारे या मुंह न देखे, प्लेग या ग्रहचाली गोली से मार देवे)

बढ़े नाम बदनाम जब सीनाज़ोरी।
कसम खा के बेचेंगे सब माल चोरी।।

जन्म दुनिया बेटा होते,	बाप वहाँ रहता नहीं।
राहु टेवे चमक देवे [1],	वृहस्पति [2] वहाँ होता नहीं।
वृहस्पति भागा पापी भागे,	भागता संसार शनि है।
शनि बैठा 5 तीजे,	योगी अस्तंकार है।
एक तीजे पापी बैठ,	राहु बढ़ता आपसे।
धन न मांगे माँ से अपनी,	न ही लेगा बाप से।
उम्र पिता सुख सागर उसका,	न ही धन-दौलत मिलता हो।
औलाद केतु हर वेश हो मंदा,	वक्त गुरु [3] तक उम्दा हो।
धर्म मंदिर और दान हमेशा,	चलती हवा या पानी हो।
बंद पड़ा धन-दौलत सड़ता,	ज़जिया मरीज़ प्राणी हो।

1. खाना नं० 3 के ग्रह का प्रभाव होगा (हाल खाना नं० 5 बिज़ली पड़नी) देखें।
2. पुरुष के टेवे में यदि वृ० से अर्थ बाप, दादा तो स्त्री के टेवे में उसका ससुर होगा जिसका अर्थ भी कहा है कि स्त्री का टेवे वाले का बाप ही हुआ करता है।
3. वृ० की आयु (16 साला) या बाप के जीवन तक।

हस्त रेखाः-

हथेली के खाना नं० 11 में राहु का निशान।

नेक हालत

1. **चाहे पिता नहीं रहा करता मगर पिता की आयु तक राहु का प्रभाव धन के लिए अच्छा ही रहेगा। पिता (वृहस्पति) के बाद वृहस्पति (सोना, पीली चीज़ें) कायम करना या रखना सहायक बल्कि आवश्यक होगी।**
2. **योगी अस्तंकार हो राहु अब पिता पर भारी न होगा।**
   –जब शनि खाना नं० 3-5 में हो।
3. स्वयं अपनी शक्ति और भाग्य बढ़ता ही जाएगा। धन अपने माता-पिता से भी न मांगेगा, न धोखा देगा। स्वयं की शक्ति से अमीर न बनेगा।

मंदी हालत

1. जिस तरह मंगल बद वाला इस घराने में जन्म लेगा जहाँ कि उसके जन्म से पहले मालिक की तरफ से हर तरह की नज़रे इनायत और बरकत होगी जिसे वो मंगल बद वाला बर्बाद कर सके उसी तरह राहु खाना नं० 11 वाला भी ऐसे समय जन्म लेगा जबकि उसके माता-पिता खूब ऐश्वर्य की ज़िंदगी बसर कर रहे हों। उसके जन्म पर बंद पड़ा धन-दौलत बर्बाद, फ़िज़ूल खर्ची, आग, साँप की घटनाएँ नाहक जुर्माने और मरीज़ों की बीमारियों पर खर्च पहले, अपने से बड़ा पहला अधिकारी से बिना कारण ही झगड़ा और नाराज़गी से नुक्सान हो।
2. अब खाना नं० 2 का ग्रह अगर कोई या खाना नं० 2 (दुनियावी मान ससुराल) भी राहु के मंदे धुएं की स्याही से भरपूर होगा। जन्म वक्त का हाथी (धनाढ्यता) घटते-घटते 36 साल की उम्र तक शून्य हो जाएगी। जन्म समय और बड़े पुराने बने हुए काम और प्रसिद्ध हाथी अब अपने आप पुरानी खाईयों में गिर कर मरने जाएंगे अर्थात् सब बने-बनाए काम बिना कारण बिगड़ जाते होंगे।
3. **गुरु वृहस्पति (पिता) बैठने की जगह की जड़ नष्ट और बर्बाद करनी होगी। जन्म लेते बल्कि जन्म लेने से पहले ही पिता का मुंह न देखे या माता के पेट में ही आने के समय से पिता का ग्रहचाली गाली या हादसे से मार देगा। अमूमन 11 मास, 11 साल या हद 21 साल उम्र में या पूरी होते ही वृहस्पति (पिता) की चीज़े काम, रिश्तेदार, संबंधी खत्म या नष्ट हो जाएंगे अगर किसी कारण बच जाये तो सोने से खाक बन चुका होगा। जैसा कि किसी बेईमान की कसम से धोखा नाहक दुःखों**

से फ़िजूल खर्चा आग़ लगे या चोरी होवे कर्ज़ा अदा करने वाली आसामी मर जाए, आदि हर तरफ से मंदा ही माली हाल होगा, भाग्य का कच्चा कड़वा धुआं पूरे-पूरे विरोध से तंग कर रहा होगा।

4. पिता ससुर या नाना की दौलत आयु और सुख सागर और तौशा (बचा हुआ मान धन) शून्य होगा। अपनी कमाई के फालतू धन का फैसला खाना नं० 3 के ग्रह की हालत पर होगा। राहु की बिज़ली (विस्तार के लिए पक्का घर नं० 5) के वक्त वृहस्पति बर्बाद होगा जिस तरह बेईमान और हल्लफ से बात करने वाले का कोई यकीन नहीं होता उसी तरह अब राहु का कोई यकीन नहीं कि कब वो वृहस्पति (पिता) पर मंदा प्रभाव कर जाये। केतु (औलाद) दरवेश यानी शनि (चीज़ें काम संबंधी शनि से संबंधित और जिस्मानी अंग और नज़र आदि) का फल भी मंदा हो सकता है बल्कि खुद गुरु वृद्ध पिता की आयु तक मंदा ही होगा। लेकिन अगर वृहस्पति (बाबा या पिता, गुरु) किसी दूसरे ग्रहों की सहायता से अच्छी हालत और लम्बी उम्र का स्वामी हो तो ये सब मंदी हालत (उम्र का बहुत छोटी होना, सोने का राख हो जाना) स्वयं टेवे वाले पर हो सकती हो। बाप की बजाय उसका ससुर और नाना भी हो सकता है जो राहु के भूचाल से चल बसे या जल उठे या उस टेवे वाले लड़की/लड़का के काम न आये। राहु खाना नं० 11 के वक्त बाप, बेटा या बाबा, पोता लम्बी उम्र तक इस दुनिया मे इकट्ठे नहीं चल सकते। जुदाई अवश्य होगी और कई बार जल्द भी हो सकती है।
5. धर्म मन्दिर और दान हमेशा सहायक होंगे। वृहस्पति कायम रखना (जिस्म पर सोना कायम रखना) सहायक बल्कि ज़रूरी होगा, वर्ना सोने को कोढ़ होगा, जिस्म पर राहु की चीज़ें, महकमा पुलिस की मुफ़्त वर्दी (ड्यूटी की वर्दी चाहे किसी भी विभाग की हो कोई वहम की बात न होगी) या हथियार नीले कपड़े, बिज़ली का सामान, नीलम की अंगूठी आदि का कारोबार या संबंधी (राहु से संबंधित), उनका संबंध कायम करने से वृहस्पति (माया, माल, धन, सम्मान) सब का और भी नुक्सान होगा।
6. ***भंगी को बतौर खैरात पैसा धेला कभी-कभी देना सहायक होगा। अगर वृ० भी खाना नं० 11, 3 में हो सोने की बजाय लोहा (शनि) को शरीर पर कायम रखना सहायक होगा। चाँदी के गिलास में पीने की चीज़ों का प्रयोग और चाँदी के केस या नाली (टूंटी) में से सिगरेट आदि का इस्तेमाल राहु की ज़हर घटाएगा।***
7. भाई की गर्दन बर्बाद, ताया लावल्द या लंगड़ा हो।

   –जब मंगल खाना नं० 3 में हो।
8. केतु का असर मंदा ही होगा यानी नर संतान कान, टाँगों, रीढ़ की हड्डी, पेशाब, पेशाब की नाली घुटना, पांव दर्द, चोट, सफ़र में हानि, केतु के रिश्तेदार (मामा, मामू खानदान) के काम केतु से संबंधित दोनों से हानि हो सकती है।

   –जब केतु खाना नं० 5 में हो।

राहु खाना नं० 12

(शेखचिल्ली, सुथरा शाही मनदरचा ख्यालम व दरीचा ख्याल)

रहा भूखा दिन भर कमाई जो ढोता।
खज़ाने भरे क्या न जब रात सोता।।

रात का आराम उत्तम, या गुज़र ससुराल की।
ब्रह्मशनासी दुनिया होगा, नेक चलता जब शनि।
लकड़ी [1] मीठी पवन [2] मीठी, धुआँ तो कड़वा ही है।
खर्चों घर का मंदा होता हाथी, लगता कामों शुभ ही है।
मंद शनि खुद योग हो मंदा, अंग मंदा जो योगी हो।

शत्रु ग्रह जब साथ हो बैठा, हसद तबाही होती है।
चोर अय्याश गबन ना उम्दा, छींक उल्ट मंद होती है।
बारिश धुआँ न माया करता, आसमान हवा चाहे भरती हो।
मंगल टेवे हो जिस दम साथी, राजशाही सुख होता हो।
11 शुक्र से कन्या बढ़ती, बुध, गुरु धन देता हो।

1. शनि
2. वृहस्पति

हस्त रेखा

हथेली के खाना नं० 12 में राहु का निशान (जाल)।

नेक हालत
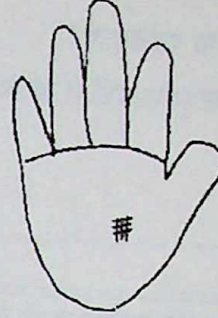
1. जैसा दुध टेवे में हो वैसा ही राहु का प्रभाव होगा।
2. राहु का नेक प्रभाव मकानों ओर दीवारों से संबंधित है।
3. शेखचिल्ली या सोचे कुछ, कुदरत को कुछ और ही मंजूर हो। खर्चे अंदर-अंदर हाथी जैसा बड़ा होता जाए मगर कबीले के नेक कामों में लगेगा अपनी खुशी और इच्छा के किया होगा जो कर्ज़ा न होगा बल्कि बहनों और बेटों (बुध के संबंधी रिश्तेदार) की पालना में लगता होगा।
4. रात का आराम उत्तम और ससुराल अमीर होंगे अच्छे खाते-पीते होंगे। शत्रुओं से सदा बचाव रहेगा।
5. राजशाही व सुखीया हर प्रकार से उत्तम।

 –जब मंगल साथी हो।

6. बादशाही सुथरा (मस्त मौला) और संसारी ब्रह्मशनास (ज्ञानी) होगा, योगाभ्यास दिन व दिन उत्तम प्रभाव देंगे।

 –जब शनि उत्तम हो।

7. लड़कियों की पैदाइश और कायम रहना धन की आमदन जमा दोनों अधिक होंगे बुध, वृहस्पति नींव होंगे यानी जैसा बुध वैसी लड़कियों की गिनती और हालत होगी जैसा वृहस्पति वैसी धन की आमदन जमा आदि। बुध, वृहस्पति के काम की चीज़े रिश्तेदार धन देंगे कभी तंगहाल न होगा।

 –जब शुक्र खाना नं01θ11 में हो।

मंदी हालत

1. नेक काम शुरू करने के वक्त आगे से उल्ट छींक, मंदे परिणाम की पहली निशानी होगी। फौजदारी चोरी बर्बादी गबन के संबंध से परेशानी और मंदे परिणाम होंगे।
2. कबीले के फ़िजूल खर्चों के लिए नाहक भारी बोझ की घटनाएँ।
3. फर्ज़ी नींव रहित और पूरी न होने वाली उम्मीदों खुश्क दरिया के स्वामी टेवे वाले की जान, उसके मकान की छत, राहु के भूचाल से हरसमय कांपती और हिलती रहेंगी।
4. आसमान पर उड़ता हुआ धुआँ स्वयं मेहनती, दिन भर कमाई करता और हर तरह का बोझ ढोता रहेगा बल्कि रात को भी न सोएगा। मगर मंदे राहु की कृपा से परिणाम वही काला कड़वा धुआँ होगा जो दम भी घुट देवे और नाहक खुदकुशी तक के भी हालात बना देवे।

5. बेआरामी व फ़िज़ूल खर्ची के फ़र्ज़ी बादल आम होंगे।

6. जब शनि मंदा हो तो आसमान चाहे सारा ही धुएँ से भर जाये मगर धन की बारिश कहाँ होगी ऐसा मंदा कि जिस कदर जिद्दबाजी से और जिस अंग से संन्यास की कोशिश करें वही अंग मंदा हो जाये, दिमाग़ से कोशिश करें तो पागल मगर बाकी शरीर खूब मोटा ताजा। आँखों से जिद्द व जिद्द होकर संन्यास ढूँढे तो आँखें खत्म बाकी शरीर रह जाये। आखिरी नतीजा ही होगा जो कि शनि की हालत का हो चाहे शनि, वृहस्पति का प्रभाव नेक मगर खुद राहु का अपना असर मंदा और कड़वा धुआँ ही होगा।

7. नाहक तोहमत ले लेने वाला या बदनाम हो।

8. तबाही करने वाले हसद से भरपूर शरारतों से खराब होगा (शत्रु ग्रह सूर्य, शुक्र साथ-साथी)।

उपाय

रात को आराम करने की जगह पर मंगल की चीज़ें
(खाँड की बोरी या सौंफ की चोरी)
कायम करने से राहु उत्तम फल देगा।
रोटी पकाने की जगह में ही बैठकर
रोटी खाना राहु के मंदे प्रभाव बचाता रहेगा।

****

केतु

(सफ़र की आँधी में, संसार में लड़के पोते, आगे आने वाले घर में कुटुम्भ, दरवेश आकवत, संदेश, नस्ल)

नज़र पाँव तेरे जो उखड़े पड़ेंगे।
सभी ज़ेर रहते- ही सिर पर चढ़ेंगे।।

गुरु, मंगल व बुध तीनों ग्रह का, केतु कुत्ता त्रिलोकी हो।
हो छठे टेढ़ी दुम जिसकी, 8 वें कान मुहों दूजे खुलता।
पापी बुरा ही होता है, मिले केतु, बुध कुत्ता दुनिया।
वृहस्पति, मंगल, बुध नं02, केतु भला ही होता है।
सफेद काला दो रंग-बिरंगा, लाल, पीला बुध होता हो।
शनि, मंगल कोई साथ ही बैठा, असर सभी का मंदा हो।
केतु तख्त से रवि हो ऊँचा, छठे मंगल, केतु मरता हो।
कुतिया बच्चा जब एक ही होता, नस्ल कायम कर जाता हो।

1. कुत्ते की नस्ल या केतु की असलियत मुंह खाना नं02 के ग्रह उदाहरणत: मंगल खाना नं02 तो शेर जैसा मुह 1 कान खाना नं08 के ग्रह : बुध खाना नं08 तो बकरी जैसे- कान, दुम खाना नं06 के ग्रह : मसलन शनि खाना नं06 तो साँप की दुम। जब तक 2-6-8 उत्तम केतु (8 संतान की आयु 2 माली हालत, 6 मैम्बरों की गिनती) कभी मंदा न होगा। वृहस्पति का उपाय सहायक हो।

आम हालत 12 घर :-

केतु तख्त पर पिसर (संतान) हो मिलता, फर्ज़ी फिक्र भी होता हो।
सफ़र हुकूमत घर दो उम्दा, उत्तम 6 वें ही अकेला हो।
रंग-बिरंगा हाल हो तीजे, ससुर भाई खुद अपने जो।
गुरु हालत 5 लड़के उसके, बेटा जल्द न चौथे हो।
शेर बहादुर घर 7 बैठे, औलाद कब्र 8 भरता हो।
पिता 9 वें घर अपना तारे, 10वें शनि पर चलता हो।
उम्र नज़र ना माली साथी, केतु पाया घर 11 जो।
ऐश करे घर 12 इतनी, माया फैली घर भरता हो।

केतु का दूसरे ग्रहों से संबंध :-

वृहस्पति — **उम्दा आसान, नेक आकबत।**
सूर्य — **तूफान, स्वयं बर्बाद (केतु) मामा मंदे।**
चन्द्र — **कुत्ते का पसीना - दोनों मंदे।**
शुक्र — **कामदेव की नाली - शुक्र की जान, गाय का बछड़ा।**
मंगल — **शेर के बराबर का कुत्ता।**
बुध — **कुत्ते की जान सिर में। एक अच्छा तो दूसरा बुरा।**
शनि — **साँप, कान नदारद - केतु पर शनि का फैसला होगा।**
राहु — **केतु का प्रभाव, राहु के साथ बल्कि राहु के हाथ या राहु की मर्ज़ी पर चलेगा। सपर दम बो माया खबेशरा। तू दानी हिसाब कमोबेश रा।**

नेक हालत

1. सांसारिक काम के हल करने के लिए, इधर-उधर सलाह करने के लिए दौड़ धूप का यह 48 साला आयु का समय केतु का समय होगा।
2. पीला (वृहस्पति), लाल (मंगल), अंडे का रंग (बुध), तीनों ग्रहों का एक नाम केतु (3 कुत्ते) होगा जो तीनों ही ज़माने का मालिक होगा, छलवा पापी ज़रूर है, जान से मारने की बजाय कब तक सहायता देगा (चारपाई तख्ता)।
3. केतु (कुत्ते) के भाग :-

अ– कान नं0 8 का ग्रह जैसे बुध खाना नं08 तो बकरी जैसे– कान, संतान (केतु) की आयु का फैसला मगर कम अक्ल की शर्त नहीं।

ब– मुंह नं02 के ग्रह जैसे मंगल खाना नं02 शेर जैसा मुंह, असलियत नस्ल, सांसारिक सहन का हाल माली हालत।

स– दुम नं0 6 का ग्रह जैसे शनि खाना नं06 साँप जैसी दुम, सदस्यों की गिनती स्वभाव अंदरुनी चाल नब्ज या वह नाड़ी जो इसका भेद बता दे या जिसके द्वारा इसका इलाज हो सके खाना नं010के ग्रह के सम्बन्धित जानवर विषैली पूंछ वाले होते हैं।

4. केतु नेकी का फरिश्ता, सफ़र का मालिक और आखिर तक सहायता देने वाला ग्रह है।
5. केतु, बुध दोनों मिल कर कुत्ते का सिर (कुत्ते की जान सिर में) होगा यानी जब तक बुध उम्दा या खाना नं02-6-8 उम्दा या खाना नं0 12 में उसके तीनों हिस्से वृहस्पति, मंगल, बुध न हों, केतु खाना नं02 माली हालत, खाना नं08 औलाद की आयु खाना नं06 सदस्यों की गिनती, भला ही होगा चाहे कैसा और कहीं भी बैठा हो।
6. केतु से अर्थ सफेद व काला दो रंगा कुत्ता होगा मगर लाल रंग सूर्य के साथ होने से बुध होगा जिसमें चाल व प्रभाव तो बुध की होगी मगर मियाद केतु की होगी। अब नर कुत्ते की नस्ल की जगह मादा नस्ल लेंगे, कुत्तिया और बुध की चीज़ें कलम आदि पर पहले प्रभाव देंगे।
7. कुत्तिया का नर बच्चा जो एक ही पैदा हुआ हो, खानदानी नस्ल कायम करेगा।
8. मंदे केतु के समय अपनी कमज़ोरी किसी से कहना या दूसरों के आगे रोना और भी कष्टदायी कर देगा। वृहस्पति 1 उपाय सहायता करेगा।
9. **मंदी सेहत के समय चंद्र का उपाय, परंतु जब लड़का मंदा हो तो धर्म स्थान में *कम्बल देना शुभ होगा।***
10. ***केतु के इलाज के लिए उसके नब्ज या इलाज का भेद खाना नं० 10 के ग्रह होंगे। पाँव या पेशाब के कष्ट के समय* रेशम *का अति सफेद धागा बांधना या चाँदी का छल्ला डालना (जो चंद्र की चीज़ें हैं) अति सहायक होंगी। केतु को* चारपाई भी *माना है मगर ग्रहचाल में चूँकि केतु का शुक्र का फन माना है इसलिए चारपाई असल में वह चारपाई मानी है जो* दहेज के *समय मामा की तरफ से या लड़की के माता-पिता की तरफ से लड़की को दहेज में दी जाती है। ऐसी चारपाई* का औलाद *के जन्म समय (जन्म के सम्बन्ध में) प्रयोग में लाना सब से उत्तम है। चाहे केतु टेवे में कितना भी मंदा नीच बर्बाद*** क्यों न हो। जब तक चारपाई घर में प्रयोग में लाई जा रही हो केतु का फल कभी मंदा न होगा।

मंदी हालत

1. गोया पापी ग्रह (जब शनि, राहु दृष्टि आदि से) केतु को किसी न किसी तरह आकर मिलें दूसरों पर प्रभाव के लिए बुरा ही होता है। मगर यह जान से नहीं मारता चाहे जिस जगह जन्म लिया वहाँ कुछ भी न रहे, न रहने देवे। दुनिया का धोखेबाज़, छलावा होगा।
2. जब तक बुध (केतु की असली दुम) अच्छा, केतु बर्बाद होगा।
3. धर्म स्थान में पाँव (केतु) पवित्र समझते हैं या धर्म स्थान में अंदर का केतु (नया पैदा हुआ या बना हुआ बच्चा) सदा जीवित रहेगा।
4. केतु का मकान बच्चों तथा स्त्री की हालत मंदी ही रखेगा। वृहस्पति या सूर्य जब शत्रु ग्रहों से स्वयं ही मर रहे हों तो केतु बर्बाद होगा।
5. केतु मंदे के समय खासकर जब टेवे में चंद्र और शुक्र किसी तरह से इकट्ठे हो रहे हो तो बच्चे का जिस्म सूखने लग जाया करता है। ऐसे समय में बच्चे के जिस्म पर दरिया नदी-नाले या वैसे ही कोई मिट्टी या गाचनी मल कर खुश्क होने दें। घण्टे आध घण्टे के बाद बच्चे को मौसम अनुसार ठंडे या गर्म पानी में से जो भी ठीक हो नहला देवें। 4043 दिन लगातार करने से शरीर का सूखना ठीक हो जाएगा।

केतु खाना नं० 1

(हर समय बच्चे बनाने वाला, सारे शहर के बच्चों की फिक्र में गलता होगा)

रिज़क तेरा जब तुझको, है आज मिलता।
लंगोटा फिक्र कल का, क्यों तूँ ढीला करता।।
सोच रहे थे सफ़र की अपने, बच्चा नया आ पहुँचता हो।
अपने वक्त मंदा चाहे कितना होवे, पिता, गुरु को तारता हो।
जान कसम वह हरदम खाता, हड़काया कुत्ता [1]चाहे लेख का हो।
7-6 हो बेशक मंदा, उच्च असर रवि देता हो।

खाली पड़ा जब 6-7 टेवा, तूफ़ान जन्म घर आता हो।
बुध, शुक्र न राहु उम्दा, उत्तम वृहस्पति, रवि होता हो।
दरवेश सेवा हो मदद खुदाई, चरण पिता के धोता हो।
मंगल गद्दी जब 12 पाई, केतु बुरा नहीं होता हो।
बाद शादी जब केतु मंदा, मदद शनि से पाता हो।
वर्ना कुत्ता हड़काया ऐसा, पिता रवि भी काटता हो।

1.मंगल खाना नं० 12 में हो तो केतु का खाना नं० 1 पर कभी बुरा असर ना होगा।

हस्त रेखाः- **सूर्य के बुर्ज नं० 1 पर केतु का निशान हो।**

नेक हालत

1. चाहे सफ़र के लिए हुक्म और उसका फिक्र हर समय साथ लगा हुआ और तबदीली के लिए हर समय तैयारी होती हो और बाकी सब हालत तैयार हो गए मगर खैर आखिर पर सफ़र न होगा।
2. राजा का चलन कौन रोके के नाम पर हर समय नए बच्चे बनाने वाला। सारे शहर के बच्चों की फिक्र में मरता हो। दौलत और कामदेव की बेयाई दोनों एक साथ बढ़ते होंगे। उसका आज का रिज़क कोई रोक नहीं सकता इसलिए उसे कल का फिक्र न होगा जिसके डर से बार-बार दम खुश्क होता रहे।
3. अब सूर्य का असर अच्छा होगा चाहे खाना नं० 6-7 में नीच या मंदा हो रहा हो। केतु जब कभी वर्षफल अनुसार नं० 1 आये। लड़का, दोहता, भान्जा पैदा होने की निशानी होगी। केतु कैसा भी मंदा हो, वृहस्पति का प्रभाव उत्तम ही होगा। दरवेश सेवा दर्जा खुदाई और पिता, गुरु के चरण धोता और पिता की मंदी समय में हर प्रकार की सहायता देगा।
4. केतु का खाना नं० 1 पर कभी मंदा प्रभाव न होगा। -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
5. अब सूर्य नीच न होगा। मगर लड़कों को बुध (कच्ची शाम) और केतु (तड़के सवेरे) के समय सूर्य की चीज़ें गुड़िया बाज़ार में आवारा खाने-पीने और खर्चने के लिए ताँबे के पैसे आदि देना विष समान होगा। -जब सूर्य खाना नं० 6-7 में हो ।

मंदी हालत

1. यदि मंगल खाना नं० 12 में हो तो केतु खाना नं० 1 का प्रभाव मंदा न होगा। यह ग्रह इस घर फर्ज़ी फिक्र पैदा किया करता है। खाना नं० 1 में बैठा हुआ खाना नं० 7 या खाना नं० 6 पर बुरा प्रभाव करे तो बेशक मगर सूर्य पर कभी बुरा असर न देगा। शादी के बाद जब केतु मंदा हो तो शनि ज़रूर सहायता करेगा या शनि का उपाय शुभ फल देगा वर्ना केतु ऐसा मंदा होगा कि गुरु, पिता को भी काट खायेगा। पैदाइश तो चाहे जद्दी घर से बाहर (परदेश, सराय, मुसाफिरखाने या नानके घर हो) मगर जन्म के घर पर वह जगह जहाँ पर कि जन्म असल में हुआ (जद्दी मकान पर नहीं) मंदा तूफान उठ खड़ेगा। पड़ोसी घर पर भी मिट्टी उड़ती होगी।
2. मंदे समय की निशानी बुध से संबंधित वस्तुओं से शुरू होगी, फिर शुक्र (खुराक घर की चीज़ें) बाद में मंगल (खून मंदा या ज़हरी होकर) और आखिर वृहस्पति की हवा में मिट्टी भर देगा जो इधर-उधर फर्ज़ी चक्र में दौड़ने का बहाना होगी।
3. बुध और शुक्र दोनों का मंदा हाल होगा। -जब खाना नं० 2-7 खाली हो।
4. मंदी सेहत, खासकर जब दोहता/पोता पैदा हो। -जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।

केतु खाना नं० 2

(आसूदा (समृद्ध), हुक्मरान, मुसाफिर)

हुई पैदा औलाद हर घर जो तेरी।
बुढ़ापे में तुझे कौन देगा दिलेरी।।

खाली 8 मंदिर अकेला, नेक और बेहूदा हो।
सफ़र उसमें बहुत लिखा, हुक्मरान आसूदा हो।
तिलक कुदरती मदद पे उसकी, आठ दृष्टि खाली हो।
बैठा ग्रह जब [1] हो 8 मे कोई, अल्पायु खुद ज़हमती हो।
कोई भाग शुक्र हो हरदम उम्दा, बैठा शुक्र ख्वाह मंदा हो।
चंद्र असर न उत्तम देगा, उच्च हुआ या बरसता हो।
राज खिताब लेखा चाहे ऊँचा, माया जमा नहीं होती हो।
आई-चलाई लाखों करता, नतीज़ा दलाल दलाली हो।

1. **राहु के इलावा खासकर केतु के शत्रु चंद्र या मंगल।**

हस्त रेखा :- वृहस्पति के बुर्ज नं० 2 पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. हर नया सफ़र सेहत की तबदीली पर हो नई दिशा की ओर होगा, यानी यदि पहले दक्षिण को चले तो वापस पश्चिम में ठहरे। फिर पूर्व में आए, चाहे भाग्य घूमता हुआ है मगर हाकिम मुसाफिर सफ़र खुश्की का बहुत होगा और तरक्की देगा।
2. शुक्र भाग सदा उत्तम चाहे शुक्र स्वयं कैसा भी बैठा हो। चंद्र का प्रभाव उत्तम होने की कोई शर्त न होगी।
3. *चाहे चंद्र उच्च और बरसते पानी का स्वामी क्यों न हो, चाहे राजदरबार में खिताब मिले, लाखों की आई-चलाई पर भी कलम चले, मगर धन जमा न होगा। सिर्फ दलाल की दलाली की तरह अपना हिस्सा होगा। केतु अब शुक्र, वृहस्पति की नकल या नकली सोने और रंग-बिरंगी रोटी की तरह किस्मत का दर्जा या जैसा वृहस्पति हो वैसी ही हालत माया धन-दौलत की और जैसा शुक्र हो वैसा ही हाल गृहस्थी गुजरान का होगा। क्योंकि ग्रहचाल कुत्ते (केतु) का मुंह इस घर माना है जो सदा अपने बैठा होने वाले घर में मालिक नं० 2 का मालिक शुक्र पक्का घर वृहस्पति का है, की रोटी पर सब्र करेगा।*
4. सफ़र और हुकूमत चाहे अधिक हो मगर हर दो का हर तरह से उत्तम फल और हर ओर तरक्कियाँ हुक्मरान आसूदा। माथे पर तिलक की जगह केतु का निशान त्रिकोण शुभ होगा।

   -जब खाना नं० 8 खाली और केतु हर तरह से अकेला हो, पेशानी पर केतु का चिन्ह हो।
5. 24 साला आयु केतु की मियाद के बाद खुद कमाई करने वाला और रौनकी जीवन होता जायेगा। -जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. हर घर में औलाद बनाए जाने से बुढ़ापे में कोई सहायक बच्चा न होगा।
2. खाना नं० 8 वाले ग्रह से संबंधित, प्रभाव के समय आम मियाद का समय, वृहस्पति 16, सूर्य 22 आदि, लेंगे पर ज़हमत बल्कि अल्प आयु लेंगे। -जब राहु के अतिरिक्त खाना नं० 8 में कोई भी ग्रह खासकर केतु के शत्रु (चन्द्र या मंगल) हों।

केतु खाना नं० 3

(टुन-टुन करते रहने वाला कुत्ता, मगर नेक दरवेश)

बुझे प्यास न खून भाई का करते।
गले बाजू बाँधेंगे तलवार कटते।।

नेकी मालिक की याद हो रखता, दरवेश भला ही करता हो।
दुखिया भाईयों से अक्सर होता, परदेश [1] जुदा ही फिरता हो।
असर शुक्र, बुध न कुछ उम्दा, मंदा खेती फल होता हो।
ससुराल घराना हरदम दुखिया, जंगल-मंगल बद होता हो।
मंगल टेवे जब 12 बैठा, मच्छ मुआवन तारता हो।
उम्र 24 में उत्तम होगा, या जब लड़का पहला हो।
केतु मंदे हो मदद गुरु की, तिलक केसर का भला होता हो।
रीढ़ की हड्डी जो दर्द करती, सोना जिस्म [2] पे उम्दा हो।
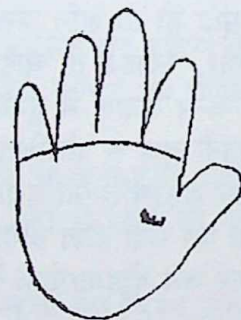
1. टूटे बाजू गले से चिमटे भाई फिर भी ग्रह सहायक हो, यह ग्रह अब धन को स्वयं ही बर्बाद करे। मंदा ग्रहण करेगा।

2. जब कान या रीढ़ की हड्डी, पांव, घुटने, कमर आदि केतु से संबंधित किसी भी जगह दर्द हो।

हस्त रेखा :-मंगल नेक के बुर्ज नं० 3 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. चाहे अपने ससुराल और भाई सब का रंग-बिरंगा हाल (नेक व बद दोनों प्रकार का) मगर संतान अवश्य नेक होगी।
2. दूसरे साथी और मालिक की नेकी को याद रखने वाला भला लोग। हर समय बिना बुलाए आ जाने वाला मेहरबान।
3. 24 साला आयु से पहले लड़के के जन्म से मच्छ रेखा (माली) तथा लम्बी सहायक आयु रेखा हर दो का नेक फल, खासकर उस समय जब कोई न कोई सफेद बाल बूढ़ा पूर्वज साथ सहायता पर हो। -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. अपना दिमाग़ लगाए बिना ही दूसरों की हाँ में हाँ मिलाकर दु:खी होगा।

2. बिना कारण टुन-टुन करते रहने वाले कुत्ते का स्वभाव मगर अंदर से नेक दरवेश। अक्सर भाईयों से तंग या दुखिया, परदेश के जीवन में मारा फिरे। यह ग्रह अब आयु और धन को स्वयं ही हीले बहाने बर्बाद करता जाएगा और हर समय मंदा ग्रहण देगा। बुध, शुक्र और खेती का फल कोई ऐसा उत्तम न होगा। अपने भाई बंधु ससुराल दुखिया, जंगल में भी सुख न हो।

3. दीवानी मुकद्दमों में लम्बी-लम्बी चालें करके धन बर्बाद करेगा। स्त्री और सालियों से बिना कारण जुदाई का बहाना बन जाएगा।

4. ससुराल के कुत्ते के साथ से छोटा भाई दुखिया हो।

5. साथ का मकान गिरा हुआ या कुत्ते के टट्टी करने की जगह की तरह बर्बाद हो। ऐसे टेवे वाले के मकान में 3 लड़के एक पोता या 3 पोते और 1 लड़का आमतौर पर अमूमन रहते होंगे या 3 खिड़कियाँ और तीन दरवाज़े होंगे।

6. **दक्षिण के दरवाज़े के साथ हर साल संतान के विघ्न अवश्य होंगे।**

7. भाई के खून से प्यास बुझाना अपना ही बाजू काटना होगा।

8. संतान नालायक निकम्मी हो।

9. दक्षिण के द्वार वाले मकान में लगातार रहने से तीसरे साल से संतान (लड़के और लड़कियाँ हर दो) का मंदा हाल, बल्कि उनकी मौतें शुरू हो जाएगी और चंद्र या मंगल जो भी खाना नं० 8 में हो की मियाद तक मंदा प्रभाव चलेगा।

-जब चंद्र, मंगल या दोनों खाना नं० 8 में हो, दक्षिण के दरवाज़े का साथ।

10 जातक मुफुलिस गरीब होगा। -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हो।

क्याफा :- हाथ के अंगूठे का नाखून वाला भाग मोटा और छोटा।

उपाय :- फेफड़े या मंदी सेहत के समय में वृहस्पति की चीज़ें चलते पानी में बहाना या केसर का तिलक उच्च होगा। माली हालत को ठीक करने के लिए शरीर पर सोना (कान, रीढ़ की हड्डी, पांव, घुटने, कमर आदि केतु से संबंधित चीज़ों में दर्द) उत्तम होगा।

केतु खाना नं० 4

(बच्चों को डराने वाला कुत्ता, ज्वारभाटा, समुद्र में तूफान)

सब्र अपने का फल चाहे मीठा मिलेगा।
मगर बोझ देरी का सहना पड़ेगा।।

समुद्र तूफान आयु माता, आयु धन स्वयं उत्तम हो।
चीज़ चंद्र सब रद्दी करता, लड़का पैदा न होता हो।
गुरु टेवे न जब तक उत्तम, कन्या बहुत उस होती हो।
पैदा कोई जब लड़का होता, आयु सदी पूरी होती हो।
गुरु उपाय ग़र करे, दोनों दुःख हो दूर।
कुल उसकी चलती रहे, माया मिले ज़रूर।

हस्त रेखा:- **चंद्र के पर्वत खाना नं० 4 पर केतु का निशान।**

नेक हालत

1. बाप के लिए उत्तम फल बल्कि वृहस्पति पिता, गुरु की शक्ति उत्तम उच्च तथा नेक करता होगा।

2. अपनी संतान के लिए सब्र करना पड़ेगा। देर से भी संतान कुल पुरोहित की आशीष से जब वृहस्पति उच्च हो जन्म कुडली में या हो जावे (वर्षफल में) ऐसी संतान लम्बी आयु की होगी। चाहे माता की आयु तथा धन के लिए वह एक तूफान होगा और चंद्र में सब चीज़ों का फल मंदा होगा। स्वयं धनवान मेहनती परिणाम मालिक पर छोड़ने वाला हो। **कुल पुरोहित को पीले रंग की चीज़ देकर आशीष लेना उत्तम होगा।**

3. **गुरु उपाय से धन संतान बढ़े। मंदिर में सोना या कुल पुरोहित को पीले रंग की चीज़ देकर आशीष लेना उत्तम होगा।** -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हों।

4. **कन्या अधिक बुद्धिमान, उत्तम सलाह का स्वामी धन की कोई कमी न होगी।** -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हों।

मंदी हालत 1. बच्चों को डराने वाला कुत्ता-स्वयं का स्वास्थ्य मंदा, पेशाब में शक्कर का आना (मधुमेह) आदि। माता और स्वयं की संतान पर मंदा प्रभाव। समुद्र में तूफान की भाँति ज्वारभाटा (संतान बहुत देरी) 34-68 साल से पैदा हो और वह भी कुल पुरोहित, जो पहले ही हट चुके हों, की आशीष से जीवित रहेगी या कायम हो।

2. केतु, चंद्र दोनों मंदे, न माता सुखी न संतान बढ़े। कुएँ में गिरे कुत्ते की तरह नर संतान का हाल होगा। जो बाहर न निकल सके।

-जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हों।

क्याफा:- अंगूठे का नाखून वाला हिस्सा छोटा और मोटा हो।

3. पशुओं जैसे विचार, कम धन।

केतु खाना नं० 5

(अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान)

हुए नेक थे जब जवानी के चढ़ते।
मिले पोते इतने न थे जितने लड़के।।

हाल वृहस्पति जो टेवे होता, केतु वैसा ही होता।
बाद 24 खुद केतु उम्दा, शर्त गुरु न करता हो।
चंद्र, मंगल 3 चौथे बैठा [1], पाँच शनि चाहे 9 वें हो।
लड़का खत्म 3 अक्सर होगा, बाद 36 तीन मिलता हो।
गुरु मंदा 45 मंदे, दमा औलाद को लगता हो।
गिनती गिनी हो बेशक कितने, पूरा कोई ही होता हो।
ऋण पितृ जब टेवे बैठा, केतु गृहस्थी मंदा हो।
लड़का ज़िंदा दो अक्सर बचता, मुखिया मुकम्मल होता जो।

1. चंद्र, मंगल से संबंधित चीज़ों का दान उत्तम होगा। जब शनि खाना नं० 5 या खाना नं० 9 में हो, वर्ना केतु मंदा न होगा खासकर जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में होवे।

हस्त रेखा :- सूर्य की तरक्की रेखा पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. उठती जवानी के समय नेक न होवे तो अपने लड़कों से पोतों की संख्या अधिक। केतु का फल अपने लिए उत्तम। लड़कों की हालत आयु वृहस्पति पर होगी। 24 साल की आयु तक रोटी के लिए गुरु का निगरान। बाद में स्वयं उत्तम, वृहस्पति की शर्त न होगी।
2. नर संतान पाँच से कम होगी, माली हालत में केतु का मंदा असर न होगा। -जब वृहस्पति, सूर्य या चंद्र खाना नं० 4, 6, 12 में होवे।
3. अब शनि संतान के संबंध में कोई मंदा प्रभाव न देगा, न ही दो स्त्रियों का झगड़ा, संतान की संख्या एक ही स्त्री से 9 लड़के 3 लड़कियाँ (पूरी मच्छ रेखा कायम) हो। -जब शनि खाना नं० 9, शुक्र खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. टेवे वाला स्वयं तो बहुत सुंदर था मगर पता नहीं यह सुंदरता जवानी में कहाँ गई और वह संतान के लिए मंदा और लड़कों को साँस (दमा) की बीमारियाँ थी या 45 साला उम्र तक केतु का मंदा हाल। बेशक लड़के कितने भी हुए हों मगर जीवित शायद कोई ही हो। घर में कुत्तों के रोने की आवाज़ आए। -जब वृहस्पति मंदा हो।
2. केतु का गृहस्थी प्रभाव मंदा ही होगा। चाहे दो लड़के ही जीवित हों मगर वह पूरी तरह सुखिया सुख देने वाले होंगे।
   -जब ऋण पितृ बुध, शुक्र, राहु, शनि पापी ग्रह खाना नं० 2, 5, 9, 12 में हों।
3. केतु का प्रभाव मंदा, गरीब पशु बीमार, मंदे हालत, चंद्र, मंगल की चीज़ों का दान उत्तम। जैसा धर्म ईमान वैसा ही संतान की हालत। -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3, 4 में हों।
4. तीन लड़के नष्ट होने पर 3 साला आयु तक फिर तीन कायम अवश्य खासकर जब चंद्र, मंगल भी खाना नं० 5-9 में हों।
   -जब शनि खाना नं० 5-9 में हो।

केतु खाना नं० 6

(शेर कद खूंखार कुत्ता, दो रंगी दुनिया)

हज़म घी अगर कुत्ता दुनिया में करता।
छुपे फिरता हर घर में बुजदिल न ड़रता।।

रंग दो रंगा केतु होता, असर [1] होता भी दो रंगा है।
मामू माता न बेशक उम्दा [2], शनि भला ही होता है।
केतु की चीज़ों पर केतु मंदा, पर मंदा न दूसरों पर।
ग्रह टेवे [3] कोई साथी बैठा, खुद मंदा बुरा दूसरों पर।

गुरु भले औलाद हो बढ़ता, शुक्र मुसीबत कटता हो।
टेवे कोई न जब दो उत्तम, तूफान [4] केतु मंदा हो।
गुरु, मंगल न हो जब साथी, न ही मिला बुध 12 हो।
बढ़ता केतु खुद नेकी अपनी, तकब्बर खुदी न जब तक हो।

1. अपनी संतान तथा सलाहकार सदा नेक सलाह देंगे।
2. जब चंद्र खाना 2 में हो, ऐसी हालत में बुढ़ापा हल्का।
3. सिवाय बुध के जो नेक प्रभाव देगा।
4. सोने की अंगूठी बाएँ हाथ में शुभ।

हस्त रेखाः- **हथेली की आयत [ ] में केतु की निशानी हो।**

क्याफाः- पाँव में रेखा।

1. इस ग्रह की सही हालत मनुष्य में पाँव से मिले। पाँव में सब कुछ हाथ की तरह गिना है। पाँव सदा ज़मीन पर लगता है। ज़मीन को शुक्र माना है। शुक्र का बुर्ज अंगूठे पर होता है। इसलिए पाँव की सिर्फ एक रेखा वह यह कि पाँव में रेखा यदि ऐड़ी से निकाल कर अंगूठे तक चली जाए तो सवारी का सुख होगा।
2. अंगुलियों को छोड़कर (पाँव की) अगर चक्र शंख सिदफ का निशान दाएँ पाँव पर हो तो बुर्ज या ग्रह के कायम होने का नेक प्रभाव हाथ की तरह होगा, मगर बाएँ पाँव पर चक्र शंख सिदफ बुर्ज के नीच होने का प्रभाव देंगे।
3. अगर बायाँ पाँव दाएँ से बड़ा हो तो कम हौसला डरपोक। पाँव का अंगूठा छोटा हो तो केतु नीच या मंदा होगा। ऐसा व्यक्ति एक जगह न रहेगा।

पाँव की अंगुलियाँ	फल
4. अंगूठा, तर्जनी आपस में मिले हों	मंद भाग्य
5. अंगूठा छोटा हो तो	एक जगह न रहे
6. अंगूठा छोटा तर्जनी बड़ी हो तो	पहले लड़के या लड़की का सुख न हो
7. अंगूठा और तर्जनी बराबर	प्रसन्नता से रहने वाला, समृद्ध
8. अंगूठा बड़ा तर्जनी छोटी हो तो	दूसरे का गुलाम रहे
9. तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो तो	स्त्री गरीब घर की तथा जातक को उससे दुःख मिले
10 तर्जनी, मध्यमा से छोटी हो तो	औरत का पुरा सुख
11.तर्जनी, मध्यमा से बहुत छोटी हो तो	स्त्री सुख हल्का
12.अनामिका, मध्यमा से छोटी हो तो	स्त्री सुख हल्का
13.कनिष्ठका, अनामिका से बड़ी हो तो	नेक भाग्य
14.कनिष्ठका, अनामिका से बहुत बड़ी हो तो	मंदा भाग्य
15.कनिष्ठका, अनामिका से बहुत ही बड़ी हो तो	जलील हो
16.कनिष्ठका, अनामिका से छोटी हो तो	शुभ
17.कनिष्ठका, अनामिका के बराबर हो तो	संतान का सुख परन्तु अपनी आयु कम
18.पाँचों अंगुलियाँ बराबर या दजाज़ लम्बी हो तो	हुक्मरान हो
19.पाँचों एक-दूसरे से बड़ी होती जाएं क्रम से तो	साहिबे संतान

पाँव की अंगुलियों के नाखून	प्रभाव
20 सुर्ख ताँबे रंग के हो तो	राजा या हुक्मरान हो
21.नीले रंग के हो तो	आला मरतबा
22.पीले रंग के हो तो	दीवान साहिब
23.स्याह रंग के हो तो	चोर, डाकू फिर भी मंदा

नेक हालत 1. जैसा वृहस्पति टेवे मे होगा वैसा ही केतु का हाल होगा।

2. केतु से लड़का कुत्ता, गधा, सूअर भी माना है। ऐसे पुरुष की संतान यदि इन पशुओं की तरह नालायक हो जाए तो जिस तरह एक मामूली कुत्ता, शेर की खाल पहन कर अपने मालिक की सहायता कर सकता है, उसी तरह वह संतान अपने पिता की सहायता

अवश्य करेगी। जिस तरह केतु खाना नं० 1 ने सूर्य की सहायता दी चाहे सूर्य टेवे में कैसा और कहीं भी बैठा हो, उसी तरह खाना नं० 6 का केतु, वृहस्पति को कभी मंदा न होने देगा चाहे वृहस्पति, केतु खाना नं० 6 के समय, कहीं भी और कैसा भी हो।

3. शनि प्रभाव भी भला ही होगा। अपनी संतान तथा दूसरे सलाहकार ठीक सलाह ही देंगे। इस घर में ग्रहचाली कुत्ते (केतु) की टेढ़ी दुम की जगह मानी गई है। शत्रु दबे रहे हों। धन पर धन आएगा।

हस्त रेखा **हाथ का अंगूठा सीधा रहे।**

4. अकेला ही बैठा हुआ हर तरह से उत्तम फल देगा और मामूली कुत्ता भी शेर की खाल पहनकर अपने गुरु (वृहस्पति) पिता को मदद करेगा गरज़े के ऐसा पुरुष स्वयं के लिए अच्छा मगर दूसरों के लिए बुरा असर देगा।
5. शेर कद, लड़ाका कुत्ता, दो रंगी सांसारिक भाग्य (घर का और नीच भी) स्वयं सुखिया होवे।
6. दिमाग़ी खाना नं० 7 – जीवन बढ़ने की इच्छा का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 8 – हमला रोकने की शक्ति का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 9 – बदला लेने की शक्ति का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 10 – स्वाद का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 11 – जखीरा, जगह करने की आदत का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 12 – राजदरबारी का साथ होगा।
7. बुध, केतु दोनों का नेक फल होगा। –जब बुध खाना नं० 6 में हो।
8. संतान से बढ़ता होगा मामूली चूहा भी जाल काटकर सहायता दे। –जब वृहस्पति उत्तम हो।
9. शुक्र आपत्ति दूर करता होगा। –जब शुक्र कायम या उत्तम हो।
10. केतु अपनी नेकी मे बढ़ता और उत्तम फल देता होगा। जब तक ऐसा आदमी तकब्बर और खुदी से खुद ही न मरे।
    –जब वृहस्पति, मंगल खाना नं० 6 में न हो और न ही खाना नं० 12 में वृहस्पति, मंगल या बुध हो।
11. आयु लम्बी 70वर्ष। मामू घर सुखी और देश परदेश के जीवन में आराम हो।
    –जब तक वृहस्पति नेक हो या खाना नं० 2 की दृष्टि भली हो।

क्याफा पीठ पर उर्ध रेखा गर्दन की तरफ से नीचे रीढ़ की हड्डी पर पीठ को दो भागों में बांटने वाली रेखा।

मंदी हालत

1. केतु आम तौर पर बुध का शत्रु, शुक्र का मित्र होता है लेकिन इस घर में केतु की चाल उल्टी होगी। अब केतु, बुध का मित्र, शुक्र का शत्रु होगा।
2. कुत्ता क्या जाने हलवे का स्वाद या कुत्ते को घी हज़म नहीं होता के आधार पर ऐसा व्यक्ति बेकदर, हर जगह पाँव की ठोकर से लड़खड़ाते पत्थर, नाचीज़ टुकड़े की तरह होगा, मामा तथा मामा खानदान पर भी मंदा हो सकता है।
3. बाएँ हाथ पर सोने की अंगूठी सहायता करे, जब केतु खाना नं० 6 की चीज़ों काम या संबंधियों का फल बर्बाद और मंदा हो।
   –जब खाना नं० 2 की दृष्टि से केतु बर्बाद हो रहा हो।
4. मंदी हालत मे दिमाग़ी खाना नं० 13 होशियारी, 14 खुदपसंदगी तथ 15 खुद्दारी का साथ होगा।
5. सफ़र बेमतलब और शत्रु बिन बुलाए होंगे।
   –जब वृहस्पति मंदा हो।
6. मामा और माता का हाल अच्छा न होगा, बुढ़ापा हल्का होगा, मगर केतु अब केतु की दूसरी चीज़ों या संतान पर मंदा न होगा।
   –जब चंद्र खाना नं० 2 में हो।
7. केतु स्वयं और दूसरे साथ बैठे ग्रह (सिवाय बुध के) जो नेक होंगे दोनों का हाल मंदा होगा।
   –जब कोई भी ग्रह सिवाय बुध खाना नं० 6 में हो।
8. केतु हर तरफ से मंदा तूफान पैदा करता होगा, अपना ही कुत्ता काट खाए, पाँव पर खराबियाँ, शुक्र की मंदी निशानी होगी और विचारों पर बुरा प्रभाव वृहस्पति के मंदे प्रभाव की निशानी होगी। –जब वृहस्पति या शुक्र दोनों में से कोई मंदा हो।
9. दोनों का मंदा फल हो। –जब शुक्र खाना नं० 6 में हो।

केतु खाना नं० 7

(गड़रिये का पालतू कुत्ता, बच्चों का साथी– शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता)

सब कुछ के होते जो रोता रहेगा।
तो यह नस्ल तेरी को जाहिर करेगा।।

तरह कुत्ते की शत्रु मारे, चक्की [1] हवाई [2] चलती हो।
बढ़ता कबीला साफ हो रास्ते, मिट्टी [3] पत्थर न कोई हो।
ग्रह शत्रु हो जब कोई मंदा, बर्बाद [4] खुदी वह होता हो।
केतु चक्र [5] जब तख्त का करता, लेख मंदा सब उत्तम हो।
ज़ुबान मंदा बुध झुठा वायदा [6], ज़हमत बीमारी पाता हो।
शुक्र गृहस्थी आग़ में जलता, पत्थर तूफानी चलता हो।
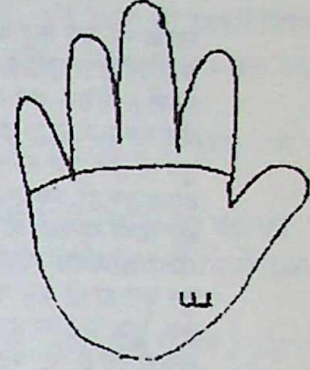
1. बुध, शुक्र। 2. वृहस्पति सहायक। 3. शनि मंदा न होगा।
4. शत्रु ग्रह स्वयं ही या टेवे वाला तकब्बर खुदी से बर्बाद हो।
5. लड़का बालिग हो जावे या लड़के की (उम्र के साल ÷ 48) × 40 के उत्तर के बराबर धन आएगा, 7, 19, 31, 43, 55, 67, 74, 95, 10, 115 साला आयु लड़के की (उम्र = 48) × 40= वर्ष की आमदन के बराबर फालतू धन।
6. महमूद फिरदौसी का वायदा दोबारा याद होगा। मगर अब फिरदौसी जगह महमूद रोता और कब्र में मायूस जाता होगा। शर्त टेवे वाला, ज़ुबान करे मगर वायदा न हटे, का कायल हो।

गृहस्थ रेखा **शुक्र के बुर्ज नं० 7 पर केतु का निशान।**

नेक हालत

1. आमतौर पर जिस तरह स्त्री के बहन–भाई, उसी तरह टेवे वाले के बच्चे होंगे। 24 साल की आयु में 40साल गुज़ारे की धन–दौलत आ जाएगी। लड़के की आयु के साल/48× 8 = धन की बरकत
जैसे लड़के की उम्र हो 24 साल तो 24/48×8 = 4 गुना यानी जन्म दिन पर जमा हुई के मुकाबले पर लड़के के 24 साला आयु में 4 गुना धन जमा हो जाएगा। ज्यों–ज्यों दूसरा लड़का बढ़ेगा धन जमा होता जाएगा, बढ़ता जाएगा।
2. केतु अब.गली का शेर बहादुर बच्चों का साथी, उनमें प्यार और शेर से टकराने वाला गडरिये का पालतू कुत्ता होगा, जो शत्रुओं को कुत्ते की तरह मार भगाएगा।
3. रिजक देने वाली हवाई चक्की मदद पर चलती होगी। शुक्र, शनि कभी मंदा न होगा और शत्रु ग्रह चंद्र, मंगल से कोई मंदा होवे स्वयं ही बर्बाद होगा। ज़ुबान करे मगर वायदा न हटे पर कभी जीवन में निराशा न होगी। सभी कुछ के होते हुए जो रोता रहेगा, यह उसकी अपनी और जद्दी नस्ल के खून के असर को जाहिर करेगा। –जब बुध, शुक्र और वृहस्पति की सहायता हो।

मंदी हालत

1. सामने वाले घर का हाल केतु की चीज़ों पर मंदा होगा।
2. टेवे वाला अपनी खुदी और तक्कबर से बर्बाद होगा नहीं तो नहीं होगा।
3. अगर केतु मंदा हो तो भी तो जिस दिन खाना नं० 1 पर आये 7-19-31-43-55-67-74-95-10-115- या जब लड़का बालिग हो जाये उम्दा होगा।
4. मंदी ज़ुबान झूठा वायदा ज़हमत बीमारी देगा। शुक्र गृहस्थी आग़ में जलता और पत्थर गिराने वाला तूफान चलता होगा।
5. महमूद फिरदौसी को अशर्फियों का वायदा दोबारा याद होगा। मगर महमूद टेवे वाला रोता मायूस कब्र को जाता और उसका कफन बदबू से भरा होगा।
–जब बुध मंदा हो।
6. बुध की 34 साल की आयु के बाद तारेगा और जो शत्रुता करे स्वयं ही बर्बाद हो। 34 साल की आयु तक शत्रु अवश्य गले लगे रहेंगे मगर इसके बाद उन्हें कुत्ते की तरह मार देगा।
–जब बुध खाना नं० 7, सब्ज कलम अहले कलम हो।

केतु खाना नं० 8

(बच्चों की मुहब्बत के ग़म में छत पर रोने वाला कुत्ता, मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुत्ता)

मरें बच्चे इतने कब्र भर रही है।
गिला मर चुकों का तू क्या कर रही है।।

मारक घर जब केतु बैठा, पिस्तान (बुध) पत्थर (शनि) आ होता हो।
मर्द, औरत न सुखिया जोड़ा [1], लड़का [2] कब्र जा सोता हो।
पहले 6 वें तक बुध जो बैठा, संतान कायम 34 तक हो।
बैठा मगर 7 से 12 तक, बाद [3] 34 जा बचती हो।
गुरु मंदिर [4] जब खाली टेवे, उपाय गुरु का उत्तम हो।
आया गुरु ही जब दूजे, केतु गिना तब कायम हो।
ग्रह साथी या साथ हो कोई, केतु मंदा हो जाता हो।
भाग्य की दोरंगी होगी, केतु देता फल 2 का हो।
गुरु बुरा हो तो केतु मंदा, भला मंगल न रहता हो।
बुध, शुक्र न होगा उत्तम, संतान देरी से पाता हो।
मंगल, गुरु 6-12 बैठे संतान, मंगलीक मंगल बद चौथे हो।
धन संतान न उत्तम गिनते, मंगल, केतु [5] दो मंदे हो।
वर्षा हो संतान की, जब चन्द्र दूजे हो।
चन्द्र भी जब हो बुरा, चन्द्र पालन हो।

1. मंगल खाना नं० 12 तो केतु का नं० 8 पर मंदा प्रभाव न रहेगा।
2. मगर स्वयं की आयु लम्बी होगी।
3. अपनी शादी के बाद अपनी बहन की शादी के बाद या लड़की की शादी के बाद (जो भी पहले हो) संतान कायम होगी, 48 साल की आयु में।
4. राहु खाना नं० 2 के समय खाना नं० 2 खाली ही गिनेंगे।

बुध खाना नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस साल संतान हो	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40

5. जब तक बुध, शुक्र उत्तम हो केतु मंदा नहीं हो सकता, ग्रहचाल चाहे कोई भी हो।

हस्त रेखा

मंगल बद के पर्वत 8 पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. केतु के अच्छे-बुरे होने का फैसला सदा खाना नं० 12 से होगा जब तक बुध, केतु मंदा न होगा।
2. संतान जल्दी कायम हो या देर से, मगर अपनी आयु सदा लम्बी 70साल से कम कभी नहीं अधिक चाहे हो।
3. यह घर ग्रहचाली कुत्ते केतु के कानों की जगह है मौत के यमों के आने की आहट जल्द सुन लेता होगा यानी उसे मौत आने का पहले पता लग जाता होगा।
4. 34 साल की आयु में नर संतान कायम होगी। 34 साल से पहले या बाद दोनों तरफ की एक साथ शायद ही जीवित हो। जन्म कुंडली में यदि बुध खाना नं० 1 से 6 में बैठा हो तो नर संतान 34 साल तक की पैदा हुई आखिर तक कायम रहेगी। यदि बुध खाना नं० 7 से खाना नं० 12 में हो तो 34 वर्ष की उम्र के बाद की संतान आखिर तक कायम रहेगी। कई बार 45-48 साल की आयु तक सिफ़र या एक और बाद में दूसरा लड़का कायम होगा।

अ- खाना नं० 6 केतु का अपना घर भी है और वहाँ केतु नीच भी है, इसलिए बुध खाना नं० 6 में हो तो 34 साल से पहले और बाद दोनों ओर की संतान कायम रहने की हालत जायज हो सकती है।

ब- स्वयं अपनी बहन या अपनी लड़की की शादी के बाद (जो भी पहले हो) नर संतान कायम होगी।

5. अब केतु कायम गिना जायेगा, किसी उपाय की ज़रूरत न होगी, संतान की वर्षा होगी लेकिन यदि चन्द्र मंदा हो तो चन्द्र पूजन सहायक होगा।

-जब मंगल नेक हो और वृहस्पति खाना नं० 2-1 या चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

6. केतु का प्रभाव कभी मंदा न होगा।

–जब वृहस्पति और मंगल खाना नं० 6-12 में न हो।

मंदी हालत

1. जब केतु खाना नं० 8 में हो तो बुध और शुक्र अमूमन मंदे घरों में होंगे या उसका चालचलन उसकी स्त्री के स्वास्थ्य पर प्रभावित हो जायेगा। यानी स्त्री के स्वास्थ्य रक्षा के लिए केतु की पूजना और चालचलन की संभाल ज़रूरी है।
2. बच्चों के ग़म उदासी से भरा छत पर लेटकर रोने वाला कुत्ता। नर संतान कब्र में भरती जाये। मंदे समय की पहली निशानी कुत्ते का छत पर बैठकर रोना होगा। संतान कायम होने का समय 34 साल की आयु की हदबंदी होगी। 48 साल की उम्र तक संतान का सुख हल्का हो, केतु की बीमारी पेशाब की नाली के कतरा-कतरा निकलना महीनों तक।
3. 25 साल की आयु तक केतु का प्रभाव उच्च मगर 26 वें साल से राहु और केतु साथ में बुध, शनि मंदे होंगे, स्त्री-पुरुष दोनों गृहस्थ जीवन में कोई खास सुखी न होंगे।
4. ***केतु की चीज़ें (दोरंगा काला-सफेद कम्बल पूरा कम्बल उसका टुकड़ा नहीं) धर्म स्थान में देना उत्तम सहायता देगा। जब कोई और ग्रह साथीं हो तो कम्बल (दोरंगा) के टुकड़े में दूसरे साथी ग्रह की चीज़ें बांध कर बाहर वीराने में दबाने सहायक होंगे।***
5. **संतान की मंदी हालत (वृहस्पति का उपाय जो केतु खाना नं० 4 में दिया गया है, सोना, केसर का प्रयोग) सहायता करेगा। कान छेदन सहायक होगा। 96 घण्टे सुराख कायम रखना ज़रूरी है, केतु की बीमारी जुलाब, दर्द, फोड़े, कोढ़ ज़ख्म आदि सेहत की खराबी का बहाना होगा। खाना नं० 2 खाली, राहु खाना नं० 2 के समय खाली गिनेंगे।**
6. केतु स्वयं मंदा गिना जायेगा। भाग्य की दोरंगी होगी और केतु अपना फल खाना नं० 2 का दिया हुआ देगा।

   –जब कोई भी ग्रह साथी खाना नं० 8 में हो।
7. न सिर्फ केतु मंदा बल्कि मंगल भी भला न होगा। बुध, शुक्र भी मायूस करने वाले और नर संतान देर से कायम होगी।

   –जब वृहस्पति मंदा हो।
8. संतान, धन दोनों मंदे बल्कि मंगल, केतु दोनों का ही फल मंदा होगा।

   –जब गुरु, मंगल कोई खाना नं० 6-12 या मंगल बद खाना नं० 4 हो।
9. केतु की सब चीज़ें मंदी और चारपाई तक मंदी। दु:ख, छत मकान से गिर जाए, गृहस्थ घर बार रहने का मकान और उसका तो खाना ही बर्बाद होगा।

   –जब शनि या मंगल कोई खाना नं० 7 में हो।
10. ऐसे टेवे वाले के जन्म से अमूमन 12 साल पहले भाई की मौत होगी।

   –जब मंगल खाना नं० 12, शनि खाना नं० 1 में हो।

केतु खाना नं० 9

(इंसान की ज़ुबान समझने वाला कुत्ता, बाप का हुक्म मानने वाला बेटा)

माता-पिता एहसान हम पर जो करते।
आयु गुज़रे सारी एवज़ उनका भरते।।

केतु कायम स्वयं पिता को, तारता नहीं वह मामा को।
तारे नर संतान तीन ही गिनते, सुखिया हो और उम्दा हो।
चन्द्र भले घर माता तारे, वृहस्पति भले पिता तारता हो।
शत्रु ग्रह घर तीसरे बैठे, नर संतान मारता हो।
साल बीतते ग्रह 7 वें के, उत्तम असर केतु देता हो।
सखन बेटा लावल्दी देते, हुक्म विधाता होता हो।
ईंट सोने की जब घर रखता, केतु [1] जिस्म कुल उत्तम हो।
सोना बढ़ेगा हरदम उतना, जितना [2] भार ज़र बढ़ता हो।
औलाद केतु में लड़का अपना, नेक सलाही होता हो।
हाल होना हो साल जो अगला, पहले बता ही देता हो।
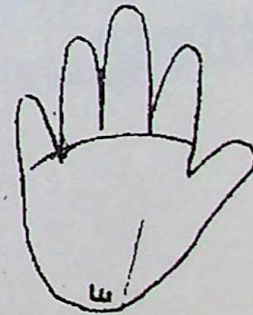
शुक्र, शनि फल हर दो उत्तम, गुरु भला ग्रह मंदिर जो।
भाग भला न बेशक माता, साथ 9 में चाहे चन्द्र हो।
गुजरान लिखी परदेश हो उत्तम, केतु पालन से बढ़ता हो।
मालिक सिफत दो शेरी कुत्ता, अमीर बना खुद साख्ता हो।

1. केतु के भाग : 5 कान, रीढ़ की हड्डी, पाँव, टाँगें, पेशाबगाह आदि।
2. जिस प्रकार सोना पहले घर में कायम होगा उतना ही और फालतू आयेगा, फिर उन दोनों के जोड़ से भी बढ़ जायेगा।

हस्त रेखा

वृहस्पति के पर्वत 9 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं, दस्ती मेहनत से धन कमाएगा।
2. कुत्ते की बफादारी, सुअर की बहादुरी हर दो सिफत का मालिक होगा। यह सिफतें उसकी औलाद में ज़रूर होंगी। केतु की हालत का फैसला वृहस्पति पर होगा।
3. दस्ती कामों में (हुनरमंदी) से अमीर होगा। केतु पालन संसार के तीन कुत्ते (संसारी कुत्ता, दरवेश, दोहता, भांजा) आदि की पालना से बढ़ता होगा।
4. शुक्र, शनि और वृहस्पति का उत्तम फल और खाना नं० 2 का हर एक ग्रह मय चन्द्र समेत उत्तम फल देगा।
5. खाना नं० 7 के ग्रह की आयु (सूर्य 22 साल वृहस्पति 16 साल आदि) के साल गुज़रने पर केतु का प्रभाव उत्तम हालत पर होगा। नामर्दों को मर्द बनाना और लावल्दों को औलाद देने के संबंध में ऐसे व्यक्ति की आशीष विधाता का हुक्म होगी। मगर घर में सोने की ईंट, जिस्म या कानों में सोना जब तक कायम रखें तो संतान धन और केतु से संबंधित चीज़ों (कान, रीढ़ की हड्डी, दर्द जोड़ टाँगें, घुटने, पेशाबगाह) पर केतु का प्रभाव उत्तम होगा।
6. घर में रखे सोने के बराबर सोना बढ़ता जाएगा। फिर उसके बराबर और फिर और बढ़ता जाएगा सोना बढ़े 1+1 = 2 फिर 2+2 = 4 आदि। अपनी संतान अगले साल का हाल पहले बताने वाली होगी, ठीक सलाहकार होगी, परदेश में अधिक रहेगा, आदमी की बोली समझने वाला कुत्ता, बाप का हुक्म मानने वाला लड़का, माता-पिता का एहसान सारी आयु न भूलेगा।
7. पिता को जन्म से ही तारता हो। 12/24/48 साल की आयु तक उच्च हालत कर देगा।
8. नर संतान तीन होंगी जो उत्तम हालत की होगी।
9. माता खानदान को तारेगा।

   –जब चन्द्र भले घर का या उत्तम हो।

10 पिता खानदान को तारेगा (मंत्री समान हो)।

   –जब वृहस्पति या राहु उत्तम या खाना नं० 2 उत्तम हो।

मंदी हालत

1. मंदी हालत में मामा की जड़ काट कर रख देगा, उनका तो खाना ही बर्बाद कर देगा, बेशक केतु कायम ही हो और चन्द्र भाग भी मंदा हो। चाहे चन्द्र कायम या खाना नं० 9 में साथ ही क्यों न हो।
2. नर संतान मरती जाए।

   –जब शत्रु ग्रह (चन्द्र, मंगल) खाना नं० 3 में हो।

3. चोर, डाकू फिर भी मंदा ही हाल होगा।

   –जब शुक्र मंदा हो।

केतु खाना नं० 10

(चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज़

(मंदा हाल) मौका शनास, नेक हालत)

उजाड़े बिरादर मुआफी हो देता।
भरे पेट दौलत न कंगाल होता।।

शक्की केतु दरबार शनि के, जान केतु, खुद मंदा हो।
मंगल राजा चाहे साथी बैठे, भला दोनों न होता हो।
शनि टेवे घर अच्छे होते, मिट्टी सोना दे जाती हो।
बुरे घरों जब शनि जा बैठा, सोना मिट्टी खा [1] लेती हो।
ताकत शनि ग्रह धोखा होता, इंसाफ शनि पर होता हो।
उम्र पापी 48 करता, चलन सम्भलते उम्दा हो।
शनि अकेला 6 घर बैठा, नामी खिलाड़ी होता हो।
लड़का पैदा 3 होकर मरता, शनि पाया घर चौथा हो।
उपाय यही उत्तम होगा, गिना केतु घर 8 का जो।
माया दौलत न केतु मंदा, नीच सिर्फ औलाद का हो।
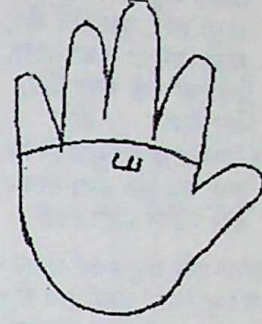
1. दौलतमंद मगर बुरे कामों वाला, पराई स्त्री (चाहे खूबसूरत मिट्टी) कफन का सबूत देगी।

हस्त रेखा

शनि के पर्वत नं० 10मध्यमा की जड़ पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. जिस कदर भाई उजाड़े वह मुआफी देता जाये तो वह और भी बढ़ता जायेगा, कभी कंगाल न होगा।
2. शक्की हालत फैसला शनि पर मगर मालो दौलत पर कभी मंदा न होगा अगर हो तो सिर्फ संतान पर बुरा प्रभाव है।
3. चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला कुत्ता।
4. धनी, अगर बुरे चरित्र बदफेल हो तो खुबसूरत स्त्री मंदे कफ़न का सबूत देगी।
5. मिट्टी से सोना मिले। 24 साल की आयु में लड़के ही लड़के, वृहस्पति का फल उत्तम हो।

   –जब शनि उत्तम या उत्तम घरों में हो।
6. नामी खिलाड़ी होगा (खेल चाहे कोई भी हो) जिसमें चालचलन की नेकबद खेलें भी शामिल हों।

   –जब शनि खाना नं० 6 में हो।

मंदी हालत

1. मंदी हालत में केतु से संबंधित जानदार चीज़ों पर 24-28 साल की आयु तक मंदा प्रभाव देगी।

   –जब शनि मंदा हो।
2. औलाद की बर्बादी के समय बल्कि पाप की आयु (राहु, केतु) राहु 42 साल दोनों 45 साल केतु से 48 साल पहले चाँदी का बर्तन (कुजाह) शहद से भरकर रख लें और बाहर वीराने में दबा दें। 48 साल के बाद कुत्ता रखना ज़रूरी है जो सहायक होगा। 45/48 साल की आयु तक में चालचलन की सम्भाल संतान के जीवन की नींव होगी, एक ज़रूरी चीज़ होगी। केतु खाना नं० 8 में दिया उपाय सहायक होगा। अकेला केतु मंदा हो तो मंगल से सहायता होगी लेकिन जब मंगल भी खाना नं० 10में हो।
3. **दोनों का फल मंदा अपार जमा ही होगा, गृहस्थी काम में हर जगह तीन कोने सोने को मिट्टी खा ले (हर ओर तबाही) अब चन्द्र का उपाय या मकानों की तह में दूध, शहद दबाएं।**

   –जब शनि मंदा या मंदे घरों में हो।
4. तीन नर संतान नष्ट होगी मगर धन के लिए मंदा नहीं।

   –जब शनि खाना नं० 4 में हो।

केतु खाना नं॰11

(गीदड़ स्वभाव कुत्ता)

फिक्र छोड़ गुज़री का जो चली गई है।
नज़र रख तू आगे की जो आ रही है।।

ताकत केतु हो 11 गुना, उम्दा दौलत ज़र देता हो।
साथी शनि, बुध तीजे बैठा, असर केतु [1] का मंदा हो।
भला शनि या 3 घर आया, केतु बुरा न होता हो।
टेवे स्त्री चाहे कैसा बैठा, शर्त शनि न करता हो।
केतु, गुरु 5-11 होते, जन्म लेता जो लड़का हो।
जिस्म उम्र उस मुर्दा गिनता, लाश अमूमन पैदा हो।
वक्त केतु तक माता मरती [2], दौलत मगर खुद बढ़ती हो।
शनि मंदे न होगी उतनी, औलाद मकान जड़ कटती हो।
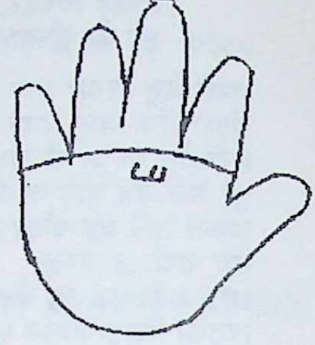
1.चाहे स्वयं बड़ा दरिद्र और केतु स्वयं संतान का तथा शनि का फल मंदा ही होगा लेकिन यदि खाना नं॰ 5 का राहु किसी दूसरी शर्त से सहायक हो तो संतान 11 गुना शुभ नेक होगी।
2.5-11-23-36-48 साल की आयु में चन्द्र का फल मंदा या सिफ़र (ज़ीरो) ही होगा और पीछे की आवाज़ मंदे असर की निशानी हुआ करेगी।

हस्त रेखा

हथेली के खाना नं॰ 11 आमदन पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. जो गुज़र गई वह अच्छी होगी सदा आगे का ख्याल रखता होगा। जद्दी जायदाद तो इतनी न होगी जितनी स्वयं पैदा करे। केतु राजदरबार के लिए राजयोग जब तक खाना नं॰ 3 में बुध न हो। हरदम एक अकेला दो, ग्यारह की तरह बहता होगा।
2. गुरु का आसन गीदड़ स्वभाव कुत्ता स्वयं केतु की शक्ति कामदेवी।
3. धन-दौलत 11 गुना उत्तम होगा।

   –जब शनि खाना नं॰ 3 में हो।

4. 11 गुना नेक माली हालत 11-23-36-48 साल की आयु में खाना नं॰ 1 में आने पर उम्दा प्रभाव हो।

   –जब नर ग्रह/स्त्री ग्रह मंदे हों।

5. राजदरबार के लिए राजयोग होगा।

   –जब खाना नं॰ 3 में बुध हो।

मंदी हालत

1. अपने लड़के के जन्म पर (स्त्री के टेवे में लड़का और दोहता) अमूमन माता न होगी। केतु की आयु तक चन्द्र का फल अपनी माता की नज़र बल्कि आयु और माता और संतान का आपसी गुजरान चन्द्र की जानदार और बहने वाली चीज़ें सब ही मंदे असर लेंगे मगर संतान स्वयं नेक होगी।
2. स्वयं दरिद्री/मगर संतान नेक। जब राहु खाना नं॰ 5 का किसी प्रकार दूसरी शर्तों के कारण सहायक ही हो। मगर स्त्री के टेवे में यह सब उल्ट या बहरहाल में केतु का प्रभाव नेक और शुभ होगा।
3. शुभ काम के समय पीछे से दी गई आवाज़ मंदे असर की निशानी हुआ करेगी।
4. चन्द्र का फल खासकर 11-23-36-48 साल की आयु में मंदा या सिफ़र (ज़ीरो) ही होगा।

   –जब बुध खाना नं॰ 3 में हो।

5. मकान संतान दोनों की उन्नति न होगी मगर स्त्री के टेवे में शनि बुरा होने पर केतु कभी मंदा न होगा।

   –जब शनि मंदा हो।

6. नर संतान मुर्दा पैदा होगी।

उपाय

शनि की चीज़ें सफेद मूली खासकर रात को स्त्री के सिरहाने रखकर सवेरे धर्म स्थान में देना सहायक होगा, स्त्री बचेगी। दूसरे साल फिर दोबारा नर पैदा होगा। पहली संतान शायद ही जीवित पैदा हो।

केतु खाना नं० 12

(ऐशों आराम जद्दी विरासत)

भरे ज़र कबीला चाहे बच्चों से तेरा।
एवज़ घर गुरु का तू जिस जन्म देगा।।

आप बढ़ता साथी बढ़ते, बढ़ता कुल परिवार हो।
मर्द माया होंगे फलते, फलता सब गुलज़ार हो।
उच्च केतु जड़ खाली बैठा, सुख गृहस्थी बढ़ता हो।
शनि, शुक्र और गुरु तीनों का, असर मुबारक देता हो।
मदद भाई न मंगल गिनते, * लड़का जाती खुद तारता हो।
शर्त तरक्की केतु लेते, मकान सफ़र फल उम्दा हो।
शत्रु-मित्र चाहे साथी बैठा, संतान केतु न मंदा हो।
टेवे राहु का दुश्मन [1] साथी, ज़हर केतु को देता [2] हो।
औलाद नरीना होगी शक्की, मंदा केतु खुद होता [5] हो।
केतु 12 न असर जो देवे, निशानी दूजे जा देता हो।
औलाद असर धन-दौलत अपने, ससुराल घरों आ भरता हो।
असर दो तरफी पाप जो मंदा, बाहर टेवे से होता हो।
औलाद उपायों राहु होगा, दूध अंगूठा चूसता [3] हो।
मंगल, राहु में हस्द हो भरता, लड़कों तरफों चार।
शत्रु बैठा खुद रक्षा करता, फूले-फले गुलज़ार [4]।

1. राहु के शत्रु : शुक्र, सूर्य, मंगल।
केतु के शत्रु : चन्द्र, मंगल।
अर्थात् जब राहु खाना नं० 6 के साथ उनके दुश्मन सूर्य, चन्द्र, शुक्र, मंगल हो तो केतु का प्रभाव मंदा हो।
2. जब तक चालचलन अच्छा रखें, मगर अय्याश तबीयत उत्तम फल होगा।
3. जब नर औलाद तो कायम मगर चन्द्र माया दौलत शांति का फल मंदा हो रहा हो।
4. औरत के टेवे में खुद केतु का प्यार या संबंध पैदा करना मददगार होगा।
5. जब खाना नं० 6 में राहु के दुश्मन तो केतु बर्बाद लेकिन जब खाना नं० 2 में शत्रु तो केतु का असर सिर्फ 1/3 यानी 2 लड़के होगा।

हस्त रेखा

हथेली के खाना नं० 12 खर्च पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. तरक्की की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं।
2. केतु जब खाना नं० 12 का फल जाहिर न करे, खाना नं० 2 ससुराल में या खाना नं० 2 का फल देगा। निशानी खाना नं० 2 की संबंधित चीज़ों से होगी और वृहस्पति के ग्रह की तबीयत होगी। ऐसे आदमी के यहाँ संतान के जन्म दिन या उसकी 24 साल की आयु से इज्जत तथा धन खूब जमा होंगे। ऐशों आराम तथा धन होगा।
3. शनि, शुक्र, वृहस्पति तीनों का उत्तम फल मगर मंगल बड़ा ताया, भाई, मामू आदि की सहायता न होगी। सिर्फ लड़का ही तारेगा। तरक्की की शर्त होगी, मकान के सफ़र का फल उत्तम हो।
4. भरने लगे तो एक प्याले में ही कबीला भर दे। नर संतान 6 से 12 जो सेहत में तथा धन में उत्तम हो (चाहे खाना नं० 12 में कोई शत्रु ग्रह ही साथी हो) शर्त यह है कि केतु की सेवा या केतु कायम रखे।
5. मंगल और राहु हस्द करेंगे या उनकी संबंधित चीज़ें या रिश्तेदार मदद न करेंगे मगर केतु अपने लड़के केतु से संबंधित चीज़ें या रिश्तेदार बरकत लाएंगे और हर तरफ बरकत होगी।

6. दौलतमंद परिवार का स्वामी जद्दी विरासत कुदरती हक होगा। केतु का फल उच्च होगा। गृहस्थी सुख में सब तरफ बरकत खुद अपना आप, आस औलाद, रिश्तेदार सब ही गुलज़ार में शानो शौकत जब तक ऐश पसंदी कायम रखे।

–जब खाना नं० 6 खाली यानी राहु खाना नं० 6 अकेला हो।

मंदी हालत

1. टेवे वाले पर कभी मंदा प्रभाव न पड़ेगा।
2. **नर संतान शक्की, केतु बर्बाद हो।**
3. जब तक केतु का संबंध नेक और उत्तम हो औलाद बर्बाद या नदारद जब खाना नं० 6 में राहु के साथ हो।

अ– मंगल हो तो औलाद 28 साल की उम्र तक न हो।

ब– चन्द्र हो तो औलाद 32 साल की उम्र तक न हो।

स– सूर्य हो तो औलाद 42 साल की उम्र तक न हो।

द– शुक्र हो तो 25 साल की उम्र तक न हो।

मगर अय्याश तबीयत हो तो औलाद की बरकत होगी और केतु मंदा न होगा ऐसा आदमी मंगल बद के आदमी से मिलता-जुलता होगा।

अब केतु की जड़ कटती होगी। केतु बेशक खाना नं० 12 का उच्च फल का हो मगर जब राहु खाना नं० 6 के साथ बुध भी हो तो केतु पर बुरा असर न होगा हालांकि बुध और केतु आपस में शत्रु हैं। खाना नं० 6 में राहु के साथ राहु के शत्रु (मंगल, सूर्य, शुक्र) के साथ राहु के मित्र या उसके बराबर के ग्रह हों तो केतु खाना नं० 12 पर बुरा असर न होगा। बेशक वह ग्रह (राहु के दोस्त या राहु के बराबर के) केतु के शत्रु ही क्यों न हो।

4. केतु खाना नं० 12 में होता हुआ भी व्यर्थ होगा। अगर किसी दूसरे ग्रहों की सहायता से केतु का नेक असर भी हो तो नर औलाद सिर्फ 2 लड़के कायम हों।

–जब खाना नं० 6 में राहु के साथ उसके शत्रु (शुक्र, मंगल, सूर्य) हो या खाना नं० 2 में दुश्मन (चन्द्र या मंगल, शुक्र) चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

नोट किसी संतान रहित से मकान के लिए ज़मीन या नि:संतान का बना-बनाया मकान खरीदे तो ऐसे टेवे वाला भी नि:संतानता से दूर न होगा।

5. दोनों ग्रहों में से सिर्फ एक का उत्तम फल हो, हाल चन्द्र खाना नं० 2 में देखें।

–जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

6. ***अगर कुत्ते मरवाए या केतु नष्ट करे तो केतु खाना नं० 12 होता हुआ भी मंदा फल देगा।*** औलाद की मंदी हालत पर राहु का उपाय सहायता करेगा और जब और औलाद कायम हो और माली कष्ट हो तो दूध में अंगूठा डालकर चूसना मुबारक होगा।
7. स्त्री के टेवे में स्वयं केतु का प्यार या संबंध पैदा करना सहायक होगा। औलाद के विघ्न को दरवेश कुत्ता बर्दाश्त करेगा यानी कुत्ते पर कुत्ता मरेगा और 11 की गिनती तक कुत्ते मरेंगे, संतान जीवित रहेगी, 4043 दिन के अन्दर-अन्दर दूसरा कुत्ता कायम करते जाएं।

****

वृहस्पति और सूर्य

(शाही धन)

तख्त मिले से साल 38 [1], — *आला दौलत धन शाही हो।*
विष्णु (सूर्य) ब्रह्मा (वृ०) फूलन दृष्टि, — *भाग उदय त्रिलोकी हो।*
बाप-बेटे का दोनों दुनिया, [2] — *लेख नसीबी मिलता हो।*
जुदा-जुदा चाहे दोनों मंदा, — *मिलते सुखी दो होता हो।*
दोनों देखे जब चन्द्र माता, — *खुश्क कुएं ज़र भरता हो।*
नज़र दृष्टि शनि जो करता, — *सोया जला फल दो का हो।*
साथ-साथी चाहे चन्द्र माता अंधी, — *पिस्तान (बुध) भरे दूध होती हो।*
बुध मगर जब हो कभी साथी, — *रवि, गुरु दो कैदी हो।*

1. टेवे वाले की 38 साल की आयु :-

वृहस्पति के साथ सूर्य के वक्त किस्मत का संबंध गैरों के साथ से नेक मगर रुहानी होगा। संसारी कामों में कामयाबी ज़रूर होगी। मगर अपनी कोशिश से आपसी मिलावट में अगर सूर्य का असर 3 है तो वृहस्पति का 2 होगा। पहले वृहस्पति का फिर सूर्य का प्रभाव लेंगे। दोनों मिलकर चन्द्र बन जाते हों मगर भाग्य का प्रभाव शेर की रफ्तार, शेर की शक्ति और दमकता सोना होंगे। वृहस्पति अकेला होने के वक्त अगर उसका अर्थ बाबा या बाप या जगत् गुरु हो तो सूर्य के साथ होने पर तो वृहस्पति से अर्थ टेवे वाले का बाप और सूर्य से उसका लड़का गिना जायेगा या यों कहें कि टेवे वाले की किस्मत में उसका बाप और बेटे की किस्मत का असर शामिल होगा। उसकी किस्मत उसके बाप और अपने को मदद देगी। जुदा-जुदा दोनों बेशक मंदे असर के हों मगर एक साथ होने से दोनों का भला असर होगा और नीचे लिखे सालों तक बाप, बेटे दोनों ही के लिए उत्तम और हर दो ग्रह का मिला हुआ असर उत्तम होगा।

कितने साल तक मिलते	49	48	47	46	45	44	43	42	41	40	39	38
मुश्तरका किस घर बैठे	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1

यानी कि बाप, बेटा (जिसके टेवे में सूर्य व वृहस्पति इकट्ठे बैठे हों) तो वो बेटा या उसका बाप या ऐसे टेवे वाला जब बाप बन चुका हो तो उसका बेटा, हर दो मुश्तरका हालत में सदा ही 70साल की उम्र तक खुशहाल होंगे। अगर एक ही आयु के हिसाब से भाग्य का फल कम हो तो उसे दूसरे की तरफ से उम्र की बरकत और भाग्य की मदद का ज़ोर मिले और हर दो बाप, बेटा 70साल तक बढ़ते हों।

मुश्तरका भाग्य	1201	7	14	21	28	35	42	49	56	63	70
आयु	12070	63	56	49	42	35	28	21	14	7	1

हस्त रेखा :- वृहस्पति का सूर्य या सूर्य के घर का संबंध या भाग्य से रेखा सूर्य के बुर्ज को।

नेक हालत :-

ऐसा व्यक्ति दिमागी खाना नं० 20मान बुजुर्गी का मालिक, अन्दर-बाहर से नेक, ज्ञानदाता, अक्ल का भंडारी और भाग्य के मैदान में राजा, योगी समान होगा। जिसमें न सिर्फ ब्रह्मा (वृहस्पति) विष्णु (सूर्य) की एक साथ शक्ति के कारण विधाता के लेख को ही उलटने की शक्ति होगी बल्कि वह न्याय लम्बी उम्र और जागते हुए भाग्य बनावटी चन्द्र का उत्तम प्रभाव या नेक माता-पिता का खून (वीर्य) का मालिक होगा।

1. बाल-बच्चों की बरकत और हर तरह से वृद्धि होगी, राजदरबार और धर्म इज्जत बढ़ता होगा।
   -जब शुक्र बाद के घरों में हो।
2. शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम, संसारी मान की तरक्की, आने वाला समय दिन प्रतिदिन उत्तम। हर दो ग्रहों के कारोबार, रिश्तेदार और हर दो ग्रह खुशी और धन देंगे। -जब घर बैठक के लिहाज से जब सूर्य का प्रभाव उत्तम हो रहा हो।
3. चन्द्र स्वयं अपना नेक असर पैदा कर देगा। खुश्क कुएं अपने आप पानी से दोबारा भर जाएंगे। बच्चे की आवाज़ सुन कर ही माता की छाती पिस्तान (दूध) से भर जाए चाहे वह अंधी चन्द्र (शत्रु ग्रहों से मारा हुआ) ही हो। राजदरबार से नेक संबंध उन्नति होगी, मगर भाग्य किसी दूसरे के साथ से ही नेक होगा। -जब दोनों चन्द्र को देखते हो।

4. राजदरबार के संबंधित ज़रूरी सफ़रों के नेक परिणाम होंगे धन लाभ होगा। -जब दोनों आपस में देख रहे हों और चन्द्र कायम हो।

खाना नं० 1 :-

राजा के समान दूसरों से टैक्स ले, मौत अचानक हो। तख्त सुनहरी हो आला ऑफिसर हो। उम्र लम्बी, गृहस्थी सुखी, उम्दा, दुनिया का पूरा आराम चाहे वह मिट्टी का माधो, पढ़ा-लिखा कुछ भी न हों, मगर हाथ के काम का कारीगर होगा और सफल होगा। शेर की तरह बहादुर मगर बेरहम होगा।

खाना नं० 2 :- महल मकान आलीशान और प्रसन्न जीवन।

खाना नं० 3 :- माया दौलत की हरदाम तरक्की जब तक लालच का पुतला न हो।

खाना नं० 4 :-

दूध पहाड़ से बहता अर्थात् पत्थरों से (शनि की चीज़, काम रिश्तेदार) भी सोना बनाते जाए। शाही हुक्म चलाने वाले जीवन का स्वामी होगा।

खाना नं० 5 :-

संतान धनवान होगी। खुद अपने लिए पर स्वार्थ से माया धन मिले। शत्रुओं का सदा नाश होता रहे। संतान का मामूली सांस संसार में उसे हवाई जहाज़ के पंखों की तरह उत्तम सहायता देगा। अब चाहे, पापी ग्रह भी उस घर में आ बैठे अर्थात् राहु, केतु, शनि भी बेशक साथ ही खाना नं० 5 में आ जाए फिर भी सूर्य, वृहस्पति का अपना-अपना फल कभी भी मंदा न होगा। (पूरा इकबाल मंद वायदा निभाने वाला और संतान के जन्म दिन से और भी ज़्यादा हो)।

-जब चन्द्र उसी समय खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 6, 7, 1011 :-

दोनों ग्रहों का जगह-जगह दिया अच्छा या बुरा अपना-अपना फल मगर दोनों का मुश्तरका असर बुढ़ापे की तरफ या बुढ़ापे पर अमूमन होगा।

खाना नं० 8 :- जागते हुए भाग्य और मौतों से बचाव होगा।

खाना नं० 9, 12 :-

दोनों ग्रहों का असर, कुल की उन्नति, खानदान की वृद्धि और हर तरह की तरक्की अर्थात् घर के सदस्य और माया धन होती होगी।

मंदी हालत :-

1. सूर्य, वृहस्पति दोनों ही पर मिट्टी पड़ती होगी। न राजदरबार में सुखी रोटी और न ही मजहबी मान। हर तरफ फर्जी आंधी की तरह मिट्टी से कपड़े खराब होते नज़र आएंगे। -जब शुक्र पहले घरों में हो।
2. दोनों ही का फल सोया और जला हुआ होगा बल्कि अब केतु सात साल की महादशा मंदी हालत में होगा जिससे केतु की चीजें, कारोबार, रिश्तेदार माया औलाद सब ही का असर मंदा और धन शनि के मंदे परिणाम खड़े होंगे। राजदरबारी कामों में फैसला हक में होने की कोई तसल्ली न होगी। शनि अगर स्वयं नेक हो (अपने असर के लिहाज से) तो कुछ उत्तम, नहीं तो सख्त खराबी होगी।
   -जब दोनों को शनि देखता हो या या दोनों खाना नं० 4 और शनि खाना नं० 10में बैठा हो।
3. भाग्य की चमक न होगी हर काम में कष्ट और नाकामी। जीवन का कोई अर्थ न होगा, जीवन सिर्फ खाना पूरी का नाम होगा।
   -जब दोनों ऐसे घरों में हो जिनमें सूर्य का असर हल्का या मंदा हो रहा हो।
4. अगर लालच का पुतला हो तो लाखोपति होने पर भी कुल गर्क होगा या कुल गर्क करने वाला ही होगा।
   -जब दोनों खाना नं० 2 में हो।

उपाय :- वृहस्पति तथा सूर्य एक साथ :-

किसी भी मंदी हालत शारीरिक या माली हालत में बाप, बेटा दोनों इकट्ठे हो जाने पर मंदी हालत फौरन ठीक होगी। मुफ्त का माल (दान, खैरात) लेना दोनों के लिए अशुभ होगा। एक-दूसरे से मजबूरन अलग होने की हालत में बाप का प्रयोग किया हुआ बिस्तर या चारपाई रात के समय बेटे की पीठ के नीचे शुभ होगी। घर की सबसे पुरानी चारपाई भी यही असर देगी। घर में वृहस्पति (शुद्ध सोना या केसर) कायम रखना शुभ होगा।

वृहस्पति और चन्द्र

(दिया हुआ धन, कानूनी महकमा, बड़ का वृक्ष)

अक्ल घटे पर धन बढ़े, सफ़र भी उम्दा हो।
विरासत खेती सब फले, छुपी सहायता भी हो।
इंसाफ विभाग दौलत अपनी, काम मर्द स्वयं आती हो।
उत्तम असर ग्रह दोनों जाती, तीनों काल त्रिलोकी हो।
दोनों बैठो को शत्रु देखे, नष्ट वही खुद होता हो।
उल्ट हालत हो दोनों मरते, शत्रु ज़हर न चढ़ता हो।
ऋण पितृ 1 या मातृ 2 हो, माता-पिता सुख उड़ता हो।
आराम औलाद न उसका देखे, शुक्र गृहस्थ मंदा हो।
कन्या कीमत न जब तक लेते, माता-पिता सुख लम्बा हो।
धर्म दया का पुतला होते, सोने-चाँदी की कुटिया हो।
करनी जैसी हो वैसी भरनी, मंदी तपस्या होती हो।
राज फकीरी मिट्टी उड़ती, राजा शाही या धोबी हो।
थाली चन्द्र घर कायम 3 होते, हवा, बारिश की चलती हो।
मंदी हवा घर मंदा बैठे, नेक बुढ़ापे होती हो।
खालिस चाँदी का बर्तन खाली, मकान कोने में दबाता हो।
गुरु चन्द्र से ज़हर हटेगी, बादल बरसता होता हो।

1. खाना नं० 2, 5, 9, 12 में बुध, राहु, शुक्र जो पिता भुगते वही बेटे पर गुज़रे।
2. खाना नं० 4 में पापी जो माता पर गुजरे वही बुध, शुक्र की जानदार चीज़ों पर।
3. दोनों ग्रह नेक घरों में उत्तम या कायम या घर में जब चाँदी की थाली हो तो प्रभाव भी उम्दा चाँदी की थाली की तरह का उत्तम होगा।

दोनों में मुश्तरका के वक्त वृहस्पति का असर जो अमूमन 16 साल की आयु से शुरू हो, 28 साल की आयु के बाद अकेला ही रह गया समझा जायेगा और उस पर शत्रु ग्रहों का प्रभाव हो सकता है। जब चन्द्र खाना नं० 2 में उच्च हो रहा हो तो वृहस्पति का असर ज़ोर पर होगा और जब वृहस्पति खाना नं० 4 में उच्च हो रहा हो तो चन्द्र का असर ज़ोर पर हो। मुश्तरका हालत में अगर चन्द्र का उत्तम असर एक हिस्सा हो तो वृहस्पति का असर दो गुना नेक होगा। अमूमन वृहस्पति-चन्द्र सोने-चाँदी तख्त के स्वामी वाले पिता के टेवे में खाना नं० 1 (लग्न) में होंगे मगर काल माया गरीबी से हर तरफ आँसुओं वाले सांस वाले बाप के टेवे में खाना नं० 1 में नहीं होंगे।

नेक हालत :-

1. दिमागी खाना नं० 21 हमदर्दी या रहम दिली, 37 राग, 38 जवान दानी, 39 वज़ह सबब की शक्ति, 40एक चीज़ का दूसरी से मुकाबले की ताकत, 41 इंसानी स्वभाव, 42 रजामंदी का स्वामी होगा। -जब चन्द्र का वृहस्पति से संबंध हो रहा हो।

2. वह छत्रधारी बड़ के साये की तरह हरेक व्यक्ति को लाभ देने की किस्मत का स्वामी होगा। चन्द्र का उत्तम असर होगा। बुढ़ापे में स्मरण शक्ति चाहे कम होती जाये मगर आयु के साथ-साथ मन की शक्ति के समान माया धन और दूसरे गृहस्थी सामान अधिक सहायक होते जाये। माता-पिता की ज़मीन जायदाद (खेती की) और छुपी मदद सब की बरकत हो। फ़िज़ूल आमदन/ससुराल से, दौलत विद्या की तरक्की हो, तथा विद्या 24 साल बेरुकावट चले। तीर्थ यात्रा 20साल नसीब हो। बुढ़ापा आराम से गुज़रे। -जब चन्द्र को वृहस्पति देखे।

3. धन और गुज़रा हुआ समय सब उत्तम होंगे। -जब घर बैठक के लिहाज से जब चन्द्र उत्तम तथा शुभ हो।

4. दूध और माया तक सब उत्तम हो बल्कि अमृत हो। -जब दोनों मुश्तरका टेवे में बुध से पहले बैठे हों।

5. सोने-चाँदी की थाली की तरह मानसून पवनें सहायक, वर्षा से लदी हुई की तरह भाग्य की मदद होगी। माता-पिता का असर बड़ के साये की तरह सहायक होगा। -जब दोनों अच्छे घरों में बैठे हो।

6. दोनों का प्रभाव हर काम में उत्तम। उम्मीदों के नतीजे उत्तम। दिमागी खाना नं० 18 होशियार स्वभाव (नेक अर्थो में) का स्वामी होगा। -जब शनि उत्तम हो।

7. दर्जा दृष्टि चाहे हो या न हो अपने से पहले बैठे मित्र ग्रहों को पूरी मदद देंगे यानी वृहस्पति, चन्द्र और उनसे पहले बैठे हुए उनके मित्र (सूर्य, मंगल, बुध) में से जो भी कोई हो, ग्रहों की संबंधित चीज़ें, काम, रिश्तेदार सब को चन्द्र, वृहस्पति की पूरी मदद मिलती होगी। -जब दोनों ग्रह खुद तो कुंडली के 7 से 12 खाने में बैठे हों और उनके मित्र 1 से 6 में कहीं भी हो।

8. वृहस्पति और चन्द्र दोनों ग्रहों का अपना-अपना और शुभ फल होगा, दोस्त ग्रहों को मदद देने की शर्त न होगी चाहे दर्जा दृष्टि हो या न हो। -जब दोनों ग्रह खुद खाना नं० 1 से 6 में और उनके मित्र उनके बाद के 7 से 12 कहीं भी हीं।

खाना नं० 1 :-

चन्द्र और वृहस्पति दोनों के खाना नं० 2 में दिया फल होगा।

खाना नं० 2 :-

बुध, राहु का साथ ही मिलते, दूध ज़हर दो मंदा हो।
बड़ के पेड़ों की तलेर काटे, साथ साली न उम्दा हो।।

उच्च चन्द्र और वृहस्पति का उत्तम मगर साधारण फल के साथ होगा। हज़ारों लाखों के लिए साया और सहारा होगा। ऊपर की आमदन, माता का सुख सागर और साथ, खेती की ज़मीन, जद्दी जायदाद की वृद्धि, ग़ैबी मदद सब का नेक प्रभाव होगा।

खाना नं० 3 :-

खुशहाल
दोबारा धन शानो

भाग्यवान धन का स्वामी खुद तरे भाईयों को तारे जो इकबालवान् हो जाये और उसका घर शौकत से भर जाये।

खाना नं० 4 :-

जन्म से ही धन का चश्मा निकल पड़े, नेक से नेकी में छत्रधारी बढ़ के तनों की तरह अपना कबीला सहायक बना ले। मामूली पानी की नाव उसे बड़े भारी जहाज का काम देगी। चन्द्र का फल वृहस्पति के फल से उत्तम हो। दिल की पूरी शांति हो। दोनों ग्रहों की चीज़ें काम तथा रिश्तेदार सब तरह से उत्तम फल देने वाले हो।

खाना नं० 5 :-

एवज़ दोनों के असर रवि का, नेक बुलंदी देता जो।
अमीर ताजिर हो माल हाजिर का, एहले कलम गुरु होता हो।।

वृहस्पति और चन्द्र के असरों से मिला हुआ अब सूर्य का उत्तम और नेक फल होगा। अगर वो हाजिर माल का व्यापारी और कलम का धनी हो तो दूसरों को भी फायदा हो।

खाना नं० 6 :-

जैसा भी बुध और केतु का टेवे में असर हो वैसा ही वह अब इन ग्रहों के असर में असर मिलाएंगे। अस्पताल, कब्रिस्तान में कुआँ लगाना मंदा प्रभाव न देगा।

खाना नं० 7 :-

मिले दोनों जब इस घर बैठे, ताकत निकम्मी होती हो।
शत्रु ग्रह जब तख्त ये आवे, पाप माता सोयी होती हो।।

दलाली मददगार, व्यापार का संबंध जिससे बहुत फायदा हो।

खाना नं० 8 :-

माया दौलत खुद लाख हज़ारी, भाई-बन्धु मरवाता हो।
चीज़ मामू से शनि, मंगल की, मौत ज़हर भर लाता हो।।

उम्र लम्बी होगी। भाई-बन्धु धन की आशा रखने वाले होंगे जो हर दो नेक और मंदी हालत पैदा करने के लिए बराबर-बराबर होंगे। यानी कोई भाई तो कमांडर की तरह मदद दे और कोई भाई लड़ाई का बहाना हो। मगर उसकी धन-दौलत खुद टेवे वाले के लिए कभी हानि देने वाला न होगा।

खाना नं० 9 :-

पानी की बजाय दूध से पले वृक्ष की तरह नेक भाग्य वाला जिसे बड़ के वृक्ष की तरह माता-पिता का सुख

उसकी धन-दौलत खुद टेवे वाले के लिए कभी हानि देने वाला न होगा।

खाना नं० 9 :-

पानी की बजाय दूध से पले वृक्ष की तरह नेक भाग्य वाला जिसे बड़ के वृक्ष की तरह माता-पिता का सुख सागर पूरा लम्बे समय तक मिला होगा। जब कभी ये दोनों ग्रह वर्षफल में खाना नं० 9 में आये तो दबे या दबाये धन की तरह माया दौलत की लहर दोबारा बढ़ जाये। हर वक्त रौनक, खुशी ही खुशी बढ़ती जाये। चन्द्र की सब चीजें कारोबार, रिश्तेदार नेक फल दें। दिल की पूरी शांति हो। मातृ हिस्से की मदद, 20साल तीर्थ यात्रा और उत्तम फल हो।

खाना नं० 10- खुद बना हुआ पुरुष मगर खुद बना अमीर नहीं होगा यानी अपने अर्थ के लिए किसी की बात भी न सुनेगा बल्कि पिता को भी कह देगा कि मैं खुद ही पैदा हुआ हूँ। अर्थ ये कि वह कम सोचने वाला घंमडी, बेवकूफ होगा, जिसके जिस्म में बीमारियों से खून घट चुका हो। उखड़े दिल का मालिक होगा, अपने भाग्य पर धोखा खा रहा होगा।

उपाय :- नदी में तांबे का पैसा डालते रहना सहायक होगा।

खाना नं० 11 :-

लोगों के आराम के काम (जन साधारण के काम) दूसरों को तारे, मगर अपनी किस्मत (अपने पेट के) मालिक खाना नं० 3 के ग्रह होंगे। अगर खाना नं० 3 खाली हो तो खाना नं० 11 के ग्रह चन्द्र, वृहस्पति सोये हुए गिने जाएंगे। खाना नं० 5 का खाना नं० 11 पर कोई असर न होगा। सोयी हुई हालत में बुध का नेक कर लेना या कन्याओं से आशीर्वाद लेना सहायक होगा।

खाना नं० 12 :- **लड़की जन्म या वक्त हो शादी, माया दौलत घर मंदी हो।**

जाले लगे घर अक्सर मकड़ी, थाली भोजन से खाली हो।
अच्छी हालत की आम निशानी, बेटा होने से होती हो।
बाप, बेटे ग्रह हालत कोई, उम्दा कायम जब अच्छे हो।

चाहे राजा हो मगर धन-दौलत से राजा जनक की तरह पूरा त्यागी होगा।

उपाय :- चाँदी का खाली बर्तन ज़मीन में दबाना शुभ होगा।

मंदी हालत :-

1. बुध का जाती असर मंदा होगा, बेशक घर बैठक (जहाँ कि बुध बैठा हो) के लिहाज से बुध दूसरे ग्रहों की चीजें, कारोबार, रिश्तेदार के संबंध में कैसा ही अच्छा या बुरा असर देने वाला हो। -जब दोनों मुश्तरका टेवे में बुध के बाद बैठे हो।
2. बदबूदार गंदी दवा के सांस और किस्मत की बदनसीबी से चेहरे पर आँसुओं का पानी जम रहा होगा खुद चाहे वो कितना ही हौंसला करने वाला और मेहनत से मुकद्दर का मुकाबला करने वाला हो।
   -जब दोनों मंदे घरों में बैठे हो या जब मंदे हो रहे हों।
3. जब कभी भी शनि या शत्रु ग्रह से संबंधित चीज़ों (जैसे शनि का मकान, शुक्र की शादी, बुध का राग-रंग का सामान) का वक्त आये या लाये या खरीदी जाये या पैदा की जाये, जो अपनी ही गिनी जाये तो माता-पिता पर मौत तक मंदा असर माना गया है। दृष्टि की रुह से वृहस्पति, चन्द्र दोनों ग्रहों से जो ग्रह पहले घरों का हो, उससे संबंधित रिश्तेदार बाद में और जो ग्रह बाद के घरों का हो उससे संबंधित रिश्तेदार पहले मुसीबत में गिरफ्तार या मौत से हार पाएगा।

उपाय :- दोनों ग्रहों ही के असर नेक रखने के लिए केतु की चीज़ें ज़मीन की तह में दबाये या केतु की चीज़ें (आसन स्थापित करें या केतु की चीज़ें दो रंगे पत्थर) हकीक हालदारी आदि उसके गले में या जिस्म पर कायम करें।

-जब वृहस्पति, चन्द्र दोनों अलग-अलग और एक-दूसरे के सामने या एक से दूसरा 7 वें घर में हो।

4. बर्बाद और फोकी उम्मीदों का स्वामी बल्कि नास्तिक होगा जो उस मालिक के खिलाफ भी मंदे दिमागी स्वप्न आम देखता रहेगा।
   -जब शनि निकम्मा या मंदा हो।

खाना नं० 2 :- वृहस्पति, चन्द्र दोनों ही की मंदी हालत होगी। बड़ के वृक्ष को तलीर (छोटे-छोटे काले रंग के जानवर) ही काट देंगे। चन्द्र का दूध बोतल में बंद होगा जिसका स्वाद न होगा अगर फिर भी होगा तो बिच्छू या भिड़ का ज़हर होगा। अब स्त्री की बहन (साली) का साथ रहना नेक प्रभाव न देगा, हर तरफ खराबी ही खड़ी होती जाएगी। -जब राहु या बुध का संबंध हो।

नज़र कमज़ोर और शनि का जाती असर मंदा होगा। बुढ़ापे में मंदा हाल और उम्र का समय अमूमन 90साल मंदा होगा।

-जब दोनों खाना नं० 2 और बुध खाना नं० 6 में हो।

खाना नं० 6 :-

जन कल्याण कार्य या खेती की ज़मीन में कुआँ लगवाना सारे उम्दा असर को बर्बाद कर देगा। जिससे वह खुद टेवे वाला और उस कुएं से फायदा उठाने वाले तबाह हो जाएंगे जब कुएं का संबंध हो।

खाना नं० 7 :-

बचपन में तकलीफ हो और चन्द्र के समय 6, 12, 24 साल की आयु से माता-पिता दोनों दुखिया हो। धन-दौलत शादी (शुक्र) के दिन और लड़की (बुध) के जन्म से घटना शुरू हो जाए।

खाना नं० 8 :- धन की खातिर या उसका धन भाईयों को मारे या मरवाये। माता घर से शनि या मंगल से संबंधित चीज़ें आना या लाना बर्बादी का कारण होगा।

खाना नं० 9 :-

जब कभी लड़की की कीमत या उसका पैसा लेकर खाया जाये या खैरायत और दान पर गुज़ारा करें तो चन्द्र और वृहस्पति दोनों ही का असर बर्बाद, मंदा बल्कि ज़हरीला ही होगा।

खाना नं० 10- माँ-बाप के पास सोने-चाँदी की ईंटे होते हुए भी आखिरी वक्त (जन्म कुंडली के हिसाब या बर्षफल के हिसाब) कुंडली वाले के लिए वह अध्यारे के पत्थर, व्यर्थ और नेक पानी की जगह पानी के बुलबुले की सिर्फ झाग होगी जो कि कोई समुद्र झाग न होगी जो किसी दवाई के काम आ सके। घोड़ी की दुम लम्बी तो सवार को सफ़र जल्दी करने में क्या सहायता। बाप की दाढ़ी लम्बी तो बेटे के लिए क्या खूबसूरती। माता-पिता की सिर्फ दिखलावे की शान होगी। अर्थ ये कि माता-पिता से लेने के संबंध में टेवे वाला दूसरों के हाथों की तरफ देखने वाला ही साबित होगा और मंदी किस्मत का स्वामी होगा।

खाना नं० 11 :- चन्द्र, वृहस्पति दोनों ही बेबुनियाद बल्कि बर्बाद गिने जाएंगे वृहस्पति की उम्र 16 साल, चन्द्र की 12 साल की उम्र में खाना नं० 3 के संबंधित रिश्तेदार की बजाय टेवे वाले के माता-पिता बर्बाद, तबाह या दुखिया होंगे। शत्रु ग्रहों की चीज़ें बुध- लड़की, बहन, बुआ, फूफी, मौसी; शुक्र- गाय, लक्ष्मी, स्त्री; राहु- नाना-नानी, भंगी की पालना या उनको दान देना सहायक होगा।

-जब बुध, शुक्र या राहु खाना नं० 3 में हो।

खाना नं० 12 :- शादी के दिन शुक्र का समय, लड़की की पैदाइश, बुध, शुक्र का समय, जायदाद का फल मध्यम, धन-दौलत बर्बाद। शानदार मकानों में बेहद अंधेरा और मकड़ी के जाले आम होंगे। सोने-चाँदी के बर्तनों उम्दा भोजन से भरे रहने की जगह कलई के टूटे बर्तन सड़े हुए फूलों से भरे हुए हो। धन में खालिस चाँदी के अम्बारों की जगह कलई और चूने की राख सफेद जली हुई के कण बिखर जाये।

****

वृहस्पति और शुक्र

(बूर के लड्डू दिखावे का धन)

असर गुरु का पहले गिनते, पीछे शुक्र का होता हो।
स्वभाव जाती बुध किस्मत ले, खत्म जन्म जब 1 पिछला हो।
भला शुक्र हो इश्क में उम्दा, रिज़क मंदा नहीं करता जो।
कामदेवी जब कीड़ा बनता, असर दोनों का मंदा हो।
तरफ 12 त्रिलोकी होते, गुरु जगत् में जन्म हुआ।
माया हवा जब मिलने लगी तो, पिछला जन्म अब खत्म हुआ।

खाना नं० में हो	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
उम्र में	4	5	6	1	2	3	8	11	10	9	12	7
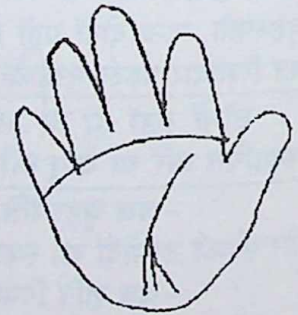
दोनों मुश्तरका में पहले वृहस्पति फिर शुक्र का प्रभाव (भला या बुरा जैसा भी टेवे के अनुसार हो) शुरू होना गिनते है और 33 साल की उम्र तक मुश्तरका लेंगे असर की मिलावट में अगर वृ० का एक हिस्सा हो तो शुक का 3-3/4 गुना प्रभाव शामिल होगा, असर की रफ्तार में अगर शुक्र दो गुना हो तो वृ० आधी रफ्तार पर चलेगा।

नेक हालत :-

चाहे वृ० का असर मध्यम मगर शुक्र का असर अच्छा। वह पुरुष इश्क में कामयाब होगा मसनुई शनि (केतु स्वभाव) यानी अच्छा सहायक का असर या दु:ख, बीमारी से सदा बचाव रहेगा, स्त्रियों से सदा मदद मिलती रहे या वो मदद करती रहे।

खाना नं० 1 :-

काग़ रेखा फल तख्त पे होता, इज़्ज़त जंगल में पाता हो।
बाप, स्त्री से जब कोई मरता, लेखा रोशन कर देता हो।।

जंगल में मान होगा और गृहस्थ में औरत या बाप दोनों में से एक ही बाकी रहने पर शुभ प्रभाव होगा।

खाना नं० 2 :-

सोने की जगह बेशक मिट्टी तो होगी मगर वो मिट्टी आम मिट्टी से कीमती होगी। मिट्टी के कामों से सोना नसीब हो।

खाना नं० 3 :-

स्वयं प्रसन्न, भाग्यवान। उसका धन भाईयों को तारे। उसकी स्त्री एक सहायक भाई की तरह सहायक पुरुष का काम दे।

खाना नं० 4 :-

औरत उम्र औलाद की गिनती, टुकड़े मांगे रोटी होती हो।
बच्चा औरत जभी हो एक देती, बदल [1] ज़माना जाती हो।।

1. मर जाए या पति बदल जाए।

वृ० खाना नं० 4 का नेक फल जब तक औरतों की मंडी अधिक तादाद में इकट्ठे करते जाने की आदत का स्वामी न हो।

खाना नं० 5 :-

इल्म से खूब धन कमाये बल्कि इल्म और औलाद द्वारा हरदम बढ़े।

खाना नं० 6 :-

औरत के बालों में शुद्ध सोने का कायम रहना संतान की बरकत व नसीब में सहायता देगा।

खाना नं० 7 :-

बुध की संबंधित चीज़ें, काम, रिश्तेदार का साथ या नेक संबंध रहे तो धन कम या गुम होने पर भी तंग हालत न होगी। दत्तक पुत्र सुख पाये। किस्मत किसी तरह भी बेशक मंदी हो जाये फिर भी दोबारा खुशहाल बस जायेगा।

खाना नं० 8 :-

धन-दौलत का असर न अच्छा, बाकी सब असर अच्छा हो।
असर गुरु घर 2 का देगा, शुक्र को घर 8 का हो।

शुक्र का प्रभाव वही जो खाना नं० 8 में दिया हो, जो सिवाय धन-दौलत के बाकी सब नेक अर्थो का होगा। धन-दौलत के लिए वही असर जो वृ० खाना नं० 2 का है।

खाना नं० 9 :-

मिलता असर हो हरदम अच्छा, शुक्र, शनि से ऊपर हो।
काम हज़ारों देगी दुनिया, गैस ज़हरीली बेशक हो।

दोनों का खाना नं० 9 का जुदा-जुदा दिया हुआ फल, मगर फिर भी अच्छा होगा। दुनिया का पूरा आराम तीर्थ यात्रा 20साल उत्तम।

खाना नं० 10-

चालचलन चाहे सेहत मंदी, मंदी दौलत न होती हो।
इश्क शुक्र माशूक खुदाई, उड़ती मिट्टी कुल घर की हो।।
आता है याद मुझको, गुज़रा हुआ ज़माना।
क्या शान मिली थी हमको, क्या ठाठ था शहाना।।

खुद कमाया धन-दौलत खराब न होगा। मगर पैतृक धन सोने से मिट्टी ही होगा, खासकर जब धर्म के खिलाफ हो। लक्ष्मी हवा की तरह आये और हवा की तरह चली जाये।

खाना नं० 11 :-

गुरु, शुक्र फल अपनों अपना, इश्क नसीहत मिलता हो।

सोना गुरु जो दूजा बनता, मिट्टी ज़र्द अब होता हो।।

खाना नं० 12 :- तमाम गृहस्थी आराम तथा रुहानी सहूलते मिलेगी।

मंदी हालत :-

कामदेव की ज्यादती या इश्क में हर तरफ ध्यान रखना किस्मत के सोने को मिट्टी कर देगा। चाहे धन ऐसा खराब न हो (सोना मिट्टी में गिरने से क्या खराब होगा) मगर मंदे चालचलन से शारीरिक त्रुटियां होंगी। औलाद के तकाजे, खराबियों तथा लावल्दी तक हो सकती या जन्म लेने वक्त दुःख और मंदे नतीजे होंगे (तर्जनी और अंगूठे मिले हुए)।

खाना नं० 1 :-

काग़ रेखा (कौवे की खुराक का भागी) के मंदे हाल वाले साधु की तरह निर्धन किस्मत होगी। गृहस्थ बर्बाद।

खाना नं० 2 :-

मर्द की तरफ से नर औलाद के विघ्न, औलाद की पैदाइश में रुकावट या दूसरे झगड़े होंगे। सोने के कामों से राख नसीब होगी, विशेषकर जब उसका घर 2 बाकी बचने (कुत्ते की तरह का) की हैसियत का हो।

खाना नं० 3 :-

नसीबे की बुलन्दी में आम लोगों की तरफ से उसकी खुशामद शुरू होगी जिसमें उसकी शक्ति और भाग्य की हर तरफ हार, हानि होने लगेगी।

खाना नं० 4 :-

हर स्त्री एक बच्चा बतौर नमूना देगी और चल बसे। हर घर से रोटी के टुकड़े इकट्ठे किये की तरह संतान का हाल होगा।

खाना नं० 5 :-

गैर मगर शादीशुदा औरत के मिलाप से धन हानि और धन चोरी की बहुत घटनाएँ देखे।

खाना नं० 6 :-

नर संतान (केतु की चीज़ें, काम, संबंधी) न हो या ज़िंदा न रहे, अगर रहे तो मंद किस्मत रहे, खुद भी तादाद सदस्य के लिए मंद भाग्य ही होगा। खासकर जब अपनी स्त्री से नफरत करने वाला या उसकी बेकदरी करने वाला हो। पाँव की तर्जनी, अँगूठा समान और मिले हुए।

खाना नं० 7 :-

चाहे घर के सब साथी ऐशो आराम ले मगर वो खुद बेआराम ही होगा। वृ० का खाना नं० 7 का दिया फल आम होगा। इश्क में शमा के परवाना होने की या जनमुरीदी में दीवाना होने की आदत दुःखी होने का कारण होगी। नर संतान की पैदाइश में औरत की तरफ से शुक्र भी जहरीला ही असर देगा। यज्ञ में अपनी ही औलाद की आहुति दे देगा। हर काम में सोने की जगह मिट्टी बटा लाएगा या वैसे ही मिट्टी बट कर आ जाएगी।

लेकिन जब वृ० मंदा होगा तो खस्सी सांड की तरह संतान से रहित हो और दत्तक पुत्र आदि से भी सुख न पाये। जोड़ भाई जोड़ खाएंगे कोई और का हिसाब होगा। –जब मंगल खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 9 :-

स्त्री भाग्य में काग़ रेखा (गरीबी का साथ) का मंदा फल देगा।

खाना नं० 10:-

13 से 15 वर्ष की आयु में गंदी बल्कि मामूली सी औरत भी सोने को मिट्टी कर दे। चालचलन जिस्मानी नुक्स होंगे। पराई स्त्री बर्बाद करेगी। संतान और माता-पिता का दुःख आम होगा। भाईयों से दुःखी। मगर माता पर टेवे वाले का कोई दुःख न होगा, फकीरी में ऐसा आदमी कोई कमाल का नहीं होगा। बल्कि हरसमय यही कहता होगा :-

आता है याद मुझको, गुज़रा हुआ ज़माना।
क्या शान थी हमारी , घर घाट था सुहाना।।

हर गुजरे हुए सांस से आने वाले सांस और भी गरीबी लाता होगा, क्योंकि वह दूसरों की मौत खुद ही मरने वाला होगा।

खाना नं० 11 :- किस्मत में सोने की जगह ज़र्द रंग मिट्टी उड़ती होगी वही असर जो शुक्र खाना नं० 11 यानी अगर खाना नं० 3 खाली हो तो वीर्यपात, स्वप्न दोष तथा हाथ से शरीर को तबाह करने का आदी होगा जो ज़रूरी नहीं कि ऐसा बदकार ज़रूरी हो। गुप्तांग का ढीला हो जाना ज़रूर हो, विषय की इच्छा बिल्कुल ही न हो या किसी और कारण से स्त्रियों के हवाई ख्यालों से बढ़ते-बढ़ते नामर्दी तक नौबत गिनते हैं। **उपाय के लिए शुक्र खाना नं० 11 में देखें।**

खाना नं० 12 :-

सट्टे का व्यापार मंदा असर देगा।

वृहस्पति और मंगल

(श्रेष्ट गृहस्थी, धन)

नेक मंगल हो किरणें सोने की, जगत् भण्डारी होता हो।
आग़ मंगल बद जलता पराई, केतु रद्दी बुध मंदा हो।
घर दूजे ना पाँचवे बैठे, लेख राजा का होता हो।
फकीर कामिल घर बाकी गिनते, सुखिया गृहस्थी फलता जो।
लम्बी उम्र का मालिक गिनते, शनि दोनों को देखता जो।
असर गुरु चाहे मंदा लेते, वापस कब्र से आता हो।
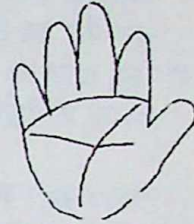
घर बैठक के लिहाज से जब मंगल उत्तम हो तो खानदानी सदस्य और उनकी हालत और गुज़रता हुआ समय वर्तमान सब उत्तम होंगे। दोनों ग्रह टेवे वाले की 72 साल की उम्र तक इकट्ठे होंगे। दोनों मुश्तरका में अगर वृ० का नेक हिस्सा 1 हो तो मंगल का नेक हिस्सा 2 गुना होगा। मिले-मिलाये सोने की तरह किस्मत का हाल होगा। टेवे वाले के अपने संबंध में दोनों ग्रहों का असर उसके अपने हौंसले और अंदरुनी दिली शक्ति की स्थिरता से संबंधित होगा।

नेक हालत :-

मंगल नेक हो तो वो सबका न्याय करने वाला एक को दूसरे पर ज्यादती करते न देखेगा। सरदार हाकित तख्त का स्वामी या परमात्मा का प्यारा ब्रह्मज्ञानी होगा। हर समय, परमात्मा उनकी मदद करता हो जो अपनी मदद खुद करते हैं, का हामी होगा। अधिक से अधिक हर आठवें साल के अंदर-अदर संतान होती जाये। हाथियों, दुश्मन के सिर, पर अंकुश की तरह छाया रहेगा, कोई व्यक्ति उसके विरुद्ध नहीं होगा। धन के लिए लम्बी आयु रेखा होगी यानी कब्र से वापस तक भी आ सकता है। -जब दोनों शनि देखें।

हस्त रेखा :- किस्मत रेखा से मंगल नेक को या बुध को रेखा हो।

खाना नं० 1 :-

राज हुकूमत माया बढ़ता, अमीर, अमीरां होता हो।
बुध वज़ीर हो जब कभी बनता, नष्ट दोनों को करता हो।।

बड़ा ही अमीर होगा अंकुश, कान का दायरा और कुण्डल तीनों ही निशानों का (राहु-केतु) उत्तम प्रभाव होगा।
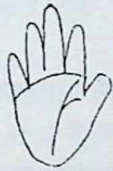
खाना नं० 2 :-

स्त्री खानदान के गृहस्थियों का संबंध नेक होगा। गृहस्थी साथी दुनियादारी संबंधित, उसकी आवाज़ पर सिर कटा देंगे और उसके पसीने की जगह खून बहा दें। दिमागी़ लियाकत से धन-दौलत की पूरी प्राप्ति लाभ और आय हो। -जब बुध खाना नं० 6 में हो।

खाना नं० 3 :-

पूजा पाठ लासानी होता, रक्षा विरासत होती हो।
बर्बाद पैसा न धेला करता, शर्त माया न जाती हो।।

बुजुर्गों के घर की पूरी हिफाज़त करेगा और कायम रखेगा, मगर उसमें अपना और धन मिलाने की शर्त न होगी, मगर पूजा पाठ में बेजोड़ होगा।

खाना नं० 4 :- मर्दो की तादाद में कमी न होगी मगर उसके गुज़ारे के लिए धन-दौलत की शर्त भी न होगी।

खाना नं० 5 :-

खैरायत लेने का हो जब आदी, कोढ़ सोने को होता हो।
मान सरोवर माया उसकी, उल्लू सभी पर बोलता हो।

संतान के जन्म के साथ धन का चमकता चश्मा गर्म इलाकों के लिए ठंडी हवा की तरह बह निकलेगा जो 28 साल की उम्र तक बढ़ेगा और दान से हरदम बढ़ेगा। खुद प्रसन्नता रौनक होगी।

खाना नं० 6 :-

खुद ही बड़ा भाई होगा और नेक बाप पर बुरा प्रभाव न होगा। अब बुध खाना नं० 2 का भी फल नेक होगा जो वृ० खाना नं० 6 पर भी बुरा प्रभाव न देगा

खाना नं० 8 :-

असर दोनों का अपना-अपना,खबीस कबीले भरता हो।
बुध बैठे जब टेवे मंदा, मंगल गुरु दो मरता हो।।

दोनों का जुदा-जुदा खाना नं० 8 का असर लेंगे।

खाना नं० 9 :- जातक को गृहस्थ परिवार और धन-दौलत में हर तरह से उत्तम प्रभाव होगा।

खाना नं० 10-

साधु (वृ०) करेगा दुनिया की चोरी, माल मुफ़्त का खाता हो।
ग्रह 4 न 6 वें कोई, लेख नसीबा खोटा हो।
ग्रह जैसे हो 4, 6 के, असर वैसा ही होता हो।
घर 4, 6 खाली होवे, खून बीमारी जलता हो।

खाना नं० 4, 6 के ग्रहों की हालत से किस्मत का फैसला होगा। अगर खाना नं० 4, 6 खाली हो तो सोने की जगह किस्मत में मुलम्मा ही होगा। बहरहाल दुनिया की चोरी से मालामाल होगा।

खाना नं० 11 :-

भाई और पिता के बैठे हालत शहाना होगी। -मंगल, वृहस्पति कायम रखना सब तरह से सहायक होगा।

खाना नं० 12 :-

हर प्रकार से उत्तम और बड़ा परिवार होगा। जिसे आशीर्वाद दे उसे तार दे और स्वयं भी मीठी नींद पाने वाले भाग्य का स्वामी होगा।

मंदी हालत :-

मंगल बद हो, ढाल की तरह बदबख्त, अपने ही भाई-बन्धु की बीमारी 31 साल तक और नुक्सान 5 साल की उम्र तक विरोधी पुरुष, रिश्तेदारों की मौतें और मातम आम होंगी। शनि के बुरे समय में वृ० किस्मत का फैसला करेगा, वृ० के बुरे असर में शनि भाग्य का फैसला करेगा।

खाना नं० 2 :-

मंदा फल जब मंगल बद का संबंध हो जाये।

हस्त रेखा :- वृ० की भाग्य रेखा का मंगल बद से संबंध।

खाना नं० 5 :-

दान लेने से सोने को कोढ़ होने की तरह गुर्राने वाले शेर की भूख और सांस बंद हो जाने की तरह किस्मत की मंदी हवा शरीर के खून को कम करने लगेगी।

खाना नं० 6 :- बुध और केतु दोनों ग्रहों की चीज़ें रिश्तेदार, कारोबार संतान पर खासकर मंदा असर लेंगे।

खाना नं० 7 :- अच्छी आय होते हुए भी कर्ज़ई होगा। भाग्य रेखा हथेली में खाना नं० 3 में अलफ की तरह (सीधी) हो।

खाना नं० 8 :- दोनों ग्रहों का जब कभी मंदा असर हो तो वो कुंडली वाले के अपने ही खानदान पर चलता होगा।

खाना नं० 11 :-

वृहस्पति और मंगल की चीज़ें, रिश्तेदार, काम हर दो ग्रह से संबंधित के बिना भाग्य की हर तरफ गंदगी होगी।

वृहस्पति और बुध 1

बुध कायम हो गुरु चाहे उत्तम, भला शनि जब होता हो।
नेक चन्द्र, रवि होता जिस दम, लेख असर सब उम्दा हो।।
वर्ना वही हो, आलखी (बुध फकीर)।
गुड़ रहे (सूर्य) रिज़क, न हो मक्खी (शनि, मायूस)

गुरु घरों 2 या साथी बैठा, धर्मी बेटा बुध होता हो।
बुध, गुरु को जिस दम देखा, गुरु कैदी हो जाता हो।
3, 5, 9, 12 बैठा, पहले चन्द्र से अकेला हो।
ज़हर कातिल बुध हरदम होगा, 50साल तक मंदा हो।
शनि, रवि से कोई टेवे, 5 दूजे, 9-12 हो।
गुरु आवे घर शनि, रवि के, कैद रिहाई पाता हो।
कैद खत्म हो, गुरु की दुनिया, असर भला हर दो का हो।
सोना (वृ०) कलई (बुध) से कोढ़ी होता, उपदेश भला गुरु देता हो।
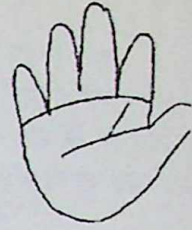
1.खाली बुध होगा, काबिल उपाय, बुध का ही उपाय होगा।

2.बुध, वृहस्पति इकट्ठे हों तो पिता के लिए निम्नलिखित हाल होगा। खाना नं० 2 में सोने को राख कर दे, खाना नं० 3 में बतौर अक्ल ज्ञान मगर मालीधन में निर्धन, खाना नं० 9 में सोने को कोढ़, सोना बर्बाद होगा, खाना नं० 11 आमदन के संबंध में यह ग्रह उल्लू का पट्ठा मंदा बर्बाद करने वाला होगा। वृ० का असर अगर एक हिस्सा हो तो बुध का दुगुना होगा। मुश्तरका हालत में धन-दौलत खराब करे 8 से 25 साल तक, माता-पिता को दुःखी करे 17 से 25 साल तक। वृ० के साथ जब वृ० के असर में बुध का असर दृष्टि के हिसाब से आकर मिल रहा हो तो वृ० का ही नाश होगा मगर

1. जब वृ० कुंडली के पहले घरों में यानी 1-6 और बुध कुंडली के बाद के घरों 7-12 में हो।

-तो वृ० का 34 साल की उम्र तक अच्छा फल, बुध का 35 वें साल से बुरा असर शुरू होगा।

2. जब ऊपर से उलट हो। -तो बुध का 34 साल की उम्र तक अच्छा और 35 वें साल से बुध का निकम्मा फल शुरू होगा। वृ० का 34 साल तक मंदा फल और 35 वें साल से वृ० का अच्छा फल शुरू होगा।

वृ० और बुध मुश्तरका होने के समय वृ० का असर मंदा ही लेंगे बल्कि वृ० को बुध फौरन अपने दायरे में बांध लेगा, ऐसी हालत में वृ० का बिगड़ा हुआ प्रभाव नीचे लिखी हालत पैदा होने पर ठीक होगा।

1. जब वृ० अपनी चाल के हिसाब से वर्षफल के हिसाब यानि शनि के घरों खाना नं० 1011 या सूर्य के घर खाना नं० 5 में आ निकले।

2. जब शनि/सूर्य में से कोई भी बर्षफल के हिसाब वृ० के घरों 2-5-9-12 में आ निकले।

3. शनि खाना नं० 5 में आ निकले और सूर्य खाना नं० 2-5-9-12 में हो। ऊपर कही गई इन हालतों के समय अगर सूर्य, चन्द्र या शनि में से कोई भी नेक हो **तो वृ० का प्रभाव नेक होगा।** धन-दौलत के लिए कुछ भरोसा और उम्मीद उत्तम होगी, वरना फोकी तबाह करने वाली कहानियों में रात गुज़ारता होगा, खाना नं० 2-4 में बुध.अकेला या वृहस्पति, बुध इकट्ठे होने के समय बुध दुश्मनों की बजाय सदा अच्छा प्रभाव देगा, खासकर धन की हालत में कभी मंदा असर न देगा।

नेक हालत :-

हाथ व दिमाग़ के कामों में उत्तम प्रभाव, मगर धन के लिए कभी शाह कभी मलंग। अपनी ही अक्ल से बढ़ता फूलता होगा।

क्याफा :- दायरे के अंदर दूसरा दायरा। चक्र का असर नाखून वाले हिस्से पर (पोरी) पूरा असर। दायीं हथेली पर शुभ और बायीं हथेली पर खराब असर हो।

खाना नं० 1 :- राजा अमीर या ऑफिसर होगा। 1 चक्र का असर होगा।

खाना नं० 2 :- ब्रह्मज्ञानी, धन और उपदेश उत्तम होगा। 3 चक्र का प्रभाव होगा।

खाना नं० 3 :- लेखशाकर एक तरफा तबीयत, शुक्र मंदा खुद होता हो। माया दौलत और साथ हुकूमत, शूरवीर वो संसार में हो। 7 चक्र का असर होगा। क्याफा :- तर्जनी की जड़ से वृ० के बुर्ज को दो सीधी खड़ी लकीरें।

खाना नं० 4 :-

राजयोग बुध, गुरु हो ऊँचा, हर दो शुभ होता हो।
काम कायर जब पापी करता, खुद आत्महत्या कर मरता हो।।

पितृ रेखा आयु रेखा का उत्तम फल, मंगल का असर बुरा न होगा। राजयोग होगा, 2 चक्र का असर होगा।

खाना नं० 5 :- प्रसन्न भाग्यवान शर्त ये कि कोई लड़का वीरवार को पैदा हो चुका हो, 5 चक्कर का असर होगा।

खाना नं० 6 :- पूजा-पाठी, 6 चक्र का प्रभाव हो।

क्याफा :- सिर रेखा से रेखा वृ० की तरफ जाती हो।

खाना नं० 7 :-

बुध लड़की न इस घर मंदा, लड़के भला न होता हो।
सोना गुरु उस घर से होता, दत्तकने सुखी न रहता हो।।

ब्रह्मज्ञानी लड़की के टेवे के समय बुध, वृहस्पति खाना नं० 7 शुभ होगा, 4 चक्र का असर होगा।

खाना नं० 8 :- जब खाना नं० 2 खाली हो तो बुध कभी मंदा न होगा, 8 चक्र का असर होगा।

खाना नं० 10:-

नीचे कर्म चाहे गुरु का हरदम, बुध, शनि खुद बनता हो।
मिले-मिलाये हर दो उत्तम, माया कबीला सुखिया हो।।

प्रसन्न अब वृ० की हवा मंदे चक्र से दूर होगी, 10चक्कर का असर होगा।

खाना नं० 11 :-

जब उम्दा हो और वर्षफल के हिसाब दोनों ग्रह खाना नं० 1 में आने के दिन यानी 11-23-36 साल की आयु से धन ही धन कर देगा। धनी, विद्वान, शर्मसार, नेक नामी और सुखी गृहस्थी होगा।

खाना नं० 12 :-

स्वयं अपने लिए नेक भाग्य, लम्बी आयु। व्यापारी संबंध में मामूली व्यापारी 12 चक्कर का असर होगा।

मंदी हालत :-

वृ० (पिता या दादा, स्त्री का पिता (ससुर)) का सांस रूकता या बाप, दादे या ससुर को दमे की तकलीफ हो। टेवे वाला स्वयं बोलने में शर्म महसूस करने लगे। माता-पिता का सुख न देख सके, यतीम हो जाये (पितृहीन)। अपनी किस्मत की बजाय दूसरों की किस्मत देखने लग जाये। अपनी ही बेड़ी डूब मल्लाह हो। पिता का धन-दौलत बर्बाद। कबीले का माली बोझ उसके जिम्मे होगा। सोना, इमारत, बेइज्जती, कष्ट और फर्जी उम्मीदों के भी मंदे नतीजे होंगे। अपनी बेवकूफियों से अपना समय खराब किया जो कि विशेषकर जवानी का हो।

खाना नं० 1 :- गरीबी का मारा बेवकूफ साधु।

खाना नं० 3 :- शुक्र मंदा होगा।

खाना नं० 4 :- कायरता, बर्बादी और खुदकशी तक ले जाएगा। पाप से मंदे काम आत्महत्या का कारण होंगे।

खाना नं० 6 :- जातक अय्याश होगा।

खाना नं० 7 :-

लड़के के टेवे के समय बुध का असर मंदा होगा। धन-दौलत के लिए ऐसा लड़का मनहूस होगा। संतान न होगी, दुःखी हो, मुतबन्ने रखेगा और वह भी न रहेंगे अगर रहेंगे तो भी न के बराबर, लाखोपति होते हुए भी मुसीबत देखे, अक्ल की कोई पेश न आये। कभी शाह कभी मलंग, कभी खुशहाल कभी तंग। लड़की के टेवे में खाना नं० 7 के समय मुबारक फल हो।

हस्त रेखा :- वृ० के सीधे खत संतान होंगे जब बुध के बुर्ज पर हो और शादी रेखा को काटे।

खाना नं० 8 :-

सदा बीमारी, चाँदी की तार (खांड का बर्तन मिट्टी में जब तक न दबाया जाये) नाक में सिर्फ 96 घंटे तक डालने से मौत से बचाव होगा। 16 से 19/22 साल की उम्र में किस्मत में मंदे तूफान। हर काम में उल्टा चक्कर और किस्मत का मुकाबला करना पड़ेगा।

खाना नं० 9 :- गृहस्थ बर्बाद, बल्कि मनहूस। कम आयु वाला (जब बुध मंदा हो)। अकेले बुध में संतान शादी दी हुई शर्तों के मुताबिक देखें।

क्याफा :- वृ० के सीधे खत राशि खाना नं० 9 में आकर शादी रेखा को बुध के पर्वत पर काटे।

वृहस्पति और शनि :-

(संन्यासी फकीर की गाथा जिसका भेद न खुल सके)

गुरु बारिश की हवा जो बनता, पहाड़ शनि बन बैठता हो।
दोनों इकट्ठे वर्षा हो बरसाती, समुद्र (चन्द्र) रेगिस्तान (बुध) नहीं देखता हो।

फकीर झोली धन रेखा गिनते, 3-6-9-7 जो।
माया दौलत दिन शादी बढ़ते, बैठे तख्त पर जिस दिन वो।
शुक्र देखे जब दोनों बैठा, पहाड़ माया धन मिट्टी हो।
नज़र केतु जब दो पर करता, संतान छोटी उम्र में मरती हो।

ॐ श्री गणेशाय नमः सबके पूजने की जगह होगी। किस्मत के संबंध में फकीर की झोली जिसके अन्दर के संबंध में बुरा या भला आरम्भ या आखिर जानना मामूली बात न होगी। भाग्य का फैसला खाना नं० 11 के ग्रह करेंगे। खाना नं० 11 खाली हो तो शनि की अपनी हालत का फैसला प्रबल होगा। दोनों मुश्तरका टेवे वाले की 34 साल की उम्र तक पिता की उम्र के लिए और 43 साल धन के लिए इकट्ठे गिने जाएंगे। इस मिलावट में अगर शनि का 4 हिस्सा तो वृहस्पति के 5 हिस्से होंगे। टेवे वाले के अपने संबंध में दोनों ग्रहों का असर उसके अपने विचारों की शक्ति से संबंधित होगा।

1. ऐसा व्यक्ति दूसरों को लोहे के लिए पारस का काम देगा। उनको धनी बना देगा, स्वयं अपने लिए कितना ही मंदा हों जांये।
   -जब शनि मंदे घरों में और वृहस्पति उत्तम घरों में हो।
2. लोहे की तलवार तमाम संसार की मंदी हवा (मुसीबतों) को काटती हुई चली जाएगी।
   -जब इकट्ठे बैठे होने के समय वृ० मंदा और शनि कायम हो।
3. जब दोनों मुश्तरका के वक्त सूर्य खाना नं० 1 में आ जाये तो-

अ) जब शनि, वृहस्पति दोनों उम्दा हो तो उत्तम नतीजे होंगे।
ब) जब शनि, वृहस्पति नीच या मंदे घरों के हों तो राजदरबार का कायम हुआ धन और जिस्म का कोई न कोई अंग दोनों बर्बाद हो।
स) शनि उत्तम मगर वृ० मंदी हालत का हो तो राजदरबार में कमाया धन बेशक बर्बाद मगर अंग जाने की शर्त नहीं।
द) जब वृ० उत्तम और शनि नीच तो शरीर का अंग ज़रूर जाये मगर धन बर्बाद होने की शर्त नहीं।

4. वृहस्पति, शनि मुश्तरका को देखने वाले घर ग्रह जगाएंगे और किस्मत के शुरू होने का उस ग्रह की उम्र का साल होगा जो ग्रह कि उनको देखता या जगाता हो यानी सूर्य 2022, चन्द्र 24, मंगल 28 आदि।

नेक हालत :-

1. जब टेवे वाला सबके मालिक से सिर्फ अपने भाग्य का हिसाब मांगने वाला साबिर हो तथा शुक्र करने वाला हो तो शनि की माया दोनों जहानों के स्वामी (वृहस्पति) गुरु के पाँव की दासी होगी। ऐसी हालत में दोनों ग्रहों में चाहे कोई नीच घर यानी दोनों मुश्तरका खाना नं० 1 जहां नीच शनि हो या खाना नं० 10जहां वृहस्पति नीच है का हो जाये, दोनों ही का फल उत्तम होगा। व्यक्ति में सोच-विचार की शक्ति कमाल की होगी। जीवन बढ़ने की शक्ति, स्वाभिमान वाला होगा मगर हसद (ईर्ष्या) से बरी होगा।

क्याफा :- सिदफ (कान) की शक्ल, दूसरी लकीरों से बना दायरा। दोनों हाथ की अंगुलियों की पोरियों को इकट्ठा लेकर गिनती गिनेगें नाखून वाली पोरी पर पूरा प्रभाव। दाएँ हाथ की हथेली पर मध्यम और बाएँ हाथ की हथेली पर खराब होगा।

2. ऐसे व्यक्ति का धन मिट्टी के पहाड़ जैसा होगा। दिखलावा ज़्यादा कीमत कम। ऐसा धन उसके अपने खानदान पिता, दादा की ओर का हिस्सा और औरत के काम आये। शादी के दिन से ऐसा धन बढ़ेगा। -जब दोनों को शुक्र देखता हो।

खाना नं० 1 :- साधु या गुरु मगर गरीब।

खाना नं० 2 :-

विद्वान होगा जिसकी नींव और फैसला शनि की हालत पर होगा। इल्म की कमीबेशी पर भाग्य की चमक या स्याही या उस व्यक्ति की नेकी बदी की कोई शर्त न होगी। स्वास्थ्य लाभ करने वाले पहाड़ की तरह दोनों मुश्तरका से उच्च चन्द्र उत्तम और शुभ फल का होगा। गलवा प्यार वियोग न होगा बल्कि असली (हकीकी) लगन होगी।

खाना नं० 3 :- दर्जा औसत का धनी, आराम बुढ़ापे पाता हो।
उम्र शनि, गुरु माता-पिता की, मिट्टी दौलत ज़र उड़ता हो।।

धनी मगर मध्यम दर्जे का जीवन बुढ़ापे में आराम पाये।

खाना नं० 4 :- समय की प्रसिद्धि वाला होगा। साँप प्रायः लोगों को मारे मगर अब स्वयं साँप मारने के बजाय तार देगा। यानी अगर इसके साँप लड़ जाये तो अधरंग भी ठीक हो जाये और नाकारा शरीर मज़बूत और काम का हो जाये।

खाना नं० 5 :-

साधारण भाग्य जैसा कि बाकी ग्रहों से जाहिर होगा। बड़ा मान पाये मगर सूर्य के नेक प्रभाव में खराबी हो जाये। अमूमन धर्म-कर्म आपस में झगड़े का कारण होगा या सरकारी संबंध (सूर्य) के काम झगड़े की बुनियाद होंगे। अदालती मुकद्दमें दीवानी या

अपने से बड़े ऑफिसरों या उस समय राज अधिकारी से चाहे हानि हो मगर फैसला हक में होगा, जब तक ऐसा व्यक्ति शनि की तबीयत (चालाकी, मक्कारी) और शनि का भोजन (शराब, कवाब) जनाकारी का आदी न हो।

खाना नं० 6 :- स्त्री सुख पूरा हो (शनि कायम अगर वृहस्पति चुप) यानी खाना नं० 2 में राहु या केतु हो।

क्याफा :- पैर की तर्जनी मध्यमा से थोड़ी छोटी हो तो शनि कायम और वृहस्पति मंदा गिनेगें।

खाना नं० 7 :-

चन्द्र, शुक्र या मंगल उत्तम, उत्तम रेखा मच्छ होता हो।
गरीब पाये धन-दौलत दुनिया,अमीर तख्त ज़र पाता हो।
नष्ट मंदा शनि तीन दजोही, उल्टी रेखा मच्छ होती हो।
बुध राजा चाहे तीन से कोई, नष्टी शुरू आ होती हो।

शनि की घटनाएँ (कारोबार या रिश्तेदारी संबंध या चीज़ें जैसे नया मकान जायदाद आदि) सब नेक फल देंगे, जिनके खर्चने पर धन और बढ़ेगा और बरकत देगा। ऐसा व्यक्ति नेक भला, भले काम करने वाला होगा।

जब दोनों तो बरकत बढ़ने वाली अमीर को तख्त वाला अधिक संतान) वृ० जो पानी और खुश्की सांस लेता रहे या पानी लौह लंगर सवाया होगी दूसरे उसकी

खाना नं० 7 में और चन्द्र या शुक्र या मंगल कायम हो मच्छ रेखा का असर होगा। मच्छ रेखा गरीब को धनी, बनाये। शनि की चीज़ मछली की तरह संतान (बहुत की चीज़ में मेंढक का सांस और शनि की चीज़ आँख में देखता रहे, सब तरफ से बंद की हुई मिट्टी में भी और खुश्की दोनों में साँस ले सके। परिवार बड़ा होगा। होगा। प्रथम तो वो 9 भाई 2 बहने या 7 भाई 3 बहने शादी 16-25 के बीच होगी संतान जल्दी-जल्दी पैदा होगी, अनाज पैदा करने वाले और अनाज खाने वाले कीड़ों की तरह बढ़ेगी, आदमियों की इतनी बरकत होगी कि अगर अपने घर के साथी उपस्थित न हो तो रोटी खाने वाले अतिथि ही आ जाये और शनि का उत्तम असर होगा, शुक्र कायम से स्त्री जाति से संबंध बढ़े और अपनत्व खुदमुख्तारी से भी बढ़े।

यदि चन्द्र कायम हो तो माता की तरफ से बढ़े। अपने भाई-बन्धु सब मददगार होंगे और चन्द्र का पूरा उत्तम फल होगा। मगर 25 साल की आयु के बाद अपनी औलाद के जन्म बहुत जल्दी-जल्दी न होंगे। माता की उम्र लम्बी होगी और मंगल कायम (खासकर मंगल जब 6 से 12 में कायम या उच्च बैठा होगा) के समय चन्द्र या शुक्र का बुरा असन न होगा। धनी होगा मगर लोगों का माल ज़बरदस्ती इकट्ठा करके धनी बना होगा जिसे हम दुष्ट भाग्यवान भी कह सकते है संक्षेप में वृहस्पति, शनि मुश्तरका खाना नं० 9 में दिया फल साथ होगा।

खाना नं० 8 :- धन मध्यम दर्जे का, आयु लम्बी होगी। जब खाना नं० 8 मौत का घर न होगा, यानि ऐसे व्यक्ति के होते हुए घर में कोई अप्रिय, तबाही आदि की घटना न होगी, बल्कि सदस्य बढ़ेगें।

खाना नं० 9 :-

बहुत भारी कबीला अपने कमाई का हिस्सा कम ही हो। से दूसरों का बुरा न हो और न ही ताकत होगी। लोग उसे दुष्ट न माने, दूसरों से हमदर्दी न करे। ठगी, फरेब से कमाये। आयु

आप बढ़े दूसरों को तारे। जायदाद और धन बहुत अधिक हो चाहे अपनी अमीरों का अमीर। अब धन जो अपने हाथों खर्चे और बरते और जिस धन दूसरों को लाभ देगा। ऐसे व्यक्ति में शनि की आँख की होशियारी की पूरी कहेंगे, मगर अपने लिए वह भाग्यवान धनवान होगा। अपने बाप का कहा ना दीन रखे ना धर्म से प्यार हो अगर प्यार हो तो सिर्फ धन से चाहे वह लम्बी होगी। जिस किसी ने उसको छुआ वही मरेगा यानी वह दूसरों का धन हड़प कर जायेगा। छोटी मछलियों को खाकर मगरमच्छ बनेगा।

खाना नं० 10-

मान सरोवर दुनिया बनता, गणेश दाता सिद्ध होता हो।
माया नयासिरी जो गुरु देता, हानि सफाचट करता हो।।

अपने लिए निहायत उत्तम, श्री गणेश के मान का स्वामी होगा।

खाना नं० 11 :-

शनि वृहस्पति 11 राशि, दोनों बुध से चलते हैं।
बुध दबाया हो या मंदा, दोनों निष्फल जाते हैं।।

भाग्य का फैसला खाना नं० 3 के ग्रहों से होगा और खाना नं० 5 का कोई प्रभाव न होगा। अगर खाना नं० 3 खाली हो तो शनि खाना नं० 11 का दिया फल होगा। ऐसे व्यक्ति की मित्रता से दूसरों को लाभ ही हो चाहे स्वयं कोई कौड़ी-कौड़ी का ही हो। असली प्यार (इश्क हकीकी) करने वाला, लोहे को पारस की तरह सहायता दे।

खाना नं० 12 :-

बढ़ते कबीला साल मंगल के, चिराग बुलंदी होता हो।
शत्रु 6 वें तख्त पर आते, हानि चोरी धन जाता हो।।

नेक भाग्यवान अब न राहु का मंदा असर न केतु का बुरा फल होगा। शनि और वृहस्पति का खाना नं० 12 में दिया जुदा-जुदा हाल होगा। उसका धन शादी के दिन से और भी बढ़ेगा। चन्द्र, शुक्र, मंगल के नेक या मंदे होने पर भाग्य का वही अच्छा या बुरा असर होगा जो वृहस्पति, शनि खाना नं० 7 मच्छ रेखा में दिया है। अब मच्छ रेखा तो होगी मगर थोड़े समय के लिए। कभी तो बेफिक्र सोने का दान करता हो और कभी कीड़ियों से भरी चारपाई पर दुःखी हो रहा हो

उपाय :- चन्द्र की पूजा सहायता देगी।

मंदी हालत :-

शराब पीने से शनि का नेक असर बर्बाद। भीख का माल लेकर खाने वाला या दूसरों के माल पर मुफ़्त की नज़र रखने वाला हो। बुढ़ापे में तकलीफ हो, शारीरिक हालत में कुदरती बीमारियां और मंदी इच्छाएँ होंगी।

-इन आदतों से वृ० का उत्तम असर जाया होगा तर्जनी मध्यमा की झुकी हो या दोनों के बीच सुराख अधिक हो। संतान पर बुरी हवा के हमले। जिन्न भूत की मार खासकर जब उसके घर में आम रास्ते से सीधी हवा का संबंध हो रहा हो।

-जब दोनों को केतु देखता हो।

खाना नं० 1 :- जब शनि मंदा तो काग रेखा वाला मंदा हाल।

खाना नं० 2 :-

बीमारी, वृहस्पति, शनि खाना नं० 2 (जन्म कुंडली के हिसाब) जब वापिस खाना नं० 2 वर्षफल के हिसाब 9-21-33-45-57-65-74-96-10-117 साल की आयु में आये, तो हो सकता है कि वृ० की संबंधित चीज़ें, अपना स्वास्थ्य और पिता की उम्र तक मंदा असर हो जिसकी पहली निशानी शनि की चीज़ों द्वारा होगी। शनि का उपाय ही मदद करेगा।

खाना नं० 3 :- शनि स्वयं निर्धन होता है। शनि 9-18-36 साल की आयु में पिता, धन-दौलत के संबंध में मंदा होगा।

खाना नं० 6 :-

अ) औरत का सुख हल्का, पैर की तर्जनी, मध्यमा से बहुत छोटी हो, शनि कायम, वृहस्पति नीच या बर्बाद खाना नं० 2 की दृष्टि से हो।

ब) स्त्री से नाराजगी और स्त्री खानदान गरीब, वृ० कायम मगर शनि खाना नं० 2 की दृष्टि से रद्दी दरिद्र या मंदा, पैर की तर्जनी मध्यमा से बहुत बड़ी हो। -जब वृहस्पति कायम और शनि मंदा हो।

खाना नं० 7 :-

लड़की के जन्म (बुध के रिश्तेदार या काम) से धन-दौलत (वृ०) का बुरा फल बल्कि बर्बाद, मगर शनि पर बुध का कोई असर न होगा, बचपन में चाहे तकलीफ रहे। जब भी नष्ट या नीच ग्रहों (चन्द्र या शुक्र या मंगल) से कोई भी खाना नं० 1 में आये बरकत घटने वाली मगर मच्छ रेखा होगी या चन्द्र (माता) शुक्र (स्त्री), मंगल (बड़ा भाई या ताया बड़ा मामू) के खत्म होने लड़ाई-झगड़े से अलहदा या छुटकारा मिलने पर बर्बादी खड़ी होगी। हो सकता है कि ऐसा व्यक्ति जानी अय्याश हो जिसे ज़ुबान का चस्का बर्बाद करे या शादी होते ही माता चल बसे और पिता 34 साल की उम्र में अपना साया उठा ले।

-जब दोनों खाना नं० 7 या 12 और चन्द्र या शुक्र या मंगल नष्ट या नीच हो।

शनि की आयु 9-18-36 साल में घर में धन की दूसरी हालत हर प्रकार से मंदी होगी, जैसे मिट्टी के तवे माने है।

-जब सूर्य खाना नं० 1 में हो।

खाना नं० 10-

अब शनि अपने घर में साथ बैठे वृ० और सामने आये सूर्य खाना नं० 4 दोनों को ही जला देगा। सूर्य खुद तो चाहे जल जाये मगर सूर्य खानां नं० 4 में बैठा होने के कारण से चन्द्र की मदद के कारण उन तमाम पत्थरों को जो शनि ने जलाकर काले कर दिये हैं चमकते कीमती लाल बना देगा। मगर शनि के इस ज़हर से वृ० न बच सकेगा यानी उसका धन नयासिरी माया होगी, जो दूसरों को तबाह करके छोड़ेगी। बुध का संबंध दृष्टि आदि से शनि का मंदा फल पैदा होगा और तंग हाल होगा। संभोग इच्छा, ठगी और बेईमानी की कमाई का धन शनि की माया बेशक 12 साल तक साथ दे। मगर वृ० की दौलत साथ न दे। मंदी हालत के समय वृ० का संबंध वृ० की चीज़ें, रिश्तेदार या काम, कारोबार धन बढ़ाता जायेगा चाहे शनि बर्बाद ही करता जाये। –जब सूर्य खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 11 :-

अगर टेवे में बुध निकम्मा हो तो किस्मत का कोई भरोसा न होगा। अपने लिए धन-दौलत को तरसना ही पड़ेगा। लेकिन अगर बुध भला हो तो लोहे के गुब्बारे को भी हवा में उड़ाने की हिम्मत का स्वामी होगा।

वृहस्पति और राहु

(फकीरों की कुटिया में हाथी, बुजुर्गों को दमे की बीमारी)

वृ० गिना पवन तो, राहु धुआँ हुआ।
दोनों के चलने फिरने को, आकाश (बुध) बन गया।
वृ० का प्रण है यह, टेढ़ा कभी ना होगा।
है गज ने कसम पाई, सीधा ना वो चलेगा।
घर से चले थे एक से, अब 12 हो गया।
तकिया फकीर साधु का, धुआँधार हो गया।
चलते सुबह से दोनों थे, जब शाम [1] हो गया।
गुरु लगे समाधि में, श्मशान हो गया।
धुआँ हटे ना साधु जागे, दोनों अपनी लय में है।
दुनिया के सब साथी बंदे, इन दोनों की शरण में है।
झगड़ा बढ़ा अधिक तो, सूर्य (22 साल) भी आ गया।
चन्द्र (24 साल) बना है घोड़े तो, बुध (17 साल) पहिया हो गया।
शुक्र (25 साल) बना जो मिट्टी था, अब लक्ष्मी हुआ।
लेटा पड़ा जो साँप (36 साल) था, अब भैरों हो गया।
मंगल (28 साल) ने शेरी छोड़ दी, अब चीता हो गया।
केतु के आते-आते ही, सब [2] स्वप्र हो गया।
हाथी ने सिर टटोला तो, टुकड़े हैं पाये दो।
केतु जो गुरु के नीचे था, उसके भी रंग दो।
वृ० ने आँख खोली, तो देखे जहाँ दो।
राजा फकीर होते भी, किस्मत दो रंगी हो।
गुरु, राहु जब हो दो इकट्ठे, शेर सोया गुरु होता हो।
झगड़े फसाद बेइज्जत करते, पीतल, सोने का बनता हो।

1 राहु की 19 साल की महादशा होगी।
2.केतु के आते-आते ही केतु 12-24-48 साल की आयु या नर संतान की पैदाइश पर शर्त ये कि टेवे वाला ससुराल घर का कुत्ता न बने वरना पोते के जन्म वृहस्पति का सोना बहाल होगा।

शेर और हाथी की लड़ाई या किस्मत के मैदान में समय की सांस और धुएँ की लहरें :-

ऐसे प्राणी के पैदा होते ही समय के गुरु और वृहस्पति के गृहस्थी शेर की सांस की हवा में नीले आसमानी गुंबद के मालिक राहु के हाथी को अनाजों का धुआँ भरा तो किस्मत का इन्द्र धनुष के रंग-बिरंगे दृश्य अक्ल को चक्कर में डालता हुआ खाली आकाश

के घेरे में अपनी लहरों से इधर-उधर दौड़ने लगा। वृ० का शेर आसमानी बड़े हाथी की दौड़ धूप की उलझन की हवा से अपने रास्ते पर चलता हुआ मर जाये या कट जाये तो बेशक मगर वो हवाई सांस के चलते दम तक अपने जानी क़सम (कौल) से हटता और सामना करने की तकलीफ की वज़ह से कभी झुकता न होगा। उसके सामना करने पर कड़कती हुई बिजली की शक्ति की मदहोशी से भरा अपने शरीर को चोट पर चोट से नीला करता हाथी तमाम संसार के बनाए हुए रास्ते पर भी सीधा ना चलेगा। यानी पीला हवाई शेर संसार के कानूनी रास्ते पर सीधा चलने से न रुकेगा और आसमानी नीला हाथी सीधे रास्ते को अपनी टेढ़ी चालों पर नापने से न रह रुकेगा। एक सीधा चले दूसरा सदा टेढ़ा तो ऐसे दो साथी मुसाफिरों का मुश्तरका रास्ता कब बराबर होगा, भाग्य की पीले केसरी रंग की झलक कभी निर्धनी के धुएँ की काली, नीली लहर से टकराती हुई सोने को अपनी दौड़ती लहरों से पीतल बना रही है और कभी वो कोढ़ से गले हुए दम से उखड़े हुए और नीले जंग से भरे हुए मंदे पीतल के भाव बिकने वाले प्रेमियों को बिज़ली की चमक की तरह दम के दम में जगमग-जगमग करने वाले दमकते हुए कुन्दन की तरह चमक दे रही है। संक्षेप में संसार की दोरंगी की ऊंच-नीच, लम्बाई-चौड़ाई संसार के किसी माप में नहीं बनते, जन्म लिए हुए एक से 12 साल हो गये दोनों ग्रहों ने 12 ही खानों में चक्कर लगाया या शेर और हाथी सीधे और टेढ़े चलते-चलते संसार की 12 ही तरफों में घूम आये तो ऐसे प्राणी का जद्दी घर घाट एक भाग्य के हार में फंसे हुए फकीर साधु के उजड़े तकिये की तरह धुआँधार संसार की गंदी हवा से भर गया और मुसाफिरी का दिन या 12 साला चक्कर जिसमें वो सुबह ही से रवाना हुए थे शाम पर आ पहुँचे। संसार के गुरु और गृहस्थी साधु ने अपनी समाधि लगा दी या भाग्य का शेर निर्धनी की ऐसी ज़ोरदार नींद सो गया कि सब और सुनसान हो गया। शेर की नींद मशहूर है और साधु की समाधि भी किसी से भूली नहीं। ना ही धुआँ हटता है और ना ही साधु और शेर जगते हैं। हर तरफ निर्धनता ही भरती बढ़ी चली जा रही है। मगर वह दोनों शेर और हाथी धुआँ और साधु अपनी-अपनी मस्ती में लगे हुए है और संसार के सब बंदे (टेवे वाले के संबंधी) उन दो सोए हुए ग्रहचाली शेर और हाथी के पाँव से दबे चले जा रहे हैं ज़ब झगड़ा बहुत बढ़ गया और मंदे भाग्य की रात के अंधेरे की कोई कमी बाकी न रही तो किस्मत से खाली हो चुके आकाश में सूर्य का प्रकाश होने लगा या यूँ कहो कि आयु का 20या 22 वां साल आ पहुँचा और स्वयं के भाग्य का सूर्य निकलने का समय हो गया। हाथ-पाँव कुछ कमाने लगे राजदरबार से सहायता होने लगी मगर समय के सूर्य की रथगाड़ी के दो हिस्से हुए, पहिये बुध का समय या 17 वां साल दोनों और गाड़ी का बाकी हिस्सा या असल मतलब की चीज़ सूर्य के राज्य का समय 2022 साल का समय (2020साल की आयु में सूर्य के रथ के लिए अगर बुध 17 साल की आयु अर्सा पहिये का काम देने लगे) तो चन्द्र का समय या 24 साल की आयु का समय उस रथगाड़ी के लिए घोड़ों का साथ करने लगा या 17 साल की आयु में नेक और ऐसे काम करने की बुद्धि आने लगी जो उच्च परिणाम दे। राजदरबारी रथगाड़ी में माया धन के घोड़ों का साथ हो गया। इतनें में शुक्र जो मिट्टी की हालत में हो चुका था शादी की स्त्री के आने का बहाना और समय की लक्ष्मी की लहरों में तबदील होने लगा। भाई-बन्धु जो अपनी वीरता भूले बैठे थे या जिनका खून सो गया था 28 साला की उम्र में मंगल का शेर गुर्राने लगा। वो सब साथी बढ़े, सहायता पर हो गये माया की रक्षा करने वाला इच्छाधारी साँप या शनि के खजांची का बक्सा जो धन से खाली और मुर्दा रुह से लेटा हुआ था अब 36 साल की उम्र में भैरों वली की तरह बढ़ा। मकान बने आँखों की रोशनी बढ़ी और हरेक को भय आने लगा। गृहस्थ परिवार माया धन में सुख की नींद से तरह-तरह के उत्तम ख्वाब आने लगे। संतान बढ़ने लगी केतु के 48 साल की आयु का दौरा ज़ोर पर हो गया। संसार के गुरु ने सुख सागर को सांस की लहर मारा, गृहस्थी शेर की आँख खुली तो राह की फैलाई हुई निर्धनता का मंदा धुआँ और चाण्डाल हाथी अपने ही सिर को टटोलने लगा तो महसूस हुआ कि उसके दो टुकड़े हो चुके थे और केतु, गुरु, गद्दी, संतान, लड़का जो गुरु के नीचे था उसके भी स्याह और सफेद (चितकबरा) दो रंग पाये गये और स्वयं वृ० ने अपनी हस्ती और खुदी से पैदा होकर दोनों संसारों का चक्कर लगाया और खुद वृ० का दूसरा चक्कर आयु का 49 साल शुरू हो गया। ऐसे प्राणी राजा के यहाँ जन्म लेकर फकीर और फकीर के घर पैदा होकर राजा, ऐसी किस्मत की दोरंगी चाल होगी और उसका तमाम मंदा ज़माना सिर्फ एक स्वप्न की तरह होगा जो खाली फोकी शोहरत देगा। बुध का हरे रंग का तोता भी अगर हो तो वो भी अब ऐसा होगा जो तोता टें-टें करना ही जानता होगा यानि व्यर्थ बुध होगा। राहु अब नीच फल का हो और वृ० चुप होगा मगर गुम न होगा।

1. ऐसा व्यक्ति सिर्फ संसारी व्यक्ति होगा, छुपी शक्ति या प्रार्थना का मालिक न होगा। -जब दोनों खाना नं० 7 से 12 में हो।
2. वृ० दोनों संसार का स्वामी होगा या टेवे वाले की सांसारिक और छुपी सहायता दोनों ही मिलती होगी।

-जब दोनों खाना नं० 1 से 6 में हो।

नेक हालत :-

ऐसा व्यक्ति आराम या हराम की रोज़ी का आदी होगा। यानि प्रथम तो ऐसे जातक को कोई महत्त्व का काम न करना पड़ेगा और यदि मेहनत करनी भी पड़े तो काम नहीं करेगा परन्तु रोटी पा लेगा।

खाना नं० 1 :-

फैयाज दाता सखी हो तख्त पर बैठा, फकीर राजा चाहे कोई हो।
रिज़क रोज़ी न हरगिज मंदा, फसल कटी या बोई हो।।

चाहे धनवान चाहे निर्धन मगर फैयाज सखी ज़रूर होगा। चाहे फसल बोई या कटी हो उसे रिज़क रोज़ी की कमी न होगा। जन्म चाहे चाण्डाल के घर का हो मगर उसे पेट भरने के लिए अनाज देने के लिए राजा स्वयं उसके घर आ खड़ा होगा।

खाना नं० 2 :- *चुप गुरु जो टेवे गिनते, चुप राहु अब होता हो।*
उपदेश पाएगा गुरु का अपने, सवारी हाथी गुरु माया हो।

नेकी के काम बहुत करे गरीबों की मदद करें। अब राहु टेवे वाले की वृहस्पति की चीज़ों पर कोई बुरा असर न देगा बल्कि राहु का हाथी अब वृ० के साधु की आज्ञा के अनुसार चलेगा यानी अगर किसी वज़ह से टेवे वाला गरीब हो भी जाये तो भी हाथियों वाला गद्दी नशीन साधु होगा।

खाना नं० 3 :-

आँख की होशियारी जो शत्रु से बचाती रहे अधिक होगी। स्वयं वीर होगा। राहु की पूरी उम्र साढ़े दस साल, 21-42 साल के बाद वृहस्पति, राहु का दोनों का खाना नं० 3 का दिया फल जाहिर होगा। मंदी हालत में केतु का उपाय जो कि वृहस्पति राहु में लिखा है सहायक होगा।

खाना नं० 4 :-

उत्तम चन्द्र के प्रभाव का पूरा लाभ होगा। मगर वृहस्पति अपने प्रभाव के लिए चुप ही होगा यानी दिखावे के तौर पर वृहस्पति के उत्तम असर कोई खास ज़ोर न होगा मगर यह भी अर्थ नहीं कि वृहस्पति का अपना फल मंदा होगा।

खाना नं० 5 :- जातक हाकिम या सरदार हो।

खाना नं० 7 :-

ससुराल पिता से एक ही जिंदा, वो भी दमे से दुखिया हो।
बुध मंदे से लेख हो जलती, लकड़ी शुक्र, बुध उल्टी हो।। *जातक जवानी में खूब आराम पाए।*

खाना नं० 12 :-

लेख दौलत न कोई मंदे, न ही आकबत गंदी हो।
धर्म-कर्म पर असर राहु से, मंदी नाली बह निकलती हो।
दस्तकार या काम हुनर से, लाभ न कभी मिलता हो।
सुख पुरुषों का हल्का गिनते, शनि का असर भी मंदा हो।

अब दोनों मुश्तरका से खाली बुध या खुले आकाश की तरह किस्मत का हाल होगा। राहु और वृहस्पति का कोई झगड़ा न होगा। आर्टिस्ट, अक्लमंद मगर हुनर और मैकेनिक से कोई ऐसा लाभ न होगा या अर्थ नहीं कि हानि ही होगी।

नोट :- बाकी घर अपना-अपना।

मंदी हालत :-

सिवाय खाना नं० 2-12 बाकी घरों में 8-12 साल की उम्र में सोने का पीतल और पीतल भी नीले रंग, भाग्य के मैदान में साधु दिखता भी चोर का बर्ताव करे। मंदी घटनाएं बल्कि 16 से 21 साल की आयु में तो पिता का सांस बंद हो या आधा जिस्म नकारा हो जाये। 42 साल की आयु में सोने की चोरी या राहु, वृहस्पति के संबंधित कारोबार या रिश्तेदार या चीज़ों का मंदा असर होगा। वृहस्पति, राहु मुश्तरका दोनों बुध का मंदी हालत में काम देंगे। पिता की उम्र और धन-दौलत के संबंध में वही मंदा असर जो राहु खाना नं० 11 में पिता के लिए लिखा है। स्वयं आय की नाली के दो टुकड़े और वो भी व्यर्थ फकीर की कुटिया में हाथी घुस जाने की तरह मंदा हाल और वह भी ऐसे साधु का जिसकी सवारी के लिए हाथी हर समय मौजूद रहा करते थे। चाहे जन्म राजा का हो या फकीर का, भाग्य ज़रूर दो रंग दिखलाएगा। राजा से फकीर एवं उल्टा भी कर देगा। अमीरी के वक्त हाथी (सवारी) सलाम करें मगर गरीब हो तो सुख की नींद भी जाए।

उपाय :-

मंदी हालत के समय केतु के उपाय से राहु का मंदा असर दूर होगा। जिस्म पर सोना सहायता देगा। अगर केतु मंदा हो (लड़का नालायक हो) तो चन्द्र की उपासना या माता के द्वारा चन्द्र का उपाय सहायता देगा। केतु के काले और सफेद रंग के नंग की अंगूठी को हर रोज़ गाय (शुक्र) के झूठे पानी से धोने के बाद मंगल की चीज़ों का दान करना ज़रूरी होगा या जौ (अन्न) को दूध से धोकर कुछ दाने अपने पास रखकर हर रोज़ 43 दिन तक नदी में बहाते जाने सहायक होंगे।

खाना नं० 2 :

अगर खाना नं० 8 में वृहस्पति, राहु के शत्रु ग्रह हों या वैसे ही मंदे ग्रह हो तो नर संतान के लिए विघ्न होंगे।

खाना नं० 3 :-

बुध और केतु दोनों ही का फल 34 साल की आयु तक मंदा ही होगा।

खाना नं० 5 :-

संतान के संबंध में राहु खाना नं० 5 का ही असर होगा।

खाना नं० 7 :-

पिता और ससुराल (ससुर) में से एक ही ज़िंदा बचेगा, यदि दोनों ही ज़िंदा हों तो एक को दमा ज़रूर होगा।

खाना नं० 8 :-

जीवन खाना पूरी का नाम होगा सब और निराशा का मंदा धुआँ। ज़ोर से सांस के बंद करने की कोशिश पर तुला हुआ होता रहेगा। वृहस्पति खाना नं० 8 में दिया उपाय सहायक होगा।

वृहस्पति और केतु

(पीला नींबू, गुरु गद्दी)

साथ केतु से सेवा उम्दा, चन्द्र बिना गुरु होता हो।
पहले केतु, गुरु पीछे बैठा, मंदा असर गुरु देता हो।
बुध मदद जब उनको देता, लेख विधाता खुलता हो।
धन आयु औलाद इकट्ठा, शनि औरत सुख पाता हो।
बाप गुरु तो केतु बेटा, पाठ पूजा शुभ होता हो।
वक्त मंदे जब दोनों इकट्ठा, दुखिया कोई न रहता हो।

दोनों के मिलाप में हर दो का प्रभाव उत्तम होगा। केतु अब गुरु गद्दी का स्वामी या ऐसे पाँव का मालिक हो जो जहाँ चरण हुए, परिवार और धन आ पहुँचे। वृहस्पति (दरगाही), केतु (संसारी, बनावटी) दोनों ही दरवेश माने गये हैं। अगर वृहस्पति गुरु तो केतु उसका चेला होगा। वृहस्पति अगर पूजा-पाठ तो केतु गुरु के लिए पूजा-पाठ करने की जगह या बैठने के लिए उसका आसन या गद्दी होगा।

वृहस्पति की हवा बिना कैद और खुली हुआ करती है मगर केतु जो सांप (शनि) के खरटि सांस की हवा संसारी धन्धों से बंधी हुई किसी अर्थ या ज़हर को (जब केतु मंदा हो) साथ लेकर चलती है, वृहस्पति किसी बुराई-भलाई का इच्छुक न होगा। मगर केतु किसी के भले या बुरे के लिए अपना छलावापन दिखला देगा।

नेक हालत :-

अब खुद केतु (संतान) उच्च फल का होगा। मामा मरे तो बेशक पड़ोसी मारा जाये तो ठीक मगर वृहस्पति का स्वयं का फल बुरा न होगा।

क्याफा :- नाक की तरफ से दोनों कानों का बीच का हिस्सा ज्यादा होगा।

खाना नं० 1 :-

शंख सिहांसन योगी कुटिया, धर्मी राजा वो होता हो।
कदम मुबारक जिस घर रखता, सुखिया सभी आ होता हो।।

सदा आराम पाये, हाथ पर एक शंख का निशान हो।

खाना नं० 2 :-

गुरु मंदिर दुखिया फकीरी, आठ दृष्टि खाली जो।
लेख नसीबा चौड़ा माना, ऊँचा स्थान उसका हो।
आठ बैरी या दुश्मन साथी, कुत्ता फांसी आ मरता हो।
लेख लिखत सब हो कुछ मंदी, आयु अल्प तक होता हो।

उत्तम आसन (केतु) लम्बा चेहरा चौड़ा माथा होगा जो ऊँचा ऑफिसर और हमदर्द होगा। -जब खाना नं० 8 खाली हो।
ऐसा ऑफिसर होगा जिसको कल की कोई फिक्र न हो। -जब खाना नं० 8 में मित्र ग्रह हो

खाना नं० 4 :-

उच्च गुरु चाहे केतु मंदा, संतान मंदी नहीं होती हो।
धन सम्पत्ति घर बार हो उत्तम,भगत पिता और माता हो।
पितृ रेखा का असर हो बढ़ता,विद्या बुद्धि सुख मिलता हो।
समुद्र हवा की वर्षा उत्तम; पाँव लक्ष्मी देता हो। *जातक विद्वान होगा।*

खाना नं० 6 :-

अगर खाना नं० 2 की दृष्टि भली हो या खाना नं० 2 खाली हो तो भाग्य का हाल भला, प्रसन्न रहने वाला जिसे अपनी मौत का मरने से पहले ही पता चल जाये। चेहरा लम्बा और नेक स्वभाव होगा।

खाना नं० 7-8-12 :-

गरीब तपस्वी पेट (खाना नं० 7) से भूखा, साथ दरिद्र (खाना नं० 8) भरता हो।
रात (खाना नं० 12) आराम अमीरी उत्तम, बाकी असर सब उत्तम हो (खाना नं० 12))।।

खाना नं० 7 :- तपस्वी मगर पेट से भूखा।
खाना नं० 8 :- दरिद्रता से भरा हुआ।
खाना नं० 12 :- बड़ा ही अमीर और कल की फिक्र न करने वाले हाल वाला होगा।

मंदी हालत :-

शत्रु 40साल की आयु तक तंग करें जब केतू की जड़ खाना नं० 6 में चन्द्र, मंगल (बद) वृहस्पति की जड़ खाना नं० 9-12 में शुक्र, बुध या राहु।

-जब दोनों की जड़ों में उनके शत्रु बैठे हों।

उपाय :-

पीला नींबू धर्म स्थान में देना सहायक होगा।

कुंडली वाले के लिए दोनों का उत्तम और शुभ फल होगा। मगर केतु और वृहस्पति की जानदार चीज़ों का फल मंदा ही होगा। नाक की तरफ से पुरुष के दोनों कानों के बीच का फासला अगर ज़्यादा हो तो चेहरा चौड़ा होगा जो खुदगर्ज होगा।

-जब दोनों में से किसी एक का फल चाहे किसी तरह भी मंदा हो जाये।

खाना नं० 2 :-

तंग माथा और चौड़ा चेहरा होने पर खुदगर्ज और मंद भाग्य होगा (खाना नं० 8 में शत्रु ग्रह होंगे)।

खाना नं० 4 :-

नर संतान की देरी बल्कि कमी ही होगी। हाथ पर 4 शंख के निशान होंगे।

खाना नं० 6 :-

खाना नं० 2 की दृष्टि की रुह के मुताबिक अगर केतु नीच या मंदा मगर वृहस्पति कायम, पैर का अंगूठा छोटा और तर्जनी बड़ी हो। यदि केतु कायम और वृहस्पति मंदा हो तो दूसरे का गुलाम रहेगा। पैर की तर्जनी छोटी और अंगूठा बड़ा हो तो पहले लड़के या लड़की का सुख न होगा।

खाना नं० 7 :-

तपस्वी मगर गरीब ही होगा। वृहस्पति खाना नं० 7 का फल प्रबल होगा।

खाना नं० 8 :-

जातक निर्धन, मुर्दा आत्मा का स्वामी होगा।

****

सूर्य और चन्द्र

(बड़ के वृक्ष का खालिस दूध, घोड़ा, तांगा)

(नौकरी उत्तम सरकार का धन, डॉक्टरी, अमूमन सिविल)

रवि मालिक जो उम्र बुढ़ापा, माया चन्द्र स्वयं देता हो।
मोती दमकते असर दोनों का, लेख बैठे घर चमकता हो।
घर 1 से 6 चन्द्र बढ़ता, बाद 7वें 12 जाहिर न होता हो।
साथ ग्रह कुल ही चाहे मंदा, बुध, गुरु पर उत्तम हो।
असर सूर्य से चन्द्र बढ़ते, राज कभी न मंदा हो।
मर्द बढ़ेगें जिस घर बैठे, चाहे स्त्री न उत्तम हो।
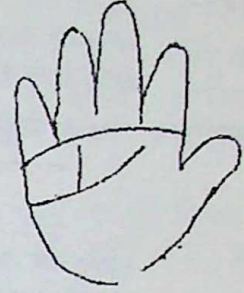
दोनों ग्रह 40साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे। मिलावट में अगर चन्द्र का असर 3 हिस्सा हो तो सूर्य 4 गुना होगा। मगर प्रबल और दिखावा तो सूर्य ही का प्रभाव होगा।

नेक हालत

बुढ़ापा विशेषकर उत्तम होगा। जद्दी जायदाद का उत्तम फल, गृहस्थी आराम शांति से होगा।

क्याफा **दिल रेखा पर सूर्य रेखा। सूर्य देखे चन्द्र को जो खुश्क कुएं खुद पानी देने लग जाएंगे।**

खाना नं० 1 :- **राजा हो जो दूसरों से टैक्स लें।**

खाना नं० 2 :-

गुरु मंदिर फल उत्तम गिनते, राज तरक्की होती हो।
औरत बहाना झगड़े होती, हार हानि जो देती हो।।

दोनों का उत्तम फल राजदरबार में तरक्की मान जब तक मुकाबले पर स्त्रियां न हो।

खाना नं० 3 :- **अपने लिए उत्तम भाग, मगर दूसरों के संबंध में स्वार्थी होगा।**

खाना नं० 4 :-

राजा-महाराजा, सीप में मोती या मोती दान करने की शक्ति का प्राणी। संसार का पूरा आराम। ऊँची से ऊँची सवारी का सुख शर्त ये कि खाना नं० 10खाली हो।

खाना नं० 5 :- सारा जीवन आराम रहे। भाग्य का नेक प्रभाव होगा, जो ऐसे प्राणी को संतान के माता के पेट में आने के समय से ही शुरू हो जाएगा।

खाना नं० 6 :-

प्रभाव दोनों के अपनो-अपने, साथ पापी न मिलता हो।
खाली पड़ा जब दूजा टेवे, माता-पिता दोनों मंदे हो।
अब उपाय मंगल होगा, उच्च रवि को करता हो।
मंद रवि का ज़हर हटाता, उम्र बढ़ा कुल देता हो।

दोनों का खाना नं० 6 का दिया जुदा-जुदा असर होगा।

खाना नं० 9 :- **मातृ भाग, माता की ओर, माता की सहायता संबंध अति उत्तम। तीर्थ यात्रा 20साल उत्तम फल हो।**

खाना नं० 12 :-

गर्म पानी से ज़ख्म न जलते, राज समाधि बढ़ता हो।
शत्रु मगर जब घर दो बैठे, आग, पानी से जलती हो।।

दोनों का जुदा-जुदा मगर सूर्य का प्रभाव प्रबल होगा।

मंदी हालत

स्त्रियों से विरोध रहे/रहता है। हरदम दुःखी रात-दिन मुसीबत पर मुसीबत, चाहे लाखोंपति फिर भी न रात को आराम न दिन को चैन। फ़िजूल खर्च और सफ़र पीछे लगा रहे। जीवन में सफलता या आम सुख की कोई तसल्ली नहीं।

-जब दोनों की जड़ों खाना नं० 4-5 में दोनों के शत्रु (शुक्र तथा पापी) हों।

क्याफा सूर्य खाना नं० 1 के पर्वत से चन्द्र के पर्वत नं० 4 में रेखा हो।

खाना नं० 1 :- मौत अचानक हो।

खाना नं० 2 : **स्त्रियों से घृणा, झगड़े, हार या हानि।**

खाना नं० 4 :- ***मौत अचानक हो।***

मृत्यु दिन के समय और नदी-नाले या ज़मीन के नीचे से पानी या चलते पानी से हो। -जब खाना नं० 10में शनि हो।

खाना नं० 6 :-

लम्बी आयु की कोई तसल्ली न होगी मगर ये अर्थ नहीं कि आयु छोटी ही होगी। -जब खाना नं० 2 में राहु या केतु हो।

खाना नं० 11 :-

असर ग्रह हर दो का मंदा, आयु 9 साल होती हो।
खुराक शनि का गोश्त छोड़ा, आयु सदी तक लम्बी हो।।

अमूमन उम्र 9 साल ही होगी और यदि मांस खाना छोड़ दे तो आयु 10साल लम्बी होगी।

सूर्य और शुक्र

संतान जन्म देरी करता, लाभ सोना नहीं होता हो।
एक वक्त ग्रह एक ही चलता, दीगर (और) जा नष्ट ही होता हो।
सूर्य 22, शुक्र 25 की उम्रों में, योग शादी न उत्तम हो।
स्वास्थ्य माया न उत्तम जानो, मंदा [1] औरत का होता हो।
गर्मी सूर्य से शुक्र जलता, सिफत औरत न मंदी हो।
शब्द ज़ुबान से औरत निकला, लकीर पत्थर पर होती हो।
उम्र पिता या राज हो शक्की, दुर्गा पूजन स्वयं करता हो।
संतान जन्म में हो जब देरी, केतु पालन शुभ होता हो।
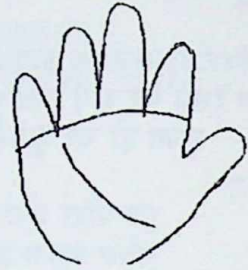
1. 22 और 25 साल की उम्र की शादी से औरत का नाश होगा।

शत्रु ग्रहों (शुक्र, पापी) के साथ बैठा हुआ सूर्य चाहे किसी भी घर में हो उसके साथ बैठे हुए शत्रु ग्रह की उस खाने से संबंधित चीज़ों पर बुरा प्रभाव देगा। ऐसी हालत में 22 से 25 साल की आयु बीच दुश्मन ग्रह अपनी-अपनी मियाद पर बुरा असर देंगे। दुश्मन ग्रह को बुध द्वारा पालना या नेक कर लेना सहायक होगा। शत्रु ग्रहों के साथ ही सूर्य के मित्र चन्द्र, मंगल, वृहस्पति भी साथ ही हो तो दोस्तों से संबंधित चीज़ों पर मंदा असर होगा, शत्रु बचा रहेगा। ऐसे टेवे में राहु अक्सर नीच फल देगा। दोनों मुशतरका ग्रह 41 साल की उम्र तक इकट्ठा असर देंगे। इस मिलावट में अगर शुक्र 3 हिस्से हो तो सूर्य 4 होगा खुद शुक्र के फल में बेहद गर्मी या मंदे फल की ज़मीन का असर होगा बल्कि शुक्र अब नीच ही होगा और दोनों ग्रह सूर्य, शुक्र के मिलाप से बुध पैदा होगा यानी फूल तो होंगे मगर फल न होगा। संक्षेप में एक वक्त में दोनों में से सिर्फ एक का असर उत्तम होगा यानी अगर राजदरबार की बरकत तो स्त्री की हालत नर संतान या नर संतान की नेक हालत मध्यम होगी। अगर स्त्री नेक भाग्यवान सुखिया धनवान हो तो राजदरबार हल्का या मंदा। दोनों ग्रहों का वृहस्पति की ठोस चीज़ों सोना आदि से कोई संबंध न होगा। बल्कि दोनों मुशतरका के समय वृ० (पिता, दादा, वृ० के संबंधी) कोई खास नेक मतलब नहीं हुआ करते।

नेक हालत स्वयं अपनी कोई शरीरिक खराबी न होगी। सूर्य और शुक्र दोनों में से एक का फल तो अच्छा ही होगा। उसकी रुह बड़ी मगर शरीर (बुत) मंदा होगा।

खाना नं० 1 :-

ग्रह मण्डल चाहे तख्त हज़ारी, असर रवि का मंदा हो।
शुक्र औरत हो किस्मत मारी, आग़ गृहस्थी जलता हो।
लगन पराई औरत मंदी, पतंग शुक्र का बनता हो।
चलन नाली जब हो कभी गंदी, जेलखाना तक पाता हो।

अपने लिए खुद अपना शरीर और राजदरबार भले ही हो।

खाना नं० 7 :- खुद अपने लिए सूर्य खाना नं० 9 का दिया हाल हो, तीर्थयात्रा 20 साल उत्तम फल।

खाना नं० 9 :- कभी अमीरी का समुद्र ठाठें मारे। तीर्थयात्रा उत्तम और 20साल उत्तम फल दें।

खाना नं० 10-

राज ताल्लुक का सा गुदाई (फकीर), मदद ग्रह चौथा हो।
खाली होता घर चन्द्र माई, चन्द्र मदद खुद करता हो।
मदद ग्रह नर सबसे उत्तम, चमक रवि खुद देता हो।
राहु धुआँ जब टेवे हटता, लेख शुक्र सब बढ़ता हो।

मंदी हालत

पिता आम तोर पर लम्बी आयु का मानिक न होगा और उसका संबंध छोटी उम्र के कारण या अलहदा रहना अक्सर बचपन में ही उठ गया हो। नर संतान अमूमन शनि की पूरी हुकूमत का समय यानि 36 से 39 साल की आयु या दोनों ग्रहों की मुश्तरका हालत की मियाद यानि 47 साल की उम्र के बाद ही कायम होगी वर्ना शुक्र मंदा बल्कि बर्बाद होगा बल्कि शुक्र की चीज़ें काम या संबंधी शुक्र से संबंधित स्त्री या स्त्री भाग मंद भागी होगी। स्त्री की सेहत शायद ही ठीक रहे, उसे लम्बी-लम्बी बीमारियों यानी तपेदिक तक हो सकती है। दुनियावी जीवन यानी गृहस्थ आश्रम का हाल मंदा ही होगा। स्त्री के चेहरे पर भद्दे निशान मंदी हालत का पहला सबूत होगा। कानों का कच्चा होना, सुनी बात पर यकीन कर किसी का नुक्सान करना, तमाम तरफ की मंदी हालत का कारण होगा।

स्त्री मिलन, बद इखलाकी, बेहद गुस्सा आत्मा में नुक्स होंगे। बुरे प्यार के मंदे नतीज़ें बर्बाद कर देंगे जिनसे तपेदिक और जिस्म जलते रहना (स्वयं अपना या अपनी स्त्री का) आम ढंग होगा। अगर शादी उम्र के 22 वें वर्ष (सूर्य) या 25 वें वर्ष (शुक्र) साल में हो तो राजदरबार अपना शरीर (सूर्य) और औरत जात दुनियावी गृहस्थ (शुक्र) दोनों बर्बाद होंगे।

उपाय **औरत के बाजू पर सोने का कड़ा, (चूड़ी या अनंत कायम करने से संतान में मदद होगी)। स्त्री स्वास्थ्य मंदा होने या रहने की हालत में स्त्री के बोझ के बराबर चरी (ज्वार, अन्न) का दान या धर्म स्थान में देना सहायक होगा, शादी या सगाई के दिन से ही स्त्री-पुरुष (दोनों में से कोई) गुड़ खाना छोड़ दें।**

खाना नं० 1 :-

औरत के दिमाग़ी खराबी पागलपन और वह अति बीमार रहे। काग़ रेखा की किस्मत, रोटी तक की कल्पना। सूर्य (राजदरबार) को भी मिट्टी खराब करे। पराई आग़ दूसरी स्त्री के प्यार में जेलखाना आदि अपने साथी हमराहीयों को खुश्क तालाब में डूबो देने की तरह मंदी हालत होगी।

खाना नं० 7 :-

शुक्र चीजों का बढ़ता झगड़ा [1], रेत खाली बुध देता है।
देता रवि चाहे असर 9 का, हाल पूर्वजों का मंदा हो।।

1. तपेदिक या अंगहीन हो। खासकर जब खाना नं० 5, 7, 9 में किसी जगह भी बैठें हो।

दोनों ग्रहों की बजाय अब बुध खाना नं० 7 का दिया फल होगा। स्त्री से झगड़ा ले औरत की सेहत मंदी बल्कि उम्र तक शक्की। पूर्वजों पर काग़ रेखा (मंदी किस्मत रोटी तक से दु:खी) जद्दी मकान का फर्श (सूर्य, मंगल का हो) लाल रंग होना दोनों ग्रहों की शत्रुता का बड़ा असर देगा।

खाना नं० 9 :- स्त्री भाग में काग़ रेखा, मंदा हाल, कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की तरह चमक हो।

खाना नं० 10 :-

राजदरबार में हमेशा नाकामी और शनि सदा बुरा फल देगा। राजा होते हुए राजगद्दी से दूर या दूसरे राजदरबार में गुदाई (फकीरी) का प्याला लिए फिरता होगा, प्याला चाहे मिट्टी (शुक्र), पत्थर (शनि) चाहे सोने (नीच वृ० खाना नं० 10 का ही हो। संक्षेप में अपना राजदरबार और दूसरे राज का चौकीदार होगा। सांप को दूध पिलाना सहायक हो। संतान के जन्म और संतान की लम्बी उम्र के लिए खाना नं० 4 के ग्रह सहायक हो। अगर खाना नं० 4 खाली हो तो चन्द्र का उपाय सहायता करेगा। बल्कि चन्द्र स्वयं ही मदद देता चला जाएगा। चालचलन का ढीलापन, पराई मिट्टी की खूबसूरती की तारीफ में दिल की बेमौका लगन और बिना कारण कोशिश जो हो ही जाया करती है (ऐसा ज़रूरी नहीं कि ऐसा नुक्स ज़रूरी हो ही) जिल्द की बीमारियों की तकलीफ, खून की खराबियों या गृहस्थी दूध में मिट्टी या राज्य होते हुए आखिरी अवस्था में दु:खी ही होगा। गाय का दान चाहे एक चाहे अधिक मगर गाय हाजिर का दान कल्याण या नर संतान देगा। गाय की जगह सिर्फ नकद रुपये का ही दान कोई दान न होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

सूर्य और मंगल

(जागीरदारी का धन)

असर बुरा न हरदम कोई, चन्द्र भला न होता हो।
खोट धर्म न धेला पाई, खून कबीला तारता हो।
बुध, राहु जब केतु मंदे, सब्ज कदमा ही होता हो।
मौत प्लेगी चूहा गिनते, मंदा सूर्य न होता हो।

दोनों ग्रह 48 साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे। सूर्य के असर का अगर 1 हिस्सा हो तो मंगल 2 गुना होगा। सूर्य का उत्तम और प्रबल असर होगा। जब मंगल नेक हो तो दोनों मुश्तरका किसी भी घर में हो सूर्य सदा उच्च फल का होगा। ऐसे टेवे में चन्द्र (माता, माता भाग्य, खज़ाना आदि चन्द्र की चीज़ें) मंदा या हल्का ही होगा मगर चन्द्र कुष्टी न होगा।

नेक हालत

मंगल की चीज़ें काम या संबंधी, बचपन की आयु तथा अपनी संतान तथा खून के संबंधी, सांसारिक संबंध, प्रशासन, प्रबन्ध महकमों की नौकरी या ऐसे काम या नौकरी जहां आम आदमी से वास्ता पड़ता हो सब का उत्तम फल।

चार कोने वाले मकान का उत्तम असर होगा। ऐसा व्यक्ति और उसका बड़ा भाई दोनों धनवान और जायदाद वाले होंगे। जन्म दिन से ही उत्तम भाग्य। श्श्त्रु पर सदा हावी। तलवार की तरह दुश्मन पर गालिब। आयु पूरी लम्बी बल्कि 10साल होगी। मन की शक्ति साफ होगी। धर्म में रत्ती भर का खोट न होगा। आयु के साथ-साथ पद स्थान भी बढ़ता जाएगा।

हस्त रेखा सूर्य से मंगल को रेखा जाये।

खाना नं० 1-2 :-

पहली उम्र में दोनों ही ग्रहों का चढ़ते सूरज की लाली की तरह उत्तम फल होगा (बाकी ऊपर वाला), साफ दिल, उम्र लम्बी आदि।

खाना नं० 9-10-

ऊँची पदवी 9 वें होता, उड़ती दौलत 10मंदिर हो।
दोनों बैठे 10दौलत बढ़ती, 11 शनि 6 चन्द्र जो।।

1. खाना नं० 9 : ऊँची पदवी। -जब शनि खाना नं० 11 में हो।
2. खाना नं० 10: भाग्यवान होगा। -जब चन्द्र खाना नं० 6 में हो।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

जब मंगल बद हो 3-13 कोने वाला मकान मंगल बद की पूरी मंदी हालत दिखाएगा। संसार में सख्त विरोध हर काम में धोखा है। टेवे वाले की अपनी मृत्यु न हो मगर वह निकट संबंधियों की मौतें ज़रूर देखेगा। उसकी अपनी आँखों पर बुरा असर हो सकता है।

हस्त रेखा मंगल बद से रेखा जो सेहत रेखा को जा काटे।

खाना नं० 1-2 :- अगर मंगल बद हो तो लड़ाई के मैदान में ही मारा जाये।

खाना नं० 9-10-

अज़ीज़ों से धन-दौलत के लिए झगड़ा हो जब मंगल बद हो।

सूर्य और बुध

(नौकरी संबंधी कलम, सरकारी धन, हरा-भरा पहाड़, लाल फिटकरी, शीशा सफेद)

समय मासूमी हल्का होता, अमीर बना अपने आप हो।
स्वास्थ्य धन, केतु उत्तम, शुक्र महादशा करता हो।
राज संबंध [1] नौकरशाही, शर्त ज़रूरी होती हो।
उल्ट मगर जब हो कोई जिद्दी, रोटी मुफ्त जेल मिलती हो।
व्यापार 40हद अक्सर मंदा, ईमानदारी धन फलता हो।
प्रभाव मंदे बुध, केतु मरता, बढ़ता रवि, बुध उत्तम जो।
सात पहले, 2-10घर बैठे, असर दोनों का उम्दा [2] हो।
कीमत 13 जो [2] की गिनते [3], पूरी सूर्य दिन करता हो।

1. सूर्य, बुध मुश्तरका को जब शनि देखता हो तो शनि के संबंधित काम से शनि की आयु 27-33-36-39 तक लाभ होगा। लेकिन अब सरकारी ठेकेदारी या नौकरी आदि धनी परिणाम मंदे ही होंगे। सूर्य के साथ बुध पारे के समान होगा।
2. शर्त से कि शनि न देखता हो।
3. मासिक आय के असूल पर सूर्य की 10 बुध की 3 कुल 13 रुपया मासिक आय होगी इसके लिए मासिक आय का हाल देखें।

दोनों ग्रह 39 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे। इस मिलावट में सूर्य 2 हिस्से बुध 1 हिस्से हो। चाहे दोनों का और उत्तम फल होगा परन्तु सूर्य का फल प्रबल होगा। दोनों मुश्तरका में सूर्य कभी नीच फल का न होगा। बुध चाहे मारा जाये और मंदा

असर दे यानी जिन घरों में सूर्य नीच या मंदा होगा वहां बुध का असर भी मंदा होगा और जहां बुध मंदा हो वहां सूर्य को चाहे धब्बा लगे मगर बुध की चीज़ें सूर्य को मदद देगी। सूरज अगर मनुष्य की आत्मा है तो बुध विधाता की कलम। सूर्य अगर बन्दर है तो बुध लंगूर की दुम की तरह सहायक हो। बुध की 34 साल की आयु का 17 साल की उम्र तक बुध का जुदा फल न दिखेगा। दोनों मुश्तरका से अर्थ (मसनुई) मंगल नेक होगा। खुद काम करने की शक्ति तथा आदत अधिक हो। दूसरों की कमाई की तरफ उम्मीद रखने की बजाय अपनी कमाई पर शुक्र और सब्र करने वाला होगा।

क्याफ़ा :- सिर रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने का कोण पूरा हो तो उत्तम स्वास्थ्य होगा।

नेक हालत

राज संबंध और सरकारी नौकरी अवश्य होगी और लाभकारी होगी। आयु लम्बी मगर मृत्यु अचानक हो। विद्या और कलम सदा सहायक। लैंप रात की रोशनी में काम और हाथ की लिखाई उत्तम फल देंगे।

1. जवानी में भाग्य जागेगा, स्त्री की दिमाग़ी शक्ति उत्तम होगी या चेहरे की हड्डी पर ज़ख्म का निशान हो।

क्याफा सूर्य के पर्वत से बुध खाना नं० 7 के बुर्ज पर रेखा हो।

2. दूसरों की बजाय अपनी कमाई पर भरोसा रखे। खुद बना इंसान हो, सेहत उत्तम हो। भूत विद्या, गणित विद्या, मकान बनाने की विद्या उत्तम हो।

क्याफा अनामिका और मध्यमा के बीच छोटी सी लकीर हो।

3. नेक नतीजे अब सूर्य और शनि दोनों का कोई झगड़ा न होगा। -जब खाना नं० 3-4-5 में शनि हो।

क्याफा अनामिका और कनिष्ठका के बीच छोटी सी लकीर ज्योतिष विद्या देगी।

खाना नं० 1 :-

चलती घूमती-फिरती चक्की, अक्ल वज़ीरी [1] पाता हो।
शेर जंगल या हरी पहाड़ी, गणित में माहिर होता हो।
6-7 जब मित्र बैठा, ऊँच बुलंदी होता हो।
शत्रु मगर जब 6-7 होता, दु:खी मुसीबत पाता हो।

1. अब मंगल का असर कम होगा मगर शनि का 1/4 हिस्सा मंदा प्रभाव शामिल होगा।

मन्त्री समान सलाहकार, हरे-भरे पहाड़ की किस्मत में शान होगी। गणित विद्या, योगाभ्यास का नेक फल हो। धनी, राजदरबार से नेक संबंध, आम राज़दरबारी झगड़ों का फैसला हक में होगा। -जब तक शनि का मंदा असर शामिल न हो।

खाना नं० 2 :- शारीरिक तथा दिमाग़ी प्रभाव उत्तम होंगे। खाना नं० 1 का प्रभाव जैसा भी हो शामिल होगा।

खाना नं० 3 :-

कुण्डली असर ना राहु मंदा, ना ही बुरा वो होता हो।
भला शुक्र ना जिस दम होता, बुरा राहु, बुध मंदा हो।।

राहु का अब कुण्डली पर बुरा असर ना होगा। पक्का प्यार करने वाला और अति उत्तम प्रभाव होगा।

खाना नं० 4 :-

राज व्यापारी रेशम होते, चीज़ें बसाती बजाजी जो।
माया दौलत ज़र इतने बढ़ते, खाली नाली भर जाती हो।।

राजा लोग :- दोनों का अपना-अपना उत्तम फल हो।

खाना नं० 5 :-

बुध का अब सारी उम्र (बुध की 34-17) ही जुदा असर जाहिर न होगा।

1. बड़ों पर और संतान पर बुरा असर न होगा। आयु 90साल होगी। -जब शनि खाना नं० 9 में हो।

खाना नं० 6 :-

राज सभा खुद कलम से अपनी, ऊँच मुबारक होता हो।
कायम दोनों जब घर दो खाली, सुखी संतान से होता हो।।

1. पाँव की कनिष्ठका छोटी हो अनामिका से, या पाँव की कनिष्ठा, अनामिका से बड़ी हो।
- सूर्य कायम और बुध दृष्टि खाना नं० 2 से मंदा। नेक असर और नेक नसीब हो।

2. संतान का सुख हो। जब दोनों कायम यानी खाना नं० 2 खाली हो। -जब पाँव की कनिष्ठका और अनामिका बराबर हो।

खाना नं० 7 :-

घर ससुराल शुक्र चाहे मंदा, बर्बाद केतु स्वयं होता हो।

फव्वारा धन का इतना उठता, कि जंगल पहाड़ भी मरता हो।
रहट माया का योग से चलता, भला लाखों का होता हो।
स्नान जगत् गो सारा करता, प्यासा मगर खुद रहता हो।

1. स्त्री के भाग्य का अच्छा या बुरा असर शुक्र की अच्छी या बुरी हालत (कुण्डली के अनुसार) पर होगा। उसकी स्त्री अमीर खानदान से होगी, सूर्य की तरह उत्तम और पूरी होगी। रंग और स्वभाव साफ होगा।
2. यदि शुक्र कायम और नेक हो।

खुद टेवे वाले की हालत चाहे शुक्र अच्छा हो या बुरा भाग्य के मैदान में चलते हुए रहट की तरह हरदम धर्म आय होती रहे और फव्वारों के उछलते हुए और ताजे पानी की तरह उत्तम प्रभाव का स्वामी होगा। ऐसे पुरुष की आमदनी हज़ारों जंगल और पहाड़ों के मैदानों को पानी देने वाली होगी। अपनी जान के लिए स्वयं वह पुरुष इतना लाभ न पा सके और राजदरबार से उसे ऐसा लाभ न हो मगर फिर भी वह सूर्य की तरह उत्तम और मुक्कमल होगा। मुसीबत के समय बंदर की तरह बांस के सहारे छलांग लगा कर दरिया को पार कर जाने की तरह, सफल होगा, यानी आसानी से मुसीबत को पार कर जायेगा। अगर जवानी का हिस्सा ऐसा शानदार न निकले तो हो सकता है। मगर बचपन और बुढ़ापा उत्तम हो, ज्योतिष पढ़ना शुभ होगा। केतु व बुध का फल 34 साल की उम्र के बाद शुभ होगा। यानी बुध की मियाद तक बेशक धन अधिक होगा मगर बुध से संबंधित चीज़ें, कारोबार, रिश्तेदारों का असर दिया हुआ ही होगा।

खाना नं० 8 :-

बुरा असर दे हरदम उत्तम, खाली पड़ा जब दूजा हो।
प्रभाव ग्रह घर दो चाहे मंदा,आयु मगर स्वयं लम्बी हो।।

शीशे के बर्तन को, जिसका ढक्कन भी शीशे का ही हो, गुड़ से भरकर शमशान में दबाना सहायक होगा जिस पर दोनों ग्रहों का अपना-अपना खाना नं० 8 का दिया फल आरम्भ होगा।

खाना नं० 9 :-

राजदरबार और विद्या के लिए दोनों ग्रहों का 24 साल की उम्र से नेक और शुभ असर होगा जो 34 साल की उम्र से और भी बढ़ेगा। ऐसे टेवे वाले की लड़की 6 साल की आयु तक (सिवाए पहले और तीसरे साल) अति शुभ साबित होगी। उसकी हर नम्बर की (पैदाइश अनुसार एक के बाद दूसरी पैदा हो तो पहले पैदा शुदा को खाना नं० 1 कहेंगे) और आगे ऐसी लड़की की उम्र का हर नं० का साल वही फल देगा जो बुध हर खाने में देता है।

खाना नं० 10-

अधिक धनी हो। शनि, सूर्य और बुध का अपना-अपना और उत्तम फल साथ होगा, टेवे के खाना नं० 1-2 के ग्रहों की दोस्ती और दुश्मनी के मुश्तरका प्रभाव का फल किस्मत में शामिल होगा। अगर खाना नं० 1-2 खाली हो तो सूर्य और बुध का उत्तम फल होगा मगर शनि का फिर भी अच्छा या बुरा फल जैसा शनि टेवे के अनुसार हो ज़रूर साथ शामिल होगा।

खाना नं० 11 :-

पाप जद्दी घर चाहे कोई करता, ज़हर टेवे आ भरती हो।
बुध, रवि कोई चाल न चलता, बुनियाद पहले घर होती हो।।

अगर उसके जद्दी मकान में धर्म पूजन और नेक स्वभाव के भद्र पुरुष रहते हों तो भाग्य हरदम बढ़ेगा। दोनों ग्रहों का नेक और बुरा प्रभाव शुरू तथा समाप्त होने की निशानी एकदम उसके खानदान के सदस्यों पर जाहिर कर देगा और जद्दी मकानों या जाती मकानों की ज़मीन से संबंधित होगा।

खाना नं० 12 :-

दोनों ग्रहों का अपना-अपना फल मगर अब बुध का सूर्य (राजदरबार और टेवे वाले का अपना शरीर) पर कोई बुरा असर न होगा, मगर शर्त ये कि उसके शरीर पर सोना कायम रहे। बुध खाना नं० 11 का दिया उपाय सहायक होगा।

मंदी हालत

शुक्र का असर 25 साल रद्दी वल्कि मंदा ही होगा। बचपन में कष्ट, राजदरबार में झगड़ा (मगर फैसला हक में) होगा। जब सूर्य नीच घरों या दुश्मन ग्रहों का साथी हो जाये, बुध का जाती असर मंदा यानि व्यापार आदि भी व्यर्थ हो।

क्याफा

दिमागी धक्के लगेंगे। दिल रेखा, सिर रेखा मिलकर एक हो गई हो और उस पर सूर्य या बुध से रेखा आ मिले।
-जब चन्द्र नष्ट हो।

1. झगड़ों का फैसला हक में न होगा। -जब दोनों शनि को देखें।

2. मंदे नतीजे हो।

–जब दोनों के आमने–सामने यानी खाना नं० 3-6 (बुध की जड़) खाना नं० 5 (सूर्य की जड़) में चन्द्र या वृहस्पति हो।

खाना नं० 1 :-

राजदरबार में झगड़ा जब कभी हो जाये अपनों से बड़ों के साथ होगा। अगर उस वक्त झगड़े के साल, वर्षफल के अनुसार शनि का टकराव दृष्टि आदि के हिसाब से आ जाये तो फैसला हक में होने की कोई तसल्ली न होगी।

क्याफा

दृष्टि का दर्जा हक में होने का दर्जा होगा। यानी अगर 100% दृष्टि तो 100% फैसला, 50 % दृष्टि तो 50% फैसला, 25% दृष्टि तो 25% फैसला हक में हो।

खाना नं० 2 :- किस्मत के संबंध में धन का प्रभाव हल्का ही होगा।

खाना नं० 3 :-

अगर गंदा आशिक हो तो राहु और शुक्र दोनों का ही पूरा बुरा असर होगा। जातक बदनाम और स्वार्थी, बुध का समय और बुध की गंदगी के कारण से 34-17 साल लगातार नुक्सान ही नुक्सान होगा।

खाना नं० 5 :- मृत्यु अचानक हो।

खाना नं० 6 :-

1. बुध कायम और सूर्य दृष्टि के हिसाब से (खाना नं० 2) मंदा, दोनों ही का नेक असर कम होता जाये।

–जब पाँव की कनिष्ठका, अनामिका से बहुत बड़ी हो।

2. मनहूस जलील और मंद भाग्य होगा, आयु लम्बी होने की कोई तसल्ली नहीं।

–जब पाँव की कनिष्ठका, अनामिका से बहुत लम्बी हो।

खाना नं० 7 :-

1. स्त्री का फल (संतान केतु) मंदा है, स्त्री स्वयं इतना सुख न पाये, ससुराल बर्बाद या संतान की उम्र के तकाजे हो। जब शुक्र मंदा खराब या बर्बाद हो।

2. बुध की 34 साल की उम्र या खाना नं० 9 के ग्रह की आयु तक सूर्य को बुध न ही कोई ऐसी मदद दे न ही उसके असर को चमकने दे। बल्कि लोगों में बेइतबारी और हकीरता (हसद) ही पैदा करे और सूर्य (राजदरबार) पर स्याही फैंकता होगा मगर ग्रहण नहीं लगायेगा। मगर फर्जी रेत तो ज़रूर होगा और राजदरबार में नीच सूर्य का नज़ारा पेश होगा।

–जब खाना नं० 9 में ऐसे ग्रह तो चाहे बुध के शत्रु हो यानी चन्द्र, मंगल, वृहस्पति हो।

खाना नं० 8 :-

खाना नं० 2 के ग्रह अगर कोई भी हो बर्बाद होंगे और बुध की चीज़ें काम संबंधी यानी बहन, बुआ, फूफी, मासी आदि की हालत मंदी होगी। जातक लड़ाका, बेरहम, बेचलन होगा और हो सकता है कि लड़ाई–झगड़े में ही मारा जाये।

–जब मंगल बद हो।

खाना नं० 9 :-

जब बुध मंदा हो तो 17 से 27 साल की उम्र तक मंदा होगा यानी अगर एक लानत हटी तो कोई न कोई दूसरी खड़ी होगी। नर संतान अमूमन 34 साल की उम्र से पहले शायद ही कायम होगी स्त्री के टेवे में नर संतान 22 साल की उम्र से पहले शायद ही होगी। मंदी हालत के समय सूर्य या मंगल के नेक कर लेने का उपाय सहायक होगा। इतवार या मंगलवार के दिन पैदा हुई लड़की के वक्त किसी उपाय की ज़रूरत न होगी, सब कुछ अपने आप ही उत्तम हो जायेगा।

खाना नं० 10-

शनि का बुरा फल अब शामिल होगा। बदनामी में मशहूर ही होगा और अपने काम स्वयं ही बिगाड़ेगा।

खाना नं० 11 :-

जब उसके मकान में ज़हर या मंदे काम करने वाले लोग रहे तो वह ज़हर टेवे वाले पर मंदा असर करेगी।

खाना नं० 12 :-

गृहस्थी हालत में बुध की चीज़ें (जानदार और बेजान दोनों) कारोबार, रिश्तेदार (बुध से संबंधित) नाहक खर्चे और जहमत का बहाना होंगे। शरीर बीमार, नाड़ियों में खराबियां, मूर्च्छा, मिरगी तक हो सकती है बुध अब खाना नं० 6 के ग्रहों को बर्बाद कर देगा।

सूर्य और शनि

रवि, शनि दोनों इकट्ठे बैठे, झगड़ा कोई नहीं करता हो।
कारण किसी हो जब कभी लड़ते, बुध ज़हर आ भरता हो।
नतीजा वही जो रवि हो टेवे, शनि शक्की ही होता हो।
झगड़ा दोनों का लम्बा बढ़ते [1], नीच राहु बद मंगल हो।
आग़ घटनाएं मूल्य कौड़ी, चीज़ें शनि सब मंदी हो।
शनि जलावे ताकत शरीरी, रवि स्वास्थ्य शरीरी को।
काम उत्तम ज़र चाँदी होगा, हालत विद्या की फलता हो।
बुध साथी से दोनों उत्तम, असर उत्तम सब करता हो।

शत्रु ग्रहों (शुक्र, पापी) के साथ बैठा हुआ सूर्य (चाहे किसी भी घर में हो) उसके साथ बैठे हुए शत्रु ग्रह [2] की उस खाने की संबंधित चीजों पर बुरा असर होगा और ऐसी हालत में 22 से 45 साल की आयु के बीच शत्रु ग्रह अपनी-अपनी मियाद पर बुरा असर देंगे। शत्रु ग्रह को बुध की पालना से नेक कर लेना शुभ होगा मगर सूर्य के मित्र (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) भी साथ हो तो दोस्तों की संबंधित चीजों पर मंदा असर होगा, शत्रु बचा रहेगा।

1. सूर्य , शनि मुश्तरका में जब जहाँ और कहीं भी दो में से किसी का फल खराब हो, टेवे में 22 से 36 साल की उम्र तक राहु भी मंदा और मंगल बद का असर होगा। प्यार या मिट्टी की पूजना बहाना होगी। बेईमानी से शुक्र बर्बाद होगा।
2. सूर्य और शनि की संबंधित चीज़ें।

खाना नं०	सूर्य और शनि की संबंधित चीज़ें
1.	हलक का कौआ, आग़ से जलता।
2.	माह साबुत।
3.	पुरानी किस्म की लकड़ी, बेरी, कीकर।
4.	मकानों में काले कीड़े।
5.	सुरमा काला, बुद्धू लड़का।
6.	कौआ, पूरा काला कुत्ता।
7.	दरिन्दे, सुरमा सफेद, आँख की शक्ति, काला अनाज।
8.	पुड़पुड़ी (कनपटी), बिच्छू।
9.	आक, टाली, फलाही।
10	मगरमच्छ, जाती घर का मकान।
11.	लोहा।
12.	गृहस्थी परिवार, मछली, तख्तपोश, सिर पर गँज।

बंदर और बैया की कहानी :-

घर बसाने की आदत वाली बैया की बरसात में बंदर को, जो घर नहीं बनाता नसीहत पर बंदर उसका भी घोंसला उजाड़ता हो। ऐसा इस प्राणी का भाग्य हो। जब वह अपनी मदद के लिए हाथ बढ़ाये तो साँप अपने ज़हरीले दाँत से सब कुछ बर्बाद कर देगा।

खाली बुध का व्यर्थ प्रभाव होगा जो बुध की शक्ति विद्या दे अर्थ है और जिसमें शनि का मंदा फल शामिल होगा। विचारों की स्वतन्त्रता, समय के अनुसार फौरन, लट्टू की तरह बदल जाने वाला होगा। प्रभाव का समय बुढ़ापे से संबंधित होगा। सूर्य, चन्द्र और वृहस्पति उत्तम फल देंगे दोनों ग्रह धन के लिए 46 साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे और शनि इस मिलावट में 2/3 भाग होगा। दोनों ग्रह पिता की आयु के वास्ते 40साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे और शनि इस मिलावट में 1/2 होगा। दोनों ग्रह दुनियावी सुख वास्ते 34 साल की उम्र तक इकट्ठे होंगे, शनि का भाग 1/3 होगा।

मुश्तरका हालत में सूर्य (बन्दर) और शनि (साँप) की आपसी लड़ाई के हाल की तरह भाग्य में जमा सूर्य माईनस शनि बराबर ज़ीरों होगी। दोनों की आपसी दुश्मनी से शुक्र (स्त्री और स्त्री भाग्य) बर्बाद होगा मगर संतान पर बुरा न होगा, बल्कि ऐसी मुश्तरका हालत में शनि का साँप गर्भवती स्त्री के सामने आया हुआ अंधा हो जायेगा और उस पर कभी हमला नहीं करेगा और न ही अकेले बेटे पर कभी डंक मारेगा, यानी सूर्य, शनि मुश्तरका की टेवे वाले की स्त्री पर जबकि वो गर्भवती हो या ऐसे टेवे वाले के इकलौते बेटे पर साँप कभी हमला न करेगा बल्कि किसी तरह से भी खुद शनि की चीज़ों काम या संबंधी ताल्लुक में उसकी गर्भवती स्त्री और इकलौते बेटे पर बुरा असर न देगा। दोनों मुश्तरका में किस्मत का फैसला सूर्य रेखा से होगा।

क्याफा

सूर्य रेखा से अगर शनि की उम्र रेखा का संबंध हो जाये तो आग़ की घटनाएँ होंगी। अगर किसी कारण से ऐसी शक्तिशाली रेखा किसी मामूली हाथ में हो तो भी सूर्य, शनि का मुश्तरका बुरा असर होगा। लेकिन अगर सोने-चाँदी या आग़ के कामकाज वाला हो तो शुभ होगा अर्थात् शक्तिशाली सूर्य आग़ पैदा कर देगा जिसके शनि का सामान तो स्याही का असर देगा मगर सूर्य, चन्द्र

और वृहस्पति उत्तम फल देंगे। बिना सूर्य रेखा मनुष्य जीवन की कोई कीमत न होगी। जनमुरीद होगा और अगर सूर्य का पर्वत भी कायम न हो तो उसे संसार में सिवाय प्यार के कुछ नज़र ही न आएगा। सूर्य (बन्दर) शनि (साँप) दोनों की लड़ाई का हाल उनकी आपसी शत्रुता का सबूत मस्तिष्क में लाएगा।

नेक हालत

दोनों का नेक और उत्तम फल होगा, सोने-चाँदी और आग के काम सहायक होंगे।

–जब दोनों मंगल के घर खाना नं० 1 या मंगल किसी तरह दृष्टि से देख रहा हो।

खाना नं० 1 :- **ब्रह्मज्ञानी होगा।**

खाना नं० 5 :- **मज़बूत स्वभाव होगा।**

खाना नं० 6 :-

तकिया मुसाफिर अगर बुध और चन्द्र दोनों कायम हो तो सूर्य का फल थोड़ा उत्तम, स्त्री का सुख पूरा उत्तम हो।

–जब सूर्य कायम शनि मंदा हो।

क्याफा **पाँव की मध्यमा अनामिका से छोटी हो।**

खाना नं० 9 :- **धनी मगर स्वार्थी होगा।**

खाना नं० 12 :-

शनि, रवि न झगड़ा करते, न ही खुद शुक्र मंदा हो।
प्रभाव समय पर उत्तम देते, मर्द, औरत सब सुखी हो।।

अब दोनों ही ग्रहों का उत्तम और नेक फल होगा बल्कि शुक्र भी मंदा न होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

खुद अपना घर फूंक तमाशा देखने वाला होगा। शनि का सामान स्याही का मंदा असर देगा। दो मुँह का साँप मसनुई मंगल बद और नीच राहु की शरारत का असर मौजूद होगा। मंदी उर्ध रेखा होगी। कीकर का वृक्ष मंदे असर की निशानी होगी। जवानी में कष्ट, स्वास्थ्य की खराबियां और राजदरबार की कमाई बर्बाद होगी। लट्टू की सूई की तरह घूम जाने वाला गैर तसल्लीबख्श-अविश्वसनीय मित्र होगा।

सूर्य की आयु 22 साल या शनि की आयु 36-39 साल तक राहु नीच या मंगल बद होगा चाहे टेवे में राहु किसी भी अच्छे घर बैठा हो और मंगल कैसी भी ऊँची जगह पर हो।

–जब किसी ऐसे घर में जिस जगह दोनों में से एक का असर मंदा हो।

घर बैठक के लिहाज से अगर सूर्य प्रबल हो तो शनि कमज़ोर होगा तो शारीरिक शक्ति उत्तम हो बदन का ढांचा कमज़ोर होगा। यह दो जुदा-जुदा बातें है अर्थात् बिज़ली की लहर को अगर मनुष्य की शक्ति माने तो बिज़ली की लहर को काबू में रखकर चलाने वाली चीज का ढांचा इंसान का जिस्म गिने, इसी तरह लहर एक ताकत है तो बदन एक वज़ूद होगा। यानी ये दो अलग-अलग होगी, जो शक्ति और ढांचे से मानी जायेगी।

उपाय

संसार में सूर्य ग्रहण के समय शनि की चीज़ें (बादाम, नारियल आदि) चलते पानी में बहाना शुभ होगा। टेवे में सूर्य ग्रहण से सूर्य, राहु मुश्तरका अर्थ नहीं है। दोनों ग्रहों की मुश्तरका हालत में अमूमन स्त्री का जीवन बर्बाद हुआ करता है। खासकर उस वक्त जब दिन के वक्त बच्चे बनाने की कोशिश की जाये। मंदे प्रभाव के बचाव के लिए ख्याल रखा जाये कि ऐसा पुरुष या स्त्री, शनि के ग्रह का पुरुष या स्त्री न हो यदि ऐसे पुरुष या स्त्री की शादी हो चुकी हो तो स्त्री के सिर के बालों पर तीनों ग्रहों से संबंधित चीज़ें किसी भी शक्ल में (त्रिकोण को छोड़कर) कायम करें।

चीज़ें :- तांबा (सूर्य) के टुकड़े में (वृहस्पति) सोना और लाल मूंगा। मंगल सुर्ख पत्थर बनाकर कायम करें।

खाना नं० 1 :-

मच्छ रेखा और काग़ रेखा मुश्तरका बनावटी मंदा बुध होगा, कौवे समान फरेबी या उसके स्वभाव का होगा। राहु, केतु दोनों ही मंदे होंगे। सूर्य (बाप) कमाये शनि (बेटा) उड़ाये या सूर्य से संबंधित काम संबंधी या चीज़ें सूर्य का फल अगर उत्तम हो तो शनि की चीज़ें काम संबंधी बर्बाद या बर्बादी का सबक होंगे। दोनों ग्रहों के झगड़े में शुक्र (स्त्री, स्त्री भाग्य) बर्बाद होगा।

खोटे कर्मों का भण्डारी या उसके हर काम में खोटापन कुदरती तौर पर खड़ा होगा। सरकारी नौकरी में हर तरह की खराबियां हो। जब कभी सूर्य, शनि इकट्ठे किसी ऐसे घर के वर्षफल में आ जाये, जहाँ सूर्य का असर मंदा हो तो पागलखाना, जेलखाना नसीब होगा। -जब वृहस्पति, चन्द्र खाना नं० 12, शुक्र और बुध खाना नं० 2 में हो।

जन्म कुण्डली	वर्ष कुण्डली	प्रभाव
सूर्य, शनि, खाना नं० 1	सूर्य, शनि खाना 7	जेलखाना या पागलखाना मिलेगा।
वृहस्पति, चन्द्र, शुक्र खाना नं० 12	वृहस्पति, चन्द्र, शुक्र खाना नं० 2	जेलखाना या पागलखाना मिलेगा।
बुध खाना नं० 2	बुध खाना नं० 5	जेलखाना या पागलखाना मिलेगा।

खाना नं० 5 :-

अगर शनि अपने जाती स्वभाव के हिसाब से मंदा हो तो खाना नं० 5 में आने के दिन से 9 साल मंदे होंगे और हर तरह का भय बना रहेगा।

खाना नं० 6 :-

हालत मंदी बुध हरदम मंदा, भला चन्द्र न रहता हो।
चलते सीधे शनि रास्ते भूला, असर शक्की सब देता हो।
बुध, चन्द्र जब होंगे उत्तम, केतु मंदा आ होता हो।
कुत्ता मुबारक काला पूरा, वर्ना सोना उड़ जाता हो।

1. शनि का असर केतु के लिए (संतान, केतु की चीज़ें बगैरा) मंदा होगा। सोने की जगह मिट्टी के तवे अति मंदा और गरीबी का साया और पूरा काला कुत्ता सहायक हो। घर में यदि कोई लड़का स्वास्थ्य और आँखों से रद्दी हो जाये तो उस लड़के की 18 साल की उम्र के बाद घर से गया हुआ सोना वापस आ जाएगा।
2. आम तौर पर 6 बाकी बचने वाले मकान की तरह तकिया मुसाफिर मंदा हाल ही होगा। जिसके लिए ऐसे मकान में बुध की संबंधित चीज़ें जैसे हरे-भरे पौधे, खिल-खिलाते फूलों के गमले, मीठी आवाज़ करने वाले पक्षी या राग-रंग का सामान कायम रखना या कायम रहना शुभ होगा।

-जब खाना नं० 2 की दृष्टि की रुह के कारण से अगर सूर्य मंदा और शनि कायम हो।

3. स्त्री का सुख हल्का होगा। -जब सूर्य मंदा शनि कायम हो।

क्याफा पाँव की अनामिका, मध्यमा से छोटी हो।

उपाय

आबादी से बाहर जहां कोई वहम न करे, चौराहे में पक्की शाम के समय बुध की चीज़ें (फूल या नीले रंग के कांच के मोती) दबाना सहायक होगा।

खाना नं० 7 :-

राजा की कैद में जाए। -जब बुध खाना नं० 5, चन्द्र पहले घरों में हो।

खाना नं० 8 :-

जब सूर्य, शनि खाना नं० 8, राहु खाना नं० 11, वृहस्पति खाना नं० 12 में हो तो शनि की मियाद 36 साल की उम्र पर शनि विषैला साँप होगा। ऐसे समय में खासकर मकान की दीवारों में शनि की मूर्ति टेवे वाले के भार के बराबर बंद हो। वर्षफल के हिसाब शनि मंदा हो जाये और कारोबार भी शनि के किए जाए तो शुद्ध विष की घटनायें होंगी। मसलन 37 साल की आयु में शनि/सूर्य खाना नं० 5 में आये तो मकान खरीदे जाये और शनि की चीज़ें सरसों/खल का व्यापार किया जाये तो व्यापार और संतान गर्क हो।

उपाय

मूर्ति को हवा पहुँचाने के लिए दीवार में सुराख कर देने से संतान का सांस बंद न होगा।

खाना नं० 9 :-

खाना नं० 3 और खाना नं० 9 दोनों ही के ग्रह और दोनों ही घर बर्बाद होंगे और मंदा असर देंगे।

-जब बुध खाना नं० 3 का संबंध या मंगल बद हो।

खाना नं० 10 :-

संसारी तोहमत से नाहक मरता, दुगुनी ताकत वो चलता हो।
बुध जभी पर 8 वें बैठा, कैदी राजा का होता हो।।

-जब बुध खाना नं० 10में हो तो दूसरों की तोहमत या बदनामी से नाहक आ मरें या मारा जायेगा चाहे सूर्य, शनि हो खाना नं० 10में चाहे इन दोनों के बनावटी हिस्से यानी (शुक्र, बुध बनावटी सूर्य, वृहस्पति, शुक्र, बनावटी शनि)।

खाना नं० 11 :-

वही असर जो खाना नं० 9 में दिया है मगर सिर्फ मंदा हिस्सा ही होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दे।

सूर्य और राहु

ग्रहण रवि [1] की किस्मत होती, वर्ना उम्र छोटी मरता [2] हो।
उम्र राहु औलाद हो शक्की, राज कमाई जलता हो।

1. किस्मत की चमक और वृहस्पति का असर राजा की जगह चोर का होगा। बेईमानी जिसके लिए पहला कदम होगी और अपने विचारों की गंदगी से सूर्य ग्रहण होगा। सूर्य, राहु शरारती हिलता हुआ हाथी दोनों मुश्तरका के वक्त वृहस्पति की हवा बर्फानी मायूस लगेगी।
2. 45 साल की उम्र तक।

शत्रु ग्रहों (शुक्र, पापी) के साथ बैठा हुआ सूर्य (चाहे किसी भी घर में हो) इस साथ बैठे हुए शत्रु ग्रह की उस खाने से संबंधित चीजों पर बुरा असर देगा। ऐसी हालत में 22 से 45 साल की आयु के बीच शत्रु ग्रह अपनी-अपनी मियाद पर बुरा असर देंगे। शत्रु ग्रह को बुध की पालना से नेक कर लेना सहायक होगा, अगर सूर्य के मित्र (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) भी साथ हो तो मित्रों की संबंधित चीजों पर मंदा असर होगा, शत्रु बचा रहेगा।

खाना नं०	सूर्य और राहु की चीजें
1.	ठोडी, नाना-नानी।
2.	हाथी के पाँव की मिट्टी, ससुराल, सरसों, कच्चा धुआँ, घर का भेदी चोर।
3.	हाथी दांत अशुभ, जीभ का तेदुआं, जौ (अनाज)।
4.	स्वप्न या स्वप्न का समय, धनिया (मसाला), सोया हुआ दिमाग़।
5.	छत, संतान का सुख और आयु।
6.	पूरा काला कुत्ता।
7.	सट्टे का व्यापार।
8.	झूले की बीमारी।
9.	दहलीज नीला रंग, हल्क (गला) से ऊपर की बीमारियां।
10	घर की गंदी नाली।
11.	नीलम।
12.	कोयला, हाथी, खोपड़ी।

सूर्य के लिए राहु का साथ उसके आगे एक चलती रहने वाले दीवार की तरह सूर्य ग्रहण का समय होगा, यानी सूर्य की रोशनी तो होगी मगर उस धूप में गर्मी न होगी। वह धूप चाँद की चाँदनी की तरह लगेगी। राजदरबार में हर बात उलझी हुई मालूम होगी, मगर ग्रहण के दूर होते ही जिस तरह सूर्य की रोशनी दोबारा हो जाती, उसकी तरह भाग्य का हाल होगा यानी राहु का बुरा असर खत्म होते ही सब कुछ दोबारा आ जायेगा जैसे कि ग्रहण से पहले था। ऐसे टेवे में मंगल खुद राहु को दबाता होगा। सूर्य ग्रहण (सूर्य, राहु, मुश्तरका) के मंदे समय में अगर शुक्र, बुध इकट्ठे हो या वो दृष्टि के हिसाब से जिसमें बुध की दृष्टि (नाली) भी शामिल है आपस में मिल रहे हों तो सूर्य ग्रहण का बुरा असर न होगा। राजदरबार से किसी न किसी तरह मदद ज़रूर ही मिलती और धन की आय होती ही रहेगी। सूर्य 39 साल में और 39 साल तक चमक देगा यानी 39 से 78 साल की आयु तक सूर्य का असर उत्तम होगा। ग्रहण का समय 2 साल और कुल समय 22 साल हो सकता है।

नेक हालत

खाना नं० 5 :-

राहु की आयु तक सदारत (सब तरह से पूरी शक्ति वाला) का स्वामी मगर मामूली मुंशी या क्लर्क न होगा।

मंदी हालत

ग्रहण का मंदा समय अमूमन उस समय अपने पूरे ज़ोर पर होगा जबकि सूर्य, राहु दोनों मुश्तरका कुण्डली के खाना नं० 9 या 12 में हो।

1. राहु मुंचाल तो सूर्य आग होगा जिस घर में बैठे हो न सिर्फ वहां ही मंदा प्रभाव होगा बल्कि साथ लगता घर भी जलता होगा मसलन दोनों खाना नं० 6 में हो तो राहु दृष्टि के हिसाब से न सिर्फ खाना नं० 12 पर असर करेगा बल्कि अब खाना नं० 7 भी जो कि खाना नं० 6 के साथ लगता है मंदा हो रहा होगा।

2. संतान मंदी, 21 साल की (राहु की पूरी उम्र वर्ना राहु की आधी उम्र तक) अगर मंगल किसी तरह से भी राहु को दबाता न हो या खुद ही मंगल मंदा हो तो या राहु, सूर्य ऐसे घरों में हो जहां से कि राहु (हाथी) खुद ही मंगल (महावत) पर कीचड़ फैंक सकता हो तो ऐसे टेवे वाले की उत्तम सेहत और लम्बी आयु दोनों ही शक्की होगी। किस्मत के मैदान में सूर्य ग्रहण की हालत का नज़ारा होगा। राजदरबार से खराबी (सिवाय ख़ाना नं० 5) खुद अपने दिमाग़ की पैदा की हुई खराबियों के कारण हो हानि या फ़िज़ूल खर्च होंगे। जिस्म की त्वचा पर काले-सफेद धब्बे होंगे मगर फुलबहरी न होगी।

उपाय

1. ***चोरी या गुमनाम नुक्सान हो जाने से बचाव के लिए जौ को बोझ तले अंधेरी जगह रखना सहायक होगा। बुखार के समय :-जौ और गुड़ का दान सहायक होगा या जौ को दूध में धोकर या गाय के पेशाब में धोकर दरिया में बहा दें।***
2. ***सूर्य की चमक को ठीक करने के लिए शुक्र, बुध मुश्तरका या शुक्र और बुध अकेले-अकेले में से किसी एक की चीज़ों के दान से कल्याण माना है।***
3. ***सूर्य ग्रहण के समय राहु की चीज़ों को (सूर्य के शत्रु ग्रहों की खासकर) नदी-नाले के चलते पानी में बहाना शुभ सहायक होगा।***

राहु और सूर्य के आपसी झगड़े के समय यानि जब राहु और सूर्य दोनों ही का असर बुरी तरह तंग कर रहा हो तो तांबे का पैसा रात भर आग़ में जला कर बहुत सवेरे नदी-नाले या जंगल में चलते पानी में बहाना शुभ होगा। रात भर आग में जलाने का अर्थ कम से कम 12 घण्टे आग़ में रखने से हैं। जला हुआ पैसा ले जाते समय ख्याल रहे कि अपना कोई बच्चा सामने न आये वर्ना उस पर मंदा असर गिना जायेगा।

खाना नं० 1 :- जन्म से ही अन्धा होना माना है। -जब शनि या मंगल या दोनों ही खाना नं० 5-9 में हों।

खाना नं० 3 :- 34 साल की आयु तक बुध और केतु दोनों ही ग्रहों का फल मंदा ही होगा।

खाना नं० 5 :-

संतान चाहे 21 साल की उम्र तक व्यर्थ, मगर राजदरबार में कोई खराबी न होगी।

ससुराल और मामा घर दोनों ही राहु की आयु (101/2, 5, 21, 42) तक मंदे निर्धन, मामूली आई-चलाई होती रहे। चन्द्र बर्बाद ही लेंगे। -जब दोनों खाना नं० 5, चन्द्र खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 9-1011-12 :-

घर 9-12 ग्रहण रवि का, वहम उम्र नहीं होता हो।
दोनों बैठे घर 10या 11, आयु शक्की का होता हो।
आयु मंदी खुद करने वाला, 8 वें साथी ग्रह होता जो।
शनि बैठा हो मंदे टेवा [2], नष्ट हुआ या मंदा हो।
दोनों तभी घर 10वें बैठे, शनि दूजे ग्रह [1] मंदा हो।
मदद मंगल न गुरु खुद पाये, उम्र 22 का होता हो।

उम्र सिर्फ 22 साल शर्त ये कि नर ग्रह साथी या सहायक न हो वर्ना आयु लम्बी (दोनों खाना नं० 1011 में हों) हो। खाना नं० 9-12 में दोनों इकट्ठे हों तो सूर्य ग्रहण का समय होगा।

1. शनि मंदा जब खाना नं० 2 में स्त्री ग्रह बैठे हों।
2. शनि खुद नष्ट मंदा या आयु को रद्दी कर रहा हो।

सूर्य और केतु
(कानों का कच्चापन बर्बादी दे, सूर्य का असर मध्यम हो)

गर्मी सूर्य जब साथ हो मिलती,	*केतु होता [1] खुद रद्दी [2] हो।*
स्त्री, लड़का बर्बाद गृहस्थी,	*बेटा, पिता पर भारी हो।*
राज कमाई मालिक टेवे,	*बर्बाद बेटे से होती हो।*
कुत्ता रोए मुंह सूर्य करके,	*निशानी थैली न कोई हो।*
पोता उम्र तो केतु तरसे,	*आयु मगर खुद लम्बी हो।*
नुक्सान सफ़र में अक्सर होते,	*सूर्य चमकता गर्मी जो।*
राज खराबी या ज़र मंदे,	*शुक्र, केतु न उम्दा जो।*
पेशाब गाय का धरती पर छिड़के,	*केतु, शुक्र, बुध उम्दा हो।*

1. औलाद, मामू, केतु की चीज़ें या काम।
2. फ़िज़ूल व्यर्थ, पाँव चक्कर मंदी निशानी होगा।

शत्रु ग्रहों (शुक्र, पापी) के साथ बैठा हुआ सूर्य (चाहे किसी भी घर में हो) उस साथ बैठे हुए दुश्मन ग्रह की, उस खाने से संबंधित चीज़ों पर बुरा असर देगा। ऐसी हालत में 22 से 45 साल की उम्र के बीच शत्रु ग्रह अपनी-अपनी मियाद पर बुरा असर देंगे। शत्रु ग्रह को बुध की पालना से ठीक कर लेना सहायक होगा। अगर सूर्य के मित्र (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) भी साथ हों तो मित्रों से संबंधित चीज़ों पर बुरा प्रभाव होगा। शत्रु बचा रहेगा।

खाना नं०	सूर्य और केतु की चीज़ें
1.	नानके का घर (ननिहाल)।
2.	इमली, तिल।
3.	रीढ़ की हड्डी, फोड़े-फुंसी।
4.	सुनना।
5.	पेशाबगाह।
6.	पूजा स्थान।
7.	दूसरा लड़का, सूअर और गधा।
8.	कान, छलावा।
9.	दोरंगा कु त्ता।
10	चूहा।
11.	दोरंगा कीमती पत्थर।
12.	छिपकली, मतबन्ना (दत्तक)।

नेक हालत

भाग्य के मैदान में चाहे चन्द्र, सूर्य ऐसा उत्तम असर न देगा मगर फिर भी सिर्फ बादल का साया होगा। सूर्य ग्रहण न होगा पर मध्यमा ज़रूर होगा।

मंदी हालत

सूर्य का फल मध्यमा होगा। सफ़र में हानि, दूसरों की सलाह से खराबियाँ, अपने पाँव से पैदा की हुई बुराईयाँ गिरावट का कारण होगी। टेवे वाले के लड़के की औरत चाहे मोटी ताजी मगर बदज़ुबान और स्वयं टेवे वाले का लड़का टेवे वाले की राजदरबार की कमाई में मंदा धक्का लगाने वाला बर्बाद करने वाला साबित होगा। कुत्ता ऊपर को मुंह करके रोता हुआ मंदे समय के आने की पहली निशानी होगा। औलाद का सुख मंदा और टेवे वाले का अपने पोते-पड़पोते शायद ही देखने को मिले। मगर उसकी अपनी आयु पर बुरा असर न होगा।

खाना नं० 2 :-

मंदा तूफान, खुद केतु बर्बाद, मामे मंदे, औलाद बर्बाद, पेशाब की नाली से टेवे वाला हरदम दुखिया होगा।

****

चन्द्र और शुक्र

(गले में चाँदी सहायक)

हाल घरों का हर दो [1] मंदा, ससुर मामों का होता हो।
माता स्त्री जब साथ इकट्ठा, एक आँख से दुखिया हो।।
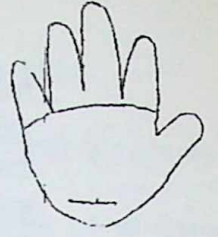
1. शुक्र का घर 2-7 और चन्द्र का घर 4 हो।

दोनों ग्रह 37 साल की आयु तक मुश्तरका गिने जायेंगे मुश्तरका मिलावट में शुक्र पूरा तो चन्द्र आधा होगा। दूध में मिट्टी मिली हुई की तरह प्रभाव होगा या ऐसा पानी जिसमें मिट्टी घुली हुई हो। किस्मत कीचड़ की तरह होगी। दोनों ग्रहों के अपने-अपने घरों का हाल मंदा ही होगा यानी शुक्र (स्त्री), नूह (बहू) और उसका प्यार (स्त्री के माता-पिता टेवे वाले के ससुराल), चन्द्र (सास) और उसका घर माता खानदान, आयु दोनों ही ग्रहों का हाल मंदा ही होगा। बारीक उड़ने वाली कण-कण हुई मिट्टी को शुक्र और जमकर एक ही तह बनी मिट्टी को चन्द्र की धरती माता कहते हैं। खेतीबाड़ी की ज़मीन को शुक्र और मकान की तह यानी नीचे की धरती को चन्द्र कहते हैं। शुक्र दही और चन्द्र दूध हो। रंग में दोनों सफेद। मगर उस सफेदी में फर्क है कि शुक्र के सफेद रंग में दही की सफेदी और सूती सफेद कपड़े शुक्र से संबंधित है। मगर दूध के रंग की सफेदी और सफेद रेशमी कपड़े चन्द्र से संबंधित होंगे। खेती वाली ज़मीन में अगर खेती की हुई हो तो वह शुक्र कहलाएगी मगर यदि खेती खाली हो तो वह चन्द्र कहलाएगी।

नेक हालत

दोनों ही ग्रहों का छुपा हुआ और बाह्य फल उत्तम और प्रबल होगा। खुसरा गाय (ना बैल ना गाय), ना अमीर ना गरीब, ना ज़िंदा ना मुर्दा, साधारण जीवन व्यतीत करने वाला होगा। चन्द्र को अगर दुनियावी धन-दौलत माया ज़र माने तो शुक्र जगत् लक्ष्मी, बोलती हुई मिट्टी की तस्वीर होगी। फर्क ये है कि चन्द्र, चांदी ठोस धातु अगर दिल की शांति के लिए संसारी शक्ल में रुपया पैसा हो तो शुक्र की जानदार चीज़ें (गाय, बैल, स्त्री गृहस्थी हालत की जगत् लक्ष्मी) रात का आराम देंगे (खाना नं० 12 रात का आराम जहाँ शुक्र उच्च माना है)। संक्षेप में- चन्द्र माया दौलत बेज़ान हालत में दौलत है तो शुक्र जानदार हालत में लक्ष्मी का सुख माना है।

खाना नं० 2 :-

काम दवाईयां दौलत देती, हकीम बेशक न होता हो।
बच्चे ज़रूर ठीक हो जाते, पहचान बीमारी न करता हो।
गुरु निकम्मा होगा उसका, इश्क बुढ़ापे बढ़ता जो।
असर मंदा दो शादी होगा, नया कुआँ जब लगता हो।

दवाईयों के काम से फायदा हो। खुद हकीम होने की शर्त न होगी, इश्क में कमाल दर्जे का कामयाब होगा।

क्याफा

दिल रेखा का वृहस्पति के बुर्ज नं० 2 में हिस्सा, प्यार रेखा के नाम से होगा।

खाना नं० 4 :-

दसवें शनि जब टेवे बैठा, उत्तम माता शुभ होती हो।
पिता अमोलक गिनते उसका, दसवें रबि जब साथी हो।
रवि बैठा घर 5 वें उसका, माता-पिता साथ लम्बा हो।
शुक्र असर ना होगा मंदा, दूध दही घर भरता हो।
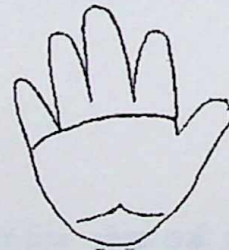
क्याफा

1. फकीरी रेखा :- चन्द्र से शुक्र को सीधा खत कामदेव दुनियावी प्रेम और इश्क फाहशा से दूर, फकीर कमाल का होगा।
2. शरारत रेखा :- चन्द्र से शुक्र के बुर्ज को बीच में से उठी हुई रेखा शरीफ वंश का माँ-बाप की तरफ से शुद्ध और भला लोग विशेषकर जब दृष्टि खाली हो।
3. माँ का नेक प्रभाव शामिल होगा। -जब शनि खाना नं० 10में हो।
4. पिता का नेक प्रभाव होगा। -जब सूर्य खाना नं० 3 में हो।

5. लड़कियों की तरह शर्मीला मगर बुद्धू नहीं -जब सूर्य खाना नं० 5 में हो।

खाना नं० 7 :- **काम दौलत से पूरा लेते, माया दौलत सब बढ़ता हो।**
वर्ना गाय हो खुसरा कहते, थोड़ा ऐबी 5 होता हो।

1. सुखी परहेजगार- धन का पूरा और नेक फायदा लें तो असर उत्तम, शराब न पिये, हर तरह बुरे काम से दूर रहे तो ठीक वर्ना वही धन पाँचों इन्द्रियों से ऐब करवा कर खत्म हो जायेगा। बाकी सात बचने वाले मकान के भाग्य का स्वामी होगा।
2. बाप का नेक असर शामिल होगा। -जब सूर्य खाना नं० 1 में हो।

खाना नं० 8 :-

सेहत और धन-दौलत के लिए बूढ़ी माताओं और शुक्र गाय सेवा या दान मुबारक होंगे। बाकी घर अपना-अपना फल होगा।

मंदी हालत

शादी के दिन से दोनों ही ग्रहों का सांसारिक फल खराब। माता न होगी अगर होगी तो अंधी होगी या औरत और माता में से दोनों में से एक ही सही सलामत हो। सास, बहू का झगड़ा होगा।

-जब चन्द्र किसी कारण से शुक्र को बर्बाद कर रहा हो तो बुध की मदद लें, दही से पानी निकालना हो तो दही (शुक्र) पर कपड़ा (चन्द्र) डाल कर राख (बुध) डाल दें, अब बुध (राख) पानी पी लेगा और शुक्र (दही) को खराब न करेगा। लेकिन अगर चन्द्र खुद ही शुक्र से बर्बाद हो रहा हो तो चन्द्र को मंगल की मदद दें।

खाना नं० 1 :- स्त्री का स्वास्थ्य मंदा बल्कि दीवानगी, पागलपन, स्मृति का खो जाना आदि होगा।

खाना नं० 2 :- दूध में खाँड की जगह मिट्टी मिली की तरह भाग्य का हाल होगा। वृहस्पति का असर किसी नेक फल का न होगा। संसारी प्यार में फंसा होगा। स्त्री से मिलन (मंदे अर्थों में) तबाही का कारण होगा।

खाना नं० 4 :- अगर उल्ट हुआ तो संसार से मदहोश, सभी नशों में गर्क रहने वाला होगा।

खाना नं० 7 :- **माता की आँखों पर झगड़ा हो, यानी उसकी नज़र कम या गुम हो जाये। शादी के दिन से धन बढ़ना बंद हो जाये।**

खाना नं० 8 :-

हीजड़ा बुद्धू बदचलनी बढ़ती, उजाड़ उल्लू कर देता हो।
सेवा गाय और माता बूढ़ी, सेहत दौलत सब पाता हो।
मकान धन सुख सांसारिक पूरे, प्रभाव शराफत रेखा हो।
सेहत स्त्री ज़र जब कभी मंदे, रक्षा बंधन शुभ होता हो।

नामर्द वर्ना बुजदिल हो। अपने ही मंदे कामों के कारण चन्द्र का धन और शुक्र का गृहस्थी का सुख बर्बाद हो। बदचलनी की बीमारी का संबंध हो या होगा जिससे अपनी की हुई बेवकूफियां तबाही का कारण होंगी।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

चन्द्र और मंगल

(श्रेष्ठ धन)

मीठी गुज़र हो दूध शहद, लाल नग, चाँदी धन माया हो।
आयु उत्तम और शती पूरी, दान देने से बढ़ता हो।
असर उत्तम ग्रह मंडल साथी, शर्त माया ना होती हो।
उच्च नज़र बुध अक्ल व्यापारी, शुक्र भला कुल पापी हो।
ऋण पितृ जब टेवे बैठा, आकाश-पाताल आ काँपता हो।
विसा कबीले खुद सिर लेना, जान जोखों कर जाता हो।

-जब दोनों ग्रह ऐसे घरों में हों जहाँ कि चन्द्र उत्तम और नेक हो तो 52 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे। जब दोनों ग्रह ऐसे घरों में हो जिस जगह कि मंगल उत्तम और नेक हो 38 साल की आयु तक मुश्तरका हो। जब दोनों ग्रह ऐसे घरों में हो जहाँ मंगल बद हो तो 33 साल की आयु तक इकट्ठे हो। मुश्तरका मिलावट में दोनों का

बराबर और नेक हिस्सा शामिल होगा। जब चन्द्र उत्तम हो तो मंगल का 1/2 हिस्सा लेकिन जब मंगल उत्तम हर तो चन्द्र का 2 गुना होगा। जब मंगल बद हो तो 1/3 हिस्सा बुरा मिला हुआ करेगा। दोनों 3-4-8 में होने पर मंगल बद कभी न होगा।

क्याफा × जब धन श्रेष्ठ रेखा चन्द्र के बुर्ज से शुरू होकर सिर रेखा से जा मिले और उसका झुकाव हो जाये तो नीचे दिए हुए ग्रहों की और प्रभाव होगा।

जिस ग्रह की और झुकाव हो	दृष्टि	असर
वृहस्पति	वृहस्पति दोनों को देखे या वे वृहस्पति को देखें।	सबसे उत्तम लक्ष्मी माया हो या मित्रों की पूरी सहायता होगी।
सूर्य	सूर्य दोनों को देखे या वे सूर्य को देखें।	राजयोग, आला ऑफिसर, सूर्य का उत्तम फल होगा।
शुक्र	शुक्र दोनों को देखे या वे शुक्र को देखें।	औलाद के विघ्न अपना धन बिना बरते चला जाये या धन का सुख ही न पाये।
बुध	बुध दोनों को देखे या वे बुध को देखें।	व्यापारी बहुत कुछ जानने वाला बुद्धिमान अक्ल का धनी मगर धन की शर्त नहीं। संसार से संबंधित मदद होगी।
शनि	जब शनि खाना नं० 1011 का न हो यानी शनि किसी भी और घर का हो।	शनि का पूरा नीच फल हो। जानवरों विषैले दरिन्दों से दुःख खतरा मौत तक हो। जिद्दी अहमक, मंद भाग विष खाकर मरे या हथियार से मौत हो।
केतु	केतु दोनों को देखे या वे केतु को देखें।	करीबी संबंधी लड़के, भतीजे सरकारी नौकरी में जाने की निशानी हो। मगर ये पैसा कमाकर या बचाकर न देंगे।

नेक हालत

1. दोनों का और नेक फल होगा। मधुपर्क दूध (चन्द्र) में शहद (मंगल) धन श्रेष्ठ रेखा होगी। दूध में खाँड मिली की तरह उम्दा जीवन होगा। संसारी गृहस्थी तथा लड़ाई-झगड़े में नेक फल देगा।

क्याफा

1. चन्द्र के पर्वत से निकल कर रेखा शुक्र के बुर्ज के रास्ते आयु रेखा के बराबर चलती हुई मंगल नेक तक चली जाये।
2. वही ऊपर की रेखा शुक्र के बुर्ज के रास्ते की बजाय चन्द्र से निकल कर आयु रेखा के बराबर मंगल के बुर्ज में समाप्त हो। धन श्रेष्ठ रेखा होगी जिसमें शनि की चालाकी या बेईमानी का प्रभाव न आया हुआ होगा।

खाना नं० 3 :-

बुद्धिमान बड़े ही धन-दौलत वाला अमीर कुबेर होगा। मगर उर्ध रेखा के धन की तरह दुष्ट भाग्यवान कहलायेगा जिसे किसी की परवाह न होगी।

खाना नं० 4 : धन-दौलत के खर्चे का स्वामी, बहुत उत्तम दौलत जब तक बुध और शनि का साथ खाना नं० 4-10 में न हो जाये।

खाना नं० 7 :- धन-दौलत और परिवार का धनाढ़य, बड़ा अमीर और बड़ा कबीला हो।

खाना नं० 9 :- खुद दुष्ट भाग्यवान मगर संतान उत्तम, धनवान हो।

खाना नं० 10-

शर्त माया न मंगल गिनते, शनि फैसला स्वयं करता हो।
बुध, मंगल बद नेक आ होते, राज खजाने भरता हो।
दृष्टि शर्त न घर दो गिनते, पाँच ज़हर न देता हो।
घर चौथे जब शत्रु बैठे, नाश दोनों ग्रह होता हो।

खाना नं० 11 :- धन का फैसला शनि की अपनी हालत पर होगा। शनि उम्दा तो धन भी उत्तम दिल
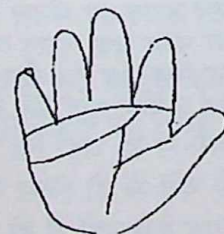
रेखा के अंत पर अगर
चौकोर [ ] चौरस हो तो सरकार के घर से पूरा-पूरा धन मिलेगा।

खाना नं० 12 :- दूध में शहद का जीवन, रात को हर प्रकार का आराम और दिल की शांति है।

मंदी हालत **खाना नं० 7 :-**

लालची पैसे का पुत्र। मौत सदमे या हादसे से हो। लाल रंग का साँप खज़ाने के ऊपर घर में बैठा होने की तरह बड़ों की माया का कोई फायदा न होगा। -जब शनि खाना नं० 1 में हो।

खाना नं० 9 :- मौत बुरी तरह सदमे से होगी।

खाना नं० 10:- मौत बुरी तरह हादसे से होगी, धन की अधिकता की कोई शर्त नहीं।

क्याफा दिल रेखा और गृहस्थ रेखा शनि के पर्वत या मध्यमा के नीचे मिले।

खाना नं० 11 :- वहमी लालची, अगर मंगल बद हो तो असफल आशिक औरतों के संबंध में व्यर्थ होगा।

क्याफा दिल रेखा का सिर्फ इतना ही हिस्सा जो कि वृहस्पति बुर्ज के अंदर हो प्यार रेखा के नाम से याद होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

चन्द्र और बुध

(माँ-बेटी [1], दरिया के पानी में रेत, तोता, मैना, हंस पक्षी, कुआँ सीढ़ियों वाला)

अपने घरों [2] खुद हर दो मंदे, साथ दृष्टि खाली जो।
नेक असर दे बाहर घरों से, पाई जगह चाहे मंदी हो।
नष्ट चन्द्र खुद हो शनि मंदा, संतान केतु न उत्तम हो।
शत्रु पापी से हर दो मंदा, माता बेटी न फलता हो।

1. बुध अब चन्द्र की बेटी होगी।

2. बुध का घर 3-6-7, दूध में मेंगने और खाना नं० 4 चन्द्र का घर दिल के दरिया में ही खुदकुशी तक की नौबत लेंगे। दोनों ग्रह 29 या 58 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे। चन्द्र नेक होने की हालत में बुध का 1/2 हिस्सा मंदा हो सकता है। बुध का नेक फल व्यापार आदि और चन्द्र का लाभ समुद्री सफ़र आदी 34 साल के बाद ही उत्तम होगा।

नेक हालत

1. दोनों ऐसे घरों में हों जहाँ कि बुध किसी तरह भी नेक हो रहा हो तो चन्द्र धर्मात्मा और नेक फल देगा।
2. दोनों ऐसे घरों में हो जहाँ कि किसी एक का फल मंदा हो रहा हो (बैठे हुए घर में केवल एक को अलग-अलग गिन कर) तो दोनों ही का फल उत्तम होगा।
3. जब दोनों अपने-अपने घरों यानी 4 (चन्द्र) और खाना नं० 7 (बुध का घर) से बाहर हो और दृष्टि के हिसाब हर तरह से खाली हो तो मान-सम्मान उत्तम धनवान होगा। मगर दिल का फिर भी डरपोक होगा।
4. जब दोनों मुश्तरका को वृहस्पति या सूर्य या शनि देखे तो नेक असर होगा।

खाना नं० 2 :-

पिता की उम्र अब कभी शक्की न होगी और न ही धन और पिता का बचाया हुआ धन बर्बाद होगा, बल्कि बुध अब मदद देगा।

खाना नं० 4 :- अमोलक हीरा, धन का गहरा दरिया जो हर तरह की शांति दे। छुपी हालत अच्छी होगी।

खाना नं० 6 :-

नज़र शक्की खुद ख़ूनी होता, माया दौलत चाहे लखपति हो।
मंगल चौथे घर आठवें बैठा, माता छोटी आयु मरती हो।।

माता-पिता का सुख सागर लम्बी अवधि एवं नेक होगी। बजाजी के काम से राजा समान होगा। मातृ हिस्से का नेक भाग होगा। बुद्धि कायम होगी मगर स्वभाव में एक ओर का फैसला लेने का स्वामी होगा।

खाना नं० 10- समुद्र और सफ़र दोनों मोती देंगे। वृहस्पति खाना नं० 3 का उत्तम फल साथ होगा। शेर की तरह के मकान की हैसियत होगी। जंगी या व्यापारी काम तथा मर्दों की बरकत होगी।

खाना नं० 11 :-

मोती समुद्र पैदा करती, रोज़ वारिश न होती हो।
वक्त शादी या अपनी लड़की, बारिश मोती की होती हो।।

समुद्र की सीप में मोती बनाने वाली बारिश हर रोज़ नहीं होती। लेकिन जब होगी तो मोती बना कर ही जाएगी। लड़की के शादी के दिन से शुभ फल पैदा होंगे। **नोट** बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

दोनों ऐसे घरों में हों जहाँ कि बुध का फल किसी तरह से निकम्मा हो रहा हो तो चन्द्र का संसारी फल भी निकम्मा और खराब ही होगा। प्यार के (गल्बा) चक्कर में बर्बाद होगा। बल्कि शनि भी भला न होगा। ऐसी हालत में चन्द्र का रुहानी फल उत्तम बल्कि प्रबल ही होगा। अगर पापी ग्रहों का संबंध हो जाये तो दोनों ही ग्रहों का दुनियावी और छुपा हुआ फल मंदा होगा।

जब दोनों को मंगल बद देखे, केतु का फल निकम्मा और केतु संबंधित संबंधी मामा आदि की ओर खराबियां ही होगी। मगर अपनी आयु लम्बी होगी। मूर्च्छा गोता, दिल की बीमारियां होगी। माता अंधी हो। (हाथ पर लिखा था)।

उपाय बुध के मंदे प्रभाव के समय राहु या मंगल बद की सहायता शुभ होगी।

खाना नं० 3 :- शनि और राहु बर्बाद और शुक्र का फल मंदा होगा खासकर जब खाना नं० 6 में बुध के मित्र यानी (सूर्य, शुक्र या राहु) न हो।

खाना नं० 4 :-

संसारी हाल मंदा ही होगा दोनों मुश्तरका ग्रह मंदे शनि का फल देंगे। चाँदी की जगह कलई होगी। चन्द्र का ज़हर बुध के रेत को और भी जलाता होगा या फर्जी वहम में अपने सिर की कमज़ोरी दिखलाएगा। मौका खुदकुशी तक होगी जिसका कारण गरीबी न होगी। बल्कि दिल का न होना या प्यार का गल्बा (दबाव) ही कारण होगा।

खाना नं० 6 :- ऐसा व्यक्ति ख़ूनी होगा। लाखोंपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता जाएगा मगर अक्ल की कोई पेश न जाएगी। 6 बाकी बचने वाले मकान की तरह तकिया मुसाफिर किस्मत होगी।

खाना नं० 7 :- दूध में रेत या बकरी दूध तो दे मगर मेंगने डालकर यानी हर दो तरह का फल खराब हो। लाखोंपति फिर भी दुखिया ही होगा। माता प्रथम तो न होगी अगर होगी तो अन्धी होगी, दिमागी, धक्के हो सकते है। हाथ से किए जाने वाले कारोबार से बर्बाद ही होगा।

खाना नं० 8 :- खाना नं० 4 की तरह का फल होगा।

खाना नं० 10- स्त्रियों और बच्चों के संबंध में कोई ऐसा अच्छा फल ना होगा, अगर खाना नं० 8 मंदा हो तो अति बुरी मौत का खतरा हो। मनहूस जीवन का स्वामी होगा।

खाना नं० 12 :- शनि का फल अब ज़हरीला होगा चाहे शनि टेवे में कैसा ही उत्तम क्यों न बैठा हो।

क्याफा जिसके सहारे दिमाग़ ने सोचा वो पहले ही रोता हुआ और आगे भागता नज़र आया।

चन्द्र और शनि

(पहाड़ों का सिलसिला)

पहाड़ शनि मैदान चन्द्र का, कोहसार समुद्र बनता हो।
एक भला तो दूसरा मंदा, मौत बहाने घड़ता हो।
ससुराल औरत के उसकी माया, काम अमूमन आती हो।
बदनाम हुआ मुँह दुनिया काला, ज़हर शनि में भरता हो।
शत्रु चन्द्र जब तख्त पर बैठे, चोरी हानि धन जाता हो।

उम्र शनि का साथी मिलते, पैदा दौलत खुद करता हो।
रवि हुआ जब टेवे मंदा, ज़हर शनि की बढ़ती हो।
जान शनि जो चीज़ दोरंगी, हमले संतान पर करती हो।
चमड़े का बटुआ, बक्स लोहे का, माया कमी जब होता हो।
जान चीजों पर बिज़ली कड़के, जहर दौलत सब बनती हो।
साँप (शनि), दूध (चन्द्र) पीता, ज़हर माता खुद देती हो।
दृष्टि मगर ग्रह जब कोई बैठा, जान शफा ज़हर बनती हो(बख्शने वाली)।

काली स्याही, पानी की बावड़ी (कुएँ समान) उल्टा हथियार जो अपने माथे पर ही लगता रहे। कछुआ (पानी का जानवर) हथियार, बिगड़ा हुआ दूध, लोहे की ऐसी चीज़ जिस पर सवारी करके घोड़े की तरह चला सके जैसे मोटर लारी, या लोहे सफ़र की चीज़, खूनी कुआँ, दूध में ज़हर।

माली हालत के लिए खाना खाना नं० 10ही का दिया फल लेंगे चाहे ये दोनों ग्रह टेवे में किसी घर भी इकट्ठे बैठे हों। साँप को दूध पिलाना मुबारक होगा। दोनों मुश्तरका में अंधा घोड़ा या दरिया में बहता हुआ मकान (मंदे अर्थ में) पर होगा। एक भला तो दूसरा मंदा होगा, इस तरह दोनों का फल खराब होगा। दोनों 44 साल की आयु तक इकट्ठे होंगे और बनावटी नीच केतु का असर होगा जिस जगह शनि का असर उत्तम होगा उसमें 1/3 हिस्सा चन्द्र का मंदा फल होगा। जिस जगह चन्द्र उम्दा होगा वहाँ शनि का बुरा असर साथ होगा। दोनों ग्रहों में प्रबल कौन है का फैसला टेवे वाले की आँख की हालत, यानी क्याफे के हिसाब से किस असर की है, से होगा।

नेक हालत

किसी दूसरे के साथ से जो हम उम्र हो या उम्र के हिसाब दूसरी उम्र का साथी हो (संबंध में ऊपर-नीचे के दर्जे का मगर आयु में बराबर) धन पैदा होगा और शनि मदद देगा।

खाना नं० 1 :- वही नेक और उत्तम असर जो सूर्य, शनि मुश्तरका खाना नं० 10में दिया है।

खाना नं० 2-3 :-

काला घोड़ा या कुआँ लगते, आम लोगों के आराम सब उत्तम हो।
खाली बक्स धन-दौलत होते, दोनों पाया घर तीजा जो।

खाना नं० 2 :- उत्तम असर हो, काला घोड़ा या कुआँ लगाना शुभ हो। लोगों की भलाई के काम में सफलता हो।

खाना नं० 3 :- जायदाद बेशुमार हो।

खाना नं० 4 :-

उतरे मोतिया आँखों उसकी, बुध चौथे जब बैठा हो।
शत्रु बैठक 10चन्द्र होती, मौत बाहर जा पाता हो।।

चन्द्र अब कुण्डली वाले के लिये मानसरोवर होगा अगर सूर्य की सहायता मिलती हो तो पितृ रेखा माता-पिता का साया शुभ फल देगा। शनि सहायक साँप और खुद साया करने वाला होगा। अगर किसी कारण उसका शरीर नकारा हो जाये तो साँप के डँस जाने से वह मरेगा नहीं बल्कि उसका शरीर ठीक हो जाएगा, जबकि दूसरों के लिए वही साँप खूनी साँप हो।

खाना नं० 6 :-

शनि, चन्द्र की मिट्टी बोले, चीज़ें चन्द्र सब मंदा हो।
तीनों कुत्ते घर उसके मंदे, मकान कमाई उत्तम हो।।

खुद अपने बनाये मकान और अपनी आयु शुभ होगी।

खाना नं० 9 :-

माया दौलत चाहे हरदम बढ़ता, असर चन्द्र खुद मंदा हो।
अमृत जल जो उसको मिलता, जिस्म पर छाले करना हो।।

धन दौलत उत्तम और अति सहायक
खाना नं. 12 माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा - बेमरज इंसान हो ।

मंदी हालत

इंसानी दिन चन्द्र औरत की शरारती आँख का इशाराा और गेसू शनि के कामों में ही मौत ढूढ़ता फिरता है। प्यार तबाही का कारण होगा उसका धन स्त्री ससुराल या दूसरे मित्र बनावटी मित्रो के काम आए ।

खाना नं: 5

धनी दौलत औलाद हो मंदी, दुनिया मुसीबत भरता हो ।
आतिश खड़ी धुआँ जमाना, गरक जमाने करता हो ।

धन-दौलत के लिये संतान पर खराबी होगी। मुसीबत के समय दु:ख का यम, आग़ वाला। शनि के पहाड़ का धुआंधार समय खड़ा कर देगा, जो चन्द्र के समुद्र के पानी में गर्क होकर गोला देने का कारण होगा। माता की खुद की नज़र मंदी होगी। जब शनि के साँप मरवाता या मारता हो। शनि का बड़ा बक्स वगैरा धन हानि और मकानों के बिक जाने का बहाना होगा। ऐसे सेफ में चन्द्र की चीज़ें शुभ न होगी बल्कि मंगल, शनि मुश्तरका की चीज़ें छुआरे आदि रखना सहायक होंगे।

खाना नं० 6 :-

दुनिया के तीन कुत्ते खराबी का कारण होंगे। चन्द्र और शनि दोनों जानदार और बेजान चीज़ें, संबंधी, कामकाज हर दो ग्रह मंदा फल देंगे और जीवन बर्बाद होंगे या करेंगे।

खाना नं० 7 :-

आँखों की बीमारियों या अंधेपन तक की नौबत होगी। स्त्री झगड़ों से जीवन बर्बाद होगा। दूध में काली मिर्च का प्रयोग खासकर रात के समय फेफड़े में हानि या दिल की कोई दूसरी बीमारियां देगा जो धन हानि और नज़र की कमज़ोरी का बहाना होगी पर 42 साल की उम्र में माता-पिता में सिर्फ शनि को आयु में 9-18-36 साल की आयु में एक ही ज़िंदा बचेगा। मौत अपने गृहस्थ और मातृभूमि में होगी। धन काले मुँह वाले बंदर की तरह बदनामी का बहाना होगा और शनि मौत का सबब होगा।

क्याफा

आयु रेखा जब शुक्र के पर्वत की गोलाई पर किस्मत रेखा से शुरू होने के हिस्से से मगर दो शाखी वाली बनाये और दो रेखा का अंगूठे की तरफ की रेखा बड़ी और लम्बी हो तो चन्द्र, शुक्र खाना नं० 7 में लेंगे।

खाना नं० 8 :-

शनि की आयु 9-18-36 साल में शनि की चीज़ें हथियार जानवर आदि की मंदी घटनाएँ होंगी। बुढ़ापे में नज़र कम या गुम होगी मगर अंधा न होगा।

खाना नं० 9 :- हर सुख और आराम में दूध के ज़हर की तरह चन्द्र का मंदा हाल मिला हुआ होगा। अगर अमृत जल भी मिल जाये तो शरीर पर छाले, ज़ख्म कर दे।

खाना नं० 10-

खत्म कुएँ जल पानी माया, टूटे तारे [1] का होता हो।
गैर उम्र तक बाकी कर्ज, दुखिया जगत् से जाता हो।।

मनहूस घोड़ा दोनों अपना-अपना फल देंगे, मगर चन्द्र का मध्यम और निर्धन यानी अगर माली निर्धन हुआ तो दरबदर और फरार भी होगा मगर कैद न होगा। लाल बछड़ा मौत का बहाना होंगे।

पानी की जगह अगर माया के भी कुएँ हो तो भी वह खर्च करके उन्हें खुश्क कर देगा। मंदी किस्मत से घरघाट और बड़ों की शान में ज़हर बढ़ता ही जाएगा। प्यार तबाही का कारण होगा।

खाना नं० 12 : औरत का सुख हल्का होगा।

चन्द्र और राहु [1]

आधी आयु तक हर दो मंदा, बुध भला न मंदिर (खाना नं० 12) हो।
ससुराल घराना लाख हो उच्चा, पाप 45 आयु तक खंडहर हो।

इकट्ठे दोनों से धर्मी टेवा [2],
आयु लम्बी खुद पाता हो।
असर राहु जब होता मंदा,
केतु भला न रहता हो।
आयु केतु 45 मंदे,
कैदी चन्द्र न रहता हो।
नेक चमकदार तक दोनों होते,
हाथी माया में नहाता हो।
घर पहले 6 वें बैठे,
माता सालों उन मरती हो।
समय बच्चे के पैदा हो,
प्लेग मोती जल बसती हो।

1. भूचाल 45 साल की आयु में रूकेगा या 45 साल से भाग यानी 45 दिन, मास, साल चन्द्र राहु दोनों ही का फल बर्बाद, चन्द्र, राहु के लिये बंधा हुआ भयानक हाथी जो दरिया के रास्ते को रोक ले और स्वयं भी बर्बाद हो जाये।
2. दोनों अपना–अपना फल देंगे मगर चन्द्र किसी कदर मध्यम यानि यदि धन के बारे में निर्धन हुआ तो जलील व खवार दर बदर और फरार भी होगा मगर कैद न होगा खासकर जब दोनों खाना नं० 2 में हो अव्वल गाय दो रंगा लाल बछड़ा मौत का बहाना होंगे।

दोनों मुश्तरका किसी घर खासकर जब दोनों खाना नं० 2 में बैठे हों तो ऐसा टेवा धर्मी होगा जिसमें पापी ग्रहों का मंदा फल न होगा बल्कि बाकी सब ग्रह भी धर्मी होंगे। राहु का भूचाल चन्द्र से रूक जाता है और चन्द्र बैठा होने वाले घर से आगे नहीं जा सकता। जिस घर में बैठे उसी घर की चीज़ों पर बुरा असर होगा। अगर खाना नं० 1-6 में बैठे चन्द्र की जानदार चीज़ें (माँ) आदि पर बुरा असर होगा यदि खाना नं० 7-12 में हो तो कोई बुरा असर न हो, यदि होगा तो माँ-बेटे दोनों पर होगा और वह भी चन्द्र, शनि की उम्र में ही होगा।

नेक हालत टेवे में शनि उत्तम हो तो राहु का सब प्रभाव उत्तम होगा।

खाना नं० 7 :-

चन्द्र, राहु घर 7 में बैठे, उच्च शुक्र, रवि 11 हो।
मौत मारे घर ससुर का उजड़े, लाख पुत्र चाहे पोता हो।।

स्त्री तथा राजदरबाार मंदा न होगा।

खाना नं० 9 :-

आधा चन्द्र चाहे 9 में गिनते, ग्रहण मध्यम चाहे होता हो।
खुश्क कुएं घर जद्दी उनके, पानी दोबारा आता हो।।

जद्दी घर बार में प्रसन्नता होगी, सुखे कुएँ में पानी दोबारा अपने आप आ जाएगा।

खाना नं० 11 :-

सोने को आग में जला कर दूध में बुझा कर उस दूध के प्रयोग से संतान के जन्म की बरकत होगी।
–जब बुध खाना नं० 3, वृहस्पति खाना नं० 2 दोनों खाना नं० 11 में हो।

मंदी हालत

पानी में नुक्सान का डर। आधी आयु या राहु के ग्रह की कुल आयु 42 साल तक जिस्म की त्वचा (जिल्द) खराब या शरीर पर काले और सफेद दाग और भौह के छुकड़े उभरें हों, ससुराल बर्बाद हो। नदी का पानी भी दो भागों में बंट कर चले यानी चन्द्र का प्रभाव मध्यम होगा।

दिल को फर्जी वहम से दीवानगी, अपना ही दिल खराबी का बहाना हो, औलाद के संबंध में वही उपाय जो चन्द्र में कहा गया है, सहायक होगा। राहु का भी वही उपाय जो राहु खाना नं० 11 में दिया है। इसके अतिरिक्त चन्द्र ग्रहण के समय राहु की चीज़ें या चन्द्र के शत्रु ग्रहों की चीज़ें चलते पानी में बहाना शुभ होगी।

राहु का भूचाल चन्द्र से रूक जाता है और राहु का मंदा असर केतु ही हटा सकता है। मंगल या वृहस्पति या चन्द्र का उपाय करें। अगर वह भी मंदा हो तो बुध को कायम करे।

खाना नं० 3 :- 34 साल की आयु तक बुध और केतु का फल मंदा ही होगा।
खाना नं० 7 :- ससुराल घर वीराना ही होगा।
खाना नं० 9 :- चन्द्र का अपना फल मध्यम बल्कि ग्रहण में आए हुए चन्द्र की तरह हल्का ही होगा।
खाना नं० 12 :- न सिर्फ चन्द्र की जानदार और बेजान चीज़ों का मंदा हाल होगा बल्कि टेवे में अब शुक्र का फल भी कोई भला न होगा।

चन्द्र और केतु

(चन्द्र ग्रहण [1])

कायम ग्रह नर टेवे बैठे, उत्तम असर दो देता हो।
वर्ना गृहस्थी दुखिया ऐसे, टांग जली दिल फटकता हो।
चन्द्र दादी और केतु पोता, मेल दोनों न होता हो।
लेख विधाता हो दो इकट्ठे, एक दोनों से दुखिया हो।
असर कभी जब दोनों मंदा, माल जानों पर पड़ता हो।
चन्द्र, राहु फल बाकी अपना, हद दो हालत हर घर का जो।
मंगल साथी चाहे साथ दृष्टि, बैठे घरों या मंगल हो।
ग्रहण टूटे जब माता बैठी, वक्त 28 मंगल [2] हो।

1. किस्मत की सहायता और वृहस्पति की हवा अब मायूसकुन, माता भाग्य रद्दी बल्कि बर्फानी असर देगा। सफ़र समुद्री या ज़मीन का मंदा चन्द्र के खाना नं० 2 कुत्ते का पसीना हर दो मंदे। 45 साल की आयु तक सूर्य का फल मंदा होगा, चन्द्र के मिलाप में केतु मंदा बल्कि दोनों खराब चन्द्र के मुश्तरका वाले को किसी के पेशाब पर पेशाब करना अशुभ होगा बल्कि ज़हमत का कारण होगा।
2. शादी के समय खुशी के राग - जंगल में मंगल।

दृष्टि आदि की रुह से जब चन्द्र नीच हो रहा हो या बुध की मार से मर रहा हो या दोनों खाना नं० 6 में मुश्तरका हो तो चन्द्र के लिये केतु का साथ उसके आये चलती हुई दीवार की तरह चन्द्र ग्रहण का समय होगा यानी माता चन्द्र एक धर्मात्मा होती हुई भी बदनाम स्त्री नज़र आएगी। जायदादी संबंध हर ओर उलझता नज़र आएगा। मगर चन्द्र ग्रहण होगा सिर्फ उन बातों पर जो कि चन्द्र, राहु मुश्तरका में लिखी है। दोनों का मंदा प्रभाव अमूमन माल और जानों पर होगा बाकी सब बातों में वही मंदा असर होगा जो चन्द्र, राहु में लिखा है सिर्फ फर्क यह है कि यानि चन्द्र, केतु का हर घर में वही प्रभाव जो चन्द्र, राहु का होता है। चन्द्र ग्रहण के समय यदि बुध उत्तम हो तो चन्द्र ग्रहण का मंदा समय न होगा और चन्द्र 34 साल में या 24 साल तक अपना शुभ फल देगा। यानी 34 साल से 58 साल की आयु शुभ असर की होगी। ग्रहण का मंदा समय एक साल और कुल 4 साल रह सकता है।

नेक हालत

अगर टेवे में नर ग्रह (वृहस्पति, सूर्य, मंगल) उत्तम हो तो दोनों का फल उत्तम होगा। 28 साल की आयु पर सब और जंगल में मंगल होगा। (जब मंगल की दृष्टि या सहायता हो)।

मंदी हालत

दूध में कुत्ते का पेशाब। अंधा घोड़ा, लंगड़ी माता की तरह मंदा हाल या माता की आयु और नर संतान की आयु दोनों ही का झगड़ा होगा या दादी, पोते का मेल न होगा। टेवे वाले की नई संतान नर बच्चा और टेवे वाले की माँ का बच्चे के जन्म दिन से 4043 दिन पहले और 4043 दिन बाद एक साथ रहना शुभ न होगा बल्कि मंदा होगा जो कि जानो/जीवनी पर भारी होगा। रात को दूध का प्रयोग अशुभ, पेशाब के ऊपर पेशाब करना कष्टकारक होगा।

क्याफा टेवे वाले की विद्या निकम्मी बर्बाद, जिस्म में दर्द जोड़ या पेशाब की बीमारियाँ हों।

उपाय केतु की दोरंगी मगर लाल रंग की चीज़ें साथ रखना सहायक होगा। बुध की चीज़ों का दान कल्याण करता होगा। विद्या अधूरी होने पर या बर्बाद होने से बचाने के लिए धर्म स्थान में केतु की चीज़ों (केले और गिनती में भी 3 केले) हर रोज़ 48 दिन तक देते रहना सहायता देगा।

खाना नं० 1 :- दोनों ही हर तरह मंदे नाश हुए और नाश करने वाले होंगे।

खाना नं० 2 :- निमोनिया, गठिया, मरने के करीब, चन्द्र ग्रहण नए बच्चे नर संतान तथा बछड़े (गाय के नर बच्चे) के पाँव में चाँदी का छल्ला बांधना सहायक होगा।

खाना नं० 6 :- चाँद ग्रहण का मंदा समय होगा, चन्द्र की सब जानदार या बेज़ान का शुभ असर किसी दीवार की छाया की तरह छुप गया होगा लगेगा।

खाना नं० 12 :- कमाई में लाखों की थैलियाँ आये। रुपये की आवाज़ बहुत मगर गिनने पर शून्य ही मिले।

****

शुक्र और मंगल

(मिट्टी का तंदूर, मीठा अनार, गेरू (लाल मिट्टी), स्त्री धन)

मिलते दोनों से चन्द्र [1] बनता, बुध, केतु न दुश्मन जो।
शुक्र मिट्टी से मंगल दुनिया, जगत् बना कुल ब्रह्माण्ड हो।
ससुराल स्त्री का भाग्य चलता, दहेज स्त्री से बढ़ता हो।
मंगलीक मंगल साथ जो मिलता, आग मिट्टी सब जलता हो।
धन बढ़े परिवार बढ़ता, तीर्थ संसार उत्तम हो।
उत्तम धन साथ गुरु का, पापी हरदम मंदा हो।
दोनों देखें जब शनि को, धन सहायक रेखा हो।
उल्ट हालत जब हो टेवा, असर तीनों का मंदा हो।

1. अब खाना नं० 8 के मंदे ग्रह भी नेक फल देंगे। अमूमन धन-दौलत और मर्द, स्त्री दोनों चीज़ें एक साथ कम ही हुआ करती है। मगर अब दोनों ही इकट्ठे होंगे यानी ऐसा धन-दौलत होगा जिसके साथ परिवार भी होगा। दोनों ग्रह 36 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे। यानी मंगल 1 तो शुक्र का 1/3 भाग शामिल होगा। मंगल बद के साथ यादि शुक्र का असर 3 हिस्से शुभ हो तो मंगल का असर 4 हिस्से मंदा शामिल होगा। असल में दोनों मुश्तरका की जगह एक चन्द्र ही होगा जिससे या जिसमें बुध और केतु का बुरा और शत्रुता का प्रभाव शामिल न होगा। दिखाने को बेशक हो और दोनों ही ग्रह होंगे। जब शुक्र और बुध जुदा-जुदा हो और बुध जन्म कुण्डली में शुक्र से पहले घरों में हो और साथ मंगल भी बैठा हो यानी मंगल, बुध मुश्तरका कुण्डली के पहले घरों में हो और शुक्र बाद के घरों में हो तो बुध अपनी नाली की दृष्टि के असूल पर मंगल को शुक्र से मदद देगा जिससे टेवे वाला कभी लावल्द न होगा चाहे उसके संतान योग लाख मंदे ही क्यों न हों और बेशक मंगल बुध खाना नं० 3 (बुध खाना नं० 3 में पक्का विष हुआ करता है) और शुक्र खाना नं० 9 (खाना नं० 9 का शुक्र अमूमन मंगल बद ही हुआ करता है) ही हो।

नेक हालत :- धन भी हो, परिवार भी हो, तीर्थ यात्रा हो और सांसारिक सुख दोनों का और उत्तम फल होगा, अति उत्तम लक्ष्मी।
-जब दोनों मुश्तरका को वृहस्पति देखे।

पैसा धन जो हर तरह से शुभ फल दे, धन परिवार दोनों ही ओर शुभ अर्थ में हो। -जब दोनों मुश्तरका को वृहस्पति, चन्द्र देखे।

खाना नं० 2 :- ससुराल कुत्ता वह उत्तम होगा, नेक मंगल जब होता हो।
सब कुछ उनका आग में जलता, पापी मंगल बद मिलता हो।।

स्त्री खानदान से जायदाद धन आए, ससुराल घर रहने वाला हो, दोनों हालतों में (चाहे अपने, चाहे ससुराल के घर रहने वाला)। ससुराल अमीर हो और लावल्द कभी न होंगे और उसे ससुराल खानदान से मीठी खांड की तरह धन लाभ होता रहेगा।

खाना नं० 3 :- ऐसा धन भाई, बहनों को तारे।

खाना नं० 7 :- अनाज दौलत न हो कभी घटता, बुध चीज़ें न मंदी हो।
सुख सागर हो भारी कबीला, संतान पोता सब फलता हो।।

संतान हरदम बढ़े पोते-पड़पोते सब जीवित हो। उसका धन अपने ही खून से पैदा होने वालों (अपनी स्त्री, भाई बन्धु के द्वारा मगर बहन, बुआ आ बने) को तारने वाला हो। धन का भंडार और सब सुख हो।

खाना नं० 8 :- पैदा होते ऐसे चन्द्रभान, चूल्हे आग न मंजे बाण।
आय मुबारक उत्तम मान, निदंया नगत कुल करता जान।।

हमला रोकने की हिम्मत का मालिक, हर तरह से आसूदा हाल, समृद्ध जीवन हो।

खाना नं० 1Q- मिट्टी डली पर निर्धन झगड़े, भाई स्त्री ज़र पाता हो।
रंग सफा जब स्त्री चमके, ठाठ रानी दो राजा हो।।

स्त्री के भाई-बन्धु (साले, बहनोई) सब अमीर राजा समान होंगे, खाना नं० 2 के ग्रहों के अब विशेष संबंध होंगे। यदि ससुराल खानदान के आदमी काले रंग के हो मगर उसकी स्त्री साफ रंग की हो तो ऐसे टेवे वाला राजा समान ठाठ का स्वामी होगा। ससुराल खानदान के अमीर होने की शर्त न होगी।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

रात-दिन मुसीबत मंदा असर हो।
-जब दोनों को पापी ग्रह शनि, राहु, केतु देखें।

चाहे शुक्र को किसी ने नीच नहीं किया, मगर मंगल बद ने शुक्र (स्त्री) को भी न छोड़ा, उसकी मौत तक का भी बुरा असर, आग़ जहमत मंदी मौत हो (उपाय मंगल बद देखो)। -जब मंगल बद का साथ हो।

खाना नं० 3 :- खुद जातक व्यभिचारी हो।

खाना नं० 4 :- औरत भाईयों को जड़ से मारे, लेखा भला न होता हो।
दौलत माया हो सब ही उड़ते, परिवार कबीला दुःखी हो।।

माता के भी भाई-बन्धु, माया वगैरा खुद तबाह और जातक को तबाह करे या उनकी पानी से मौत हो। दुनियावी हालत में डूबते ही जाये। मंगल बद का हर तरह उन पर मंदा असर हो। मंगल बद और शुक्र दोनों बदफेल दोनों के झगड़े में साली बर्बाद हो।

खाना नं० 8 :- हरेक का निंदक हो और बुराई के जिस वृक्ष के साथ से जा बैठे उसे जड़ से उखाड़ा मगर जातक बचा ही रहा।

खाना नं० 9 :-

सेहत औरत की मंदी होती, भाई बड़ा खुद होता जो।
रंग मंगल की चूड़ी चाँदी, बाजू औरत पर अच्छा हो।।

औरत की सेहत मंदी जिसके लिए उसके (औरत के) बड़े भाई की मदद भाई के हाथों खाने-पीने की चीज़ें देना या दवा दारू करना मुबारक होगी।

खाना नं० 10-

निर्धन, झगड़ालू हो। उसकी औरत भी शनि रंग और शनि के स्वभाव की होगी। जातक मामूली सी बात कंकड़ी के बदले लम्बा-चौड़ा झगड़ा खड़ा कर देगा। औरत के लिए भाईयों तक को मरवा देगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

शुक्र और बुध

(आधी सरकारी नौकरी, बनावटी सूर्य, तराजू, रेतीली मिट्टी, आटा पीसने की चक्की जिसमें दो पत्थर हो)

राज संबंध शर्त न करता, रिज़क दौलत घर बढ़ता हो।
खाली दृष्टि[1] हो शनि उत्तम, तराजू माया ज़र चलता हो।
आठ, छठे दो 3-12-9, बनावटी सूर्य दो होता हो।
उत्तम बराबर असर दोनों का, दृष्टि रवि न करता जो।
बुध, शुक्र जब हो दोनों इकट्ठे, शनि भी उत्तम होता हो।
आन दौलत की कभी न कोई, घी, मिट्टी से निकलता हो।

दोनों ग्रह बराबर की शक्ति और बराबर की मियाद में होंगे और सूर्य की तरह प्रभाव देंगे। 44 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे और सेहत और रिज़क में संबंधित होंगे। राजदरबार और हुकूमत की शर्त न होगी। शुक्र, बुध के मुकाबले पर यदि मंगल हो या मंगल, बुध या मंगल, शुक्र हो तो मंगल का विष जातक की सहायता पर असर करेगा।

1. बनावटी सूर्य :- आधा सरकारी काम, रियासती संबंध, नौकरियाँ मगर दोनों इकट्ठे हों तो जानी पूरा अय्याश हो। बुध अब शुक्र को बहन का काम देगा।

नेक हालत

जब तक बुध, शुक्र से सूर्य का संबंध न हो परिणाम उत्तम रहेगा। स्त्री अमीर खानदान से होगी।

क्याफा सूर्य का संबंध :- **सूर्य से रेखा बुध को हो।**

औरत अमीर वंश से हो। -जब सूर्य पर्वत से रेखा बुध को हो।

खाना नं० 1 :- भाग्य में शुभ बनावटी सूर्य आधा राजदरबार का प्रभाव होगा।

खाना नं० 2 :- यदि चालचलन उत्तम हो तो हर दो ग्रह का उत्तम फल, व्यापारी और आढ़ती उत्तम दर्जे का होगा।

खाना नं० 3 :- सिर की रेखा का उत्तम फल होगा जो चन्द्र के बुरे प्रभाव से बचायेगा यानी जब चन्द्र मंदा हो तो सौतेली माँ को छोड़ कर बाकी सब चन्द्र की चीज़ों का फल उत्तम होगा चाहे चन्द्र ग्रहण ही क्यों न हो।

खाना नं० 4 :- स्वयं बुध (व्यापार) राजयोग हो। बुध और शुक्र ग्रहों के अलावा किसी भी और ग्रहों का संबंधित व्यापार राजयोग का प्रभाव देंगे। लड़की वाला मामू शुभ और सहायक होगा।

खाना नं० 5 :- संतान पर कोई बुरा असर न होगा।

खाना नं० 6 :- स्वयं अपने लिए राजयोग होगा। रेत से सिमेंट लोहे की तरह पक्का हो जाता है। अब बुध की रेत से शुक्र की मिट्टी ही सिमेंट का उत्तम काम दे। यानी यदि लड़के न भी हो फिर भी लड़कियाँ ही बनावटी सूर्य का उत्तम फल देंगी। बुध का उत्तम फल होगा। स्त्रियों की सहायता होगी और गृहस्थ का आराम होगा।

किताबों का काम छापाखाना व्यापारी दर्जे तक, पर दिमागी लिखाई काम, राजदरबार और कलम का धनी होने से बहुत लाभ हो।

-जब सूर्य खाना नं० 2 में हो।

जायदाद बढ़ती जाए, हर दो हालत (सूर्य खाना नं० 2 चाहे शनि खाना नं० 2) के समय ईमानदारी का धन साथ देगा।

-जब शनि खाना नं० 2 में हो।

खाना नं० 7 :- उत्तम फल फूल दोनों भी शानदार गुलजार की तरह घरबार और गृहस्थी सुख उत्तम, व्यापारी या आढ़ती होगा, तराजू के काम से लाभ ही लाभ होगा।

खाना नं० 9 :- खाना नं० 3-1-6-7-9-11 में यदि चन्द्र, केतु या गुरु बैठा हो तो बुध कभी मंदा फल न देगा जिसपर शुक्र का फल भी भला ही रहेगा।

खाना नं० 10:- उत्तम सेहत, जातक बुद्धिमान हो।

-जब तक खाना नं० 2 भला हो या खाना नं० 2 निकम्मा न हो खाली बेशक हो।

खाना नं० 12 :- स्वास्थ्य उत्तम, आयु 10वर्ष तक लम्बी होगी।

मंदी हालत :- जातक जानी और अय्याश होगा।

खाना नं० 1 :- अल्पायु हो, पशुओं के आराम से रिक्त (यानी न हो)।

खाना नं० 2 :- जातक जानी हो।

खाना नं० 3 :- जब चन्द्र मंदा, सौतेली माता का कोई फायदा या सहायता न होगी।

क्याफा मंगल नेक से रेखा सिर रेखा के नीचे-नीचे अंत में सिर रेखा तक ही रह जाये या सिर रेखा में मिल जाए।

स्त्री खानदान के आदमी कारोबार में साथी होंगे जिसका कोई लाभ न होगा। वह सिर्फ खा-पीकर चले जाएंगे। बुध खाना नं० 3 अमूमन साथ बैठे हुए ग्रह यानी खाना नं० 3 और 9-11-4-5 सब ही घरों को नष्ट किया करता है। इसलिए ऐसे प्राणी की पहली शादी नष्ट होने पर यदि उसी खानदान में दूसरी बहन या भाई की शादी दोबारा हो तो भी बुध पहले की तरह शादी नष्ट करेगा। यदि ऐसी शादियों से जब 3 लड़कियाँ कायम हों तो बुध चुप हो जाएगा। बकरी का दान शुभ होगा।

-जब मंगल का साथ दृष्टि आदि से हो।

बुध की 8.5-17-34 साल की आयु में या शुक्र की हुकूमत के समय 6.25-12.5-25 साल की आयु में अगर पहली शादी हो तो शरीर और राजदरबार पर मंदा असर होगा। दूसरी शादी हो तो माता-पिता ससुराल वालों पर बुरा होगा। तीसरी शादी हो तो मर्द, स्त्री दोनों का स्वास्थ्य लगातार मंदा होगा।

खाना नं० 4 :- **ससुराल माया घर अक्सर मंदा, भला चन्द्र न होता हो।**

उल्टी चक्की बुध, शुक्र चलता, मंदा असर जो देता हो।।

बुध (बर्तन, ढोल, राग-रंग का सामान, बाजे आदि) और शुक्र (खेतीबाड़ी, गाय-बैल) के संबंधित काम निकम्मे होंगे। मामा वंश और ससुराल का मंदा हाल होगा। स्वयं भी चालचलन का शक्की होगा। लेकिन यदि चन्द्र कायम हो या कायम किया जाये तो कोई बुरा असर न होगा। माता के भाई-बन्धु और माता की बहन आदि कारोबार में खराबी का कारण होंगे।

खाना नं० 5 :- इश्क जवानी हमराहियों को नष्ट करवाये। शुक्र के पतंग का मंदा हाल होगा। घर में ज़मीन के नीचे आग कायम रखने के लिए गोल गहरा गड्ढा मंदे प्रभाव की पूरी निशानी होगा।

खाना नं० 6 :- यदि सूर्य का संबंध हो जाए तो स्त्रियां विपरीत हों, संतान का विघ्न होने लगे तथा दूसरे तकाजे होंगे।

खाना नं० 7 :- यदि राहु और केतु से चन्द्रमा मंदा हो रहा हो तो शुक्र, बुध की चक्की का प्रभाव भी मंदा ही होगा। विवाह और संतान का विघ्न और मंदे फल होंगे। काँसे का कटोरा सहायक होगा।

खाना नं० 8 :-

रब बनाई ऐसी जोड़ी, एक अंधा हो तो दूसरा कोढ़ी।
राख भरी दो मिलकर बोरी, जितनी उड़े हो उतनी थोड़ी।।

दोनों ग्रहों या स्त्री-पुरुष (स्वयं) और उसकी स्त्री की ऐसी जोड़ी होगी जैसे कि एक सांसारिक अंधा हो और दूसरा कोढ़ी (बीमार)। शादी और संतान में खराबियां। शुक्र अब बुद्धि के उल्ट कार्यवाहियाँ करने वाला और बुध निकम्मा होने से मामा तथा बहन बर्बाद हो। पूरा मारक स्थान निकम्मी और लानत की होगी। शुक्र अंधा तो बुध थूकने वाला कोढ़ी होगा। बुध (व्यापार) की जानदार चीज़ों बहन, बुआ लड़की आदि अति मंदी हालत (34 साल की आयु तक) और शुक्र की बेज़ान चीज़ें खेतीबाड़ी, गाय-बैल बिना अर्थ के होंगे।

खाना नं० 9 :- अगर बुध निकम्मा साबित हो तो 17 साल की आयु या पहली लड़की के जन्म पर अपने बड़ों की सब उम्मीदों पर पानी फेर देगा और मंगल बद की जलती आग़ का तूफान शुरू होगा।

खाना नं० 10- अगर खाना नं० 8 निकम्मा हो रहा हो तो बुध, शुक्र दोनों ही के फल में ज़हर मिला असर होगा।

लड़की जन्म या उम्र 17, दोनों मंगल बद बनता हो।
उम्मीद बुजुर्गों पानी फेरा, मंदा असर 2-9 का हो।।

खाना नं० 11 :- अज़ीज़ों से जुदाई नौकरी में पहले हाकिम से संबंध में यह ग्रह उल्लू का पट्ठा और ह्रदयहीन हुआ करेगा। मंदी हालत में बुध (लड़की, बकरी आदि) और शुक्र (स्त्री, गाय का भोजन) की चीज़ों का संबंध सहायक होगा।

सोने के पीले मनके की माला अमूमन मौजूद होगी जिसे दूध नदी के पानी में धोने पर बुध और वृहस्पति की ज़हर दूर होगी या चन्द्रमा का उपाय सहायक होगा। राजदरबार और गृहस्थी हालत के लिए।

–जब वृहस्पति, सूर्य खाना नं० 10में हो।

मंगल और शनि की आयु मियादों पर अपने मकानों में आग़ की घटनायें जिनमें गाय भी जलती होगी, भाई भी चिल्लाते होंगे।

–जब मंगल, शनि खाना नं० 8 में हों।

खाना नं० 12 :-

हड़काया कुत्ता या पागल बकरी, पेट गाय आ फाड़ती हो।
खांड गृहस्थ रेत हो भरती, शीशा मिट्टी धोखा देती हो।
शत्रु शुक्र, बुध दूजे बैठा, दाँत ज़हर शनि भरता हो।
दूजे मगर जब मित्र आया, आकाशवाणी बुध वर्षा हो।

दोनों ग्रह अब स्वास्थ्य के मालिक होंगे यदि बुध उल्ट निकला (यानी यदि शनि या वृहस्पति खाना नं० 2-12-3 में न हो तो) दोनों ही ग्रहों का फल निकम्मा होगा। मामूली सी बकरी (बुध) या गाय, स्त्री (शुक्र) हड़काया कुत्ते की तरह पेट फाड़ देने का असर दे। लड़की की पैदाइश के दिन से गृहस्थ मंदा होगा बल्कि खांड में रेत मिली की तरह भाग्य का हाल होगा या शीशा (बुध) पिस कर धोखा देगा कि खांड पड़ी हुई है मगर जब उठा कर मुँह में डाला तो मुँह को कष्ट सहना पड़ा होगा।

शुक्र और शनि

(फर्जी अय्याश, काली मिर्च तथा स्याह (मन्नूर पत्थर) मिट्टी का सूखा पहाड़)

बुध मुबारक टेवे होगा, पाप बुरा नहीं करता हो।
केतु, मंगल हो उम्दा मिलते, नेक बुढ़ापा बनता हो।
दृष्टि रवि पर हो जब करते, मौत भरे दुःख होती हो।
मकान बनाये रिश्तेदारों के, माया खत्म हो जाती हो।
सलाख लोहे की छत पर गड़ते, बिज़ली असर नहीं करती हो।
मन्नूर पत्थर काले बुनियाद में, माया दौलत घर बढ़ती हो।
शुक्र मालिक है आँख [1] शनि का, तरफ चारों ही देखता जो।
चोट शनि हो जब कहीं खाता, अन्धा शुक्र दो देता हो।
पाया शुक्र ही जब घर पूजा, अगर शनि 9 होता हो।
नज़र शुक्र में जब शनि आता, माया दीगर खा जाता हो।
दृष्टि शुक्र पर जब शनि करता, मदद ग्रह सब करता हो।
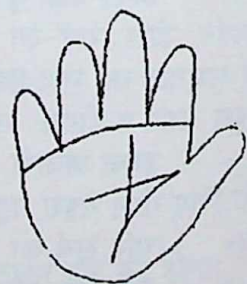
1. जिस घर शनि हो, शुक्र में वही प्रभाव और दृष्टि भी उस घर की ओर होगी, मगर दृष्टि की चाल पिछली और खुद शुक्र की अपनी होगी।

शुक्र स्त्री तो शनि उसकी नज़र की शक्ति बना रहेगा। बनावटी केतु (ऐश का मालिक)उच्च हालत देगा। दोनों ग्रह 52 साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे। दोनों के मुश्तरका प्रभाव में अगर शुक्र 4 हिस्से हो तो शनि 3 हिस्से नेकी करने के लिए होगा। **लेकिन** यदि मंदा असर हो तो शनि सिर्फ 1/3 भाग होगा यानी शनि अपने साथी का बुरा नहीं कर सकता, बल्कि 52 तक मदद ही मदद देगा। शुक्र, शनि मुश्तरका में शनि से मुराद उसका (टेवे वाले) बाप होगा।

ऐसे टेवे में मंगल, केतु भी अमूमन इकट्ठे हुआ करते है जो ज़रूरी नहीं। घर में ठाकुर (पूजा-पाठ का इष्ट) उपस्थित। दोनों मुश्तरका के समय बुध नहीं बोलेगा न ही मंदा होगा और न ही बुरा असर देगा बल्कि बुध का नेक असर अपने आप शामिल हो आएगा। पाप राहु, केतु के भी अब मदद पर होंगे।

नेक हालत

दोनों का और बहुत उत्तम फल होगा। ऐसे टेवे वाले का बाप से उसके (टेवे वाले) के लिए सदा ही नेक और उत्तम साबित होगा। जिस तरह मिट्टी स्वयं फट कर साँप को मुसीबत के समय बचा लेती है उसी तरह ही शनि गुप्त शुक्र को मदद देता जाएगा। दूसरा कोई साथी होगा, जिसके साथ मिलने से भाग्य जागेगा। -जब दोनों वृहस्पति को देखें।

खाना नं० 1 :-

साथ राहु या केतु बैठा, सातवें रवि आ बैठा हो।
दु:ख ज़हमत का पुतला होगा, आग़ जला दु:ख भोगता हो।।

माली मच्छ रेखा का वही उच्च प्रभाव जो शनि खाना नं० 1 में लिखा है।

खाना नं० 3 :-

कमाई उम्र तक दूसरे खाते, भला शुक्र न होता हो।
काम शनि लम्बे बढ़ते, नफा न बेशक इतना हो।।

स्त्री-पुरुष दोनों ही आराम करने वाले और दोनों ही को दूसरे स्त्री या पुरुष आराम करने या कराने के लिए बिना कष्ट मिल जाएंगे।

खाना नं० 4 :-

शनि, शुक्र हो जब बैठा, रवि भी साथी बनता हो।
मौत सख्त पुरदर्दी पाला, कत्ल सूर्य दिन होता हो।।

दोनों का अपना-अपना नेक और बद फल होगा।

कपड़े की थैली माया के लिए गुमनाम चोर साबित होगी। लेकिन दो कपड़ों की और जुदा-जुदा रंगों की इस नुक्स से बरी होगी। आमदन के चश्मे के लिए खाना नं० 10का टैक्स अदा करना सहायक होगा। उदाहरणत: सूर्य खाना नं० 10में हो तो हर रोज़ चलते पानी में ताँबें का पैसा डालने से धन बढ़ेगा।

खाना नं० 9 :-

5-6 गुरु 10 वें बैठा, असर भला कुल होता हो।
जायदाद ज़ागीरों दिन बढ़ता, आराम स्त्री सब फलता हो।।

एक रंडी कजंरी (बुरी स्त्री यानी मंदे काम करने वाली स्त्री बुरी नस्ल वाली) की लड़की होते हुए भी उत्तम गृहस्थी की हो जाने की तरह शुक्र अब हर तरह से उत्तम फल देगा। स्त्री तथा लक्ष्मी सुख होगा।
जायदाद ही जायदादों वाला। उत्तम स्त्री सुख का मालिक होगा। -जब दोनों खाना नं० 9-12, वृहस्पति खाना नं० 5-6-10में हो।

खाना नं० 10:-

हादसों हमलों हरदम बचता, कबीला रेखा मच्छ होता हो।
शनि मकान खुद बनता उसका, जवाई धन-दौलत खाता हो।
रवि बेशक हो साथ ही बैठा, असर बुरा न देता हो।
जायदाद में हरदम बढ़ता, नकद शर्त न करता हो।

शुक्र खाना नं० 10 में शनि की ही हालत तथा शक्ति का होता है, शुक्र स्त्री तो शनि शराब का मालिक। जवानी में ऐशो इश्क की खूब सहायता, बुढ़ापे में दोनों ग्रह और भी आरामदायक हों। सांसारिक बद घटनाओं से बचता रहे। शनि के काले कीड़ों का भवन (ग्रुप) की तरह गृहस्थी साथी और उसका अपने बहुत संतान और आगे उनके (बच्चों के) रिश्तेदार उसकी कमाई से आराम पाते हों धन की कोई कमी न होगी। मकान बहुत बने या बना देगा।

आयु लम्बी जायदाद बने, मृत्यु भी ठीक ही हो नकद रुपया चाहे इतना न हो।

-जब सूर्य खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 12 :-

असर वही 9 घर जो होता, मिलता 12 में होता हो।
बाकी असर 2-12 उत्तम, वही गिना हो दो का जो।।

अपने घर के सदस्यों की गिनती अधिक होगी। खेती के कारोबार शुक्र के कारोबार संबंधी चीज़ों (गाय-बैल) से पूरा लाभ हो और उत्तम गृहस्थ और मान के जीवन का स्वामी होगा। -जब बुध खाना नं० 6 में हो।

जायदादों वाला स्त्री सुख पूरा होगा जो दूसरों को खा-पी जाएगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 5-6-10 दोनों खाना नं० 9-12 में हो।

नोट बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।

मंदी हालत

उसकी कमाई पास के संबंधी या मकान खा-पी जाएगा। जीभ का चस्का बर्बाद करेगा।

-जब दोनों को बुध देखे।

शनि का बद प्रभाव बहुत ज़ोर से होगा। मृत्यु दुःख भरी होगी।

-जब दोनों को सूर्य देखे।

उपाय	मकान के ऊपर बिज़ली आदि के बुरे असर से बचाने के लिए लोहे की सलाख सहायक होगी।

खाना नं० 1 :-

काग़ रेखा का मंदा असर जैसा कि शनि खाना नं० 1 में दिया है। स्वयं जानी अय्याश होगा।

दरिद्र आलसी निर्धन, दुःखी हो। -जब सूर्य खाना नं० 2, मंगल खाना नं० 4, चन्द्र खाना नं० 12 में हो।

शरीर में जलती आग़ की तरह का कष्ट कायम रहे। सेहत खराब, तपेदिक हो जाए, किस्मत भी नीच, दुःखों का पुतला, हर तरह से मंदा, मिट्टी खराब हो। -जब सूर्य, राहु या सूर्य, केतु खाना नं० 7 में हो।

खाना नं० 3 :- अपना जीवन कमाई सब दूसरों के लिए दूसरों को ही लाभ हो। चाचा (शनि) आवारा स्त्रियों का मिलापी होगा या उसकी स्त्री आवारा होगी।

खाना नं० 4 :- चाचा दूसरी स्त्रियों का मिलापी होगी, अति दुःखी मृत्यु होगी। -जब सूर्य खाना नं० 10 में हो।

खाना नं० 7 :-

निकट संबंधी काम में आ मिलकर उसका सब कुछ खा-पी कर चले जाएं।

नामर्द, नहीं तो बुजदिल और तरह तरह से विवश या खराब किया हुआ पुरुष किसी भी काम का साबित न होगा।

-जब चन्द्र खाना नं० 1, सूर्य खाना नं० 4 में हो।

शुक्र और राहु

(मिट्टी भरी काली अंधेरी)

केतु गिना फल शुक्र मंदा [1], औलाद भली न लक्ष्मी हो।
फूल लगा बुध बेशक डंडी, फोकी इज्जत भाग्य होती हो।
सोहबत स्त्री में चोर गृहस्थी, औलाद उम्र तक शक्की हो।
चन्द्र, रवि जब मदद हो गिनती, जलती मिट्टी की देती हो।

1. शुक्र, राहु मुश्तरका होने पर सिर्फ शुक्र के दो भागों (बुध और केतु) में सिर्फ बुध एक ही टुकड़ा बाकी होगा। यानि फूल तो होंगे मगर शुक्र का फल (केतु न होगा) दोनों का मंदा प्रभाव व्यक्ति की गुदा के इर्द-गिर्द नज़र आएगा। जिस घर में इकट्ठे बैठे हों उस घर से संबंधित शुक्र का फल मंदा होगा।

नेक हालत

बुध का फोका मान और मशहूरी अवश्य होगी।

खाना नं० 12 :- असर मंदा धन पहले का, रिज़क स्त्री का होता है।
सांय दबाती फूल जो नीला, लेख चमकता हो।।

उपाय 1. चन्द्र का उपाय :- धोये चावल या शुद्ध चाँदी घर में कायम रखना और छुपे खड्डों में सूर्य की चीज़ें (पैसा) या मंगल की सहायता शुभ होगी।

2. दोनों मुश्तरका चाहे किसी भी घर में हो शुक्र की चीज़ें स्त्री गृहस्थी हालत लक्ष्मी आदि सदा जलती ही होंगी चाहे दोनों खाना नं० 2 में ही हो जो धर्म स्थान है। -जब केतु दोनों से पहले घरों में हो तो साथ वाले मकान में लड़की की शादी न हो सकेगी। शुक्र का फल स्त्री जाति का भाग्य तो अवश्य उच्च होगा।

मंदी हालत

जब दक्षिणी दरवाज़े वाले (मेन गेट) मकान का साथ हो तो शुक्र का फल हर तरह से मंदा होगा। स्त्री पर स्त्री बर्बाद बल्कि समाप्त लेंगे न सिर्फ स्त्री की सेहत मंदी बल्कि स्त्री की आयु तक मंदी बर्बाद या खतरे में ही लेंगे, लक्ष्मी भी मंदा ही फल देगी।

राहु मुश्तरका के समय राहु की पहली मंदी निशानी नाखुनों से शुरू होगी। यानी ऐसे स्त्री-पुरुष अपने नाखुनों को कटवाने की बजाय बढ़ा कर लम्बा और उन पर रंग आदि करने के शौकीन होंगे या राहु, शनि की एजेंसी में रहने की कोशिश करेगा अर्थ यह कि चमकीले शानदार सूरमे आँखों ही आँखों से बातों का फैसला कर लेना आम होगा। जिसका परिणाम राहु की राजधानी या ऐसे प्राणी की 43 साल की आयु तक उसके लिए संसार में हर ओर कड़वे धुएँ के बादल खड़े कर देगा जिनके कारण रात की नींद आम तौर पर खराब हो जाएगी।

उपाय :- चन्द्र और शुक्र दोनों का मुश्तरका उपाय यानी दूध (चन्द्र) में मक्खन (शुक्र) या नारियल का दान सहायक होगा। स्त्री के शरीर के दाएँ भाग पर चाँदी का छल्ला शुभ होगा।

खाना नं० 1 :-स्त्री की दिमाग़ी खराबियां या खुद टेवे वाले के अपनी सेहत पर (दिमाग़ी हिस्सा, बुखार आदि) मंदी होगी।

खाना नं० 3 :-

34 साल की आयु तक बुध और केतु दोनों ही का फल मंदा होगा।

खाना नं० 7 :-

धुआँ मिट्टी घर स्त्री भरती, असर बुरा ही होता है।
उम्र स्त्री न होगी लम्बी, केतु, चन्द्र न उत्तम हो।

जातक स्वार्थी, गंदा आशिक होगा। अब राहु और शुक्र दोनों ही बर्बाद होंगे। केतु भी माता या माता घर (मामा खानदान) को बर्बाद कर रहा होगा और चन्द्र नष्ट कर रहा होगा। जिसके कारण से 24 साल की आयु भी बर्बादी में समाप्त होगी।

खाना नं० 12 :- स्त्री की सेहत और इंसान की खुद अपनी लक्ष्मी धन अवश्य ही राहु के धुएँ में काली खराब होती रहेगी। भाग्य की हार के समय स्त्री के हाथों या स्वयं नीला फूल सांयकाल के समय मिट्टी में दबाते जाने से मदद होती रहेगी।

-यदि शनि खाना नं० 3 में हो तो 21-25 साल की उम्र में बेवापन ना होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

शुक्र और केतु

माँ-बेटा हो असली जोड़ा, रक्षा बाहम जो करता हो।
औलाद, स्त्री सुख होता पूरा, मान गृहस्थी पाता हो।
मंदा कोई दो जिस दम होता, शरीर स्त्री केतु मंदा हो।
संतान राहु हद पाप जो होता, उपाय गुरु का उत्तम हो।

1. कामदेव की नाली (मिट्टी का उजू लिंग) जो शुक्र की (स्त्री) की जान है। जब राहु टेवे में दोनों से पहले हो तो साथ वाले मकान में लड़के की शादी न होने पाएगी।

दोनों में से किसी एक के लिहाज से यदि नेक फल हो तो दोनों ही का नेक फल होगा। इसी प्रकार ही यदि किसी एक का किसी घर में मंदा फल हो जाए तो दोनों का ऐसी हालत में मंदा फल होगा। अमूमन 40साल की आयु तक शत्रु आम होंगे।

नेक हालत

खाना नं० 9 :-

हालांकि शुक्र इस घर में अति मंदा ग्रह है मगर अब दोनों ग्रहों का मुश्तरका इस घर में अति उत्तम फल होगा।

खाना नं० 12 :- **स्त्री बहादुर सिफत सुअर की, संतान 12 नर करती हो।**
सिफत धन में हरदम बढ़ती, लम्बी आयु सुख रात्री हो।।

स्त्री सूअर की तरह बहादुरी में उत्तम होगी, नर संतान 12 तक और वह भी लड़के जो सूअर की तरह बहादुर, उत्तम सेहत तथा धनी और सुखी होंगे।

मंदी हालत

खाना नं० 1 :-

विघ्न संतान लावल्दी गिनते, इश्क मंदा ही होता हो।
चौथे बैठा जब मंगल टेवे, लावल्द मंगल बद बनता हो।।

संतान के विघ्न, लावल्दी तक माना है। संतान और दूसरे साथियों की मौतों से मंगल खाना नं० 4 से दु:खी और तंग होगा।

खाना नं० 6 :-

बुध मदद नहीं शुक्र करता, केतु धोखा ही देता हो।
अकेले प्रभाव दो बेशक उत्तम, इकट्ठे ज़हर दो होता हो।
रवि, गुरु जब टेवे मंदा, बांझ स्त्री फल होता हो।
गाय का घी शुक्र बेशक उत्तम, कुत्ता केतु हज़म नहीं करता हो।

दोनों ग्रहों का मंदा फल, स्त्री बांझ और कुत्ते को घी हज़म नहीं होता की तरह भाग्य की मंदी हालत हो। यानी गरीबों को मालिक रिज़क दे भी दे तो उनको खाया ही न जाएगा या वह खा ही न सकेंगे।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

****

मंगल और बुध

(मौत बहाना, बुध अब शेर के दाँत होंगे, शुभ लाल कपड़ा जो लड़की को उसकी शादी के समय पहनाते है, लाल ख़ूनी रंग मगर जो चमकीला न हो, कंठी वाला राय तोता)

नेक मंगल, बुध एक सा होता, बदी मंदा बुध दो गुणा हो।
नेक हालत चुप हो बुध रहता, बद में बदी भर जाता हो।
खांड ज़हर बुध, मंगल मिलता, मंदे घरों दो उम्दा हो।
नेक मंगल फल नेक चाहे देता, बुध ज़हर कर देता हो।

दोनों ग्रह 45 साल की आयु तक मुश्तरका गिने जाएंगे। यदि मंगल नेक हो तो दोनों ग्रहों का बराबर और उत्तम चमकदार फल लेकिन यदि मंगल बद हो तो बुध का 2 गुणा मंदा असर शामिल होगा।

मंगल (बद) और बुध मुश्तरका बनावटी शनि (राहु स्वभाव मंदा असर) मीठे में रेत होगी। आतश शीशा लड़की के लाल चमकीले कपड़े, अनार का फूल जैसा वृहस्पति के टेवे में होगा, वैसा ही दोनों का फल होगा।

जब मंगल बद हो तो बुध उसकी आधी आयु (17 साल) तक अपना प्रभाव जुदा न दिखा सकेगा। यदि मंगल नेक हो तो मुश्तरका बैठा बुध चुप होगा और शत्रुता ही करनी हो तो छुपी ही करेगा। जब दोनों साझें टेवे में शुक्र से पहले घरों में बैठे हों तो शुक्र का हाल बुरे घरों का भी नेक हो जाएगा। क्योंकि बुध अपनी नाली की दृष्टि के नियम पर मंगल को उठा कर शुक्र के साथ मिला देगा जिससे मंगल, शुक्र का मुश्तरका फल चन्द्र समान हो जाएगा जिसमें बुध और केतु का मंदा फल और बुध तथा केतु की चन्द्र से शत्रुता की ज़हर भी उड़ गई होगी।

नेक हालत

लड़के 24 साल और उत्तम फलदायक होंगे। शुक्र का फल स्त्री की दिमागी़ शक्ति उत्तम होगी जिसमें हरा-भरा पहाड़ (शुक्र) का उत्तम फल शामिल होगा और उसकी ज़ुबान का शब्द पत्थर पर लकीर होगा, या वह वृहस्पति ब्रह्मा को सुन कर बोलती हुई मालूम होगी। ऐसा व्यक्ति लावल्द कभी न होगा संतान के योग चाहे लाख मंदे हो।

-जब दोनों ग्रह मुश्तरका टेवे में शुक्र से पहले घरों में बैठे हों।

खाना नं० 1 :- मजबूत शरीर व स्त्री के खानदान को तार देगा और धन-दौलत उनके ही अर्पण करता होगा।

खाना नं० 2 :-

घर 8 जब होता खाली, नेक असर वो देता हो।
आप धनी ससुराल अमीरी, लावल्द कभी न होता हो।।

स्वयं धनी, ससुराल धनी हो और धन दे।

खाना नं० 3 :- यदि बड़ा भाई साथ हो और सहायता दे, अच्छा गुजारा, माता-पिता का सुख सागर लम्बा और उत्तम और कुदरती मदद मिले।

जातक लावल्द कभी न होगा, बुध अपनी नाली के असूल पर शुक्र और मंगल दोनों को मिला देगा, अब बुध खाना नं० 3 और शुक्र खाना नं० 9 का कोई मंदा प्रभाव न होगा। -जब मंगल, बुध खाना नं० 3 और शुक्र खाना नं० 9 में हो।

खाना नं० 4 :-

जान स्वयं पर बुरा न होगा, कहर गैरों पर ढाता हो।
बुध अकेला बेशक उत्तम, राख ज़माना मिलता दो।।

अपने खुद के वजूद पर कभी बुरा असर न होगा।

खाना नं० 6 :- दोनों ग्रहों का अपना-अपना असर मगर उत्तम और नेक फल वही जो दोनों का जुदा-जुदा एक के लिए खाना नं० 3-6 में लिखा है।

खाना नं० 8 :-

जुदा-जुदा हो बेशक मंदा, केतु भला न होता हो।
मिला असर याँ हर दो उत्तम, शनि दूजे में बैठा जो।
मामा कबीला ऐसो उजड़ा, जीवित कोई ना रहता हो।
जो जीवित वह मरे से भी बुरा, फकीर जंगल जा बचता हो।

मंगल, बुध के आपसी साथ में जिस जगह दो (मंगल या बुध) से किसी एक का भी फल खराब हो तो इकट्ठे होने से दोनों ही का फल उत्तम होगा। स्वयं अपने लिए मंगल अब बद न होगा बल्कि दोनों का मिला-मिलाया प्रभाव अति उत्तम होगा।

मंदी हालत :-

मंगल बद के कारण आगे की घटनाएँ, फोकी इज्जत, माता-पिता का सम्बंध मंदे बुध का खराब फल जो लानत बीमारी से दुःखी करे। नाहक बदनामी फिक्र और तकलीफ दे, प्रायः दुःखी। उपाय वही जो मंगल बद में लिखा है।

खाना नं० 1 :- ***भाई पर मंदे असर, औलाद की कमी, जीवन का दुनियावी बेलुत्फी के वक्त शहद की सुराही मंगल की चीज़ों (खांड, शहद, सौंफ) से भर कर बाहर वीराने में दबाएं। सुराही के इर्द-गिर्द ढाक के पत्ते भी रखना उत्तम होगा।***

खाना नं० 3 :-धन-दौलत के बहुत ग़म (चोरी वगैरा) देखे, माया हर काम में मंदा हो। दिल हमेशा बुरे कामों की तरफ चले।

खाना नं० 4 :-चाहे वह खुद बुरा ना हो और ना ही बुरा करने की कोशिश करे मगर फिर भी दूसरों के लिए मंदा असर ही होगा।

खाना नं० 7 :-

गृहस्थ मंदे में ज़हर वकूवे, ज़ुबान मंदी जब होती हो।
गुरु, शनि से कोई मिलते, ज़हर मंगल बद भरता हो।
मंगल सातवें सब कुछ उम्दा, धन-दौलत परिवार ही सब।
सब का सब ही मंदा होगा, बुध मिले मंगल से जब।

शहद में रेत या खून के दौरे के लिए जिस्म की नाड़ियाँ खराब हर दो ग्रह का प्रभाव बर्बाद। मंगल का शेर बुध के ज़हरीले दाँत होने के कारण से शुक्र की गाय (जो इस घर का मालिक है) पर भी हमला कर देगा। गृहस्थ बर्बाद हो। ज़हर की घटनाएँ हों, किसी शुभ प्रभाव की उम्मीद नहीं। फ़िजूल झगड़ा फसाद मंदी ज़ुबान (बुध) की मेहरबानी और स्वयं अपने बुरे विचार घटनाओं के परिणाम हो।

खाना नं० 8 :- खानदान को बर्बाद ही करता होगा बल्कि उनकी आगे की नसल का कायम रहना तक शक्की होगा। जिस दिन से ऐसा व्यक्ति होश संभाले, माया उसी दिन से दुःखी होकर दर बदर घर से निकल भागे। साधु आदि होकर बचता होगा। मामा अपने सिर पर राख मल कर बच सकता है, वह भी घर से बाहर रह कर, अगर अपने ही घर रहे तो मुर्दों से भी तंग, कारोबार में सख्त धक्के, नौकरी से निकाला जाना जो कहो ठीक हो।
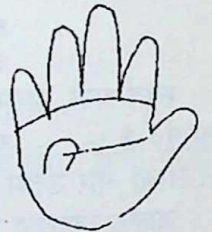
खाना नं० 11 :-

शराब खोरी खुद आँखें टेढ़ी, शनि, गुरु फल मंदा हो।
मकान तबेले दौलत जलती, हार, हानि सब देता हो।
गुरु, चन्द्र की चीज़ें उत्तम, पानी उत्तम जल गंगा हो।
सवेरे प्रातः दाँत जो धोता, ज़हर मंगल बद उड़ता हो।

शराब का प्रयोग आँखों का टेढ़ापन पैदा कर देगा। शनि (मकान) और वृहस्पति (पिता, गुरु, सोना) सब मंदा हाल पैदा कर देंगे। जिसका उपाय प्रातः सवेरे गंगा जल का प्रयोग सहायक होगा या चन्द्र या वृहस्पति का उपाय या चन्द्र या वृहस्पति की चीज़ों का साथ सहायक होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंगल और शनि

(डॉक्टर, डाकू, फौजी, नारियल, बादाम, छुआरे, मंगल, शनि एक साथ के समय राहु अमूमन उच्च प्रभाव का होगा चाहे कहीं भी कैसा भी बैठा हो)

छुपते सूर्य की लाली पाता, शान बुढ़ापे बढ़ती हो।
मंदी हालत में राहु मंदा, काग़ रेखा फल देती हो।
साथ गुरु से तीनों मंदे, चोर, साधु मरवाता हो।
बाप-दादा का सब कुछ छोड़े, मुआवन उम्र धन रेखा हो।
गुरु घरों [1] फल हर दो उत्तम, सुखिया गृहस्थी होता हो।
धन-दौलत घर इतना बढ़ता, डाका वहाँ आ पड़ता हो।
लेने-देने एतबारी मंदा, नुक्सान लम्बे वह पाता हो।
लाल हीरा न पहने उत्तम, फर्जी बीमारी देता जो।

1. खाना नं० 2-5-9-12

खाना नं०	किस ग्रह का असर	बैठने की निशानी
1.	मंगल	राजदरबार का संबंध।
2.	शुक्र	ससुराल संबंध या शादी।
3.	बुध	ऋतुमती लड़की की शादी।
4.	चन्द्र	ज़मीन खेती, घोड़ी बच्चा दे।
5.	सूर्य	संतान का जन्म।
6.	केतु	कुत्तिया बच्चे दे, छिपकली जिस्म पर चढ़े।
7.	शुक्र	स्त्री भोग।
8.	मंगल बद	मौत फंदे।
9.	वृहस्पति	पितृयज्ञ।
10	शनि	मकान में दिन को साँप आए।
11.	वृहस्पति	बाप-दादा का माल छोड़े।
12.	वृहस्पति	खानदानी यज्ञ।

दोनों ग्रह 40साल की उम्र तक मुश्तरका होंगे। मुश्तरका मिलावट में मंगल 3 में हो तो शनि 4 हिस्से होगा। मुश्तरका मिलावट में मंगल जब मंगल बद हो तो मंगल का 1/3 भाग शामिल हो. जब मंगल नेक हो तो शनि की बुराई तऔर मंदा असर सिर्फ 1/3 शामिल हो। दोनों की अच्छी या बुरी नींव राहु पर होगी। जैसा राहु वैसा दोनों का असर। मंगल नेक शनि और मुश्तरका दयालु शिवजी और विष्णु होंगे, उच्च राहु का असर होगा जो झगड़ें में फतह का मालिक होगा। मंगल बद और शनि मुश्तरका के काग़ रेखा जो राहु की बुरी नीयत का असर देगी। मंगल खुद तो बुध की तरह सिफ़र हो मगर शनि को अपनी सारी ताकत देकर शनि की ताकत को दो गुणा कर देगा।

नेक हालत

दो डाकू एक ही असूल पर आपस में मिले की तरह होंगे। बुढ़ापे में छिपते सूर्य की तरह भाग्य की उम्दा शान होगी। हाथ पर कमान का चिन्ह, बहादुर, उम्दा सेहत, जिस्मानी ताकत उत्तम। दूसरे मर्दों पर खौफनाक मौत की तरह छाया रहने वाला होगा।

दूसरे भाईयों ('अपने से बड़े) मंगल से संबंधित रिश्तेदार की किस्मत का हिस्सा भी उसे ही मिल जाएगा या वो बेचारे मंगल के दूसरे दौरे में शून्य ही हो जाएंगे। साँप (शनि) और (शेर) मंगल की मुश्तरका तबीयत का स्वामी, जालिम को कत्ल करने और मेहनत करने वाले को माफ कर देगा। धन की अधिकता के कारण उसके घर डाका डालने की घटनाएं होंगी या उसका घर डाका डालने के काबिल होगा।

खाना नं० 1

स्त्री कबूतरबाजी मंदी, खून मंदा खुद होता हो।
माया दौलत ससुराल की बढ़ती, सफ़र संबंध उत्तम हो।।

ऐसा पुरुष जिस दिन से राजदरबार का काम शुरू करे, दोनों ग्रहों का नेक फल जारी होगा। (मंगल दोबारा) ससुराल खानदान दिन-प्रतिदिन धनाढय होता जाएगा। टेवे वाले की अपनी आयु कभी हार न देगी। सफ़र के काम से संबंध रखना हर प्रकार का बचाव देता रहेगा।

खाना नं० 2 :- जिस दिन शादी हो या ससुराल संबंध शुरू हो जाए वृहस्पति भी उत्तम फल देगा। अपना धन बहुत बढ़ेगा, ससुराल के धन की लहर शुभ होगी। (शुक्र के द्वारा) वह अमीर होंगे और उनसे जायदाद तथा धन मिलेगा, ससुराल वाले कभी संतान रहित न होंगे।

खाना नं० 3 :- जायदाद अधिक हो, दिलावर होगा, कमान का स्वामी। बुध लड़की की शादी या ऋतुमति होने से दोनों ग्रहों का उत्तम फल शुरू होगा।

खाना नं० 4 :-

दोनों ग्रहों का (चन्द्र के द्वारा) जिस दिन चन्द्र की चीज़ें खेती ज़मीन आये, घोड़ी बच्चा दे, नेक फल जारी वर्ना दोनों का वही फल जो चन्द्र, मंगल खाना नं० 10में लिखा है।

खाना नं० 5-6-8-9 :-

पाँच ज़हर शनि मध्यम होती, याद नेकी ना 6 की हो। मंगल बदी घर की कब्रस्तानी, काग़ रेखा बुध खाना नं० 9 की।

-जब ऐसे व्यक्ति के यहाँ नर संतान पैदा हो तो किस्मत सूर्य के द्वारा जागेगी।

खाना नंव 6 :- केतु के जरिए, कुत्तिया घर में, घर के सामने बच्चे दे या छिपकली पैर की तरफ से चढ़े तो भाग्य जागेगा।

खाना नं० 7 :-

शुक्र के द्वारा, स्त्री से भोग वगैरा से भाग्य जागेगा। धनी, संतान और सांसारिक, स्त्री सुख होगा। संबंधी और अपने कबीले को तार देने वाला होगा।

खाना नं० 9 :-

वृहस्पति के द्वारा, जब बुर्जुर्गों से संबंधित कोई लम्बा-चौड़ा यज्ञ मेले की भाँति हो तो भाग्य जागेगा। शाही जंगी धन और शाही परवरिश का साथ हो तो 60साल उत्तम हो और आगे बढ़ता रहे।

-जब तक बुध का संबंध न हो।

खाना नं० 10-

पोते-पड़ोते हरदम बढ़ते, पाप टेवे जब उत्तम हो।
4 चन्द्र चाहे शत्रु बैठे, दूध बगीचे भरता हो।।

शुक्र द्वारा, दिन के समय, रात को नहीं, घर में साँप निकल आये मगर मारा न जाये क्योंकि ऐसा साँप सिर्फ भाग्य उदय की निशानी लेकर आया होता है, डंक नहीं मारता, भाग्य उदय होगा। व्यक्ति घर परिवार वाला बथ्लक पोते-पड़ोते वाला होगा। यदि राहु के घरों में हो तो और निकम्मे बर्बाद न हो रहे हो। यदि राहु के मंदे या बर्बाद हो तो मंगल और बुध का शुभ प्रभाव, राहु की सारी आयु 42 साल के बाद होगा।

शुभ हालत और राजा समान होगा जब तक कोई और ग्रह खाना नं० 3-4 में न हो और न ही खाना नं० 1-8 में मंगल का शत्रु (बुध, केतु) हो। यदि 3-4 या 1-8 में मंगल या शनि का शत्रु हो तो ऐसा शत्रु ग्रह स्वयं ही मारा जायेगा और बर्बाद होगा, परन्तु मंगल, शनि की शक्ति कम न होगी बल्कि और भी खून खराबी होगी। उसकी स्त्री नेक भाग्य वाली तथा उसके भाग्य को उदय कर देगी या और कोई संबंधी होगा जिसके साथ मिलते ही भाग्य जाग पड़ेगा। संक्षेप में शनि का कभी मंदा प्रभाव न होगा। शुभ प्रभाव ही देगा। शनि से होने वाली बीमारियां, मौत तबाही उदासी घर में कभी न होगी। कबीले वाले स्वयं ही आपस में झगड़ा करें तो चाहे करें, मगर प्रकृति की ओर से कोई विशेष मुसीबत न होगी। दूसरे आदमियों पर वह मौत की तरह छाया रहेगा और चीते की तरह पीछे-पीछे चलता रहेगा। लेकिन यदि कभी मुकाबला ही पड़े और सताया जाये तो बेशक हमला कर देगा। चार कोना मकान सदा उत्तम फल देगा।

पानी की तरह दूध से पहले वृक्ष की तरह उत्तम भाग्य का स्वामी होगा, रौब वाला गुस्से वाला सरकार की ओर से विशेष लाभ पाने वाला सरकारी नौकरी ज़रूर होगी और मंगल नेक धन बढ़ता चले।

-जब दोनों खाना नं० 10 चन्द्र खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 12 :-

असर दोनों दे अपना-अपना, नेक भला और उम्दा दो।
राहु बुरा ना टेवे होगा, ना ही केतु, बुध मंदा हो।।

दोनों का उम्दा उत्तम असर हो, राहु, केतु, बुध भी उत्तम हो।

मंदी हालत

धन-दौलत और परिवार दोनों उजड़ें, जहमत की बीमारी आम हो, बीमारी जब कभी होगी सख्त होगी और ऐसा लगेगा कि अब मरा अब मरा, लेकिन आयु लम्बी भोगेगा, कम से कम 90वर्ष से कम न होगी। यह भी हो सकता है कि अक्सर (शनि की छुपी शक्ति का परिणाम) सिर्फ एतबारी ढंग पर साहूकारा या सांसारिक लेने-देने करने से ऐसा व्ययक्त धन के मोटे-मोटे नुक्सान देखे।

उपाय **लेन-देन के संबंध में जिसको भी रकम दे उससे लिख-लिखा करके देगा, रकम की वसूली पर जो चाहे छोड़ दे। मंगल बद और मंदे शनि के हालों में दिए उपाय करें। जब सेहत मंदी जो ज़ाए घोड़ी बच्चा दे तो उसका पहली ही बार का दूध जो उसके बच्चे ने अभी पीना ना शुरू किया हो, शीशे के बर्तन में कायम रखें तो धन की बरकत होगी और डाके की घटनाओं से या ग़ैबी धोखाबाजी से बचाव होगा, मगर फिर भी बच कर ही चलना चाहिए।**

खाना नं० 1 :-

जब टेवे में बुध मंदा हो तो काग़ रेखा का मंदा फल होगा, जो शनि की 36 से 39 साल तक संबंधियों और स्वयं टेवे वाले का अपना सब कुछ धन मर्द-औरत उड़ा देंगे या उजाड़ देंगे। शनि का बुरा प्रभाव होता रहे। खून की बीमारियां तंग करें। स्त्री प्यार गंदे अर्थों में, खराबी का बहाना होगा या काली आँख वाली शनि की गोल गहरी या साँप की आँखों से मिलती हुई आँखों वाली स्त्री के द्वारा सब धन बर्बाद या किसी न किसी तरह वह छुप कर या सामने बर्बाद करती रहे। भूरी आँखों वाली स्त्री मदद देगी चाहे अपनी हो या पराई (प्रेमिका या पतिहीन) अपनी सुन्दरता या गरीबी और अबलापन के कारण से ऐसे टेवे वाले की साथिन संबंधी हो ही जाया करती है मगर परिणाम मंदा ही हुआ करता है अत: चन्द्र का उपाय माता का हुक्म या संसारी सलाह राय मददगार होगी।

खाना नं० 2 :-

रात या पक्की शाम के समय धर्म के समय धर्म स्थान में माता या ससुर के जाना दुर्घटना या हानि का कारण होगा, दिन के समय कोई वहम नहीं। -जब चन्द्र, राहु खाना नं० 12 में हों।

खाना नं० 3 :-

भाई-बन्धु विरोध करें, स्त्री के भाईयों से ज़हर की घटनाएं हों, गृहस्थ बर्बाद धन गुम चाचा (शनि) या छोटा भाई (मंगल के साथ शनि) बाल-बच्चों वाला औलाद से दुखिया या संतान रहित भी हो सकता है।

खाना नं० 4 :-

मंदी हालत में दोनों ही ग्रहों का जुदा-जुदा फल होगा, मौत तक बुरी हालत और दुर्घटना आदि से गिनते है।

खाना नं० 5 :-

दूसरी नर संतान या केतु का उत्तम फल 42 साल की आयु के बाद नसीब होगा।
-जब मंगल, शनि खाना नं० 5, केतु खाना नं० 1 में हो।

खाना नं० 6 :-

नेकी को न समझे, खुदगर्ज आदमी होगा। पेट में कष्ट जिसके लिए मंगल की चीज़ें (चीनी या मीठा भोजन खाने-पीने की मीठी चीज़ें) धर्म स्थान में देने से मदद होगी।

-जब मंगल, शनि खाना नं० 6, केतु खाना नं० 2 में हो।

खाना नं० 7 :-

बुढ़ापे में नज़र थोड़ी कमज़ोर हो जाए, अंधा नहीं होगा। चरायता के प्रयोग में दिमाग़ी खराबी दूर हो।

खाना नं० 8 :-

दोनों ग्रह मारक स्थान, मुर्दघाट, मंदा चूल्हा या मंदी आग़ जलाने की जगह होंगे, 3 कोना या बाकी शून्य बचने वाले के मकान के भाग्य का मंदा हाल होगा। मौत मातम, तमाम बदी या और कष्ट दरपेश होगी। श्मशान के अंदर कुएं का पानी अपने घर में लाकर कायम रखना सहायक होगा।

खाना नं० 9 :-

जब बुध का साथ या संबंध हो जाये तो सबसे मंदी काग़ रेखा का फल मंदा समय होगा।

खाना नं० 10-

चोरी ठगी हो गुरु का पेशा, असर मंदे सब देगा जो।
उच्च कमाई कर्जा होगा, वर्ना पिता खुद जलता हो।।

खाना नं० 11 असर में (वृहस्पति का) जिसमें शनि भी भागीदार है और स्वयं मंगल का शेर भी गुरु वृहस्पति की ज़जीर में जकड़ा हुआ होता है, ठीक आय होते हुए भी कर्जई होगा बाप की चीज़ों के बदले में सब अपनी पैदा की हुई चीज़ें कायम होने वृहस्पति द्वारा भाग्य उदय होगा। चोरों को फसाने वाले धर्मात्मा साधु की तरह वृ० अब दोनों ही ग्रहों (मंगल, शनि) का फल बर्बाद करता जायेगा।

मंगल और राहु

(चुपचाप, नेक हाथी जो केतु का असर दे शाही सवारी का हाथी राजा की गिनती का आदमी)

हाथी पापी न शरारत करता, लेख जाती को उभारता हो।
बैठे घरों कोई जिसदम मंदा, खवीस अकारब मारता हो।
उच्च उत्तम कोई जब दो बैठा, राजा सवारी होता हो।
शान राजा और दौलत उम्दा, साथ हुकूमत पाता हो।

मंगल रोटी तो राहु चूल्हा [1] या मंगल महावत तो राहु हाथी होगा। मंगल के साथ राहु हो तो राहु का फल जुदा नहीं हुआ करता या राहु (शून्य फल) होगा या हाथी महावत समेत पूरी सवारी होगी अब राहु शरारत नहीं कर सकता।

1. जिस जगह (चूल्हा आदि) खाना पकाने की जगह हो वही खाना खाया जाये तो राहु शरारत न करेगा।

नेक हालत

दोनों ऐसे घरों में हों जहाँ कि राहु उच्च हो खाना नं० 3 या 6, या राहु का प्रभाव दूसरे आम साधारण असूली दृष्टि आदि के दम पर दूसरे ग्रहों की सहायता आदि हो जाने के कारण उत्तम हो रहा हो तो वह मनुष्य राजा समान होगा।

मंदी हालत

दोनों ऐसे घरों में बैठे हों जहाँ कि दोनों में से किसी का फल आम साधारण हालत के हिसाब से मंदा बुरा या बर्बाद हो तो जिस्म पर लहसुन का निशान, राजा का बिना महावत बिगड़ा हुआ हाथी होगा जो अपनी ही फौज को मारता होगा।

उपाय

रोटी पकाने और खाने की जगह एक ही तो तो राहु का मंदा असर शुभ ही रहेगा।

खाना नं० 1 :-

पेशाब, औलाद या केतु की मंदी हालत होगी जिसके वक्त मिट्टी का बर्तन राहु की चीज़ें (जौ अनाज या सरसों) से भर कर चलते पानी में बहाने से सहायता होगी।

–जब केतु खाना नं० 4, सूर्य खाना नं० 6 में हो।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंगल और केतु

(शेर की नसल का कुत्ता)

मंगल नेकी में दो गुणा उत्तम, शनि, शुक्र जब [1] मिलता हो।
वर्ना मंगल [2] किस्मत बनना, शेर कुत्ता दो लड़ता हो।।

1. औरत के टेवे में मंगल, केतु मुश्तरका के समय औरत के मासिक धर्म (वयस्क) 14 साल की उम्र से शुरू होकर 48 साल तक चलेगा, जो संतान पैदा करने में नेक फल देगा। जब टेवे में० शनि और शुक्र बाहम (इकट्ठे) मिलते हो तो मंगल, केतु मुश्तरका का अर्थ है कि मंगल दो गुणा नेक है। वर्ना मंगल, केतु (जब मंगल बद या मंगलीक मंदा मंगल हो) पितृ ऋण में केतु (कुत्ता, मुसाफिर, लड़का) मंगल बद (कब्रिस्तान) होगा और गोली या ज़हर से भरा हुआ, भगा कर ले जाना कारण होगा। केतु का इलाज चन्द्र से होगा यानि सात किस्मों के फल सात किस्मत के जानवरों के दूध से धोकर जद्दी श्मशान, कब्रिस्तान या वीराने में दबाएं वर्ना 28 साल की आयु 48 साल की आयु तक हाथ-पाँव अपने आप हिलते रहे झूले की बीमारी ही तपेदिक कोढ़ की घटनाओं से नर प्राणियों की मौतें होंगी।

क्रमाक	जाति जानवर	ग्रह
1.	घोड़ी।	चन्द्र
2.	धर्म स्थान का पानी या शेरनी का दूध।	वृहस्पति
3.	बन्दर या पहाड़ी गाय या पूरी कपिला गाय यानि जिसका जिस्म और थन काले रंग के हों या ऐसी स्त्री जिसके लड़कियां ही लड़कियां कम कम 7 पैदा हुई हों।	सूर्य
4.	ऊँटनी।	मंगल बद
5.	भैंस।	शनि
6.	बकरी।	बुध
7.	साधारण गाय या साधारण स्त्री।	शुक्र
8.	बिल्ली, हथिनी या (भंगिन जच्चा)	राहु
9.	कुत्तिया, सूअरनी, गधी।	केतु

2. खासकर जब चन्द्र, शनि मुश्तरका से नीच केतु हो।

जब केतु मसनुई हो, एक तो असली केतु दूसरा नकली केतु उच्च हालत यानि शुक्र, शनि मुश्तरका या एक तो असली केतु या दूसरा नकली केतु नीच हालत यानि चन्द्र, शनि मुश्तरका हो तो मंगल दो गुणा नेक होगा लेकिन अगर मंगल बद भी हो तो भी उस मंगल बद की दो गुणा मंदा करने की ताकत को भी बर्बाद करके उसे नेक कर देंगे। टेवे में जब मंगल, केतु इकट्ठे हों तो शुक्र, शनि भी संभवतया इकट्ठे होंगे। ऐसी हालत में मंगल ज़रूर ही दो गुणा नेक होगा।

नेक हालत

लड़के 24 साल पैदा होते रहें।

खाना नं० 2 :-

ऐसा हाकिम जिसे कल का फिक्र न हो, दोनों का जुदा-जुदा और उत्तम फल होगा।

खाना नं० 9 :-

साल 28 हालत बदले, नेक तरफ चाहे मंदा हो।
पाँच तीजे हो न्यायक जिसके, उपाय उत्तम ग्रह [1] दस का हो।।

1. चन्द्र की चीज़ें गंगा जल का भी उपाय मददगार होगा। केतु का फल अब उत्तम होगा जबकि मकान की बुनियाद वाला उपाय हो चुका हो यानि जद्दी मकान की बुनियाद के नीचे वर्षा का पानी या शहद, खालिस चाँदी के बर्तन में डाल कर दबाना सहायक होगा। केतु का उपाय भी शुभ होगा।

खाना नं० 10-

खाना नं० 9 का ही उपाय खाना नं० 10में दोनों मुश्तरका होने पर होगा।

मंदी हालत :-

मंगल शेर, केतु कुता दोनों शेर, कुत्ते की लड़ाई या मंगल, केतु के आपसी झगड़े में जब केतु स्वयं मंगल के असर को जाहिर बुरा या छुप कर खराब कर रहा हो या जब मंगल बद का असर हो रहा हो तो दो कुत्तों की पालना पर दो कुत्ते, काले तथा सफेद (नर-मादा इकट्ठे) रखना अच्छा फल पैदा करेंगे।

खाना नं० 4-6 :-

मकान में अपने शेर हो कुत्ता, शेर गुफा में छुपता हो।
मिलना मिलाया असर दोनों का, मंदा बुरा ही होता हो।।

दोनों ही का बुरा असर हो या दोनों ही ग्रह हर तरह से मंदे और नाश करेंगे।

खाना नं० 8 :-

वे ही मंदा असर जो मंगल बद खाना नं० 4, केतु खाना नं० 8 और मंगल, केतु मुश्तरका खाना नं० 4 में दिया हो।

खाना नं० 10-

28 दोनों 45 मंदे, केतु भला न रहता हो।
गुरु बैठा हो जैसा टेवे, फैसला ग्यारह होता हो।
केतु घर दसवें का शक्की, कुत्ता लड़का मंदे।
मंगल चाहे दसवें बैठा, फिर भी दोनों मंदे।
अब उपाय केतु होगा, या चन्द्र का पानी।
महल मकानों नीचे देवे, दूध, शहद वो प्राणी।

28 साल की उम्र के बाद हालात बुरे होंगे, मंगल बद होगा जो 45 साल की उम्र तक बर्बाद करेगा। संतान (केतु) बर्बाद या शून्य होगी।

खाना नं० 11 :-

दोनों ही का वही फल होगा जो मंगल अकेले का खाना नं० 10में दिया है शर्त यह कि मंगल बद न रहा हो।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

****

बुध और शनि [1]

(जायदाद मनकूला, आम का वृक्ष)

उड़ता साँप [2] या बाज़ पक्षी, नज़र चील की होती हो।
ज़हर खून चाहे दीगर होता, अमीरी हिस्सा स्वयं जाती हो।
बुध हकीमी शीशा बोले, साथ शनि जब उत्तम हो।
शुक्र, रवि का तपेदिक तोड़े, अनाज व्यापारी उम्दा हो।

1. ढड़ता साँप नेक अर्थों में। ससुराल के लिए फिर भी मंदा ही हो। शनि के साथ बुध कली के समान होगा।
2. शराबी, कवाबी ज़ुबान से ही साँप की शक्ति या स्त्री को उड़ा ले और शनि का जादू भर दे।

दोनों 39/40 साल की आयु तक मुश्तरका होंगे। इस मिलावट में बुध 4 हिस्से तो शनि 5 हिस्से होगा।

नेक हालत

संतान पर कभी बुरा असर न होगा, बल्कि 24 साल लड़कों की पैदाइश होगी। 42 साल शत्रुओं से बचाव हो। माता-पिता का सुखसागर लम्बा और नेक होगा। स्वयं भी वह नेक भाग्य का स्वामी और हमदर्द होगा। दूसरों के लिए एक साँप (शनि) और दूसरा उड़ने वला पक्षी (बुध) होगा जिसकी चील की नज़र (शनि) होगी। हाथ पर गाँव का निशान शुभ फल देगा।

खाना नं० 2-12 :-

उसका लोहा और पत्थर (शनि) के काम, संबंधी चीज़ें कीमती हीरे का काम देगी। अगर ज़हर को हाथ लगा दे वह भी अमृत कुण्ड, मारने की जगह तारने लगे। ऐसे व्यक्ति का उत्तम स्वास्थ्य हमदर्द और नेक भाग्य होगा। माता-पिता शुभ, उनका मेल शुभ और टेवे वाले के लिए उनका सुख सागर लम्बा हो।

खाना नं० 4 :-

बुध का फल कभी बुरा न होगा चाहे चन्द्र किसी तरह भी दोनों के साथ शामिल हो जाए।

खाना नं० 7 :-

जातक धनी और सुखी होगा।

खाना नं० 11 :-

अगर राहु-केतु के दाएँ-बाएँ होने के असूल पर शनि का स्वभाव नेक हो और खाना नं० 3 की दृष्टि से भी शनि पर कोई मंदा असर न हो तो ऐसा व्यक्ति गाँव का अमीर और सुखी होगा। 45 साल तक धन मिलेगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

खाना नं० 2-12 :- बुध, शनि, मंगल खाना नं० 2 बुध के मंदे प्रभाव के समय पिता की मौत, शनि की चीज़ें मशीन मोटर गाड़ी, ज़हर या शराब आदि से होगी या शनि के काम, चीज़ें पिता के लिए मंदी मृत्यु तक साबित हो सकती है।

खाना नं० 4 :-

खूनी होगा अब चन्द्र का फल बुरा होगा। दूसरों के लिए ऐसा व्यक्ति खूनी साँप की तरह बुरा प्रभाव देगा।

खाना नं० 7 :-

शराबी, कवाबी नेकी फरामोश होगा।

खाना नं० 9 :-

उम्र बुध तक काग़ रेखा, बाद शनि फल देता हो।
असर मंदा संतान न होगा, शनि भला ही रहता हो।।

बुध की (34 साल) आयु तक काग़ रेखा (मंदा समय) हो और उसके बाद शनि का खाना नं० 9 का दिया हुआ उत्तम और नेक फल होगा।

खाना नं० 11 :-

पाप स्वभाव जो शनि उम्दा, या घर तीसरा खाली हो।
ज़मीन-ज़मीना गाँव होता, वर्ना शनि फल जाती हो।।

अगर खाना नं० 3 शनि को मंदा कर रहा हो तो शनि का जाती फैसला भाग्य का फैसला होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

बुध और राहु

(तलीर पक्षी जो बड़ (चन्द्र, वृहस्पति) के वृक्ष पर आम होता है और उसके (वृहस्पति के वृक्ष या चन्द्र, वृहस्पति) फल बर्बाद करता रहता है)

हाथी जिस्म जब राहु होता, सूँड[1] हिस्सा बुध बनता है।
दोनों जभी कोई बैठे मंदा, असर मुबारक दो का हो।
घर पहले 1 से 6 वें उम्दा, बाकी घरों दो मंदा हो।
दोनों दूजे 9-11-12, असर गुरु न उम्दा हो।
2-3 या 5-6 में बैठे, उम्दा असर बुध देता हो।
घर 7 वें 1011 आये, ज़हर राहु का बढ़ता हो।

1. राहु के साथ बुध, हाथी की सूँड होगी, बुध पक्षियों में उड़ने वाला साफ सफेद राहु, हाथी, बुध, राहु जब दोनों इकट्ठे या दोनों में से हरेक जुदा-जुदा मंदे घरों में हो जैसे बुध 3-9-12-8, राहु 5-1-7-8-11 तो जेलखाना, पागलखाना, अस्पताल वीराना, कब्रिस्तान होगा।

चन्द्र की चीज़ें श्मशान या कब्रिस्तान में देनी शुभ या श्मशान के कुएँ का पानी घर में ला कर रखना सहायक सिवाय खाना नं० 4 जिसमें बुध शून्य या आत्महत्या तक नौबत मगर धन के लिए राजयोग होगा। दोनों मुश्तरका टेवे के खाना नं० 2-3-5-6 में हों तो अपने लिए सहायक ज़ुबान की तरह मुबारक और उत्तम, दूसरों के लिए भी लाभदायक प्रभाव का होगा। खाना नं० 7-1011 में हों तो अपने लिए सहायक, बाज़ की तरह उत्तम मगर दूसरों के लिए अहमक बेवकूफ मित्र की तरह बहुत मंदे। खाना नं० 1-4-8-9 में हों तो अपने लिए मंदे मगर दूसरों पर कोई बुरा असर न होगा। खाना नं० 12 में हो तो स्वयं अपने तथा दूसरों के लिए अति मंदे प्रभाव के होंगे। वृहस्पति के संबंध में न सिर्फ बुराई बल्कि बुध, राहु, वृहस्पति तीनों का ही फल मंदा होगा। दोनों ग्रहों में से प्रबल कौन है का फैसला उन ग्रहों के बोलने की आवाज़ और ढंग पर होगा। असल में टेवे के पहले घर 1 से 6 में टेवे वाले के लिए अमूमन उत्तम फल के ही होंगे। बाद के घरों 7 से 12 में दोनों का ही मंदा फल होगा और केतु पीछे से बुरा असर दे रहा होगा। सिवाय खाना नं० 11 के समय जिस पर केतु का खाना नं० 5 में से कोई प्रभाव न मिल सकेगा। मगर खाना नं० 12 में मुश्तरका होने के समय बुध की ज़हर इतनी बड़ी होगी कि बुध की बकरी से राहु का हाथी जान बचाने के लिए चीखें मार कर भागता होगा यानी राहु की चीज़ें, काम संबंधी, सब उजड़े बर्बाद वर्ना दुःख भरी आँहों के मंदे राग, पागलों की तरह या जेलखानों में बंद कैदियों की तरह ऊँची आवाज़ में पुकारते होंगे।

नेक हालत

राहु हाथी के जिस्म और बुध उसकी सूँड की तरह सहायक होने की तरह दोनों ग्रहों का टेवे वाले के लिए उत्तम फल होगा।

मंदी हालत

दोनों मुश्तरका या दृष्टि से बाहम मिले हुए होने के समय जब दोनों खाना नं० 7 से 12 (सिवाय खाना नं० 11) में हों तो मौत गूंजती होगी। जानवरों खासकर छोटे-छोटे मामूली पक्षियों (टटीहरी जो रात को टाँगें ऊपर करके सोती है) के शिकार करने से दोनों ग्रहों का फल मंदा हो जाने की पहली निशानी होगी, जहाँ दोनों ग्रहों में से किसी एक का फल मंदा हो, मुश्तरका हालत में ऐसे घरों में बैठे होने के समय दोनों ही का फल टेवे वाले के लिए उत्तम और नेक होगा मगर बुध और राहु के संबंधी (बहन, बुआ, मासी, पुत्री के संबंधी, ससुराल, नाना-नानी राहु के संबंधी) मंदे हाल और बर्बाद होंगे।

ज़ुबान का तेदुंआ, आँख का टेढ़ापन या एक आँख छोटी एक बड़ी मगर बर्बाद आदि भी हो सकती है खासकर जब दोनों वृहस्पति के घरों 9-11-12 में हो या वृ० का टकराव आ जाये।

खाना नं० 1 संतान के विघ्न होंगे।

खाना नं० 3

34 साल की आयु तक बुध और केतु दोनों ही का फल अमूमन मंदा ही होगा। बहन चाहे अमीर होगी मगर जल्दी ही पतिहीन होने की निशानी लेंगे जो ज़रूरी नहीं कि पतिहीन हो ही जाए।

खाना नं० 1-8-9-11-12

8 पहले 9 चौथे हो, मौत धुआँ आ निकलता हो।
लेख मंदा जब 12 बैठे, पकड़ हाथी पाँव रौंदता हो।
औलाद लानत घर पहले होती, आकाश शरारत भरती हो।
घर खाना नं० 3-11 बहन अमीरी, जल्द बेवा दुःख भरती हो।

खाना नं० 11

बहन चाहे अमीर मगर शादी के बाद 7 दिन, माह, साल के अन्दर-अन्दर विधवा, तलाक या पति से नाचाकी की आदि हो सकते है। जिसका उपाय पश्चिमी दीवार से आग का बंद करना। यानी लड़की के माता-पिता खानदान में अगर जद्दी मकान के पश्चिमी हिस्से में (मकान की छत पर बैठ कर पूर्व की ओर मुँह करते हुए) रसोई खाना हो तो वह लड़की की शादी से पहले-पहले सदा के लिए बंद कर दें। ऐसा ही यदि मकान के पश्चिमी हिस्से में किसी और किस्म की आग कायम रहने का स्थान हो, वह भी सदा के लिए वहाँ से बदल कर किसी और जगह कर दें।

खाना नं० 12 :-

स्वयं और ससुराल हर दो घर बर्बाद और आखिरी पर लावल्दी की निशानी होगी जो भी बुरी और मनहूस बात मुँह से निकाले, सच होगी।

उपाय :- ससुराल का दुःख निवारण करने के लिए कच्ची मिट्टी की 10गोलियां बना कर एक गोली प्रतिदिन दिन के समय लगातार 10 दिन तक धर्मस्थल में पहुँचाए। यह ज़रूरी नहीं हर रोज़ 10दिन तक लगातार एक ही धर्म स्थल में जाया जाए। हर रोज़ या जब चाहे धर्म स्थान बदल ले मगर गोली पहुँचाने में छुट्टी न होने पाए।

बुध और केतु

(बकरी एक जानवर है जिससे हाथी भी डर कर भागता है)

मौत नहीं तो गर्दिश होगी [1], भला कोई न होता [2] हो।
हड़काए कुत्ते दुम होगी मंदी [3], एक-दूसरे से बढ़ता हो।।

1. अकेला केतु खाना नं० 4 धर्मात्मा मगर बुध के साथ हो तो न सिर्फ बुध बर्बाद, केतु तथा चन्द्र की चीज़ें संतान माता की आयु बर्बाद हो। यदि संतान, माता जीवित हो तो उनके हाथों धन बर्बाद। बल्कि बुध बर्बाद ही होगा, मगर धन के लिए राजयोग ही होगा। समुद्री तथा धरती के सफ़र मंदे परिणाम देंगे।
2. जब मंगल खाना नं० 12 में हो तो बुध तथा केतु खाना नं० 1-8 पर कभी बुरा असर नहीं होता चाहे वह कैसे ही और किसी तरह जुदा या एक साथ बैठे हो।
3. मंगल का उपाय सहायक होगा, खासकर जब बुध की आयु 17 साल की आयु में बहन के लड़के बर्बाद होने लगें। खाना नं० 3-4-8 में से किसी एक में शुक्र, बाकी में बुध, केतु तो बेवा मर्द तथा अपना कबीला बर्बाद करें। बुध, केतु की मंदी हालत के समय चन्द्र का उपाय सहायक होगा। बुध अब कुत्ते की दुम होगा।

दोनों मुश्तरका या दृष्टि से बाहम मिले हुए होने के समय बुध अपना वही फल देगा जो कि बुध का घर होने के समय हुआ करता है मगर केतु का वह फल होगा जो केतु नीच होने के समय गिना है। हड़काए कुत्ते की दुम की तरह बुध (दुम) अब केतु (कुत्ता) को बर्बाद करेगा। मगर बुध किसी हालत में नेक फल दे भी दे तो भी केतु का फल तो हर हालत में मंदा ही हो जाएगा। अगर मौत नहीं तो दिनों के चक्कर में ज़रूर डाल देगा।

मंगल का उपाय सहायक होगा।

नेक हालत खाना नं० 6 :- -

साथ दृष्टि खाली हो, बाहम दोनों नही लड़ते हो।
असर दृष्टि मंदा लेते, झगड़ा दोनों का होता हो।
केतु की चीज़ों पर केतु मंदा, पर मंदा न दूसरों पर।
बुध मगर जब मंदा होगा, खुद मंदा बुरा दूसरों पर।

चाहे आपसी शत्रु बने लेकिन अब दोनों का कोई झगड़ा न होगा, नेक फल देंगे। जब तक खाना नं० 2 की दृष्टि के जरिये दोनों में से कोई भी मंदा बर्बाद न हो।

मंदी हालत

खाना नं० 2 :-

साथ दृष्टि खाली होते, असर दोनों का उम्दा हो।
घर 12 न शत्रु बैठे, लेखा शाही खुद राजा हो।।

एक अच्छा तो दूसरा मंदा होगा दरअसल केतु (कुत्ते की जान) सिर (बुध) में होगी।

बहन, मामा बर्बाद लगड़े या केतु की बीमारियों से दुखिया, नाने का पाँव सदा के लिए बर्बाद ।

-जब दोनों खाना नं० 2, चन्द्र व राहु खाना नं० 8 में हों।

खाना नं० 3-11 :-

दोनों ही मंदे बर्बाद फल के होंगे।

खाना नं० 5 :-

टेवे वाले की 17 साल की आयु में यदि उसकी बहन के घर लड़का पैदा हो तो ऐसे लड़के की आयु के लिए दान कल्याणकारी होगा।

खाना नं० 6 :-

अगर खाना नं० 2 की दृष्टि के द्वारा दोनों में से यदि केतु मंदा हो तो सिर्फ केतु की चीज़ों पर मंदा असर होगा लेकिन यदि बुध मंदा हो तो न सिर्फ बुध की चीज़ों का फल मंदा बल्कि ऐसा व्यक्ति दूसरों पर भी मंदा ही साबित होगा।

खाना नं० 12 :-

बुध की 17, 34 साल की आयु में केतु के संबंधित शारीरिक भाग (टाँग, पेशाबगाह, कमर, पाँव, रीढ़ की हड्डी आदि) बर्बाद या मंदे होंगे।

बुध और केतु दोनों ही बर्बाद होंगे बुध खाना नं० 12 का उपाय मदद देगा।

****

शनि और राहु

(मौत और बिजली का यम, साँप की मणि)

पापी शनि जब उम्र फरिश्ता, राहु हाथी उस बनता हो।
भाग उम्र तक 36-39 अपनी मंदा, इच्छाधारी फिर होता हो।
तरफ पहली जो दृष्टि खाली, पद्म पोशीदा राजा हो।
निशान लहसुन [1] हो हालत उल्टी, साँप फकीरी देता हो।
सेहत घर का मालिक राजा, पदम् चारों पहले होता हो।
घर 5 से जब 8 वें बैठा, राजा शाहों का बनता हो।
योगी गिना घर बैठे बाकी, गृहस्थी मगर जब बनता हो।
लेख हालत हो रंग-बिरंगी, साधु राजा दो मिलता हो।
लहसुन गिना जो ग्रहण निशानी, असर मंदा ही होता हो।
अल्प आयु या शान बुजुर्गी, नष्ट ज़माने करता हो।
नाभि [2] ऊपर हो आदमी मरें, दौलत [3] नीचे से जलता हो।
लेख फकीरी अक्सर पाये, साथ मंदे का ही रखता हो।

खानावार असर

भारी कबीला पहले गिनते, शाही दौलत ज़र पाता हो।
इच्छाधारी 2-12, [4] होते, नाग ज़माना तारता/मारता [5] हो।
राहु, शनि घर 12 बैठे, सूर्य संतान का मंदा हो।
गरीब घराना औरत गिनते, मर्द सुखी ना होता हो।

1. काला निशान जो अंगूठे के निशान से भी बड़ा हो।
2. खाना नं० 1 से खाना नं० 4 तक।
3. खाना नं० 5 से खाना नं० 8 तक।
4. खाना नं० 2 बाएँ हाथ पर साँप का निशान।
5. खाना नं० 2 दाएँ हाथ पर साँप का निशान।

शनि साँप तो राहु उसके सिर पर रहने वाली मणि (साँप की ज़हर चूसने का मनका) होगी। शनि लोहा तो राहु चमकता पत्थर या शनि मौत का यम तो राहु उसकी सवारी का हाथी होगा। दोनों मुश्तरका इच्छाधारी साँप होगा यानी ऐसा साँप जो खज़ाने का स्वामी गिना गया है। मगर वह ज़हरीला न होगा और हर एक की मदद को और स्वयं वह साँप जब जी चाहे मरे किसी के मारने से न मरेगा। हाथ पर साँप का निशान या शरीर पर पद्म का निशान नेक होगा। मामूली या काला निशान मगर खाल या तिल से कुछ अधिक बड़ा हो तो राहु मामूली हैसियत का होगा। अगर मध्यम दर्जे का काला निशान य़ानी जो अंगूठे के नीचे दब सके वह पद्म होगा। अगर उससे (अंगूठे से) बड़ा हो तो लहसुन या ग्रहण का निशान होगा (मंदा हाल)।

नेक हालत

शरीर पर दाएँ हिस्से में हो पद्म मगर हरदम छुपा हुआ रहने वाला तो उत्तम।

जब राहु, शनि (मुश्तरका) को कोई भी ग्रह (चाहे मित्र या शत्रु) न देखें और न ही उनके साथ हो और वह दोनों खाना नं० 1 से खाना नं० 6 में हों तो दाएँ और गिने जाएंगे।

पद्म कुण्डली में 1 से 4 तक हो तो राजा समान होगा।

पद्म कुण्डली में 5 से 8 हो तो महाराज होगा।

पद्म कुण्डली में 9 से 12 तक हो तो वह राजयोगी होगा।

बाएँ ओर कुण्डली के खाना नं० 7 से खाना नं० 12 पद्म कोई विशेष लाभदायक न होगा।

खाना नं० 2 :-

बाएँ हाथ पर शेषनाग का निशान, शनि अब इच्छाधारी तथा मारने वाले साँप की जगह मदद करने वाला होगा। अब दोनों ग्रहों का (शनि खासकर) ससुराल पर कोई बुरा प्रभाव न होगा।

माता की आयु अच्छी सेहत (जब तक वह जीवित बैठी हो), दिल की शांति के लिए नदी में चावल बहाना सहायक होगा।

–जब शनि, राहु खाना नं० 3, चन्द्र खाना नं० 11 में हो।

खाना नं० 9 :-

अति शुभ भारी कबीला, धन उच्चे दर्जे का हो।

खाना नं० 12 :-

दाएँ हाथ पर शेषनाग (उत्तम और सहायक साँप) का निशान हो, दिमाग़ी खाना नं० 12 राजदारी फरेब, पोशीदा अपना भेद छुपाए , हर काम चालाकी से करता रहने वाला होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

मंदी हालत

जिस्म पर लहसुन का निशान हो तो उसके सब ग्रहों को ग्रहण लगा हुआ होगा। प्रथम तो आयु कम होगी यदि आयु लम्बी हो जाए तो बड़ों के धन सूर्य ग्रहण की तरह से बर्बाद कर देगा, 39 साल की आयु तक मंदा प्रभाव रहेगा। यदि लहसुन नाभि से ऊपर सिर की ओर हो तो आदमी नष्ट करें। यदि लहसुन नाभि से नीचे की ओर हो तो धन नष्ट करें। हर दो हालत में गरीबी और अस्वस्थता का साथी ज़रूरी होगा।

उपाय

मंदे राहु और मंदे शनि में दिया उपाय सहायक होगा।

1. रात (शनि का समय)।
2. पक्की शाम (राहु का समय)।
3. शनि का दिन (शनि का संबंध)।
4. वीरवार की पक्की शाम (राहु का संबंध)।

इन सब हालात (1 से 4 तक) के समय बादाम (शनि), नारियल (राहु) का आग में जलाना, भूनना या तलना राहु, शनि दोनों के मंदे फल देगा। खासकर कड़ाई में रख कर जलाना, भूनना या तलना अति मंदा प्रभाव देंगे।

खाना नं० 7 :-

प्राणी का गृहस्थ हर तरह से बर्बाद होगा चाहे शनि खाना नं० 7 के कारण वह कितना ही चतुर क्यों न हो और स्वयं शुक्र भी मंदा या मंदे घरों 8-9 या 5 में हो तो 27 साल (शादी के दिन से शुरू करें) स्त्री का फल (नर संतान) स्त्री सुख के लिए मंदा ही होगा।

खाना नं० 9 :-

जद्दी मकान में यदि वेश्याएं रहने का तबेला हो जाये तो वृ० सांस, सोना, पिता बर्बाद, दमा आदि होगा। शराब न पीना सहायक होगा।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

शनि और केतु

(शनि के साथ केतु नेकी का फरिश्ता होगा)

उत्तम मुबारक दोनों इकट्ठे, लेख शनि पर चलता हो।
आधी आयु जब उसकी गुज़रे, फैसला किस्मत का करता हो।
ग्रह तीसरे जब हो कोई साथी, असर तीनों का मंदा हो।
मंदा हुआ हर दो से कोई, केतु जिस्म दो मंदा हो।

ऐसा व्यक्ति संतान के संबंध में नर संतान करने के लिए संबंध में बहुत अधिक होगा या नर संतान बहुत होगी। दोनों इकट्ठे शुभ मगर भाग्य का फैसला आधी आयु के गुज़र जाने पर ही होगा। जब भी कोई तीसरा ग्रह मिला तीनों ही का फल मंदा होगा। दोनों मुश्तरका इसतकताल होगा और उनका सबूत किसी ऐसे जानवर पशु के आ मिलने का होगा जोकि माथे से सफेद, मगर बाकी शरीर का कोई दूसरा ही रंग होगा, ऐसे जातक के लिए असल में पशु वही शुभ होगा जो कि एक रंग का हो दो रंग में शरारत का झगड़ा छुपा हुआ करता है खासकर माथा सफेद वाले में, परन्तु घोड़ा इस वहम से बरी हो।

नेक हालत

खाना नं० 6 :-

उर्ध रेखा जब पीठ पर पाता, आयु 70तक चलती हो।
असर दोनों का हरदम उत्तम, गुज़ारा अच्छा होता हो।।

पीठ में उर्ध रेखा, पीठ पर गर्दन से शुरू करके टट्टी की जगह तक एक लम्बी लकीर हो जो पीठ को दो भागों में बांटती हो, आयु 70साल से कम न होगी।

खाना नं० 8 :-

मौत नगाड़ा बंद गिनते, नज़र रहम खुद करता जो।
जुदा-जुदा चाहे लाखों मंदे, मिलते असर दो उत्तम हो।।

जुदा-जुदा चाहे मंदे मगर अब दोनों उत्तम और मौतों से बचाव होगा।

खाना नं० 9 :-

असर मुबारक उत्तम होता, भारी कबीला पाता हो।
धन-दौलत शाहाना उसका, माया सागर सुख लम्बा हो।
पूरी सदी उत्तम गिनते, पोता-पड़पोता देखता हो।
बाप बड़े हो सब फलते, मातृ बुरा नहीं करता है।

अति उत्तम भारी कबीला धन राजाओं सी खूब, शान की आयु और सुख सागर लम्बा होगा। पुश्त दर पुश्त पूरे 10वर्ष तक नेक होगा।

मंदी हालत

खाना नं० 8 :-

दिमाग़ी खाना नं० 14 तक्कबर खुद पसंदी का मालिक होगा और अपने से अच्छा किसी को भी न समझता होगा।
-जब मंगल बद से मुश्तरका हो।

नोट बाकी घर अपना-अपना फल दें।

राहु और केतु

(केतु पहले राहु बाद नया सिरी माया)

केतु कुत्ता हो पापी घड़ी का, पापी राहु जा बनता हो।
चन्द्र, सूर्य से भेद हो खुलता, ज़ेर शनि दो होता हो।
राहु, रवि 9-12 मिलते, ग्रहण सूर्य का होता हो।
ग्रहण चन्द्र का उस दम गिनते, केतु 6 वें, 9 वें मिलता हो।
पहले घरों में टेवा बैठा, चाल दो तरफी करता हो।
लेख असर सब बाद को देगा, उच्च-नीच चाहे कैसा हो।
राहु, केतु जो पाप गिने है, ग्रह सब ही को घुमाते है।
गुरु अकेला दो को चलाये, घूमते पर वह बुध में हैं।
सात हो, नौ या माला चौरासी, पाप फर्क दो ही का है।
ऊपर-नीचे जगत् के अन्दर, झगड़ा इन दो ही का है।
पाप यदि सब दुनिया छोड़ें, सात ग्रह बच जाता है।
राशि 12 में 7 ग्रह से, नरक चौरासी करता है।
सपरदम बतों माया खवेश रा।
तू दानी हिसाब कमोबेश रा।।
4 पहले 7-10बैठा [1], असर मंदा कभी दो का हो।
उपाय उत्तम उस ग्रह का होगा, उच्च कायम जो बैठा हो।
शुक्र बैठे हो बुध से पहले, असर राहु का मंदा हो।
बुध पहले से शुक्र गिनते, केतु भला खुद होता है।

रवि/मंगल, शनि हो दो इकट्ठे,	*उच्च-नीच असर राहु देता है।*
चन्द्र/शुक्र, शनि मिलकर बैठे,	*उच्च-नीच केतु हुआ करता है।*
बुध, सूरज मिल उत्तम बैठे,	*केतु भला और उम्दा हो।*
सेहत रेखा बुध, शुक्र मिलते,	*ग्रहण असर न होता हो।*
राहु मालिक है साँप के सिर का,	*केतु तरफ दुम होता हो।*
स्वभाव केतु, गुरु जाहिर करता,	*असर राहु खुद बुध का है।*

1. पाप खाना नं० 4 में हो तो बुध, शनि दोनों उत्तम होंगे। पुराने ज्योतिष के मुताबिक राहु, केतु एक ही घर में कभी न होंगे मगर दृष्टि के हिसाब से दोनों इकट्ठे ही होंगे यानी जो बाद के घरों का ग्रह हो वहाँ दोनों इकट्ठे ही गिने जाएंगे। जैसे दोनों कुण्डली के खाना नं० 1-7 में हो तो दोनों का खाना नं० 7 में इकट्ठे मिलते हुए माना जाएगा।

हस्त रेखा

हस्त रेखा के आधार पर बनाई जन्म कुण्डली और पुराने ज्योतिष के लाल किताबी ढंग से बनाई गई वर्ष कुण्डली में यह शर्त न होगी। इस तरह पर यह दोनों ग्रह एक जगह इकट्ठे भी हो सकते हैं और यह भी ज़रूरी नहीं है कि सदा एक-दूसरे के सातवें पर ही हो। बाहम जुदा-जुदा (अपने से सातवें होने के समय) दृष्टि की रुह से जिस घर में उनका असर जाता है उस घर में दोनों इकट्ठे बैठे हुए समझे जाएंगे। इसी असूल पर इन दोनों मुश्तरका का 12 खानों का प्रभाव लिखा गया है।

बुरा नाम, मंदे काम, बुरा समय (राहु के काम) का आरम्भ (आने की निशानी) बुध से पता चलेगी और नेकी का परिणाम अच्छे समय की पहली खबर (केतु की खसलत) वृ० से खुलेगी। जन-साधारण का रास्ता दोनों (राहु, केतु) के मिलने की जगह है। राहु छुपा पाप और केतु जाहिर पाप होगा।

जब केतु पहले राहु बाद के घरों में हो तो केतु शून्य राहु अमूमन मंदा होगा। जो अवश्य नहीं कि मंदा हो। मगर राहु खाना नं० 12 में आसमानी हद वृ० के साथ मुकर्रर होगी तो केतु खाना नं० 6 पाताल में बुध का साथी हुआ। यानी शनि के एजेंट खाना नं० 8 हैडक्वाटर तो बाहमी मुश्तरका, संसार का दरवाज़ा नं० 2 होगा। ग्रहचाली हालत में यह दोनों ग्रह दीवारें, चलती दीवारें होंगी। इसलिए दीवारों के बहानों से बने हुए ग्रहण की हालत उसी समय ही ठीक हो जाएगी। यानी ग्रहण से हटते ही ग्रहण में आया ग्रह अपनी शक्ति पर पहले की तरह आया गिना जायेगा।

सपरदम बतों माया खवेश रा। तू दानी हिसाब कमोबेश रा।।

राहु और केतु में जो भी कुण्डली के पहले घरों में हो, यानी 1 से 6 वह अपना फल उसमें मिला देगा जो कुण्डली के बाद के घरों 7 से 12 में हो या दृष्टि के हिसाब से जो भी बाद में बैठा हो उसका फल नेक होगा और पहले घरों में बैठने वालों की शर्त न होगा। मगर वह बैठा होने वाले घर के हिसाब में अगर नेक हो तो बेशक नेक असर दे। खाना नं० 5-11 में होने के समय चूँकि वह दृष्टि का बाहम कोई संबंध नहीं दोनों ही फल अपने-अपने संबंध में बैठा होने वाले घर में मंदा होगा। उसका बाद का या पहले वाले पर कोई असर न होगा। राहु सिर का साया केतु सिर के बिना बाकी धड़ (शरीर) का साया होगा। लेकिन शरीर में नाभि से ऊपर सिर का हिस्सा राहु की राजधानी और नाभि से नीचे पाँव की तरफ केतु की राजधानी होगी। राहु का हैडक्वार्टर ठोड़ी और केतु की हुकूमत की जगह पाँव है। दोनों की मुश्तरका बैठक हाथों का अंगूठा होगा या माथे पर तिलक लगाने की जगह या कुण्डली का खाना नं० 2 है टट्टी या गुदा की जगह भी दोनों की मिलने की जगह कुण्डली का खाना नं० 8 माना गया है। दोनों के मिलने की जगह जन साधारण का आम चलता रास्ता है। यानी जिस जगह दो तरफों से आ कर रास्ता बंद हो जाता है या वहाँ दोनों ग्रहों का ज़रूरी मंदा असर या दोनों मंदे या पाप की घटनाएं या गृहस्थी जीवन में बेगुनाह धक्के लग रहे होंगे।

राहु, केतु दोनों मुश्तरका का बनावटी वज़ूद शुक्र कहलाता है और शनि की एजेंसी के समय उनका नाम पाप होता है (शुक्र गृहस्थी कारोबार हवाई शक्तियों बेज़ान चीज़ों के नाम के) साथ मिलकर या स्त्री की रंगरलियों और धर्म मंदिर में बैठकर पाप को उत्तम समझा देने की कार्यवाहियों के लिये सिर्फ दोनों का बैठक खाना नं० कुण्डली में 2 होगा और शनि के हजूर में उसकी एजेंसी में लग कर जानदारों इन्सान पशु के बारे कचहरी लगाने की जगह दोनों के लिये खाना नं० 8 है। यानी खाना नं० 8 जो मौत का दरवाज़ा है वह राहु, केतु, शनि तीनों के ही इकट्ठे काम करने की जगह है। मगर राहु, केतु दोनों खाना नं० 2 में अपना अहमाल नामा तैयार करते है, शनि का फैसला सुनाते है जो कि संसार का दरवाज़ा है और सबका धर्म स्थान है। दोनों सदा बुध के दायरे में घूमते हैं। यानी जैसा बुध होगा और जिस जगह वह होगा यह दोनों ग्रह (राहु, केतु) वैसे ही होगें जैसा कि बुध बैठा हो। राहु, केतु मुश्तरका या अकेले-अकेले चन्द्र के घर खाना नं० 4 या चन्द्र के साथ अकेले-अकेले वहाँ भी बैठे हों तो ऐसा टेवा धर्मी होगा ***जिसमें पापी ग्रहों का बुरा असर न होगा। बल्कि सभी ग्रह धर्मी होंगे। अगर यह देखना हो कि राहु कैसा है तो चन्द्र का उपाय करें यानी चाँदी का टुकड़ा अपने पास रखें। केतु के लिए सूर्य का उपाय तांबा सुर्ख (लाल) अपने पास रखें या***

बंदर को गुड़ खाने के लिए डालें या गुड़, तांबा, गंदम में से कोई चीज़ चलते पानी में बहा दें। इसी तरह दोनों ग्रहों का दिली पाप अपने आप पकड़ा जाएगा। यानी उस ग्रह के (राहु या केतु) के संबंध में घटनाएँ होने लगेगी। राहु या केतु में से यदि कोई भी ग्रह खाना नं० 8 में हो तो शनि भी खाना नं० 8 में समझा जाएगा चाहे शनि कुण्डली में किसी और ही घर में क्यों न बैठा हो। यानी जैसा शनि होगा वैसा फैसला होगा या समझा जाएगा। राहु और केतु की दोनों ही के खानों में जुदी-जुदी जगह दी हुई नेक हालत को देखें।

मंदी हालत

ऐसा व्यक्ति जिसे टेवे में राहु, केतु दोनों ही मुश्तरका हो वह संसार की कोई बदी और बदनामी न छोड़ेगा या उसे सब जगह बदनामी ही मिलेगी या अपने आप नाहक ही मिलती जाएगी या वह स्वयं कोशिश करके नेकी और आराम के बजाय बदनामी, बदी और दुःख इकट्ठे कर लेगा। इसी तरह ही मौजूदा ज्योतिष के अनुसार बनी जन्म कुंडली में दृष्टि की रुह से जिस (राहु, केतु) का प्रभाव जिस घर में इकट्ठा हो रहा हो तो उस घर के संबंध में रिश्तेदारों पर राहु, केतु की चीज़ों का का कारोबार रिश्तेदार अमूमन बुरा ही असर करते या बर्बाद होते या बर्बाद करते होंगे। खाना नं० 6 और 12 की हालत में दोनों इस शर्त से बरी होंगे जहाँ कि दोनों ही का असर घर का साधारण, उच्च या नीच हो सकता है। दोनों ग्रहों का मंदा समय राहु 1 साल, केतु 2 साल दोनों मिल मिलाकर कुल तीन साल। यदि राहु और केतु दोनों खराब प्रभाव करना शुरू कर दें जिसमें सूर्य या चन्द्र का संबंध न हो यानी सूर्य में न ही सूर्य ग्रहण हो और न ही चन्द्र ग्रहण हो तो राहु 42 साल और केतु 48 साल तक दोनों मुश्तरका 45 साल तक मंदा असर कर सकते हैं। यानी उम्र के लिहाज से 48 साल की आयु के बाद (आखिरी हदबंदी पर) शांति देगा या मियाद के तौर पर 48 साल की मंदी हालत देखने के बाद फिर नेक हालत आएगी। 48 साल की मियाद असल में उस दिन में शुरू होगी जिस दिन दोनों ग्रह वर्षफल के हिसाब से तख्त पर आएंगे।

जन्म कुंडली में अगर राहु, केतु दोनों में से ही कोई हो।

खाना नं०	वह खाना नं० 1 में आयु के किस साल आएगा
1.	1
2.	2
3.	3
4.	4
5.	5
6.	6
7.	7
8.	8
9.	9
10	10
11.	11
12.	12

यानी जन्म कुण्डली के जिस खाने में से कोई एक बैठा हो उम्र के उसी साल से शुरू करके 42 (राहु), 45 (दोनों), 48 (केतु) की मियाद लगे सिवाय खाना नं० 6 के जिसके लिए 9 साल की आयु और खाना नं० 9 के लिए 6 साल की आयु से शुरू करके मियाद लेंगे।

राहु के मंदे असर की निशानी हाथ के नाखुनों पर केतु का बुरा असर पाँव के नाखुनों पर 9 मास पहले ही से नज़र आने लगेगा। हाथ के दाएँ हिस्से के नाखून खराब हो जाए तो राहु की मियाद का आम समय 6 साल होगा, हाथ के बाएँ हिस्से के नाखुन खराब हो जाएं तो राहु की महादशा की मियाद का 18 साला मंदा ज़माना होगा। राहु की कुल उम्र 42 साल का अर्सा हो। इसी तरह पाँव के दाएँ हिस्से के नाखुन खराब हो जो जाएं तो केतु की महादशा की मियाद 7 साल का बुरा समय होगा या केतु की कुल उम्र 48 साल का समय होगा।

उपाय

राहु की मंदी हालत और उसके बुरे असर से बचने के लिए चन्द्र का उपाय और केतु की मंदी हालत या बुरे असर से बचने के लिए सूर्य का उपाय सहायक होगा। खाना नं० 1-7-4-10में राहु, केतु के बैठा होने के समय उनके बुरे असर के बचाव के लिए उन ग्रहों का उपाय सहायक होगा जो इन खानों में (1-4-7-10) में उच्च स्थित किए गए हैं।

खानावार प्रभाव :-

1. सूर्य बैठे घर, ग्रहण राहु का, भला चन्द्र फल देता हो।
केतु तख्त को जिस दम पाता, उच्च असर रवि का होता हो।।

2. दोनों बैठे आठ दूजे, घूमती ग्रहचाल हो।
हो जो बैठा आठ टेवे, ज़हरी उसका हाल हो।।

3. बाप ताल्लुक केतु उम्दा, माता चन्द्र पर मंदा हो।
पाप आयु 45 करता, असर दोनों का उम्दा हो।।

4. हुक्म दोनों लें शनि का, लेख पंगूडा घूमता हो।
असर शनि का मिलता हो, बैठा टेवे वह जैसा हो।।

5. दोस्त दोनों बन शनि के चलते, चोट आखिरी करता जो।
चन्द्र, रवि हो मध्यम आए, मंगल, गुरु से डरता हो।।

6. दोनों बराबर एक 11, मदद शनि तीन करता जो।
राहु उड़ा दे गुरु टेवे से, केतु, चन्द्र ले मरता हो।।

7. नीच राहु तो उच्च केतु, चन्द्र आधा और हल्का हो।
ग्रहण रवि हो करता राहु, नेक सूर्य, केतु करता हो।।

****

तीन ग्रहों (इकट्ठे बैठे) का फलादेश

1. वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र :-

उत्तम फल, व्यापारी, कलम का धनी, दूसरों को भी फायदा पहुँचे, ठोस हाजिर माल, बाकियों को भी तारता जाए।

2. वृहस्पति, सूर्य, शुक्र :-

वृहस्पति, शुक्र से संबंधित चीज़ें, कारोबार, संबंधी का फल नेक होगा, स्त्री भी रंग और स्वभाव तथा भाग्य के संबंध में हर तरह उत्तम नेक साफ और उम्दा होगी, शादी के बाद से भाग्य जागेगा।

3. वृहस्पति, सूर्य, मंगल :-

वृहस्पति (शेर बब्बर), सूर्य (नर शेर) और मंगल (चीते से मिलता-जुलता शेर) हौंसले वाला, तीनों ही नर ग्रहों के शेरों का टोला एक ही जगह पर इकट्ठे आमतौर दो शेर तो एक जगह इकट्ठे नहीं रह सकते मगर अब एक ऐसा टेवा होगा जिसमें ये तीनों ही ग्रह इकट्ठे बैठे हों तो वह व्यक्ति ऐसा होगा जिसकी छाया के नीचे 3 शेर इकट्ठे बैठ कर गुज़ारा कर सकें। अगर कोई एक शेर की सवारी करने की शक्ति का स्वामी हो तो वो 3 शेरों का सवार हो या एक ही समय में 3 शेरों को एक साथ जोत कर सवारी करता हो। बड़े उत्तम और नेक भाग्य का स्वामी होगा, खुद उसे (सूर्य), उसके बाप, दादा (वृहस्पति) या बड़े भाई, ताया, मामा (मंगल) में हिम्मत होगी कि वो 3 शेरों या शेर बहादुर मर्दों को एक ही हाथ से मार सके या नीचा दिखा सके और सांसारिक संबंध में उनको कम से कम खून की सज़ा (फाँसी) देने का अधिकार होगा। उसका तांबा भी सोना बन जाये। तीनों ही ग्रहों का हर तरफ और हर तरह का उत्तम और शुभ फल होगा और तीनों ही ग्रहों (वृहस्पति, सूर्य, मंगल) के लिए हरेक अकेले-अकेले का बैठे हुए घर के मुताबिक दिया हुआ शुभ फल साथ होगा।
योगाभ्यास का मालिक होगा।

–जब वृहस्पति, सूर्य, मंगल खाना नं० 8 में हो।

4. वृहस्पति, सूर्य, बुध :-

अमूमन राजयोग। सूर्य और बुध का अकेले-अकेले बैठा होने की हालत पर अपने-अपने लिये दिया हुआ उत्तम फल साथ होगा। मगर तीनों ही इकट्ठे (वृहस्पति, सूर्य, बुध) खाना नं० 5 में होने के समय वृ० और सूर्य दोनों ही कैदी हो जाने की तरह उनका फल सोया हुआ या बाप, बेटा (खुद टेवे वाला बेटा और उसके पूर्वज पिता) दोनों ही की किस्मत मंदी ही होगी मगर फिर भी वहाँ धर्म की कोई कमी न होगी। उनका घर गऊघाट मकान का अगला हिस्सा तंग और पिछला चौड़ा ही होगा, जहाँ कि बाल-बच्चों की बरकत और उनके लिए दाना-पानी की तंगी न होगी। यदि कुछ न होगा तो सिर्फ माया की ऊँची-ऊँची लहरों की ठाठों का नज़ारा न होगा, वह शाही कैदी होगा या कैद में होता हुआ भी राजा ही होगा। –जब खाना नं० 5 में हो।
शनि खाना नं० 2 में देखो

–जब तीनों ग्रह वृहस्पति, सूर्य, बुध खाना नं० 8 और शनि खाना नं० 2 में हो।

जिस लड़की पर नज़र रखे वो टेवे वाले की औरत नहीं बनेगी मगर जो लड़की उस पर नज़र रखे वह ज़रूर गृहस्थ में साथी होगी अर्थात् यह नहीं कि लड़की सिर्फ उसकी औरत बन कर ही गृहस्थ में साथी होगी। मगर किसी भी हालत में कहिये वह परिवार की उन्नति में शामिल ज़रूर होगी।

–जब तीनों खाना नं० 2, शुक्र खाना नं० 3 में हो।

खाना नं० 2 में बैठे हुए ग्रहों का अपना-अपना फल हुआ करता है और शनि खाना नं० 1 के समय जब कि खाना नं० 7 और 1 खाली न हो काग़ रेखा हुआ करती हो। अतः अब ऐसे प्राणी के संबंध में जब कभी भी शनि (समय का राजा ग्रह) की चीज़ें जैसे मकान की बुनियाद खोदी जाए, बुध खाना नं० 2 एक दम वृ० पिता पर उसकी जान तक हमला कर दे। बुध खाना नं० 2 का दिया उपाय सहायक होगा।

–जब तीनों खाना नं० 2 और मंगल, शनि खाना नं० 1 में हो, खाना नं० 7-1 खाली नहीं या खाना नं० 1 में चन्द्र बैठा हो।

5. वृहस्पति, सूर्य, शनि :-

जब टेवे वाले के रिहायशी मकान (जद्दी या पिता, दादा का) में दाखिल होते ही दाएं हाथ की दीवार के खात्मे पर अंधेरी कोठरी हो और उसमें शेल्फ (परछती जिस पर सामान रखा जाता है) पर खेतीबाड़ी से संबंधित सामान मौजूद हो तो तीनों ही ग्रहों का कोई बुरा असर न होगा। खासकर जब वह तीनों खाना नं० 5 में हो। ऐसी हालत में खाना नं० 5 (संतान) पर भी बुरा असर न होगा। मान रेखा हर जगह मान होगा, खासकर जब तीनों ही ग्रह खाना नं० 6 में हो।

6. वृहस्पति, सूर्य, राहु :-

अनाज के अम्बार और शहंशाह के दरबार से आग़ का धुआँ बढ़ता ही नज़र आएगा। संबंधी समझते हुए भी कि वह राजा है, चोर ही का बर्ताव पेश करेंगे। तीनों ही ग्रहों का जला हुआ ही फल होगा, मगर तीनों ही खाना नं० 5 में इकट्ठे बैठे होने के वक्त कभी मंदा फल न देंगे।

7. वृहस्पति, सूर्य, केतु :-

सूर्य का फल मंदा। सूर्य, वृ० को अगर केतु देखे तो दर्जा दृष्टि की अधिकता मंदे असर की अधिकता होगी, 1% मंदा असर सिवाय खाना नं० 5 जहां कि तीनों ही ग्रहों का उत्तम फल होगा।

8. वृहस्पति, चन्द्र, शुक्र :-

किस्मत का अजीब रंग कभी शाह कभी मलंग, कभी प्रसन्न कभी तंग। नेक हालत के समय किस्मत के मैदान में मिट्टी से भी दूध उछल निकलने की तरह तीनों ग्रहों का सिवाय खाना नं० 7 उत्तम और नेक फल होगा। माता रानी (अति धर्मात्मा) और सुख नसीब वाली शरीफ खानदान और उम्दा स्वभाव की मालिक होगी मगर शादी के दिन से धन आगे बढ़ना शुरू हो जाएगा और सोने-चाँदी में मिट्टी मिली हुई नज़र आने लगेगी या माया कम ही होती चली जाएगी।

शमा के परवाने की तरह इश्क की लहर में जल मरने वाला होगा। ऐसो ग्रहचाल में अगर सूर्य मंदा हो तो असफल आशिक होगा जो बदनाम और तबाह ही होगा।

-जब तीनों खाना नं० 7 में हो।

बहुत बड़ा वृहस्पति, मंगल नष्ट तो संतान से महरुम रखेगा।

-जब वृहस्पति, चन्द्र, शुक्र खाना नं० 2 में हो।

9. वृहस्पति, चन्द्र, मंगल :-

पीपल, नीम और बड़ तीनों का मुश्तरका वृक्ष होगा जो हर तरह से तीनों ग्रहों का उत्तम फल दे।

10. वृहस्पति, चन्द्र, बुध :-

दलाली में बहुत लाभ हो। तीनों ही ग्रहों का (सिवाय खाना नं० 2-3-4) उत्तम फल होगा और बुध सहायक ही होगा। मगर लाखोंपति होने पर भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जाएगा अक्ल साथ न देगी।

बुध पिता पर भारी होगा। मगर धन के लिए उत्तम हो। -जब तीनों खाना नं० 2 में हों।

तीनों ही ग्रहों का निकम्मा और मंदा फल होगा। -जब तीनों खाना नं० 3 में हों।

बुध माता पर मंदा मगर अपने लिए धन के संबंध में उत्तम हो। -जब तीनों खाना नं० 4 में हो।

खाना नं० 2-3-4 के अलावा बाकी सब घरों में वृ० इलाज के काबिल होगा।

11.वृहस्पति, चन्द्र, शनि :-

चाहे तीनों की युति, चाहे दृष्टि से इकट्ठे हों तो वृ०, शनि दोनों ही उत्तम मित्रता, लोहे को पारस का काम दे। दोस्ती से लाखों तरे सिवाय खाना नं० 9 के।

अब खाना नं० 8 चाहे कितना ही मंदा और बुरा असर दृष्टि के हिसाब से खाना नं० 2 में जा रहा हो मगर तीनों खाना नं० 2 के वक्त चन्द्र कभी मंदा न हो। -जब तीनों खाना नं० 2 में हों।

माता, दादी, ताई, चाची, मौसी खुदकुशी से मरे या मारी जाए। -जब तीनों खाना नं० 11 में हो।

खराब प्रभाव देगा या चन्द्र का खराब असर मिला होगा नदी में भवरें खतरनाक असर दें।

-जब तीनों खाना नं० 9 में हो।

12.वृहस्पति, चन्द्र, केतु :-

सांस की हवा बर्फानी होने के कारण से व्यर्थ होगी। प्यास बुझाने के लिए पानी की बजाय पेशाब केतु की बदबू से सफ़र (केतु की मंज़िल) खोटी होगी। तीनों ही ग्रहों का फल मंदा होगा।

13.वृहस्पति, चन्द्र, राहु :-

वृहस्पति और चन्द्र दोनों में से किसी का भी फल रद्दी न होगा मगर औरत का सुख हल्का होगा खासकर जब खाना नं० 12 में हो। खासकर खाना नं० 12 में चूँकि वृ० चुप होता है, राहु के साथ चन्द्र भी खाना नं० 12 में खामोश और हल्का होता है। अतः स्त्री-पुरुष (शुक्र, चन्द्र की संबंधित मित्रता) का सुख तो ज़रूर हल्का होगा। मगर दोनों ग्रहों (चन्द्र, वृहस्पति) के दूसरे असरों पर कोई खराब असर न होगा। जानों पर भी बुरा असर न होगा सिर्फ आपसी सुख हल्का गिन देगा।

14. वृहस्पति, शुक्र, मंगल :-

बहुत बड़ा शुक्र होगा जो संतान से महरुम रखेगा। ऐश और इश्क खूब दुःख देंगे।

15. वृहस्पति, शुक्र, बुध :-

शादी और गृहस्थ में रुकावट तथा दूसरे फितूर बावेले होंगे।

आँधी की मिट्टी भरी हवा से धन ज़्यादा नहीं तो न सही मगर खुराक (रोटी, पानी) ज़रूर ही पैदा रखेगा। बनावटी सूर्य का असर (शुक्र, बुध) सदा सहायता पर होगा। वृ० ज़र्द गैस का काम देगा बेशक वह गैस कितनी ही ज़हरीली क्यों न हो।

-जब तीनों खाना नं० 7 में हों।

16. वृहस्पति, शुक्र, शनि :-

हर तरह से उत्तम खासकर खाना नं० 9 में 2 साँप होंगे (केतु स्वभाव), उसकी स्त्री मिसकनी बिल्ली की तरह अपने होंठों की हंसी व आँखों की शरारतों से सैकड़ों जंजाल, लड़ाई-झगड़े, फसाद मारपीट पैदा करती होगी।

17. वृहस्पति, मंगल, बुध :-

तीन नर औलाद को दमे की तकलीफ और टाँगों का दुःख होगा, जिसके लिए जातक के अपने शरीर पर सोना मदद देगा।

-जब वृहस्पति, मंगल, बुध खाना नं० 8, उसी समय राहु खाना नं० 11 और केतु खाना नं० 5 में हो।

तीनों एक साथ की हालत में चाहे किसी भी घर में हों अक्सर तीनों का फल (चीज़ें काम, संबंधी का फल) निकम्मा होगा, खासकर उस समय जब किसी न किसी तरह से राहु की दृष्टि या संबंध हो जाए।

उपाय बुध का बजरिया शनि के रास्ते नेक कर लेना सहायक होगा, जैसे बकरियों को साबुत चने (कच्चे काले चाहे सफेद) मुफ़्त दिन के समय खुराक में देना या लड़कियों को जो ऋतुवान न हुई हो तो बादाम आदि देकर उनका आशीर्वाद लेना सहायक होगा।

18. वृहस्पति, मंगल, शनि :-

तीनों सिवाय खाना नं० 2 मर्दों की कमी होगी। वृ० मंदा होगा जिसके कारण से बाप, दादा की या तमाम पैतृक चीज़ों को बेच कर अपनी कमाई से या अपनी हिम्मत से पैदा की हुई कमाई हो जाने तक अच्छी आय के होते हुए भी कर्ज़ई होगा। वो श्राप देने वाला होगा। जो एक तरफ डाकुओं को डाके डालने पर लगा दें और दूसरी तरफ चोरों को पकड़ने वाले सरगना (C.I.D) करने वाले गृहस्थियों को कहें कि डाकू तुम्हारा माल उठाकर भागने वाले है उनको पकड़ लो। जो उसके सामने रहे बर्बाद रहे। वृ० की चीज़ें काम और संबंधियों से अब कोई फायदा न होगा। बीमारियां मंदे विचार बुरी इच्छाएँ बर्बादी का बहाना बनेगा।

चाहे वृ० अब चोरों का सरगना होगा मगर कुण्डली वाले के लिए धन का परिणाम अच्छा ही होगा।

-जब तीनों खाना नं० 2 में हो।

19. वृहस्पति, मंगल, केतु :-

चाहे अपनी किस्मत और केतु 45 साल की उम्र तक मंदे होंगे मगर 45 साल की उम्र तक लंगड़ा भाई गो मगर मददगार होगा। शनि के फेर (पत्थर) को वृ० के पीले रंग फूलों से बतौर उपाय करें तो हर तरह से मदद मिलेगी।

20. वृहस्पति, बुध, शनि :-

तीनों सिवाय खाना नं० 12, अगर मंदा हो तो मंदी हालत काग़ रेखा (हर तरफ तंगी, निर्धनता, दुःख का बोझ) ज़ुबान का चस्का खराबी का कारण होगा। खासकर खाना नं० 7 में होने के वक्त अगर बुध उत्तम हो तो उत्तम मच्छ रेखा हर तरफ धन-दौलत और परिवार बढ़ता ही जाएगा।

बहुत उत्तम फल देगा, बुध अब अमृत कुंड होगा जो गुमनाम चौकीदार बन कर टेवे वाले के धन-दौलत और परिवार की रक्षा करेगा। -जब तीनों खाना नं० 12 में हों।

21. वृहस्पति, बुध, राहु :-

माया का राखा, खुद अपने खर्चे में कंजूस चाहे लाखोंपति ही क्यों न हो मगर निर्धन न हो खासकर जब खाना नं० 12 में हो तो सिर्फ माया का चौकीदार हो।

22. वृहस्पति, बुध, केतु :-

मर्द की माया, राजा और वृक्ष का साया साथ ही चलता होगा यानी अपना भाग्य हर जगह माथे पर साथ देता होगा, खासकर तीनों खाना नं० 2 में हो। यानी उसे हर जगह अपना भाग्य साथ देगा और दौलत परिवार का सुख लेने वाला होगा।

23. वृहस्पति, शनि, राहु :-

तीनों सिवाय खाना नं० 2, मर्दों का सुख हल्का खासकर जब खाना नं० 12 में हो। अब वृ० चोर, राहु धोखेबाज और शनि विषैला मंदा साँप होगा। तीनों ही ग्रह का अपना-अपना मंदा असर विषैली घटनाओं से जिस घर में ये तीनों मुश्तरका बैठे हो उस घर से संबंधित काम चीज़ें, संबंधी का बुरा विषैला हाल होगा। ऐसे व्यक्ति को अपने खानदान से जुदा हो करके जीवन व्यतीत करना तबाही का कारण हो अर्थात् उसे घर छोड़ना चाहिए।। संयुक्त परिवार में रहना चाहिए।

वृहस्पति, शनि, राहु खाना नं० 2 होने पर इस ग्रह के रिश्तेदार जैसे वृहस्पति (बाप या दादा), राहु (ससुराल), शनि (चाचा), खुदकुशी कर लेगा। खासकर जब उनके जद्दी मकान के साथ दक्षिण की तरफ में लगता हुआ वीराना, कब्र या कब्रिस्तान हो।

24. वृहस्पति, शनि, केतु :-

बुरी और मंदी हवा के हमलों से संतान की मौतें हों और केतु की संबंधित चीज़ें, काम, रिश्तेदार का मंदा हाल होगा।

25. वृहस्पति, राहु, केतु :-

राहु ज़माने की घड़ी की चाबी, केतु इस चाबी का कुत्ता और वृ० दोनों को चलाता होगा यानी हर शरारत का मुकाबला करना होगा। हर तरफ मुकद्दर का उल्टा ही चक्कर चलता होगा। बेशक वो कितना ही समझ कर चलने वाला और बचकर रहने का आदी हो मगर किस्मत की हेराफेरी का चक्कर उसे नाहक खराबी और बदनामी के दुःखों के सामने लाकर खड़ा कर देगा।

26. सूर्य, चन्द्र, शुक्र :-

रात-दिन मुसीबत पर मुसीबत खासकर खाना नं० 9 में। कभी अमीरी ठाठें मारे कभी गरीबी में रेत की चमक भी न हो, मगर खुद जातक शरीफ होगा।

27. सूर्य, चन्द्र, बुध :-

बुध की 17-34 साल की आयु में न सिर्फ पिता और उसका धन बर्बाद और बल्कि चन्द्र के संबंधी (माता, नानी, दादी) की साँप से मौत हो। खासकर जब वृहस्पति, शनि, राहु तीनों मुश्तरका या तीनों में से कोई एक या दो खाना नं० 3 में हो। सूर्य, चन्द्र, बुध खाना नं० 1-7-10-2 में होने के वक्त सूर्य, बुध का नेक प्रभाव होगा।

उपाय :-

रात का वक्त हो, चाँद की रोशनी हो, बहन से लड़ाई हो, औरत को बच्चा होने को, ससुराल के घोड़े पर चढ़कर जाए तो घोड़े से गिर कर मौत हो।

-जब शुक्र खाना नं० 3, राहु खाना नं० 2, केतु खाना नं० 8, शनि खाना नं० 6 में हो।

28. **सूर्य, चन्द्र, राहु :-**

चन्द्र बर्बाद, धन व माता दोनों मंदे, सुख की बजाय दुःख रात-दिन दोनों वक्त दुःखी, अक्ल मदद न दे। धन दुःख खड़े करता हो। उम्र भी कोई खास लम्बी न हो मगर ज़रूरी नहीं कि छोटी हो।

अब सूर्य की अपनी मदद तो होगी मगर चन्द्र की चीज़ें खाना नं० 5 की चीज़ें संतान आदि नष्ट होगी मगर बीज नष्ट न होगा, चन्द्र फिर भी माफ करा देगा, नस्ल बढ़ा देगा। मगर बुध का उपाय या दुर्गा पूजा मदद देगी। -जब तीनों खाना नं० 5 में हो।

29. **सूर्य, चन्द्र, केतु :-**

अब केतु का फल मंदा ही होगा लाखोंपति मगर फिर भी दुःखी। अक्ल मदद न करे। न दिन को चैन न रात को आराम। उम्र तक शक्की मगर ज़रूरी नहीं कि छोटी हो। ***दुर्गा पूजन और बुध का उपाय मदद देगा।***

वैसा ही फल व उपाय जैसा सूर्य, चन्द्र, राहु खाना नं० 5 का हो। -जब तीनों खाना नं० 5 में हों।

30.**सूर्य, शुक्र, बुध :-**

अब बुध का खाली चक्र सूर्य की सहायता लेकर शुक्र को बर्बाद करेगा। गृहस्थी हालत का फैसला केतु की हालत पर होगा अगर केतु उत्तम और बुध को मदद दे (मसलन केतु खाना नं० 12 और बुध खाना नं० 3) तो कोई मंदी हालत न होगी। लेकिन अगर केतु नीच मंदा या बर्बाद हो तो प्रथम तो नर औलाद ही न होगी अगर होगी तो बुढ़ापे में होगी। मगर जल्दी से जल्दी भी हुई गिनेगें तो 4 के करीब जाकर के हो। औरत के टेवे में तीनों इकट्ठे चाहे किसी भी घर में होने के वक्त लड़का पैदा होने पर और पुरुष के टेवे में लड़की पैदा होने पर स्त्री किसी भी न किसी तरह से बर्बाद बेघर भाग घर से भाग जाये या भगा ली जाये और धन और शरीर के सदमों से दुःखी होगी जिसका पहला कारण ज़ुबान की बदी, बुरे काम होंगे। औरत का अपना भाई चाहे स्वयं का हो या मौसी, मामी या ताई का लड़का हो और इस तरह भाई कहलाता हो ज़बरदस्ती या प्यार से धोखा देकर संतान पैदा कर दे या पैदा करने का बहाना बन जाये। चालचलन की बदनामी की तोहमत सच्ची या फर्ज़ी ज़रूर होगी। तलाक चाहे हो या न हो, ज़ुबान की बीमारियाँ हो सकती है।

मंदी हालत के समय (ज़ुबान की बीमारी) शनि की चीज़ें नशे की चीज़ों से मदद होगी। तीनों खाना नं० 8 में होने के वक्त अगर शादी 17-34 वर्ष में (बुध की उम्र में) हो तो शादी के तीन साल के अंदर-अंदर स्त्री दिन के वक्त सड़क पर या बाज़ार में दुर्घटना से मर जाये।

शनि खाना नं० 12 और तीनों खाना नं० 3 के वक्त मकान की तह ज़मीन में या आखिरी हिस्से में यानी अंधेरी कोठरी में बादाम दबा देना संतान के जन्म में मदद दे।

तीनों खाना नं० 9 में मंदे असर के वक्त फ़कीर को 7 रोटी एकदम देनी सहायक और शुभ होगी। उल्टे ढंग की संतान (उल्टी पैदा हो) ग्रहचाल की तबदीली होगी। हर तरह और हर तरफ शुभ असर होगा।

तीनों खाना नं० 10 के समय साली का रिश्ता अपने घर में लाना अशुभ होगा, आमतौर पर शुद्ध चाँदी का छल्ला ही सहायता देगा।

अब मंदी हालत की निशानी उसके घर में निवार, चारपाई, पलंग के लिए, के गोल किए हुए बंडल या लिपटी निवार पुराने समय से (2 साल पुरानी या नानी, दादी के समय से) बंद पड़ी होगी। जिसके होते हुए इन ग्रहों का मंदा फल आम सबूत होगा। ठीक यही होगा कि उस निवार को इस्तेमाल कर लिया जाये, गोल बंडलों को हटा दिया जाये ताकि वही निवार जो नुक्सान करती है लाभ देने लग जाये।

शादी के दिन से चन्द्र से संबंधित संबंधी (माता, सास आदि) बुध खाना नं० 3 की मंदी आवाज़ के राग सुनने लगेंगे। हर तरफ मंदे ढोल ढमाके की आवाज़ें आना शुरू हो जाएंगी।

-जब चन्द्र खाना नं० 9 में हो। खाना नं० 9 और तीनों ग्रह कहीं भी हो।

उपाय

शादी के समय लड़की का संकल्प करने के ठीक बाद ही ताँबे की गागर ताँबे के ढक्कन समेत साबुत मूंग से भर कर जिस तरह लड़की का दान किया हो उसी तरह उस ताँबे के बर्तन का संकल्प कर दें। बर्तन बड़े से बड़ा जितना हो सके लेना चाहिए बाद में साबुत मूंग से भरा बर्तन किसी नदी-नाले में दिन के वक्त बहा दें।

ऐसी ग्रहचाल के समय चाहे किसी भी घर में हों ऊपर दिया उपाय सहायक होगा और अगर मौका मिल सके तो शादी के वक्त ऐसा उपाय किया हुआ सबसे उत्तम फल देगा।

31. सूर्य, शुक्र, शनि :-

गृहस्थ मंदा, मकान का फर्श लाल रंग का न होना चाहिए। मिट्टी के कुजे में लाल पत्थर के टुकड़े दूध से भर कर, तीनों के बैठे होने वाले घर से संबंधित जगह तरफ, दिशा, मकान कुण्डली के हिसाब में नहीं तो वीराने में दबा दें।

32. सूर्य, शुक्र, राहु :-

औरत की सेहत मंदी, दिमाग़ी कमज़ोरी दीवानगी आदि खासकर ख़ाना नं० 1 में हो।

33. सूर्य, शुक्र, केतु :-

शुक्र पर खराबी होगी, दिमाग़ी कष्ट स्त्री को, खासकर जब खाना नं० 1 में हो, जब तक वह स्त्री जातक के जद्दी मकान में रहे।

34. सूर्य, मंगल, बुध :-

दिल रेखा पर सूर्य के पर्वत पर सूर्य रेखा पर त्रिकोण। दिल की ताकत अधिक हो चाहे ऐसा आदमी नेकी करे या बदी उसकी ताकत उसका साथ देगी। शरारत करने वालों (हमला करने) को ठीक जवाब दे सकेगा।

35. सूर्य, मंगल, शनि :- **धन उत्तम होगा।**

झूठा, जिद्दी, हठधर्मी और मंद भाग्य होगा।

–जब शनि का संबंध या तीनों खाना नं० 11 में हो।

36. सूर्य, बुध, शनि :-

अब सूर्य और शनि दोनों ही अपना-अपना काम करते होंगे और उनकी आपसी कोई दुश्मनी लड़ाई-झगड़ा न होगा। तीनों ही ग्रहों का मंदे घरों में होने पर भी अपना-अपना और उम्दा फल होगा मगर वृ० का साथ मंदा ही होगा। खासकर जब तीनों सूर्य, बुध, शनि खाना नं० 2-5-9-12 में हों। सूर्य उम्दा होने वाले घरों में होने पर बुध के संबंधित कारोबार, व्यापार, दिमाग़ी कारोबार का फायदा हो। शनि की उम्दा हालत वाले घरों के वक्त जायदाद बढ़े या मिले या पैदा हो।

वृ० खाना नं० 2 नेक हालत में देखें। –जब तीनों ग्रह खाना नं० 8 और वृ० खाना नं० 2 में हो।

37. सूर्य, बुध, राहु :-

शादियाँ एक से अधिक मगर गृहस्थ बर्बाद। औलाद मंदी। बुध या बहन बर्बाद हो शर्त यह कि शुक्र किसी ओर ग्रह का साथी ग्रह न हो वर्ना शादियां 2 न होगी। हाल वही मंदा का मंदा रहे। बेटी/लड़की का सूर्य (पति और पति का राजदरबार) ज़रूर मंदा होगा जिसके लिए चन्द्र का उपाय मदद दे।

38. सूर्य, बुध, केतु :-

केतु की चीज़ें काम, संबंधी, भानजे, भतीजे मंदा ही असर देंगे। उनसे मदद की कोई उम्मीद न हो। वह टेवे वाले के अच्छे किए काम को भूल जाएंगे। अगर जातक कोई बुराई कर दे तो वह सदा याद रखे।

39. चन्द्र, शुक्र, बुध :-

स्वास्थ्य रेखा अगर दिल रेखा से मिल जाए तो दिमाग़ी दर्द (Mental Pain), सदमें होंगे। चन्द्र से सीधा ऊपर को बुध के मुकाम पर शादी रेखा को काटता चला गया खत या रेखा शादी में रुकावट डालने वाली होगी। इस रेखा के होते हुए बुध और चन्द्र का शत्रुओं जैसा प्रभाव होगा। चन्द्र, बुध, शुक्र से शत्रुता करता है अब बुध का मुकाम है और शादी रेखा शुक्र के खत है चन्द्र अब न बुध पर एतबार करेगा न शुक्र पर भरोसा रखेगा। ये रेखा मंगल बद के रास्ते से ही बुध को जा सकती है। अब सब खराब ही प्रभाव देंगे। शादी शायद 34 साल या 17

साल से पहले न हो यानी अगर 17 साल में शादी हो भी जाये तो वो शादी न होगी। फिर 17 साल के बाद 34 से पहले 33 तक शादी का कोई मतलब ही न होगा। भाई-बन्धु बर्बाद हों, स्त्री पर (चन्द्र, शुक्र से और शुक्र, बुध से और बुध, मंगल से सब एक-दूसरे के खिलाफ है) प्रभाव होगा, औरत के प्रथम तो संतान न होगी अगर होगी तो ज़िंदा न रहेगी अगर रह गई तो लड़का नहीं होगा। स्त्री की दृष्टि बर्बाद होगी शुक्र काना और मंगल अंधापन करेंगे। बुध कारोबार को बर्बाद और खेती की ज़मीन खराब करेगा यानी अव्वल तो माता दुखिया या दुःखी करेंगे अगर ज़मीन खेती आ जाये तो माता खत्म हो और ज़मीन के झगड़े बर्बाद कर देंगे। ऐसे मनुष्य की यदि स्त्री जीवित हो तो उस स्त्री की उम्र जिस कदर बुध के प्रभाव के करीब यानी 34 साल के लगभग होती जाये हमल गर्भ की खराबियां या स्त्रियों की और बीमारियां उस पर टूट पड़े अर्थ ये कि औरत 34 के करीब और पुरुष 48 से पहले लड़के का सुख न भोगेगा। ऐसे आदमी को सरकारी काम या व्यापार से फायदा न होगा बल्कि नुक्सान हो सकता है। चन्द्र और मंगल दोनों ही हानि के बानी है अतः दोनों की सेवा ज़रूरी है। चन्द्र के लिए इष्ट पूजन और मंगल के लिए गायत्री पाठ करना है। राहु का असर कन्यादान और केतु का कपिला गाय के दान से शुभ होगा यानी जब वह लड़की की शादी करेगा आराम पाएगा या बुध के लिए दुर्गा पाठ करेगा तो सुखी और धनी होगा, सब्ज रंग तोते की पालना करे और स्याह रंग मछलियों को सूर्य निकलने से पहले आटा अपनी खुराक का 1/1 हिस्सा खिलाया करें। 4 हफ्ते और हर हफ्ते में एक दिन ऐसा करें। शुक्र की रात शनि की सुबह के बीच का वक्त हो। ऐसे मनुष्य की आयु 85 साल से ज़्यादा न होगी।

40. चन्द्र, शुक्र, शनि :-

भगवान् उसकी सहायता करता जो अपनी स्वयं करे। उसका धन-दौलत संतान के हाथ लगे। मौत परदेश में वर्ना उसका धन मिट्टी के पहाड़ की तरह दिखाने का उत्तम हो मगर अंदर से खाली ढोल हो जो ससुराल खानदान के बजाने के काम आये यानी ससुराल की नाहक बदनामी का बहाना हो जाये। टेवे वाले के अपने लिए जाती असर मनहूस होगा।

41. चन्द्र, मंगल, बुध :-

धन स्वास्थ्य अच्छे खासकर खाना नं० 1-4-5 में मगर शनि का संबंध या खाना नं० 1-11 में मंदा प्रभाव होगा। मृगछाला उसे बुरे प्रभाव से बचाएगी। हथेली पर मंगल बद खाना नं० 8 वाले हिस्से की चर्बी अगर बुध या चन्द्र के पर्वतों को ऐसा एक करके मिला दे कि तीनों ही पर्वतों का अलग-अलग फर्क मालूम न हो तो मंगल बद का बुध व चन्द्र दोनों पर बुरा असर होगा। भाग्य रेखा से चन्द्र को रेखा अच्छा असर दे जबकि चन्द्र नेक घरों में हो।

42. चन्द्र, मंगल, शनि :-

तीनों रंगों में रंग-बिरंगा साँप अगर हो तो भी चितकबरा, बीमारी का घर सिवाय खाना नं० 11, तीनों का फल अमूमन मंदा, दिखावे का धन-दौलत जो आखिर में भाई, ताओं, चाचों के काम आये। बुढ़ापे में नज़र का धोखा हो। राजदरबार से फायदा हो। मंगल या चन्द्र के घर 3-4-8 में हर तरह से हानि, घर बर्बाद और मौत खड़ी रहेगी। दिल रेखा (चन्द), आयु रेखा (शनि), का अंत में 2 शाखी होना या इन दोनों के साथ से (मंगल) का मिलना बुढ़ापे में सेहत के हल्के होने का शक है, कोढ़, खारिश, फुलबहरी की बीमारी का साथ होगा। त्वचा काली और सफेद होगी।

राजदरबार का फल उत्तम और मुबारक होगा। -जब तीनों खाना नं० 1 में हों।

43. चन्द्र, मंगल, राहु :-

जब उल्टे ढंग की पैदाइश हो तो पिता पर उसकी उम्र तक भारी या पिता की मौत के बाद पैदाइश होगी। उपाय पानी डालने की बजाय दूध में ही डाल कर मीठा हलवा बना कर खुद खाना और दूसरों को खिलाना मदद देगा।

44. चन्द्र, मंगल, केतु :-

अब चन्द्र और वृहस्पति दोनों ही का फल मंदा होगा। साथ ही नर संतान भी चिल्लाती होगी। ऐसा व्यक्ति 48 साल की आयु तक संतान से दुःखी ही रहेगा या उसके संतान होगी ही नहीं। विशेषकर जब खाना नं० 7 या खुद शुक्र भी मंदा हो रहा हो।

45. चन्द्र, बुध, शनि :-

सिवाय खाना नं० 4, तीनों इकट्ठे हों तो खूनी होगा मगर दौलतमंद और हौंसलेमंद होगा।
गोता, बीमारी के नुक्स होंगे। आम के पेड़ को दूध डालना शफा देगा।
बुध, शनि आम वृक्ष हो, चन्द्र+बुध मूर्छा आदि, दिल की बीमारी हो।
मामों घर घाट बर्बाद ही होगा मगर उसकी मौत निर्धनता से न होगी। -जब तीनों खाना नं० 4 में हों।

46. चन्द्र, बुध, राहु :- पिता डूब कर मरे, मगर चन्द्र पर बुरा असर न हो।

47. चन्द्र, शनि, राहु :-

33-36-39 साल की उम्र में शनि मंदी घटनाएं देगा, लक्ष्मी व स्त्रियों औरत व माता का सुख हल्का होगा। खाना नं० 12 में चन्द्र चुप होगा। ऐसा प्राणी स्त्री की लहर से डूबा हुआ हाथी रात की चाँदनी में माता की आँखों के सामने बच्चे बनाने की बेहयाई में अंधा होगा। मगर भगवान् अजीब है कि उसका बनाया बच्चा कभी घर में न खेलता होगा।

48. शुक्र, मंगल, बुध :-

शादी और औलाद में गड़बड़। अल्पायु भी होगा खासकर जब खाना नं० 3 में इकट्ठे हों।

49. शुक्र, मंगल, शनि :-

दो गुना नेक मंगल, दो गुना नेक केतु हो।
मंगल-वृहस्पति या मंगल-शुक्र देखते शनि को (धन की एक जैसी ठीक हालत)।
मंगल-शनि या मंगल-चन्द्र देखते हों वृहस्पति को (ठीक आयु, छुपी मदद मिले)।

सहायक उम्र रेखा (साथी रेखा) :-

ये रेखा जैसा कि नाम से प्रतीत है आयु रेखा की मददगार है। सिर्फ आयु रेखा की मददगार नहीं बल्कि मनुष्य की उम्र व ज़िन्दगी की सहायता जाहिर करती है। अगर एक रेखा से एक को फांसी लगती हो तो दूसरी उसके पाँव में तख्ता लगा कर उसे बचा लेगी। दुश्मन के सामने मित्र भी पैदा हो जाएंगे। सहायता की हद इतनी है कि ऐसा व्यक्ति कब्र से भी वापस आ सकता है। पिता की मदद और सुख सागर लम्बा होगा न सिर्फ संतान का सुख और मदद मिलेगी बल्कि सभी मदद करेंगे।

5. शुक्र, बुध, शनि :-

गऊग्रास देने से संसार के (गृहस्थ, संतान, आयु) तीनों सुखों का मालिक होगा। जद्दी मकानों में मोगा (जिससे प्रकाश आ सके) आसमान की तरफ से सूर्य की रोशनी रखना धन-दौलत की तबाही व चोरी का सबब या सबूत होगा। मकान में दाखिल होते वक्त दाएँ हाथ की कोठरी को अंधेरी में रखना सहायक होगा (शनि की पालना)। अपनी ही घर की गाय और कुत्ते को अपना ही दुःख दूर करने के लिए अलग रोटी का टुकड़ा देता हो तो उसे बाहर से टुकड़ा नहीं मिलना चाहिए वर्ना कोई अर्थ न होगा। वैसे भी काला कुत्ता (पूरा) काली गाय अति उत्तम होते है केवल उस वक्त तक जब तक कि किसी दूसरे घर (दूसरे मनुष्य) का अन्न उन्हें न मिले। जब बाहर वाले लोग उसको अनाज देंगे तो बाहर की ज़हर उसके घर के मालिक पर आएगी। अगर ये दोनों जानवर फायदेमंद हो तो हानिकारक हो सकते है। अतः संभल कर काम करने से फायदा है वर्ना आ बैल मुझे मार का तमाशा है। काली गाय और काले कुत्ते को रोटी देना सहायक होगा।

51. शुक्र, बुध, राहु :- शादीयाँ कई, स्त्रियां कई मगर गृहस्थ सुख मंदा, विशेषकर खाना नं० 7 में शादी और संतान का हाल खासकर मंदा, गड़बड़ आदि हो।

52. शुक्र, बुध, केतु :-

तीनों ही ग्रहों का फल मंदा होगा, खासकर खाना नं० 7 में होने के वक्त शादी और औलाद में बहुत खराबियां होंगी।

53. शुक्र, शनि, केतु :-

एक ही मैदान में दो मुश्तरका, मगर एक ही समय में, कामदेव का खेल करने वाले खिलाड़ियों की तबीयत का स्वामी होगा या ऐसे खिलाड़ियों को शामिल करके चालचलन की रंग-बिरंगियों से संसार का मुँह धोता और अपने संसारी गृहस्थी को फुलबहरी के काले और सफेद धब्बे लगा कर खुश होता होगा।

54. शुक्र, राहु, केतु :-

न सिर्फ अपना गृहस्थ सुख मंदा बल्कि पड़ोस भी दुःखी और बर्बाद होंगे। खासकर जब तीनों ग्रह कुंडली के पहले घरों में हों, हमसाया घरों में लड़की की शादी न हो सकेगी।

55. मंगल, बुध, शनि :-

1. मामा बर्बाद जो बचे साधु होकर बचे, वो भी घर से बाहर जाकर वर्ना बर्बाद हो जाये। मृगछाला सहायक उपाय हो।
2. दो साँप होंगे (राहु स्वभाव), शनि दो गुना मंदा असर देगा। आँखों की खराबियां नाड़ियों या खून के नुक्स और सब मंदे हों।
3. खाना नं० 2 के वक्त साँप की खुराक (दूध या वृहस्पति की चीज़ें) धर्म स्थान में देने से सभी ग्रहों की खराबियां दूर होंगी।
4. खाना नं० 2-12 के वक्त बताशे धर्म स्थान में देना भी मददगार होगा।

56. मंगल, शनि, केतु :-

मंगल बद का मंदा असर ज़ोर पर होगा। मकान (शनि) कच्चा चाहे पक्का मिल-मिलाया होगा जिसमें नीम का वृक्ष (मंगल) और कुत्ता (केतु) मौजूद होगा। मंगल, शनि चाहे मंगल या शनि के साथ कोई भी तीसरा ग्रह हो तो तीनों ही मंदे उनका फल बर्बाद हो और ज़हरीला होगा।

57. बुध, शनि, राहु :-

शुक्र, बुध, राहु मुश्तरका का फल होगा।

58. बुध, राहु, केतु :-

हर वक्त मौत गूंजती होगी। खासकर जब ये तीनों ग्रह खाना नं० 1 में आए। अगर ऐसे व्यक्ति ज़ुबान और तालू (हलक का कौवा) भी काले हो तो अपने खून के सब संबंधियों को बर्बाद करने के लिए निःसंतान होकर खुद मंदी मौत से तबाह होगा। लेकिन अगर शनि भी खाना नं० 8 में हो तो बुध, राहु, केतु तीनों ही का अपना-अपना और जुदा-जुदा असर जैसा होगा क्योंकि शनि ऐंसी हालत में अपने एजेंटों की कार्यवाहियों पर अमल करता होगा।

59. शनि, राहु, केतु :-

तीनों का इकट्ठा टोला पापी ग्रह कहलाता है। पापी खाना नं० 3-5-9-11 में हो मगर उनको वृहस्पति, बुध, शुक्र या चन्द्र न देखे तो बहरा होगा।

3 काल त्रिलोकी टोला, पापी ग्रह तीन होता हो।
पापी की मिसलें पाप बनाता (राहु, केतु), दरबार शनि ले जाता हो।
हलक का कौवा हो घर आठवें, शनि जहाँ खुद होता हो।
राहु दाएँ, केतु बाएँ, शनि बीच में होता हो।
तीन पापी से कोई अकेला, पापी दीगर से मिलता जो।
तासीर असर सब उत्तम होगा, लेख मंदा नहीं करता हो।
पाप मंदा खुद पापी मंदे, बेड़ी भरी जो डुबोता हो।
गऊग्रास फल उत्तम देवे, नष्ट ज़हर पापी करता हो।
पापी मंदे गुरु हो खुद मंदा, फैसला शनि करता हो।
मकान शनि नेक हालत बनता, उल्ट बने गिरवाता (बिकवाता) हो।
दोस्त बराबर ग्रह पापी इकट्ठा, पाप आदत नहीं छोड़ता हो।
असर मंदा खुद दोस्त अपना, बैठ इकट्ठे देता हो।

राहु, केतु सिर्फ दो ग्रह मुश्तरका को पाप; शनि, राहु, केतु तीनों मुश्तरका पापी ग्रह कहलाते हैं। राहु, केतु तो शनि का ही स्वभाव रखते है मगर शनि की शक्ति नहीं रखते यानी शरारती होते हैं मगर शरारत का नतीजा नहीं हो सकते। तीनों के मुश्तरका बैठक की जगह कुण्डली में खाना नं० 8 है और मनुष्य के शरीर में तालू उसके आराम की जगह है जिसमें कुण्डली वाले के दायीं तरफ राहु और बायीं तरफ केतु बीच में शनि होता है।

पापी ग्रहों का स्वभाव :-

1. जब कभी कोई शत्रु ग्रह अकेला उनके मुकाबले पर हो तो उस शत्रु की शक्ति को समाप्त कर देंगे।

2. अगर 2 ग्रह मुकाबले पर हो पापी ग्रहों शक्ति दुगुनी हो जाती है। ज्यों-ज्यों शत्रु ग्रह बढ़ते जाते पापी ग्रहों की पाप करवाने की शक्ति बढ़ती जाएगी।
3. यदि मुकाबले पर बैठा शत्रु ग्रह पापी के किसी मित्र को साथ ले जाये तो पापी जातक का दुगुना नाश करेंगे अपने मित्र ग्रह को बहुत बुरी तरह से मारेगें।
4. किसी 2 पापी ग्रहों के साथ अगर (वृहस्पति, चन्द्र या बुध) हो तो तीनों ही का फल मंदा हो। जैसा कि केतु, शनि, वृहस्पति (औलाद की अचानक मौतें हों)।
5. जब पापी ग्रहों का फल मंदा हो तो वृ० भी मंदी हैसियत का गुरु होगा।
6. कोई दो पापी इकट्ठे एक ही घर में बैठे हों तो अपने-अपने संबंधित काम, संबंधी, चीज़ों का दूसरों पर चाहे असर नेक हो या बुरा मगर कुण्डली वाले के अपने लिए हर दो का फल नेक होगा।

चार ग्रहों का फलादेश

1. वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र, मंगल :-

वृहस्पति खाना नं० 2 की भाग्य रेखा का उत्तम फल होगा। उत्तम गुरु जिसे सब प्रणाम करें और उपदेश लेंगे।

2. वृहस्पति, सूर्य, शुक्र, मंगल :-

तीनों नर ग्रहों का तीनों शेरों के बीच में शुक्र गाय की तरह का हाल, ऐसा ज्ञानी त्यागी जिसके साये में तीन शेर इकट्ठे हुए भी एक गाय पर हमला न कर सकेंगे या तीन शेरों के बीच आ जाने वाली गाय सुखिया रहेगी। भाग्यवान खानदान शाही जोगी खून का होगा जो शाही जंगी तलवार पर भी विजय पा सके।

3. वृहस्पति, सूर्य, शुक्र, बुध :-

सवेरे सूरज की तरफ मुँह करके नमस्कार या पूजा आदि करना राजदरबार में उसका नसीब ऊँचा करेंगे। जब चारों खाना नं० 3 में और खाना नं० 11 खाली हो।

4. वृहस्पति, चन्द्र, बुध, शनि :- खोटी संगति खोटे काम खासकर खाना नं० 2 में, मगर अच्छी संगति भला करे खासकर जब खाना नं० 6 में हो।

5. वृहस्पति, चन्द्र, बुध, राहु :-

राहु का तमाम अर्सा 42 साल की उम्र तक फल खराब होगा उस घर की चीज़ों का जिसमें कि चारों बैठे हों या चारों ही ग्रह मंदे और व्यर्थ होंगे और बाद में चारों ही ग्रह आपस में शत्रु होते हुए भी एक मित्र की तरह एक-दूसरे की मदद करेंगे और सब का मिला-मिलाया नेक फल होगा।

6. वृहस्पति, शनि, बुध, राहु :-

यदि चारों खाना नं० 12, जिस काम में रुपया-पैसा लेकर व्यापार करें उसी में सब ओर से सोने को राख ही राख कर दें मगर ससुराल और चाचा यानी (राहु और शनि) के रुपये-पैसे की मदद से काम करने पर उत्तम फल होगा।

7. सूर्य, चन्द्र, शुक्र, बुध :- जातक भला लोग हो, माँ-बाप का खालिस खून, दोनों का नौकर हो।

8. सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि :-

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि में से कोई भी और किसी एक घर खाना नं० 2-6-12-8 में हों यानी चारों ग्रहों में से कोई भी चारों घर में से कहीं भी हो मगर यही चार ग्रह और उन्हीं चार घरों में हों तो अमूमन फल होगा।

9. सूर्य, चन्द्र, बुध, केतु :- पिता पानी में डूब कर मरेगा या संसारी हालत में अति दुःखी होकर उम्र भोगेगा।

10. सूर्य, शुक्र, बुध, शनि :-

जोड़ भाई जोड़ मगर खाएंगे और ही लोग, खासकर जब चारों खाना नं० 4 में हों। स्त्रियां चाहे 2 जीवित हो मगर दोनों संतान

रहित और मंदे चलन की होंगी। बुरे कामों में खुश लानत और ज़हमत की ठेकेदार होगी। आदमी का अपना जीवन व्यर्थ और आखिर में पानी से तरस कर मरेगा।

11. **सूर्य, मंगल, बुध, शनि :-**

अगर चारों ग्रह नष्ट या बर्बाद हों तो एक अकेला ही लाखों से मुकाबला करने की ताकत रखता हो। अगर चारों कायम हों तो सब को ही लूट कर धनाढ्य बन जाये। फटा पतंग चारों का मंदा फल उस घर का जिसमें चारों बैठे हों।

12. **चन्द्र, शुक्र, मंगल, बुध :-**

चारों का फल मंदा होगा। लड़की की शादी से नेक फल शुरू होगा।

13. **चन्द्र, शुक्र, मंगल, शनि :-**

राज से संबंधित व खुश हाल हो, अच्छी तरह गुज़ारा खासकर खाना नं० 2 में हो।

14. **चन्द्र, शुक्र, बुध, शनि :-**

अमूमन उसके अपने कबीले में मौत और जन्म की घटनाएँ एक साथ हुआ करेंगी।

15. **शुक्र, मंगल, बुध, राहु, केतु :-**

शादियों में पुरुषों और स्त्रियों का विरोध, नाजायज़ और फ़िज़ूल खर्चों से हानि, खाना नं० 7 में शादी में गड़बड़ और फालतू विघ्न होंगे।

16. **मंगल, बुध, शनि, राहु :-**

जिस घर में बैठे हों अब उसका मंदा हाल न होगा। लेकिन अगर सांझी दीवार वाले घर में सूर्य बैठा हो तो सदस्य की गिनती पर तो कोई बुरा असर न होगा मगर राहु की बुरी तासीर चोरी धन हानि ज़रूरी होगी। कोई भाई तो लावल्द कोई मच्छ रेखा का मालिक यानो राजा मगर लड़कियां दु:खी और मरीज ही होंगी।

दक्षिण दरवाज़े का साथ मंदे असर का बुनियादी कारण होगा। दहलीज़ के नीचे चाँदी की चपटी तार जो दहलीज़ की लम्बाई के बराबर हो मदद देगी। ये ज़रूरी नहीं कि तार उतनी ही चौड़ी हो जितनी दहलीज़ मगर शर्त सिर्फ यह है कि लम्बाई में दहलीज़ के बराबर हो।

पाँच ग्रहों (पंचायत) का फलादेश

सबसे उत्तम पंचायत (पाँच ग्रह) वो है जिसमें बुध शामिल न हो मगर राहु या केतु में से एक ज़रूर शामिल हो।

1. नर ग्रह, स्त्री ग्रह साथ में पापी ग्रह (सिवाय बुध) मुश्तरका की पंचायत हो तो किस्मत का धनी, हाकिम, संतान पर संतान वाला, धनी गृहस्थी सुख उत्तम लम्बा, आयु लम्बी चाहे वो मिट्टी का माधो और अक्ल का अंधा ही क्यों न हो।

2. शनि, वृहस्पति, सूर्य, शुक्र, बुध मुश्तरका की पंचायत हो तो :-

अ)खाना नं० 1 से 6 में उत्तम फल होगा।

ब)खाना नं० 7 से 12 में ऊपर का भाग नं० 1 का प्रभाव मगर स्वयं बना अमीर होगा और डरते-डरते दरिया पार कर जाने वाले तैराक की तरह संसार में कल की फिक्र न रखने वाला होगा।

3. पंचायत (कोई भी पाँच ग्रह) का प्रभाव हर हालत में उत्तम हो और नेक होगा यदि ऐसा व्यक्ति पाँचों ही कुल समय के ऐबों का मालिक हो जाए तो भी औरों से उत्तम ही होगा।

4. अगर पंचायत के ग्रहों में कोई भी पापी (राहु, केतु, शनि) शामिल न हो और वो प्राणी खुद भी पाप न करने वाला हो तो ऐसी पंचायत से कोई लाभ न होगा। अर्थ यह कि या तो पाँच ग्रहों में पापी ज़रूर हो या वो खुद शरारती या पापी हो तो पंचायत का उत्तम फल नहीं तो उसकी आँखों के सामने ही उसका घर कई बार लुटता होगा। धर्मी रहते हुए पापी ग्रहों की चीज़ें लोगों को मुफ़्त बाँटना

शुभ फल पैदा करेगा।

राहु की संबंधित चीजें जौ, अनाज की बनी चीज़ें, नारियल की भिक्षा।

केतु की संबंधित चीज़ें केले और खटाई की चीज़ें।

शनि की संबंधित चीज़ें बादाम, शराब, सिगरेट, हुक्का या नशे की चीज़ें।

तमाम ग्रह इकट्ठे

1. गो राहु या केतु में से एक बाहर रह जाया करता है मगर वो भी दृष्टि के हिसाब से अपने से अपने बाद वालों में अपना फल मिला कर खुद सिफ़र (शून्य) हो जाता है इस तरह जब राहु/केतु पहले घरों में और बाकी सब बाद के घरों में बैठे हों तो राजयोग होगा और खासकर जब इकट्ठे हो रहे हों तो विभिन्न घरों में असर इस प्रकार होगा :-
   खाना नं० 2 में हो तो राजा हो।
   खाना नं० 3 में हो तो मिसल राजा, साहब इकबाल हो।
   खाना नं० 8 में हो तो हुक्मरान, राजा साहब इकबाल हो अपने आप को बढ़ाए।
   खाना नं० 9 में हो तो हुक्मरान हो और साथियों को बढ़ाए।
2. पाँव की पाँचों अंगुलियाँ बराबर हों आपस में बराबर या एक के बाद एक की तरतीब से हों तो ऐसा हाकिम जिसे कल की फिक्र न हो।
3. जब एक से दूसरी बड़ी होती चलो जाए तो संतान पर संतान होती चली जाए।

****
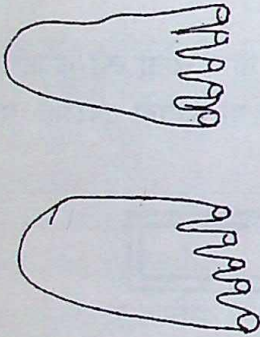
विषय को पढ़ने के लिए कुछ सहायक उदाहरण

स्मृति :-

इस विषय के आधार पर हर पुरुष का टेवा हर स्त्री के टेवे को ढांप लिया करता है मगर कई बार आपसी तकरार भी हो सकती है। यानी जब तक लड़की का विवाह न हुआ हो (ऋतुवान चाहे हो चुके) लड़की का टेवा खुद उसके अपने लिए या माता-पिता या भाई-बन्धुओं और दूसरे गृहस्थी साथियों के संबंध में दखल देने या सहायक हो लेता है। मगर विवाह के दिन से उसके पति के टेवे के अनुसार पुरुष और स्त्री दोनों का एक साथ हाल शुरू हो जाता है और लड़की की हैसियत का टेवा कोई ध्यान योग्य न होगा। लेकिन हो सकता है कि शादी वाले स्त्री-पुरुष किसी ऐसे खून से एक हिन्दू दूसरा मुसलमान, एक ईसाई, दूसरा सिक्ख, एक भारतीय दूसरा विलायती संबंधी हो जिनमें खून की नाली खानदानी नस्लों की जगह पयोदों पौधों की तरह चल रही हो तो ऐसे हालात में हो सकता है कि स्त्री का टेवा मर्द के टेवे में फिट जा बैठे। ऐसी हालत में दोनों के टेवे जुदा-जुदा ही देखें जाएंगे कि जिस तरह कि स्त्री-पुरुष दोनों संसार में जुदा-जुदा ही चल रहे हों।

उदाहरण नं० 1 :-

एक व्यक्ति का दायाँ हाथ :-

चक्र 1, शंख 1, सिदफ 8, हाथ की आर-पार चौड़ाई 3"-3, हाथ की दक्षिण चौड़ाई = 2", बुध की लम्बाई = 2"-9, हाथ की मध्यमा तक लम्बाई = 4-1, अंगुलियों पर लकीरें दाएँ हाथ पर = 19, बाएँ हाथ पर = 24, कुल लकीरें = 43।

जन्म 4 पौष 1959 सं०, (18 जनवरी = 1902) हाथ देखने का दिन = 23 माघ सं० 1995 यानी 37 साल शुरू हुआ। हाथ रेखा के अनुसार मंगल खाना नं० 1, चन्द्र खाना नं० 2, केतु खाना नं० 3, राहु खना नं० 7, वृहस्पति, शनि खाना नं० 10, सूर्य, बुध, शुक्र खाना नं० 12 में।
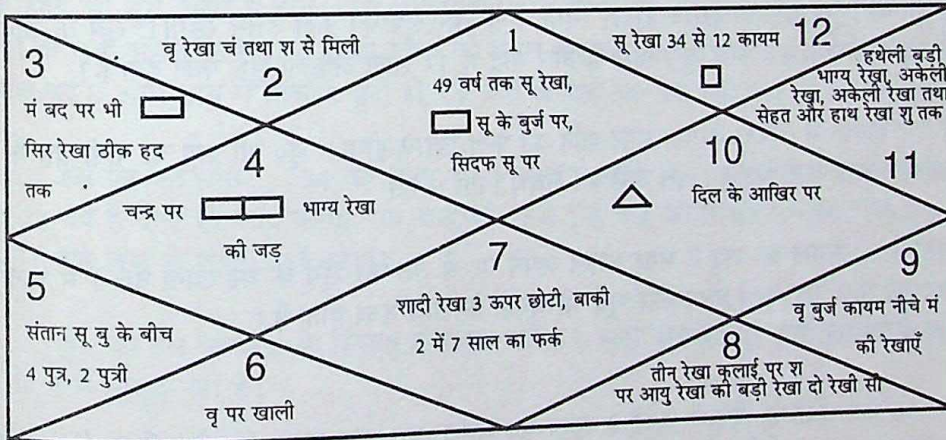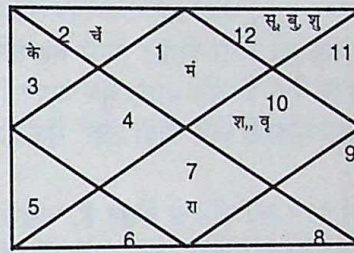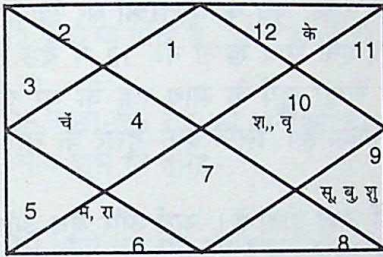
ग्रह कुण्डली किस तरह बनाई गई :-

खाना नं० 1 :- ग्रह का नाम लिखने का कारण :- मंगल का निशान है और सूर्य के बुर्ज को खाना नं० 1 में दिया है।

सूर्य के बुर्ज पर चौकोर [ ] है, जो मंगल का निशान है और सूर्य के बुर्ज को खाना नं० 1 में दिया है।

खाना नं० 2 :- ग्रह का नाम लिखने का कारण :-

चन्द्र के पर्वत से सीधी रेखा वृ० के पर्वत पर चली गई है अतः खाना नं० 2 दिया है।

खाना नं० 3 :- ग्रह का नाम लिखने का कारण :-

केतु की निशानी मंगल नेक के पर्वत पर है जिसे खाना नं० 3 मिला हुआ है।

खाना नं० 7 :- ग्रह का नाम लिखने का कारण :-

राहु का निशान शुक्र के बुर्ज पर है इसलिए खाना नं० 7 दिया गया है।

खाना नं० 10 :- ग्रह का नाम लिखने का कारण :-

तर्जनी और मध्यमा के नीचे शनि और वृहस्पति के बुर्जों को मिलाने वाली दो रेखा वाली रेखा कायम है यानी वृ० खाना नं० 1० जो शनि के बुर्ज को दिया हुआ है और शनि रेखा से शनि खुद अपने घर खाना नं० 1 पर हुआ।

खाना नं० 12 :- ग्रहों का नाम लिखने का कारण :-

सूर्य के बुर्ज और बुध के बुर्ज से रेखाएं हर दो रेखा कुण्डली साल प्रति साल हालात के लिए हाथ पर स्थित रेखा से पूरी की गई है।

अब ग्रहों के प्रभाव देखने के लिए मदद की बातें :-

खाना नं० 1-7 :-

इन घरों के ग्रह एक-दूसरे को 100 % की दृष्टि से देखते हैं मंगल के साथ बैठा हुआ राहु चुप रहा करता है और मंगल के बुर्ज पर जिसमें खाना नं० 8 दिया गया है, भी चौकोर है इसलिए खाना नं० 1-7 के असर के लिए मंगल का असर शुभ होगा। मंगल के ज़ोर से राहु चाहे चुप रहेगा मगर मंगल से दूर बैठा होने के कारण से अवश्य बुरा असर ही छुपे तौर पर करता जाएगा और मंगल के असर का सारा समय यानी 28 साल तक स्त्री दृष्टि तथा स्त्री सुख पर अवश्य बुरा असर करेगा। मंगल के असर के समय के बाद 14 साल तक राहु तथा मंगल दोनों एक साथ असर करना शुरू करेंगे। राहु के असर का समय 42 साल तक राहु तथा मंगल दोनों एक साथ असर करना शुरू करेंगे। राहु के असर का समय 42 साल होता है और मंगल की कुल मियाद 28 साल है। इसलिए एक ही समय से शुरू होने पर राहु 14 साल बाद तक अकेला ही होगा। मगर शुक्र, बुध के मुश्तरका घर खाना नं० 7 और सूर्य का घर खाना नं० 1 पर अकेले राहु का असर होगा। मगर वह तीनों ही उठ कर एक साथ खाना नं० 12 में बैठे है यानी राहु जुदा एक तरफ शुक्र के घर में मेहमान बैठा है और शुक्र, बुध अपने मित्र को साथ लेकर सूर्य के साथ राहु के घर चला गया है इसलिए न राहु, शुक्र का कुछ बिगाड़ सकता है और न ही शुक्र, राहु की हानि कर सकता है। सिर्फ एक-दूसरे के घरों की ईमारत खराब कर सकते हैं।

खाना नं० 2-12 आपस में 25% की दृष्टि से देखते हैं, चन्द्र खाना नं० 2 में उच्च होता है। सूर्य और बुध आपस में मित्र हैं। मगर सूर्य, शुक्र आपस में शत्रु और दूर बैठा हुआ चन्द्र, शुक्र और बुध दोनों से शत्रुता करता है। इस तरह से चन्द्र तथा सूर्य तो शुक्र का फल खराब कर देंगे और बुध का फल चन्द्र से खराब होगा। मगर चन्द्र और सूर्य का फल उत्तम रहेगा। सूर्य के साथ बैठा हुआ बुध अपने समय का आधा समय तक यानी 17 साल चुप रहता है और बाद में 17 साल अकेला शुभ फल देता है।

खाना नं० 1० :-

शुक्र, वृहस्पति इकट्ठे हैं इस हालत में अपना-अपना मगर शनि का फल खराब होगा। वृ० भी शत्रु या पापी ग्रह के साथ अपना आधा समय यानी 8 साल अवश्य नेक फल देता है। इन ग्रहों का संबंध पिता से है।

खाना नं० 3 :-

केतु मंगल के घर पर पड़ा है जो मंगल का शत्रु है मगर मंगल अपने घर से उठ कर सूर्य के घर खाना नं० 1 में चला गया है। मंगल के साथ सूर्य हो तो मंगल का फल सदा शुभ होगा और सूर्य भी मंगल के साथ उच्च होता है।

संक्षेप में हर एक ग्रह का असर इस तरह होगा :—

वृहस्पति :-

इस ग्रह की मियाद कुल 16 वर्ष होती है जिसमें पहले 8 साल का समय सदा शुभ असर का होता है इसलिए पहले 8 वर्ष के बाद शनि, वृहस्पति का प्रभाव मंदा कर देगा क्योंकि वृ० किसी से शत्रुता नहीं करता मगर पापी बुरा कर दिया करते हैं। लेकिन वह भी उस समय जब वह वृ० के घर या खाना नं० 2 पर आ जाए। लेकिन जब वृ० पापी ग्रह के घर पर जाए तो वृ० अपना शुभ ही फल रखेगा। पापी ग्रह या वह ग्रह जिसके घर पर जाकर वृ० बैठा है अपना फल जैसा चाहे दे दे। अब जैसा कि शनि अपने घर खाना नं० 10 में बैठा है और वृ० उसके घर में हैं अत: वृ० तो अपना सारा ही समय नेक फल देगा और शनि बुरा फल देगा जो वृ० के फल के बाद शुरू हो सकता है। यानी वृ० के 16 वर्ष के बाद 36 साल शनि की कुल मियाद में से बाकी 2 साल शनि अकेला प्रभाव कर सकता है।

हर ग्रह अपने समय के 1/2, 1/4 भाग में असर जाहिर कर दिया करता है। इस तरह पर शनि अपने 36 साल के 1/2 यानी 18 साल में अपना बुरा असर जाहिर करेगा जबकि वृ० पहले ही खत्म हो चुका हो, शनि का वृहस्पति के साथ बुरा असर तभी हो सकता है जब कि वृ० उसके साथ चल रहा हो तो वृ० था 16 वर्ष तक अत: शनि का मंदा असर वृ० के पहले 8 वर्ष के बाद 16 वर्ष तक हो सकता है।

सूर्य :-

इस ग्रह का अपना सारा समय अपने लिए तो उत्तम ही होगा लेकिन यह ग्रह अपने साथी शुक्र के फल को सारा समय मंदा ही करेगा और चन्द्र भी 25% सहायता और देगा।

चन्द्र :-

इस ग्रह से कोई ग्रह शत्रुता नहीं करता यह खुद चाहे दूसरों से शत्रुता करे तो करे इसलिए इस ग्रह का अपना ही फल वृ० के घर बैठे हुए उच्च होगा मगर यह खुद शुक्र और बुध दोनों से ही शत्रुता करता जाएगा।

शुक्र :-

सूर्य का समय 22 साल होता है और चन्द्र का समय 24 साल होता है। यह दोनों ही शुक्र के शत्रु हैं। शुक्र की मियाद 25 वर्ष है और सूर्य, शुक्र एक साथ बैठा होने के कारण से दोनों का असर एक साथ शुरू हुआ। सूर्य की शत्रुता 22 साल में खत्म हुई और चन्द्र की 25% बुरी नज़र भी 24 साल में जाकर हटी। अब शुक्र का समय केवल एक वर्ष बाकी रहा। उधर शुक्र के घर को राहु भी यानी खाना नं० 7 को खराब कर रहा है और शुक्र खुद उसके घर खाना नं० 12 में बैठा है, उसका दोस्त बुध चाहे उसके साथ है मगर वह अपने मित्र सूर्य के साथ आधा समय यानी 17 साल चुप है। न बुध, शुक्र से बिगाड़ता है न सूर्य से। आयु के 18 साल के बाद शुक्र की मदद शुरू कर सकता है मगर बुध की मियाद 34 साल में शुरू होती है इसलिए शुक्र का अपना समय तो पहले ही सारे का सारा 25 साल ही खराब हो गया। बुध की मदद या बुध की उच्च हालत से शुक्र केवल लड़कियां ही पैदा करेगा। अत: शुक्र अपने पहले ही दौरे में मदद न दे सकेगा। चाहे शुक्र और चन्द्र की शत्रुता हुई मगर दूसरे चक्र में शुक्र की जो मीन राशि खाना नं० 12 में उच्च होता है, अपने समय से उच्च फल देगा।

मंगल नेक :-

28 साल तक राहु की अन्दरुनी पापी चाल के कारण से संतान भाई-बन्धु पर बुरा असर ज़रूर होगा। दूसरी बातों में मगर मंगल का प्रभाव शुभ ही होगा।

मंगल बद :-

इस पापी ग्रह का मुँह पहले ही मंगल बद के बुर्ज खाना नं० 8 पर चौकोर ने बंद कर दिया है इसलिए यह ग्रह इस टेवे में किसी जगह भी बुरा असर न देगा। यह ग्रह सामुद्रिक में सिर्फ सूर्य की खराब हालत देखने के लिए रखा गया है यानी जब सूर्य नीच हो या सूर्य, मंगल के साथ न हो तो मंगल को मंगल बद कह जाते हैं। एक समय में सिर्फ एक ही नाम होगा चाहे मंगल नेक या मंगल बद। अगर हाथ में त्रिकोण जुदी ही पाई जाये तो चाहे यह ग्रह एक जुदा ग्रह ही गिना जाएगा।

बुध :-

इस ग्रह का समय 34 वर्ष होता है। यह ग्रह अपने साथी ग्रह शुक्र जिसकी मियाद 25 वर्ष है और सूर्य जिसकी मियाद 22 वर्ष है दोनों ही मदद करेगा मगर चन्द्र की 25% दृष्टि चन्द्र की मियाद 24 साल तक इस ग्रह के अपने असर के लिए बुरी ही होगी। यह चन्द्र से शत्रुता नहीं करेगा।

शनि :-

वृ० को इस कुण्डली के हिसाब से खराब करेगा। मगर खुद, उसके अपने असर में दखल देने के लिए कोई दूसरा ग्रह खाना नं० 4 में मौजूद नहीं है।

राहु :-

यह मस्त हाथी मंगल (जंगी ग्रह) की तलवार (अंकुश) के रौब से देखने में चुप होगा मगर दूर खड़ा होने के कारण मंगल से शत्रुता करेगा। मंगल, राहु एक साथ बैठे हों तो सिर पर तलवार यह अंकुश से हाथी चुप रहेगा। मगर जब तलवार या अंकुश हाथी से दूर हो और इसके 1% दृष्टि के सामने हो तो मस्त हाथी तलवार को खराब करने की कोशिश करेगा।

शुक्र के घर पड़ा होने के कारण से शुक्र की ईमारत को खराब करेगा मगर शुक्र का कुछ बिगाड़ नहीं सकता जो राहु के घर खाना नं० 12 में है1

केतु :-

इस पापी ग्रह से बचने के लिए मंगल अपने घर से पहले ही उठ कर खाना नं० 1 में चला गया है। इसलिए केतु सिर्फ मंगल के मान को ही खराब कर सकता है भाई-बन्धुओं को नहीं खराब कर सकता। यह ग्रह खाना नं० 11 को 5% दृष्टि से देखता है जो कि खाली है अत: यह कभी-कभी वृ० के खाना नं० 11 (भाग्य तथा लाभ आय) पर धब्बा मारता चला जाएगा।

खाली खाना :-

खाना नं० 4 :-

चन्द्र का घर है इस घर को खाना नं० 10 के ग्रह 100% दृष्टि पर देखते हैं। खाना नं० 10 का वृ० शुभ दृष्टि रखेगा। मगर शनि खुद चन्द्र के घर की दीवारों पर अपनी स्याही फेर फिरवा कर चला जाएगा।

खाना नं० 11 :-

खाना नं० 11 में केतु अपनी टांग फंसा सकता है।

खाना नं० 6 :-

खाना नं० 6 को खाना नं० 2 में बैठा हुआ चन्द्र 25% दृष्टि से देखता है। केतु का घर चन्द्र के लिए चन्द्र ग्रहण होता है। अब चन्द्र, केतु पर 25% दृष्टि करने के कारण से (48 वर्ष केतु का 1/4 हिस्सा) 12 साल के बाद चाँद ग्रहण में होगा। चन्द्र का संबंध धरती और माता से है।

खाना नं० 5-9 :-

दोनों खाली हैं उनका असर संतान धर्म-कर्म दूसरे ग्रहों से लेंगे।

खाना नं० 8 :-

मौत का घर :— इस घर को खाना नं० 12 के ग्रह 25% दृष्टि से देखते हैं। यह घर शनि तथा मंगल बद का है। इस कुण्डली में मंगल बद तो है ही नहीं बाकी रहा शनि और खाना नं० 12 के ग्रह जिनमें से शनि, शुक्र, तथा बुध का मित्र है, बाकी रहा सूर्य जिसका शत्रु शनि है। अब दोनों के आपसी मुकाबले में सूर्य ताकतवर होगा अत: मौत का साल चन्द्र की राशि और मौत का दिन सूर्य का दिन या रविवार होगा जबकि केतु का समय समाप्त हो चुका होगा।

जीवन का हाल :-

ग्रह कुण्डली और जन्म रेखा कुण्डली को मिला कर पढ़ने से मालूम होता है कि ऐसा व्यक्ति जंगी खून और शाही जंगी धन से शाहाना पोषण और खुद उसी कारोबार (साहूकारा से) शाही हालत का होगा, जिसे संसार में धन और राज्य करने का बहुत समय मिलेगा। संसार के मैदान में जंगल में मंगल करेगा। इसमें शक नहीं कि अकेला ही अपने भाग्य को चमकाने वाला होगा। शत्रु पीठ पीछे शत्रुता चाहे करे मगर चन्द्र उच्च के सामने आकर चुप हो जाएंगे। शत्रुता करने वाले व्यक्ति उसकी तलवार के सामने आकर मस्त हाथी की तरह अंकुश से डर कर धरती से गिरी चवन्नी उठा कर देने का काम करेंगे। शत्रु शत्रुता ज़रूर करते जाएंगे मगर इस व्यक्ति को भगवान् की मदद के कारण सदा बचाव होता जाएगा तथा छुपी शक्ति सदा उसका बचाव करेगी। रंग उसका साफ होगा जिसमें मंगल का लाल रंग साफ होगा जिसमें मंगल का लाल रंग चमकता होगा यानी रंग ऐसा होगा जैसा कि कुदरती एक लाल रंग कागज़ पर एक सफेद चाँदी का टुकड़ा लिटाया रखा हुआ हो। स्वभाव निष्पक्ष और मन की पूरी शांति वाला होगा। कलम, तलवार और बुद्धि के साथ लड़ाई के तरीकों का माहिर होगा। ज़ुबान और शरीर कभी बीमार न होंगे मगर 13-14 वर्ष के करीब आँखों की बीमारी और 28 साल में नज़र कमज़ोर मगर खराब न होगी। यानी ऐनक आदि क़ा प्रयोग राहु की छुपी शत्रुता की निशानी होगा। पापी ग्रह शनि के असर से शराब का प्रयोग वृ० के असर पर खराबी डालने का कारण होगा और मंगल के लाल रंग जैसे रंग में स्याही की झलक देगा। कुत्ते का शौक जो कुत्ता केतु का रंग-बिरंगा मंगल मगर लाल रंग के निशान उसके शरीर पर न होंगे, भाईयों से दु:खी चाहे उनकी बीमारी या गरीबी या कोई और कारण। भाई-बन्धु रिश्तेदारों ताये, चाचे, स्त्री जाति, खानदान, यार दोस्तों की मदद संतान आदि खाना नं० 3 के सब असरों में जिसका असर खाना नं० 11 पर भी 25% है खराबी का कारण हुआ करेगा। इस ग्रह का अपनी जाति पर कभी बुरा असर न होगा केवल सांसारिक दूसरों की ओर का दु:ख उसके लाभ भाग्य और आय पर धब्बा देगा। यह ग्रह 48 साल की आयु तक असर करता चला जायेगा इस पापी ग्रह का सब पाप उसके संबंधित साथियों पर मार करेगा। मगर राहु से (काले रंग) हाथी के रूप से मिलती हुई या नीली चीज़ें अंदरुनी तौर पर उसी मंगल के दूसरे असर नज़र और निष्पक्ष स्वभाव में विष का निशान होंगे। शनि जो वृहस्पति के बिल्कुल साथ बैठा है अपनी काले रंग की चीज़ों से पानी में काले रंग की मछली का समय करता रहेगा यानी बिल्कुल साथ मिली हुई काले रंग की चीज़ काले रंग का आदमी जब बिल्कुल साथ घर आएगा हानि देगा और सोने का मुँह काला करने का कारण होगा।

संक्षेप में सफेद रंग (दही शुक्र का रंग), केतु से बचने के लिए भाई-बन्धुओं के दुःख हटाएगा। दूध या पानी के सफेद रंग की चीज़ें खुद अपनी कमाई के लिए बरकत के लिए चन्द्र और वृहस्पति के घर का असर धन मान खाना नं० 2 भाग्य और अन्य दूसरे व्यक्तियों के लिए खाना नं० 11 शुभ होगा। दाएँ हाथ पर अंगूठी में नीलम राहु (22 साल की आयु तक अपनी छुपी शत्रुता से बचाएगी), शराब और आँख की होशियारी दुष्ट भाग्यवान से दूर रहने पर वृहस्पति का उत्तम फल होगा। मंगल नेक या उत्तम फल गंदमी रंग की चीज़ें जो सूर्य का रंग है पैदा करेगी। सूर्य की उपासना या मित्रता से राजदरबार में उत्तम फल मिलेगा और सूर्य जो शुक्र को नीच करता है तमाम गृहस्थ स्त्री धन आराम बुरी ओर का खर्चा यानी खाना नं० 12 का उत्तम फल होगा। घर में दूध के होते हुए चन्द्र भी शुक्र को माफ करता रहेगा। चन्द्र उच्च की निशानी मकान के लिए ज़मीन खरीदने के दिन से होगी जिससे मालूम होगा कि अब चन्द्र, शुक्र से शत्रुता न करेगा। बुध से चन्द्र ने शत्रुता छोड़ने का समय 34 साल की आयु से पूरी तसल्ली का होगा। बुध वैसे तो अपने आप चन्द्र से बचा लेगा मगर 34 से वह अपना (बुध) पूरा शुभ असर देगा। शनि 36 साल के बाद यानी 37 साल से शुभ फल देगा। वैसे तो वह 16 साल के बाद वृ० को माफ कर चुका है। इससे टेवे में शुक्र (दूसरी बार) चन्द्र, सूर्य, मंगल उत्तम हैं। धन का सुख तथा खर्च, बुध व्यापार का नाश करता है क्योंकि खाना नं० 12 में पड़ा है। इस ग्रह का उपाय दुर्गा पाठ, तोते को चूरी सफेद, कबूतर को मूंगी, बुध के दिन शुभ रहेगी और बर्बाद होने वाला धन शुक्र के काम आएगा। 34 साल के बाद बुध, सूर्य का उत्तम फल शुरू होगा, 36 के बाद शनि मदद पर आ जाएगा। 42 के बाद राहु की मदद मिल जाएगी। 48 साल के बाद केतु शुभ होगा।

शुक्र जब उच्च होगा अपनी मियाद 25 साल की जगह 34 साल अति उत्तम फल देगा। लड़का पैदा होने के दिन से सूर्य संसार में चमकेगा। असल में सूर्य का समय बच्चे की माता के गर्भ में आने के दिन से ही गिनते हैं और 22 साल तक चमकता रहेगा। ज़मीन खरीदने की तारीख से चन्द्र उच्च 24 साल तक, मकान बनाने के दिन से शनि उच्च 36 साल तक। घर में काले कुत्ते की मौत या कोई और काले रंग की चीज़ गुम हो जाने के दिन से 42-43 से राहु उत्तम होगा और उसी तरह से दो रंगी चीज़, रंग-बिरंगा कुत्ता जो लाल रंग न हो आदि के चले जाने के समय से केतु 48-49 से उतने ही साल उत्तम होगा। कमाई में हराम का पैसा न होगा, साधु सादा न्यायप्रिय, सफेद पोश, बड़ों की सेवा करने वाला, इतवार या सोमवार को शुरू किए गए काम अति उत्तम और सूर्य की मदद से गंदमी रंग से हर प्रकार की शांति मिलेगी।

मोटी-मोटी बातें :-

बचपन उत्तम या जवानी (34 साला) आयु आराम देगी। बुढ़ापा अच्छा रहेगा, 13-14 वर्ष के करीब माता सुख नाश होगा। 15-16 वर्ष के करीब पिता का सुख नाश होगा। माता-पिता उसकी स्त्री का सुख न देख सकेंगे। 18 साल की करीब नौकरी शुरू। 21 साल के करीब शादी, 28 साल तक स्त्री, संतान सुख शून्य, 24-26 साल की आयु में पैदा हुई लड़की बुध का समय बताएगी 34-35 साल की आयु में पैदा हुआ लड़का (बुध) सूर्य का उत्तम फल (तरक्की दिलवाएगा), 3-31 साल के करीब की स्त्री शुक्र उच्च का फल देगी (दूसरी शादी), 37-39 साल के करीब मकान शनि उच्च फल देगा (तरक्की होगी), 33 साल में बिल्कुल बनने के लिए तैयार मगर बंद हवा और उसी दिन से 49 साल तक सूर्य राजदरबार से संबंध होगा। 51 साल की आयु के करीब लड़का नौकरी पर लगेगा। उसके बाद संन्यास या परोपकार का संबंध होगा। आयु 93 साल होगी।

मिश्रित फल :-

धन की हालत जिस साल की मासिक आय देखनी हो उस साल तक आयु में नौकरी शुरू करने का समय यानी 18 साल घटाएं। बाकी को साढ़े सात से गुणा करें। जवाब औसत आमदन होगा। 37 साल की आयु में से 18 घटाएं तो 19 को साढ़े सात से गुणा किया तो 142 या 140-145 के करीब मासिक आय होगी। यह असूल मंगल का सारा समय 28 साल तक होगा। यानी 21 रुपये मासिक तक होगा। 34 साल से पहले की आयु तक केवल माया का राखा होगा यानी जो कमाया दूसरों पर लगाया या किसी दूसरी ओर लग गया। 34 से 42 तक आय अच्छी होगी मगर मकान विवाह शादी तथा गृहस्थ के शुभ कामों में लगेगी। 43 से 51 में फिर उतना ही जमा हो जायेगा जितना पहले खर्च किया था। कर्ज़ा कभी न होगा। समय होने पर 3 में से 2 रुपये तो अवश्य मिल जाएंगे। इसका आय मे कोई संबंध न होगा।

संतान :-

चार लड़के दो लड़कियां आखिरी दम तक साथ, संतान नेक सुख देने वाली होंगी। पहली स्त्री की लड़की व दूसरी का पहला लड़का भाग्य के सहायक होंगे।

सफ़र :-

चन्द्र के सूर्य के साथ संबंध से सफ़र ज़रूर होगा मगर दूसरे देश का नहीं। सफ़र का परिणाम शुभ रहेगा।

भाई-बन्धु :-

भाई 42 साल से उत्तम हालत में होगा मगर इस हाथ वाले को अपने भाई से कोई लाभ न होगा। मगर भाई को ज़रूर लाभ होता रहे। मदद के लिए सभी जाहिर होंगे मगर मदद अपनी ही जान की होगी। न ताया, न चाचा, न मामा, न ससुराल सिर्फ अपना और मालिक का भरोसा होगा।

खर्च-बचत :-

खर्च गिन नहीं सकता। रुपये में 11 आने खर्च सिर्फ 5 आने बचत। खर्च बढ़ा है मगर उसे घटा नहीं सकता यदि घटा दें तो आय घटे। लड़कियों के भाग्य के लिए यदि खर्च बढ़े तो आय अपने आप बढ़ेगी। अपने लिए चाहे पेट का सर्फा करे मगर दूसरों के लिए सेवा भाव पर खर्च अधिक और खुद करें। दूसरों को दिया धन वापस ज़रूर मिलेगा। साहूकारा उत्तम मगर खैरायत खाना यानी सूद बिना दिया धन कभी वापस न होगा।

खुशी-ग़मी :-

19 रेखाएँ (दाएँ हाथ से) धर्मात्मा, राजदरबार में मान, दोनों हाथों पर कुल 43 निशान होने के कारण 32 ग़मी के अक्षर के मुकाबले में 43 खुशी होगी।

स्त्री संबंध :- **28 के बाद स्त्री अपनी आयु से कम से कम 59-60 साल तक निभायेगी।**

धर्म-कर्म :-

मंगल अपने घर है। इसलिए धर्म के विरुद्ध तो यह हो ही नहीं सकता। इस हाथ का मान और कद्र तो है कि कीमती लाल की तरह से सूर्य की तरह चमकने पर, वर्ना मंगल बद होगा। अत: यह हाथ धर्म-कर्म का देवता होगा जो साधारण कहे खाली न जाये, ज़रूर सच हो। यह व्यक्ति कामदेव से दूर और मस्तिष्क की शक्ति का स्वामी होगा। अपने आप पर काबू रखेगा। नेक काम में शक्ति 3-3 और बुरे में 2-0 होगी। यानी बदी की बजाय अच्छी की ओर अधिक होगा। इसका मित्र वही हो सकता है या इसका लाभ वही उठा सकता है जो अन्दर-बाहर से साफ दिल होगा। चालाक की चालाकी एकदम ताड़ लेगा या चालाक उससे हानि पाएगा और साफ मन वाला लाभ पाएगा।

जायदाद जद्दी :-

हथेली गहरी होने के कारण आय खर्च के लिए कर्ज़ा न उठाएगा। खुद कमा कर खर्च करेगा। 9-2 शत्रु (बुरे दिन, खर्च) और 1-4 (बचत, अच्छे दिन) मित्र होंगे या दोनों का अंतर दो गुना जायदाद जद्दी में करेगा। यह बचत सारा खर्चा निकाल कर होगी।

जीवन :- **एक चक्कर से राजा या हाकिम होने की दलील है और एक शंख से सदा आराम पाएगा और 8 सिदफ से सदा बड़ा मान वाला जीवन पाये और तर्जनी, मध्यमा बराबर होने के कारण प्रसिद्ध जीवन का स्वामी होगा। भाग्य के दरिया में यदि यह हाथ संसार में सूर्य नहीं तो पूरा चन्द्र तो ज़रूर है। अंगूठा बाहर को झुकने के कारण निरन्तर नर्म स्वभाव होगा और जब हानि होगी तो नर्म स्वभाव से होगी। मामूली उकसाहट से धन छोड़ देगा और मामूली मिन्नत से माना जाना उसका स्वभाव होगा, आखिरी दिन शनि की रात होगी जो अपने गृहस्थी में होगी। रविवार का सूर्य न चढ़ा होगा। सब से राम-राम कर जय हरि कर जाएगा। आखिरी समय ज़ुबान बंद न होगी। विचार शुद्ध होंगे। सूर्य का उत्तम दिन होगा दूसरा दरबार होगा। छुपता सूर्य संसार के लिए जंगल में मंगल की लाली को छोड़ जाएगा यानी गृहस्थी कुटुम्बी सब प्रसन्नचित्त होंगे।**

उदाहरण नं० 2

ग्रहों की मियादें :-

वृहस्पति	16 वर्ष
सूर्य	22 वर्ष
चन्द्र	24 वर्ष
शुक्र	25 वर्ष
मंगल	28 वर्ष

मंगल	31 वर्ष दूसरों की मदद के लिए।
बुध	34 वर्ष
शनि	18 वर्ष माली हालत माता-पिता।
शनि	19 वर्ष शादी।
शनि	27 वर्ष माता-पिता की तथा अपनी आपसी माली हालत।
शनि	33 वर्ष सारा रोज़गार या दीगर जायदादी सवाल।
शनि	36 वर्ष शनि की अपनी जाती असर की बातों के फैसले।
शनि	39 वर्ष अपने एजेंटों राहु, केतु की मदद या विरोध।
राहु	42-45 वर्ष से राहु और केतु की मुश्तरका हालत।
केतु	48-49 वर्ष वृहस्पति खड़ा हो जाएगा।

मंगल खाना नं० 1 :-

मंगल का संबंध होता है अपने खून से या अपने भाई के खून से और मियाद अमूमन 28 वर्ष होती है। खाना नं० 1 की टाँगें होती है खाना नं० 11 में और आँखें खाना नं० 8 में, खाना नं० 8 खाली है और आँखें तो इसकी हैं ही नहीं। अत: इस आदमी को रास्ता दिखाना किसी के हाथ में नहीं या खुद ही अपनी आँखों से देख कर चलने वाला है और स्वयं ही अपने लिए सब कुछ करना पड़ेगा। अब रहा प्रश्न टाँगों का या दूसरों की मदद से चलने का ढंग तो इसके लिए अगर किसी व्यक्ति की दो टाँगें मान ली जाएं तो इसकी तीन टाँगें होंगी। अब तीन टाँगों में सूर्य, शनि के इकट्ठे होने से उनके आपसी झगड़े से शुक्र मारा जाएगा या उसकी स्त्री सूर्य, शनि की उम्र तक या शुक्र की अपनी मियाद में बर्बाद होंगी। टाँगें भी लड़खड़ा रही है अब उसकी आयु है 36 साल यानी उसकी पहली स्त्री को गुजरे 10-12 साल हो चुके हैं। मंगल मदद करता है अपने खून के रिश्तेदारों को 28 साल की आयु में और दूसरों की मदद है 31 साल की आयु में। सूर्य, शनि के इकट्ठे होने में दोनों ही इकट्ठे हो रहे हैं। अत: दोनों सिफ़र हुए अत: 28 से 31 साल तक दूसरों की ओर से कोई मदद न हुई। लेकिन जो शुक्र नष्ट हुआ था 25 में वह मंगल के 31 साल की आयु में फिर से होना चाहिए या दूसरी शादी को हुए 5 वर्ष हो गये। मंगल लड़ाई के मैदान का स्वामी है लेकिन इस टेवे में मंगल की न आँखें हैं और न टाँगें अत: जंगी बातों का तो प्रश्न ही नहीं उठता होगा।

राहु, बुध खाना नं० 10, केतु खाना नं० 4 :-

खाना नं० 4 का केतु कुएँ में, न चन्द्र अच्छा होगा न केतु अच्छा। संतान देर से होगी और राहु की मियाद मगर बुध के बाद नर संतान के बारे में कहा नहीं जा सकता। लेकिन इस समय संतान हो तो छोटा बच्चा दो या तीन साल तक का हो सकता है। शाम के समय पर माता की ओर जाना अमूमन मंदा होगा (वृ० खुली हवा, केतु बंधी हवा)। खाना नं० 1 के राहु, बुध अमूमन शनि की हैसियत पर चलेंगे। शनि खाना नं० 11 का धर्मात्मा है। मगर सूर्य से टकराव के कारण मारा जा रहा है या 34 साल की आयु से 36 साल की आयु तक राहु, बुध का समय शनि की स्याही या सूर्य की आग़ हरेक चीज़ को जला कर राख कर देगी। सिर्फ धुआँ (राहु) उठ रहा है। शनि की लकड़ी जल रही है। सूर्य की आग़ भड़क रही है या 34 से 38 साल की आयु तक समय मंदे धुआँ का जवाब देगा। किसी की अमानत किसी की ज़मानत, ससुराल से हमदर्दी की चाह पानी में बुलबुले होंगे। शनि की कारोबार से कुछ मिलेगा नहीं खास अच्छा समय नहीं।

चन्द्र खाना नं० 5, खाना नं० 9 खाली :-

चन्द्र चलता घर 4 ही है क्योंकि बुध, चन्द्र आपस में घोर शत्रु हैं। अत: 4 घर चलने वाले घोड़े की हिम्मत बुध (दिमाग़) राहु (ससुर) के विचारों की शक्ति चन्द्र (दिल) के विरुद्ध होगी या ऐसे व्यक्ति के दिमाग़ी कष्ट 42 वर्ष तक चलेगी यानी सिर दर्द आदि चलेगा।

वृहस्पति खाना नं० 6 तथा खाना नं० 12 खाली :-

खाली हवा पाताल में चल रही है। वह किसी काम की नहीं या सोना, गुरु, पिता तीनों से कोई लाभ न होगा। यदि कुछ होगा तो दु:ख का कारण हो सकते हैं यानी सोने की चीज़ें गुम होगी। सांस का कष्ट होगा मगर दमे की बीमारी न होगी। यानी ऐसा व्यक्ति डर के मारे आगे भागता जाये और आराम से सांस भी न ले।

खाना नं० 11 सूर्य, शुक्र, शनि, खाना नं० 3 खाली :-

स्त्री सूर्य के समय में या दिन दहाड़े आग़ में जलती हुई मिट्टी होगी। मगर रात के समय की मिट्टी स्याह मूर्ति होती हुई भी लक्ष्मी अवतार और संसार के शुरू की स्वामी होगी। यानी बच्चे बनाते जाएगी, जो स्त्री अपने ऐश में लग जाएगी। जिस समय

उसको मीठा गुड़ (सूर्य) मिलेगा, दुखिया ही होगी यदि नमक खाएगी तो ठीक रहेगी। इससे उसको शारीरिक तथा मानसिक आराम मिलेगा। खाना नं० 11 आय का घर है जिसमें सूर्य, शनि तथा शुक्र बैठे हैं। सूर्य, शनि चलाने के लिए बुध काम देगा। अब आयु 36 वर्ष की हो गई है। कारोबार चमड़े के सामान (शनि) में गुज़र रही है। सूर्य, शनि का झगड़ा—स्त्री मर चुकी है। आय जमा-घटा सब बराबर कर ली। 37-39 साल की आयु शनि की धर्म अवस्था अपना खुद का फल देने का समय है। अत: शनि के कारोबार (लोहा, लकड़ी, चमड़ा तथा हर प्रकार के वार्निश, रंग, ईंट, पत्थर, सिमेंट आदि) का व्यापार सहायक होगा। 36 साल की आयु में जो कुछ बचा होगा उसका उत्तर शून्य होगा। दूसरे व्यक्ति के साथ व्यवहार 39 साल की आयु से कर लिया जाए तो कोई हानि न होगी। लेकिन लड़कियों को कुछ देकर उनकी आशीश लेना मदद देगा। स्त्री के गहने 39 साल की आयु तक गुम हो जाए बाकी उसकी सिरदर्दी तो आगे चलती ही रहेगी, जिसकी मियाद 42 साल की आयु तक गिनी है। स्त्री के तकलीफ और उसके दिल की परेशानी को दूर करने के लिए ठीक होगा कि वह मीठा खाना छोड़ दे खासकर गुड़ को। वर्तमान काम धंधा ठीक रहेगा और कोई बंधन नहीं। जहाँ जी चाहे ऐश करे परिणाम उत्तम होगा।

उदाहरण 3

जन्म दिन : 19-7-98 संवत
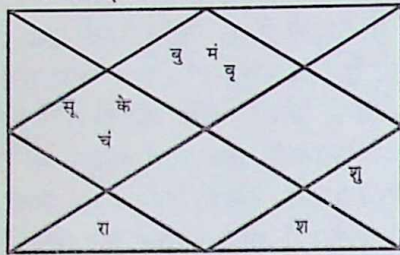
शनि खाना नं० 5 1951 का वर्ष फल
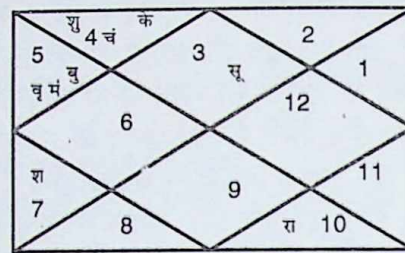
मकान बनाए : संतान नहीं है।

माता नहीं है : चन्द्र से

संतान नहीं है : केतु से

चन्द्र, केतु आपस में कट गये। अत: सूर्य सिर्फ राजदरबार ही रह गया। चाहे केतु धर्म स्थान में है लेकिन दबा हुआ है। टेवे वाले को कुत्ते से घृणा है अगर कुत्ता मारे तो टेवे वाले की टांग आदि टूट जाये। इस साल कुत्ता लाल रंग का (सूर्य, केतु) रखा है। पूजा-पाठ नहीं है क्योंकि राहु खाना नं० 8 है। अत: स्वयं टेवे वाला धर्म स्थान खाना नं० 2 में नहीं जा सकता या नहीं जाता है। अत: राहु खाना नं० 9 में जाएगा और खाना नं० 9 का फल धर्म हीन करेगा। 4 साल की आयु में देसी कैदी हुआ। शनि खाना नं० 5 का है मगर साँप बिना दाँत के शराब नहीं पीता हालांकि शराब घर में हर समय रही है अत: शनि तो संतान के लिए मंदा नहीं मगर केतु (संतान), चन्द्र (माता) खुद ही मंदे हैं। नर संतान 52 साल में होगी। हालांकि स्त्री के 15 साल से बच्चा नहीं हुआ क्योंकि मंगल, वृहस्पति के साथ बुध है। 52 साल की आयु में मंगल, बुध, वृहस्पति खाना नं० 4 में हैं बुध राजयोग है। यदि लड़की का रिश्ता किसी फौजी ऑफिसर के साथ हो जाये तो टेवे वाले की तरक्की भी फौजी विभाग में ही होगी।. सूर्य, चन्द्र, केतु खाना नं० 9 में हैं वह भी उच्च है। समुद्र के किनारे तक जा सकता है। उसके पार देश में नहीं जा सकता, कोई स्त्री (शुक्र खाना नं० 3) समुद्र पार जाने के लिए कर रही है संतान को जीवित रखने के लिए कुछ बादाम मंदिर में ले जाएं। मंदिर में रख कर उनमें से आधे घर ले आए और घर में रखें ऐसा करने से शनि खाना नं० 5 को जो बच्चे खाने वाला साँप है, कसम हो जाएगी ताकि वह बच्चे न खाए। टेवे वाले की लड़कियों के टेवे इस तरह के होंगे जिनसे पता चल सकता है कि उनका भाई कब होने वाला है।

जन्म दिन 16-3-1930 जन्म कुण्डली पहली लड़की

जन्म दिन 16-6-1932 जन्म कुण्डली दूसरी लड़की

उदाहरण नं० 4

जन्म दिन 12-12-1885

पिता की आयु 19 साल की आयु में समाप्त। चन्द्र, शनि खाना नं० 9 मकान दो उजड़े हुए। केतु खाना नं० 5 से 8 नर संतान जीवित, सूर्य खाना नं० 3 ***आखिरी आयु में नौकरी ठीक, नाक छेदन से चंबल को आराम।*** बाप कहता था कि मोटरों का मालिक मैं हूँ मगर विषय कह रहा था कि मोटरों का मालिक लड़का हे। यानी ऐसा लड़का जिसके माता के पेट में आने के समय से पिता के पास मोटरों की कीमत के बराबर धन दरिया की तरह आ गया। बाप उस रात यानी (हमल) की पहली रात एक मामूली पेंशन बांटने वाला मामूली सरकारी नौकर था। गर्भ के दिन के बाद बाप ने नौकरी छोड़ दी ठेकेदारी कर ली और तीन-चार मोटरें भी

खरीद लीं। जिनमें से सबसे छोटी 65 रुपये की थी। केसर का तिलक लगाना सहायक होगा। मोटर पिता को लड़के के जन्म के बाद मिली।

जन्म दिन 16-3-1930
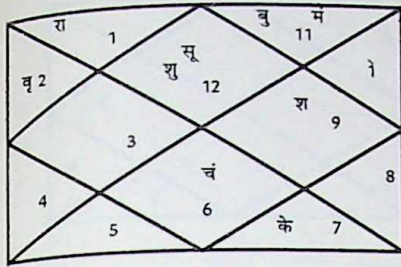
1952 का वर्ष फल
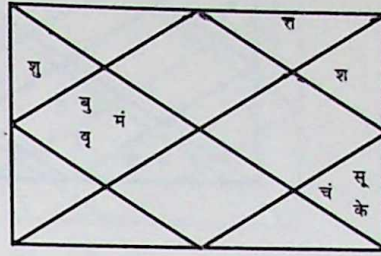
उदाहरण 5

क्या चक्की जन्म से नहीं है, जब तक चक्की कायम रहे किला कायम रहे। जब लड़का पेट में आया तो ताबीज़ लिया। लड़का पैदा होने के बाद ताबीज़ लिया गया। वृहस्पति खुद बुध (ताबीज़) की हालत में बोल जाएगा (बुध खाना नं० 2) पतंग की डोर (बुध) बहुत पुरानी नवार के गोल बंडल की जगह 600 मील लम्बी (600 गज नहीं) जो घर में मौजूद है। स्त्री पति को पतंग की डोर का सहारा दे रही है। डोर को डोर की शक्ल में ना रखा जाए।

उदाहरण नं० 6

जिस समय यह खानदान के इलाके में जाएगा तो बाप को तरक्की मिलेगी। चन्द्र खाना नं० 6, तथा बुध खाना नं० 8 माता के लिए मंदा। चन्द्र खाना नं० 6 बच्चे के लिए खरगोश (नर का बच्चा) केतु की चीज़ है घर में रखा जाए खरगोश मरते जाएंगे। 48 साल की आयु तक मदद होगी। बुध खाना नं० 8 का दिया उपाय किया जाये। शनि खाना नं० 11 आयु लम्बी है। बच्चे की माँ को बच्चे की 8 साल की आयु तक बीमारी रहेगी। खरगोश रखने से खरगोश मरते जाएंगे और माँ को बीमारियों से आराम रहेगा।

जन्म दिन 16-6-1932
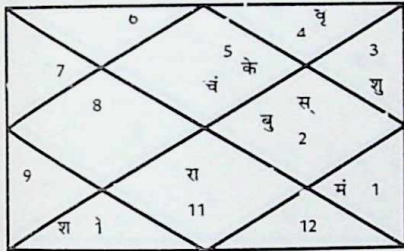
जन्म दिन 12-12-1885
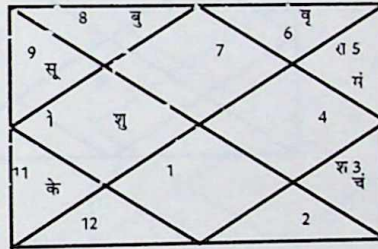
उदाहरणः
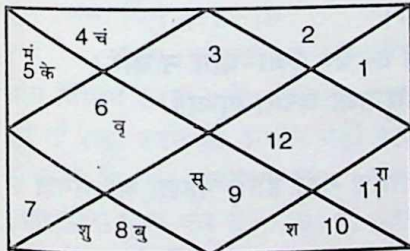
उदाहरणः
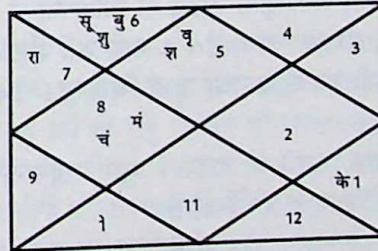
उदारण नं० 7

जन्म दिन 29-3-1929

माँ-बाप का कुछ पता नहीं। ऐसा व्यक्ति अपने माता-पिता के पास नहीं रह सकता किसी का दत्तक पुत्र हो सकता है।

उदाहरण नं० 8

जन्म दिन 29.3.1929
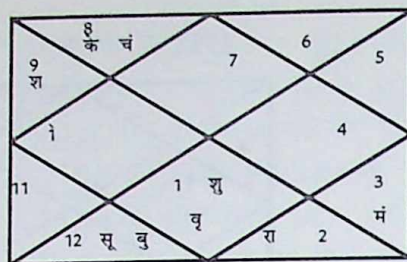
हस्त रेखा की जन्म कुण्डली :-

बड़ा भाई है। दूसरी शादी के समय बड़ा भाई अधिक बीमार हो (मंगल खाना नं० 4), मामा खानदान बर्बाद, बहन को दमा है। केतु खाना नं० 9 हो। चाँदी का चकला संगमरमर का चकला है। (माता के पास था)। बुध गोल चक्कर, शनि संगमरमर = चकला। 11 और 21 साल की आयु में पिता की मौत, 11 साल की आयु में पिता की मृत्यु। जिस्म पर सोना कायम करना चाहिए संगमरमर का चकला जिस जगह भी हो वहाँ से लेना चाहिए। यदि घर में मौजूद हों तो यदि गुम हो गया हो या रह गया हो तो नया चकला लेना चाहिए। जब तक संगमरमर के चकले पर रोटी बनवा कर खाई जाये तो दमे की तकलीफ दूर होगी।

मंगल खाना नं० 4 के पास दोनाली बंदूक होती है और बड़े भाई के ऊपर अचानक चल जाती है। होटल का काम मुबारक जब तक माँ पास न रहे (चन्द्र, शुक्र मुश्तरका खाना नं० 2), बुध खाना नं० 4 (रेत) नीचे-नीचे चल कर अपने घर खाना नं० 3 में चला जाता है। बीमारी खाना नं० 8 से शुरू होती है और खाना नं० 2 के द्वारा खाना नं० 4 में जाती है।

शनि पत्थर या संगमरमर, चन्द्र-चाँदी, शुक्र-रोटी पकाने के लिए, बुध गोल चक्कर = संगमरमर का चकला।

1-1-1950 को आयु 41
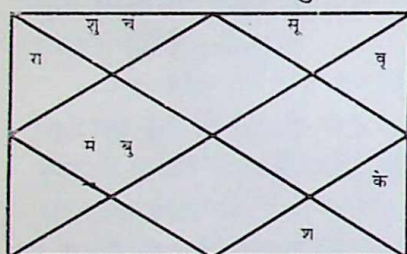
42 साल आयु
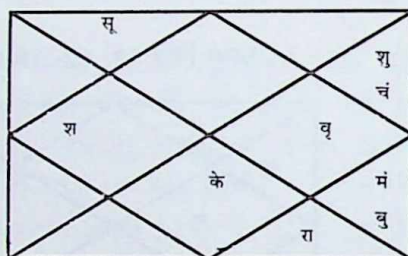
उदाहरण नं० 9

जन्म दिन 23-7-22

सूर्य खाना नं० 12, शनि खाना नं० 2, यदि स्त्री शराब पिए तो सूर्य, शनि टकराएंगे। साधु, चोर, साँप, ससुराल जा रहा हो। लोहे का ट्रंक हो और सोना ट्रंक में हो और साधु ट्रंक उठाए तो कठिनता से ही ट्रंक पहुँचेगा।

उपाय : 43 दिन मंदिर में बादाम ज़रूरी, मंगल खाना नं० 4 मामे की संतान है। ससुराल के घर पूजा-पाठ न करें। ससुराल घर चालाकी से रहे तो ठीक नहीं तो हर रोज़ नया जूता मिलेगा। 34 साल की आयु तक बचत शून्य।

उदाहरण नं० 10 जन्म दिन 11-1-1924

वृहस्पति खाना नं० 7 बाप भी दत्तक, बाबा भी दत्तक। मूंगा रखने से बाप के साथ लड़ाई नहीं होगी पहला घर मंगल से जागे। संतान जितनी दो पुश्तों में नहीं मिली टेवे वाले को मिलेगी।

जन्म दिन 23.7.1922
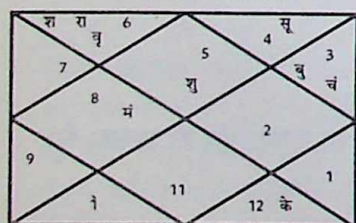
जन्म दिन 11.1.1924
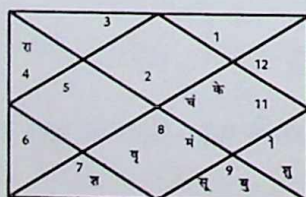
उदाहरण नं० 11

39 वां वर्षफल
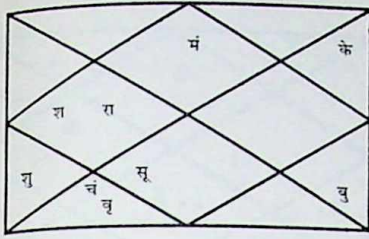
38 वां वर्षफल
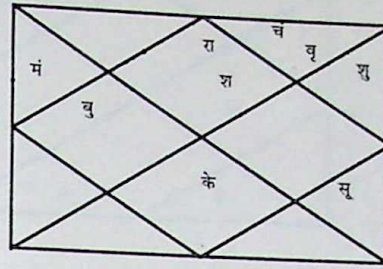
जन्म कुण्डली :पैर की दो-तीन साल की छपाकी रोकने के लिए बीमारी के बीच में तीन दिन बाहर के कुत्ते को माँस देने से बीमारी दूर होगी।

उदाहरण नं० 12

8 सितम्बर 1915

33 वां वर्षफल

लड़का दो साल की आयु का उस समय है। तपेदिक अपने बुरे चालचलन से हासिल किया।

उदाहरण नं० 13

जन्म दिन 30-12-1985

मकान 39 वर्ष में बनाया। ससुर जीवित है। अत: घर के पश्चिम की ओर नं० 8 राहु ने दोबारा कुरेद डाली और खुद ससुर ने पश्चिमी दीवार तोड़ कर बनवाई, ससुर ने खुद भूमि दी थी, मकान सरकार ने ले लिया, लड़के पेट चाक करके निकाले (सूर्य, शुक्र)।

जन्म कुण्डली
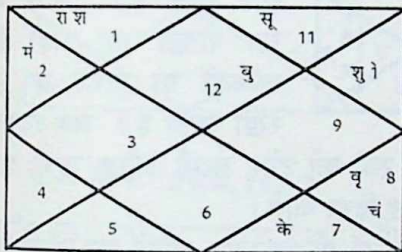
वर्ष फल 31
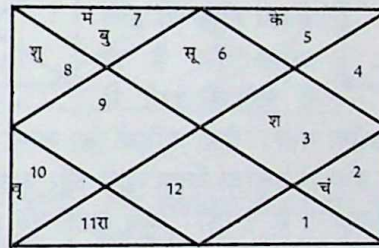
उदाहरण नं० 14

जन्म दिन 4-6-18

राहु, कोयले या खोटा पैसा दरिया में डालने से आँखों को लाभ होगा। पहले टेवे वाले का लड़का कुछ दिन अंधा हो गया दिमाग़ (राहु) में अचानक विचार आया और अंधा हुआ। डेलों का मालिक चन्द्र और नज़र का मालिक शनि, राहु देखे शनि को तो राहु, शनि के अधीन नहीं होगा। शनि देखे राहु को तो राहु अधीन हो जाएगा। जहाँ पानी आ जाये तो राहु का भूचाल ठंडा हो जाता है और रुक जाता है। अगर चन्द्र को जिस जगह से हटाया जाये यानी राहु की मियाद 42 दिन के वास्ते पानी न पिये और हुक्का पीना शुरू कर दे। 18-12-49 को नज़र ठीक होगी। 18 साल से टाँग पर फुलवहरी या बीमारी सारी आयु रहेगी। नानके घर कोई में बाकी है (केतु खाना नं० 9) नहीं। केतु खाना नं० 9, सूर्य, बुध, वृहस्पति खाना नं० 1, खाना नं० 4 खाली राजयोग। लेकिन क्या सिर पर पगड़ी जन्म दिन से नहीं बांधी। पगड़ी जन्म दिन से ही नहीं रखी। शुक्र, केतु खाना नं० 9 में संतान रहित। लेकिन यदि खाना नं० 5 अच्छा हो जाये तो नहीं। 33 साल की आयु में संतान पैदा हो चुकी है। स्त्री दुखिया रहेगी। शुक्र खाना नं० 9 में, राहु खाना नं० 3 और चन्द्र खाना नं० 5 से तंग हो रहा है। शुक्र, केतु कहीं भी इकट्ठे लावल्दी अगर खाना नं० 5 मंदा हो जाए मगर इस टेवे में चन्द्र है खाना नं० 5 में तो संतान चमकती है। यदि शादी न करे तो आँखों से अंधा हो जायेगा।

8 सितम्बर 1915
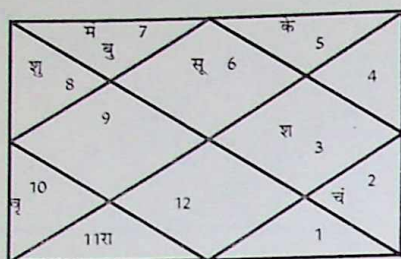
33 वर्ष फल
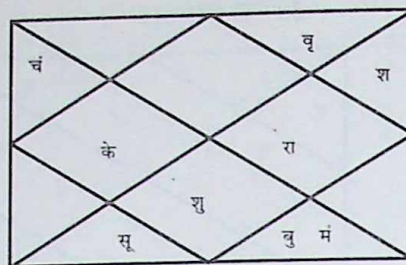
उदहारण नं० 15

जन्म दिन 1943 संवत् कार्तिक

चाचे दो भाई, आप अकेले भाई। मंगल खाना नं० 6 जिस दिन से शादी हुई ससुराल गर्क हुए, शनि खाना नं० 2।

दूसरी शादी— सूर्य, शुक्र दो लड़के, क्या स्त्री को खून की बीमारी तो नहीं हुई, खून लगातार तो नहीं आता। सोने की तीन चूड़ियां बेची तो नहीं, पाँच साल पहले चूड़ियां बनवाई तो नहीं गई ?

48/49 साल की आयु में चूड़ियों ने बोलना था। मकान में फिसल कर गिरी और चूड़ियों को डॉक्टर ने कैंची से काटा चूड़ियों में ज़्यादा ताँबा (सूर्य) डाल दिया गया, वृहस्पति (सोना), सूर्य, शुक्र (ताँबा), स्त्री की तीन चूड़ियां, जब लड़का पैदा हुआ तो स्त्री बीमार होगी।

उदाहरण 30.12.1985
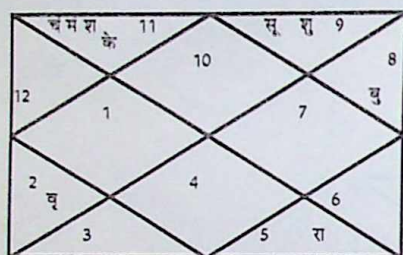
भादों 1953
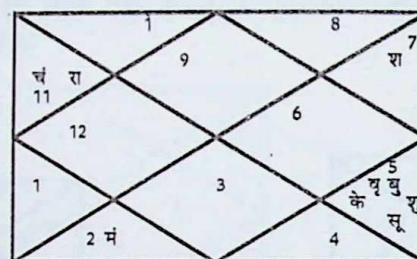
दो नर ग्रहों में शुक्र (लौंडी) कैद हो गया। मंगल, बुध साथ है। जेवर का बक्सा लोहे या ताँबे या पीतल का नहीं है। बक्सा ऐसा है तो लकड़ी या पत्थर का है। ये चूड़ियां इसी में रखी जाती है। जब लड़का पैदा हुआ था तो उस समय बक्सा खरीदा गया। ऐसी चूड़ियों का असर बुरा माना है। कभी स्त्री की टाँग, कभी आँख, कभी कान पकड़ती है। इन चूड़ियों को स्त्री के हाथ से उतरवा लिया जाये और उसके हाथ पर धागा डाल दिया जाये।

क्या आँखों का आप्रेशन करवाना है ? हाँ। बुध खाना नं० 8 यदि 6 बच्चे कायम हों तो आप्रेशन आँखों का ठीक नहीं होगा। शुक्र खाना नं० 6 बच्चों की गिनती 6 तक करेगा। यदि खाना नं० 2 से वृहस्पति मिलेगा। वर्षफल में मिल रहा है। बच्चे इस समय 5 है अत: आप्रेशन करवाना ठीक रहेगा। स्त्री के हाथ कनक (गेहूँ) या गुड़, सोना, चने की दाल हाथ लगवा कर मंदिर में रखने के बाद आप्रेशन ठीक रहेगा।

उदाहरण 4.6.1918
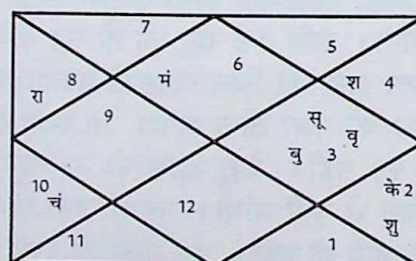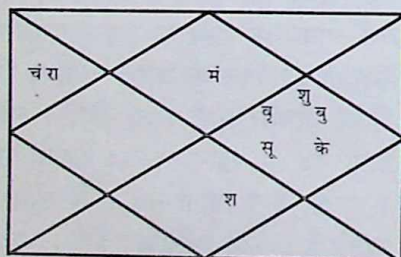
उदाहरण नं० 16 जन्म दिन 2-12-36

फकीर की कुत्तिया शहतूत खाने बाहर गई। मगर हवा न चलने के कारण शहतूत न गिरे वह थक कर वापस घर आ गई, मगर घर पर मालिक रोटी खा-पीकर सो गये और कुत्तिया को भूखा रहना पड़ा। ऐसे व्यक्ति का जीवन बिल्कुल ऐसा ही होगा।

64 वर्ष फल
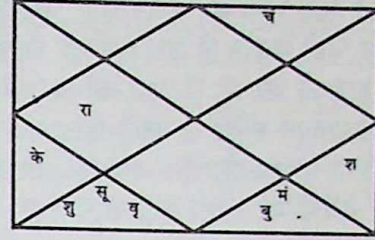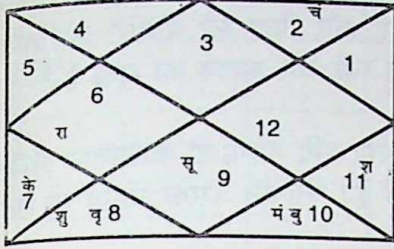
उदाहरण नं० 17

जन्म दिन 2.12.1936

प्रश्न	उत्तर
नर संतान ?	4
बड़ा लड़का 7 साल का ?	11 साल का
सरकारी नौकरी ?	हाँ
माता जीवित ?	हाँ
बड़ा भाई है ?	मर चुका है।
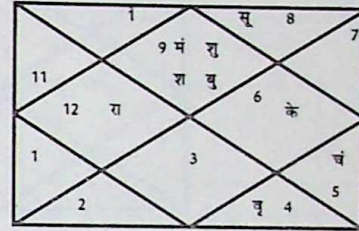
उदाहरण- नर संतान
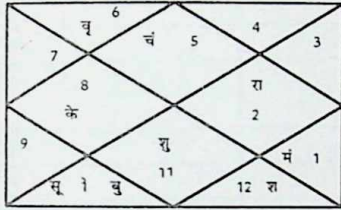
40 वर्ष फल
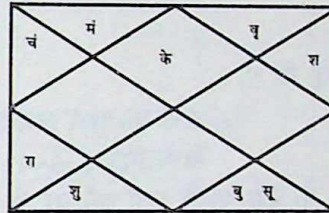
जन्म दिन 29.4.1920
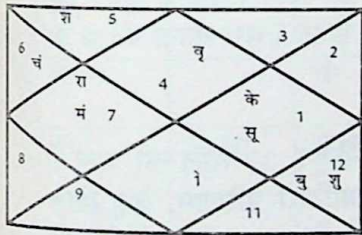
मकान बनने पर शुक्र का झगड़ा, शनि सहायता दे भी रहा है। ईश्वर प्राप्ति तरक्की धर्म अवस्था ठीक है। वृहस्पति खाना नं० 2, शनि खाना नं० 8 जब ईश्वर का ध्यान करके आसन पर बैठेगा तो पीछे से खाना नं० 8 से साँप आएगा और गद्दी उठा कर भागना पड़ेगा। यानी बगुला भक्त।

जब तक लड़का नौकर नहीं होता, नौकरी ठीक चलेगी। तरक्की में गड़बड़ क्यों, नीले राहु रंग नग वाली अंगूठी कब ली। 1949 से। क्या कोई बच्चा मकान से नीचे तो नहीं गिरा ? हाँ लड़की वृक्ष से नीचे गिर गई। राहु खाना नं० 5 बिजली, सूर्य, बुध खाना नं० 8, लड़की पर बिजली गिरी। तरक्की के लिए गाय ग्रास ज़रूरी। बुध खाना नं० 8 चीनी, बर्तन पृथ्वी में दबाने से लानत दूर होगी आबादी से बाहर दिन के समय।

42 साल की आयु से तरक्की के लिए रास्ता साफ। माली हालत जब तक माता का संबंध रहे ठीक रहेगी।

जन्म दिन 6.7.40
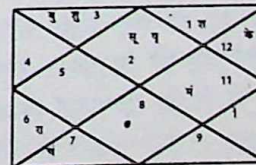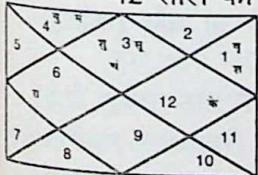
मकान 24-33-36 साल की आयु में तो नहीं बनाया ? नहीं।

माली हालत ठीक करने के लिए मकान के पूर्व में कुआँ है ? उसमें चावल डालने से ठीक होगी। जब 37 साल की आयु थी, उस कुएँ को दोबारा बनना था। यदि घर में कुआँ है तो क्या छत वाला है ? हाँ। क्या बाप, दादा, नाना-नानी को दमा तो नहीं हुआ ? पिता सात मास से बीमार है। कुएँ में केसर डालने से माली हालत ठीक होगी और पिता की बीमारी को आराम मिलेगा। यदि बाप जद्दी मकान में उस वर्ष रहे तो भी सेहत ठीक हो जाये (पिता की)। क्या स्त्री और संतान का सुख है? बुध खाना नं० 6, यदि लड़की का घर से उत्तर की ओर विवाह किया जाये तो दु:खी रहेगी।

क्या नया मकान बनेगा ? शनि खाना नं० 8 : 42 साल की आयु तक मकान नहीं बनेगा यदि बनेगा तो कब्रिस्तान होगा।

चन्द्र दरिया के सामने शनि पत्थर है और दरिया रूक गया है निकलने को रास्ता नहीं है। लेकिन उसके सामने वृहस्पति केसर है। इसलिए दरिया को रास्ता बदलना पड़ेगा। जो कुएँ में केसर डालने से रास्ता बदलेगा।
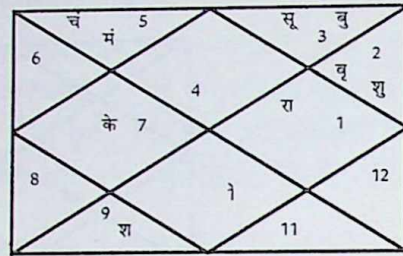
उदाहरण नं० 18

रानी की जन्म कुण्डली

जन्म दिन 29-4-20

किसी एक राजा की रानी जो उसने छोड़ दी थी।

रानी के बड़े लड़के की जन्म कुण्डली
जन्म दिन 6-7-40

रानी के दूसरे लड़के की जन्म कुण्डली
जन्म दिन 6-6-41

2-9-44 से पहले राजा ने ऊपर के टेवे वाली रानी को घर से बाहर निकाल दिया। बच्चे उसके साथ चलते कर दिये और खुद अपने खानदान की अपने ही खून की एक और लड़की से शादी कर ली, जो हिन्दू धर्म उसकी बहन, बेटी (बुध के समान) है। उपाय करने से पहले रानी को घर से दरबदर हो चुकने को दो साल हो चुके थे। खाँड का बर्तन (मंगल, बुध) धर्म स्थान खाना नं० 9 दिन (जहाँ कि शुक्र, बुध जन्म कुण्डली में है) तक लगातार दिया गया और रानी का छेदन (बुध खाना नं० 9 का उपाय) जो पहले नहीं किया था उपाय के दिन करवा दिया गया था।

उदाहरण 19

17 साल से 19 साल की आयु में नए मकान बनवाए गए, आयु के तीन साल फर्क पर बहन मौजूद, 17 साल की आयु से बुध का मंदा समय। शुक्र खाना नं० 11 स्त्री संबंध, मगर वृहस्पति खाना नं० 11 हवाई विचार और आखिरी परिणाम, केतु खाना नं० 4 वीर्यपात, हस्तमैथुन, क्रिया शुरू हुई जो 21 वें वर्ष की आयु में ज़ोर पर पहुँची और राहु 21 साल की आयु की लहरें दिमाग़ी बुध के दायरे में चल उठी। यानी आत्महत्या और पागलपन की निशानी होने लगी लेकिन असर में कभी वीर्य का नुक्स छुपा रहा और शादी की तजबीजे व्यर्थ लगी।

उपाय :-बुध खाना नं० 12 फौलादी लोहे का छल्ला जिस्म पर कायम करना और शनि (लोहा, मछली का तेल) या चन्द्र (चाँदी, दूध) के द्वारा दवाईयाँ सहायक होंगी।

****

राजयोग टेवे

1	2	3	4	5	6	7	8	9	1०	11	12
बु°, शु°	सू°										
बु°,शु°			चं°,वृ°	मं°					नं°,वृ°	मं°	
बु°			चं°,वृ°	मं°,श°							स°
सु°			वृ°·								
वृ°			श°			श°			मं°		
श°			मं°			मं°			सृ°		
मं°			सू°			सू°			वृ°		
सृ°	चं°	वु°		वृ°		वृ°			श°		
चं°	वृ°					शु°	मं°			श°	
मं°,श°										बु°,श° सू°,मं°	
											सू°,चं °
चं°,मं° श°											सू°
सू°						चं°,श°		वृ°			
चं°			सू°			वृ°			श°		
श°		चं°			मं°			बु°			वृ°
चं°					सू°					मं°	श°
मं°			वृ°	सू°	बु°					श°	चं°
वृ°									सू°	चं°,बु°, श°	
श°			मं°		बु°	नं°	सू°		शु°		सू°
वु°				मं°,श°		चं°,व°			शु°		
चं°,सू°								वृ°	मं°	श°	
श°		सू°	शु°					चं°		वृ°	
बु°	अ	अ			अ			श°,वृ°	अ	अ	
श°			वृ°						चं°,सू°	मं°,बु° शु°	
श°,मं°		चं°	वृ°	श°	सू°	बु°					
वृ°	मं°,बु°	सू°,शु°			चं°	श°					
वृ°,बु° शु°			श°		सू°						

अ - बाकी 6 ग्रह भी किसी तरह भी शब्द अ के घरों में हों ।

खानावार चीज़ें

इस भाग में कुण्डली के 12 खानों की विभिन्न शक्तियों और संबंधित चीज़ें दर्ज की गई है और साथ ही 9 ग्रहों की सम्बन्धित चीज़ें संबंधी और कारोबार विस्तार में लिखे गए हैं अर्थात् जबकि कोई ग्रह अच्छा हो तो उस ग्रह की सम्बन्धित चीज़ें, सम्बन्धी और कारोबार लाभकारी होंगे और मंदी हालत में मंदी हालत के ग्रह के कामों सम्बन्धी चीज़ों से दूर रहना ठीक रहेगा। इससे आगे चलकर हर एक खाने से सम्बन्धित चीज़ें और शक्तियां इंसानी कारोबार में दखल देगी। उदाहरण के लिए सूर्य खाना नं० 4 में राजयोग की हैसियत से बैठा हो तो खाना नं० 4 जन्म कुण्डली के 12 घरों में से चौथे घर की चीज़े और साथ ही सूर्य की खाना नं० 4 (जो फलादेश में सूर्य खाना नं० 4 में लिखी हैं) की चीज़ें कारोबार सम्बन्धी भी हर तरह से उत्तम होंगे जब कोई खाना खाली हो

तो उसको जगाने के लिए जिस ग्रह से सम्बन्धित चीज़ों की ज़रूरत हो वह भी लिस्ट में है से सहायता मिल सकती है या यह ध्यान रखा जा सकता है कि जिस ग्रह का फल किसी खास घर में बुरा लिखा हो तो उससे सम्बन्धित चीज़ों से दूर रहना मंदे समय में मदद देगा। उदाहरण के लिए शुक्र खाना नं० 9 का फल धन हानि हुआ करता है इसलिए जब शुक्र खाना नं० 9 में आए तो सफेद गाय खरीद कर न लाई जाये। यदि कुण्डली में ही शुक्र खाना नं० 9 हो तो सफेद गाय शुभ फल न देगी सारी आयु के लिए और खासकर जब जन्म कुण्डली का शुक्र खाना नं० 9 वर्षफल नं० 9 में आए तो सफेद गाय लाना (यदि कोई पहले हो तो वहम की बात नहीं) सिर पर कफ़न बांधे दुःख पर दुःख आने पर होने का डर लगा रहेगा।

दोबारा फिर याद रखा जाये कि इस जगह 12 ही पक्के घरों और 9 ग्रहों की जो चीज़ें लिखी है उनका अर्थ यह नहीं कि वह अवश्य लाभकारी होंगी या हानिकारक रहेंगी। अर्थ केवल यह है कि टेवे के अनुसार दिए हुए ग्रह का बैठा हुआ घर के हिसाब से जो भी अच्छा या बुरा फलादेश लिखा है वह सिर्फ उसी समय लाभकारी होगा जबकि उस ग्रह, उस बैठा होने वाले घर के अनुसार लिखी हुई चीज़ कायम हो जाए और कायम भी उस समय हो जिस समय वह ग्रह वर्षफल के अनुसार उस दिए हुए घर में आ बैठे। जैसे कि शुक्र खाना नं० 9 का हाल पहले दिया है।

दिमाग़ के 42 खाने

1. मनुष्य का दिमाग़, सिर (दिमाग़ी शक्तियों राहु की मगर सिर का ढांचा गोल हिस्सा या खोपड़ी बुध की) कुण्डली का खाना नं० 12 होगा।
2. कान के सुराख से 90ˋ पर सिर और भवों की ओर खिंची हुई रेखा दिमाग़ को पेशानी से जुदा करते हैं।
3. दिमाग़ के खाने बच्चे की 7 साल की आयु में पूरे हो जाते हैं यानी 7 बुर्जों या ग्रहों का असर कुण्डली के 12 खानों में हो चुका होता है और 35 साल की आयु में सब ग्रह अपना-अपना चक्र पूरा कर लेते हैं। (खाना नं० का हुकूमत चक्र) 12 साल की आयु तक बच्चे की रेखा का एतबार नहीं और 12 साल की आयु के बाद भाग्य के बदलने की उम्मीद और 35 साल के बाद दूसरा चक्र माना गया है। यह दिमाग़ी खाने सिर के ढांचे के अंदर दाएँ-बाएँ एक सा माना गया है। इसलिए दाएँ-बाएँ हाथ के आधार पर नेकी बदी तख्त-बख्त, शाही-गुदाही, तदबीर-तकदीर, नर-मादा, स्त्री-पुरुष, राहु-केतु, हर दो पहलू मुकर्रर करते हैं।
4. 42 खाने राहु की ही 42 साल की मियाद की राजधानी हे जो सिर की लहर का मालिक है।
5. खाना नं० 27 से 42 सिर्फ खाना नं० 1-26 खानों के परिणाम है जिनका ज्ञान सामुद्रिक में अधिक नहीं गिना है।
6. साधारण प्रयोग में दिमाग़ का बायाँ भाग आता है और कभी ही अचानक कुदरती तौर पर एक हिस्से के असर में दूसरे हिस्से का कोई खाना असर दे डालता है जो रेख में मेख (सूर्य को मेष राशि में जिस जगह उच्च माना है बंद कर देना या संसार की सब ताकतों के विरुद्ध लगा देना, विरुद्ध काम कर दिखाना) लगा दे। इन सब खानों का प्रभाव मनुष्य के दाएँ और बाएँ हाथ से संबंधित है। कुदरत के सितारों का असर दिमाग़ के खानों पर होगा। दिमाग़ की परछाई हाथ की रेखा के दरिया में पानी से नज़र आएगी। दिमाग़ का बायाँ हिस्सा दाएँ हाथ पर और दायाँ हिस्सा बाएँ हाथ पर रेखा की नदियों का असर डालता है। जिस तरह से दिमाग़ में यह टुकड़े स्थित स्थान और स्थित अक्षरों से माने गये है उसी पर उनका असर देखने के लिए सामुद्रिक में बुर्ज और ग्रह सदा के लिए खास स्थानों पर स्थापित कर लिये गए हैं।

कुण्डली तथा दिमाग़ का संबंध

ग्रह अकेले-अकेले या इकट्ठे होकर जो हाल इंसान की दिमाग़ी हालत का कर सकते हैं वैसी ही हालत भाग्य की वह ग्रह कुण्डली में करेंगे या जो हालत ग्रहों के हिसाब से उसके भाग्य की होगी वही हालत उसके दिमाग़ की होगी।

ग्रहों के पक्के घर दिमाग़ के 12 खाने

इंसानी दिमाग़ के यही 12 खाने कुण्डली में ग्रहों के पक्के तौर पर स्थित घर है जो राशियों से याद किये जाते हैं। दिमाग़ के दाएँ-बाएँ भाग में उसी गिनती के हैं।

लग्न को खाना नं० 1 दे चुकने के बाद जब कुण्डली लाल किताब के फलादेश के लिए तैयार हो जाए तो नीचे दिए हुए भावों के सामने दिमाग़ी खाना नं० में ग्रह भर दें और फिर उन दिमाग़ी खानों में दिए हुए संबंध से जो भी उस प्राणी की दिमाग़ी शक्तियां हों वह देख लें।

उदाहरण

ग्रह	टेवे का खाना	कौन से दिमाग़ी खाना नं० का स्वामी होगा
वृहस्पति	4	21 चन्द्र से मुश्तरका हमदर्दी या रहम स्वभाव होगा।
शनि	8	14 मंगल बद से मुश्तरका तकब्बर या खुद पसंदी का मालिक होगा।

टेवे का खाना	दिमाग के किस खाने से संबंधित है	प्रभाव
1	2०	लाल किताब के अनुसार कुण्डली बनाकर देखें कि कौन ग्रह कहां पर (किस खाना नं० में) बैठा है। फिर कुण्डली के उन खानों से दिमाग का कौन सा खाना नं० संबधित है देख लें कि उस खाना नं० की रूह से टेवे वाले में कौन कौन सी शक्तियां कायम होगी।
2	2	
3	17	
4	21	
5	15	
6	16	
	1 शुक्र	
7	18 बुध	
8	8	
9	19	
1०	13	
11	35	
12	14	

मनुष्य के दिमाग की लहरों या 42 दिमागी खानों का विस्तृत विवरण

दिमागी खाना	कुण्डली खाना	किस ग्रह से मुश्तरका	शक्ति	असर
1 1	1 1	शुक्र शनि	इश्कबाजी इश्कबाजी	वह प्यार जो स्त्री से संबंधित हो, इश्क से पहली मुहब्बत का नाम उल्फत है जिसके बाद इश्क को लहर शुरू होती है और ऐसी शक्ति मर्द और औरत में 16 से 36 आयु तक तरक्की और ज़ोर पर होती है। शुक्र का पतंग जुवान से ही इश्क की पुलवाजी, चारों ओर से खुदगर्जी जब शनि की काग रेखा (मंदा शनि) वर्ना हमदर्दी जब शनि उत्तम।
2	2 पेशानी का द्वार	वृहस्पति	शादी की इच्छा	एक के बाद शादी के विचार इश्क के बाद का गल्बा जो 37 से 7०/72 साल की आयु तक लहरे मारता होगा जिसके समय बूढ़ी रबी भी 1०० चूहे खाकर बिल्ली हज़ को गई की तरह पारसाई की तलाश में होगी।
3 3	3 3	शुक्र मंगल	प्यार अथवा माता पिता का प्यार उल्फत	प्यार जो संतान के प्रति होगा। दिमागी खाना नं० 1-2 का परिणाम ही है। मगर उसका खाना जुदा ही है। इश्क से पहली मुहब्बत का नाम उल्फत है जो आयु कि 1-15 साल तक होगी।
4 4 4	4 4 4	चन्द्र चन्द्र मंगल बद	दोस्ती या मुलाकात तबाही की आदत	उल्फत इश्क और गल्वा इश्क तीनों ही शक्तियों का एक की जोड़। किसी के ऐव पर पर्दा और खूबी पर नजर डालने की शक्ति। मुहब्बत के तीनों हिस्सों को तबाह करने वाला गृहस्थ खराब, हर तरफ की तबाही की खसलत।
5	5	वृहस्पति	देश प्रेम	उल्फत जिसका संबंध घर या देश से हो, कुत्ता, दोस्ती में मालिक को नहीं छोड़ता बिल्ली प्यार में घर को नहीं छोड़ती। मालिक ने कुत्ता पाला और मकान बदला। कुत्ता मालिक के साथ गया उसे मालिक से प्यार है मगर पिछले मकान से नहीं, इसी तरह मालिक ने मकान बदला तो बिल्ली पिछले मकान को दौड़ी क्योंकि उसे मकान से प्यार है मालिक से नहीं।

6	6	केतु	दिलचस्पी या पक्का प्यार	किसी चीज़ से प्यार हर काम के लिए तैयार और लगा रहने वाला काम पूरा किए बिना न छोड़े।
6	6	शुक्र	दिलचस्पी या पक्का प्यार	नर संतान का जन्म, नाममात्र या कमजोर शक्ति।
7	7	शुक्र	तमन्ना	जिन्दगी बढ़ने की चाह, आयु में ऊँचा उठने की नहीं,
7	7	शुक्र	तमन्ना	चपटे सिर में अधिक, तंग सिर में कम होती है।
8	8	मंगल नेक	मज़बूती	कायमाबी हो या न हो अपना काम नहीं छोड़ना चाहे लाख मुसीबत हो।
8	8	सूर्य	मज़बूती	हर हमले को रोकने की शक्ति।
9	9	शनि का जाती	बदला लेने की ताकत	स्वयं बदला लेना नहीं तो संतान को बदला लेने की शिक्षा देकर मरे।
1०	3	बुध	स्वाद	पक्का हाज़मा, मज़बूत शरीर।
11	11	शनि का अपना	इमसाक जखीरा जमा करने की शक्ति, इमारत बनाने की इच्छा	पहला हिस्सा नेस्त यानी जमा करते जाने चाहे ताम आए या गल सड़ कर बर्बाद हो जाए। दूसरा भाग बुद्धि का जवानी में शहद की मक्खी की तरह जोड़ना ताकि बुढ़ापे में काम दें। तीसरा भाग नालायकी का यानी दूसरे का माल चोरी से उड़ाकर उसी समय खा जाना।
12	12	राहु	छुपाने की शक्ति	विचारों का उस समय तक छुपाये रखना जब तक कि अपनी शक्ति फैसला करने की ठीक तरह से उसे मंजूर न करें। फरेब छुपाना हर काम चालाकी से हर हालत में अपना भेट छुपाना।
13	1०	शनि का अपना	होशियारी	केवल उम्मीद पर बैठा रहने की जगह लम्बी सोच पर आने वाले समय से पहले ही काम कर लेना।
14	8	मंगल बद	तकब्बर या खुद पसंदी	किसी को भी अपने से अच्छा न समझना।
15	5	वृहस्पति	खुद्दारी	खुद अपने मान और हस्ट से बरी और अपने मान के लिए किसी दूसरे का अपमान न करना।
16	6	केतु	इस्तकलाल	दुःख और दिनों के फेर में अच्छा स्वभाव काम में लगे रहना चाहे अच्छा हो या बुरा।
17	3	मंगल	न्यायप्रियता	बुद्धिमान दूसरों की अच्छाई चाहना एक को दूसरे पर ज्यादती करते नहीं देख सकता।
18	6	बुध	भरोसा 'या उम्मीद	किसी आने वाले समय की आशा करना खाना नं॰ 13 होशियारी ठीक तो अच्छा असर वर्ना फोकी आशा तबाही का कारण श्री गणेश जी की गरुड़ की सवारी।
18	6	केतु	भरोसा या उम्मीद	भरोसा कुछ हौंसले की आशा होगी सिर्फ फोकी उम्मीद नहीं। श्री गणेश जी की चूहे की सवारी।
18	6	केतु	भरोसा या उम्मीद	
19	9	वृ॰ का अपना	धार्मिक या अंदरुनी शक्ति	संसार में अंत पर, मुआमला, फहसी चालचलन में पक्का रखने का फैसला करना, कमजोर खाना से नास्तिक होगा। रुहानियत के बाकी रहने का असूल का एतकाद।
2०	5	सूर्य	मान या बड़पन	दूसरों का मान और पूजा और अपने फर्ज़ को पूरा करना, अन्दर-बाहर से नेक लहर में मानक और पत्थर में मोती की शक्ति।
21	4	चन्द्र	हमदर्दी या रहम	तंग परेशानी में कम, चौड़ी चपटी में अधिक चौड़ी और ऊंची में अति अधिक।
22	5	वृहस्पति	अपनी अक्ल	चौड़ी पेशानी का सामने का भाग उभरा हुआ होता है।
23	6	केतु	पसन्दगी	खूबसूरती, बनाव श्रृगार, स्त्री और हर चीज़ दिखावे के लिए सुन्दर हो या गुण की परवाह नहीं।

24	7	बुध	हौसला	सब बातों में ऊँचा साहस, मुझसे कोई और दूसरा शान न बढ़ा पायेगा।
25	8	पापी ग्रह	नकल करने की शक्ति	हर चीज़ की नकल करने की शक्ति, बहरुपियापन, झगड़ा फसाद, जब पापी मंदे या पापी ग्रहों की मंदी शक्ति की और अधिक ध्यान हो।
26 26	9 9	वृहस्पति बुध	मसखरापन हद से अधिक मसखरापन	बुद्धिमता का मखौल या शुगलबाजी शक्ति, दिल्लगी प्रसन्न स्वभाव। बहुत ही भोलापन, बुद्ध, बेवकूफी।
27	3	मंगल	गौर की शक्ति	बात की तह तक पहुँचने की शक्ति, हर चीज़ की असलियत तक पहुँचने का कारण।
28	4	चन्द्र का अपना	पुरानी स्मृति	स्मृति, बहुत देर की चीज़ याद रखे गुज़री घटनाओं की हरदम ताजा याद, मनुष्य और सब देखी चीज़ों की याद।
29	5	सूर्य का अपना	कद तथा औसत शक्ति	चिड़ियों से बाज़ मरवाने की शक्ति, हर तरह के व्यक्ति के वजूद और कारोबार की शक्ति।
3०	6	केतु	बोझ बराबरपन की शक्ति	जैसा मुँह वैसी चपेड़, हर किसी की नकल को जाँच लेने की शक्ति।
31	7	शुक्र	रंग-रूप में फर्क की शक्ति	दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग में फर्क कर लेने की शक्ति।
32	8	शनि	सफाई धुलापन	हर चीज़ को तरतीब और दुरुस्ती इन्जाम, जाहिरा मानसरोवर तो अंदर से कपट की खान।
33	9	बुध	गणित के नियमों की शक्ति	दिल तथा दिमाग में अपनी मर्ज़ी के अनुसार दायराबंदी करने की शक्ति।
34	1०	मंगल बद	जगह मुकाम की याद	भूगोल के संबंध और जगहों के फर्क की शक्ति, पूरा धोखेबाज़, तैरते को डूबो लेने की आदत, जब शनि मंदा हो या मंगल अपने असूलों पर मंगल बद साबित हो।
35	11	वृहस्पति	बीते समय की याद	चाहे कितनी ही घटनाएं हो जाए, सब याद रखने की आदत, वर्तमान घटनाओं राजनैतिक और प्राकृतिक इतिहास पर गौर की शक्ति।
36	12	राहु	विचार समय की याद	फासला गुजरे समय, मर्द पछताए, आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना, कभी हम भी बाइकबाल थे, समय की लम्बाई-चौड़ाई नापने की शक्ति।
38	2	वृहस्पति	जुबानदानी	हर प्रकार की भाषाओं को जान लेने कीशक्ति तथा खोज कर लेने की शक्ति।
39	3	मंगल	कारण जानने की शक्ति	हर काम की घटाई जानने की शक्ति तथा खोज कर लेने की शक्ति।
4०	4	चन्द्र	एक चीज़ का दूसरी चीज़ से मुकाबला	हर चीज़ की असलियत और आधार पर उसका दूसरी से मुकाबला करने की शक्ति (क्यास)।
41	5	सूर्य	फितरत	मनुष्यता की असलियत पर ध्यान करने की शक्ति चाहे कुछ भी हो या न हो, मनुष्यता की शराफत और इंसानी खसलत को हाथ से न देने की शक्ति।
42	6	बुध का अपना	नेकी	दूसरों को खुश करने की शक्ति रजामंदी खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदले की तरह, जैसे को तैसा हो जाए या मिल जाए।

खाना नं० 27 से 42 सब के सब ऊपर दिए गए खाना नं० 1 से 26 तक के परिणाम हैं।

कुण्डली के खानों से दिमागी खानें कुण्डली के खानों से ग्रहों के पक्के घर

खाना नं- 27 से 42 सब के सब ऊपर दिए गए खाना नं- 1 से 26 तक के परिणाम।

दिमाग के खाने

हरेक प्राणी के अपनी-अपनी कुंडली जन्म के 12 ही खानों में ग्रहों के हिसाब से कौन-कौन से दिमाग़ी खाने संबंधित होंगे जो उसकी दिमाग़ी ताकतों को दिखाएंगे ।

कुंडली खाना	दिमागी वृहस्पति खाना	दिमागी सूर्य खाना	दिमागी चन्द्र खाना	दिमागी शुक्र खाना	दिमागी मंगल खाना
1				1 शनि से मुश्तरका	
2	2 शुक्र से मुश्तरका 38 बुध से मुश्तरका			2 वृ॰ से मुश्तरका	
3	17 मंगल से मुश्तका			3 मं॰ से मुश्तरका	3 शुक्र से मुश्तरका 17 वृ॰ से मुश्तरका 27 चन्द्र से मुश्तरका 39 बुध से मुश्तरका
4	21 चन्द्र से मुश्तरका		4 शुक्र से मुश्तरका 4 शनि से मुश्तरका 28 वृ॰ से मुश्तरका 40 बुध से मुश्तरका	4 चन्द्र से मुश्तरका	4 मंगल बद से मुश्तरका
5	5 शुक्र से मुश्तरका 15 शनि से मुश्तरका 20 सूर्य से मुश्तरका 22 सूर्य से मुश्तरका	20 वृ॰ से मुश्तरका 22 बुध से मुश्तरका 29 चन्द्र से मुश्तरका 41 बुध से मुश्तरका	29 सूर्य से मुश्तरका	5 वृ॰ से मुश्तरका	
6	18 बुध से मुश्तरका 8 केतु से मुश्तरका	23 केतु से मुश्तरका	5 वृ॰ से मुश्तरका		
7		24 बुध से मुश्तरका	31 शुक्र से मुश्तरका 31 बुध से मुश्तरका	7 बुध से मुश्तरका 7 शनि से मुश्तरका 31 चन्द्र से मुश्तरका	
8		25 पापी ग्रहों से मुश्तरका 8 मंगल नेक से मुश्तरका	32 शनि से मुश्तरका		14 शनि से मुश्तरका 8 सूर्य से मुश्तरका
9	19 वृ॰ का अपना असर 26 सूर्य से मुश्तरका	26 वृ॰ से मुश्तरका	33 बुध से मुश्तरका		9 शनि से मुश्तरका
10	35 चन्द्र से मुश्तरका		34 मंगल बद से मुश्तरका		34 चन्द्र से मुश्तरका
11	35 चन्द्र से मुश्तरका		35 वृ॰ से मुश्तरका		
12	12 राहु से मुश्तरका		36 राहु से मुश्तरका		
	वृ॰: मान शराफत आवरू की शक्तियों से संबंधित होगा।	सूर्य: जाती हिम्मत, दिमागी शक्तियों से संबंधित होगा।	चन्द्र: महसूस करने की छुपी हुई और अन्दर की शक्ति से संबंधित होगा।	शुक्र:गृहस्थी शक्तियों से संबंधित होगा।	मंगल:पूर्वजो बड़ों की शक्तियों से संबंधित होगा।

विशेष :- मुश्तरका यानि साझां एवं आपसी संबंध

कुंडली पर खाना संबंध	दिमागी बुध खाना	दिमागी शनि खाना	दिमागी राहु खाना	दिमागी केतु खाना	टेवे का खाना खाली होने किस दिमागी खाना का
1	37 शनि से मुश्तरका	1 शुक्र से मुश्तरक 37 बुध से मुश्तरक			2
2	38 वृ॰ से मुश्तरका	10			2

3	1० शनि से मुश्तरका 39 मंगल से मुश्तरका	1० बुध से मुश्तरका			
4	4० चन्द्र से मुश्तरका	4 चन्द्र से मुश्तरका			21
5	41 सूर्य से मुश्तरका	15 वृ॰ से मुश्तरका			15
6	18 वृ॰ से मुश्तरका 42 बुध का जाती अपना	16 केतु से मुश्तरका		6 शुक्र से मुश्तरका 16 शनि से मुश्तरका 18 वृ॰ से मुश्तरका 23 सूर्य से मुश्तरका 3० चन्द्र से मुश्तरका	16
7	24 सूर्य से मुश्तरका 7 शुक्र से मुश्तरका 31 चन्द्र से मुश्तरका	7 शुक्र से मुश्तरका			1 शुक्र 18 बुध
8		14 मंगल बद से मुश्तरका 25 सूर्य से मुश्तरका 32 चन्द्र से मुश्तरका	25 सूर्य से मुश्तरका	25 सूर्य से मुश्तरका	8
9	33 चन्द्र से मुश्तरका	9 मंगल से मुश्तरका			19
1०		13 शनि का अपना असर			13
11		11 शनि का अपना असर			35
12		12 राहु से मुश्तरका	12 वृ॰ से मुश्तरका 12 शनि से मुश्तरका 36 चन्द्र से मुश्तरका		14
बुध: अंदरुनी अक्ल की लहरों से संबंधित होगा।		शनि: खुद इश्क जवानी और राहु से मुश्तरका हालत में स्वार्थ की शक्ति और केतु से मुश्तरका हो तो हमदर्दी की शक्ति से संबंधित होगा।	राहु :दिमागी लहरों और बदी के बीच शरारत की हिम्मत और शत्रु से मुकाबलों की शक्तियों से संबंधितहोगा।	केतु : हरेक से सलाह मशविरा और नेकी की नींद और अंत तक मदद करने की शक्ति से संबंधितहोगा।	

खाना वार चीजें

खाना नं॰	अन्दर की सिफतें	शारीरिक शक्ति	मकान के अन्दर	दवाई शक्ति	धन-दौलत की किस्म	संबधित साम।न
1.	परोपकार पुराने रस्मो को प्रसंद करना	भूखे, गर्मी	चार दीवारी ज़मीन के कोने	नाम किस हैसियत का होगा	खुद पैदा की हुई	सवारी रथ, मोटर गाड़ी
2.	ज्ञान नेकी, बदीनींद, ऐश सांसारिक मोह माया		किस प्रकार का मकान, घर बैठक या दुकान	मान और धन शरीफाना	बचत अपनी कमाई, स्त्री धन, सन्यास का धन	गैस, मिट्टी के समान
3.	दृष्टि का असर, चोरी एयारी बीमारी	जागृत शारीरिक	रहन-सहन का फर्जो सामान	की अदायगी मनुष्य संबंधी बहादुरी	दूसरे संबंधियों का धन	लड़ाई-झगड़े
4.	शांति, दिल्ली हौंसला	सर्दी, जिस्म	खाली ज़मीन या पानी की जगह	हक पितृ	धन के निकलने के स्त्रोत	बजाजी पानी, दूध

5.	ईमानदारी अच्छी प्रसिद्धि	बेदारी दिमाग	हवा बेटे का	संतान व विद्या का धन	बुद्धि विद्या राजदरबार संबंधी	
6.	फोकी हमदर्दी अपने लाभ के लिए दूरदर्शी अंदर की अक्ल	अंदर के स्वाद खुश्की जिस्म हाज़मा	अंडर ग्राऊंड का हिस्सा	खुसरे की सिफत सुथरा बर्ताव साहूकारा	संबंधियों का धन	पक्षी संबंधी व्यापार हवाई गोबर
7.	सांसारिक सम्बन्ध अंदरुनी अकल दूसरों के लाभ के लिए	शारीरिक ताकत	पलस्तर सफेद मकान की मुंडेर	दुनियावी दिखावाअपने लिए	पालतू माया पराई दौलत	खेती के व्यापार हाज़िर
8.	खुद मंदी करतूत करे	पित्त मेदा बदहज़मी	छत व आग की जगह	मंदा हानि बेआसरी माया	सर्जरी संबंधी बीमारियाँ	
9.	धर्म-कर्म परोपकारी ज्ञानी	जागृत रुहानी साँस	हर भाग का अंदरुनी माप	नेक काम में लगे रहना	पूर्वजों की बचत	धर्म कार्य हकीमी संबंधी
10.	चालाकी, मक्कारी, होशियारी, बुरा काम	आप सेहत काली खाँसी	लोहा, लकड़ी, ईट, पत्थर, मलबा आदि	दिखावे का बर्ताव	पिता का धन जायदाद	अन्न मशीनें
11.	होशियारी होश शुभ	लापरवाही	जाहिरदारी मकान	लालच	आमदन	आम लोगों के हराम की जगह से संबंधित
12.	खुशामद नेकी बदनामी अपनी	थोड़ा खर्च	आबाद, वीरान	आशीष श्राप या अचानक पैदा	माया तथा स्त्री सुख स्त्री-पुरुष का आपसी सुख	ऐश से संबंधित

खानावार चीज़े

खाना नं०	दिशाएं	भाग्य के टुकड़े	जानवर (पशु)	सांसारिक संबंध	समय और रास्ते	मकान की किस्म
1.	पूर्व	भाग्य का अपना अख्तयार	खड़े1 सींगों वाले जानवर या खड़े सींग, झिल्ली या ज़ेर में पैदा होने वाले	राजसंबंध कमाई का काम का मैदान धन के लिए	वर्तमान काल के अनुसार, जवानी का समय, अब का जन्म	पुराना अपना बनाया हुआ
2.	उत्तर, पश्चिम	अपना भाग्य संसार संबंधी	पालतू गाय, बैल	विधवा प्रेमी-प्रेमिका, ससुर का घर मर्द के टेवे में, ससुर =राहु	जन्म-मरण का ससुराल का दरवाज़ा	
3.	पश्चिम	भाग्य का चढ़ाव व तंगी	सेर दरिन्द जंगली पशु	बहन मगर अपनी नहीं भाई-बन्धु साले, बहनोई	मनुष्य व माया का संसार से बाहर जाने का रास्ता	भाई-बन्धु ताए, चाचे का
4.	उत्तर, पूर्व	भाग्य खुद पहले हाजिर हो	पानी के जानवर, दूध वाले जानवर, घोड़ा	माता और नानका वंश	गर्भ में आने का समय	मातृ वंश मौसी, फूफी क:
5.	पूर्वी दीवार	भाग्य की चमक	आग के पशु	केतु संतान का मित्र ग्रह मगर मामा का शुत्र आग की मदद	भविष्य जन्म संतान दिन से बुढ़ापे का समय	संतान का
6.	उत्तर	भाग्य की गिरावट	पक्षी, कुत्ता, बकरी	सब संबंधियों का बर्ताव	पाताल (स्वप्न हस्ती)	नानके का या भांजे का
7.	दक्षिण, पश्चिम	भाग्य का फैलाव	चरिन्द (अण्डे वाले जानवर) खाना नं० 1 के उल्ट सींगों वाले पशु2	स्त्री, लड़की, पोती, बहन मगर अपनी	संसार का मैदान जायदाद के लिए	स्त्री या लड़कियों के संबंधियों का

8.	दक्षिणी दीवार	भाग्य के धोखे या धक्के	ज़हरीले बिछ्छु, ऊँट, वृक्ष नष्ट करने वाले पुश	दुश्मन बीमारी	मृत्यु संसार का बाहर	कब्रिस्तान वीराना
9.	केन्द्र	भाग्य की हवाई नींव	मेंढक, हंस, हिमा, नील गाय, जल तथा खुश्की पर चलने वाले पशु	पूर्वज	पिछला जन्म, पिछला समय, छुपा संसार बचपन का समय	जद्दी पूर्वजों का
1०.	पश्चिम	भाग्य का बोझ या बुनियादी पत्थर	मगरमच्छ, साँप, पशु की दुम बतौर एक जानवर या दुमदार पशु	पिता का सुख-दुःख	ख्याली संसार 1० वां द्वारा शादी का	पिता का या अपना बनाया 3 वर्ष से अधिक समय का या 2० वर्ष का पुराना रहने का
11.	पश्चिमी दीवार	भाग्य की ऊँचाई	दो मुंहा साँप	जन्म समय माता-पिता के जन्म धन की हालत	संसार के अन्दर समय, माया तथा मनुष्य के इस संसार के अंदर आने का रास्ता, भाग्य आम	खरीदे हुए मकान
12.	दक्षिण, पूर्व	भाग्य का सुख-दुःख	बिल्ली, चमगादड़, मछली	पड़ौसी का संबंध सुख-दुःख	आखिरी समय, स्वप्न का संसार सोने व आराम का समय	पड़ोस का

1.बाकी खाने बतौर एक जानवर में उसी तरह ही गिन लें जैसे कि एक आदमी के शरीर पर 12 घर या 9 ग्रह मुकर्रर किए हैं।

2. उल्ट सींग = नीचे गिरे सींग।

खानावार चीज़ें

खाना नं॰	वृक्ष तथा पौधे	विविध वस्तुएं	स्थान	बच्चे की बंद मुट्ठी	विचार खामख्याली	शरीर के अंग
1.	जड़ी बूटी दवाई	अंग शरीर	तख्त, बैठक	साथ लाया धन, शरीर, वर्तमान समय	नास्तिकपन बिन बुलाए खुदा के घर भी नहीं जाएंगे	चेहरे का अंदर
2.	शाखा दबा कर पैदा हुए वृक्ष, पौधे	मकानात घरों	ब्रह्म गुरु, गाय स्थान	गृहस्थ का समय संबंधियों जो लेगा, छुपा संबंध	मन मंदिर दरवेश कलन्दर मकानों की गिनती	गर्दन, गुदा, तिलक, की जगह
3.	तना, फलदार पौधे	आखिरी समय	लड़ाई का मैदान लेन-देन	भाई-बंधुओं से संबंध दूसरों से जो पाएगा	अक्ल बड़ी या भैंस	पलक बाज, जिगर, खून
4.	रस भरे फलों के	रिज़क का स्त्रोत	लक्ष्मी स्थान	साथ लाया धन मुट्ठी के अंदर	दन ही जीवन का अर्थ	सीना, छाती, पेट, माता (स्त्री का टेवा), नाभि के अंदर
5.	कलम वाले पौधे (प्योंदी)	संतान	ज्ञान-स्थान	संतान का समय दूसरों से जो पाए भविष्य के लिए	धर्म काँटा संसार की तराजू	रुहानी, पुरुष का टेवा, पेट शिकम का बाहर
6.	साग, सब्जी	पुत्र या पुत्री के संबंधी	गृहस्थी साधु स्थान बर्ताव	बुढ़ापा, ढलती जवानी, पीछे संबंधियों से मदद जो छुपी हुए पाए	चलने वालों का हाल मर्दों की गिनती, बीमारी की लम्बाई	पीठ, कमर, पट्ठे चेहरा स्त्री नाड़ियाँ, पिस्तान का सिरा, स्त्री का निप्पल

7.	फलीदार गुद्देदार	धन की थैली	जन्म स्थान	साथ लाया माल जायदाद	धन की फालतू थैली गिनती तथा शक्ति शादी	पाँव, जिल्द मुसाम पिस्तान का छिद्र, जांघ
8.	न फल न फूल हो पौधे आकाश बेल	आयु	मारकस्थान, बूचड़खाना, गैंग	संसार का बाहर छुपा दु:ख बीमारी	बीमारी का बहाना, मनुष्य की आयु	कनपटी, चर्बी, कच्ची, पीठ, नंगा शरीर (गुप्तांग स्त्री का)
9.	वनस्पति जो जड़ों की तरह धरती में पूर्वजों की हालत	धर्म स्थान	माता-पिता के धन की हालत, बचपन का समय, पिछले जन्म का संबंध, जो दूसरों से पाए	पिछले जन्म का लेन-देन पूर्वजों की आयु	पहलू नासिका, नथनी, वीर्य, मणि	
10.	काँटों वाले पौधे	लेख की हदबंदी, भाग्य का मैदान	ठगी द्वार या रिज़क	साथ लाया माल या अन्न	जादू, मंत्र वक्त शादी गणित विद्या संसार से संबंधित	घुटने, पिंजर
11.	छाया वाले मगर काँटे न हों	धर्म की ओर स्वभाव	रिज़क का मैदान	माता-पिता के धन की हालत जन्म · समय दूसरों से पाए	हर और पहला संबंध गिनती और शान संतान	चूतड़, माथा
12.	छिलक वाले वृक्ष	रात का आराम	साधु समाधि	माता-पिता के धन की हालत, जो संबंधियों से लिया	योगाभ्यास, हर ओर का आखिरी परिणाम	कान, पैर की हड्डी, सिर

ग्रहो की संबंधित वस्तुएँ

क्रं	1	2	3	4	5
ग्रह	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल नेक
देवी-देवता	ब्रह्म जी	विष्णु जी	शिवजी भोलेनाथ	लक्ष्मी जी	हनुमान जी
पेशा	ब्राह्मण पूजा-पाठ सुनार	क्षत्रिय, राजपूतझींवर,	कहार, जैनी साधु	कुमार, वैश्य, खेती ज़मीदारा	लड़ाकू
सिफत	रुहानी पंडित पेशावा	बहादुर शरीर, पालनकर्त्ता	रहीम, दयालु, हमदर्द	आशिक मिज़ाज	सोच समझकर बात करने वाला
गुण	हवा, रुह, साँस, पिता, गुरु, सुख	आग, गुस्सा, जिस्म वुद्धि, सब अंग विद्या	पानी, शान्ति दिल, माता, जायदाद जद्दी	मिट्टी कामदेवी स्त्री, गृहस्थी	हौसला, भाई, खाना-पीना लड़ाई
शक्ति	हाकीम साँस लेने तथा दिलाने की शक्ति का स्वामी	गर्मी का भण्डारी	सुख शान्ति, दया का स्वामी, माता का प्यारा, पूर्वजों की सेवा की	दिली प्यार लगन, स्त्री की लगन, ऐश पसंदी की शक्ति प्यार	लड़ाई, खून करना-कराना
धातु	सोना, पुखराज	माणिक, ताँबा, शिलाजीत	चांदी, मोती, दूध, रंग	मिट्टी, मोती (दही रंग)	नाचमकोला पत्थर, लाल रंग (मूंगा)
शरीर के अंग	गर्दन	सारा शरीर	दिल	गाल	जिगर
चेहरे के अंग	नाक, माथे का भाग नाक का सिरा	दायाँ भाग	वायाँ भाग	गाल की त्वचा	ऊपर का होंठ
पोशाक	पगड़ी	सेहरा कलगी	धोती, परना	कमीज़	वास्कट
तरबूज में ग्रहों की मिसाल	डंडी बब्बर या शेरनी	बंदर-बंदरिया, पहाडी गाय, पूरी कपिला गाय	घोड़ा-घोड़ी	बैल-गाय	आम शेर या शेरनी

वृक्ष	पीपल	तेज़फल का वृक्ष	पोस्त का हरा पौधा जब तक उसमें दूध हो	कपास	नीम

ग्रहो की संबंधित वस्तुएँ

क्रंम	1	2	3	4	5
ग्रह	मंगल बूद	बुध	शनि	राहु	केतु
देवी-देवता	जिन्न, भूत	दुर्गा जी	भैरव जी	सरस्वती जी	गणेश जी
पेशा	कसाई	ठठियार, दलाल, व्यापारी	लोहार, तारखान, मोची	भंगी शूद्र	धर्म और संसारी हदबंदी से स्वतंत्र
सिफत	घमण्डी	जी हुजूरिया	मूर्ख उखड़ कारीगर	चालबाज, मकार, नीच जालिम	भारवाहक, कुली, मजदूर, बुदबाद (बंरिकश)
गुण	कीनावरी	बोलना, दिमाग, जुबान, कायम मित्रता उपदेश कला	देखना-भालना, चालाकी, मौत बीमारी	सोचना विचारों की बिजली, डर शत्रुता भूचाल	सुनना पाँव की हलचल
शक्ति	खाने-पीने की शक्ति	हाथ से काम, बोलने की शक्ति, लोगों में रसूख पैदा करने की शक्ति	जादू, मंत्र देखना दिखाने की शक्ति	कल्पाने की शक्ति, का स्वामी,रास्ता दिखाने वाला	चलना-फिरना, गैरों से मिलने की शक्ति
धातु	चमकीला लाल पत्थर	हीरा, पन्ना	लोहा फौलाद	नीलम, सिक्का (लैंड) गोमेट	दो रंगा पत्थर, वैतरणी यम दरिया
शरीर के अंग	जिगर दिमाग का ढांचा जीभ, दाँत, नाडियां	दृष्टि	दिमागी लहरे सारे शरीर के बिना सिर का भाग	सिर के बगैर बाकी धड़	
चेहरे के अंग	नीचे का होंठ	नाक का सिरा अगला हिस्सा	बाल, भवें, कनपटी	ठोडी	कान, पांव, पीढ़ की हड्डी, घुटने, पेशाब की जगह, जोड़ों का दर्द
पोशाक	नंगा सिर	टोपी नाड़ा, तड़ागी, पेटी	जुराब, जूता	पायजामा, पतलून	दुपट्टा, कम्बल, ओढनी
तरबूज में ग्रहों की मिसाल	गुद्दा	स्वाद	छाल	कच्चा, पक्कापन	रंग धारियाँ
पशु	ऊँट-ऊँटनी, हिरन	बकरा-बकरी, भेड़, चमगादड़	भैंस या भैंसा	हाथी, कांटेदार जंगली चूहा	कुत्ता, गधा, सुअर (नर-मादा दोनों) दोनों
वृक्ष	ढ़ाक का वृक्ष (डेक)	केला, चौड़े पत्तों के वृक्ष, सिवाए बड़ के वृक्ष के	कीकर, आक, खजूर का वृक्ष	नारीयल का पेड़, कुत्ता, घास (भांकड़ा)	इमली का वृक्ष, तिल के पौधे केला फल

ग्रहो की संबंधित खानावार वस्तुएँ

खाना नं॰	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल
1.	शेर नर किमयागर, सुनार माथा, पीला रंग, चलता साधु	दिन का समय, दायाँ भाग आँखें, नमक सफेद	दिलबाग बायाँ हिस्सा, बाई आँख का डेला	रुखसारा पराई स्त्री	दाँत 32/31, सौफ, अनाज की कोठी
2.	गाय स्थान, अतिथि पूजन, पूजा धन, माया, चने की दाल, हल्दी	गंदम बाजरा	गाय कादूध, चावल, रुहानी भाग, सफेद घोड़ा	आलु, गाय स्थान घी, पीला अदरक, सफेद मुश्कपूर, भोंडी गाय	चीता, हिरण
3.	दुर्गा पूजन, संसारी विद्या	दिन की संतान, आम भतीजें	घोड़ा शिवजी चरायता	शादी, संतोषी स्त्री	पेट, होंठ, छाती
4.	वर्षा, सोना	दाई आंख का डेला, बुआ का लड़का भाई	तालाब, कुआं, चश्मा चश्मा तहज़मीन का जल, शान्ति	दही, चौपाया, परिंद	ढाक का वृक्ष, नाभि के मध्य की बीमारियाँ, तलवार, मृगछाला शुभ
5.	नाक, केसर	इकलौता लड़का, लाल मुंह का बंदर	चकोर (पक्षी) आक का दूध	कुम्हार का आवा, ईट, कांसी का बर्तन	बाई, नीम का वृक्ष
6.	मुर्गा, गरुड़ पक्षी, कस्तूरी सेव	गंदमी रंग, पांव की बीमारियां	खरगोश (मादा)सफर	चिड़ियां, लड़की, सफेद गाय(मंटी), खुसरा सुथरा	नामी छंछूदर
7.	किताबें, दमा, मेंढक, आवारा साधु, खाली हवा, मंदी	लाल गाय (रुहानी खराबी) सफेद गाय (मंदी) काली गाय (मदद दे) भौंडी गाय(शुभ)	खेती की धरती अपनी या जद्दी, मगर आवादी न हो, बर्फ	चरी (सफेद ज्वार) सफेद गाय हर दो प्यार पल	बेले फली वाले पौधें, दाल मसूर, अजवायन, पहला लड़का
8.	अफवाह नकारा, आसमान फकीर का यज्ञदान	रथगाड़ी, सच्ची-पक्की आग अपने आप पैदा हुई	समुद्र, ऊपर की कमाई, मिरगी, मुर्दा दिली	जमीन कंद, गाजर कदर बोंडी, सफेद गाय मंदी	बाजू के बिना बाकी सारा शरीर
9.	जद्दी मकान, मंदिर, मस्जिद गुरुद्वारा, चलती उड़ती गैस	भूरा रीछ, ग्रहण के बाद का सूर्य	जायदाद जद्दी, छुपा समुद्र	दही का सा सफेद रंग, सफेद गाय अशुभ	सूर्ख रंग खूनी
1०.	सुखा पीपल, विद्या हानि, धन की हानि, गंधक	भूरा नेवला, भरी भैंस, शिलाजित	रात का समय, तहज़मीन, आम पानी मगर खारा या कड़वा अफीम	मिट्टी कपास	शहद, मीठा भोजन, खांड
11.	गिल्ट बलमाह	सूर्ख तांबा	चांदी का अनबिद्ध मोती, दूध, रंग, खूनी कुआं, उड़ते बादल	रूई, मोती, सफेद दही रंग का	लाल रंग (सिंदूर)
12.	पीपल का हरा वृक्ष, आम संसार, सांस, आम हवा, पीतल	भूरी चींटी, दिमागी खराबियाँ	खुशामद, सफेद बिल्ली वर्षा का पानी ओले मुश्कपूर	कामधेनु गाय लक्ष्मी चौपाया और गृहस्थी स्त्री का सुख सागर	ऊंची आवाज, हाथी का महावत, गलो (कड़वी बेल)

ग्रहों की सम्बन्धित खानावार चीज़ें

खाना नं॰	बुध	शनि	राहु	केतु
1.	जुबान, सिर का ढांचा	हल्क का कौवा, मंदी ाग, काला नमक, कीकर का वृक्ष गंदा कीड़ा	ठोडी नाना-नानी	टांग, नानका घर, नाभि के नीचे के रोग
2.	लड़कों जैसी लड़की, साबुत मूंग, निंब, साली, बाजा, सामान राग, मटर, खड़ा अण्डा	साबुत माह, काली मिर्च, काले-सफेद चने, चंदन की लकड़ी	हाथी के पाँव की मिट्टी सरसों, कच्चा धुआं	इमली, तिल
3.	भतीजी, चमगादड़, चौड़े पत्तों का वृक्ष वान (दीमक) भूत शक्ति (छिन्द्र, थूहर, मुर्दा रुहें, मंदे बजूद)	खजूर का वृक्ष, कीमती तेन्दुआ, लकड़ी, शाहबलूत, आबनूस, सांगवान	जुबान, जौं, काला रंग संबंधी, हाथी दाँत	रीढ़ की हड्डी, फोड़ा-फुंसी
4.	तोता, कली, खड़ा अण्डा, बुआ, मौसी, कच्चा घड़ा	काले कीड़े, मकान हरस्वप्र का सम., स्वप्र, तरहा का तेल, संगमरमर सफेद, दयार, चीड़, कैल की लकड़ी	समय, स्वप्र, सोया दिमाग, धनिया	सुनना, कान
5.	बांस, फकीर की आवाज़, आशीष, दूध वाली बकरी, पोती	काला सुरमा, बुद्धू लड़का	छत	पेशावगाह
6.	फल, लड़की, मैना, खड़ा अण्डा दोहती आम थोहरा	कच्चा, चील, बिनौले, मेरी का वृक्ष, पत्थर के कोयले	काला कुत्ता, पूरा कालाचिड़ा	खरगोश (नर), प्याज पूजा स्थान, मिट्टी का चबूतरा, चारपाई, लहसुन
7.	हरी घास, भौंडी गाय, मैना, दूसरी चीज़ों का ढांचा या ठप्पा	तहिंदे, काली गाय, आँकें सुरमा सफेद, मसाले	नारीयल	दूसरा लड़का, सूअर, गधा
8.	लेटा अण्डा, मुर्दा, फूल, बहन	बिच्छु, कनपटी, छत के बिना खड़ी दीवारें	झुला, बीमारी, दीवार की अंगीठी का धुआं, मालीखोलिया	कान, सुनने की शक्ति छलावा, धोकेबाज
9.	भूत-प्रेत, चमगादड़ सब्ज रंग, तुतलाना, हरा जंगल	पुरानी लकड़ी, शीशम (टाहली), फलाई, आक, मदार) का वृक्ष	दहलीज़ नीलारंग, घड़ी, हल्क से ऊपर की बीमारियाँ	दो रंगा कुत्ता या कुत्तिया, मगर लाल रंग न हो
10.	दाँत, सूखी घास, शराब, कवाब, सीढ़ियां, मकान, हींग, ढोल (सामान राग-रंग)	मगरमच्छ, सांप, तेल, साबुन, कपड़े धोने की लांडरी	गंदी नाली, टट्टीखाना, भड़भंजे की भट्टी	चूहा
11.	उल्टा तोता, कंठी वाला तोता, सीप, हीरा, फिटकरी	लोहा फौलाद टीन	नीलम, नीला थोथा, शीशा, सिक्का नर्म धातु, एलमोनियम जस्त	छिपकली, मतवन्नख, पलंग, चारपाई, केला (फल)
12.	अण्डे, खिलौने, गंदा (विषैला) अण्डा	बनावटी ताँबा, मछली, तख्तपोश, सिर पर गंज	हाथी, समुद्र का तन्दवा, कच्चा कोयला, पद्म	छिपकली, मतवन्नख, पलंग, चारपाई, केला (फल)

आपसी ग्रहों से सम्बन्धित चीज़ें

वृहस्पति, केतु	-	पीला नींबू।
वृहस्पति, चन्द्र	-	बढ़ का वृक्ष।
सूर्य, चन्द्र	-	बढ़ के वृक्ष का शुद्ध दूध, अलीची फल, तांगा-घोड़ा।
सूर्य, शुक्र	-	लाल मनूर लाला मिट्टी (जो जलकर लाल हुई हो), गाचनी, लाल, काँसी का कटोरा, पानी पीने का बर्तन।
सूर्य, बुध	-	हरा सब्ज पहाड़, लाल फिटकिरी, सफेद शीशा।
चन्द्र, बुध	-	माँ-बेटी, दरिया के पानी में रेत, टेना तोता, हंस पक्षी, कुआँ सीढ़ियों वाला।
चन्द्र, शनि	-	काली स्याही, पानी की बावड़ी (मानिद कुआँ), उल्टा हथियार अपने माथे पर ही लगता रहे, कछुआ, बिगडर हुआ दूध, मोटर लारी या लोहे की सफ़र की चीज़, खूनी कुआँ, दूध में विष।
शुक्र, बुध	-	बनावटी सूर्य, तराजू, मीठा अनार, गेरु, लाल मिट्टी।
शुक्र, शनि	-	काली मिर्च (शनि) और घी (शुक्र),काला मनूर, मिट्टी का खुश्क पहाड़।
मंगल बद, बुध	-	आतशी शीशा, लड़की के लाल चमकीले कपड़े, अनार का फूल।
मंगल नेक, बुध	-	सुभर (लाल कपड़ा जो चमकीला न हो), कंठी वाला राय तोता।
मंगल, शनि	-	नारीयल, छुआरा।
बुध, शनि	-	आम का वृक्ष।
बुध, राहु	-	मलेर (बरगद का वृक्ष, चन्द्र, वृहस्पति) पर आम होता है जो इस वृक्ष के फल को बर्बाद करता है।
बुध, केतु	-	बकरी एक जानवर, जिससे हाथी भी डर कर भागता है।
शनि, राहु	-	साँप की मणि या साँप का ज़हर चूसने वाला मनका।

सम्बन्धित ग्रहों के सम्बन्धी

खाना नं॰	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल
1.	सिंहासन पर बैठा साधु, बाप, दादा, वृ॰ सूर्य एक साथ में वृ॰ पिता, सूर्य पुत्र	अपना आप हम और हमारा हुकम	राजा की रानी	स्त्री के टेवे में पुरुष और पुरुष के टेवे में स्त्री	तलवार का धनी, भाग्य का स्वामी, भाई
2.	जगत् गुरु, पुजारी, स्त्री के टेवे में ससुराल होगी	धार्मिक पेशवा कानूनी ढंग पर	धर्म माता, कोई भी बुढ़िया जो धर्मात्मा के तौर पर मुकर्रर हो	साली (शादीशुदा)	बड़ा भाई
3.	खानदान का मुखिया	मित्रत की बजाए पुलिस के डंडे से मित्र बनाने वाला	साथ घर की माई	भाभी	ताया

4.	राजा, महाराजा पूर्ण ब्रह्म	अपने मुंह की रोटी निकाल कर बच्चों को देने वाला बाप	मौसी या माता	बार-दोस्त की स्त्री (बच्चों की शर्त नहीं)	माता का बड़ा भाई
5.	स्कूल मास्टर	बुद्धिमान, धन तथा भाग्य की शर्त नहीं	जब उकसाई गई तो बिना लड़े न रहे के असूल की माता	ऐसे स्त्री-पुरुष जिन्हें उनके बच्चे, बाप न कहेंगे न मानेंगे	बच्चों के मित्र
6.	बड़ी आयु के अतिथि	जब भड़क उठे जब्त कठिन, लड़े बिना रोटी हज़म न हो	नानी	स्त्री जो रोटी खाने में बहनोई चतुर मगर संतान बनाने में असफल, जो इच्छा तो करे मगर पालना पसंद न करे	
7.	निर्धन मगर ज्ञानी, दिल से बूढ़ा, आयु का चाहे जवान	यह घर क्यों आया, यह आदमी खुश क्यों है की ईर्ष्या का गृहस्थी	गृहस्थी व्यापार का मेलजोल का कोई भी दयालु, जगत् लक्ष्मी	स्त्री के टेवे में पुरुष, पुरुष के टेवे में स्त्री, जो अन्त तक गृहस्थ निभाए	अपना सगा भाई या सगा साला
8.	सांसारिक आयु के हिसाब से हम उस मर्दो में बावे के बराबर का मर्द	सब कुछ मिल गया मगर आशा फिर भी पूरी न हो सकी	ताई	ऐसी ज़ुबान वाली जो कोई संबंधी को ही न माने	छोटी के लिए कसाई भाई
10.	उधारा बाप सिर्फ जन्मदाता	हमारे बराबर का दूसरा कोई नहीं का आदमी	चाची	हर समय धुली-धुलाई बाप का धर्म भाई दुल्हन जैसे रहने को पसंद करे	
11.	अपने आप बिन बुलाए बाप का सहायक	बच्चे निकलने से पहले ही अंडे खा जाने, निर्दय अगर धर्मों तो न्याय का आखिरी दर्ज का ऑफिसर	पेशाव से परिवार तोलने वाली बूढ़िया	पूर मर्द के बराबर वर्ना नामर्द, बीच में नहीं	पिता का फर्ज़ी भाई
12.	बेफिक्र बाप जिसे कल की फिक्र नहीं (असूदा हाल)	बाल-बच्चे बिना नहीं सास जाएंगे के भाग्य का मालिक बाप	सास	लक्ष्मी का कारण	बड़े भाई के खून का प्यासा भाई

1. धन के लिए जोड़ी सलामत नहीं तो यदि धन नहीं तो और जगह देख लेंगे।

सम्बन्धित ग्रहों के सम्बन्धी

खाना नं०	बुध	शनि	राहु	केतु
1.	बड़ी लड़की	एक तरफ का ऑफिसर मेहरबान हो तो तारे वर्ना सब कुछ नीलाम कर दे	बनिया तबीयत का ऑफिसर	इकलौता बेटा
2.	साली (जिसकी शादी न हुई हो)	सुसर का भाई	ससुर मर्द के टेवे में स्त्री का ससुर वृहस्पति से मुराद पूरी होगी	साला
3.	बड़ी बहन	खानदानी मज़दूर, मगर पुश्त से पुश्ती संबंध	धन की दोस्ती को अंत तक निभाने वाला रक्षक	भतीजा

4.	मौसी की लड़की	मौसा	धर्मात्मा माता का छोटा भाई	मौसी का पुत्र
5.	मिली-मिलाई बिना विवाही स्त्री, तारने पर आए तो अति भाग्यवान वर्ना कुल को डुबो दे हर ओर दु:ख के चक्कर की मालिक	बेवफा गुलाम	बच्चों को बेचने वाला व्यापारी	पोता, मामा चाहे छोटा या बड़ा
6.	अपनी लड़की	नाशुके लड़के-लड़कियों का सम्बन्धी	लड़कियों के ससुर	दोहता, भान्जा
7.	गृहस्थी संबंध से आम लड़की जो सब को तारे	सबका सहायक (चाहे अपने चाहे ससुर वंश से हो) अन्धों को आँखें देने वाला	ससुराल के घर वंश में बेहद बोलते जाने की बीमारी का मारा पागल	अपना मगर दूसरा लड़का
8.	बिन बताए सिर काटने वाले श्मशान में रहने वाली लड़की	न किसी के भले में बुरे में	तलवार को पत्थर की जगह शरीर पर ही तेज़ करने वाला कसाई	मौतों के मारे मातम का ही ठेकेदार
9.	अपने बाबे की लड़की मगर अपने ही खून की शर्त नहीं	उजड़ों को बसाने वाला अपनी आयु में बड़ा सम्बन्धी	नास्तिक मित्र टट्टी, पेशाव के लिए मंदिरही पसन्द करे	वंश का पूरा वफादार
10.	दिखाने को तो बहन मगर जब उसका जी चाहे स्त्री बन बैठे और फिर बहन हो जाए पूरी धोखेबाज़	चाचा मगर इज़त मान का मालिक	लेकलाज मौका के अनुसार चलने वाला अपना बड़ा बुजुर्ग	चाचा का लड़का
11.	अपने बार के असली खून की लड़की मगर मंद बुद्धि	पूरा धर्मात्मा और गेरत वाला चौकीदार	ज़ालिम जो कि दो पुश्तों से ही ऐसा हो	यतीमखाना का बच्चा मगर हर तरह से सहायक
12.	हर दो समय और हर दो पुरुष पर और स्त्री के साथ बेया लड़की	भगवान् का भेजा रक्षक और सदा ही तारता जाने वाला दयालु मित्र	रात को न केवल आप दु:खी मगर दूसरों को भी दु:खी करे यानी खुद शरीफ, उसके दु:ख करे यानी खुद शरीफ, उसके दु:ख दूसरों को आराम न लेने दें, (कारण फालतू खर्चा होगा)	हर दु:ख को सुख में बदलने वाला लड़का

सम्बन्धित ग्रहों के सम्बन्धी

खाना नं०	वृहस्पति	सुर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल
1.	कीमीयागर मगर फर्जी दम दलासे पीले रंगों के काम	राजदरबार से सम्बन्धित काम	बाग-बागीचा के काम	राजाओं की स्त्रियों के प्रयोग में लाने वाली चीज़ों के काम	सौंफ का काम लाभकारी, दाँतों से सम्बन्धित वस्तु का काम हानिकारक
2.	मिट्टी के काम सोना देंगे, सोने के काम मिट्टी देंगे यानी बर्बाद कर दे	खाने के अनाज के काम (जौं, ज्वार, बाजरा, गंदम)	चावल, घोड़े से सम्बन्धित काम	आलु, घी, अभ्रक सफेद मुश्कपूर के काम	दरियों से सम्बन्धित काम
3.	विद्या से सम्बन्धित काम	भतीजों के साथ के काम	चरायता खून साफ करने की दवा से	गृहस्थी मन्त्री से सम्बन्धित काम	हाथी दाँत से सम्बन्धित काम

			सम्बन्धित काम		
4.	सोना तथा सिंचाई से सम्बन्धित काम	पानी और रेशम के काम, बुआ के बेटे के साथके काम	बजाजी तालाब, कुआँ, चश्मा से सम्बन्धित काम	चौपाया, चरिंद और दही से सम्बन्धित काम	कड़वे वृक्ष ओर तलवार के काम हानि दें, मृगछाला के काम लाभ दें
5.	खुशबूदार चीज़ों से सम्बन्धित काम	बन्दरों और बच्चों से सम्बन्धि काम	लड़के-लड़कियों की विद्या से सम्बन्धित काम	हिकमत हकीमी	
6.	कीमती पक्षियों से सम्बन्धित काम	दोहते के साथ से काम शुभ	सफ़र से सम्बन्धित वस्तुओं के काम	पक्षियों के काम हानि दें, गुड़ और गैस के काम लाभ दें	पेट से सम्बन्धित सामान और बीमारी से सम्बन्धित काम
7.	किताबों के काम और वह काम जिनसे दमा हो जाता है, हानि देंगे, मगर दूध और दही के काम लाभ देंगे	गाय का व्यापार, मंदा चाँदी का, दूध का काम लाभ देगा	खेती और मकान के नीचे से सम्बन्धित काम, बर्फ से सम्बन्धित काम	फल खेती के काम, चरी, काँसी के बर्तन, गाय से सम्बन्धित काम	दाल मसर, फलीदार पौधे अजवायन के काम
8.	पहाड़ी इलाके से सम्बन्धित काम	रथ गाड़ी से सम्बन्धित काम	समुद्र से सम्बन्धित काम	ज़मीन के नीचे होने वाली सब्जीयों के काम	मकान के काम, जिन चीज़ों में मशीन का सम्बन्ध न हो
9.	धर्म स्थान के काम, पूजा का सामान, गैस के काम	पशुओं से सम्बन्धित काम	जायदाद जद्दी से सम्बन्धित काम	शकरकन्दी, मिठाई मगर हलवाई बनने की शर्त नहीं, तमाम फलीदार चीज़ों के काम	सभी फलीदार चीज़ें, खुश्क फल मेवे, लाल सुर्ख रंग और खून से सम्बन्धित चीज़ों के काम
10.	लोहे से सम्बन्धित काम	मकान और भैंस से सम्बन्धित काम	नशे की चीज़ें, पानी में धुली दवाएं हानि दें, खुश्क दवा, मनोरंजन की चीज़ें लाभ दें	मिट्टी और कपास के सम्बन्धित काम	शहद, मीठे भोजन के सम्बन्धित काम
11.	रोल्डगोल्ड, गिलट से सम्बन्धित काम	ताँबे से सम्बन्धित काम	मोतियों (दूध रंग) से सम्बन्धित काम	रुई मोती (दही रंग) सफेद, दही रंग की चीज़ों से सम्बन्धित काम	सिन्दूर (लाल धातु) से सम्बन्धित काम
12.	पीतल या पीतल से सम्बन्धित काम	आटा, चक्की पीसने से सम्बन्धित काम	पालतू जानवरों के काम आम पानी से सम्बन्धित काम मंदा फल दे	पशुओं और स्त्रियों के रात के आराम के सामान से सम्बन्धित काम	गलो और कड़वी दवाईयों से सम्बन्धितकाम

सम्बन्धित ग्रहों के काम

खाना नं॰	बुध	शनि	राहु	केतु
1.	जीभ, सिर के ढांचे से सम्बन्धित काम	हल्क से सम्बन्धित काम लाभ दें, कीकर के वृक्ष के काम हानि दें	धुएं के काम या नाना-नानी के साथ काम हानि देंगे	नाभि से नीचे की बीमारियों से सम्बन्धित सामान के काम
2.	मूंग, ऐशोइश्रत राग के, निब के, अंडों से सम्बन्धितकाम	साबुत माह उड़द से सम्बन्धितकाम	सरसों से सम्बन्धित काम	इमली, तिल से सम्बन्धितकाम
3.	दमे का डॉक्टर, भतीजी को सहायता देने से व्यापार लाभकारी	नज़र का डॉक्टर खजूर के वृक्ष से सम्बन्धित काम	कोयले से सम्बन्धित काम हाथी, दाँत का काम हानि दें	फोड़े-फुंसियों की बीमारियों से सम्बन्धित सामान के काम
4.	तोता, कली (बर्तनों वाली) कच्चे घड़े से सम्बन्धित काम	हर प्रकार के तेल, सफेद संगमरमर मकान से सम्बन्धित सामान के काम, मगर मकान नहीं	लैक्चर, कथा वार्ता से सम्बन्धित काम	बहरेपन का इलाज
5.	बांस से सम्बन्धित काम, की मदद से हरदम बरकत (लड़कियों की सेवा से)	काले सुरमे से सम्बन्धित काम	मकान की छतों के काम हानि देंगे, बिजली के बड़-बड़े काम लाभ दें[1]	पेशावगाह से सम्बन्धित काम
6.	फल से सम्बन्धित काम, स्टेशनरी की दुकान	बिनौले, पत्थर के कोयले, इंजीनियरिंग से सम्बन्धित काम	पालतू कुत्तों का सामान	खरगोश पूजा स्थान के समान चारपाई, लहसुन, प्याज़ से सम्बन्धित काम
7.	हरी घास, पट्ठे और ढांचे से सम्बन्धित काम	नज़र की चीज़ों से सम्बन्धित काम	चाँदी से सम्बन्धित काम ज़ंजीरी आदि	सूअर, गधे से सम्बन्धित काम
8.	सब व्यापार हानि देंगे मगर खांड या खाने-पीने के काम सहायक	विषैली चीजें संखि अफीम, चरस से सम्बन्धित	झूला, पागलों और बीमारियों से सम्बन्धित काम	केतु से सम्बन्धित काम हानिकारक
9.	जंगली वृक्षों के काम हानिकारक पुराने/बुजुर्गो लिटरेचर के काम सहायक	पुरानी लकड़ी टाहली शीशम या फलाही के सामान से सम्बन्धित काम	हल्क से ऊपर की बीमारियों से सम्बन्धित काम	कुत्तों का व्यापार लाभदायक
10.	दाँत के काम तथा शराब की दुकानें, ढोल व राग से सम्बन्धित काम	दरियाई जानवरों से सम्बन्धित काम	स्वास्थ्य सम्बन्धों वस्तुओं से सम्बन्धित काम	मकान की नीवों से सम्बन्धित सामान के काम
11.	सीप, हीरे, फिटकरी के काम अदालतों से सम्बन्धित काम	रेलवे, मकानों तथा लोहे से सम्बन्धित काम	नीलम, नीला थोथा, सिक्का (नर्म धातु) एलमोनियम जस्त हानि दे, सोना लाभ दे	दोरंगे कीमती पत्थरों से सम्बन्धित काम
12.	खिलौनों के काम लाभदायक, सट्टा के काम हानिकारक	तख्तपोश या बादाम से सम्बन्धित काम	हाथी से सम्बन्धित सामान लाभदायक, कच्चे कोयले के काम हानिकारक	ऐश आराम बच्चों के खेलों और खुशी पैदा करने से सम्बन्धित काम

1. जो राज्य से सम्बन्धित हो या बहुत बड़ी अपीलों से सम्बन्धित काम लाभदायक।

हर ग्रह से संबंधित मकान

वृहस्पति का मकान :-

वृहस्पति हवा के रास्तों से संबंधित होगा। मकान का सेहन किसी एक कोने में होगा। चाहे शुरू में, चाहे आखिर में, चाहे दाएँ या बाएँ मगर बीच में न होगा। *मकान का दरवाज़ा उत्तर-दक्षिण न होगा। हो सकता है कि पीपल का वृक्ष या कोई धर्म स्थान मंदिर, गुरुद्वारा आदि मकान में या मकान के बिल्कुल साथ ही हो।*

सूर्य का मकान :-

सूर्य रोशनी के रास्ते बतलाएगा। मकान का दरवाज़ा पूर्व की ओर होगा, सेहन मकान के बीच होगा। आग के संबंध सेहन में होंगे। हो सकता है कि पानी का संबंध मकान से बाहर निकलते हुए दाएँ हाथ पर सेहन में ही हो। इधर-उधर किसी अैर जगह न होगा।

चन्द्र का मकान :-

चन्द्र ज़मीन धन-दौलत का स्वामी है और सूर्य से मिलता है। मकान के प्रथम तो अंदर ही वर्ना मकान के बाहर की चार दीवारी के साथ लगा या लगता हुआ और अगर दूर भी हो तो जातक के अपने 24 कदम तक उस मकान से और उस मकान के बिल्कुल सामने कुआँ हैंडपम्प या तालाब आदि या चलता हुआ पानी ज़रूर होगा। *ज़मीन के अंदर से कुदरती पानी को चन्द्र लेंगे, बनावटी नलका चन्द्र न होगा। झरने आदि चन्द्र गिने जाते हैं।*

शुक्र का मकान :-

मकान के संबंध में यह ग्रह सूर्य के विरुद्ध होगा। ड्योढी का शहतीर उत्तर-दक्षिण की दिशा में होगा। मकान में कच्चा हिस्सा ज़रूर होगा दरवाज़े भी उत्तर-दक्षिण में होंगे। उसका सबूत सफेद कली चूने का हिस्सा और पलस्तर से होगा।

मंगल नेक का मकान:-

यह ग्रह वृहस्पति, चन्द्र, सूर्य के साथ चलता है मगर उनके दाएँ या बाएँ और चौकीदार के समान होगा। मकान का दरवाज़ा उत्तर-दक्षिण होगा, कच्चे या पक्के होने की शर्त नहीं। स्त्री-पुरुषों, जानदारों के आने-जाने की बरकत देगा।

मंगल बद का मकान :-

मकान का दरवाज़ा सिर्फ दक्षिण में होगा। मकान के साथ या मकान के ऊपर वृक्ष का साया, आग हलवाई की दुकान और भट्टी का साथ होगा मकान में या मकान के साथ श्मशान, कब्रिस्तान होगा। लावल्दों का साथ होगा और हो सकता है कि खुद ही वह इंसान काना, नि:संतान हो, अगर किस्मत भली होगी तो उसे उसमें रहने का मौका भी न मिलेगा।

बुध का मकान :-

मकान के चारों तरफ दायरे में हर तरफ से खाली या खुला होगा अकेला ही होगा, चौड़े पत्तों के वृक्षों का साथ होगा। वृहस्पति या चन्द्र के वृक्ष का साथ न होगा औरर अगर होगा तो वह घर बुध की दुश्मनी का पूरा सबूत देगा। *(पीपल का वृक्ष वृहस्पति, बरगद वृहस्पति-चन्द्र, शहतूत या लसूड़ा बुध होता है)।*

शनि का मकान :-

मकान में यह ग्रह चार दीवारी से संबंधित होगा। सूर्य के उल्ट चलता है, *मकान का बड़ा दरवाज़ा पश्चिम की ओर होगा। (अंदर के दरवाज़े किसी भी ग्रह में नहीं माने गये हैं)। मकान की सबसे आखिरी कोठड़ी जो बाहर से मकान के अंदर दाखिल होते वक्त दायीं हाथ की ओर हो, पूरी अंधेरी होगी।* जिस दिन उसमें रोशनी का प्रबंध न हो शनि का फल उत्तम रहेगा। जिस दिन थोड़ी सी भी रोशनी या सूर्य के आने का प्रबंध होगा, सूर्य, शनि का झगड़ा हुआ, वह घर बर्बाद हो गया। मकान में पत्थर

गढ़ा होगा। पहली दहलीज़ पुरानी लकड़ी या शीशम कीकर, बेरी पलाई आदि की होगी। नए ज़माने की लकड़ी आदि की न होगी। छत पर भी पुरानी लकड़ी का साथ आम होगा। हो सकता है कि इस मकान में स्तम्भ या मीनार का साथ हो।

राहु का मकान :-

(बालिगों से संबंधित बीमारियां झगड़े राहु, छत, बलाये बद) बाहर से अंदर जाते समय उस मकान में दाएँ हाथ पर कोई गुमनाम गढ़ा होगा। ***बड़े दरवाज़े की दहलीज़ के बिल्कुल नीचे से मकान का पानी बाहर निकलता होगा। मकान के सामने का पड़ोसी संतान रहित होगा या उस मकान में कोई रहता नहीं होगा। मकान की छतें कई बार बदली गई हों, पर दीवारें न बदली गई हों। मकान के साथ लगती भड़भूँजे की भट्टी हो, कोई कच्चा धुआँ, गंदा पानी जमा करने का गढ़ा साथ हो।***

केतु का मकान :-

बच्चों से संबंधित, केतु खिड़कियां, दरवाज़े बतायेगा। बुरी हवा अचानक धोखे, कोने का मकान होगा। तीन तरफ मकान एक तरफ खुला या तीन तरफ खुला एक तरफ कोई साथी मकान या खुद उस मकान की तीन तरफें खुली होंगी। केतु के मकान में नर संतान चाहे लड़के चाहे पोते तीन से अधिक न होंगे। ***अगर एक लड़का तो तीन पोते अगर तीन लड़के तो एक पोता या एक ही लड़का और एक ही पोता कायम होगा। इस मकान के दो तरफ जाता हुआ रास्ता होगा साथ का हमसाया मकान कोई न कोई ज़रूर गिरा हुआ बर्बाद या कुत्तों के आने-जाने का खली मैदान बर्बाद सा होगा।***

हर ग्रह का संबंधित इंसान

वृहस्पति का इंसान :-

वृहस्पति के ग्रह के प्रबल होने वाले इंसान का माथा चूहे के माथे की तरह तंग न होगा और न ही वह दमें की बीमारी वाला या नाक कटा हुआ होगा। उसका बोलना-चालना आदि गुरु की तरह गंभीर शाही नेक होगा। हाथ की तर्जनी लम्बी होगी, कटी हुई या रद्दी न हो चुकी होगी। स्वाभाव में किसी से प्यार की बू न होगी। सुथरे की तरह रुखापन न होगा और न ही कसाई की तरह काटने वाला कसाई होगा। हाथ में अंगुलियों के जोड़ मालूम न होंगे और नाखुन वाली पोरी नोकीली होगी। धर्म पर मर मिटने वाला होगा। भाग्य जो करेगा देखा जायेगा का हामी होगा। ऐसे व्यक्ति से किसी को लाभ न होगा क्योंकि वह आदत का लापरवाह होगा। धनी हालत मध्य दर्जे की होगी अर्थात् रुहानी हाथ होगा।

सूर्य का इंसान :-

सूर्य प्रबल वाला अंगहीन न होगा। रंग गंदमी। आँख शेर की तरह चमकती हुई मगर डरावनी नहीं। कद लम्बा जिस्म पतला मगर मरीयल जैसा नहीं। हर तरह की मुसीबत सहने करने वाला और शक्तिशाली होगा। चेहरा लम्बा और माथा चौड़ा चलने में जिस्म का पहले दायाँ हिस्सा चलाने वाला। शक्ल से भोला मगर अंदर से गर्म तबीयत। कामदेव का पूरा नेक होगा। शराब से दूर रहने वाला और शरारत का माकूल जवाब देने वाला होगा। हर बात में पहले हिस्सा लेने वाला होगा। हाथ चौड़ा अंगुलियों के बीच में जोड़ मोटे, सिरे गोल। ऐसा व्यक्ति मेहनती इरादे का पक्का जिस बात पर अड़े पीछे न हटे।

चन्द्र का इंसान :-

चन्द्र जैसा प्रबल वाला सफेद रंग दूध की झलक वाला, दही की सफेदी नहीं शांत स्वभाव, चौड़ा चेहरा और घोड़े की तरह आँखों वाला। दूसरे की बात में हाँ में हाँ मिला कर उसका नर्म सा जवाब देकर उसके दिल को मिला कर अपनी तरफ कर लेने वाला होगा। पहनने के कपड़ों में सफेदी पसंद करेगा । जिसका निचला भाग नाभि के नीचे पले हाथी की तरह भारी भद्दा मगर बेडौल न होगा। अंगूठा छोटा, अंगुलियां तराशी हुई तो पशुपालन का शौकीन होगा और पशुओं से ही लाभ उठायेगा।

शुक्र का इंसान :-

शुक्र प्रबल वाला, रंग सफेद (दही के सफेद रंग की झलक दूध की नहीं), चेहरा गोल आँखें बैल की तरह खूबसूरत मगर मस्ताना और आशिकाना ढंग की तबीयत से ऐशपरस्त, कोई रोए कोई ढोए वह अपने आपको स्त्रियों की भाँति सवांरता ही रहे। अंगुलियाँ नोकदार और जोड़ मोटे तो हुस्न पर मर मिटने वाला होगा।

मंगल नेक का इंसान :-

मंगल प्रबल वाला एक तरफ तबीयत वाला। दोनों होंठ एक से, आँखें लाल शेर की तरह डरावनी और खूंखार, वृहस्पति की और सूर्य की निशानियां साथ मिलती सी हो, ऊपर से गुम्बद की तरह ऊपर को उभरा हुआ भारी मगर नीचे से पतला चौकोर हाथ, अंगुलियों के सिरे चौड़े, इरादे का पक्का, हुकूमत का इच्छुक।

मंगल बद का इंसान :-

मंगल बद वाला जला कसाई, हाथ पर आग़ और छुरी हाथ में लिए फिरता और लड़ाई को ढूँढ़ करके पा लेने वाला। आँखें शेर की तरह सुर्ख मगर हिरण की तरह पीली हों। यानी दोनों हालत में पता न चले कि किस से मिलती हैं। जातक का कद काठ उत्तम, आयु लम्बी, खुद न जले मगर जिस जगह उसका कदम जाये वहाँ साल की दोनों फसलें बर्बाद हो जायें। आवाज़ में दहाड़ों की गूँज का भारीपन। अपने आप में ही मौत का यम होकर चलने वाला। अंगूठा लम्बा अंगुलियों के सिरे चौरस हों तो झगड़ालू होगा।

बुध का इंसान :-

बुध के ग्रह प्रबल वाला कबूतर की आँखों से मिलती आँखों वाला मगर डरपोक, चाल में मिसकनी बिल्ली की तरह, जवान मासूम लड़कियों की तरह होगा। मगर शक्ति जादू की, दाँत शानदार, नकल करने या स्वांग भरने की शक्ति वाला कमाल का होगा। ज़ुबान होंठों पर फेरते रहने की आम हालत होगी। *बातचीत में तेज़-तेज़ बातें करता होगा और हवाई किले बना देगा मगर बकवासी या गप्पी न होगा। हरेक को अपना साथी बना लेगा मगर खुद लीडर बनने वाला न होगा। ज़ुबान का चस्का ज़्यादा मगर खुराक कम, सुन्दरता का पुजारी और ज़्यादा चीज़ों की परवाह नहीं। अंगूठा लम्बा, अंगुलियों के जोड़ बाहर को या मोटे, हथेली का कनिष्ठका के नीचे का हिस्सा बाहर को निकला हुआ। बातों की जड़ तक पहुँचने वाला।*

शनि का इंसान :-

शनि प्रबल वाला साँप स्वभाव, आँखें साँप की तरह गोल, रंग काला या कालिमा लिए होगा। भवों में लेटी लकीर की तरह सीधी या भवों पर बाल कम, साँप की तरह टक-टक करने वाला। आँखें देर से झपकने वाला। बात में पता न लगने दे कि उसका असली मतलब क्या है। चारों तरफ घूम जाने वाला। अगर दूसरे की मदद करने लगे तो अपना सब कुछ देकर भी उसका काम कर दें। *पक्का हठधर्मी होगा और यदि उल्ट होगा तो मुकाबले वाले का सब कुछ बर्बाद कर दे और सिर्फ सांसारिक तमाशा दिखाने वाला होगा चाहे शत्रु का और अपना कुछ न बने। सुनने की बजाए आँखों से काम लेगा और दूसरों पर साँप आ निकलने की तरह डर पैदा कर देगा। कान छोटे और जुदा बैठने का आदि होगा।*

राहु का इंसान :-

राहु का प्रबल वाला बुलंद ठोडी रंग का पूरा काला, अगर राहु उच्च हो तो रंग काला न होगा। मगर सब राहु में इस जगह लिखी बातें ज़रूर हो, प्रायः काना, काला और लावल्द होगा। टेढ़ा चलने वाले हाथी का जिस्म तथा हाथी की सी मिलती हुई आँखों वाला। स्वभाव में कच्चे धुएँ की तरह बेआरामी होगा। जिस तरफ मिल गया वहीं तरफ दूसरी तरफ का नाश करने वाला होगा। दिमाग़ शक्ति सदा शरारत और बर्बादी का ढंग तलाश कर देगी। खाद्य अन्न अधिक मगर चस्का कम। चीज़ों की ज़्यादती का शौकीन मगर उनकी सुंदरता की परवाह नहीं, मिसकनी बिल्ली की तरह अगर उसे उड़ने के लिए पंख मिल जायें तो वह चिड़ियों का बीज़ नाश करना शुरू कर दें। बिल्ली की तरह उसे मकान से प्यार होगा मालिक की जान से प्यार नहीं होगा।

केतु का इंसान :-

केतु प्रबल वाला बड़े-बड़े कान भवों के बीच का भाग उठा हुआ। ऊपर से बाहर को उभरा हुआ सा शरीर मज़बूत, टाँगें भारी। *शरीर उसका गाजर की तरह नीचे से मोटा ऊपर से पतला। स्वाभाव कुत्ते, सुअर, साधु की तरह होगा।*

हर ग्रह से संबंधित रेखा

वृहस्पति की रेखा:-

वृहस्पति का असर निशान Ψ है जो सबसे उत्तम और अकेले प्रभाव का है।

कद (वृहस्पति) :-

पुरुष का कद लम्बा हो तो धर्मात्मा नर्म दिल, स्त्री का लम्बा हो तो सादा व भोला स्वभाव। अपनी अंगुली की नाप से तीन अंगुली की एक गिरह, 4 गिरह की एक बालिशत, 2 बालिशत का एक हाथ, दो हाथ का एक गज़ यानी 36'' या 48 अंगुली। एक अंगुली = 3/4, मगर अपने हाथ के नाप से हो। कुल हाथ को कुल इंच को 4/3 से गुणा करें तो अंगुलियों की गिनती होगी।

68 अंगुली बदनसीब, 42 भाग्यशाली, विस्तार नीचे दिए गए टेबल में देखें :-

अपना कद	उम्र के वर्ष	
90	30	
91	35	
92	40	
93	45	
94	50	
95	55	
96	60	
97	65	
98	70	
99	75	
100	80	
101	85	एक अंगुली = 5
साल		
102	90	
103	95	
104	100	
105	105	
106	110	
107	115	
108	120	

सूर्य की रेखा

सूर्य का सितारा चमकता हुआ : सूर्य उच्च होता है। सूर्य रेखा बादल के पीछे छुपा सूर्य=सूर्य अपने घर का हुआ करता है। सूर्य पर चक्र से अर्थ सूर्य, बुध मुश्तरका होंगे या सूर्य खाना नं० 5 का होगा और बुध का जुदा असर सारी उम्र ही न होगा। ऐसे व्यक्ति का बुढ़ापा उत्तम होगा। मौत अचानक होगी। सूर्य के चक्कर और सितारों में फर्क यह है कि असर का दर्जा इस चक्र का सितारे से कम होगा। सितारा सदा अपने लिए शुभ होगा। सूर्य रेखा जिस कदर शाखी होगी। सूर्य की किरणों की ताकत और असर की दृढ़ता अधिक होगी। अगर सूर्य रेखा अपने बुर्ज से चल कर सूर्य पर ही खत्म हो तो सूर्य का असर नं० 5 का होगा जो कि सूर्य का अपना घर है, अगर दिल रेखा पर खत्म हो तो खाना नं० 4 चन्द्र से संबंध हो। अगर आयत में खत्म हो तो (खाना नं० 6) केतु के साथ संबंध होगा। सिर रेखा पर समाप्त हो तो सूर्य खाना नं० 7 (बुध) का संबंध होगा और अगर आगे बढ़ कर बचत के खाना नं० 11 में हो तो वृहस्पति का संबंध होगा। और अगर और बढ़ कर चन्द्र पर खत्म हो तो ख़ाना नं० 4 फिर वही चन्द्र का संबंध होगा। हर हालत में मगर शनि की अर्ध रेखा का संबंध होगा।

चन्द्र की रेखा

चन्द्र सदा राशिफल का होता है और खासकर तीन घरों में यानी खाना नं० 8 मौत से बचाना, खाना नं० 7 धन देना, खाना नं० 3 युद्ध के मैदान में हर तरह की मदद देना। घोड़ा केवल तीन बार जागता है।

अंग फड़कना :-

दायाँ शुभ, बायाँ अशुभ। अगर 4-43 दिन लगातार तो कोई मतलब न होगा, बाय बादी की चीज़ होगी।

आँख - चन्द्र का खाना नं० 4 :-

क्रमांक	आँखें	प्रभाव
1.	बढ़ी हुई बाहर को उभरी हुई और हल्का रंग	नेक स्वभाव जल्दी समझने वाला और रुहानी ताकत वाला होगा ।
2.	छोटी, गोल धंसी हुई या गहरी और हल्का रंग	स्वार्थी और मक्कार, शरारती और तेज़ स्वाभाव होगा ।
3.	किसी जानवर जैसी	उसी जानवर के स्वभाव और शक्ति वाला होगा ।
4.	छोटी	दिल की तंगी को दर्शाती हैं ।
5.	लम्बी	दिल का बड़प्पन दर्शाती हैं ।
6.	गोल	लम्बे सफ़र या एक सफ़र में कई साल एक जगह लगाएं ।
7.	गहरी	खुदगर्ज बेवफा होगा ।
8.	गोल गहरी और काली	साँप के स्वाभाव जैसा होगा ।
9.	गोल गहरी और भूरी	कई विवाह फिर भी स्त्री का सुख न हो ।
10.	अगर ऊपर लिखी आँख के साथ कहीं तालू और ज़ुबान भी काली हो जाये यानी काले का साथ हो तो परमात्मा ही बचाए उड़ कर काटने वाला साँप होगा, लावल्द होगा। जहाँ पर जाए वहीं पर खाक कर देगा ।	
11.	बड़ी और चमकदार	बुद्धिमता की निशानी होगी ।
12.	लाल	भड़कने की शक्ति रखें ।
13.	धीमी झलक मारती हुई	समझने की शक्ति का सबूत है ।
14.	नर्म दृष्टि	नर्म स्वाभाव वाला होगा ।
15.	हरी आँख	जल्दी समझने वाला होगा ।
16.	अंधा	स्वार्थी होगा ।
17.	काना	बुरे स्वाभाव वाला होगा ।
18.	भैंगा	सबसे बड़ा फरेबी होगा ।
19.	बिल्ली	खोटे काम करने वाला होगा ।

शत्रु ग्रह और चन्द्र दोनो का ही फल मंदा होगा जब चन्द्र बाद के घरों में और शत्रु पहले घरों में हो। चन्द्र का असर बुरा होगा शत्रु पर कोई प्रभाव न होगा। चन्द्र के असर के समय शुक्र और बुध और उसका आधा समय और शक्ति भी आधी खराब कर देते हैं मगर अपनी शक्ति पूरी रखते हैं। बाकी ग्रह पूरा-पूरा असर करते है। चन्द्र को सूर्य का साथ मिलने पर सूर्य का फल हो जाता है और दोनों का ही उत्तम होगा। सूर्य के समय चन्द्र अपनी अलग रोशनी जाहिर नहीं करता और सूर्य से ही प्रकाश लेगा। चन्द्र के साथी या मुकाबले वाले पापी ग्रह हो जाये तो चन्द्र का अपना फल तो जातक के लिए उत्तम मगर वह दूसरे की मुसीबत देखता हुआ बेचैन होगा। अकेले चन्द्र के सामने बुध, वृहस्पति या सूर्य, बुध हो तो समुद्र पार सफ़र का बुरा परिणाम होगा।

अगर चन्द्र से बुध की ओर मंगल बद तक ही रेखा रह जाये तो हौंसले वाला, लम्बे-लम्बे समुद्री सफ़र करने वाला जिनके परिणाम नेक हों। अगर यह रेखा बुध की ओर रुख करे तो व्यापार से लाभ, सूर्य की तरफ करे तो सरकारी काम के संबंध से लाभ

होगा। अगर यह चन्द्र के बुर्ज की रेखा किस्मत रेखा में न मिले और सूर्य या शनि के बुर्ज पर जा निकले तो जीवन अति मंदा होगा। लाखोंपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता रहेगा।

उम्र के भाग :-

खाना नं० 1 :- आयु का पहला भाग 1 से 25 साल की आयु।

खाना नं० 2 :- समय की हवा को जानने या वृहस्पति का समय।

खाना नं० 3 :- पहली अंगुली तर्जनी की तीनों राशियों को इकट्ठा लिया हुआ असर जीवन का पहला हिस्सा या समय की हवा की जानकारी या वृ० का समय है जो 25 साल तक गिना है। दूसरी अंगुली अनामिका की राशियों से सूर्य का संबंध गृहस्थ का संबंध 25 से 5 तक खुद कमाई आदि होगा। तीसरी कनिष्ठका की तीनों राशियों का असर साधुपन या गृहस्थियों को उपदेश 5-75 साल तक, चौथी अंगुली मध्यमा की तीनों राशियों का असर 75-1 साल तक वानप्रस्थी होगा।

खाना नं० 4 :- आयु का दूसरा भाग गृहस्थ जवानी 25-5 साल की उम्र।

खाना नं० 5 :- गृहस्थी परिवार की उन्नति खुद कमाए आदि और सूर्य का समय।

खाना नं० 6 :- हरेक अंगुली की तीनों गांठों से तीन लोक या तीन काल या ज़मीन-आसमान या पाताल के कामों से अर्थ होगा। अंगुली के नाखून वाली पहली पोरियों या गांठों पर चक्र शंख सिदफ वर्तमान समय के कामकाज़ बताते हैं।

खाना नं० 7 :- आयु का तीसरा भाग 50-75 साल की आयु।

खाना नं० 8-9 :- साधुपन या गृहस्थियों को उपदेश का ज़माना, बुढ़ापा संन्यास।

खाना नं० 1-11-12 :- चौथा हिस्सा 75 से आखिरी आयु तक वानप्रस्थ, आखिरी अवस्था।

खुशी :- खाना नं० 1-4-7-1 के ग्रह सदा अपने असर से संबंधित चीज़ों में खुशी दिखाते हैं बाकी सभी खानों के ग्रह अपनी-अपनी चीज़ों के संबंध में दु:ख का कारण करने कहने वाले होते हैं। ***(खुशी खाना नं० 4, ग़मी खाना नं० 1 है)।***

सूर्य दिन का स्वामी शनि रात का, रात का स्वामी चन्द्र भी हैं अत: रात के आराम में चन्द्र और शनि का झगड़ा हुआ या यों कहें कि सूर्य प्रकट शक्ति का स्वामी हैं तो चन्द्र छुपी शक्ति का स्वामी है। सूर्य सामने होकर मदद करता है तो शनि नीचे से अंदर-अंदर मदद करता है। मगर बुरा करने के समय दोनों का असूल उल्टा है यानी चन्द्र और शनि दोनों हरेक ही छुपे-छुपाये चलते हैं और मदद देते हैं।

चन्द्र खाना नं० 4 का स्वामी है और शनि खाना नं० 10 ग़मी का। अपनी खुशी का खाना नं० 4 और ग़मी का खाना नं० 10 संबंधित होगा। मुट्ठी का अंदर और बाहर संसार से संबंधित मनुष्य का संबंध होगा। खाना नं० 1 शनि का है जो चारों तरफ चलता है। इस खाने से खुद की मगर पिता के संबंध की खुशी जब यह खाना मुट्ठी के अंदर का होगा और जब ग़मी में लिया तो दूसरी दुनियादारों से संबंधित हुआ। अत: अंगुलियों की पोरियों तक की लकीरें (चन्द्र के निशान) 32 खुशी के होंगे। जिनके मुकाबले पर शनि भी उसी ताकत का होगा यानी जितने निशान हो सिर्फ एक ही हाथ पर उनमें से 12 घटाएं जो चन्द्र की 12 राशियों की खुशी है जो बाकी के अंक वाले राशि के घर का असर होगा। शून्य बाकी बचने की हालत में शनि अपने पक्के घर खाना नं० 1 का ही होगा जैसा कि नीचे वाली टेबल में है।
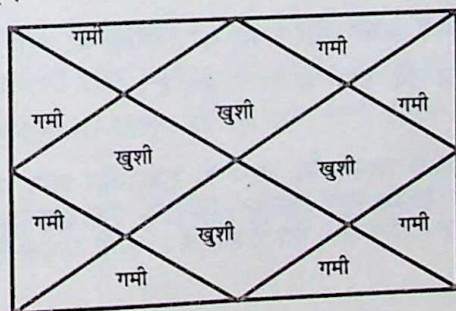
-खाना नं० जिसमें शनि फल दे	निशान गिनती में हों
1̀	12
1	13
2	14
3	15
4	16
5	17
6	18
7	19
8	2̀
9[1]	21[2]
1̀	22
11	23
12	24

1. कोई फकीर हो।

2. आगे साधु हो।

शुक्र की रेखाएं :-

शुक्र हरेक और हरेक के सुख का स्वामी है जो राहु, केतु के मुश्तरका असर का नतीजा जिसमें बुध का असर सदा मिला हुआ गिना जाता है। खुद इस ग्रह का नतीजा केतु है। न इस ग्रह ने किसी को नीच किया और न ही केतु ने किसी को जान से मारा। इस ग्रह की आम मियाद तीन साल के दौरे के समय में पहले साल मंगल प्रबल दूसरे में खुद का अपना (राहु, केतु का मुश्तरका असर) और अंत में खाली बुध का असर होगा। बुध (लड़की), शुक्र (जिस्म की मिट्टी), मंगल (खून) बच्चा पैदा करने की ताकत माने गये हैं, यानी लड़की के जिस्म में जिस दिन से बच्चा पैदा करने की शक्ति पैदा हो गई हो उस दिन से यह ग्रह राहु, केतु के मुश्तरका लड़ाई मैदान शुक्र के नाम से गिना जायेगा और शुक्र के नतीजे केतु (लड़के, बच्चे) की छलावे की तरह के रंग-ढंग पैदा कर देंगे। बुध कुण्डली के किसी भी घर में जब शुक्र से अलग हो अपना फल वहाँ से जहाँ से बुध बैठा हो उठा कर शुक्र में मिला देंगे। (देखें बुध का अध्याय)। शनि जब कभी भी शुक्र के मित्र-शत्रु ग्रहों की दृष्टि में साथ हों तो ऐसे मिलाप में शनि का असर भला-बुरा स्त्री पर होगा।

कलाई रेखा या मंगल, शुक्र मुश्तरका :-

अंगुली के जोड़ों पर शुक्र पर चन्द्र का असर देगी। यानी मंगल, चन्द्र के घर या राशि, पक्का घर मुश्तरका ग्रह या साथी होने की हालत या दृष्टि से मुश्तरका होने की हालत पर शुक्र, चन्द्र का काम देगा। जिस चन्द्र में कि चन्द्र के शत्रुओं का नामों निशान न होगा या शुक्र ऐसे चन्द्र का काम देगा जो शुक्र के अनिवार्य भागीदार ग्रहों बुध और केतु पर उल्ट चलेगा, मगर माता भाग में नेक असर का काम देगा या अब शुक्र एक ऐसा बीज होगा जिसकी खाल (त्वचा) पानी से न गलेगी या वो पूर्णिमा का चाँद होगा जो सूर्य की रोशनी या मदद की परवाह न करेगा। सांसारिक विचार में तालाब (बंद पानी) की चिकनी मिट्टी होगी, जो शुक्र, चन्द्र से पशुओं के पेट की सब बीमारियों को आराम देगी, वर्षा में छत पर से न धुलेगी या खाना नं० 8 के मंदे असर भी नेक करेगी, खुद जातक के लिए मगर बुध, केतु या खुद शुक्र से संबंधित चीज़ों के मदद करने की शर्त न होगी। शुक्र बीज कहलाता है। शुक्र के बुर्ज का संसार से कोई संबंध नहीं इसे तो सिर्फ प्यार और असल प्यार से संबंध है। इसको दही से मिलाया गया है जिससे घी भी बन जाता है। इससे कुटुम्ब का जन्म और पालना भी संबंध है, इसके असर का समय आराम और गृहस्थ का समय है।

शुक्र रेखा :-

शुक्र रेखा वाले को गुस्सा (सूर्य की तरह) तबाह करता और तराजू की निष्पक्ष की तरह तबीयत आबाद करती है। चन्द्र और वृहस्पति ने बड़ा असर किया। शुक्र जब तक शनि के मंदे कामों से दूर है शुभ है।

शुक्र आँख एक, काम दो :-

अगर दो कतारें लगा दें और पढ़ाने गुरु वृहस्पति सामने बैठ जायें तो शुक्र और शनि, सूर्य को सदा धक्का मारने वाले होंगे। मगर वो है बैठा वृहस्पति के पास अत: उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। शनि के एक तरफ चन्द्र और मंगल दूसरी तरफ सूर्य और पीठ पीछे शुक्र है जो एक आँख से काना है और हरदम शनि शनि को छेड़ता है। कभी कहता है मुझे नज़र नहीं आता देख कर बता

दो। कभी कहता है मैं दूर बैठा हूँ मुझे पूछ कर बता दो। गोया स्त्री शनि को हरदम साथ रखती है और आँख से शरारत करती है। शनि की आँख देखती है कि कहीं गुरु देख न लें और कभी देखती है कि दूसरे साथी न देख लें वह दिखलावे का इतना जाहिरदार है कि शुक्र की बदसूरती जाहिर भी नहीं करना चाहता। मगर शुक्र, शनि के हरदम साथ होने के कारण फिर शनि को धक्का मारता है और शनि बीच बचाव करता है और आँख से किसी को पता नहीं लगने देता यानी शनि की आँख कभी आगे कभी पीछे कभी जाहिरा तौर पर जल्द ही भली फिर कभी जादू की आँख स्त्री से प्यार करती है, कभी गर्म, कभी नर्म, कभी खुली, कभी चुराई नज़र से देखने वाली होती है। कभी दाएँ कभी बाएँ हर तरफ से हर रंग बदलने वाली हो जाती है। यही आँख उसने तंग आकर शुक्र को दे दी कि खुद स्त्री उससे ही देखती रहे। यही हाल उन स्त्रियों का है जिन पर शनि का ज़ोर होता है। शुक्र की भोली मिट्टी संसार में शरारत न करती, अगर शनि से यह आँख न लेती और न ही शुक्र और सूर्य की शत्रुता होती और सूर्य का लड़का शनि भी सूर्य के खिलाफ न होता अगर कानी स्त्री तुला राशि के खाना नं० 7 में न जाती।

वृहस्पति (गुरु)

सूर्य	**चन्द्र**
शनि	**मंगल**
शुक्र	**बुध**

राहु, केतु बाहर है।

मंगल की रेखा

गृहस्थ रेखा :-

मज़बूत जिस्म मंगल से संबंधित गृहस्थ रेखा अंगूठे की जड़ में गई तो पोते-पड़पोते देखें। सीधी डंडे की तरह गई तो कर्ज़ई। अंगूठे की तरफ पीठ करके गई तो मंगल बद। चन्द्र की तरफ गई तो गृहस्थ बर्बाद। यह रेखा स्त्री के माँ-बाप, भाई-बन्धु के बाल-बच्चे तथा दूसरे सांसारिक संबंधी को बुलाती है। कबीले का सारा हाल जानने के लिए मच्छ रेखा का संबंध ज़रूरी है। आधे दायरे की शक्ल मंगल नेक के बुर्ज पर ही के लम्बाई उस रेखा की ठीक नाप है।
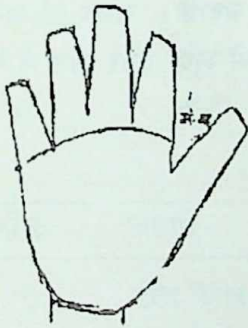
मंगल बद की रेखा :-

दो रेखाओं वाली या त्रिकोण की शक्ल में टापू की तरह ये ग्रह मंगल नेक का बदनाम और बुराई का स्वामी दूसरा भाई है। इस ग्रह से आदमी शरारती, झगड़ालू, डरपोक, घर फूँक तमाशा देखने वाला, जहमत मुकद्दमें का भंडारी होगा। इस पर्वत की हदंबदी, हस्त रेखा में मंगल बद का खाना नं० 8 और खाना नं० 4 चन्द्र का अगर एक ही मालूम हो तो बुध की सिर रेखा को फर्ज़ी तौर पर उसी रुख पर रख कर जिस रुख में हाथ पर सिर रेखा है या उसके ऐन साथ नापने वाली ऐसी रेखा खींचे जो कि नई रेखा ऐसी हो जैसी कि कुदरती तौर पर सिर रेखा और आगे बढ़ जाने पर हो तो अंगुली की तरफ का भाग नं० 8 मंगल बद का स्थान होगा। बाकी भाग नं० 4 का होगा यानी दिल रेखा उत्तर में, सूर्य की तरक्की या सेहत की रेखा पूर्व में चन्द्र का बुर्ज दक्षिण में सीमा है। इस बुर्ज से ताये, चाचे का वंश अपने कबीले के दूसरे भाई-बन्धुओं का संबंध होगा। जब शुक्र की रेखाएं इस बुर्ज पर हों तो ताये, चाचे और दूसरे पुरुष अर्थ होंगे। इस तरह हर तरह से सहायक होंगे। अगर यह शुक्र रेखा सिरे पर दो शाखी हो जाये तो स्त्रियों से अर्थ होगा। स्त्री जाति से धनी होगी। अगर < > ∧ ∨ शक्ल हो तो मंगल बद का पूरा असर बर्बादी का कारण ऐसे जातक के लिए भी होगी। इस बुर्ज पर संतान का भी संबंध है। फर्क यह है कि हथेली के किनारे पर हथेली के बाहर की ओर के खत यानी वो रेखाएं जो हाथ को फैला कर (हथेली ऊपर आकाश की तरफ) ज़मीन पर रखने से हथेली बिल्कुल बाहर की ही मालूम हो वह संतान का संबंध बतायेगी और जो हथेली पर मालूम हो वह ताये, चाचे होंगे।

मंगल बद :-

यह ग्रह हरेक बदी का स्वामी है। हर काम टेढ़ा ही है। यह पेशाब की नाली तक को सीधा नहीं छोड़ता। चन्द्र के समुद्र को

जला देने वाला होता है। मंगल बद जबकि मंगल हो चन्द्र के खाना नं० 4 में लेकिन मंगल के घर खाना नं० 3 पर चन्द्र न हो या मंगल को चन्द्र या सूर्य की मदद न मिलती हो। बुराई के लिए हस्द से पेट भरे। ऊँट को पानी से या चन्द्र से मुहब्बत नहीं।

मुंह का दहाना (मंगल का घर खाना नं० 3) :-

क्रमांक	मुँह का दहाना	प्रभाव
1.	खुला और चौड़ा	हौंसले वाला
2.	तंग	डरपोक
3.	चौड़ा	मध्यम जीवन प्राय: परेशान

मंगल नेक :-

लम्बा कद, शहूतपरस्त (विषय की शक्ति रखने वाला)। जिस कदर लम्बा कद उसी कदर भाग्यवान हो। अगर घुटनों से भी ज्यादा नीचे की ओर लम्बा हो तो राजयोग होगा।

क्रमांक	होंठ	प्रभाव
1.	मोटे, लम्बे	कम अक्ल
2.	बहुत लम्बे	चोर
3.	बारीक और सुर्ख	अच्छा स्वभाव
4.	सुर्ख	बुद्धिमान, भला
5.	सफेद, काले, नीले	गरीब
6.	एक बड़ा और एक छोटा	गरीब
7.	नीचे का बड़ा	जल्दी नाराज होने वाला

होंठ - मंगल हर दो हिस्से :-
मंगल के पर्वत का प्रभाव:-

इस पर्वत के दो भाग हैं। एक अच्छा और दूसरा बुरा। चौकोर नेक है, त्रिकोण बद है। समय छ: साल है जिसके शुरू में मंगल बीच में शुक्र और अंत में बुध है।

मंगल बद (पेट पर बल पड़ते हों और गिनती में हों) :-

पेट पर बलों की गिनती	असर	कुण्डली का खाना
1	लड़ाई में मारा जाये	2
2	अय्याश	3
3	नसीहत करने वाला	4
4	विद्यावान् और संतान वाला	5
5	हाकिम	6
	बिना बल के धनी	1

छाती - मंगल बद :-

क्रमांक	छाती	असर
1.	चौड़ी और ऊँची	धनी
2.	एक जैसी न हो	मौत अचानक
3.	बाल न हो चालबाज़, धोखेबाज	
4.	बाल ज्यादा हो	अय्याश, कम अक्ल, उम्र गुलामी में गुज़रे

बुध की रेखाएं

क्रमांक	गर्दन	असर
1.	लम्बी (पुरुष)	बेवकूफ
2.	लम्बी (स्त्री)	नेक
3.	मोटी	धनवान
4.	टेढ़ी	मुफलिस गरीब
5.	ऊँची	फरेबी चोर
6.	पतली	अक्लमंद
7.	छोटी	हाजिर जवाब
8.	चौड़ी	बेवकूफ

क्रमांक	वाणी	असर
1.	गला फैला कर बात करने वाला	अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के खून की भी परवाह न करे ।
2.	बात करते समय कोई न कोई अंग यानी हाथ-पाँव हिलाता रहने वाला	प्रसिद्धि को पसन्द करने वाला होगा ।
3.	बात करते समय जिसके दाँत या उनका माँस नज़र आये	कम उम्र होगा ।
4.	जल्दी-जल्दी बोलने वाला	बुरा स्वभाव या स्वार्थी होगा ।

क्रमांक	दाँत	असर	कुंडली का खाना नं०
1.	बाहर को निकले हुए हों	बुद्धिमान मगर भाग्य की कोई शर्त नहीं ।	6
2.	गिनती में 3 से कम 32 से अधिक (स्त्री-पुरुष दोनों के) हों	या मंद भाग्य की निशानी है ।	12
3.	गिनती में 32 हों	जो कहे पूरा हो चाहे अच्छा या बुरा, ऐसे व्यक्ति के गुस्से से दूर रहना चाहिए क्योंकि उसका एक निकला शब्द दूसरे का कुछ न कुछ बना या बिगाड़ सकता है ।	2
4.	गिनती में 31हों	नेक असर होगा ।	4

नाड़ियाँ :-

(बुध) सब्ज रंग नेक स्वभाव होगा।

क्रमांक	सिर	प्रभाव
1.	सिर गोल और आँखें गोल	स्त्री अमीर खानदान से होगी और भाग्यशाली होगा
2.	सिर छोटा और पेट मोटा	बेवकूफ होगा ।

क्रमांक	नाक का अगला हिस्सा	असर
1.	मोटा तथा गांठदार	खुद पसंदी और खुदगर्ज
2.	बड़ा तथा गांठदार	सलाह पसंद और झगड़ा न करने वाला
3.	चौड़ी नाक तथा चौड़े नथुने	कुंद जहन (खुंडा दिमाग़ बेवकूफ)
4.	नथुने चौड़े	वहमी
5.	नथुने तंग	अक्लमंद, शर्मशार, खुले दिल वाला मगर घमण्डी
6.	नाक शरीर से अधिक लाल	नेकी का शत्रु, लालची

तोते की 35

शब्द	ग्रह	कुण्डली का खाना	असर
लट	शनि	10	लुटना-लुटाना मक्कारी
पट	वृहस्पति	2	मान धन
सुज़ान	मंगल	3	न्याय पसंद तो मंगल नेक
कहो	केतु	6	कहना-सुनना
गंगा	वृहस्पति	5	संतान (गंगा दरिया)
राम	राहु	12	को मुझे मैं मेरा तक्कवर (अहम)
35	वृहस्पति	11	सब का भाग्य
चतुर	बुध	7	अक्ल
माँ	चन्द्र	4	माता दिल शांति

श्री	सूर्य	1	सबसे उत्तम बड़ा
भग	शुक्र	7	लक्ष्मी स्त्री ज़मीन
वान	मंगल बद	8	वाला स्वामी-मौत बाध तीर सब का

बुध के ग्रह का भेद :-

तोते की 35 के कुण्डली के खानों को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि खाना नं० 9 के बारे में कहीं नही लिखा है। बुध का खाना नं० 9 और खुद खाना नं० 9 एक अजीब हालत का है जिसका हाल अलग लिखा है। यही खाना नं० 9 एक चीज़ है जो मनुष्य तथा पशु में फर्क कर देता है। सब ग्रहों की नींव है। दोनों जहाँ की हवा वृहस्पति असल है। इस 35 के 11 खाने असल में बुध के 12 खानों की हालत बताते हैं। यानी खाना नं० 1 के बुध को शनि, खाना नं० 2 के बुध को वृहस्पति को आदि-आदि जिस तरह के कि इस तरह के तोते की 35 की कुण्डली में लिखें है लेंगे। यानी प्रभाव के लिए बुध के अपने असर की बजाए दिए हुए ग्रहों की हालत का असर लेंगे। यानी बुध जिस घर में बैठा हो वहाँ बैठा ग्रह का कि वो खाना नं० पक्का घर मुकर्रर है।

शनि की रेखा
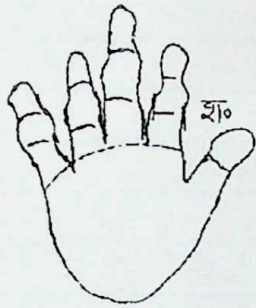
शनि पापी ग्रह पाप के समय सिर्फ राहु, केतु का पैदा किया हुआ बहाना ही ढूँढ़ता है और जल्दी ही जड़ से ही बुरा कर देता है। अगर सूर्य रोशनी का स्वामी है यानी जमा की शक्ति तो शनि अंधेरे का और घटाव का धनी है। यानी सूर्य के खिलाफ चलेगा। यह ग्रह यदि नेक हो जाये तो सूर्य, वृहस्पति आदि सबसे बढ़ कर होगा। दूसरे के घरों का माल उठवा कर अपने घर ला देगा तार देगा। ऐसी हालत में दूसरों के लिए बड़ा मंदा मगर अपने लिए भाग्यवानी का कारण होगा। उसका समय 6 साल है। शुरू में राहु, बीच में बुध और अंत में शनि का अपना फल होगा।

शनि की आँखें :-

यह ग्रह दृष्टि का स्वामी है। अगर दृष्टि को एक मनुष्य मान लें तो हर खाना नं० में शनि की हालत इस प्रकार होगी :-

खाना नं०	प्रभाव
1.	एक आँख
2.	दो आँख
3.	तीन आँख
4.	चार आँख
5.	अन्धा
6.	न्यौराता (रंतान्ध)
7.	चलती हवा की आँखों में आँखों की चमक से ही मिट्टी डाल देने वाली ताकत की आँखें
8.	मौत या जालिमाना आँखें
9.	जले हुए को आबाद करने वाली आँखें
10.	चारों तरफ देखने वाली
11.	बच्चे की तरह मासूम अति निर्लेप
12.	दु:खी को सुखी, वीराने को आबाद करने वाली आँखें

12. दु:खी को सुखी, वीराने को आबाद करने वाली आँखें

शनि परसराम है यानी कुल्हाड़ा और कुल्हाड़े वाले दोनों का साथ है। राहु या केतु पाप तो शनि पापी है। शनि का चौरास्ता है। धोखे का ग्रह दुगुना चलता है चाहे अच्छा चाहे बुरा। शनि चारों ओर चलेगा जब कोई खाना नं० 1 में हो (टेवे या वर्षफल में) सारा हाल खाना नं० 10 में देखें।

राहु, केतु के संबंध में शनि का स्वभाव :-

शनि अपने एजेंटों के साथ होने पर उस कुण्डली वाले के लिए खुद शनि के खाना नं० 1 की चीजों पर क्या असर करेगा वह इस प्रकार है :-

पहले घरों में	बीच के घरों में	अन्त के घरों में	शनि का असर
राहु	शनि	केतु	मंदा
केतु	शनि	राहु	नेक
राहु	केतु	शनि	मंदा
केतु	राहु	शनि	नेक
शनि	राहु	केतु	मंदा
शनि	केतु	राहु	नेक
राहु, केतु	केतु	शनि	शनि का अपना मंदा
शनि	केतु	राहु, केतु	नेक
राहु	केतु	शनि, केतु	मंदा
शनि, केतु	केतु	राहु	नेक
शनि, राहु	केतु	केतु	मंदा
केतु	केतु	शनि, राहु	नेक

पहले बीच और बाद के घरों से कुण्डली के 1-2-3 के 12 तक के क्रम से पहला बीच का और आखिर घर होगा यानी 3-5-7 के घरों में तीन पहला, पाँच बीच का और सात आखिरी खाना होगा।

क्रमांक	भवें	प्रभाव
1.	आँख से दूर और सीधी	सख्त दिल और बुरे काम करने वाला
2.	कमान की तरह झुकी हुई	अच्छे दिल वाला होगा

छींक विचार :- शनि, राहु मुशतरका :-

क्रमांक	छींक	प्रभाव
1.	सामने से या दायीं ओर से एक या तीन	कभी नेक फल न देगी।
2.	पीछे से या बायीं ओर से दो छींके	सदा नेक परिणाम देगी।

3.	आवाज़ पीछे से मनहूस गिनी गई है ।

बाल :-

क्रमांक	खानां नं०	बाल	प्रभा
1.	7	एक छिन्द्र से एक	धनी बुद्धिमान और हुकूमत करने वाला होगा।
2.	6	एक छिद्र से दो	बुद्धिमान, हाथ के काम जानता होगा।
3.	2	एक छिद्र से तीन	परमात्मा की तरफ ध्यान वाला होगा।
4.	3	एक छिद्र से चार	गरीब, हाथ का काम न जानता होगा।
5.	12	सिर पर बाल न हों	धनी हो।
6.	11	दाढ़ी मूँछ के बाल कम या बिल्कुल न हों	कम हौंसला आशाओं में निराशा, अपनी पैदा की हुई जायदाद न हो।
7.	5	सारे शरीर पर ज्यादा बाल	मंद भाग्य होगा।
8.	9	पाँव के पिछली ओर या माथे पर बाल	मंद भाग्य होगा।
9.	8	छाती पर ज्यादा बाल	मंद भाग्य होगा।
10.	4	छाती पर बिल्कुल बाल न हों	अविश्वसनीय, दिल का कोई भरोसा न हो।
11.	1	तमाम जिस्म पर हद से ज्यादा बाल	तंग हाल होगा।

हाथ :-

क्रमांक	हाथ	प्रभाव
1.	सख्त हाथ वाला	राज्य करने वाला और उसकी मिसाल छोड़ने वाला होगा ।
2.	नर्म हाथ वाला	आराम पसन्द होगा ।
3.	नर्म फैले हुए हाथ	सुस्त स्वभाव का मंद भाग्य होगा ।
4.	सख्त हाथ	सब्र करने वाला होगा ।
5.	छोटा हाथ	जीवन गुलामी में गुज़रेगा ।
6.	लम्बा हाथ	छानबीन की समझ वाला और उससे जीवन को उच्च बना लेगा ।
7.	लम्बा बेडौल सख्त हाथ	जल्लाद होगा ।
8.	हाथ और पाँव दोनों छोटे-छोटे	दूसरों के लिए मंदा और स्वार्थी होगा ।
9.	सरफ हाथ	अक्ल और स्वभाव अच्छे दिखाते हैं ।

राहु

छाती की हड्डियां अगर तादाद में हों :-

हड्डियों की गिनती	कुण्डली का खाना	असर
8	2	राजा
9	3	रईस
10	4	फिक्र में गर्क
11	5	मालिक को पहचानने वाला अर्थात् परमात्मा को
		जानने वाला और सब जगह पहचानने वाला
12	6	सदा बीमार रहने वाला
13	7	मालदार
14	8	खोटे काम करने वाला

क्रमांक	स्वप्न	प्रभाव
1.	नींद से पहले का स्वप्न	छः महीने में नीच प्रभाव (नीच का) देगा ।
2.	दूसरे समय का स्वप्न	तीन महीनें में असर (घर का) देगा ।
3.	आखिरी समय का स्वप्न	जल्दी असर (उच्च का) करे ।
4.	स्वप्न में किसी को मार देना	साँप, शत्रु को मार देना, ऊपर चढ़ना पहाड़ पर चढ़ना तरक्की हो ।
5.	पानी के किनारे पानी पर स्वप्न	देखी हुई बात जल्दी सच होगी ।
6.	स्वप्न में मृत्यु देखना	आयु बढ़ती और खुशी की निशानी है ।
7.	स्वप्न में विवाह शादी देखना	मातम की निशानी है ।

केतु

क्रमांक	कान	असर
1.	पुरुष के लम्बे कान	उम्र लम्बी मगर अक्ल कम
2.	स्त्री के लम्बे कान	बुद्धिमान और हाजमें वाली
3.	पुरुष के छोटे कान	बुद्धिमान

4.	स्त्री के छोटे कान	बेवकूफ

क्रमांक	पीठ	असर
1.	उभरी हुई	रईस हुक्मरान राजा
2.	चौड़ी	गरीब
3.	छोटी	समय का गुलाम

गर्दन पर बल :-

गर्दन पर बलों की गिनती	खाना नं०	असर
1	8	लम्बी उम्र
2	9	धनी मगर हाथ के काम से
3	1	धनवान होगा, मगर बुरे काम करने वाला
4	11	परेशानी का घर
बिना बल	12	धनी

पाँव पर निशान :-

केतु का खाना नं० 6 दाएँ पाँव के पब पर कनिष्ठका के नीचे बुध या शुक्र के बुर्ज पर अगर शंख सिदफ हो तो वही असर होगा जो हाथ पर होता है। यदि चक्र हो तो कल की फिक्र न करने वाला होगा। यदि त्रिशूल अंकुश हो तो अच्छा ऑफिसर न्यायप्रिय स्वभाव हो। यदि हाथी की आँख का निशान हो तो तख्त का स्वामी। अगर यही हाथी की आँख का निशान बायें पाँव पर हो चोर, डाकू, लुटेरा। यदि बायें पाँव के पब पर चक्र हो तो पहली कही गई चीज़ों के साथ हाथ से तंग होगा।

क्रमांक	पाँब की अंगुलियों के नाखून	असर
1.	लाल तांबे रंग के	राजा हाकिम (सूर्य)
2.	नीले रंग के	अच्छे पद पर (राहु)
3.	पीले रंग के	दीवान साहब (वृहस्पति)
4.	काले रंग के	चोर, डाकू फिर भी मंदा हाल (शनि)

केतु :- रफ्तार :-

क्रमांक	रफ्तार	असर
1.	धीरे मध्यम	स्मृति कम हर काम में देरी करने वाला होगा ।
2.	तेज़ मगर छोटा कदम	ऊँचे विचार ठण्डे स्वभाव हर काम को पूरा करने की शक्ति वाला होगा ।
3.	झुक कर आदतन चलने वाला	बुद्धिमान नेक मेहनती बिना दलील बात को न मानने वाला होगा ।
4.	तेज़ रफ्तार	कम अक्ल खुद पसंद, खुद राय, संभवत आत्महत्या करे ।
5.	कदम बड़ा मगर चलने में लंग मारे	लालची बुरा करने की प्रवृत्ति अधिक होगी ।
6.	चाल की रफ्तार में लंग मारे	बदला लेने वाला झूठा चुगलखोर होगा ।

विभिन्न ग्रहों की रेखायें
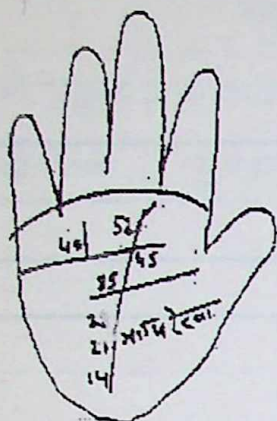
वृहस्पति की भाग्य रेखा की हदबंदी सालों में
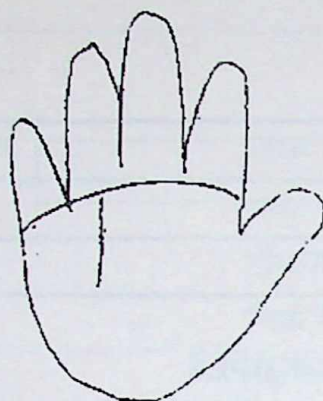
सूर्य की रेखा

सूर्य की सेहत रेखा
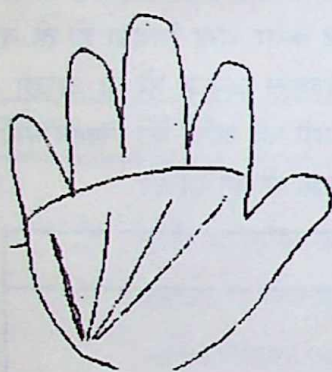
चन्द्र की दिल रेखा
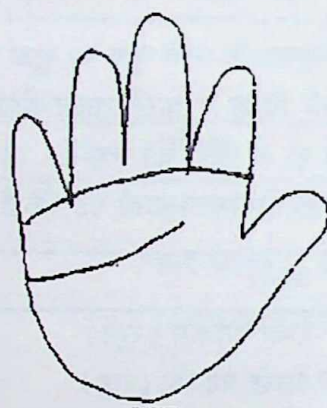
शुक्र का पतंग
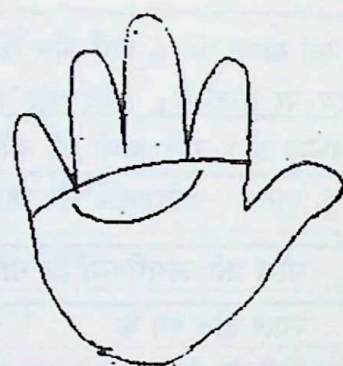
चन्द्र पर्वत से रेखायें

शुक्र की शादी रेखा

मंगल बद

मंगल बद , मंगल नेक

शनि की मच्छ रेखा - मछली

शनि की काग रंखा - कौवा

फरमान नं० 17

योग बन्धन

पुराने ज्योतिष के अनुसार 4, 9, 14 चन्द्र की तारीखों को शुरू हुआ काम नेक नतीजे न देगा बल्कि देर के बाद फ़िजूल खर्ची, अगर पूरा हो जाये तो उसका पूरा होना न होना शायद ही काम आयेगा। अतः इन तिथियों से परहेज़ ही किया अच्छा है।

किस्मत

लेख यह दुनिया पहले लिखा, जन्म था सब इसलिए।
कौन दुनिया लेता-देता, झगड़ा फिर यह किसलिए।।

आलोप अंतर की लहरें

नर ग्रह बोलते जिफत (सम) के घर में, स्त्री बोलते ताक (विषम) में हैं।
बुध है बोलता 3, 6 में, पापी नहीं बोलते दो में हैं।।

आरम्भ

बुध, गुरु आकाश जो गिनते, बच्चा होता ग्रहचाली वो।
9 ग्रह राशि 12 चलते, पूरा चक्कर लेखा प्राणी हो।।

बुनियाद

न गिला तदबीर अपनी, न ही खुद तहरीर हो।
सबसे उत्तम लेख ग़ैबी, माथे की तकदीर हो।

न ज़रूरी नफस [1] ताकत, न ही अंग [2] दरकार हो।
लेख चमके जब फकीरी [3], राजा आ दरबार हो [4]।
मैदान किस्मत ¹ में होगा, चमक [5] घर 2, 4 हो।
आरम्भ 9 वें [6] जन्म पिछला, पाँच चलता हाल हो।
लेख विधाता 11 लिखता, राजा [7] तख्त से होता हो।
मुट्ठी [8] भरी ग्रह साथ जो मिलता, जहाँ मंदिर नं० 2 वो पाता हो।
बाकी अमानत दुनिया लेगा, पाप कर्म [9] बुध, चक्र जो।
7 स्त्री 9 बुजुर्गी 12 ¹, पाँच नस्ल आईंदा हो।
लगन खुद अगर खाली हो, किस्मत साथ न आई हो।
किस्मत उसकी सातवें बैठी, या घर 4, ¹ में हो।
मुट्ठी के घर चारों खाली, 9, 3, 11, 5 में हो।
यह घर भी अगर खाली हो, 2, 6, 12, 8 में हो।
घर 12 ही घूम कर देखें, उच्च कायम घर का जो।
किस्मत का मालिक वो होगा, बैठे तख्त पर जिस दिन वो।

1. खाना नं० 5 का ग्रह ।
2. सूर्य की हालत ।
3. केतु खाना नं० 11 या गुरु खाना नं० 1 ।
4. ग्रह खाना नं० 1 कायम ।
5. साथ लाया खज़ाना खाना नं० 4 के मार्ग से ।
6. खाना नं० 9 पिछले जन्म का तोहफा, खाना नं० 2 साथ ले जाने का खज़ाना अगर वहाँ पापी या मंदे ग्रह हों तो 45 साल की उम्र के व्यर्थ हों ।
7. गुज़रता समय ।
8. खाना नं० 1, 4, 7, ¹ के ग्रह ।
9. राहु, केतु पाप की बुध के दायरे में हालत ।
¹. अपना ।

अमूमन

घर चल कर जो आवे दूजे, ग्रह, किस्मत बन जाता हो।
खाली पड़ा जब घर ¹ टेवे, सोया वो कहलाता हो।।

संक्षेप में

इन्सान बंधा खुद लेख [1] से अपने, लेख विधाता [2] खुद कलम से।
कलम [3] चले खुद कर्म [4] पे अपनी, झगड़ा अक्ल [5] न किस्मत [6] हो।।

1. ग्रह खाना नं० 1 या गुरु की हालत ।
2. खाना नं० 11 शनि खासकर या नं० 1 आम दूसरे ग्रह ।

3. खाना नं० 7, 9, 12 या बुध शनि ।
4. राहु, केतु की अपनी हालत ।
5. बुध ।
6. वृहस्पति ।

किस्मत का प्रभाव :-

सब की किस्मत लक्ष्मी के नाम से मशहूर है जो वृहस्पति का दूसरा नाम है 12 साल के बच्चे की रेखा और 7 साल के बाद खुद अपनी किस्मत का एतबार नहीं। भाग्य एक ऐसी चीज़ है जो सांसारिक कामों में न हाथ की मदद ढूँढ़े और न ही उसमें आँख को काम करना पड़े। हर काम का नतीजा अपने आप नेक हो जाये। धन्ना भक्त वृहस्पति नं० 2 की गाय राम चरावे। उम्र रेखा और भाग्य रेखा एक ऐसे मुकाम पर मिलती है जो कि शनि का मुख्यालय गिना जाता है। इस जगह पर उम्र रेखा तो बंद हुई मगर किस्मत रेखा तो चलती रही यह बड़ी खंदक खाई शनि की खाई या उर्ध रेखा कहलाती है अब भाग्य रेखा को उससे होकर गुज़रना है। हैडक्वार्टर का मालिक शनि इस फिक्र में रहता है कि इस बड़ी नदी में ही सब दरिया आ मिले और वह किसी दरिया के पानी को आगे न जाने दे और अगर भाग्य की हवा इस भंवर में न पड़े तो इसमें शक नहीं कि वह पानी को आगे न जाने दे और अगर भाग्य की हवा इस भंवर में न पड़े तो इसमें शक नहीं कि वह शनि से तो बच निकलेगा। मगर सुदामा भक्त वृहस्पति 9 की किस्मत अपने गुरु के साथ किया तोहफा अपने लिए खुराक शनि का खज़ाना वृहस्पति 9 और दूसरों को देने के लिए उत्तम चीज़ें शनि, वृहस्पति नं० 1 होती है जी जाएंगी जो अकेली ही चलेगी। जब अकेली हो चलेगी तो अपना खज़ाना इकट्ठा करने के लिए अकेली को ही अपने तमाम दरियाओं से पानी चुराने के लिए सख्त कोशिश करनी पड़ेगी।

माथा और चेहरे का किस्मत पर बहुत असर लिया है। यानी किस्मत का सही और ठीक जवाब इस बात से संबंधित है। आदमी के लिए जिन-जिन हालतों में अच्छा हे औरत के लिए उल्ट मायने की होगी।
1. खाना नं० 2 और 6 का फैसला खाना नं० 8 को साथ लेकर होगा। मगर भाग्य का शुरू खाना नं० 9 से होगा।
2. कुंडली के बाद के घरों के ग्रहों को जगाने के दिन से भाग्य उदय होगा।
3. बंद मुट्ठी के अंदर के खाने 1, 4, 7, 1 चाहे भले हों या मंदे जातक के भाग्य के नींव के पत्थर होंगे। अच्छी किस्मत रेखा वो है जो कलाई से चल कर वृहस्पति पर समाप्त हो। कई रेखाओं वाली हो, रास्ते में किसी पहाड़ या बुर्ज की मिट्टी का उसमें असर न हो। हाथ के हथेली के मैदान की जिस कदर ज़्यादा गहराई होगी नदी की चाल उतनी ही तेज़ होगी। किस्मत रेखा जब कलाई से शुरू होकर जब दिल रेखा को पार कर गई जिस बुर्ज की ओर झुके उसी बुर्ज का असर पायेगी। हरेक भाग्य के ग्रह को भाग्य रेखा कहते हैं। जिसके जगाने का समय भाग्य के असर का समय होगा। किस्मत के ग्रह कई एक हों तो वह सब आपस में पूरे सहायक होंगे।

सबसे अच्छा भाग्य वृहस्पति के भाग्य का ग्रह होता है। वृहस्पति नं० 2 कायम, खाना नं० 9 में बुध, शुक्र, राहु या वृहस्पति के शत्रु न हों और न ही खाना नं० 9 मंदा हो रहा हो।

भाग्य का ग्रह :-

सबसे उत्तम दर्जे पर वह ग्रह होगा जो राशि का उच्च फल देने का मुकर्रर है जो हर तरह से कायम साफ और ठीक है और उसी पर किसी तरह से भी साथी ग्रह होने, बिन मुकाबिल के ग्रह या शत्रु ग्रह का बुरा असर न मिला हो। उसके बाद पक्के घर का ग्रह, घर का मालिक ग्रह, दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह किस्मत का मालिक ग्रह होगा।

किस्मत के ग्रह की तलाश का ढ़ग :-

सबसे पहले 12 राशियों के उच्च फल देने वाले ग्रहों की तलाश करें। फिर 9 ग्रहों में से जो उम्दा हो लें और बाद में 1-7-4-1 के ग्रहों से उत्तम जो हो वह लें। उच्च फल देने वालों में जो सबसे ठीक हो वो लें। घर के मालिक ग्रहों से सबसे अधिक ताकत वाले को लें। अगर मुट्ठी के चारों खाने खाली हो तो खाना नं० 9 के ग्रह को लें। वो भी खाली तो तीन, वो भी खाली तो 11, वो भी खाली तो 6 खाली तो 12, 12 खाली तो 8 वाले को ढूँढ़े और खाना नं० 8 में बैठ कर देखेंगे कि क्या भाग्य का ग्रह जिसमें ऊपर की सब शर्तें न हों कहीं नष्ट तो नहीं हो गया। यह तलाश जन्म कुंडली और चन्द्र कुंडली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दायाँ और बायाँ हाथ दोनों और हस्त रेखा के सब हिस्से शामिल हैं।

शादी

पुरुष के हाथ या टेवे में शुक्र का अर्थ उसकी स्त्री और स्त्री के हाथ में शुक्र उसका पति होगा। शादी रेखा बुध के बुर्ज पर कनिष्ठका के नीचे होती है। इस शुक्र की रेखा से शादी या खुशी गृहस्थ या दुनियावी खुशी आम हालत के लिये चन्द्र में देखें।

शादी

दो गृहस्थियों को जुदा-जुदा रखते हुए एक कड़ी से जोड़ने वाली चीज़ सांसारिक दृष्टि में शादी और ग्रहचाल में मंगल की शक्ति का नाम रखा गया है। यही मंगल के खून की कड़ी लड़की और औरत में फर्क की कड़ी है। इसी वज़ह से शादी में मंगल गाये जाते हैं और अगर मंगल नेक और मंगल को सूर्य या चन्द्र की मदद मिले तो शादी खाना आबादी करने वाला मंगल होगा, अगर मंगल बद यानी बंदर अकेला सूर्य को शनि से बंधा हुआ या सूर्य इस काबिल न हो जो मंगल को मदद दे सके तो खुश्क और (सीधी मानों की तरह ऊपर को खड़ी की हुई लकीर को शनि माना है। इसी असूल पर स्तम्भ मकान की चार दीवारी, छत के बगैर खड़ी दीवारें शनि की चीज़ें मानी है) होगा। जिससे शादी में खुशी की बजाय स्त्री सुख-दुःख का भंवर होगा। मंगल बद का वीराना होगा जिसमें सूर्य की रोशनी तक की चमक न होगी। दिन की जगह शनि की काली रात का साथ होगा। बुध के खाली आकाश के बनावटी शुक्र के बानी राहु, केतु की बैठक खाना नं० 8 शनि का मुख्यालय। मर्द के टेवे में शुक्र औरत, औरत के टेवे में शुक्र मर्द होगा।

योग शादी

पहले दूसरे 10 से 12,	*बुध, शुक्र जब बैठा हो।*
शनि मदद दे 1 या 1 से,	*साल शादी का होता हो।*
बुध, शुक्र घर 7 में बैठे,	*शत्रु 3 न 11 हो।*
कुंडली जन्म घर वापस,	*आते वक्त शादी का होता हो।*
बुध नाली से जब दो मिलते,	*शनि मदद भी 1 देता हो।*
रद्दी कोई ना दो जो इकट्ठे,	*योग शादी का होता हो।*
बुध, शुक्र जब नष्ट या मंदे,	*साथ ग्रह नर, स्त्री हो।*
शनि राजा या मदद दे उनको,	*योग पूरा आ शादी हो।*

शुक्र अकेला या मिल बैठे,
कुंडली जन्म 2 में चौथे जो।
सात दूजे न शत्रु होते,
लेखा शादी का उदय हो।
घर सातवाँ दो गुरु, शुक्र का,
खाली टेवे जब होता हो।
गुरु, शुक्र भी 2-7 आया,
साल शादी का बनता हो।
घर पक्का जिस ग्रह का हो,
बुध, शुक्र जहाँ बैठा हो।
अपनी जगह दे बुध, शुक्र को,
सात पाये या दूसरा वो 3।
बुध, शुक्र भी 2-7 आए,
मदद शनि न बेशक हो।
नष्ट निकम्मा न वो हो,
वक्त शादी का होता हो।
औरत टेवे में गुरु जो चौथे,
योग जल्दी हो जाता हो।
रवि, मंगल का साथ गुरु से,
ससुर औरत न रहता हो।

1. खाना नं० 2, 7, 12 में शनि अकेला या मुश्तरका हो।
2. शुक्र खाना नं० 4 में हो।
3. शुक्र, बुध खाना नं० 3, मंगल खाना नं० 9 अब उम्र के 17 वें साल शुक्र, बुध खाना नं० 9, मंगल खाना नं० 7 में होने पर शादी का योग होगा।

शादी का समय :-

वक्त शादी का हिसाब मित्रता-शत्रुता दीगर ग्रह दृष्टि अनुसार सब को नज़र में रखते हुए वर्षफल में खानावारी हालत के हिसाब से जिस साल शुक्र/बुध को शनि की दोस्ती या शनि का आम दौरे का वक्त शनि खाना नं० 1 हो, शादी होने का योग होगा। जब शुक्र/बुध अकेले-अकेले हों तो बुध की खास नाली के असूल पर देख लें कि आया बुध किसी हालत में शुक्र को अपना फल दे सकता है। आमतौर पर शादी का योग शुक्र से गिनेंगे। लेकिन जब बुध इन असूलों पर शादी का योग बनाए तो भी शादी का योग होगा सिवाए बुध खाना नं० 12। अगर किसी टेवे में जन्म कुंडली के हिसाब से शुक्र/बुध नष्ट बर्बाद या मंदे और स्त्री ग्रह शुक्र, चन्द्र के साथ नर ग्रह सूर्य, मंगल, वृहस्पति सहायक साथी या एक साथ हों तो जिस साल ऐसे टोले को शनि की नज़र या उसके आम दौरे का ताल्लुक शनि खाना नं० 1 हो जाए तो भी शादी होने का समय होगा।

आम तौर पर जिस साल वर्षफल के हिसाब से शुक्र/बुध सिंहासन का स्वामी या खाना नं० 2, 1 या खाना नं० 12 सिवाए बुध खाना नं० 12 या अपने पक्के घर खाना नं० 7 में हो जाए लेकिन उस वक्त 3, 11 में शुक्र/बुध के शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु न हों या शुक्र या बुध टेवे में बैठे घर में आ जाएं। शुक्र टेवे में खाना नं० 4 के लिए ख्याल रहे कि शुक्र जब खाना नं० 4 में हो तो चाहे अकेले चाहे किसी के साथ या साथी बन कर यानी खाना नं० 4 में कोई और ग्रह हो तो खाना नं० 2, 7 में शुक्र का शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु न आया हुआ हो वर्ना शादी का कोई योग न होगा। शुक्र खाना नं० 4 में शादी के आम साल 22, 24, 29, 32, 39, 47, 51, 6 है। शर्त यह है कि इन सालों में खाना नं० 2, 7 में शुक्र के शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु न हों, अगर 2, 7 खाली आ जाए तो इन ग्रहों का (पक्के घर के हिसाब से) खाना नं० 4 में समझ लें जो ग्रह कि खाना नं० 2, 7 में आ सकते हैं।

मंदे योग का विचार :-

कि शादी का फल अशुभ साबित करे जैसे चन्द्र खाना नं० 1 के समय 24 या
जो ग्रह शुक्र को बर्बाद करे या स्वयं ऐसा मंदा हो कि शादी का फल अशुभ साबित करे जैसे चन्द्र खाना नं० 1 के समय 24 या
27 वें साल, राहु खाना नं० 7 के समय 21 वां साल तो इस ग्रह के वक्त शादी अशुभ होगी। जैसे सूर्य जब शुक्र के लिये ज़हरीला

हो तो सूर्य की उम्र 22 वें साल सूर्य के दिन या सूर्य के वक्त हुई, दोपहर से पहले का भाग, रविवार या वैसे ही शादी के रस्मों, रिवाज़ करने के लिये सूर्य के निकलने से छुपने तक के बीच का समय शुभ न होगा। इसी तरह और ग्रह लेंगे।

अगर शुक्र रद्दी न हो तो शादी के लिये कोई वहम न लेंगे। मगर अकेला शनि खाना नं० 6 इस शर्त से बाहर होगा खासकर जब शुक्र भी उसी समय खाना नं० 2 या 12 में हो यानी उम्र का 18 या 19 वां साल शादी के लिए अशुभ होगा।

1. शादी : वर्षफल के हिसाब से शुभ समय :-

ग्रह	खाना नं०				
शुक्र, बुध मुश्तरका या जुदा-जुदा[1] (सिवाए बुध खाना नं० 12 के)	12	11	10	2	1
शनि उस वक्त 1, 2, 7, 10, 12 भाव में हो या	8 या 47 या 36 या 210 या 69 या 5				
मगर बुध उस वक्त न हो	6	5	4	8	7

1. जब शुक्र, बुध नष्ट हों तो शादी का योग देखने के लिए शुक्र की जगह चन्द्र और बुध की जगह नर ग्रह लेंगे जो जन्म कुंडली में उम्दा हो लेकिन अगर बुध खाना नं० 9, 10, 12 में हों तो शादी और शादी के फल संतान सांसारिक आराम के संबंध में योग मंदा होगा खासकर जब उसी वक्त राहु या केतु में से कोई खाना नं० 1, 7 में बैठा हो।

2. बुध, शुक्र मुश्तरका या जुदा-जुदा हों 9 9 8 6 5 4 3
और उसी वक्त खाना नं० 2, 10, 11, 12 वृ० मं० के० वृ० चं० मं०
या अपने पक्के घरों में बैठे हों (बद) मंदी शादी

3. शुक्र, बुध अपनी जन्म कुंडली वाले घर आ जायें या खाना नं० 1-7 में आ जायें मगर शुक्र जन्म कुंडली में खाना नं० 1 से 6 का न हो और उस वक्त खाना नं० 3-11 में सूर्य, चन्द्र या राहु न हो वर्ना शादी का योग नहीं होगा।

4. जब 2-7 खाली ही हो तो बुध, शुक्र ही खुद 2-7 में आने पर, बुध, शुक्र बैठे घर का मालिक (बाहैसियत पक्का घर) ग्रह खाना नं० 2-7 में और बुध, शुक्र उसकी जगह चले जायें जैसे शुक्र/बुध, बुध खाना नं० 3 हों, मंगल खाना नं० 9 में तो 17 वें साल, शुक्र/बुध खाना नं० 9 में हो और मंगल खाना नं० 7 में होने पर ही योग होगा।

5. औरत के टेवे में वृहस्पति खाना नं० 4 हो तो जल्दी शादी हो जाये। औरत के टेवे में सूर्य, मंगल का साथ गुरु से हों तो औरत का ससुर न होगा।

6. राहु खाना नं० 1 या 7 या किसी से दृष्टि के हिसाब से या साथ-साथीपन द्वारा शुक्र से मिल रहा हो तो 21 साल की उम्र की शादी व्यर्थ होगी। यही हालत सूर्य, शुक्र के मिलने पर आयु के 22 से 25 साल की उम्र की शादी पर होगी। उपाय के लिये सूर्य, शुक्र मुश्तरका में देखें क्योंकि 22 वें या 25 वें साल में योग खास है।

7. जो लड़की अपने जद्दी घर घाट से उत्तर के शहर, गाँव में (लड़के के जद्दी खानदान के रिहायश की जगह) ब्याही जाये, अमूमन दुखिया होगी जिस लड़की के पिता के टेवे में जब बुध खाना नं० 6 में खासकर हो।

8. जिस बाप के टेवे में चन्द्र खाना नं० 11 में हो और वह अपनी लड़की की शादी का दान प्रात: केतु के समय करे तो बाप और बेटी दोनों में से ही कोई सुखिया रहेगा। यही हालत उसके पति के लिये होगी जिसका चन्द्र खाना नं० 11 टेवे में हो और वह अपनी शादी का दान लड़की के माता-पिता से केतु के समय प्रात: ले।

9. शनि खाना नं० 7 वाले की शादी अगर 22 साल की आयु तक न हो तो उसकी नज़र व्यर्थ होगी।

1. वृहस्पति खाना नं० 1, खाना नं० 7 खाली हो तो छोटी उम्र की शादी शुभ होगी।

तादाद शादी :-

एक औरत होगी

शनि, शुक्र हो मदद पर बैठे, नर ग्रह शत्रु साथ न हो।
बुध, शुक्र तो उच्च या अच्छे, शनि, सूर्य को देखता हो।
बुध पहले या छठे बैठा, असर शुक्र ना मंदा हो।
शुक्र गृहस्थी पूरा होगा, एक शादी ही करता हो।
बुध दवाया हो चाहे मंदा, शुक्र टेवे चाहे उत्तम हो।
बाद 28 फल शादी देता, संतान नर मंदा हो।

खसम खानी (पति खाने वाली स्त्री)

शत्रु शुक्र, बुध हर दो देखे, मिलती बैठक चाहे जुदा हो।
सूर्य, केतु आ बुध पे चमके, पति खानी वो स्त्री है।।

स्त्री और चाहिए

मंदा शुक्र या शत्रु साथी, रवि, शनि को देखता हो।
बुध बैठा 5, 8 वें पापी, 7 शुक्र, 2 चौथा हो।
नीच गुरु हो 1 वें मिट्टी, रवि भी 5 वें बैठा हो।
स्त्री पर हो स्त्री मरतीं, साथ शनि चाहे मिलता हो।

जब शुक्र, बुध नष्ट हों तो शादी का योग देखने के लिए शुक्र की जगह चन्द्र व बुध की जगह नर ग्रह लेंगे, जो जन्म कुंडली में उत्तम हों।

शुक्र के दायें या बायें पापी ग्रह हों या शुक्र बैठा होने वाले घर से चौथे, आठवें मंगल या सूर्य या शनि में से कोई एक या इकट्ठे हों तो औरत जल कर मरें या शुक्र का फल जल जाये। ऐसी हालत में स्त्री की जगह गाय (शुक्र) की बदली या गायदान मदद करेगा। जन्म कुंडली में शुक्र कायम अपने दोस्तों यानी बुध, शनि, केतु के साथ-साथी या दृष्टि में हो तो उनसे ले, औरत एक ही कायम हो। दुश्मन ग्रहों से शुक्र अगर रद्दी हो तो औरतों की गिनती ज़्यादा हो। सूर्य, बुध, राहु मुश्तरका में शादियाँ एक से अधिक लेकिन फिर भी गृहस्थ का सुख मंदा हो।

बुध खाना नं० 8 में, औरतों की गिनती ज़्यादा और सब ज़िंदा हो। जितनी बार वर्षफल में सूर्य और शनि का आपसी टकराव आये उतनी शादियां होंगी। खासकर जब सूर्य खाना नं० 6 और शनि खाना नं० 12 में हो तो स्त्री पर स्त्री मरें या माँ, बच्चों का संबंध न देखें या देखने से पहले ही मरतीं जायें। यानी बुध खाना नं० 8 या शुक्र खाना नं० 4 अगर खाना नं० 2-7 खाली हो तो बीवियां एक से अधिक मगर सब ज़िंदा हो।

शादी रेखा :-

शादी की दोनों लकीरें शुक्र और बुध माने गये हैं। बुध से ऊपर की रेखा पुरुष से संबंधित और शुक्र से नीचे की रेखा स्त्री से मिली हुई मानी गई है। शुक्र या बुध में से एक अगर एक ही ग्रह कायम हो तो हाथ पर केवल एक ही लकीर होने का मतलब लिया जायेगा। बुध कायम से ऊपर की लकीर पुरुष से संबंध, नीचे की लकीर शुक्र कायम से नीचे की लकीर स्त्री से संबंधित होगी। अगर बुध, शुक्र दोनों कायम हो तो दोनों लकीरें उत्तम अगर बुध, शुक्र रद्दी हो तो दोनों लकीरें मंदी शादी रेखा का अर्थ है।

1. 2 साफ़ और सही बड़ी लकीरें :- बड़ी ऊपर और छोटी नीचें हो शादी की औरत एक ज़रूर और जल्दी हो यानी शुक्र का आधा या शानि आधा 12, 18, 19 साल में होगी। शादी में किसी के एहसान की ज़रूरत नहीं होगी। शादी अपने आप धक्का लग कर होगी।

2. बुध, शुक्र दोनों नेक मंगल नेक का साथ हो तो शादी, औलाद का फल नेक उत्तम होगा।

3. एक ही लकीर वाली शादी रेखा शुक्र कायम बुध खराब हालत का अगर सिर्फ एक ही लकीर हो तो शादी देर बाद यानी 18 साल के बाद 25 साल तक हो। शादी में कई मुश्किलें आयें जो धन की कमी, संयोग और दूसरे विघ्न होंगे। ऐसी हालत में शादी के नेक असर 28 साल की आयु के बाद ही गिनेंगे।

4. छोटी लकीर ऊपर और बड़ी लकीर नीचे :- बुध कायम शुक्र खराब, शादी का फल मंदा, प्रथम तो शादी न हो, हो तो देर बार 18, 19 साल के बाद औलाद न हो अगर हो तो लड़का न हो अगर लड़का हो तो ज़िंदा न रहे और अगर ज़िंदा रह जाये तो लायक न हो अगर लायक हो तो सुख न दें। अगर सुख देने की नीयत हो तो सुख देने के काबिल न हो, गरीबी तथा किसी दूसरे कारण से हानि करने वाला हो। स्त्री सुख देने वाली न हो या ऐसी नीयत की न हो अत: कहा है कि अगर सूर्य खाना नं० 1 में और 7 खाली हो तो जातक की शादी छोटी उम्र में करवा लेनी चाहिये उत्तम होगी और राजदरबार में फायदा देगी।

5. बुध, शुक्र दोनों के साथ या दोनों में से एक के साथ मंगल बद का साथ हो जाये तो दो शाखी रेखा खाली शादी रेखा से अर्थ होगी। दो शाखी रेखा होने पर आपस में जुदाई, रंजिश, तलाक आदि हो सकते हैं। दो शाख वाली रेखा वाले मर्द से ब्याही औरत अगर किसी दूसरे के घर भी जा बसे तो भी बुरा असर हो जो जल्दी दूर न होगा। यानी के औरत जल्दी नर संतान न पायेगी और ऐसा पुरुष दूसरी शादी से भी सुख न पा सकेगा। बुरे ग्रहों का असर अपने समय में ही दोनों तरफ से समाप्त होगा।

बुध, शुक्र हो बाद के घरों में और मंगल बद हो पहले घरों में तो दो रेखी का हथेली के अंदर की तरफ मुंह होने वाली शादी रेखा होगी और ये जिस कदर हथेली के अंदर घुसती जाये या मुंह बड़ा होता जाये या दो शाखी के सिरे नीचे (दिल रेखा की तरफ) बढ़ते जाये या चन्द्र (या दिल रेखा) बुध का दुश्मन है या ऊपर कनिष्ठका की तरफ सबसे निचली पोरी (धनु राशि वृहस्पति शत्रु बुध का) में चली जाये तो शादी में या स्त्री-पुरुष के के गृहस्थी ताल्लुक में नतीज़ा खराब बढ़ता जाये। ऐसी हालत में वृहस्पति और चन्द्र की पूजा नेक असर लायेगी, दो शाखी रेखा वाले केस में पहले तो मर्द और औरत जुदा-जुदा हो जाएंगे और अगर किसी वज़ह से इकट्ठे ही हो जाये तो स्त्री, पुरुष के लिए स्त्री का काम न देगी। उसकी खूबसूरती बुरा चालचलन या अच्छे चालचलन की हालत में संतान आदि या बीमारी या बीमारी के कारण फालतू खर्चा या दूसरा कोई और कारण हो। स्त्री 12 साल संतान न पैदा कर सकेगी या नर संतान का नेक प्रभाव न होगा। बुध, शुक्र अगर कुंडली के पहले घरों में हो और मंगल बद बाद के घरों में हो तो दो शाखी का मुंह < > हथेली से बाहर को होने वाली शादी की दो शाख की रेखा होगी। दो शाखी रेखा का मुंह जिस कदर हथेली से बाहर की तरफ हाथ की पिछली ओर जाता हो और दो शाखी का मुंह < > हथेली के बाहर होता जाये बुरा असर कम होता जायेगा। मंगल बद ऐसी हर दो हालत में अगर शुक्र पर बुरा असर दे रहा हो तो स्त्री खराबी का कारण होगी और अगर बुध बुरा असर दे रहा हो तो पुरुष खराबी का कारण होगा। और यदि बुध, शुक्र दोनों जुदा-जुदा ही हो और मंगल बद का कुंडली के संबंध हो जाये तो कुदरती सबब खराबी का कारण होंगे। दायें हाथ पर निशानों की हालत में खुद वह कारण होंगे और बाद में अनहोने कार्य होंगे। शुक्र या

चन्द्र से रेखा के समय स्त्रियां विरोध का कारण होंगी। मंगल (दोनों) से रेखा पुरुषों से विरोध दिखाएगी। ऊपर बुध से आई हुई रेखा के समय फालतू खर्च या और कोई कारण होंगे। स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) जब नर ग्रह (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) के साथ-साथी ग्रह हो जाये तो भी विवाह रेखा अर्थ होगी जबकि शनि का भी संबंध (जड़ राशि पक्का घर या साथी ग्रह की हालत का हो जाना) हो जाये। ऐसी हालत में ऊपर कही गई सभी शर्तों के लिये स्त्री ग्रहों को शुक्र या नर ग्रहों को बुध की विवाह रेखा गिन कर फैसला होगा। स्त्री और नर ग्रह का यह आपसी संबंध केवल विवाह रेखा के लिए होगा और यह शर्त भी केवल उस समय होगी जब शुक्र और बुध दोनों नष्ट हो गये हों। निशानी यह है कि ऐसा व्यक्ति के जन्म से ही उसके संबंधी स्त्रियां बहन, बुआ, फूफी आदि ही मरतीं गई हों।

स्त्री रेखा के साथ दौड़ती हुई या भाग्य रेखा के साथ चलती हुई रेखा जो बाद में आयु या भाग्य रेखा में ही मिल जाये, विवाह का संबंध वाला या विवाह पर स्त्री बन जाने वाली हस्ती (लक्ष्मी) अर्थ होगा। ऐसी शादी से भाग्य उदय का चरण शुरू हो जाता है या कहो कि स्त्री भाग्य उदय कर देती है।

रंग तथा स्वभाव :-

सूर्य, बुध का संबंध स्त्री का रंग तथा स्वभाव का पता देगा। यदि सूर्य पहले घरों में बुध बाद के घरों में हो तो स्त्री का स्वभाव उत्तम होगा और नेक असर का जबकि शनि बीच में टाँग न अड़ाये। बुध पहले घरों में, सूर्य बाद के घरों में हों तो स्त्री का रंग, स्वभाव मंदा असर देंगे। जब सूर्य, बुध एक साथ और सूर्य नेक घरों में यानी एक साथ हों और शनि और शत्रु घरों का संबंध न होता हो तो भी स्त्री स्वभाव तथा रंग, उत्तम ही होगा। जब शनि का संबंध या शत्रु ग्रह बीच में आ जाये तो स्त्री स्वभाव में कल्पना और शनि की शैतानी और चंचल होने की हालत का साथ होगा। यदि (सूर्य, बुध खाना नं० 7) सूर्य से रेखा हो तो स्त्री अमीर खानदान से या जो हर तरह से सूर्य के बराबर हो बशर्ते कि शुक्र उत्तम हो नहीं तो उल्ट प्रभाव और स्त्री गरीब घराने से होगी, खीजने वाले स्वभाव की मगर गृहस्थ उत्तम हो।

शुक्र के बुर्ज से यदि रेखा सूर्य की ओर चले और रास्ते में भाग्य रेखा में ही रह जाये तो ऐसी स्त्री (शुक्र की शाखा) भाग्य से संबंधित होगी या विवाह पर भाग्य जगा देगी। स्त्री काले रंग की न होगी। बल्कि सूर्य और शुक्र के रंग की होगी, चेहरा चमकदार होगा।

शुक्र, बुध, मंगल तीनों ही खाना नं० 3 में, दृष्टि का खाना नं० 11 खाली हो तो शादी और संतान में गड़बड़ हो।

टेवे में अगर केतु, शनि या बुध के साथ उत्तम और ऐसा प्राणी विषय में शक्तिशाली, गुप्तांग में स्त्री हस्तिनी रूप या जन्म कुंडली में शुक्र या राहु, सूर्य के घर खाना नं० 5 या शनि के घर खाना नं० 1 में हो तो ऐसा प्राणी विषय के संबंध में कम उत्सुक, पद्मनी स्त्री और गुप्तांग उसके अनुसार ही लेंगे।

विवाह रेखा से दूसरी रेखाओं का संबंध :-

चन्द्र के पर्वत से या शुक्र के बुर्ज से खाना नं० 11 के रास्ते या खाना नं० 12 के रास्ते से या मंगल नेक के बुर्ज से या बुध पर कनिष्ठका की जड़ या धनु राशि वृहस्पति से आई रेखा सब के सब शादी में विरोध या दूसरे दुःख (तकलीफ के कारण) रुकावट होंगे।

स्त्री-पुरुष के जोड़े की आयु :-

दोनों लकीरों से ऊपर की लकीर को पुरुष से और नीचे की लकीर को स्त्री से मिलाया गया है। ऊपर की रेखा से पुरुष की आयु और नीचे की रेखा से स्त्री की आयु लेते हैं। रेखाओं में लम्बाई में जैसा ही अंतर हो दोनों की आयु में वैसा ही अंतर होगा

और प्रकृति जुदा कर देगी। शुक्र कायम या शुक्र के मित्र सहायक हो तो स्त्री की आयु लम्बी, बुध कायम या बुध के मित्र सहायक हो तो पुरुष की आयु लम्बी होगी।

विवाह की उत्तम रेखा = (बिल्कुल एक जैसी लम्बाई वाली) :- सबसे उत्तम है। इन दोनों की निकटता तथा दूरी स्त्री-पुरुष की दूरी को दिखलाती हैं, यदि ऊपर की लकीर लम्बी हो तो स्त्री पहले और नीचे की लम्बी हो तो पुरुष पहले चल देगा।

शुक्र को देखता हो उसका शत्रु ग्रह/मित्र ग्रह तो स्त्री आयु की छोटी/स्त्री लम्बी आयु की होगी।

बुध को देखता हो उसका मित्र ग्रह/शत्रु ग्रह तो पुरुष की आयु लम्बी/पुरुष की आयु छोटी होगी।

शुक्र, बुध को एक साथ देखता हो दोनों का एक साथ मित्र ग्रह/शत्रु ग्रह तो दोनों की आयु लम्बी/छोटी होगी।

शुक्र को देखता हो उसका मित्र ग्रह (शनि) और बुध को देखता हो उसका शत्रु ग्रह (चन्द्र) तो स्त्री लम्बी आयु की होगी आदमी पहले जाए।

बुध को देखता हो उसका मित्र ग्रह (सूर्य, राहु) और शुक्र को देखता हो उसका शत्रु ग्रह (सूर्य, चन्द्र, राहु) तो पुरुष पहले न जाए और स्त्री पहले जाए।

शुक्र को देखता हो उसका शत्रु ग्रह (सूर्य, चन्द्र, राहु) और बुध को देखता हो उसका मित्र ग्रह तो पुरुष कायम चाहे उसकी स्त्री कई बार मरे या हटे।

बुध को देखता हो उसका शत्रु ग्रह (चन्द्र) और शुक्र को देखता हो उसका शत्रु ग्रह (सूर्य, चन्द्र, राहु) तो स्त्री कायम रहे चाहे उसके पुरुष मरते या हटते जाएं।

शुक्र कायम से केवल एक स्त्री और आखिरी दम तक रहेगी।

सूर्य खाना नं० 6, शनि खाना नं० 12 में हो तो स्त्री पर स्त्री मरतीं जाएं।

दूसरे आपसी संबंध :-

शुक्र, बुध का संबंध विवाह के दिन से स्त्री-पुरुष के भाग्य पर भी संबंध रखता हो।

ग्रहों का आपसी संबंध	प्रभाव
शुक्र, बुध का वृहस्पति से संबंध	मान भाग्य की चमक
शुक्र, बुध का सूर्य से संबंध (या साथ)	आम बर्ताव रहन-सहन
शुक्र, बुध का चन्द्र से संबंध (या साथ)	धन, आयु, शांति
शुक्र, बुध का मंगल से संबंध	संतान का कायम रहना
शुक्र, बुध का शनि से संबंध	मकान, जायदाद आदि
शुक्र, बुध का राहु से संबंध	दुःख मौतें, शत्रु दरिद्र
शुक्र, बुध का केतु से संबंध	ऐश फलना-फूलना खुशी आदि

शादी में स्त्री-पुरुष का आपसी गुज़ारा :-

शुक्र कायम या मित्र की मदद तो स्त्री की उम्र लम्बी होगी।

बुध कायम या मित्र की मदद तो मर्द की उम्र लम्बी होगी।

दोनों कायम या मित्र की मदद तो दोनों की उम्र लम्बी होगी।

(शादी के दिन से गुजरान जाती उम्र की शर्त नहीं)

शुक्र खाना नं० 3 से 6, 9, 12 में हो तो मर्द की उम्र लम्बी यदि शुक्र खाना नं० 1, 2, 7, 8, 1, 11 में हो तो स्त्री की उम्र लम्बी होगी।

सुख-दुःख :-

बुध, शनि साथी या गुरु अकेला खाना नं० 1, जीभ तालू काले, आँख या नाक छोटी हो तो मर्द दुखिया हो। शुक्र के शत्रु खाना नं० 7 या चन्द्र, शनि मुश्तरका या बुध, शुक्र का चन्द्र, मंगल से साथ हो जाये तो तलाक, जुदाई हो स्त्री दुखिया हो।

पुरुष की नाक यदि छोटी (नीच वृहस्पति खाना नं० 1), तालू या जीभ काली (बुध, शनि एक साथ), आँखें भूरी (सूर्य, चन्द्र) हो तो

-दो से अधिक विवाह मगर फिर भी गृहस्थ का सुख न हो।

आँख काली (शनि, चन्द्र) का साथ हो तो भी

-स्त्री का सुख हल्का होगा।

शुक्र पर अंगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा (सूर्य खाना नं० 7 में) हो तो भी

-स्त्री सुख हल्का पराई ममता हो पर अपने लिए इकबाल मंद हो।

आयु रेखा पर राहु का निशान हो तो

-स्त्री सुख हल्का, मीन राशि वालों के लिए तो अवश्य ही ऐसा है।

दाएँ पाँव की अनामिका मध्यमा से बहुत छोटी, लड़के का सूर्य नीच हो या तर्जनी, मध्यमा से बहुत छोटी हो। जब शनि, राहु, खाना नं० 12 में हो तो

-स्त्री खानदान गरीब हो और उनका सुख हल्का हो, चाहे अमीर हो तो भी सुख हल्का ही होगा।

दाएँ पाँव की तर्जनी, मध्यमा से बड़ी हो। जब वृहस्पति, केतु, शनि को देखें।

-स्त्री खानदान गरीब हो।

दाएँ पाँव की तर्जनी, मध्यमा से थोड़ी छोटी हो। जब शनि, *वृहस्पति को देखे।*

-स्त्री सुख पूरा हो।

हाथ की कनिष्ठका अंगुली के नाखून वाली पोरी या सिरा अगर अनामिका की नाखून वाली पोरी की जड़ से नीचे रह जाये (कर्क राशि वाली पोरी की जड़ से नीचे रह जाये) जबकि हाथ को खूब अकड़ा कर इन दोनों को आपस में मिला कर देखा जाये तो जिस कदर कनिष्ठका इस अनामिका की ऊपर की पोरी की जड़ से छोटी हो या जिस कदर नीचे रह जाये उसी कदर स्त्री सफेद सफा रंग सीरत प्रसन्न चित्त हो नहीं तो उल्ट (यानी ऊपर रहे तो उल्ट असर) होगा।

यदि आयु रेखा/पितृ रेखा टेढ़ी होकर मातृ रेखा को काट कर चाँद के बुर्ज पर हथेली के किनारे त्रिकोण Δ बना दें तो ऐसा व्यक्ति पराई स्त्री को मिलने वाला और खोटे काम करने वाला होगा क्योंकि चन्द्र स्वयं बुध और शनि से शत्रुता करता है।

यदि स्त्री का माथा ऊँचा हो। जब वृहस्पति खाना नं० 4 में और स्त्री ऊँची हो तो

-वह स्त्री जल्दी शादी करवा ले तो पति अमीर होगा।

यदि स्त्री का माथा लम्बा-चौड़ा हो। जब वृहस्पति, मंगल, सूर्य खाना नं० 4 में हो तो

-वह स्त्री, पुरुष के लिए उत्तम मगर ससुर जल्दी मर जाये।

यदि स्त्री का माथा एकदम चौड़ा हो। जब वृहस्पति अकेला खाना नं० 4 में हो तो

-वह स्त्री खुशी से निर्वाह करने वाली होगी।

स्त्री के पाँव की अनामिका यदि कनिष्ठका से छोटी हो। जब सूर्य, केतु, बुध को देखे और उसका नाखून वाला हिस्सा (अनामिका का) धरती पर न लगे तो

-वह स्त्री, पुरुष खानी होगी यानी उसका पहले पति मरे तो वह दूसरा करे।

अगर स्त्री की सारी कनिष्ठका ज़मीन पर न लगे तो

-वह स्त्री जितने चाहे पुरुष करती जाए सब मरते जाएं और वह स्त्री खुद न मरें और न ही आराम पाए।

****

खबरदारी

मकान रिहायश से संबंधित :-

1. अगर रहने के मकान में दाखिल होते हुए अगर पहले छते हुए हिस्से में तहज़मीन के अंदर कुएँ की तरह खुदी हुई भट्टी जो सिर्फ विवाह या शादियों के वक्त खोली जाये और बाद में मिट्टी डाल कर बंद कर दी जाये, सदा के लिए पक्के तौर पर कायम कर ली जाये तो जब कभी उस घर में मंगल खाना नं० 8 वाला बच्चा पैदा होगा तो उसकी (तमाम असली खून के साथी) ऐसी तबाही शुरू होगी कि लोग कहेंगे कि यह सब अचानक भट्टी में में गिर कर नष्ट हो गये। अगर ऐसी भट्टी कायम हो चुकी हो तो जहाँ तक उसकी मिट्टी जली हो वह सब की सब जली मिट्टी दरिया नदी-नाले में डलवा दें।
2. रिहायशी मकान में मूर्तियां आदि रख कर पूरे तौर से मंदिर स्थापित कर लेना पूजा की घंटियों की बजाय संतानहीनता का घंटा बजा देंगे। खासकर जब वृहस्पति खाना नं० 7 का व्यक्ति इस घर में जन्म पाये। ऐसी मूर्तियां धर्म मंदिरों में ही शुभ गिनते हैं। कागज़ पर फोटों आदि या किसी देवी-देवता की तस्वीर का कोई वहम नहीं।
3. मकान में दाखिल होने पर दायें हाथ आखिर पर जहाँ जाकर मकान समाप्त हो कई बार अंधेरी कोठड़ी हुआ करती है जिसमें सिवाय दाखिल होने का दरवाज़ा रोशनी या हवा जाने का कोई और रास्ता नहीं हुआ करता, अगर ऐसी कोठड़ी का रोशनदान दरवाज़े पर रख कर रोशन कर लिया जाये तो वह घर वंश बर्बाद होगा। उसकी उन्नति का दिया बुझ गया लेंगे। माया का हाथी और दौलत पर बैठा साँप उस घर से चला गया मानेंगे जिसे बाहर फैंक कर मकान साफ कर लेने के लिए उनमें धन की कमी से हिम्मत तक न होगी। अगर किसी कारण ऐसी कोठड़ी की छत बदलनी पड़ जाये तो पहले उसकी छत पर एक और कायम करें फिर पहले पुरानी छत को गिरा दें। ऐसी कोठड़ी प्राय: अपने आप नहीं गिरा करती, जब भी गिरेगी गिराने से ही गिरेगी।
4. रहने के घरों में कई बार कीमती चीजें ज़ेवर, रुपया आदि रखने के लिए गुमनाम पोशीदा (छुपे हुए) गढ़े बना दिये जाते हैं यदि वह गढ़े खाली ही पड़े रहे तो घर के धन-दौलत के असर में खाली बुध बोलता होगा। यानी उस घर में मालिकों की फोकी बातें ही होंगी कोई पायेदारी की बात नहीं होगी। ऐसे गढ़ों में बादाम, छुआरों या कोई न कोई मीठी चीज़ रहनी उत्तम होगी।
5. मकान के फर्श में यदि कच्चा हिस्सा बिल्कुल न हो तो इस घर में शुक्र का निवास नहीं मानते यानी उनका गृहस्थ स्त्रियों का मान-सेहत और धन सब में शनि के बुरे पत्थर ही पड़ते हैं, जाहिरदारी में चाहे वे तीसमारखां ही बने फिरते हों। अगर किसी कारण कच्चा हिस्सा न रह सका हो तो वहाँ शुक्र की चीज़ें कायम कर छोड़े।
6. दक्षिण द्वार का मकान स्त्रियों के लिए विशेषकर मंदा होगा। आदमी भी कोई ही सुख पायेगा। रण्डुवों के रहने की जगह या मातम की जगह हुआ करती है। बड़ा दरवाज़ा मुख्य गेट दक्षिण से हटा कर उस तरफ सिर्फ रास्ता रखा कर किसी दूसरी तरफ उसी गली में किसी दूसरी तरफ को द्वार कर लिया करते हैं। मद्रास जो दक्षिण का हिस्सा है इस बात से बरी हो सकता है। मगर फिर भी नेक हालत कम ही होगी।

कन्या के लिए वर की खोज से संबंधित :-

1. सूर्य खाना नं० 11 वाला बेशक धनी परिवार वाला और सब तरह से अच्छा होगा। मगर वह सांसारिक आराम के समय अपनी संतान, स्त्री आदि अपने गृहस्थी साथियों को ठीक समुद्र के बीच बेड़ी ले जाकर अपने सिरहाने चप्पू रख कर सो जाने वाले मल्लाह की तरह ऐसे समय में उनका साथ छोड़ जायेगा कि बाकी जो बचे उनकी दु:ख भरी कहानी शायद ही कोई सुने या शायद ही कोई हो।
2. अल्प आयु वाले ग्रहों वाला मनुष्य अपनी आठ की हदबंदी पर शक्की आयु का होता है और अगर अधिक से अधिक 8×8 = 64 साल तक जीवित रह भी जाये तो भी माली हालत और सांसारिक सुख सागर में उसका चन्द्र माया का दरिया सुखा हुआ ही होगा।
3. राहु मंदा या मंदे घरों में या बुध, राहु दोनों मुश्तरका और मंदे घरों में (3-8-9-12 में) या शनि खाना नं० 2 के टेवे वाले यह सब लड़की के बाप या अपने ससुराल को बर्बाद कर लेंगे।
4. जब शुक्र, केतु मुंश्तरका खाना नं० 1 या मंगल, बुध, चन्द्र नष्टी या सूर्य खाना नं० 4, शनि खाना नं० 7, चन्द्र खाना नं० 1 या 2, शुक्र खाना नं० 5 हो।

–जातक नामर्द नर संतान को पैदा करने में असमर्थ।

5. सूर्य खाना नं० 6, मंगल खाना नं० 10, खाना नं० 12 निकम्मा या बर्बाद हो।

–जातक का लड़के पर लड़का मरता जाये।

6. सूर्य खाना नं० 4, मंगल खाना नं० 10 में हो।

–एक आँख से काना और अधर्मी होगा।

7. वृहस्पति, शुक्र मुश्तरका या चन्द्र खाना नं० 1 और वृहस्पति खाना नं० 11 में हो।

–कामदेव की अधिकता और ऐश की ओर बेहद ध्यान, उसके सोने को मिट्टी के भाव बिकवा देगा और चन्द्र के संबंधी (माता, दादी, नानी, सास), मंगल से संबंधित (पेट दर्द और दूसरी खराबियां भाई, ताया, बड़ा मामा) बर्बाद होंगे।

8. सूर्य, शनि मुश्तरका या सूर्य, शनि की दृष्टि की रुह से झगड़ा या सूर्य, शुक्र, बुध मुश्तरका हो।

–जब तक खाना नं० 12 में केतु या कोई और नर ग्रह न हो या वैसे ही खाना संतान या संतान के योग उत्तम हों तो बेमौका तलाक, जुदाई की घटनाएं, चालचलन की बर्बादी की तोहमत तो साधारण: (सच्ची या फर्ज़ी) ज़रूर होगी।

आल औलाद स्त्री परिवार के सुख से संबंधित :-

1. अपनी खुराक में से गाय, कौआ, कुत्ते के तीन हिस्से पहले जुदा से निकल कर रखना (गाय ग्रास) सांसारिक सुख सागर में मदद करेगा।

2. जिस जगह में या जिस जगह पर रोटी बनी उसी जगह पर बैठ कर रोटी खाना राहु की शरारतों से बचाता है और मंगल, राहु मुश्तरका का नेक असर पैदा करेगा।

3. हर मास घ्रर के सदस्यों की गिनती से कुछ अधिक गिनती (जो आए गए मेहमानों की औसत गिनती हो) के बराबर मीठी रोटियाँ चाहे कितनी छोटी क्यों न हों, वज़न का सवाल नहीं, मगर गिनती में कम न हो पका कर बाहर जानवरों को खाने के लिए डाल दिया करें तो घर में बीमारी झगड़ों से फ़िजूल खर्चों में बचत रहा करेगी।

4. रात को आराम के समय अपनी चारपाई के नीचे थोड़ा सा पानी किसी बर्तन में रख लें। सुबह वह पानी ऐसी जगह डाले जहाँ उसका अपमान न समझा जाए न ही उस पानी से अपना मुँह हाथ या टट्टी, पेशाब जाये तो राहु की शरारतों से नाहक झगड़े फसाद, अपमान बीमारी तोहमत या दूसरी लानत से बचाव होता रहेगा।

5. आमतौर पर इंसान का स्वभाव ग्रहचाल के अनुसार हुआ करता हे पर कोई जिद से उल्ट चले तो हानि होगी। जैसे शनि खाना नं० 7 (उच्च हालत) का मालिक स्वभाव में चालाक आँख के इशारे से ही सिर से पाँव तक जाँच लेने वाला, कई बार मक्कार, चालबाज़ होना भी माना है, लेकिन यदि ऐसा व्यक्ति धर्मात्मा दयालु या सच का पुतला हो जाए तो हरदम दु:खी बेचैन रहेगा।

औलाद से संबंधित :-

1. स्त्री के गर्भवती हो जाने के दिन से ही उसके बाजू पर लाल धागा बांधे जो बच्चे के जन्म पर खुद बच्चे के शरीर पर बदल दिया जाये और माता के बाजू पर एक और लाल नया धागा बाँध दिया जाये। यह रक्षा बंधन कहलाता है और बच्चे की 18 मास की आयु तक जारी रखना ज़रूरी है। संतान की आयु में बरकत देगा खासकर जबकि पहले बच्चे मरतें रहे हों।

2. संतान की बरकत के लिए गणेश जी की आराधना सहायक होगी। चन्द्र माया तो केतु परिवार और शनि खज़ांची होगा। दोनों बाहम शत्रु अत: धन और परिवार एक साथ कम ही इकट्ठे होंगे सिवाय खाना नं० 4 और अमूमन मंगल, शुक्र मुश्तरका। ऐसा चन्द्र जिसमें बुध, केतु की शत्रुता न होने के कारण धन और परिवार दोनों ही इकट्ठे होंगे।

3. गाय ग्रास मदद देगा।

4. बच्चे के जन्म होने के समय से पहले एक बर्तन में दूध और थोड़ी सी किसी दूसरी चीज़ कागज़ या दूसरे बर्तन में खाँड, स्त्री का हाथ लगवा कर कायम रख लें। बच्चा बिना किसी भय और आराम से होगा। इसके बाद वह दूध और खाँड बर्तन समेत अपने धर्म स्थान में पहुँचा दें। मगर बर्तन वापस न लाएं वह अब धर्म स्थान का ही होकर रहेगा। यानी दूध खाँड बर्तन सभी धर्म स्थान के हो जाएंगे। बर्तन जिस कदर काम में आने वाला हो अधिक अच्छा है।

5. वर्ष या जन्म कुण्डली में राहु मंदा हो जाने वाले के लिए अच्छा होगा कि बच्चे के पैदा होने के पहले जौं को पानी की बोतल में बंद करके रख लें ताकि बच्चे की पैदाइश आराम और ठीक ढंग से हो।

6. नदी पार करते समय जब सौ दिन या अधिक समय अपने घर से बाहर रहना पहले ही मालूम हो तो दरिया में पैसे को (ताँबे का) डालते जाया करने से औलाद की बलाये बद से बचत होती रहेगी।

7. ***दिन के समय मीठी रोटीयाँ तन्दूर में लगवा कर कुत्ते दरवेश को खिलाएं, मीठी रोटी लोहे की चीज़ तवे आदि पर न बनाई जाए, तन्दूर की रोटी ही इस काम में आएगी।***

8. जब किसी के बच्चे न बचते हों, पैदा होकर मर जाते हों तो उसे चाहिए कि बच्चों की पैदाइश के समय खुशी के रूप में मीठी चीज़ की जगह नमकीन चीज़ें बाँटे।

9. धर्म स्थान का पैदा हुआ बच्चा यानी बच्चा पैदा होने के समय धर्म स्थान की भूमि में बच्चा जनने वाली स्त्री वहाँ ही जाकर बच्चा पैदा करे तो धर्म स्थान में बनाया बच्चा लम्बी आयु का होगा।

10. कुत्तिया का नर बच्चा जो अपने समय में एक अकेला ही पैदा हुआ हो मालिक की खानदानी नस्ल कायम होने और बढ़ते परिवार की बरकत के लिए अधिक उत्तम और सहायक होगा।

11. केतु उच्च टेवे वाला बच्चों की पैदाइश और पालना से और भी बरकत पाएगा। शुक्र उच्च वाला स्त्रियों की पूजा शुक्र की सेवा उनकी मुहब्बत और मदद से हरदम लाभ पाता होगा।

खैरायत नामा से संबंधित :-

इस हिस्से में तमाम ग्रह जन्म कुंडली के हिसाब से लेंगे। वर्षफल के हिसाब से नहीं गिनेंगे। यदि वर्षफल में हिस्से में दी गई चाल कायम हो जाये और उस साल मना किया हुआ काम या खैरायतनामा किया जाये तो भी कोई नेक फल न देगा। बल्कि हानि का कारण हो सकता है। बेशक ऐसा नुक्सान या बुरा असर केवल उस साल के वर्षफल तक रह कर आगे हट जाये।

1. उच्च ग्रह वाले को अपने उच्च ग्रह से संबंधित चीज़ का दान देना या नीच ग्रह से संबंधित किसी चीज़ का किसी से दान लेना भले परिणाम की बजाय हानि देगा, बल्कि मंदी ज़हर का बहाना होगा।

2. आम लोगों के लाभ के लिए मुफ़्त दान तालाब कुआँ बावड़ी बनवाना या पानी का दान करना यानी लोगों को पानी पिलाने के लिए मुफ़्त नौकर रख कर देना या कुओं की मुरम्मत आदि के लिए, वह कुएँ जो आम लोगों के आराम के लिए हों, अपनी कमाई का भाग देना।

–अब चन्द्र खाना नं० 6 वाले को संतानहीन करके छोड़ेगा उसका वंश बिना समय की मौतों से घटता चला जाएगा।

3. सराय या ऐसे मकान बनाना जहाँ आम मुसाफिर मुफ़्त आराम करें।

–अब शनि खाना नं० 8 वाले को बेघर करके तंग हाल कर देगा।

4. आम मांगने वाले फकीरों को ताँबे का पैसा दान देना, दे आना चव्वनी या रोटी कपड़े की शर्त नहीं।

–अब शनि खाना नं० 1 या उसी समय वृहस्पति खाना नं० 5 वाले के बच्चों की अचानक मृत्यु के लिए बिजली की सी लकीर तथा मंदी खबरों मौतों के आने का संदेश होगा।

5. धर्मार्थ जगह मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा बनवाना जो आम लोगों के प्रयोग के लिए और धर्म कार्य से संबंधित हो।

–अब वृहस्पति खाना नं० 10 और उसी समय चन्द्र खाना नं० 4 वाले के लिए झूठी तोहमत आदि से फाँसी तक की मंदी सज़ाओं का बहाना होगा।

6. मुफ़्त वज़ीफा चाहे यतीम बच्चे चाहे विधवा बेवसीला कायम करना।

–शुक्र खाना नं० 9 वाले के लिए गरीबी की जलती हुई रेत से मिट्टी खराब होने का बहाना होगा।

7. धर्म का उपदेश देने वाले को हर रोज़ मुफ़्त रोटी खिलाना या कोई स्कूल मुफ़्त विद्या के लिए जारी करना (कीमत पर विद्या बुरी न होगी)।

–चन्द्र खाना नं० 12 वाले के लिए ऐसी बीमारियाँ या दुःख खड़े कर देगा कि उसे पानी तक न मिलेगा जो उसकी तड़पती हुई जान को या दिल के अन्दर छुपे हुए दिल को आखिरी समय (मौत) पर शांति दे सके।

8. ***धर्म स्थान के पुजारी को मुफ़्त नये कपड़े देना।***

–वृहस्पति खाना नं० 7 वाले के लिए गरीबी और लावल्दी का घंटा हरदम बिना बजाय बजता रहेगा।

दत्तक मुकर्रर करने से संबंधित :-

1. चाचा शनि यदि अपने भतीज़े-भतीज़ी को बतौर दत्तक मुकर्रर कर लें या वैसे ही उनकी शादी अपनी कमाई से कर दें।

-मंदे शनि खासकर शनि खाना नं० 6 वाले की हालत में जिस दिन ऐसे भतीज़ें-भतीज़ी की शादी होगी वह भतीज़ा-भतीज़ी गरीब दु:खी बल्कि लावल्द होने तक से तड़पते होंगे अगर ताया ऐसा करे तो मंदा असर न होगा।

2. मंदे असर के समय दत्तक के हाथों शनि की चीज़ों का दान मदद देगा। मगर दत्तक के हाथों शनि के मंदे काम (हरामकारियाँ) तबाही का कारण होंगे।

आय

औसत आमदन मासिक (खुद की) उच्च घर के ग्रह कायम ग्रह या भाग्य के ग्रह या सबसे प्रबल ग्रह के हिसाब से (संख्या में जितने हों उन सब का योग) लेंगे, जैसे :-

ग्रह	रुपए
वृहस्पति	11/- रुपए
सूर्य	10/- रुपए
चन्द्र	9/- रुपए
शुक्र	6/- रुपए
मंगल	$7^1/_2$/- रुपए
बुध	3/- रुपए
शनि	$1^1/_2$ /- रुपए
राहु	8/- रुपए
केतु	5 रुपए
-----	--------
कुल योग	70/- रुपए
-----	--------

यदि दो ग्रह इकट्ठे हों और उत्तम हों तो उन इकट्ठे हुओं की कीमत का योग होगा। जैसे :-

ग्रह एक साथ	रुपए
सूर्य और वृहस्पति	21/- रुपए
वृहस्पति और चन्द्र	21/- रुपए
मंगल और शनि	18/- रुपए
वृहस्पति और शनि	$21^1/_2$ /- रुपए
सूर्य और चन्द्र	2/- रुपए
सूर्य और बुध	13/- रुपए
चन्द्र और मंगल	$16^1/_2$ /- रुपए
बुध और शुक्र	9 रुपए

राहु-केतु, शनि-शुक्र को एक साथ नहीं गिनते, क्योंकि शनि-शुक्र अय्याशी और राहु-केतु खाली शुक्र बनावटी या हवाई वृहस्पति या केवल कागज़ी हिसाब-किताब जिसकी वसूली न हों, बुध और मंगल को मंगल बद लेंगे और बुध, शनि जायदाद में गिने जाएंगे।

तरीका :-

जिस दिन से आदमी अपनी रोटी कमाने लगे उस दिन से जितने साल के बाद उसकी औसत मासिक देखनी हो ऊपर के रुपए के अक्षर को कमाते हुए समय के वर्षों से गुणा करें जवाब का अक्षर मासिक औसत आमदनी होगी। जैसे किसी का मंगल, शनि एक साथ हों और उसकी 19 साल कमाई करते होने के बाद देखना चाहा तो 18×19 = 262 रुपये मासिक 19 साल पूरे करने पर होगी।

माया के नाम

क्रमांक	ग्रह मुश्तरका	नाम और माया का जाना	रुपया मासिक
1.	वृहस्पति और सूर्य	शाही धन सबसे उत्तम	21/- रुपए
2.	वृहस्पति और चन्द्र	दबाया हुआ धन	20/- रुपए
3.	वृहस्पति और शुक्र	बूर के लड्डू दिखावे का धोखा, धन	17/- रुपए
4.	वृहस्पति और मंगल	श्रेष्ठ गृहस्थी धन	18/- रुपए
5.	वृहस्पति और शनि	संन्यासी फकीर की माया दौलत	21/- रुपए
6.	सूर्य और चन्द्र	अच्छी नौकरी उत्तम	19/- रुपए
7.	सूर्य और मंगल	जागीदारी	17/- रुपए
8.	सूर्य और बुध	नौकरी (कलम से संबंधित)	13/- रुपए
9.	चन्द्र और मंगल	श्रेष्ठ धन	16/- रुपए
1.	चन्द्र और शनि	काला मुँह बदनाम करने वाला धन	19/- रुपए
11.	शुक्र और मंगल	स्त्री धन	13/- रुपए
12.	शुक्र और बुध	गैर सरकारी नौकरी आधा राज्य	9/- रुपए
13.	शुक्र और शनि	फर्ज़ी अय्याशी	16/- रुपए
14.	मंगल और बुध	मौत बहाना	10/- रुपए
15.	मंगल और शनि	डॉक्टर, डाकू का धन	18/- रुपए
16.	बुध और शनि	जायदाद मनकूला (पुरानी बुज़ुर्गों की)	13/- रुपए
17.	केतु पहले, राहु बाद में	नया सिरी (नि:संतान) की माया	13/- रुपए

माया दौलत के नाम

फालतू धन सातवें [1] होगा, चश्मा धन [2] चौथे में हो।
11 भरता धन से चौथा, तीसरे वह [3] जाता हो।
खाली चन्द्र का अपनी माया, माया ज़र चन्द्र से हो।
शनि होगा धन का राखा, बैठे जैसा टेवे वो।
बंद मुट्ठी [4] साथ लाया, नौ बुज़ुर्गों बड़ों से पाता हो।
तीसरे घर परसू बनता, 11 परसा होता हो।
पाँच पहले नौंवे अपना, परसराम बनता हो।
दूजे-तीज़े झगड़ा दुनिया, बेआरामी करता हो।

1. जब खाना नं० 7 में कोई भी उत्तम ग्रह हो।
2. चश्मा के शुरू, अंत तथा नाली की उत्तमता और अच्छापन चन्द्र की हालत पर होगा जैसा कि टेवे में हो। सूर्य, वृहस्पति इस चश्में की मदद में मदद देंगे। ग्रह खाना नं० 11 की हालत पर सफाई और आमदन और ग्रह खाना नं० तीन पर खर्चा औरं गंदगी-चश्मा होगी।
3. मंगल की हालत पर।
4. खाना नं० 1, 7, 4, 10 बंद मुट्ठी की किस्मत रेलवे मुसाफिर का रखा सामान होगा। खाना नं० 9 रेलवे की ब्रेक से रखवाया हुआ यानी बुज़ुर्गों के पास जन्म से पहले ही अमानत होगा। खाना नं० 10 बगैर मुसाफिर रेलवे पार्सल बुज़ुर्गों की कमाई से हिस्सा लेते जाना और अपने भाग्य की हदबंदी का मैदान होगा।

भाव और धन की किस्म :-

कुदरत के साथ लाया भाग्य का खज़ाना मुट्ठी के अंदर बंद किए हुए खानों में होगा यानी 1, 4, 7, 1 में होगा। और जो नीचे रिश्तेदारों से मिलेगा वो इस तरह खाना नं० 3 भाई-बन्धु, ताये-चाचों से, खाना नं० 5 संतान से, खाना नं० 9 माता-पिता या बड़े बुज़ुर्गों से, खाना नं० 11 अपनी कमाई से होगा। खाना नं० 2 ससुराल से, खाना नं० 6 जानदार साथियों की दिखती या छुपी मदद, लड़के-लड़कियों के संबंधी या जन्म से पहले माता-पिता के अपने संबंधी जैसे मामा-नाना, खाना नं० 8 बेज़ान संसारिक आसमानी सहायता से मिलेगा।

बचत

वृहस्पति-सूर्य साहूकारों से, वृहस्पति-शनि साधारण संसार, वृहस्पति-सूर्य-बुध राजदरबार, ग्रह खाना नं० 2 - खुद हर तरह से होती हो। खाना नं० 11 में नर ग्रह या उत्तम ग्रह हो तो आय बढ़ती रहे। चन्द्र धन, शनि खज़ांची होता है।

खर्च

वृहस्पति और शुक्र, वृहस्पति और बुध, खाना नं० 12 में मंदे ग्रह, खाना नं० 11 तथा 12 दोनों खाली हों तो

-फ़िज़ूल खर्चे और बर्बादियाँ हों।

सूर्य, शनि बेशक गुरु या गुरु घर का संबंध न हो या दोनों से कोई उत्तम हों तो उत्तम बचत वर्ना मंदा खर्च; खर्चे घटावे आमदन घटे।

औसत जीवन

टेवे में कोई भी उच्च ग्रह हों, खाना नं० 4 या 5 या 6 खाली या वहाँ अकेला ग्रह खाना नं० 1, 7, 8, 1, 11 सबके सब पाँचों में से हरेक में कोई ग्रह हो तो

-जन्म की हालत में वृद्धि करके जायेगा।

औसत के तौर पर

पहली अंगुली तर्जनी कुंडली का खाना नं० 2 का असर जीवन का पहला हिस्सा या समय की हवा की वाकफियत वृहस्पति के असर से जो 25 साल की आयु तक गिना है। दूसरी अंगुली अनामिका खाना नं० 5 के समय गृहस्थ संतान का समय 25-5। तीसरी कनिष्ठका खाना नं० 8 का असर साधुपन या गृहस्थियों के उपदेश का समय 5-75 साल। चौथी मध्यमा कुंडली का खाना नं० 11 का असर 75-1 साल तक, वानप्रस्थी होगा।

दौलत की हैसियत

कुंडली का खाना नं० 4 या चन्द्र का बुर्ज, धन रेखा या सांसारिक धन-दौलत के निकलने की जगह माना गया है। यानी धन का निकलना उन ग्रहों से होगा जो खाना नं० 3 में हों या खाना नं० 4 के ग्रहों के मित्र संबंधी साथी या सहायक हों। अगर खाना नं० 4 खाली हो तो चन्द्र को खाना नं० 4 में माना जायेगा।

धन के नाम

1. **चन्द्र, मंगल :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो श्रेष्ठ धन होगा विशेषकर खाना नं० 3 का और दान कल्याण से बढ़ने वाला धन होगा अगर यह दोनों ग्रह खाना नं० 10/11 में या शनि के संबंध में हो जाएं तो लालची होगा।
2. **चन्द्र, वृहस्पति :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो दबा हुआ धन जो फिर चल पड़े और काम आये, सोना-चाँदी, छत्रधारी बढ़ कर वृक्ष का साया जो दूसरों को भी बड़ा भारी सहारा हो।
3. **चन्द्र, शनि :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों वृहस्पति के घरों में और वृहस्पति के साथ से उत्तम, नहीं तो काली मुँह की माया। स्वयं काले मुँह के बन्दर की तरह छलांग लगा कर चली जाने वाली और मुँह काला सुनाने वाली।
4. **मंगल, शुक्र :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो स्त्री धन जो माया कि स्त्री की ओर (ससुराल) और स्त्री के भाग्य पर चले।

5. **शनि, वृहस्पति :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो फकीरी तथा विद्या संबंध की माया, संन्यासी का धन जो शादी के दिन से बढ़ेगा।
6. **मंगल, वृहस्पति :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो श्रेष्ठ गृहस्थी धन अपने पुरुष के परिवार से संबंधित है।
7. **मंगल, शनि :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो डाकू का धन-दौलत।
8. **मंगल, सूर्य :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो जागीरदारी हुकूमत का धन, विद्या का, रुहानी संबंध।
9. **वृहस्पति, शुक्र :** ये दोनों ग्रह एक साथ, बूर के लड्डू, झाग के बताशे।
10. **सूर्य, वृहस्पति :** ये दोनों ग्रह एक साथ हों तो सबसे ऊपर शाही धन हर एक धन रेखा का पूरा हाल जुदा लिखा है।

खाना नं० 2 के शत्रु ग्रह या शत्रु ग्रहों का तख्त के राज्य का समय धन हानि चोरी, बिना कारण खर्चा और हानि का सबब होता है और खाना नं० 11 धन रेखा की आमदन का होगा या धन रेखा खाना नं० 11 के रास्ते आती और खाना नं० 3 के रास्ते चली जाती है या तीसरी पुश्त पर धन रेखा का रास्ता बदला हुआ होता है।

माया तेरे तीनों नाम

परसू, परसा, परसराम

खाना नं० 3 का ग्रह होगा	परसू
खाना नं० 8 का ग्रह होगा	परसा
खाना नं० 1, 5, 9 का ग्रह होगा	परसराम

-जो ग्रह इन घरों में हो वही रिश्तेदार उस हैसियत का होगा।

संक्षेप में बंद मुट्ठी के अन्दर के घरों में कोई ग्रह न हो तो अपने साथ कुछ न लाया। सभी ग्रह बंद मुट्ठी के अन्दर ही हो तो मर्द की माया वृक्ष का साया उसके साथ ही उठ गया।

खर्च बचत

चन्द्र धन, शनि खजांची होता है, दोनों की हालत जेब की हालत बताएगी। शनि, मंगल जायदाद के स्वामी है। चन्द्र, वृहस्पति सोने-चाँदी के स्वामी है। आय का हाल देखा जायेगा खाना नं० 11 से, खर्च का हाल खाना नं० 12 से, बचत का हाल खाना नं० 9 से और पूर्वज़ों का संबंध, खाना नं० 5 से बचत संतान की देखी जाएगी। खाना नं० 2 से अपनी बचत अपनी कमाई की देखी जाएगी। साहूकारा लेन-देन खाना नं० 6 में देखेंगे।

सिर रेखा, आयु और स्वास्थ्य रेखा का त्रिकोण :-

यह त्रिकोण हाथ की हथेली पर बिल्कुल खाली मैदान है। जिसके तीनों किनारे आयु रेखा हवाई लहर, सेहत रेखा या तरक्की रेखा हवा में उड़ती हुई भाव और सिर रेखा या बोलने की शक्ति सबके सब हवाई चीज़ें बैठी हुई हैं।

भाग्य रेखा का दरिया उर्ध रेखा या मच्छ रेखा का दरिया धन या श्रेष्ठ रेखा का दरिया आदि अपना-अपना रास्ता बना सकते हैं यानी इन दरियाओं में से जिस दरिया का पानी इस मैदान में होगा वही प्रभाव करेगा। यदि इसमें कोई भी दरिया न हो तो खाली रेगिस्तान या रेत का समुद्र होगा जिसके रेत में किसी भी धातु की चमक न होगी, रेत की तबीयत का आदमी और बहुत ही थोड़ी गर्मी से आग़ बगूला और सर्दी से ठण्डा होने वाला होगा। भाग्य की ओर से उत्तम न होगा, बुध के समय तक निर्धन, यह समय (मंदा) 34 वर्ष तक का होगा जो उसमें साढ़े आठ साल या 17 साल (बुध का समय) का आधा या चौथाई आयु से शुरू हो सकता है। भाग्य का मंदापन उसके अपने सिर की खराबियों का परिणाम होगा, स्वयं कमाने की जगह दूसरे से मोहताज कर्ज़ लेकर आमदन और खर्च करेगा मगर बचत नहीं गिनी जा सकती। इस मैदान या त्रिकोण में चलने वाला दरिया इस बरेती को दो भागों में बाँट देगा।

हाथ के दायें अंगूठे की ओर त्रिकोण खर्चा दिखाएगी और नेक भाग या सांसारिक सहायता से संबंधित होगी। बायें और बद की त्रिकोण चन्द्र का नेक प्रभाव या बचत बताएगी। इन दोनों त्रिकोणों, त्रिकोणों का आपसी क्षेत्रफल, खर्च और बचत बतायेगा यानी यदि कुल बड़ी त्रिकोण के सारी आमदन एक रुपया रखें तो क्षेत्रफल के हिसाब से खर्च तथा बचत में निस्बत होगी।

खर्चे पर काबू पाना :-

1. वृहस्पति, सूर्य सांझे मगर नेक घर के या दोनों साथी ग्रह या दोनों जुदा-जुदा कायम या दोनों जुदा-जुदा अपने-अपने मित्रों के साथ हो।
2. ऐसे ही सूर्य और बुध हों।
3. ऐसे ही वृहस्पति और शनि हो।
4. ऐसे ही बुध और शनि हों।

बचत अपने आप होती चली जाये या ज़रूर हो यदि वही त्रिकोण यानी आयु रेखा, सिर रेखा, सेहत रेखा के तीनों कोने बंद हों तो खर्च और बचत बंधे हुए होंगे या गिने न जा सकते होंगे या अपनी मर्ज़ी के मुताबिक हदबंदी के लिए हिसाब-किताब में लिखे-लिखाए जा सकते हैं। मगर रुपया खर्च के क्षेत्रफल से बचत के क्षेत्रफल में नहीं बदला जा सकता, सिर्फ खर्च, बचत का हिसाब रख कर खर्च शुदा या बाकी बचत की रकम मालूम की जा सकती है।

1. बुध, वृहस्पति 2. शुक्र, वृहस्पति
3. शनि, सूर्य

ये पाँचों ग्रह सांझे हों मगर साथी आदि न हो खर्चा बिना बात के होता जाए आमदन चाहे हो या न हो। यदि वृहस्पति का साथ सूर्य या शनि में से किसी को भी न मिले यानी सूर्य या शनि दोनों में से कोई एक भी वृहस्पति की राशि या दोस्ती आदि के संबंध में न हों। खर्च आमदन सीमित होंगे तो यदि खर्चा घटाएं आमदन घट जाए बाकी बचत वहीं की वही। यदि आयु रेखा और सेहत रेखा मिलने का कोना खुला ही हो तो खर्च, बचत का हिसाब-किताब ही नहीं रख सकता। यदि खर्चा घटा दिया जाए तो आमदन भी घट जाए। यही असूल सिर रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने वाली ओर के कोने से बचत का होगा। यदि ऊपर कहा मैदान घड़े समान होगा तो भाग्य की नदी चलती जाएगी और उच्च पानी और खुद अपनी कमाई का खर्च, बचत होगा नहीं तो कर्ज़े आदि से गुज़ारा करेगा। ऊपर लिखी आमदन खर्च अपनी कमाई से होगी या कर्ज़ा ला कर या किसी और ढंग से रुपए लेकर उस कर्ज़ से खर्च करके बाकी कुछ नहीं बचाएगा।

बन्द मुट्ठी के अंदर के खानों के ग्रहों वाला या खाना नं० 11 में कोई भी नर ग्रह वाला अपनी स्वयं की कमाई से सब कुछ आमदन खर्चा या बचत करेगा बाकियों के लिए यह शर्त न होगी।

कुछ समय के लिए उधार कर्ज़ा नहीं गिनते, कर्ज़ा वह जो बाबे का लिया पोते का चलता जाए और समाप्त न हो।

कर्ज़ा और जद्दी जायदाद में बढ़ौतरी :-

हथेली की लम्बाई खाना नं० 11 जिस कदर लम्बी हो (नर ग्रहों से भरपूर) उसी कदर रुपये-पैसे उसके हाथ जाये और जिस कदर मध्यमा की लम्बाई खाना नं० 2 हथेली से अधिक हो (या रद्दी ग्रहों से भरपूर हो) उसी प्रकार संसार के रुपये को छोड़ने वाला या फ़िज़ूल खर्च होगा।

औसत जीवन

खाना नं० 11 और खाना नं० 12 के अन्तर / तफरीक का परिणाम होगा।

कुंडली में 9 ग्रहों से जितने उत्तम (कायम या ठीक आदि) हों उतना हिस्सा उत्तम और जितने मंदे, मंदा प्रभाव होगा, दोनों का अंतर तथा अंतिम औसत का परिणाम फैसला होगा। उदाहरणतया: ग्रहों में पाँच अच्छे और 4 मंदे हों तो आमदन खर्च के हिसाब से एक बाकी रहा, 9+5 अच्छे ग्रह = 14–9–4, बुरे ग्रह = 5–14+5 भाग 2 वास्ते 2 की = 19/2 की साढ़े नौ स्वयं, बचत आखिरी में 12 राशि का औसत के लिए 19/2 को 12 पर भाग किया तो तो 19/2×1/12 = 19/24 यानी यदि जन्म समय पर जद्दी जायदाद 24 रुपये की थी तो आखिरी समय पर 19 रुपये की छोड़ कर जायेगा या यूं कहो कि जद्दी जायदाद का परिणाम आय के हर 35 साल चक्र में कर देगा। यानी 24 के लिए 19 पैदा करके पाँच की कमी या बेशी कर देगा, यदि किसी भी पितृ ऋण को न दे। पितृ ऋण - राहु, केतु स्वयं की मंदी हालत या खाना नं० 6 केतु, खाना नं० 12 राहु, खाना नं० 2 दोनों की बैठक और 8 पापी ग्रहों की बैठक में कोई भी सहायक ग्रह न हो तो पितृ ऋण के बोझ का बोझ होगा। लेकिन यदि कोई पितृ ऋण इसके जुम्मा न हो

तो यही 5 की बचत आयु के हर 35 साल चक्र में कर जायेगा यह औसत जीवन होगा। मासिक आय न होगी, पितृ ऋण का अर्थ महादशा का ग्रह होता है यानी यदि कोई ग्रह महादशा का हो तो कमी होगी वर्ना बचत होगी, अगर महादशा के मुकाबले में कोई भी बंद मुट्ठी के अंदर खानों में ग्रह या मुट्ठी से बाहर कोई भी उच्च घर का ग्रह मिल जाये या सिर्फ खाना नं० 4 या चन्द्र अकेला ही अच्छे हों तो महादशा की शर्त भी मंसूख होगी।

नेकी, बेदी की औसत

खाना नं० 9 के ग्रह ''तोहफा'' जो दूसरों के लिए जन्म पर साथ लायेगा और खाना नं० 2 के ग्रह ''तोशा'' जो आखिरी दम अपने साथ ले जायेगा।

अगर अंगुलियाँ लम्बी हो तो हाथ भी लम्बा होगा तो सिर और कद भी लम्बे या बड़े होंगे तो प्रसन्नता से जीवन बिताने वाला होगा बशर्ते कि मध्यमा की लम्बाई हाथ की हथेली की लम्बाई से कम हो अगर हथेली गहरी हो तो अपनी कमाई से अच्छा जीवन व्यतीत करेगा और अपने बाप की निस्बत मरतबा में बढ़ जाएगा। जायदाद बढ़ाएगा, यदि उसके उल्ट हो तो सब कुछ खा-पी जाएगा, हथेली जैसे गड्डेदार हो उस कदर अपनी कमाई से धन आये नहीं तो दूसरों का धन उड़ा कर लाने वाली बात होगी चाहे हेराफेरी से कर्ज़े से आदि। यदि हथेली 5'' गहरी है तो 5 आमदन अपनी कमाई की मध्यमा यदि 3'' तो खर्च कर दे 3 यानी बाकी 2 जमा छोड़ जाये। उभरी हुई हथेली वाला पूर्वज़ों की जायदाद उड़ा दे। यदि 5 और 3 की औसत मित्रता-शत्रुता अच्छे-बुरे पहलू की होगी। गृहस्थ रेखा यदि सीधी खड़ी हो तो अच्छी आमदनी होते हुए भी कर्ज़ई होगा।

साहूकारा बर्ताव (माली लेन-देन)

मित्र केतु [1] बुध 6 में बैठे, मर्द मदद खुद पाता हो।
शुक्र पापी की हालत टेवे, वसूल दौलत ज़र होता हो।
खाली छठे से हर दो हालत, मंगल, चन्द्र पर होती हो।
गुरु, रवि की रोशन हालत, शनि स्याही होती हो।

1. सूर्य, शुक्र राहु

2 1 12 3 11 4 10 7 5 9 6 8
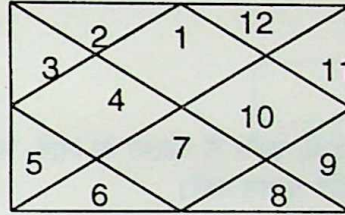
कुण्डली में बंद मुट्ठी अंदर के खाने 1, 7, 4, 1 हाथी की अंगुलियाँ 2/तर्जनी, 5/अनामिका, 8/कनिष्ठा, 11/मध्यमा, कुंडली का केन्द्र खाना नं० 9, आकाश खाना नं० 12, पाताल खाना नं० 6, तीनों काल खाना नं० 3, प्रकृति के साथ लाई हुई किस्मत का खज़ाना मुट्ठी के अंदर बंद किए हुए खानों यानी :-

खाना नं० 1 अपना शरीर उच्च सूर्य से संबंधित चीज़ें संबंधी काम-काज़ में होगा,

खाना नं० 7 जायदाद उच्च शनि से संबंधित चीज़ें संबंधी काम-काज़ में होगा,

खाना नं० 4 धन उच्च वृहस्पति से संबंधित चीज़ें संबंधी काम-काज़ में होगा,

खाना नं० 1 खुराक उच्च मंगल से संबंधित चीज़ें संबंधी काम-काज़ में होगा,

जो अपने निजी संबंधियों से मिलेगा वो बंद मुट्ठी के बाहर के खानों, खाना नं० 3 भाई, ताये-चाचे, खाना नं० 5 संतान, खाना नं० 9 माता-पिता, खाना नं० 11 जाती कमाई से संबंधित होगा और जो कुछ बाकी संबंधियों से जो ले सकेगा, खाना नं० 2 ससुराल धर्म स्थान, खाना नं० 6 जायदाद साथियों की होगी।

साहूकारा बर्ताव (खाना नं० 6)

आम बर्ताव संसार से संबंधित या स्वयं साहूकारा कुण्डली के खाना नं० 6 से देखा जायेगा। खाना नं० 6 के मालिक ग्रहों का इस बात से कोई संबंध नहीं। उस घर में उनके मित्र ग्रह कुण्डली वाले के मददगार और शत्रु विपरीत होंगे।

सिर और दिल रेखा के बीच की आयत [❑] :-

सिर रेखा या बुध रेखा, दिल रेखा या चन्द्र रेखा आपस में शत्रु है जिस तरह यह दोनों एक-दूसरे के निकट होती जायेंगी सिर और दिल की शक्तियां आपस में शत्रु होती जायेंगी।

मंगल नेक के इन्सान का स्वभाव अन्याय और एक ओर रियायत करने वाला होगा। वृहस्पति का प्रभाव धार्मिक प्रभाव मुतसब जाहिलाना हालत में देखने को आयेगा।

मंगल बद या भाई-बंधुओं से घृणा करने वाला होता चला जाएगा किस्सा कोताह बर्ताव ठीक न रहेगा।

यदि यह आयत एक जैसी की जगह सूर्य के पर्वत के नीचे अधिक चौड़ी हो तो मान-अपमान में कोई फर्क न समझेगा यदि सूर्य के बुर्ज के नीचे तंग हो तो तंगदिली के कारण शर्म-शर्माने में अपनी ही हानि कर बैठेगा।

वृहस्पति के नीचे अधिक चौड़ी हो तो या शनि के नीचे तो धन और जायदाद को हरदम प्यारा रखने वाला बेहद कंजूस होगा।

बुध के नीचे मंगल बद पर अधिक चौड़ी हो तो अधिक सखी होने के कारण बर्बाद हो और हानि करा ले। यदि वृहस्पति की ओर से चल कर मंगल बद की ओर को धीरे-धीरे चौड़ी होती जाये तो दूसरों को दिया हुआ पैसा कभी वापस न आये या तो देने वाला देनें का नाम ही न ले या इस हालत में ही न हो कि दे सके। अगर मंगल बद से वृहस्पति की ओर को चौड़ी होती जाये तो दिया हुआ पैसा ज़रूर वापस मिलेगा, साहूकारी उत्तम हो। दिखने वाले या छुपे हुए लड़के-लड़कियों के रिश्तेदारों या पैदा होने से पहले माता-पिता के अपने संबंधी मामा, नाना और खाना नं० 12 बेज़ान सांसारिक साथी आसमानी सहायता से मिलेगा। संतान के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा और मरने पर उसके बाकी रहे हुए का हाल खाना 2, 3, 5, 6 से संबंधित होगा।

जिस कदर इन दोनों रेखाओं के बीच का मैदान तंग होता जाए उस कदर वो ज्यादा तंग दिल इंसान होता जाए यानी बुध का प्रभाव तेज़ और खराब मिलावट वाला होता जाएगा। बुध, मंगल और वृहस्पति दोनों का दुश्मन है अत: ऐसा आदमी सांसारिक लेन-देन में कटाक्ष वाला बर्ताव करने लगेगा।

संतान

(लड़की को औलाद नहीं गिनते)   (चन्द्र कुण्डली का संतान के बारे में कोई संबंध न होगा)

ग्रहों का संतान से संबंध :-

वृहस्पति

वनावटी हालत से सूर्य, शुक्र सांझे, शरीर में आत्मा के आने-जाने का संबंध या सन्तान का उत्पन्न होना परन्तु उसका (संतान का) जीवित रहने का या न रहने से कोई बन्धन नहीं।

सूर्य

बनावटी हालत शुक्र, बुध सांझे, माता के पेट के अंधेरे में रोशनी दे देना या पैदा होने के बाद चिराग खानदान होना विशेषकर यदि नर संतान सेहत का स्वामी हो।

चन्द्र

बनावटी हालत सूर्य, वृहस्पति सांझे, आयु धन-दौलत और पैतृक शुभ संबंध पैतृक खून नर-मादा हर दो संतान का।

शुक्र

बनावटी हालत राहु, केतु एक साथ शरीर या बुत की मिट्टी, गृहस्थी सुख, संतान के पैदा होने में मदद या खराबी सांसारिक सुख।

मंगल

सूर्य, बुध : एक साथ (शुभ)
सूर्य, शनि : एक साथ (बद)

शरीर में खून रहने तक जीवन का नाम संसार में संतान और उनके आगे संतान पर संतान कायम रख कर बेलों की तरह बढ़ाना और उनका नाम या उनके नाम से सब का नाम बढ़ाना या संसार में बाकी या नाम पैदा कर देना।

कुण्डली वाले में हर प्रकार की शक्ति। रुह बुत को इकट्ठा पकड़े रखने की शक्ति, बेल की तरह संतान जीवित रखने का स्वामी होगा।

बुध

बनावटी हालत, वृहस्पति, राहु एक साथ, संतान का रिश्तेदारों से संबंध लड़कियों की नस्लों को बढ़ाना कुण्डली वाले में संतान पैदा करने की शक्ति कम, कुण्डली वाले और संतान के लिए दूसरों से मिलने-मिलाने के लिए मैदान खुला करना या खाली आकाश की तरह इन सब के लिए हर ओर जगह खाली करके मैदान बढ़ा देना। मान तथा प्रसिद्धि हो।

शनि

बनावटी हालत शुक्र, वृहस्पति एक साथ (केतु स्वभाव)
मंगल, बुध एक साथ (राहु स्वभाव)

संतान के पैदा होने का समय जायदादी संबंध, मौत के बहाने, सख्त बीमारी हो।

राहु

बनावटी हालत मंगल, शनि (उच्च राहु)
बनावटी हालत सूर्य, शनि (नीच राहु)

वृहस्पति के प्रभाव के विपरीत होना या वृहस्पति को चुप कराना आत्मा का आना-जाना बंद करना या मौतें या बहुत देर तक औलाद का आना रोक देना या दूसरी छुपी-छुपाई खराबियां या पाँव के नीचे भूचाल पैदा करना मगर लड़कियों की सहायता करता है, लड़ाई-झगड़े।

केतु

बनावटी हालत शुक्र, शनि (उच्च केतु)
बनावटी हालत चन्द्र, शनि (नीच केतु)

संतान की खुशहाली फलना-फूलना मगर संतान की कमी रखना (मौत से संतान घटाना अर्थ नहीं) संतान देर से हो मगर जो हो कमाल की हो, शर्त ये कि इसके शत्रु ग्रह की दृष्टि केतु पर न हो।

स्वयं कुंडली वाले में बुध की शक्ति मंगल के खून से बच्चा पैदा करने की शक्ति और वृहस्पति की संतान की पैदाइश तीनों को एक जगह करके रखने की शक्ति वीर्य या वीर्य को नर, स्त्री में मिलाने वाली तूफानी हवा या खाली नाली होगी। यही तीन ग्रह केतु की तीन टाँगें हैं जिनके कारण यह शुक्र का बीज कहलाता है। यदि कुण्डली वाले का जो ग्रह शुभ या मंदा होगा वह हालत शुभ और मंदी होगी।

ऐश का स्वामी मंगल, वृहस्पति, बुध, केतु (I_I_I) है।

केतु को लड़का भी माना है जो अपने उच्च घरों में उच्च फल देता है। लेकिन यदि मंगल या वृहस्पति खाना नं० 6-12 में हो जाये तो केतु चाहे उच्च ही हो या शुभ घरों में हो, मंदा फल देगा।

जन्म संतान

शुक्र, बुध, मंगल, केतु राजा, शनि भी शामिल होता हो।
पहले 5 वें नर ग्रह चन्द्र, मंगल दूजे केतु 11 हो।
जन्म समय [1] संतान का होगा, ज़िंदा पैदा [2] जो होती हो।
बुध, लड़की नर केतु लड़का देता, गिनती भले [4] पर होती हो।
केतु बैठा घर 11 टेवे, गुरु, चन्द्र/शनि आया घर पाँचवें हो।
औलाद मंदी या देरी से हो, लाश पैदा या मुर्दा [3] हो।
(केतु, शनि, बुध)/(रवि, शुक्र, राहु) उम्दा टेवे, बैठे 5, 3, 11 [5] हो।
समय पैदाइश लड़का-लड़की हो, लेख उम्र उस लम्बा [6] हो।
केतु कायम तो लड़के कायम, लड़की कायम राहु करता है।
छठे चन्द्र दे कन्या ज़्यादा, चौथे केतु नर देता हो।

1. वर्षफल के हिसाब।
2. चन्द्र नष्ट हो तो संतान ज़रूर नष्ट।
3. पैदाइश समय से तकरीबन 40 या 43 दिन पहले रात को औरत के सिरहाने मूली रख कर सुबह वह मूली धर्म स्थान में पहुँचा दिया करें।
4. बुध और केतु में से जो कोई उच्च हालत का हो संतान का फैसला यानी लड़का या लड़की का फैसला उसी से होगा।
5. सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति, शनि, खाना नं० 5 हो तो लड़का हो।
6. केतु उत्तम हो तो संतान उत्तम, राहु मंदा संतान मंदी हो।

संतान

वृहस्पति के सीधे खड़े खत बुध के बुर्ज पर शादी रेखा के ऊपर संतान की गिनती बतलाते है। यही रेखाएं दायें हाथ के अंगूठे की जड़ में पुरुष के संबंध से संतान और हाथ की जड़ में स्त्री की संतान है।

मंगल बद के किनारे सहायक संतान और चन्द्र के बुर्ज के किनारे आयु वाली संतान दिखाई पड़ती है।

शादी रेखा

इस रेखा के ऊपर बहुत बारीक रेखाएं लड़के और दो शाखी रेखाएं लड़कियाँ। यही असूल नर, स्त्री संतान देखने का हर बुर्ज पर होगा। साफ सही रेखाएं जीवित रहने वाली संतान है, कटी मध्यम रेखाएं मर जाने वाली संतान है।

कलाई की रेखा अगर हथेली के अंदर घुस आए और अंदरुनी शरारत रेखा की तरह शक्ल हो या स्त्री की पिंडलियाँ मोटी हो तो संतान कम हो या देर से हो या संतान के पैदा होने में रुकावट हो या संतान के मर जाने का डर होगा। इसके साथ ही यानी (कलाई की रेखा का हथेली में घुस आना) अगर शुक्र का बुर्ज बहुत बड़ा हो तो संतान रहित (संतान न होने या न रहने की पक्की निशानी है) ऊपर के सामने के दाँत यदि टूटे हुए हैं तो संतान 34 वर्ष की आयु के बाद होगी।

अंगूठे की जड़ में सीधे खड़े खत |||| वृहस्पति का प्रभाव या संतान बताते हैं।

दायें अंगूठे के नीचे पुरुष की ओर से संतान है।

बायें अंगूठे के नीचे स्त्री की ओर से संतान है।

यह ज़रूरी नहीं कि ऐसी संतान पुरुष की अपनी स्त्री से हो या स्त्री की अपने पुरुष के संबंध से हो।

लड़की पैदा होने का भेद बताना कई बार गुनाही भी हो जाता है। क्योंकि हो सकता है कि कुण्डली वाली को लड़की न चाहिए और वह उसके पेट में होने पर ही उसे दूसरे ढंग से खत्म करने की सोचने लग जाए या हो सकता है कि बताने वाले का हिसाब गलत भी हो इसलिए यह भेद किसी को नहीं कहना चाहिए।

समय संतान

वर्षफल में जब मंगल या शुक्र या केतु या बुध में से कोई सिंहासन यानी खाना नं० 1 में आ जाये या शनि भी आ मिले या चन्द्र या नर ग्रह खाना नं० 1, 5 में आ जायें या अकेला केतु खाना नं० 11 में हो या मंगल का समय और दरम्यानी ग्रह के हिसाब और खाना नं० 2 में मंगल, शुक्र, केतु, बुध के सहायक ग्रहों की हालत हो तो संतान हो और वह नर संतान हो।

असल में संबंधित ग्रहों तथा उच्च फल देने वाले ग्रहों के प्रभाव का समय संतान होने का समय होगा। नीच ग्रह तथा संतान के विरोध की रेखा का प्रभाव अवश्य देखना पड़ेगा। यानी देखें कि केतु स्वयं वर्षफल में कैसा है। बुध की हालत लड़की देगी या यूँ कहूँ कि बुध और केतु की अपनी-अपनी हालत या दोनों में से जो उत्तम लड़के-लड़की का फैसला करेगा। उत्तम केतु लड़का, उत्तम बुध लड़की देगा।

जब वर्षफल के हिसाब संतान पैदा होने का समय हो :-

लड़के देंगे : शुक्र के मित्र ग्रह यानी शनि, केतु, बुध मगर शुक्र स्वयं नहीं जब वह उत्तम हो या खाना नं० 3, 5, 11 में हो।

लड़कियां देंगे : बुध या बुध के मित्र (सूर्य, शुक्र, राहु) जब उत्तम हो या खाना नं० 3, 5, 11 में हो जायें।

वृहस्पति कायम हो तो सभी संतान कायम हो।

केतु कायम हो तो सभी लड़के कायम हो।

राहु कायम हो तो सभी लड़कियाँ कायम हो।

-शर्त यह कि इन ग्रहों पर उनके शत्रु ग्रहों की दृष्टि न पड़ रही हो।

चन्द्र खाना नं० 6 हो तो सभी लड़कियाँ, केतु खाना नं० 4 हो तो सभी लड़के हो मगर आपस में वह साथी ग्रह न बन रहे हों। चन्द्र, केतु इकट्ठे हों तो लड़के-लड़कियाँ बराबर हों।

स्त्री के पाँव (दोनों पाँव एक साथ) जिस कदर चक्र या पद्म साफ गहरे पव, या पाँव का हथेली पर हों उसी कदर लड़के होंगे। यही चक्र पद्म ज्यों-ज्यों बारीक और नर्म हों तो लड़कियाँ होंगी।

1. खाना नं० 5 मंदे ग्रहों से अगर रद्दी न हो रहा हो तो संतान का जन्म उत्तम, वर्ना संतान के विघ्न होंगे।
2. केतु खाना नं० 2, 5, 7, 1 शनि 1, 11 जबकि पापी ग्रह की तरह न बैठा हो, बगैर शर्त संतान का योग देंगे।
3. बुध जब शुक्र का सहायक हो तो लड़का वर्ना लड़की होगी।

संतान की गिनती

शुक्र या बुध या दोनों एक साथ सांझे से जितने घर की दूरी पर वृहस्पति हो उतनी संतान होगी।

कायम रहने वाली संतान

संतान गिनती में इतनी होगी कम से कम जिसमें से नर, स्त्री की विस्तार से विवरण जुदा-जुदा देख लें। संतान रहित तथा संतान युक्त होने की शर्तें साथ-साथ होंगी।

यदि शुक्र, बुध, वृहस्पति या कोई दो एक साथ ही हों तो कुंडली के जिस खाने में एक साथ हो वहाँ से चल कर जितने घर आखिर नं० पर किसी भी एक का पक्का घर या घर की राशि हो उस नं० तक इन तीनों की हदबंदी होगी। उदाहरणतया तीनों ही इकट्ठे हों खाना नं० 5 में तो खाना नं० 12 दूसरी हद होगी। यानी बीच में 6 घर खाली होंगे। केतु खाना नं० 9 में हो तो अधिक से अधिक उम्र जाने पर 3 और कम से कम 2 लड़के अवश्य कायम होंगे। केतु खाना नं० 12 में हो तो कम से कम 6 नर औलाद अवश्य होगी जबकि वृहस्पति, सूर्य या मंगल कायम उच्च हो। शनि खाना नं० 5 में 48 साल की आयु तक एक लड़का कायम अगर अपनी कमाई से कोई नया मकान न बनवाए।

यदि नर ग्रह कायम हों या कोई नर ग्रह कायम हो तो संतान न मरेगी। शनि (बनावटी शनि) मुश्तरका हालत में होने से औलाद की दो रंगी होगी यानी जिस टेवे में शनि के अतिरिक्त (बनावटी शनि) भी हो जैसे शुक्र, वृहस्पति एक साथ केतु स्वभाव (बनावटी शनि) तो संतान बहुत अधिक और कायम होगी, लेकिन जब मंगल, बुध एक साथ (बनावटी शनि) राहु मंदे स्वभाव का हो तो संतान माता के पेट में ही बर्बाद हो जाये। ऐसी हालत में यदि वृहस्पति चन्द्र या सूर्य शुभ या उच्च हों तो शनि की 3 साल की आयु से संतान कायम होगी। लेकिन यदि ऐसी सहायता न मिले तो केतु का अपना फैसला (जन्म कुंडली के बैठा होने के हिसाब से) बहाल होगा। यदि केतु भी मंदा हो तो शुक्र का आखिरी फैसला होगा। चन्द्र, केतु खाना नं० 5 नर संतान कम से कम 5 होगी। राहु खाना नं० 11, 5 लड़कियाँ कायम बशर्ते कि शनि नीच मंदा या खाना नं० 6 में न हो। राहु खाना नं० 9, 21 साल से 42 साल की आयु तक सिर्फ एक लड़का कायम बाद में तीन अधिक से अधिक, 2 कम से कम होंगे, राहु खाना नं० 5 संतान के लिए अति मंदा अगर चन्द्र या सूर्य साथ-साथी या सांझी दीवार के खानों नं० 4, 6 में न हो। शनि खाना नं० 7 कम से कम 7 लड़के शर्त है कि राहु खाना नं० 11 न हो या नर ग्रह मंदे न हो।

माता-पिता और संतान का आपसी संबंध :-

शनि खाना नं० 3, सूर्य खाना नं० 5 संतान से दुखिया यदि एक दो तीन हद 12 की गिनती तक अगर कुंडली में हो।

पहले घरों में	मध्य के घरों में	आखिर या बाद के घरों में	प्रभाव
दृष्टि वृहस्पति	—	बुध	संतान अवश्य होगी ।
बुध	—	वृहस्पति	बुध के समय से पिता दुखिया बर्बाद या समाप्त होगा ।
बुध वृहस्पति	आपस में अपने हो जाएं सामने		लड़कियाँ अवश्य, लड़कों की शर्त नहीं ।
अकेला मंगल	वृहस्पति	बुध	नर संतान कायम ।
अकेला मंगल	बुध	वृहस्पति	नर संतान कायम ।
वृहस्पति	मंगल	बुध	नर संतान कायम ।

वृहस्पति	बुध	मंगल	मादा संतान कायम ।
बुध	वृहस्पति	मंगल	मादा संतान कायम ।
बुध	मंगल	वृहस्पति	मादा संतान कायम ।
मंगल, वृहस्पति सांझे	—	बुध	सांझी संतान लड़के-लड़कियाँ | कायम और सभी सुखी होंगे ।
मंगल, बुध सांझे	—	वृहस्पति	लड़की कायम पिता दुखिया होगा ।
वृहस्पति	—	मंगल, बुध	लड़की कायम पिता दुखिया होगा ।
बुध	—	मंगल, वृहस्पति	संतान और पिता दोनों दुखिया होंगे ।
मंगल	—	बुध, वृहस्पति	संतान रहे मगर पिता की हालत रद्दी होगी ।

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य के साथ उसके मित्र ग्रह बैठे हों तो वह व्यक्ति अपने पिता से अच्छी हालत में होगा। लेकिन यदि शत्रु ग्रहों का साथ हों तो ऐसे व्यक्ति की संतान उससे मंदी हालत की होगी।

संतान का माता-पिता को सुख

माता-पिता की मौत इकट्ठी, शत्रु मिला कोई साथी जो।
पहले बैठे को बाद में लेती, बाद बैठा मौत पहली हो।।

वृहस्पति और चन्द्र अकेले बैठे होने के समय अगर टेवे में चन्द्र पहले तो माता की उम्र लम्बी वर्ना पिता की अर्थात् चन्द्र और वृहस्पति में से जिसके साथ शत्रु ग्रह होगा उससे संबंधित रिश्तेदार चन्द्र (माता, सास) वृहस्पति (पिता, बाबा, स्त्री के टेवे में स्त्री का ससुर) पहले मरेगा।

जन्म कुंडली के खाना नं० 1, 3, 5 के ग्रहों की अच्छी या मंदी हालत से पता चल जायेगा। मुआवन आयु यदि सही है तो संतान का सुख यकीनी हो। स्त्री के पेट और छाती पर बाल हों तो उसके पहले लड़का होगा यदि इन बालों में चक्र सा हो तो अवश्य लड़का होगा।

मर्द के दायें पाँव का अंगूठा छोटा और इसी पाँव की तर्जनी बड़ी हो तो वह पुरुष अपने पहले लड़के का सुख न भोगेगा। इसका अर्थ यह नहीं कि पहला लड़का मर ही जायेगा अपितु सांसारिक क्रिया में सुख न होगा। अगर अंगूठा तर्जनी, कनिष्ठका, अनामिका बराबर हों तो भी संतान का सुख शक्की होगा।

जन्म कुण्डली के हिसाब से यदि सूर्य खाना नं० 6 में हो और शनि खाना नं० 12 में तो स्त्री पर स्त्री मरतीं जाये तथा माँ बच्चों का सुख न देखें, सुख मिलने से पहले चल दें। बुध मारता हो वृहस्पति को या बुध हो वृहस्पति के घरों में या वृहस्पति के साथ ही तो बच्चे पिता पर भारी (दुःख या मृत्यु का कारण) होंगे।

साहबे संतान पर संतान होगा

गुरु, शुक्र, बुध, शनि, रवि से, उच्च कायम कोई उत्तम हो।
पोते-पड़पोते पुश्तों बढ़ते, उम्र लम्बी सब सुखिया हो।
5 पहले, 3 ग्रह जो उत्तम, औलाद [1] सुखी सुख पाता हो।
सेहत दौलत धन आयु संबंध, नेक भला और उत्तम हो।
गुरु, केतु जब शनि को देखें, असर तीनों का उत्तम हो।
धन आयु संतान इकट्ठे, सुख औरत का पूरा हो।

1. जब तक वृहस्पति उत्तम संतान सुखी होगी।

लावल्द कभी न होगा

दूजे छठे जब शुक्र जागे, मदद गुरु, रवि पाता हो।
मच्छ रेखा परिवार कबीले, औलाद दौलत सब उत्तम हो।
छठे रवि घर 12 होते, साथी मंगल, बुध बनता हो।
3 राहु घर दोस्त बदले, लावल्द कभी न होता हो।

लावल्द कभी न होगा यदि

कौन ग्रह	किस खाने में	उसका मित्र	किस खाने में हो
वृहस्पति	3-8	मंगल	2-5-9-12
वृहस्पति	1-5	सूर्य	2-5-9-12
वृहस्पति	4	चन्द्र	2-5-9-12
सूर्य	3-8	मंगल	1-5
सूर्य	6-7	बुध	1-5
सूर्य्र	4	चन्द्र	1-5
चन्द्र	3-8	मंगल	4
चन्द्र	4	मंगल	3-8
शुक्र	6-7	बुध	2-7
शुक्र	8-10	शनि	2-7
शुक्र	6	केतु	2-7
बुध	12	राहु	6-7
बुध	8-10	शनि	6-7
शनि	12	राहु	8-10
राहु (बिना शत्रु)	6	केतु	12

लावल्द ही होगा

बुध/शनि, मंगल/केतु जब राजा टेवे, (शुक्र/चन्द्र) मंगल, बुध नष्टी [1] हो।
गुरु, शुक्र घर सातवें बैठे, माता (चन्द्) 8 बैठी हो।
चन्द्र, शुक्र हो मुकाबिल बैठे, शत्रु साथ या पापी हो।
छते कुएँ घर कायम होते, टेवा शक्की लावल्दी हो।
शुक्र, राहु घर 5 वां पाते, कन्या कायम एक होती हो।
चन्द्र, केतु हो 11 बैठे, निशानी लावल्दी होती हो।

1. ऊपर के जबाड़े के सामने के 3 दाँत नष्ट हो चुके हों तो बुध नष्ट हो चुका लेंगे।

हीजड़ा मर्द

7 शनि हो चन्द्र पहले, 5 शुक्र, रवि चौथे हो।
4 ग्रह औलाद न फलते, हीजड़े मर्द न होते जो।।

बांझ औरत

शुक्र दूसरे 6 वें बैठा, बुध, मंगल न साथी हो।
शनि मिले न साथ गुरु को, 8 दृष्टि खाली दो।
बांझ औरत वो खुसरा होगी, औलाद नरीना कतई हो।
बाकी सिफत कुल उम्दा उसकी, उत्तम लक्ष्मी होती हो।

1. कुल औलाद
2. मर्द, स्त्री की औलाद

अ) दायाँ अंगूठा मर्द की औलाद

ब) बायाँ अंगूठा स्त्री की औलाद

3. मददगार नेक संतान

4. मुसीबत के समय पास रहने वाली
5. संतान के विघ्न
6. संतान दर संतान और सब ज़िंदा
अ) मोर के अण्डे मुर्गी के नीचे की तरह की औलाद
ब) कोयल के अण्डे कौवे के नीचे की तरह की औलाद

साहबे संतान (कौन बाल-बच्चों और कबीले वाला होगा)
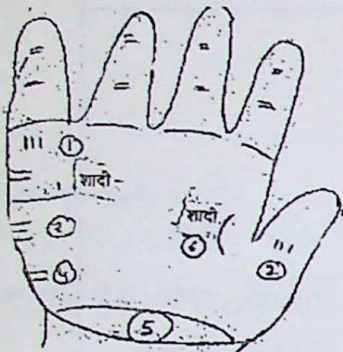
कुण्डली वाले के लिए :-

1. वृहस्पति, सूर्य, शुक्र, बुध, शनि सभी कायम हों।
2. वृहस्पति या सूर्य सभी कायम या दोनों ही कायम हों।
3. मंगल हो शुक्र या बुध के पक्के घर या उनकी राशियों में और दृष्टि के सब खाने खाली हों। या
4. मंगल हर तरह से कायम और नेक हो।
5. या मंगल हो बुध, शुक्र, राहु के साथ उनके पक्के घर या उनकी राशियों में और शनि हो सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति के साथ उनके पक्के घर या उनकी राशियों में हों। मगर जब
6. मंगल, शनि सांझे हों स्वयं अपनी संतान उत्तम ठीक गिनती की तथा उच्च हो मगर पोते देर बाद या कम हों पोतियों की शर्त नहीं।

गृहस्थ रेखा यदि गहरी सालम खमदार और शुक्र के बुर्ज में अंगूठे की ओर झुकी हो तो वह व्यक्ति बाल-बच्चों वाला, जायदाद के कम होते हुए भी धनी मान प्रभाव वाला होगा, सब सुख भोगेगा (स्त्री और औलाद का)। यदि यह रेखा दिल रेखा को काट कर मध्यमा तक चली जाये तो अपनी संतान के अतिरिक्त पोते-पड़पोते वाला हो जायदाद थोड़ी होगी। पाँव की अंगुलियाँ यदि एक-दूसरी से बड़ी होती जाये तो भी साहबे संतान होगा।

नर ग्रह चन्द्र के साथ संतान की आयु को लम्बा करते हैं। खाना नं० 5 में पापी ग्रह या केतु से संतान बर्बाद होती हैं। मगर खाना नं० 9 अपने दिन अपने दिन की संतान को अवश्य कायम रखेगा चाहे वह खाना नं० 5 का मित्र हो या शत्रु जैसे खाना नं० 5 में शनि खाना नं० 9 में मंगल तो मंगलवार वाले दिन की नर संतान अवश्य कायम रहेगी।

राहु खाना नं० 9 केतु खाना नं० 5 वीरवार पक्की शाम वाली संतान कायम होगी।

केतु खाना नं० 9 राहु खाना नं० 5 इतवार प्रातः सादक वाली संतान कायम होगी।

शुक्र तथा बुध या दोनों एक साथ का खाना नं० 5 में होने से नर संतान पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। लेकिन यदि दोनों या दोनों में से कोई एक खाना नं० 9 में हो तो नर संतान पर मंदा प्रभाव अवश्य होगा। अपने शत्रु ग्रह (सूर्य या चन्द्र या वृहस्पति, राहु, केतु के साथ) जब खाना नं० 5 या खाना नं० 9 में हो तो संतान बर्बाद और नष्ट होगी। चन्द्र नष्ट या बर्बाद, संतान बर्बाद या नष्ट परन्तु निःसंतान होने की शर्त नहीं।

1. शुक्र, बुध, मंगल तीनों खाना नं० 3 दृष्टि खाली हो खाना नं० 11 खाली हो।
2. शुक्र, बुध साथ राहु या केतु खाना नं० 7 शादी और संतान में गड़बड़ खाना नं० 5 या 9 में या 3 या 9 में पापी ग्रह हों या खाना नं० 5, खाना नं० 9 या खाना नं० 3 या खाना नं० 9 में वृहस्पति या सूर्य के शत्रु ग्रह हों या मंगल खाना नं० 4 या पापी ग्रह खाना नं० 9 में या राहु, बुध खाना नं० 1 या केतु, शुक्र खाना नं० 1 या राहु अकेला खाना नं० 9 संतान के विघ्न या मौतें करेंगे। शुक्र, केतु खाना नं० 1 में, मंगल खाना नं० 4 में संतान के विघ्न होंगे पापी ग्रह तीनों या कोई एक पाँच या 9 में, मंगल खाना नं० 4 में संतान के विघ्न होंगे।

बुध तथा शुक्र खाना नं० 5 में संतान पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। सूर्य हो खाना नं० 6 में और मंगल हो खाना नं० 1 या 11 में तो लड़के पर लड़का मरता जाये। जिस टेवे में शनि तथा बनावटी शनि (मंगल, बुध सांझे राहु स्वभाव) हो संतान अवश्य बर्बाद होगी, वह भी छोटी-छोटी आयु में 1 सूर्य खाना नं० 12 हो या मंगल, बुध साथी ग्रह चाहे स्वयं दोनों आपस में साथी ग्रह हो या

दोनों आपस में सांझे हो जाये मगर आमने-सामने न हो या सूर्य खाना नं० 12 में हो तो कभी संतान रहित न होगा।

वृहस्पति, शुक्र खाना नं० 7, चन्द्र, मंगल नष्ट बहुत बड़ा वृहस्पति और नर्म हाथ का वृहस्पति, शुक्र का काम देता है मगर बहुत बड़ा शुक्र संतान से रहित रखता है या नि:संतान होगा। शुक्र, केतु एक साथ खाना नं० 1 में और बुध नष्ट हो (सामने के दाँत खत्म) या चन्द्र, शुक्र आपस में आमने-सामने और पापी ग्रह या शत्रु घरों का साथ हो जाये या चन्द्र खाना नं० 8 छते कुएँ का साथ हो तो नि:संतान होगा। औरत के पाँव की पीठ यदि बड़ी हो तो बांझ होगी। शुक्र हो खाना नं० 2, 6 में दृष्टि या साथी आदि हो जाने के सब ही घर खाली हो यानी खाना नं० 2 या 6 का शुक्र हर तरह से अकेला हो, स्त्री बांझ संतान के योग्य न होगी।

नामर्द होगा

जब चन्द्र खाना नं० 1, शनि खाना नं० 7, सूर्य खाना नं० 4, शुक्र खाना नं० 5 में हो।

मिश्रित रेखाऐं
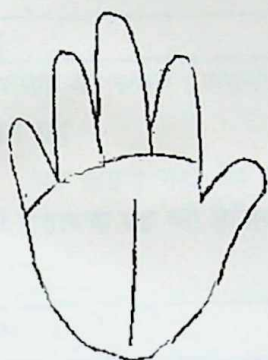
भाग्य का डण्डा
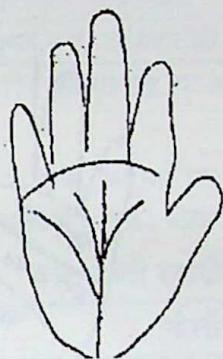
भाग्य रेखा के मोड

वृहस्पति की भाग्य रेखा
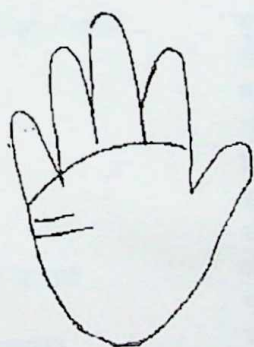
विवाह की रेखायें
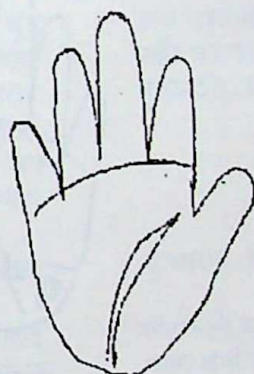
शादी रेखा
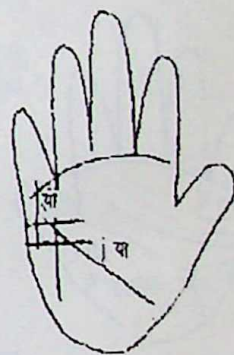
शादी रेखा से अन्य रेखा का सम्बंध
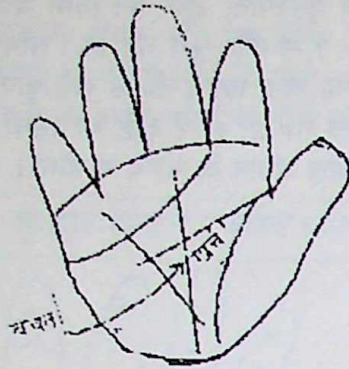
बचत

बड़ त्रिकोण

बचत-खर्च

साहूकारा
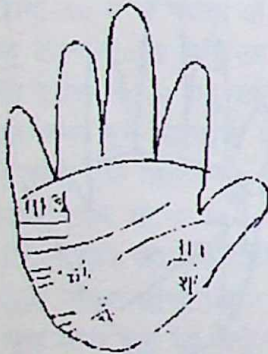
संतान रेखाएँ

सफर की रेखा

महकमें विभाग

नाम ग्रह	संबंधित विभाग	आय का अनुपात रुपया 1
वृहस्पति	दवाई-उपदेश-कानून (चन्द्र)	11
सूर्य	सरकारी हिसाब-किताब (कलम बुध)	1
चन्द्र	विद्या खज़ाना (समुद्री)	9
शुक्र	खेतीबाड़ी पशु गृहस्थी कामकाज़	6
मंगल	जंगी-प्रशासन-आम लोगों से वास्ता	7
बुध	व्यापार-दलाली-सट्टा नसवां (लड़कियां)	3
शनि	इमारती मशीनी, डॉक्टरी, रेलवे, लोहा, लकड़ी	1
राहु	बिज़ली पुलिस (खुफिया) जेल खाना	8
केतु	बच्चों से संबंधित-मुसाफिरी-सलाहकारी	5

1. कमाई का समय (अपनी कमाई शुरू होने के दिन से) कीमत ग्रह या आयु के बीते हुये वर्षों की गिनती (जब चन्द्र उत्तम)।

कीमत ग्रह :-

यह ज़रूरी नहीं कि ऊपर दी गई रकमें बदल न सकें अमूमन ऐसा होता है परन्तु बात का पूरा फैसला भाग्य के ग्रह अं बाकी सहायक ग्रह की हैसियत और हालत पर हुआ करता है। उत्तर औसतन ही हुआ करते हैं।

कलम की स्याही

पैन	स्याही का रंग : लाल	नीली	हरी
सुनहरी कैप और लाल बैरल	खुद मुकाबले के लिए गैरतमंद शरारत का माकूल जवाब देने की हिम्मत का मालिक सूर्य, मंगल, बुध	एक ही लाखों के मुकाबले का मंदे घरों का भी उत्तम फल सूर्य, बुध, शनि	—
कलम की स्याही	बुध भला तो मच्छ रेखा बुध मंदा तो काग़ रेखा, यानी जब नई कलम और किसी तरह की मुरम्मत न और नये हिस्से शामिल न हों उत्तम फल वर्ना हर तरह से मंदा, वृहस्पति, बुध, शनि, मंगल	अब वृहस्पति मंदा न होगा, बुध, शनि का उत्तम फल होगा बुध, वृहस्पति, शनि	—
पीली कलम	मंगल, वृहस्पति उत्तम शहाना परिणाम	साधारण फकीराना परिणाम।	उत्तम बुध विधाता की
हरी कलम	मंगल, बुध शेर के दाँत शहद में रेत मुसीबत में सहायक मगर खांड ज़हर मुश्तरका	उत्तम तो सफेद हाथी बहुत उत्तम फल वर्ना जेलखाना, पागलखाना मिले बुध, राहु	
लाल कलम	उत्तम	साधारण मगर उत्तम	बुरा
काली कलम	बुरा	उत्तम	उत्तम
दोरंगी कलम लाल	उत्तम सूर्य, बुध	बुध, राहु शक्की	बुध उत्तम हो रंग के सा
दोरंगी लाल रंग का साथ न हो	बुरा मंगल, केतु	राहु, केतु बुरे	गरीबाना

सफ़र का हुक्मनामा :-

दरयाई सफ़र का स्वामी चन्द्र, हवाई सफ़र का स्वामी वृ०, खुश्की के सफ़र का स्वामी शुक्र मगर सब ही सफ़रों का हुक्मनामा जारी करने वाला केतु ग्रह हैं। इसलिये हर एक, एक किस्म के जुदा-जुदा सफ़र के लिये संबंधित ग्रह का भी विचार रखा जाना चाहिये।

चन्द्र सफ़र रेखा - हस्त रेखा :-

1. मामूली सफ़र :- चन्द्र का सफेद घोड़ा माना गया है जो असर में दरयाई या समुद्री कहलाता है और समुद्र पर चाँद की चाँदनी की तरह दम के दम में फिर आता है। मगर खुश्की या शुक्र के घर में शत्रुता करता है और ठोकरें मारता है।
2. चन्द्र के बुर्ज पर जब शुक्र रेखा हो तो खुश्की और शुक्र से संबंधित सफ़र अमूमन होंगे या चन्द्र के पाँव को खुश्की का सफ़र चक्कर लगा ही रहेगा। चन्द्र स्वयं सदा सफ़र में रहता है और शुक्र तो शत्रुता नहीं करता चन्द्र शत्रुता करता है इसलिए चन्द्र का सफ़र स्वयं अपने लिए कभी हानिकारक न होगा मगर सफ़र ज़रूर होता रहेगा और अमूमन खुश्की का होगा।
3. जरूरी सफ़र :- जब चन्द्र के बुर्ज पर सूर्य रेखा या सीधी रेखा वृ० की हो और उसका रुख सूर्य की ओर हो तो ऐसा सफ़र समुद्र पर अति आवश्यक होगा। जिसमें राजदरबारी काम से संबंध होंगे। अगर इस रेखा का रुख बुध की ओर हो तो व्यापार में बड़ा भारी लाभ (बुध से मिले खत का जिक्र जुदा है)। ऐसी रेखा से सफ़र का नेक प्रभाव उसी हालत में गिना है जब यह रेखा सिर्फ चन्द्र के बुर्ज की हद के अंदर ही अंदर हो और ऊपर सूर्य या बुध में न मिले वर्ना शादी और औलाद का प्रभाव उल्ट होगा। चूँकि यह रेखा केवल बुध और सूर्य का ही रुख करती नेक गिनी है इसलिए इससे दूसरे कामों के सफ़र के परिणाम का संबंध नहीं लेते बाकी तरफ के रुख से बाकी बुर्जों के संबंध का प्रभाव होगा।

100 दिन तक मियाद का सफ़र कोई सफ़र नहीं गिना जाता :-

नीचे दी गई हालतों में किया गया सफ़र मंदे परिणाम का होगा।

दिन	दिशा	खासकर वर्षफल के हिसाब जब ग्रह हो
मंगल, बुधवार	उत्तर	जब खाना नं० 6 में केतु, मंगल, केतु या बुध, केतु हो।
शुक्रवार, रविवार	पश्चिम	जब खाना नं० 10, 11 में केतु, सूर्य, केतु या शुक्र, केतु हो।
सोमवार, शनिवार	पूर्व	जब खाना नं० 1, 5 में केतु, चन्द्र, केतु या शनि, केतु हो।
वीरवार	दक्षिण	जब खाना नं० 3 में केतु या वृहस्पति, केतु हो।

वर्षफल के हिसाब जब चन्द्र या केतु अच्छे घरों में हों या केतु पहले घरों में हों और चन्द्र हो केतु के बाद वाले (साथी दीवार) घर में तो सफ़र कभी अपनी मर्जी के उल्ट न होगा और न ही कोई मंदा प्रभाव देगा जबकि चन्द्र स्वयं रद्दी न हो रहा हो। सफ़र का फैसला अमूमन केतु के बैठा होने वाले घर (वर्षफल के हिसाब) अनुसार होगा। यानी जब केतु बैठा हो।

केतु घर में हो	प्रभाव होगा
1	अपने आपको सफ़र के लिए तैयार रखो, बिस्तर तक बांध लो हुक्मनामा हो चुके चाहे मगर आखिर पर सफ़र न होगा यदि हो जाये तो वापिस आना पड़ेगा। 100 दिन के अंदर-अंदर तक अस्थाई बाहर रहने का सफ़र हो सकता है खासकर जब खाना नं० 7 खाली हो।
2	तरक्की पर अच्छी हालत में सफ़र होगा, होंगी तो दोनों बातें ही (तरक्की और सफ़र) वर्ना एक न होगी जब तक खाना नं० 8 का मंदा प्रभाव शामिल न हो।
3	भाई-बन्धुओं से दूर परदेस का जीवन होगा जब खाना नं० 3 सोया हो।
4	अव्वल तो सफ़र न होगा, अगर होगा तो माता बैठी होने वाले शहर तक या माता के चरणों तक होगा फिर भी होगा तो न ही जगह की बदली और न ही सफ़र कभी मंदा होगा जब तक खाना नं० 1 मंदा न हो।

5	मुकाम या शहर की तबदीली तो कभी देखी नहीं गई मगर महकमें के अंदर या शहर घर कमरे की तबदीली हो जाये तो कोई शक नहीं परिणाम मंदा न होगा जब तक वृ० नेक हो।
6	सफ़र का हुक्मनामा हो हुआ कर तबदीली शहर का हुक्म एक बार तो अवश्य रद्द होगा जब केतु जागता हो।
7	जद्दी घर बार का सफ़र (तबदीली अवश्य, तरक्की की शर्त नहीं) ज़रूर होगा अगर वह टेवे वाला स्वयं खुशी से न जाये तो बीमार आदि होकर उसकी लाश या वह बतौर लाश वहा जाये किस्सा कोताह - सफ़र ज़रूर होगा। शहर ज़रूर बदलेगा परिणाम नेक होगा जब तक खाना नं० 1 मंदा न हो और केतु जागता हो।
8	कोई खास खुशी का सफ़र न होगा अपनी मर्ज़ी के उल्ट या मंदा ही सफ़र होगा। जब तक खाना नं० 11 में केतु के शत्रु (चन्द्र या मंगल) न हो केतु की इस मंदी हवा के प्रभाव की चीज़ों (कान, रीढ़ की हड्डी, टाँगों की बीमारी, दर्द जोड़, गठिया आदि स्वयं कुत्ते (जानवर या तीन दुनियावी कुत्ते)) पर भी हो सकता है चन्द्र का उपाय यानी धर्म स्थान में और कुत्ते को (एक ही दिन दोनों को) लगातार 15 दिन तक दूध देना या खाना नं० 2 को नेक कर लेना या खाना नं० 2 का किसी और ग्रह से स्वयं ही नेक होना सहायक होगा।
9	शुभ हालत खुशी-खुशी अपने जद्दी इलाकों (घर बार) की तरफ का सफ़र और अपनी दिल (मन की) इच्छा पर सफ़र होगा और परिणाम सदा नेक रहेगा जब तक खाना नं० 3 का मंदा प्रभाव शामिल न हो।
1	शक्की हालत शनि उत्तम तो दो गुना उत्तम, लेकिन यदि शनि मंदा हो तो दो गुना मंदा, हानिकारक बिन समय का सफ़र होगा अगर खाना नं० 8 मंदा हो तो मंदी हवा के मायूस झोंके ज़रूर साथ देंगे (होंगे)। खाना नं० 2 सहायक होगा। चन्द्र का उपाय बजरिया खाना नं० 5 (संतान या स्वयं सूरज को चन्द्र की चीज़ें दूध, पानी का अर्ध) सूरज की ओर मुँह करके पानी देना सहायक होगा।
11	सफ़र का हुक्मनामा ऊपर के बड़े-बडे ऑफिसरों से चल कर नीचे तक पहुँच ही न पायेगा। सफ़र का स्वामी केतु सांसारिक दरवेश कुत्ता रास्ते में लेटा होगा (यानी असली जगह) से वह पहले ही तबदील होकर किसी दूसरी जगह सफ़र के रास्ते में ही बैठा होगा। जिस ग्रह से आगे सफ़र का सवाल आगे आएगा फर्ज़ी हिलजुला होगी, अगर सफ़र हो ही जाए तो 11 गुना उत्तम जब तक खाना नं० 3 से मंदा प्रभाव शामिल न हो रहा हो।
12	अपने बाल-बच्चों के पास रहना आराम से ऐश का जीवन व्यतीत करने का समय होगा। तरक्की ज़रूर होगी, मगर तबदीली की शर्त नहीं। यदि सफ़र हो तो लाभ होगा। केतु अपना उच्च फल देगा, परिणाम लाभदायक रहेगा जब तक खाना नं० 6 उत्तम, खाना नं० 2 उत्तम और खाना नं० 12 को ज़हर न दें।

मकान :-

टेवे बैठे ग्रह 1 से 9 वें, दायें दाखिला बोलते हैं।
चलते 12 से घर 9 आये, असर बायें पर देते हैं।

जन्म कुंडली के अनुसार जो ग्रह 1 से 9 तक बैठे हों वो अपना-अपना असर मकान में दाखिल होते हुए दायें हाथ की दिशा को जाहिर करते हैं और 12 से 10 तक बैठे ग्रह मकान के बायें तरफ अपना असर जाहिर करते हैं। उदाहरण के लिए शनि खाना नं० 4 में और खाना नं० 2 में सूर्य तो इस मकान में दाखिल होते समय दायें हाथ की छतों के हिसाब से दूसरी कोठरी में सूर्य से संबंधित चीज़ें यानी अनाज़ गुड़ या दिखावे की धूप आदि होगी और दायें हाथ से चौथे नं० की कोठरी में शनि की चीज़ें बड़े-बड़े संदूक (सेफ) लोहा, लकड़ी या चाचा की मौत (यानी टेवे वाला का कोई चाचा हो तो अमूमन वह उसी कोठरी में मरेगा) या उस कोठरी की छत और दरवाज़े पुराने समय की लकड़ी कीकर, शीशम फलाही के आदि के बने हुये होंगे और खाना नं० 2 में

सूर्य (राजदरबार खुद अपने आप) से संबंधित काम हुए होंगे तो खाना नं० 5 में अमूमन खांसी के बीमार, रात को पानी मांगते ही वक्त गुज़ारते होंगे। वर्षफल के हिसाब शनि जब राहु, केतु के संबंध से नेक स्वभाव का साबित हो और दृष्टि के हिसाब या वैसे ही राहु, केतु के साथ ही बैठे हो तो मकान ही मकान बनेंगे, लेकिन जब राहु, केतु के साथ ही हो तो मगर बुरे असर का तो बना मकान बर्बाद और गिरवा देगा या बिक जायेंगे। यही हाल वर्षफल में आने के वक्त वर्ष में होगा। खाना नं० 2 मकानों की हालत बतायेगा। खाना नं० 7 मकानों का दुःख-सुख बताता हे।

2. शुरू से आखिर तक कुल का कुल (सारे का सारा) पुष्य नक्षत्र में बनाया हुआ मकान अति उत्तम होगा। मकान पूरा हो जाने के बाद उसकी प्रतिष्ठा पर खैरात करना ज़रूरी और शुभ है।

शुभ लग्न में नेक मुहूर्त से शुरू किये मकान के लिये नीचें की बातें अति शुभ होगी। मकान की बुनियाद रखने से पहले तह ज़मीन के इर्द-गिर्द पानी का हाशिया डाल कर उसके बीच (तह ज़मीन में जिस पर मकाना बनाना है, चन्द्र की चीज़ों से भरा बर्तन 40-43 दिन तक तह ज़मीन में दबा कर खानदानी नेक नतीजे देख लेना ज़रूरी होगा। क्योंकि बर्तन दबाने के दिन से शुरू करके जन्म कुण्डली में शनि बैठा होने के घर नं० के दिन तक शनि अपना बुरा या भला असर जो वो मकान बनाने पर देगा दिखा देगा। मंदा असर (अचानक सख्त बीमारी, मुकद्दमा झगड़ा या कोई और दूसरी लानत का खड़ा होना) जाहिर होते ही फौरन वो दबाया बर्तन ज़मीन से निकाल कर पानी में (चलते नदी-नाले) में गिराया जा सके तो अच्छा है वर्ना बहा दें। मंदा असर बंद होगा। मगर अब इस तह पर बनाया मकान उस खानदान की बर्बादी का बहाना होगा।

क्याफा :-

3. जन्म कुंडली में बैठे शनि के मकान का असर :- मकान की नींव डालने के दिन से 3 या 18 साल की मियाद के बाद हर मकान अपना असर ज़रूर देगा।

जन्म कुंडली में शनि बैठा हो :-

खाना नं०	मकान का असर
1	टेवे वाला अगर मकान बनाये तो काग़ रेखा जब शनि मंदा हो तो कव्वे की खुराक तक को तरसता हो। निर्धन सब तरफ बर्बादी लेकिन जब शनि उत्तम, खाना नं० 7, 1 खाली हो तो उम्दा फल होगा।
2	मकान जैसा बने बनने दे मुबारक ही देगा।
3	केतु पालन 3 कुत्ते रखें तो मकान बनेगा वर्ना गरीबी का कुत्ता भौंकता रहेगा (मंदे अर्थों में)।
4	अगर मकान बनाये तो अपनी माता, दादी और सास, मामू खानदान को ज़हर दे, नींव खोदते ही मामू और सास, माता, दादी का खानदान बर्बाद होने लग जाये।
5	खुद बनाये मकान औलाद की कुर्बानी लेंगे मगर औलाद के बनाये मकान टेव वाले के लिए शुभ होंगे फिर भी अगर मकान बनाना ज़रूरी हो या सामर्थ्य रखता हो मकान बनाने की तो शनि की जानदार चीज़ें (जिसमें भैंसा वगैरा) बतौर दान देना या बतौर कुर्बानी ज़िंदा छोड़ देने के बाद मकान की बुनियाद रखें तो शनि का औलाद पर मंदा प्रभाव न होगा फिर भी अगर हो सके तो 48 साल की उम्र के बाद मकान बनाये।
6	शनि की मियाद 36 बल्कि 39 साल के बाद मकान बनाना अच्छा है वर्ना अपनी लड़कियों के रिश्तेदारों को तबाह करेगा।
7	अव्वल तो नये बनाये मकान की बहुत मिलेगें जो शुभ होंगे यदि उल्ट बिकने ही लगे तो सबसे पुराने मकान की दहलीज़ का कायम रखना सब कुछ वापस दिला देगा।
8	मकान बनाना शुरू हो तो मौत गर्जनें लगें। शनि अब राहु, केतु की हालत पर अच्छा या बुरा असर देगा।

9	टेवे वाले की औरत या उसकी माता के पेट में बच्चे के वक्त टेवे वाले की अपनी कमाई से बनाया हुआ मकान पिता को अच्छे हाल में या ज़िन्दा न छोड़ेगा और जब टेवे वाले के पास 3 अलग-अलग रिहायशी मकान हो जाएंगे तो उसका आखिरी वक्त (मौत) पहुँच चुका गिनेंगे।
‍1	जब तक मकान न बनाये शनि मकान बनाने के लिए समान जमा कराने की कीमत (नकद रुपये) देता जायेगा। जब मकान बन जायेगा तो शनि बिस्तरा गोल करके लेकर भाग जायेगा, ढूँढने पर उसका निशान तक न मिलेगा। आमदन बर्बाद बल्कि खत्म (मंदे अर्थों में)।
11	मकान अमूमन 55 साल की आयु के बाद बनेगा, दक्षिण दरवाज़े वाले मकान के रिहायश से बहुत लम्बा अर्सा लेट कर गल सड़ कर मरना पड़ेगा।
12	साँप (शनि), बन्दर (सूर्य) जो कभी अपना बिल या घर न बनाते अब मकान बनाना सीख लेंगे यानी मकान खामखां और खुद व खुद बनेंगे जो मुबारक होंगे चाहे अब शनि के साथ सूर्य भी खाना नं० 12 में हो। टेवे वाले को चाहिये कि बनते मकान को न रोके जैसा बने बना छोड़े।

8-18-13-3, बचून चूक,
पाँच कोण का मंदिर रचे,
अग्नि आयु हो 8 से मंदी,
13 लगे घर आ उस फाँसी,
बचून चूक से नस्ल हो घटती,
भुजा बिना श्मशान हवार [1] थी,
5 कोने औलाद हो मरती,
मौत बीमारी अन्त न देती,
चार कोने दे कुल की उन्नति,
असर अन्दर हर कमरा अपनी,

भुजा बलहीन।
कहे विश्वकर्मा कैसे बचे।
18 चन्द्र, गुरु मरता हो।
3 भाई-बन्धु मरता हो।
काग रेखा फल होता हो।
मुर्दा शादी में जलता हो।
वीरान इलाका होता हो।
साँप छाती पर चलता हो।
सिंहासन बतीसी बनता हो।
पैदाइश जुदी पर चलता हो।

1. हवार = मुर्दागाड़ी का तख्त।

रहने की जगह 12 राशियाँ

शुभ लग्न और नेक शगुन से शुरू किये मकान के लिये नीचे की बातें पूरा करने के लिए उच्च होंगी:-

मकान के कोने

मकान बनने से पहले तमाम ज़मीन के टुकड़ों को एक गिनकर उसके कोने या गोशे देखेंगे, 4 गोशे या कोने सबसे उत्तम होंगे जिसका हरेक कोना 9 का हो। नीचे लिखे गोशे हरगिज़ न हों जो नीचे गिने गये हैं— 8 कोने, 18, 3, 13 कोने, बीच में मछली के पेट की तरह उठा हुआ, भुजा बलहीन, 5 कोने ''पाँच कोण का मंदिर रचे, कहे विश्वकर्मा कैसे बचे''।

8 कोण :-

शनि खाना नं० 8 का असर देगा यानी मातम और बीमारी होगी।

18 कोण :-

वृहस्पति (सोना-चाँदी) का फल खराब होगा।

3, 13 कोण :-

मंगल बद का प्रभाव यानी भाई-बन्धुओं की आफतों में तबाह होगा। मौतें और आग के नुक्सान बहुत होंगे, किसी को फाँसी भी लग सकती है।

5 कोण :-

पाँच गोशे या कोने वाला औलाद के दुःख और उनकी बर्बादी देखेगा। 5 कोने ''पाँच कोण का मंदिर रचे, कहे विश्वकर्मा कैसे बचे''। ऊपर लिखे हर गोशे मकान की दीवार बनने से पहले ध्यान में जाएंगे।

बचून चूक :-

मध्य से बाहर, मछली के पेट की तरह Δ उठा हुआ, काग़ रेखा का असर देगा। खानदानी नस्ल घटेगी और अंत में खुद भी लावल्द होगा यानी अगर बाबे तीन भाई तो बाप दो भाई रह जायेंगे और खुद अकेला, आगे कुछ भी न हो।

भुजा बलहीन :-

बाजू बगैर या बाजू कटे मुर्दे की शक्ल का :- दुःख ही दुःख, मौतें ही मौतें अगर किसी की ऐसे मकान में शादी हो जाये तो शादी वाला पुरुष या स्त्री रंडवा या बेवा हो जाए।

दीवारें :-

ज़मीन के गोशे देखने के बाद और मकान बनने से पहले दीवारों का क्षेत्रफल और नींवें छोड़ कर हरेक हिस्सा या कमरे का अंदरुनी क्षेत्रफल जुदा-जुदा देखा जाये तो मकान के मालिक या स्वामी जिसने मकान बनाना है और खुद भी उसमें रिहायश करनी है, के अपने हाथों की पैमाइश में क्षेत्रफल देखे जायें यानी पैमाइश के लिये उसका अपना स्वयं का हाथ ही चाहे वह 18'' का हो, 19'' का हो या 17'' का हो। पैमाना उसके हाथ की लम्बाई का हो।

हाथ की लम्बाई :-

कोहनी (बाजू के सिरे की हड्डी) से लेकर अनामिका के आखिर तक या कोहनी के सिरे के अलावा दूसरी हड्डी होती है वहाँ से लेकर मध्यमा के आखिर तक यह दूसरी हदबंदी उत्तम है।

तरीका :-

$$\frac{[(\text{लम्बाई} + \text{चौड़ाई})\ 3\ 3] - 1}{8}$$

जो बाकी बचा वह प्रभाव होगा यानी लम्बाई = 15, चौड़ाई = 7 हाथ तो

$$\frac{(15 + 7)\ 3\ 3 - 1}{8}$$

शेष बचा 1, शेष 1, 3, 5, 7 हो तो नेक हो।
0, 2, 4, 6, 8 हो तो मंदा हो।

शेष	प्रभाव
1	वृहस्पति, सूर्य होगा खाना नं० 1 का, वह मकान मकानों में राजा समान बुलंद हैसियत होगा।
2	वृहस्पति, शुक्र एक साथ खाना नं० 6 में, मानिद कुत्ता, गरीब, केतु खाना नं० 6 का उपाय या वृहस्पति, शुक्र खाना नं० 6 का उपाय करें।
3	मंगल, वृहस्पति खाना नं० 3 में, शेर की तरह होगा पुरुषों के लिए उत्तम बैठक या दुकान या व्यापार के लिए यानी उत्तम होगा मगर स्त्रियों व बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। ऐसे मकान में मर्दों की बरकत दुनियावी झगड़ों में लाभ रहेगा। पति-पत्नी बिना बच्चे (शुक्र खाना नं० 3) के लिए मंगल का घर ठीक है परन्तु बाल-बच्चों हेतु (केतु), मंगल, केतु की शत्रुता का असर देगा। अगर बच्चे

	समेत रहना पड़ जाये तो वृ० के पीले फूल घर में कायम करें। बेहतर यही कि बच्चों वाले जोड़े दूर रहे। स्त्री की ऐशोइशरत के लिए बेशक रखें। शेर, कुत्ते का बर्ताव (शुक्र) स्त्री अकेली या बच्चों से अलग रहती हो या रात को सोती रहे तो कोई बुरा असर न हो, शुक्र, मंगल, मित्र है।
4	शनि, चन्द्र एक साथ खाना नं० 4 में गधे समान होंगे। रात-दिन मज़दूरी का कुछ भी नहीं मिला, मिला भी तो गंदा खाना किसी ने परवाह न की। चन्द्र, शनि खाना नं० 4 का उपाय करें।
5	सूर्य, वृहस्पति, खाना नं० 5 गाय समान, स्त्री बच्चे सब सुख पाये शुक्र का पूरा और नेक फल होगा। मच्छ रेखा का उत्तम फल होगा। मकान पीछे से चौड़ा आगे से तंग बैल समान होगा तो भी गऊशाला-गऊघाट कहलाएगा इसका प्रभाव 5 वाला ही होगा।
6	सूर्य, शनि खाना नं० 6 में एक साथ तकिया की तरह मुसाफिर यानी केतु का बुरा प्रभाव न माता रहे न पिता सुख ले, ना औलाद आराम ले, ना यार-दोस्त साथ मिले और मुसाफिर और मुसीबत का मारा रहे (सूर्य, शनि खाना नं० 6 का उपाय)।
7	चन्द्र, शुक्र एक साथ खाना नं० 7 में हाथी समान होंगे हस्तिघर, पशुओं का तबेला उत्तम और अच्छा (राहु)।
8	मंगल, शनि खाना नं० 8 में (साथ) चील स्वभाव मौत का घर शनि का मुख्यालय (मंगल, शनि खाना नं० 8 का उपाय)।

मकान में आने-जाने का सबसे बड़ा दरवाज़ा :-

1. पूर्व हो तो उत्तम हर वक्त नेक आदमी का आना-जाना और तमाम सुख हों।
2. पश्चिम हो तो दूसरे दर्जे का उत्तम होगा।
3. उत्तर हो तो नेक होगा लम्बे सफ़र, पूजा-पाठ का शुभ काम लम्बे नेकी के काम करने के लिए आने-जाने के रास्ते, जिसका असर रुहानी और परलोक के कामों में नेक होगा।
4. दक्षिण सबसे मनहूस है, औरत जाति के लिए मौत का सबब, आदमी भी कोई सुख न पाये, अग्नि कुंड का जेलखाना जिसमें जलने के सिवाय कोई चारा नहीं। मौत गिनने की जगह छड़े का तबेला, या रंडवे के अफसोस करने की जगह।

दक्षिण दरवाज़े वाले मकान के मालिक या रहने वाले को बेहतर होगा कि वह प्रथम तो हर साल नहीं तो कभी-कभी बकरी दान दे या बुध की चीज़ें खैरायत के तौर पर कच्ची शाम के समय दे ताकि उस मकान में हर वक्त बीमार पड़ा रहने या इधर-उधर कोई न कोई छेड़खानी, जिसमें धन हानि हो, लगी रहने से बची रहे।

शहतीर का रुख :-

दाखिल के दरवाज़े के बराबर हो, समान्तर हो तो अच्छा। शुक्र की छत उत्तम और अगर काटती हुई शक्ल या सोते वक्त छाती को पार करे (शनि की छत) तो मौत, बीमारी दे।

कड़ियों की तादाद :-

कुल योग को 4 पर भाग दें यदि शेष 1 तो राजा का स्वभाव, 2 शेष तो यमदूत, 3 शेष तो राजयोग होगा।

मकान में अगर बाहर से हवा किसी सीधे रास्ते या आम रास्ते से बिल्कुल सीधी होकर आये तो बच्चों के लिये अच्छी नहीं गिनी, कोई न कोई अचानक मुसीबत खड़ी करेंगे। सेहत के असूल पर दूसरी चीज़ों के अलावा ख्याल ज़रूरी है कि रात को सोते वक्त चारपाई का सिरहाना पूर्व में रहे तो शुभ हो, दिन को दिमाग़ ने काम किया सूर्य ने सहायता की रात को रुह ने काम संभाला और चन्द्र ने मदद की पाँव का दक्षिण या पूर्व में सोते वक्त होना मनहूस है। उत्तर का कोई ख्याल नहीं यानी रुहानी काम चाहे सिर से करें या पैर से नेकी है। इसमें हाथ-पाँव का सवाल नहीं होता चाहे सोये हुए सोच-विचार रुह से हो या चाहे जागते जिस्म से शुभ है। मकान के अंदर की चीज़ें शुभ असर देगी, जब सिंहासन या बैठक पूर्व की दीवार के बीच के हिस्से में हो। आग़ की जगह दक्षिण या दक्षिण, पूर्व कोने में हो, पानी की जगह पूजा-पाठ, पहाड़ उत्तर, पूर्व कोने में हो।

धन-दौलत की जगह दक्षिण या दक्षिण, पश्चिम हो तो शुभ। खाली जगह मेहमान बगैरा के लिए पश्चिमी कोना अच्छा है। चूल्हें का मुँह शरकन गरबन हो ठीक है। मकान से बाहर निकलते वक्त पानी दायें हाथ आग़ बायें हाथ या पीठ पीछे रह जाये तो ठीक है। मकान के नज़दीक अगर पीपल का वृक्ष हो तो उस वृक्ष की सेवा से बहुत फल होगा, अगर उसकी सेवा या उसकी जड़ों में पानी न डाला गया तो जहाँ तक उसका साया जायेगा, तबाही और बर्बादी मचाता जायेगा यही हाल समीप के कुएँ का हो, अगर उसमें श्रद्धा भाव से थोड़ा सा दूध डाला तो ठीक अगर मंदा किया तो तबाही।
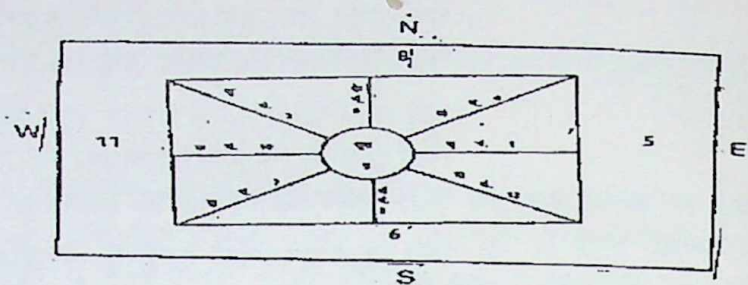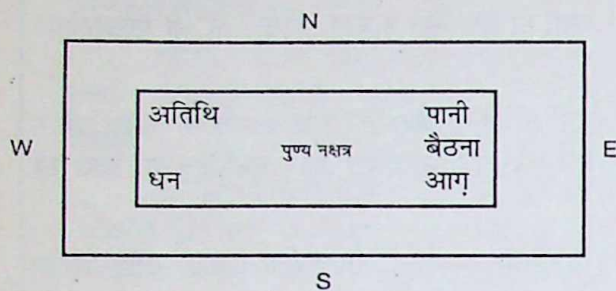
मकानो में ग्रहों की पक्की जगह

घर में कीकर का वृक्ष लावल्द किए न छोड़े, इससे बचाव के लिए सूर्य निकलने से पहले तारों की छाँव में जब भी अंधेरा हो 40 दिन हर शनिवार और कभी-कभी पानी हमेशा डालना चाहिये।

मकान में ऊपर दी हुई ग्रहचाल से मुराद है कि हर कोने और दिशा किसी न किसी ग्रह के लिए सदा के लिए पक्की तरह से है। इस विद्या में हर ग्रह की संबंधित चीज़ भी स्थित है अर्थात् कि यदि मकान में संबंधित ग्रह की पक्की जगह पर उसके शत्रु ग्रह की चीज़ कायम कर दें तो उस ग्रह की (जिसके लिये मकान में पक्की जगह पक्के तौर पर स्थित है) चीज़ों से टेवे वाले को फायदा न होगा।

उदाहरणतय :- चन्द्र के लिए खाना नं० 4 (उत्तर, पूर्वी कोना) मकान में स्थित है अगर खाना नं० 4 वाले कोने में लोहे का बड़ा सन्दूक (आईरन सेफ) लाकर रख दें तो चन्द्र का फल मंदा ही होगा या टेवे वाले को चन्द्र की चीज़ों का कोई आराम न मिलेगा, चन्द्र की सिर्फ चीज़ों का जो मकान में हो बैठ कर प्रयोग की जाये।

कब्रिस्तान या श्मशान की तह में बनाया मकान अमूमन मंदा नि:संतानता या दत्तक रखने का बीज़ होगा, जिसके मंदे असर से बचाव के लिए (उत्तर, पश्चिम) मकान की छत पर बैठे हुए पूर्व की ओर मुँह करके 4 या 43 कदम के अन्दर-अन्दर कुआँ बनाना शुभ होगा।

गली का आखिरी मकान (जहाँ से आगे जाने का रास्ता बंद हो जाए) और ऐसा मकान जिसमें हवा बाहर से किसी सीधे रास्ते या आम रास्ते से सीधी आकर दाखिल होती हो तो बच्चों के लिए मनहूस होगा या हवाए बद या बुरी रुह का दाखिला गिना जायेगा, बाल-बच्चे, स्त्री सब के सब बर्बाद राहु, केतु के मंदे असर प्रात: शाम होंगे। ऐसा मकान जो सदा बुरा प्रभाव देगा। कोई न कोई अचानक मुसीबत खड़ी होती रहेगी, न स्त्री वहाँ पर रह सके, न आँखों वाले आदमी यानी अन्धा व्यक्ति और वह भी रंडवा अपने जोड़ों के दर्द की मालिश करवाने के लिये रहता होगा।

स्वास्थ्य और बीमारी

(सेहत, बीमारी, नफा, नुक्सान, हार-जीत हर दो के लिए यही असूल होंगे)

घर अपने से पाँचवे दोस्त, सातवें उल्ट होते हैं।
आठवें घर पर टक्कर खाते, नींव नौवें पर बनते है।
तीसरे घर के जुदा-जुदा हो, बुध से वो आ मिलते हैं
घर दसवें से आपसी दुश्मन, धोखा देते या चक्कर है।

वर्षफल के हिसाब से खाना नं० 3 की मंदी हालत उल्टे परिणाम के आने की, आगे आने के चिन्ह है।
अगर खाना नं० 3 खाली हो तो खाना नं० 8 की मंदी हालत उल्ट परिणाम का चिन्ह है।
अगर खाना नं० 3-8 भी खाली हो तो खाना नं० 5 की मंदी हालत उल्ट परिणाम का चिन्ह है।
अगर खाना नं० 5 खाली हो तो खाना नं० 11 की मंदी हालत उल्ट परिणाम का चिन्ह है।
अगर खाना नं० 11 खाली हो तो खाना नं० 3 की मंदी हालत उल्ट परिणाम का चिन्ह है।
अगर सब के सब खाली हो तो खाना नं० 4 की मंदी हालत उल्ट परिणाम का चिन्ह है।
बीमारी का शुरू खाना नं० 8 से शुरू होगा।
खाना नं० 2-4 बहाना होंगे।
खाना नं० 1 उसमें लहरें बढ़ाएगा।
खाना नं० 5 रुपये-पैसे का खर्चा।
खाना नं० 3 दुनिया से चले जाने का हुक्म सुनाएगा।

चूँकि खाना नं० 3 के ग्रहों खाना नं० 8 की मंदी हालत से बचाने वाले होंगे। बशर्ते खाना नं० 11 के शत्रु ग्रहों से वह मंदा न हो। आखिरी अपील सुनने का मालिक चन्द्र होगा। अगर चन्द्र खाना नं० 4 में बैठा हो और राहु, केतु खाना नं० 2-8 या 6-12 में बैठे हों तो उम्र के ताल्लुक में कोई मंदा असर न देंगे।

खाना नं० 2 में बाहम शत्रु बैठे हों तो या उनका असर खाना नं० 8 में बैठे शत्रु ग्रह के सबब से (जो कि खाना नं० 2 वालों के शत्रु हों) मंदा हो रहा हो तो ऐसे ज़हर का खाना नं० 2 की चीज़ों या काम या संबंधियों खाना नं० 2 से संबंधित पर कोई बुरा असर न होगा। क्योंकि खाना नं० 2 के ग्रहों का प्रभाव हमेशा अपना ही होता है। चाहे वह शत्रु हों मगर उसी वक्त जब कि खाना नं० 2 के बाहम शत्रु ग्रहों के ज़हर हो सकता हो या खाना नं० 8 के ग्रह अपनी शत्रुता से खाना नं० 2 का असर ज़हरीला कर सकते हों, खाना नं० 1 (जो कि बीमारी की लहर को घटा-बढ़ा सकता है) खाली हो तो खाना नं० 2 के आपसी शत्रु ग्रहों का बीमारी के संबंध में कोई दखल न होगा। मंदे ग्रह (खाना नं० 3 या किसी भी घर के) जिस वक्त खाना नं० 3 या 9 में आये बुरा समय होगा जिसकी नींव पर राहु, केतु की शरारत होगी। राहु की बुरी-भली तासीर का पता बुध बतलायेगा और केतु की बद न नेक नीयत वृहस्पति जिसकी रोकथाम खाना नं० 8 से यानी खाना नं० 8 से मंदे असर पैदा करने वाले ग्रह का उपाय करने और मुकम्मल इलाज़ खाना नं० 5 करेगा, यदि खाना नं० 5 खाली हो तो सेहत अच्छी और अगर बीमार हो जाये तो खुद ही ठीक हो जायेगा।

संक्षेप में :-

खाना नं० 3 बर्बादी देता है, खाना नं० 5 शरीर में रुह डालता है, इनकी नींव खाना नं० 9 में अगर 3-5 दोनों खाली हो तो 2-6-8-12 का फैसला होगा, जिसकी आखिरी अपील चन्द्र पर होगी। वृहस्पति मंदा हो तो खाना नं० 5 पर बिजली पड़ेगी (देखें पक्का घर नं० 5)।

हस्त रेखा

शनि के पर्वत का ज़्यादा ऊँचा न होना या हाथ में शनि की रेखा का न होना अच्छी सेहत बताती है। मोटा जिस्म और सेहत जुदा-जुदा बातें हैं। मगर यह तमाम असूल सेहत से संबंधित हैं। हाथ की अंगुलियों के नाखून असूल के तौर पर बर्बाद शुदा या कटा हुआ नाखून 9 महीने में पूरा हो जाता है। अतः जब नाखून फटने लगे, (चोट आदि से नहीं वैसे ही) या फटे हुए नाखून ठीक होने लगे तो फटे हुए सेहत की दुरुस्ती, खराबी या दूसरी तबदीलियों के बारे में 9 महीने पहले ही बता देंगे।

खाना नं० 2 में कौन ग्रह ज़हरीला होगा	क्याफा क्या होगा	असर
बुध	हाथ की अंगुलियों के नाखून गोल या उनका रंग हरा होगा ।	खुद अपनी विद्या शर्मशार हो अंदरुनी स्वभाव लड़ाका हो अपने पैदा किये झगड़े दिमागी पठ्ठों की बीमारियाँ, खून की कमी होगी ।
राहु	नाखून चौड़े हों या रंग नीला हो (चोट से नहीं वैसे ही) ।	

शुक्र	नाखून छोटे या रंग सफेद हो।	छोटे दिल का लालची जल्दबाज़, गुस्से वाला, खून की कमी की बीमारी हो ।
वृहस्पति	नाखून बहुत छोटे या रंग पीला हो ।	कम अक्ल, जल्दबाज़ दिल की बीमारी हो ।
वृहस्पति	नाखून लम्बे, रंग सोने जैसा हो ।	फेफड़े और छाती की बीमारी, शारीरिक
केतु	नाखून लम्बे और बहुत तंग या रंग चितकबरा हो ।	पेट की बीमारी हो ।
शनि	नाखून मध्यम, रंग काला हो ।	काम करने-कराने में बहुत अच्छे मगर
राहु	नाखून झुके हुए टेढ़े या रंग सिक्के (धातु) जैसा हो जाये ।	नाज़ुक हालत हो ।

बीमारी

खाना नं० 3-9 मंदे हो तो खाना नं० 5 मंदा होगा। लेकिन अगर खाना नं० 9 में सूर्य या चन्द्र हो तो खाना नं० 5 उम्दा होगा। खाना नं० 10 के लिये खाना नं० 5-6 के ग्रह ज़रूरी शत्रु होंगे। मंदी हालत की निशानी मंदे ग्रह से संबंधित चीज़ों से होगी। जन्म कुंडली के अनुसार जब सूर्य या चन्द्र के साथ शुक्र या बुध या कोई पापी बैठा हो तो जिस वक्त वह 1-6-7-8-10 में आये, सेहत के संबंध में मंदा समय होगा।

किस खाने के लिए	कौन सा खराबी का कारण या बीमारी का बहाना होगा	कौन सा घर गिरते को खड़ाकरने वाला या सेहत का स्वामी होगा
3	खाना नं० 1 अचानक चोट देगा ।	खाना नं० 11 सहायता देगा ।
	खाना नं० 6 धोखा देगा ।	खाना नं० 7 नींव होगा ।
	खाना नं० 8 टकराव मंदा होगा ।	खाना नं० 2 सांझी दीवार होगा ।
5	खाना नं० 8 धोखा देगा । खाना नं० 7 अचानक चोट देगा । खाना नं० 1 मंदा टकराव होगा।	खाना नं० 1 मदद करेगा । खाना नं० 4 सांझी दीवार होगी ।
5	अगर खाना नं० 3-9-5 मंदे हो तो खाना नं० 5 भी मंदा होगा । सूर्य या वृहस्पति खाना नं० 5 में हो खाना नं० 10 के ग्रह उनके लिए विषैले शत्रु होंगे सिवाय चन्द्र खाना नं० 5 के जो खाना नं० 10 के सब ग्रहों के लिए विष होगा चाहे सूर्य, वृहस्पति खाना नं० 1 में हों ।	खाना नं० 9 बुनियादी घर होगा ।

ग्रह, बीमारी का संबंध :-

हर ग्रह से संबंधित बीमारियाँ नीचे दी गई हैं। जब कभी बीमारियों का दौरा हो तो उससे संबंधित ग्रह खराब या बर्बाद या नीच होगा। बीमारी के तंग करने पर उसके संबंधित ग्रह जो उस बीमारी के सामने दर्ज है, का उपाय करें तो मदद होगी। मुश्तरका ग्रहों में उस ग्रह का उपाय करें जिसके असर से दूसरा साथी मिला हुआ ग्रह भी बर्बाद हो रहा है। **जैसे वृहस्पति, राहु मंदे समय राहु का दिया हुआ उपाय मदद करेगा। अगर घर से बीमारी दूर न होती हो यानी एक के बाद एक दूसरा बीमार हो जाये तो नीचे दिये उपाय करें :-**

1. घर के सभी सदस्य और आये मेहमान औसतन की गिनती से कुछ एक ज़्यादा रख कर मीठी रोटियाँ चाहे कितनी छोटी और कितने ही थोड़े मीठे वाली हों पका कर हर महीने में (30 दिन के फर्क पर) अधिक से अधिक एक बार बाहर जानवरों (कुत्तों, कौवों आदि) को डाल दिया करें।
2. हलवा, कद्दू जो खूब पक चुका हो रंग में पीला, अंदर से खोखला, धर्म स्थान में सिर्फ एक बार हर 3 या 6 मास बाद और ज़्यादा न हो सके तो साल में एक बार रख दिया करे। या
3. अगर किसी तरह कोई मरीज सफा न पाये तो रात को उसके सिरहाने दो ताँबे के पैसे रख कर सुबह किसी भंगी को 4-43 दिन दें। ये पिछले जन्म के लेन-देन का टैक्स कहलाता है।
4. यदि हो सके तो श्मशान में, कब्रिस्तान में भी जब कभी गुज़रने का मौका मिले तो पैसा दो पैसा वहाँ गिरा दिया करें। इसे अति छुपी सहायता मानते हैं।

ग्रह	प्रभाव, बीमारियाँ
वृहस्पति	साँस, फेफड़े की बीमारियाँ होंगी ।
सूर्य	दिल की धड़कन, सूर्य कमज़ोर, जब चन्द्र की मदद न मिले तो पागलपन मुँह से झाग निकलना । अंग की ताकत खत्म हो जाना जब बुध खाना नं० 12 और सूर्य खाना नं० 6 में हो तो रक्तचाप की बीमारियाँ होंगी ।
चन्द्र	दिल की बीमारी, दिल की धड़कन, आँख के डेले की बीमारियाँ होंगी ।
शुक्र	त्वचा की बीमारी, खुजली, चंबल आदि (नाक छेदन, बुध के उपाय से मदद होगी) ।
मंगल	नासूर पेट की बीमारियों, हैज़ा, पित्त आमाशय की बीमारियाँ होंगी ।
मंगल बद	भगन्दर, फोड़ा नासूर की बीमारियाँ होंगी ।
बुध	चेचक, दिमागी ढाँचा की बीमारियाँ, खुशबू-बदबू का पता न लगना, नाड़ियों जीभ, दाँत की बीमारियाँ होंगी ।
शनि	आँखों की बीमारी, खाँसी हर प्रकार की, चाहे नई चाहे पुरानी हो । दमा जो वृहस्पति से संबंधित है, आँखों की बीमारियों के लिए नदी में नारियल बहाना शनि के मंदे असर से बचाएगा।
राहु	बुखार, दिमागी बीमारियाँ, प्लेग, दुर्घटना अचानक चोट लगना ।
केतु	रीढ़, दर्द जोड़, फोड़े-फुँसी, रसौली, सूजाक आतशक, मधुमेह, स्वप्न दोष, पेशाब की बीमारियाँ, अंग का शक्तिहीन हो जाना । कान के मर्ज़, रीढ़ की हड्डी, हर्नियां की बीमारियाँ होंगी ।

दो ग्रह	बीमारी
वृहस्पति, राहु	दमा, साँस का कष्ट होगा ।
वृहस्पति, बुध	दमा, साँस का कष्ट होगा ।
राहु, केतु इकट्ठे	बवासीर होगी ।
चन्द्र, राहु	पागलपन, निमोनिया होगा ।
वृहस्पति, राहु	दमा, तपेदिक होगा ।
सूर्य, शुक्र	दमा, तपेदिक होगा ।
बुध, वृहस्पति	दमा, तपेदिक होगा ।
मंगल, शनि	जिस्म का फट जाना, खून की बीमारियाँ और कोढ़ होगा ।
शुक्र, राहु	नामर्द होगा ।

शुक्र, केतु	स्वप्न दोष (सिर्फ केतु आदि की बीमारियाँ) होगा ।
वृहस्पति, मंगल (बद)	यरकान (पीलिया) होगा ।
चन्द्र, बुध या मंगल का टकराव	ग्लैंडस (ग्रंथि) ।

इंसानी आयु

इंसान गाफिल दुनिया कितनी, मारे से मरता नहीं।
वक्त हो जो आया अपना, रोके से रुकता नहीं।
बंद मुट्ठी का खज़ाना, बाकी जब रहता नहीं।
तदबीर अपनी खुद ही उल्टी, राज बन आता नहीं।

स्त्री-पुरुष, माँ-बाप, भाई बड़ा-छोटा, दायाँ-बायाँ, बाप-बेटा, माँ-बेटी, रात-दिन, जन्म-मरण, आरम्भ-अंत, आकाश, हवा, नर ग्रह, स्त्री ग्रह, नेकी-बदी, सबको गाँठ लगाने वाला बच्चा और उसकी लगाई हुई गाँठ ग्रह, शक, अदलो रहम से इंसाफ राहु, केतु एक साथ शुक्र सारे गृहस्थ की शादी ग़मी, जन्म कुण्डली और चन्द्र कुण्डली के दोनों जहांन के स्वामी वृहस्पति की हवा आने-जाने के रास्ते, बुध के खाली खलाव के आकाश की बुद्धि, सूर्य की रोशनी, शनि के अंधेरे की एक साथ जगह मृत्यु या आयु का आखिरी समय सबसे पहले देखा जाये। मगर किसी दूसरे को जाहिर न किया जाये, क्योंकि यह सब हिसाब-किताब सांसारिक और मनुष्य के दिमाग़ का काम है और उस मालिक का भेद किसी को नहीं मिला। हो सकता है कि कहीं गलती हो और नाहक वहम खड़ा हो और मायूसी से दुःख के समय और भी हानि खड़ी कर दे। यह भेद की शक्ति असली शक्ति है जो खाना नं० 6 (पाताल रहम), खाना नं० 8 (मौत) और खाना नं० 12 (आसमान इंसाफ) का परिणाम होंगी।

नोट :-

यह तीनों खाने सबसे पहले पूरे तौर पर देख लें वर्ना सब कहानी व्यर्थ होगी।

हर दो हालतों बचाव के लिये जो कुछ भी उपाय हो सके खुल्लमखुला कह देना और तरीका यह हो कि किसी को गुमान तक न हो कि ऐसा उपाय क्यों बताया है, सबसे अधिक जिम्मेवारी होगी।

उम्र	खाना नं०
औलाद की उम	11
माता की उम	6
पिता की उम्र	10
अपनी उम	8

उम्र का मालिक चन्द्र है लेकिन पितृ ऋण या मातृ ऋण वाले टेवे में आयु का फैसला सूर्य से होगा।

सूर्य हो खाना नं० में	चन्द्र उत्तर देगा
1	9
2	8
3	7
4	6
5	5
6	4
7	3
8	2
9	1
10	10
11	12
12	11

उदाहरणत: जन्म कुंडली के हिसाब सूर्य हो खाना नं० 6 में तो चन्द्र बेशक किसी घर में हो तो खाना नं० 4 का उत्तर या चन्द्र को खाना नं० 4 में लिख कर जो फैसला हो करें।

क्रमांक	अरिष्ट	बाकी आयु होगी
1.	स्वभाव बदल जाये यानी गर्म स्वभाव नर्म और नर्म स्वभाव गर्म हो जाये ।	1 साल
2.	ध्रुव सितारा रात को नज़र न आये ।	40 दिन
3.	घी, तेल, पानी में अपनी छाया न दिखे ।	7 दिन
4.	शीशे में अपना प्रतिबिम्ब न दिखे ।	1 दिन
5.	साँस लेते समय पेट न हिले या आँख पथराने लगी ।	कुछ घण्टे
6.	साँप का काटा हुआ (मौत चार दिन शक्की ज़हर से भरा हुआ खून, मुँह के रास्ते चल रहा हो या बहे) ।	मौत शक्की
7.	गैस से भरा हुआ (जिस्म वैसे का वैसा रहे अकड़े न) ।	शक्की हालत
8.	हथेली को रोशनी की ओर करके देखने पर हाथ में खून मालूम न हो या लाली सी नज़र आये या शरीर अकड़ जाये ।	यकीनी मुर्दा

आयु कितने साल होगी

ग्रहचाल	आयु होगी
चन्द्र खाना नं० 6, सूर्य खाना नं० 10, चन्द्र, केतु खाना नं० 6 में हों ।	12 दिन
सूर्य, शनि एक साथ, वृहस्पति बाद के घरों में जब नर ग्रह साथ-साथी या सहायता पर न हो ।	12 मास
सूर्य, चन्द्र एक साथ खाना नं० 11 में हो ।	9 साल
चन्द्र, केतु खाना नं० 1 में (खाना नं० 4 खाली न हो) ।	10 साल
चन्द्र खाना नं० 5, सूर्य खाना नं० 11 जब नर ग्रह साथ-साथी या मदद पर न हो ।	12 साल
चन्द्र, राहु खाना नं० 1, मौत पक्की दोपहर को गोली से या अचानक हो ।	15 साल
वृहस्पति, राहु खाना नं० 2 या बुध, वृहस्पति खाना नं० 6 में लम्बी ज़हमत बीमारी से मौत हो ।	20 साल
सूर्य, राहु खाना नं० 1-11 में जब खाना नं० 8 में आयु को रद्दी करने वाले ग्रह हों और सूर्य, राहु एक साथ बैठे हों । खाना नं० 1 में शनि, खाना नं० 2 में स्त्री ग्रह बैठे हों । खाना नं० 11 में सूर्य, राहु हो और शनि खुद आयु को रद्दी मंदा या नष्ट बर्बाद करने वाले घरों में या वह खुद ही मंदा हो रहा हो । मगर नर ग्रह साथ-साथी या मदद पर न हो, नहीं तो आयु लम्बी होगी ।	22 साल
चन्द्र खाना नं० 6 या मंगल बद, मंगल, बुध खाना नं० 6 या शुक्र और केतु के साथ दोनों नष्ट, बोलते समय दाँतों का माँस दिखे या नाक और कान ऊपर को चढ़े हुए हों या अंगुलियों के जोड़ बहुत छोटे-छोटे हों, पीठ बहुत तंग हो, नर औलाद ज़रूर छोड़ कर मरेगा लावल्द होने की शर्त नहीं ।	25 साल
बुध, वृहस्पति खाना नं० 2 में या वृहस्पति, राहु खाना नं० 3 में, पिता भी 19 या 21 में धन भी खत्म हो जायेगा ।	30 साल
चन्द्र, बुध, राहु एक साथ किसी भी घर में सिवाय खाना नं० 2-5 के ।	35 साल
वृहस्पति, राहु खाना नं० 9 या 12 या माथे पर अधिक बाल हों ।	40 साल
बुध, केतु खाना नं० 12 या वृहस्पति, राहु खाना नं० 6 में हो ।	45 साल
चन्द्र, राहु खाना नं० 5 शर्त यह है कि दोनों हर तरह से अकेले और दृष्टि से या खाना नं० 2, खाना नं० 7 में मंदे ग्रह हो या माथे पर सात लकीरें हों ।	50 साल

चन्द्र, राहु, बुध खाना नं० 2 या खाना नं० 5 में हों ।	56 साल
चन्द्र, बुध खाना नं० 2 में हों ।	60 साल
पीठ पर उर्ध रेखा हो ।	70 साल
नेक चन्द्र या चन्द्र, राहु खाना नं० 9 या चन्द्र खाना नं० 9 मौत अचानक हो ।	75 साल
चन्द्र, वृहस्पति खाना नं० 4 या चन्द्र खाना नं० 3-6 धन-दौलत का सुख सागर बाकी छोड़ कर मरे ।	80 साल
चन्द्र खाना नं० 7, चन्द्र कायम या चन्द्र, मंगल खाना नं० 7, दूध, शहद की ज़िन्दगी हो ।	85 साल
चन्द्र कायम 1, 8, 10, 11 में हो ।	90 साल
चन्द्र खाना नं० 2 या खाना नं० 4, चन्द्र कायम खाना नं० 3-4 या नर ग्रह साथ-साथी या मदद पर हों।	96 साल
वृहस्पति, केतु खाना नं० 9 या शनि, केतु खाना नं० 6 या चन्द्र, शनि खाना नं० 7 चेहरे पर आँख के नीचे 2-3 खत ।	96 साल

यदि चन्द्र, राहु एक साथ होकर किसी भी राशि में हो यानी जब आयु शादी, बीमारी आदि खास-खास बातों के लिए स्थापित की हुई लिस्ट के हिसाब से चन्द्र और राहु किसी घर को एक साथ ही की हालत में देख रहे हों या घर में देखे जा रहे हों तो दोनों एक साथ गिने जाएंगे। चाहे वह दोनों कुंडली में (चाहे जन्म की चाहे वर्ष की) जुदा-जुदा ही हों।

उदाहरण :

चन्द्र खाना नं० 1, राहु खाना नं० 7 में हो तो लिस्ट के अनुसार दोनों आपस में आम हालत में देखते या मिले हुए होंगे। यही असल किसी भी घर की हालत पर हो सकता है। तो हर खाना नं० में चन्द्र की दी हुई के सालों की संख्या आधी हो जायेगी। जिसका संबंध उसके अपने उस घर से संबंधित संबंधियों पर असर होगा। यानी उस घर से संबंधित संबंधी की आयु पर मंदा हाल होगा जो ग्रह के उस घर में बैठा हो जहाँ वह दोनों देख रहे हों या उस घर से संबंधित संबंधी जिनमें कि वह एक साथ बैठे हैं।

उदाहरण :

खाना नं० 9 खाली है और वह दोनों खाना नं० 9 को देख रहे हैं, खाना नं० 3-5 से तो खाना नं० 9 के संबंधी उसके पूर्वज़ बाप, दादा आदि लेकिन यदि खाना नं० 9 में मंगल हो तो उसका भाई अपने खून का हकीकी भाई मंदे असर में होगा। बशर्ते यह दोनों एक साथ हर तरह अकेले-अकेले दृष्टि से खाली हों। अगर कुंडली में पहले घरों में हो तो मौत न आये मगर मृत्यु के पास चाहे रहे। चन्द्र, राहु, केतु के समय जब चन्द्र हो खाना नं० 1 में तो मृत्यु का दिन होगा। देखें कुंडली में।

ग्रह स्थिति के अनुसार आयु जितने साल होगी :-

जब खाना नं० 12 खाली हो तो चन्द्र बैठा होने वाले घर के दिन मौत होगी। अगर खाना नं० 9-12 खाली हों तो 9-12 के सामने सोमवार लेंगे वर्ना वीरवार लेंगे।

ग्रहों की आयु

क्रमांक	ग्रह	आयु
1.	वृहस्पति	75 साल
2.	बुध	80 साल
3.	केतु	80 साल
4.	शनि	90 साल
5.	मंगल	90 साल
6.	राहु	90 साल
7.	शुक्र	85 साल
8.	चन्द्र	85 साल
	अगर नर ग्रह की सहायता हो तो	96 साल
9.	सूर्य पूरी आयु	100 साल

खाना नं० की आयु

क्रमांक	खाना नं०	आयु
1.	1	100 साल
2.	2	75 साल
3.	3	90 साल
4.	4	85 साल
5.	5	संतान की
6.	6	80 साल
7.	7	85 साल
8.	8	मौत
9.	9	पूर्वज़
10.	10	90 साल
11.	11	धर्म मंदिर
12.	12	90 साल

चन्द्र से आयु

क्रमांक	चन्द्र का खाना नं०	आयु
1.	1	90 साल
2.	2	96 साल
3.	3	80 साल
4.	4	85 साल
5.	5	100 साल
6.	6	80 साल
7.	7	85 साल
8.	8	90 सालह
9.	9	75 साल
10.	10	90 साल
11.	11	90 साल
12.	12	90 साल

चन्द्र से शुक्र का संबंध हो तो 85 साल, नर ग्रह का साथ हो तो 96 साल, पाप, राहु, केतु का संबंध हो तो 3 साल कम, शनि, वृहस्पति एक साथ टेवे वाले की उम्र का फैसला खाना नं० 11 के ग्रहों से होगा, लेकिन अगर खाना नं० 11 खाली हो तो आम टेवे के असूल पर चन्द्र ही उम्र का फैसला करेगा।

आयु कितने साल होगी

ग्रह	खाना नं०	आयु
वृहस्पति	6, 8, 10, 11	2 साल
शुक्र, मंगल	7	2 साल
मंगल, बुध	7	2 साल
बुध, शुक्र, चन्द्र	5	2 साल
चन्द्र, केतु लगन	1 जब खाना नं० 4 खाली नहीं हो	10 साल
चन्द्र	5	12 साल
सूर्य नर ग्रह साथ पर न हों	11	12 साल
शनि	5	आयु लम्बी क्योंकि शनि और सूर्य साथी ग्रह हैं

अल्प आयु

1. वृहस्पति बहुत से शत्रुओं से घिरा हुआ हो।
2. बुध, वृहस्पति, शुक्र खाना नं० 9 में हों।
3. वृहस्पति के बहुत से शत्रु खाना नं० 9 में हों।
4. चन्द्र, राहु खाना नं० 7 या 8 में हों।
5. बुध खाना नं० 9 में हो।

-8×8 = 64 अधिक से अधिक 8 दिन, महीने, साल, हर आठवाँ साल मंदा जान जानवरों से भय, मृत्यु होगी।

गुरु, चन्द्र या दोनों उत्तम, 1, 6, 3, घर 7 वें तो।
उम्र 9 वें बुध बेशक लम्बी, हाल गृहस्थी का मंदा हो।।

गुरु खाना नं० 6, 8, 10, 11, शुक्र, मंगल, बुध, चन्द्र खाना नं० 7, बुध, शुक्र, चन्द्र, खाना नं० 7 में हो तो आयु 2 साल होगी।

जब माथे पर कौए के पाँव का निशान या मर्द के दायें पाँव की कनिष्ठका व अनामिका बराबर हों, माथे के खत टूटे-फूटे हों और उनका झुकाव भी नीचे नाक की ओर हो या माथे पर दोनों भवों के बिल्कुल बीच में मगर तिलक लगाने की जगह छोड़ कर मंगल बद त्रिकोण, शुक्र, बुध (तुला, तराजू) मछली, त्रिशूल, शनि, पद्म, पंखा अंकुश तलवार या पक्षी के निशानों में से कोई एक निशान हो, अल्प आयु पशुओं का सुख न होगा। अल्प आयु वालों का आयु के हर 8 वें साल 8-16-32 आदि तंग हाल और आम लोगों के हर सातवें वर्ष के बाद हालात की तबदीली मानते हैं।

-इस हालत में जातक कम आयु होगा 8-8 कुल 64 साल होगा, शुक्र, मंगल, बुध खाना नं० 7 में हों।

दीर्घ आयु

कान लम्बे और बड़ी सी दीवार के या ठोड़ी बड़ी और उभरी हुई बाहर की ओर या गर्दन पर केवल एक बल या निशान पड़ता हो या लम्बा चेहरा, आँखें बड़ी, मुँह चौड़ा और रान (जाँघें) मोटी-मोटी, कलाई पर भाग्य रेखा की जड़ में चार शाखी रेखा हो।

-लम्बी आयु होगी।

केतु, वृहस्पति खाना नं० 12 में और चन्द्र कायम या चन्द्र, वृहस्पति खाना नं० 5, 12 में चन्द्र नर ग्रह कायम (या मंगल खाना नं० 1, खाना नं० 2-7 और सूर्य खाना नं० 4) या नर ग्रह कायम या चन्द्र को सहायता दे रहे हों। चन्द्र, सूर्य, वृहस्पति कायम या बुध, शुक्र, चन्द्र तीनों खाना नं० 4 में शरीर के सभी भाग ठीक-ठीक अनुपात में बंटे हों। -आयु 100 साल होगी।

चन्द्र, वृहस्पति खाना नं० 12 में हो। -आयु 120 साल होगी।

जन्म कुंडली का नीच या मंदा ग्रह जिस वर्ष फल के हिसाब से अपने नीच या मंदा होने वाले घर में आ जाये तो नीच फल दिया करता है अगर वह जन्म कुंडली में खाना नं० 8 में था तो और दोबारा वर्षफल भी खाना नं० 8 में आ जाये तो उस ग्रह का मित्र ग्रह, उसकी कुर्बानी का बकरा ग्रह और जन्म कुंडली के खाना नं० 6 से संबंधित ग्रह का संबंधी मारक स्थान में होगा, इस तरह जब जन्म कुंडली के नं० 6 का ग्रह नं० 6 में आए तो उसका दोस्त ग्रह, उसकी कुर्बानी का बकरा और खाना नं० 8 से (जन्म कुंडली) संबंधित ग्रह का संबंधी पाताली हालत या मंदी दशा बल्कि कम उम्र होने का सबूत देगा।

कद :-

कद खुद अपने शरीर के हिसाब से उम्र के साथ जिसका पैमाना खुद अपनी अंगुलियों का होगा (यानी अपनी अंगुलियों से)।

3 अंगुली = 1 गिरह
4 गिरह = 1 बालिश्त
2 बालिश्त = 1 हाथ
2 हाथ = 1 गज़
36 इंच = 48 अंगुली

अपना कद	आयु के वर्ष
9̀	3̀
91	35
92	4̀
93	45
94	5̀
95	55
96	60
97	65
98	70
99	75
19	80
1̀1	85
1̀2	90
1̀3	95
1̀4	100
1̀5	105
1̀6	110
1̀7	115
1̀8	120

यानी एक अंगुली = 5 वर्ष

चन्द्र के स्थान से मौत का दिन

मौत का दिन	खाना नं०	राशि में	घर का स्वामी	आयु (वर्षों में)
बुधवार	1	मेष	मंगल	9
शुक्रवार	2	वृष	शुक्र	96
बुधवार	3	मिथुन	बुध	80
शुक्रवार	4	कर्क	चन्द्र	85 या 96
मंगलवार	5	सिंह	सूर्य	यथा
रविवार	6	कन्या	बुध, केतु	यथा
शुक्रवार	7	तुला	शुक्र	यथा
बुधवार	8	वृश्चिक	मंगल	यथा
वीरवार	9	धनु	वृहस्पति	यथा
मंगलवार	1	मकर	शनि	90
शनिवार		11	कुम्भ	शनि 90
वीरवार		12	मीन	वृहस्पति, राहु 90

जब खाना नं० 12 में कोई ग्रह न हो तो चन्द्र जिस राशि में हो तो उसके हिसाब से मौत का दिन होगा। जन्म दिन और वक्त जन्म का एक ही ग्रह हो जाए उदाहरण के लिए मंगलवार का दिन और मंगलवार की पक्की दोपहर के वक्त की पैदाइश हो तो ऐसा ग्रह जातक का कभी बुरा नहीं करेगा बल्कि मौत भी उसी दिन, उसी वक्त न होगी। बेशक चन्द्र के हिसाब से वह मौत का दिन आता हो। शर्त यह है कि वह ग्रह कुंडली में कायम हो, बाकी हालतों में जबकि जन्म दिन और जन्म वक्त के ग्रह अलग-अलग हों ऐसी हालत में जन्म दिन और जन्म वक्त के ग्रहों की सब हालतें ग्रहफल, राशिफल, बराबर के ग्रह या आपसी मित्रता-शत्रुता के नतीजे पर होगा। मौत का दिन खाना नं० 12 और 8 के ग्रहों की शक्ति के अनुसार गिना जाता है। यदि चन्द्र, राहु एक साथ होकर किसी राशि में हों तो हर खाना नं० में चन्द्र की दी हुई आयु के सालों की संख्या आधी हो जाएगी।

मौत बहाना :-

हर राशि के संबंधित मगर स्वयं इसके खून के संबंधियों के लिए शर्त यह है कि दोनों एक साथ हर तरह से अकेले दृष्टि से खाली हों। अगर कुंडली के पहले घरों में हो तो मौत न हो मगर मृत्यु के करीब ज़रूर हो, चन्द्र, राहु के समय ज्योतिष विद्या से वृहस्पति रेखा का संबंध भी दिख जाएगा।

दिल रेखा की लम्बाई (चाहे पुरुष चाहे स्त्री)	आयु हो
कनिष्ठका तक हो	1-15 वर्ष
कनिष्ठका और अनामिका के बीच तक हो	25 वर्ष
अनामिका तक हो	50 वर्ष
अनामिका और मध्यमा के बीच तक हो	75 वर्ष
मध्यमा तक हो	90 वर्ष
मध्यमा और तर्जनी के बीच तक हो	1 वर्ष
तर्जनी तक हो	120 वर्ष

कलाई की रेखा की संख्या	आयु होगी
1	30 वर्ष
2	60 वर्ष
3	90 वर्ष
4	120.वर्ष

माथे की रेखा

साफ रेखा

संख्या	पुरुष	स्त्री
1	20 साल	40 साल
2	30 साल	60 साल
3	60 साल	70 साल
4	80 साल	80 साल
5	100 साल	100 साल
6	120 साल	120 साल
7 या अधिक	50 साल	
बगैर लकीर	100 साल	

टूटी-फूटी रेखा

संख्या	पुरुष	स्त्री
1	10 वर्ष	20 वर्ष
2	20 वर्ष	40 वर्ष
3	30 वर्ष	50 वर्ष
4	40 वर्ष	60 वर्ष

अगर माथे पर लाल रंग (सुर्ख) का भी साथ हो तो आयु 4 साल यकीनी हो।

दोनों कानों तक ठीक व पूरी रेखा (स्त्री-पुरुष) :-

एक रेखा हो तो 1 वर्ष की आयु होगी।

दो रेखा हो तो 7 वर्ष की आयु होगी।

मृत्यु का आखिरी वर्ष व दिन :-

चन्द्र का स्थान मौत का आखिरी दिन और साल कुंडली के चन्द्र के स्थान और खाना नं० 8-12 एक साथ प्रभाव से दृष्टिगोचर होगा।

अर्थ यह है कि चन्द्र का स्थान तो कुंडली में मालूम ही होगा और खाना नं० 8 में जो कोई ग्रह भी होगा वह नीच होगा इन नीचों के असर से जो साल भी पहला साल होगा वह खराब साल होगा। इस आठवें खाने को 12 वें खाने के ग्रह 25% अच्छा या बुरा करेंगे यानी 12 वें खाने वालों की यदि अच्छी दृष्टि हो तो वह जिस वर्ष में वह अच्छी दृष्टि समाप्त होगी, मौत होगी और यदि बुरी नज़र शुरू होगी वह आखिरी साल होगा।

आयु के साल :-

आयु रेखा के समान्तर एक दूसरी आयु रेखा, आयु रेखा की टूट-फूट से बचाएगी। हथेली में खाना नं० में चन्द्र की जगह फैसला करेगी। अंगुलियों में राशि के हिसाब से चन्द्र और चन्द्र की दिल रेखा की लम्बाई से उम्र की हद

वृहस्पति	75 साल
बुध, केतु	8 साल
सूर्य	100 साल
मंगल, शनि, राहु	90 साल
शुक्र	85 साल वर्ना 96 साल
चन्द्र	85 साल वर्ना 96 साल

चन्द्र और शुक्र दोनों स्त्री ग्रह है अत: उम्र 85 साल अगर नर ग्रह का साथ हो तो 96 साल, अगर नपुंसक ग्रह का साथ हो तो भी आयु 85 साल होगी।

आयु रेखा :-

दिल रेखा (चन्द्र) हर अंगुली की जड़ तक 25 साल, शनि की उम्र रेखा सिर रेखा तक 35 साल, शनि की भाग्य रेखा तक, दिल रेखा तक 65 साल, मध्यमा की जड़, बुध अपने पक्के घर खाना नं० 7 में बैठा हुआ या नर ग्रहों (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) या शनि में से कोई भी बंद मुट्ठी के खाने 1-4-7-10 में आया हुआ हो या धर्म मंदिर (2) या गुरुद्वारा खाना नं० 11 में बैठा हुआ जातक की शारीरिक और उम्र और संबंधित जानों (मनुष्य या पशु) पर कभी बुरा असर न देगा, शर्त ये है कि इन घरों में बैठा होने के वक्त शनि के साथ स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) का संबंध न हो।

जन्म दिन और जन्म वक्त कभी मौत का न होगा। खाना नं० 3 का ग्रह दोबारा खाना नं० 3 में बैठा कभी मौत न देगा (6-14-26-38-54-66-74-96 साल)।

रेखा के प्रभाव का अब कौन सा साल है :-

आयु और भाग्य रेखा सालों में 12 साल तक संसार की हवा में नहीं आया 70 साल के बाद संसार के लिए 70 या 72 या आ गया।

गेहूँ या जौं के दाने के बराबर के टुकड़े के पैमाना पर रेखा का असर होगा। 10 साल तक चाहे कोई भी रेखा हो।

-उस समय 10 साल की आयु होगी।

यदि तर्जनी की जड़ से हाथ के किनारे के साथ-साथ नीचे की ओर आयु रेखा को काटता हुआ खत खींचे तो उसका पहला स्थान या रेखा की उस स्थान तक लम्बाई होगी।

-उस समय 12 साल की आयु होगी।

दूसरा स्थान जब यही खत आयु रेखा को आगे बढ़ कर दूसरी बार काटे।

-उस समय 90 साल की आयु होगी।

जिस जगह भाग्य रेखा आयु रेखा से मिले।

-उस समय 21 साल की आयु होगी।

जिस जगह भाग्य रेखा सिर रेखा से मिले।

-उस समय 35 साल की आयु होगी।

जिस जगह भाग्य रेखा दिल रेखा से मिले।

-उस समय 56 साल की आयु होगी।

हथेली की चौड़ाई और दिल रेखा का आधा निशान जिस जगह दिल रेखा को काटे।

-उस स्थान पर 45 साल की आयु होगी।

स्वास्थ्य या प्रगति रेखा जिस जगह आयु रेखा से मिले या जिस स्थान पर दोनों आपस में कट जाये।

-उस समय आयु का अंत होगा।

मौत बहाना

रेखा पर निशान	ग्रहचाल होगी	मौत का बहाना
मंगल बद खाना नं० 8 पर सूर्य का सितारा हो या पेट पर सिर्फ एक बल पड़े।	चन्द्र शनि, मंगल खाना नं० 6,8 मंगल बद, शुक्र खाना नं० 5,8 मंगर सूर्य, चन्द्र एक साथ न हो।	लड़ाई या युद्ध में मारा जाए।
शनि के बुर्ज से कोई रेखा आयु रेखा को आ काटे।	शनि, शुक्र एक साथा खाना नं० 1० और सूर्य खाना नं० 4 में हो।	मृत्यु अचानक हो।
सूर्य के बुर्ज पर सूर्य का सितारा हो।	सूर्य कायम और उच्च खाना नं० 1 में	ठीक समय पर मगर अचानक हो।

	अकेला और कंडली में किसी ग्रह का साथी न बन रहा हो।	
दिल रेका और सिर रेखा का मिल जाना, दिल रेखा और गृहस्थ रेखा का कनिष्ठका या मध्यमा के पास मिल जाना, सिर रेखा का दिल रेखा को काट कर शनि पर खत्म होना दोनों की एक ही रेखा लेंगे।	चन्द्र, बुध एक साथ खाना नं॰ 3, 6 शनि और चन्द्र एक साथ खाना नं॰ 7, मंगल बद, (मंगल, बुध, चन्द्र, शनि) खाना नं॰ 7, 1॰ में हो। अल्प आयु वाला होगा।	सदमे से मौत हो।
श्रेष्ट रेखा का शनि की ओर झुक जाना।	शनि खाना नं॰ 6, बुध खाना नं॰ 3, 1॰, 11 शनि खाना नं॰ 7 में हो।	जानवरों से मौत का खतरा होगा।
अंगूठा छोटा और मध्यमा बहुत लम्बी, दिल, सिर और आयु रेखा का मिल जाना।	बुध हो खाना नं॰ 12 में और शनि काना नं॰ 7 में हो।	आत्महत्या करे।
सूर्य की रेखा काहाथ में बिल्कुल न होना।	चन्द्र,बुध एक साथ और सूर्य बर्बाद हो।	आत्महत्या करे।
सिर रेखा का चन्द्र में समाप्त होना।	चन्द्र, बुध एक साथखाना नं॰ 4 में हो।	आत्महत्या करे।
पापी ग्रहों से बुध का साय हो या पापी ग्रहों की एक निशानी हो।	राहु या केतु से बुध एक साथ और शनि जड़ राशि या दृष्टि से साथी ग्रह हो जाए।	बिजली या साँप से मौत होगी।
सिर रेखा से ऊपर दिल रेखा तक हो शाख हो।	बुध, शनि खाना नं॰ 4 और बुध, शनि, चन्द्र एक साथ या दृष्टि में और सूर्य कायम हो।	खूनी होगा।
पितृ रेखा का शाख मातृ रेखा को काट कर अनामिका तक चले जाए।	शनि खाना नं॰ 3, बुध खाना नं॰ 11, या सूर्य, शनि खाना नं॰ 1॰, बुध खाना नं॰ 8 में हो।	कैद से मरे।
आयु रेखा से निकली भाग्य रेखा सूर्य में या सूर्य तक चली जाए।	शुक्र खाना नं॰ 1 सूर्य खाना नं॰ 7, साथ शत्रु या पापी ग्रह या दोनों एक साथ जन्म कुंडली में हो या वर्षफल में खाना नं॰ 3 में या सूर्य, शुक्र मुश्तरका खाना नं॰ 1-3-1॰ में हो।	मेंतपेदिक से मरे।
पितृ रेखा के ऊपर त्रिशूल हो।	सूर्य, बुध, चन्द्र एक खाना नं॰ 4 में हो।	घोड़े से गिर कर मरे।
पितृ रेखा के नीचे जालराहु हो।	चन्द्र, राहु खाना नं॰ 4 में हो।	फांसी से मरे या कुएं में या घुट कर मरे।
सिर रेखा पर क्रॉस हो।	बुध, सूर्य, शनि खाना नं॰7 या सूर्य, शनि खाना नं॰ 7 या सूर्य, शनि खाना नं॰ 7 में हों।	
पितृ रेखा, मातृ रेखा से अलग होकर कटी हुई या टेढ़ी हो, चन्द्र की चीजों के आने से चन्द्र नष्ट या जोड़ से जुदा होकर टेढ़ी जाए।	बुध, वृहस्पति एक साथ खाना नं॰ 3 में हों। बुध, वृहस्पति आपस में एक-दूसरे के सामने।	संतोष से मौत होगी। अधरंग से मौत होगी।
शुक्र या सूर्य का सितारा आयु रेखा पर हो। (दरिया, नदी से मौत)।	चन्द्र, शनि खाना नं॰ 4 के बक्त चन्द्र खाना नं॰1॰ चन्द्र सूर्य खाना नं॰ 4, शनि खाना नं॰ 1॰, चन्द्र सूर्य खाना नं॰ 4, दिन के वक्त चन्द्र सूर्य खाना नं॰ 7 गत न दिन।	
	चन्द्र और शनि खाना नं॰ 7 में अगर बराये दृष्टि प्रबल हो।	मातृभूमि में मौत होगी।
	चन्द्र अगर बराये दृष्टि शनि से प्रबल हो। चन्द्र	परदेश में मौत होगी। फेफड़े और

| खाना नं॰ 10 और खाना नं॰ 2 खाली हो। | छाती की बीमारी से मौत होगी।

आयु रेखा एकदम टूट जाए तो यह मौत की निशानी है। सिंहासन की राजिकता राशि नं॰ के हिसाब से जब बुध और राहु या केतु इकट्ठे हो जाए तो मौत आने की निशानी होगी। राहु या केतु से बुध एक साथ जब भी किसी का दौरा आए मौत गूँजने की निशानी होगा। चन्द्र, शनि खाना नं॰ 4 में हो तो विदेश में मौत होगी (घर से बाहर) बाकी सब हालतों में चन्द्र, शनि खाना नं॰ 7 मातृभूमि या अपने ही गृहस्थ में मौत हो, किस्मत रेखा की शुरू की दो रेखाई वाली अंगूठे की तरफ की रेखा अगर लम्बी हो यानी शुक्र की तरफ बढ़ी हो तो अपने गृहस्थ से और चन्द्र की तरफ बढ़ी हो तो परदेश में मौत होगी। आयु रेखा जब अंत में शुक्र के पर्वत की जड़ की गोलाई पर दो रेखा वाली हो जाए और शुक्र की तरफ की रेखा लम्बी हो तो मौत मातृभूमि में होगी अगर चन्द्र की तरफ को बढ़ी हो तो परदेश में मौत होगी।

जब वृहस्पति खाना नं॰ 2 या केतु खाना नं॰ 6 में हो तो अपनी मौत का पहले ही पता लग जाएगा।

मौत का वक्त
- नकारा कूच

(मंदी ग्रहचाल वर्षफल के अनुसार)

मौत का वक्त पापी ग्रहों 1, के मंदे कामों का नतीजा है।
कर्म 2 जब हो खत्म 3 अपना, या खज़ाना 4 लेख का।
खुद ब खुद ही 5 आ बसेगा, सब बहाना 6 मौत का।
विनाश काले विपरीत 7 बुद्धि, मालो ज़र न काम का।
मौत डंके चोट 8 लगती, चलता खास ओ आम था।

1. शुक्र व पापी मंदे हो रहे हों।
2. बुध, राहु, केतु किसी तरह इकट्ठे हो रहे हों।
3. खाना नं॰ 3 खाली या खाना नं॰ 3 में मंदे ग्रह और खाना नं॰ 8 या खाना नं॰ 6 से कोई एक या दोनों मंदे हो रहे हों।
4. बंद मुट्ठी के घर 1-7-4-10 खाली हों या उनमें जन्म कुंडली के खाना नं॰ 1-7-4-10 का कोई ग्रह न हो।
5. चन्द्र खुद निकम्मा बैठा हो।
6. खाना नं॰ 4, खाना नं॰ 2 की मार्फत खाना नं॰ 8 का ज़हर बढ़ाने का बहाना हो।
7. बुध मंदे घरों 3-8-9-12 में हो जाए।
8. शनि अपने पाप राहु के सिर, केतु पाँव की मार्फत चन्द्र को ज़हर दे। राहु खाना नं॰ 8 में हो, चन्द्र, राहु से जब खुद ही चन्द्र मंदा हो।

जब तक साथ लाए दाना-पानी का खज़ाना था, साँस चलता रहा। मुट्ठी खुलती रही और बंद होती रही। लेकिन ज्यों ही कि आखिर हो गया तो खुली मुट्ठी ज़ोर से बंद करने पर भी बंद न हो सके। दुनियावी दृष्टि सब बैठा देख रहा है लेकिन किसी को अपना साथी नहीं बना सकता। गो साँस बंद हुआ मगर किस्मत का लेख चलता रहा। यानी उसके तमाम संबंधियों को उसकी बंद मुट्ठी में साथ लाए खज़ाने से बचे हुए हिस्से को खर्चने का बहाना हो।

फरमान नं० 18

आशीर्वाद

खुश रहो आबाद दुनिया,

मालो जहाँ बढ़ते रहो।

मदद मालिक अपनी देगा,

नेकी खुद करते रहो।।

ॐ नारायणाय

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

ज्योतिष पर अमूल्य प्रकाशन
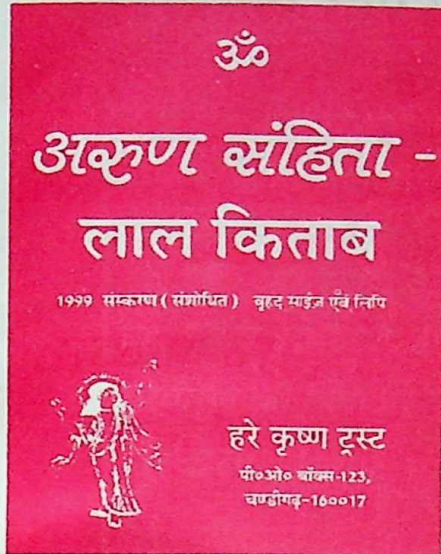
अरुण संहिता - लाल किताब ज्योतिष

ज्योतिष के ग्रन्थों में इसका अपना एक विशेष स्थान है। ज्योतिष परम्परा में यह एक ऐसा विशिष्ट ग्रन्थ है जिसमें जीवन की प्रतिकूल परिसितियों को अनुकूल बनाने के लिए विशेष उपायों का वर्णन दिया गया है। इस ग्रन्थ के कई संस्करण निकाले जा चुके हैं।

सजिल्द डिलेक्स संस्करण 1999

केवल 450 रुपये में उपलब्ध हैं।
पृष्ट संख्या 470 बड़े साईज में ।
साधारण संस्करण (साधारण पेपर पर)
दो भागों में 125 रुपये प्रत्येक

International Standard Book Number
ISBN 81-86828-09-5

पाठकगण अरुण संहिता-लाल किताब लेते समय ध्यान रखे की यह नवीन संस्करण ही हो क्योंकि पुराने कुछ पुराने पुस्तक विक्रेता प्रथम संस्करण की बिना हरे कृष्ण ट्रस्ट लिखे हुये एवं अधिक मूल्य तथा पुराने संस्करण जिसमें संशोधन नहीं हुआ की कापियाँ करवाकर भी बेच रहे हैं।

ट्रस्ट ने पुराने वितरकों पर कानूनी कार्यवाही भी शुरु कर दी तांकि पाठकों को धोखा देने से बचाया जा सकें ।
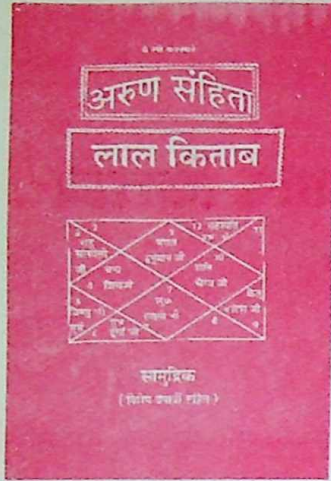
अरुण संहिता - लाल किताब
सामुद्रिक

विशेष उपायों सहित

खुद इन्सान की पेश न जावे
हुक्म विधाता होता है।
सुख दौलत और साँस आखिरी,
उमर का फैसला होता है।

केवल सजिल्द डिलेक्स संस्करण
केवल 149 रुपये
संशोधित संस्करण वर्ष 2000

International Standard Book Number
ISBN 81-86828-03-6

अरुण संहिता - लाल किताब
हस्त रेखा

इस ग्रन्थ में लगभग 300 से अधिक हस्त के रेखा चित्रों द्वारा वर्णन किया गया है।

केवल सजिल्द डिलेक्स संस्करण
केवल 275 रुपये
पृष्ठ संख्या 390
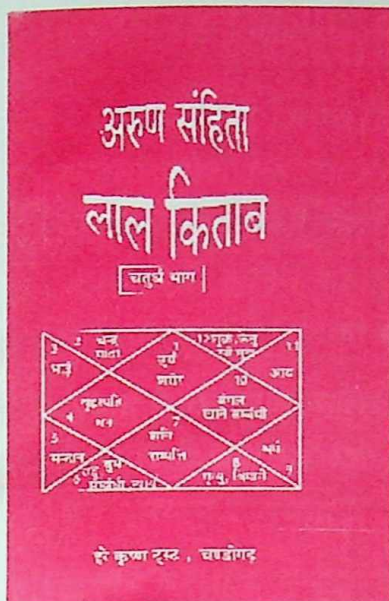
अरुण संहिता - लाल किताब
चतुर्थ भाग

भाग्य किसे कहते हैं ? हमें प्राप्त हुये व हो रहे या होने वाले वे फल जिनके कर्मों का आधार हम ही हैं। हमें जीवन में जो दुःख सुख मिलता है वह तो मिलेगा ही परन्तु भगवान् श्री हरि से क्षमा प्रार्थना एवं उनकी सेवा करके हम अपने कष्टों को घटा सकते हैं। इसका रहस्य जानने के लिये अरुण संहिता लाल किताब का अध्ययन एक विशेष स्थान रखता है।

डा. अरुण,
अनादी कृष्ण दास,
हरे कृष्ण ट्रस्ट

केवल सजिल्द डिलेक्स संस्करण

केवल 270 रुपये पृष्ठ संख्या 460

ISBN 81-86828-01-X

विशेष सूचना

पाठको की जानकारी के लिये यहाँ पर हम कहना चाहते हैं कि साधारणतयः लोगों ने अरुण संहिता लाल किताब - ज्योतिष के ही संस्करण देखें हैं। परन्तु इस श्रृंखला में यह स्पष्ट करना उचित है कि सभी चारों पुस्तके अरुण संहिता लाल किताब - ज्योतिष, हस्त रेखा, सामुद्रिक एवं चतुर्थ भाग अलग अलग हैं । वह अपने में पूर्ण हैं। सभी पुस्तकों में पूर्ण रूप से ग्रह इत्यादि के बारे में दिया गया है। इनको मूल रूप से ही अलग - अलग लिखा गया है।

कई पाठकगण चतुर्थ भाग को पढ़कर यह अनुमान लगाना शुरु कर देते हैं कि बाकी 3 भाग कौन से हैं यहाँ पर यह स्पष्ट करना उचित है कि चारों का अध्ययन करने से ही पाठक अपने ज्ञान को समरूप दे सकते हैं ।

यदि वह एक पुस्तक को ही पढ़े तो अपने में पूर्ण है परन्तु उसको पढ़ने के बाद दूसरी इसी श्रृंखला में पढ़ने की जिज्ञासा होती है यह स्वाभाविक ही है। परन्तु सभी भाग अपने में पूर्ण हैं इनकी शैली मूल रूप से अलग है एवं कुछ उपाए एक पुस्तक में पाये जाते हैं दूसरी में वह उपलब्ध नहीं है।

डा अरुण - अनादी कृष्ण दास हरे कृष्ण ट्रस्ट

संसारिक भागों में लिप्त व्यक्ति की दयनीय स्थिति को देखते ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसे भविष्य को जानने की विधियों के प्रयास में लगना उसकी क्षमता के लिये तो उचित ही होगा, क्योंकि उसकी जीवन के प्रति समझ ही इतनी होती है। जैसे प्रतिकूल परिस्थितियों में कोई ही इस संसार की विडम्बनाओं को देखते हुए।

इस ग्रन्थ में ग्रहों के विभिन्न आयामों को भौगोलिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से देखा गया है। इसमें मन्त्र उच्चारण की वैज्ञानिक पद्धित विशलेषण करते हुए ग्रहों के साथ मन्त्र, तन्त्र के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

यन्त्रों को ग्रहों की दृष्टि से विधिवत बनाये जाने कि पूर्णतय विधि दी गई हैं, जिसको पाठकगण समझ कर अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं ।

डा. अरुण
अनादि कृष्ण दास

साधारण संस्करण केवल 85 रुपये, पृष्ट संख्या 267 ISBN ८१-८६८२८-४१-९

ज्योतिष एवं मन्त्रों द्वारा उपाय

इस ग्रन्थ को लिखने की क्षमता तभी पैदा हुई जब इस शताब्दी के प्रमुख वैष्णव आचार्यों से मन्त्रों एवं विभिन्न विषयों पर चर्चा होती रही। इसमें बीज मन्त्रों का उपायोग एवं ग्रहों की दृष्टि से कौन कौन से मन्त्र होने चाहिये, दिये गए हैं।

पुस्तक के प्रथम भाग में एक ग्रह योग का वर्णन है एवं दूसरे भाग में दो एवं अधिक ग्रहों के मन्त्रों को दिया गया है। इसमें शादी, मकान, बिमारी इत्यादि योगों का भी वर्णन किया गया है। तन्त्र की विधियों को देखते हुए मन्त्रों का कैसे उपयोग है को विशेष रुप से स्पष्ट किया गया है।

जैसे तन्त्र में छः प्रकार के प्रयोग किये गये है, इसी प्रकार मन्त्रयोग को भी छः शब्दों द्वारा निर्देशित किया गया है जैसे - स्वाहा, वषट्, वौषट् , हुम्, फट्, और नमः ।

इस ग्रन्थ का अपना ही एक विशेष स्थान है क्योंकि इसमें सभी मन्त्र प्राचीन ग्रन्थों की दृष्टि से ही दिये गये हैं ।

डा. अरुण, अनादि कृष्ण दास

साधारण संस्करण केवल 90 रुपये पृष्ट संख्या 230, ISBN 81-86828- 32-X
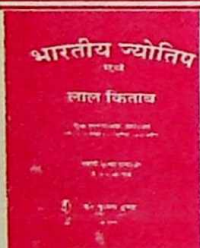
भारतीय ज्योतिष एवं लाल किताब

एक तुलनात्मक अध्यन वैदिक, दार्शनिक एवं पौराणिक उपायों सहित

स्वामी कृष्ण सत्यार्थी प्रो. आर.सी. वर्मा

अज्ञात भविष्य को जानने की इच्छा मनुष्य में सदा से ही रही है। भारतीय दर्शन में भविष्य को जानने के लिये कई विधियों की खोज की गई हैं जिसमें ज्योतिष विद्या का अनुपम स्थान है। जैसे - जैसे ज्योतिष का गहन अध्ययन किया गया तो मुल रूप से यह पाया गया है कि भारतीय ज्योतिष एवं अरुण संहिता लाल किताब में अन्तर है। यह ग्रन्थ पाठकों की सुविधा के लिये सुगम बनाया गया जिससे यह ज्ञात हो सके कि अरुण संहिता- लाल किताब क्या है उनके उपायों का क्या रहस्य है एवं भारतीय ज्योतिष क्या महतवपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस ग्रन्थ के अध्ययन से यह ज्ञात करना सुगम है कि उपाय क्या हैं एवं भारतीय ज्योतिष एवं लाल किताब क्या हैं। इसको जानने के लिये इस ग्रन्थ का अध्ययन प्रत्येक पाठक के लिये आवश्यक हैं।

साधारण संस्करण केवल 99 रुपये पृष्ट संख्या 267 ISBN 81-86828- 16-8